जदीद व क़दीम तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल ज़ख़ीरए कुतुब की रोशनी में कु़रआने मजीद की आयात के मत़ालिब व मआ़नी और उन से ह़ासिल होने वाले दर्सो मसाइल का मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्तिहाई आसान बयान

Siratul Jinan V-02 (Hindi)

सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल कु़रआन

दूसरी जिल्द
पारह 4..5..6

मुफ़स्सिर : शैख़ुल ह़दीस व तफ़्सीर,

अबू सालेह़ **मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम** क़ादिरी अ़त्त़ारी مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی

www.dawateislami.net

जदीद व क़दीम तफ़ासीर और दीगर उ़लूमे इस्लामिया पर मुश्तमिल ज़ख़ीरए कुतुब की रोशनी में क़ुरआने मजीद की आयात के मत़ालिब व मआ़नी और उन से ह़ासिल होने वाले दर्सो मसाइल का मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्तिहाई आसान बयान, नीज़ मुसल्मानों के अ़क़ाइद, दीने इस्लाम के औसाफ़ व ख़ुसूसिय्यात, अहले सुन्नत के नज़रिय्यात व मा'मूलात, इ़बादात, मुआ़मलात, अख़्लाक़िय्यात, बात़िनी अमराज़ और मुआ़शरती बुराइयों से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनो ह़दीस अक़्वाले सह़ाबा व ताबेईन और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात की रोशनी में एक जामेअ़ तफ़्सीर मअ़ दो तरजमों के

कन्ज़ुल ईमान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन

अज़ : आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

और

कन्ज़ुल इरफ़ान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन

मअ़

सिरातुल जिनान फ़ी तफ़सीरिल क़ुरआन

अज़ : शैख़ुल ह़दीस व तफ़्सीर, अबू सालेह़ मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम क़ादिरी अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي

नाशिर

मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

तफ़्सीर "सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन" का मुतालआ करने की निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی ٦/١٨٥ حدیث: ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार तअ़व्वुज़ व **(2)** तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा **(3)** रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ करूंगा **(4)** बा वुज़ू और **(5)** क़िब्ला रू मुत़ालआ करूंगा **(6)** क़ुरआनी आयात की दुरुस्त मख़ारिज के साथ तिलावत करूंगा। **(7)** हर आयत की तिलावत के साथ उस का तरजमा और तफ़्सीर पढ़ कर क़ुरआने करीम समझने की कोशिश करूंगा और दूसरों को इस की ता'लीम दूंगा। **(8)** अपनी त़रफ़ से तफ़्सीर करने के बजाए उ़लमाए ह़क़्क़ा की लिखी गई तफ़ासीर पढ़ कर अपने आप को "अपनी राय से तफ़्सीर करने" की वई़द से बचाऊंगा। **(9)** जिन कामों के करने का हुक्म है वोह करूंगा और जिन से मन्अ़ किया गया है उन से दूर रहूंगा। **(10)** अपने अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ करूंगा और बद अ़क़ीदगी से ख़ुद भी बचूंगा और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी बचाने की कोशिश करूंगा। **(11)** जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़म हुवा उन की पैरवी करते हुए रिज़ाए इलाही पाने की कोशिश करता रहूंगा। **(12)** जिन क़ौमों पर इ़ताब हुवा उन से इ़ब्रत लेते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरूंगा। **(13)** शाने रिसालत में नाज़िल होने वाली आयात पढ़ कर उस का ख़ूब चरचा कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी मह़ब्बतो अ़क़ीदत में मज़ीद इज़ाफ़ा करूंगा। **(14)** जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और **(15)** जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। **(16)** शर्ई़ मसाइल सीखूंगा **(17)** अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमाए किराम से पूछ लूंगा। **(18)** दूसरों को येह तफ़्सीर पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। **(19)** इस के मुत़ालए का सवाब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। **(20)** किताबत वग़ैरा में शर्ई़ ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

(शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के सिरातुल जिनान की पहली जिल्द पर दिये गए तअस्सुरात)

कुछ सिरात़ुल जिनान के बारे में......

1422 सि.हि. (2002 ई.) की बात है जब मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی "चल मदीना" के क़ाफ़िले में हमारे साथ थे और इस सफ़रे ह़ज में मुझे उन को क़रीब से देखने का मौक़अ़ मिला था। बेह़द कम गो, इन्तिहाई सन्जीदा और कसरत से तिलावते क़ुरआन करने वाली इस निहायत परहेज़ गार शख़्सिय्यत की अ़ज़मत मेरे दिल में घर कर गई। मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में हमारा मश्वरा हुवा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के तरजमए **कन्ज़ुल ईमान** की एक आसान सी तफ़्सीर होनी चाहिये जिस से कम पढ़े लिखे अ़वाम भी फ़ाएदा उठा सकें, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی इस बा बरकत ख़िदमत के लिये बख़ुशी आमादा हो गए। मुजव्वज़ा तफ़्सीर का नाम **सिरात़ुल जिनान** (या'नी जन्नतों का रास्ता) तै हुवा। तबर्रुकन मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا ही में इस अ़ज़ीम काम का आग़ाज़ कर दिया गया, अफ़्सोस ! मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی की ज़िन्दगी ने उन का साथ न दिया, 6 पारों पर काम कर के वोह (बरोज़ जुमुआ 18 मुहर्रमुल ह़राम 1427 हि.) पर्दा फ़रमा गए।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

चूंकि येह काम इन्तिहाई अहम था लिहाज़ा मदनी मर्कज़ की दरख़्वास्त पर शैख़ुल ह़दीसे वत्तफ़्सीर ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज मुफ़्ती अबू सालेह़ **मुह़म्मद क़ासिम**

www.dawateislami.net

क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی ने इस काम का अज़ सरे नौ आग़ाज़ किया। अगर्चे इस नए मवाद में मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी के किये गए काम को शामिल न किया जा सका मगर चूंकि बुन्याद उन्ही ने रखी थी और आग़ाज़ भी मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की पुर बहार फ़ज़ाओं में हुवा था और **"सिरातुल जिनान"** नाम भी वहीं तै किया गया था लिहाज़ा हुसूले बरकत के लिये येही नाम बाक़ी रखा गया है। **कन्ज़ुल ईमान** अगर्चे अपने दौर के ए'तिबार से निहायत फ़सीह़ तरजमा है ताहम इस के बे शुमार अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो अब हमारे यहां राइज न रहने के सबब अ़वाम की फ़ह्‌म से बाला तर हैं लिहाज़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के तरजमए क़ुरआन **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ को मिनो अ़न बाक़ी रखते हुए इसी से रोशनी ले कर दौरे ह़ाज़िर के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम साह़िब مدظلہ ने مَاشَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक और तरजमे का भी इज़ाफ़ा फ़रमाया, इस का नाम **कन्ज़ुल इरफ़ान** रखा है। इस काम में दा'वते इस्लामी की मेरी अ़ज़ीज़ और प्यारी मजलिस, **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **मदनी उ़लमा** ने भी ह़िस्सा लिया बिल ख़ुसूस मौलाना **ज़ुल क़रनैन** मदनी سَلَّمَهُ الْغَنِی ने ख़ूब मुआ़वनत फ़रमाई और इस त़रह **सिरात़ुल जिनान** की **3 पारों** पर मुश्तमिल पहली जिल्द (के बा'द अब पारह नम्बर **4**,**5** और **6** पर मब्नी दूसरी जिल्द) आप के हाथों में है। **अल्लाह** तआ़ला अलह़ाज मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम साह़िब مَدَّظِلُّه समेत इस **कन्ज़ुल ईमान फ़ी तरजमतिल क़ुरआन व सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन** के मुबारक काम में अपना अपना ह़िस्सा मिलाने वालों को दुन्या व आख़िरत की ख़ूब ख़ूब भलाइयां इनायत फ़रमाए और तमाम आ़शिक़ाने रसूल के लिये येह तफ़्सीर नफ़्अ़ बख़्श बनाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ताा़लिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

9 जुमादल उख़्रा 1434 हि.
20-4-2013

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
निय्यतें	1	कुफ़्फ़ार से तअ़ल्लुक़ात के बारे में	
कुछ सिरातुल जिनान के बारे में	2	इस्लाम की ता'लीमात	45
चौथा पारह	10	जंगे उहुद का बयान	48
राहे खुदा में अपना प्यारा माल ख़र्च करने के		**अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दों का मदद करना	
5 वाक़िआ़त	10	दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** तआ़ला का मदद करना है	51
का'बए मुअ़ज़्ज़मा की खुसूसिय्यात	15	वाक़िअ़ए बद्र से मा'लूम होने वाले मसाइल	52
बुज़ुर्गों से निस्बत की बरकत	17	सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की अ़ज़मत	54
ह़रम से क्या मुराद है ?	18	सूद से मुतअ़ल्लिक़ वईदें	56
ह़ज फ़र्ज़ होने के लिये ज़ादे राह की मिक़्दार	18	राहे खुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब	60
सुल्ह़े कुल्लिय्यत का रद	23	गुस्से पर क़ाबू पाने के 4 फ़ज़ाइल	61
"حَبْلُ اللّٰه" की तफ़्सीर	23	अ़फ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल	62
जमाअ़त से क्या मुराद है ?	24	ह़िल्म व अ़फ़्व के दो अ़ज़ीम वाक़िआ़त	62
जहन्नम से बचने का सब से बड़ा वसीला	25	आ'माल के सवाब का दारो मदार निय्यत पर है	72
सब से आ'ला ने'मत	26	आयत "وَكَاَیِّنْ مِّنْ نَّبِیٍّ" से ह़ासिल होने वाला दर्स	74
तब्लीग़े दीन का हुक्म	27	आयत "ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَیْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً" से	
तब्लीग़े दीन से मुतअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीस	27	ह़ासिल होने वाला दर्स	83
इत्तिफ़ाक़ का हुक्म और इख़्तिलाफ़ के		ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के	
अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त	30	अख़्लाक़े करीमा की एक झलक	89
क़ियामत के दिन रोशन चेहरे वाले लोग	32	मश्वरा और तवक्कुल के मा'ना और	
इस उम्मत का इत्तिहाद शरई दलील है	35	तवक्कुल की तरग़ीब	91
बनी इसराईल और उम्मते मुहम्मदिय्यह की		ख़ियानत की मज़म्मत	94
अफ़्ज़लिय्यत में फ़र्क़	35	शुहदा की शान	100
नेकी की दा'वत देने की तरग़ीब	36	शुहदा के 6 फ़ज़ाइल	102
आयते मुबारका "یَتْلُوْنَ اٰیٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّیْلِ" से		लम्बी उ़म्र पाना कैसा है ?	109
मा'लूम होने वाले अह़काम	40	इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ 10 अह़ादीस	112

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
ज़कात अदा न करने की वईद	115
बुख़्ल की ता'रीफ़	116
बुख़्ल की मज़म्मत	116
बुख़्ल का इ़ल्मी और अ़मली इलाज	117
अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी **अल्लाह** तआ़ला की गुस्ताख़ी है	119
एक अहम नुक्ता	120
मौत की याद और इस के बा'द की तय्यारी की तरग़ीब	122
ह़क़ीक़ी काम्याबी क्या है ?	126
दुन्या की ज़िन्दगी धोके का सामान है	127
इ़ल्मे दीन छुपाना गुनाह है	130
ख़ुद पसन्दी और ह़ुब्बे जाह की मज़म्मत	131
अल्लाह तआ़ला की शान	134
साइन्सी उ़लूम ह़ासिल करना कब बाइ़से सवाब है	136
अ़क़्ल मन्द लोगों के अहम काम	138
काएनात में तफ़क्कुर की ज़रूरत	139
नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार करने की तरग़ीब	142
दुआ़ क़बूल होने के लिये एक अ़मल	144
हिजरत और जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस	145
दुन्या की राह़तें और जन्नत की अबदी ने'मतें किस के लिये हैं ?	148
इस्लामी सरह़द की निगहबानी करने के फ़ज़ाइल	152
سورة النساء	153
मक़ामे नुज़ूल	153
रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	153
"निसाअ" नाम रखे जाने की वज्ह	153
सूरए निसाअ के फ़ज़ाइल	153
सूरए निसाअ के मज़ामीन	154
सूरए आले इ़मरान के साथ मुनासबत	155
इन्सानों की इब्तिदा किस से हुई ?	157
रिश्तेदारी तोड़ने की मज़म्मत	159
यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मसाइल	160
निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई़ मसाइल	163
महर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल	164
विरासत तक़्सीम करने से पहले ग़ैर वारिसों को देना	168
यतीमों का माल नाह़क़ खाने की वईदें	171
यतीम का माल खाने से क्या मुराद है ?	172
यतीम की अच्छी परवरिश के फ़ज़ाइल	172
वुरसा में विरासत का माल तक़्सीम करने की सूरतें	176
इस के इ़लावा 2 अहम उसूल	177
ज़िना के सुबूत के लिये गवाही की शराइत़	179
ज़िना की मज़म्मत	180
तौबा के मा'ना	182
काफ़िर के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने का शरई़ हुक्म	184
बीवियों पर ज़ुल्मो सितम करने वाले ग़ौर करें	186
मुस्बत ज़ेह्नी सोच के फ़वाइद	187
ज़ियादा महर मुक़र्रर करना जाइज़ है	188
ख़ल्वते सह़ीह़ा की ता'रीफ़ और इस का हुक्म	189
पांचवां पारह	194
जंगी क़ैदियों से मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम की ता'लीमात	195

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़हा
महर के चन्द ज़रूरी मसाइल	196
औ़रत से नफ़्अ़ उठाने की जाइज़ सूरतें	196
बांदी से निकाह़ करने के मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल	198
निकाह़ का शरई हुक्म	199
मुश्क की ख़ुश्बू में बसे हुए बुज़ुर्ग	202
ह़राम माल कमाने की मज़म्मत	204
तिजारत के फ़ज़ाइल	205
तिजारत के आदाब	206
ख़ुद को हलाक करने की सूरतें	208
कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ और ता'दाद	211
गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस	212
कबीरा गुनाहों के बारे में मश्हूर ह़दीस	213
चालीस गुनाहों की फ़ेहरिस्त	213
दिल के सब्रो क़रार का नुस्ख़ा	215
मर्द के औ़रत से अफ़्ज़ल होने की वुजूहात	219
नेक बीवी के औसाफ़ और फ़ज़ाइल	220
निकाह़ कैसी औ़रत से करना चाहिये ?	220
ना फ़रमान बीवी की इस्लाह़ का त़रीक़ा	221
शौहर और बीवी दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखें	221
बीवी जब अपनी ग़लत़ी की मुआ़फ़ी मांगे तो उसे मुआ़फ़ कर दिया जाए	222
बन्दों के बाहमी हुक़ूक़	224
रियाकारी की मज़म्मत	229
शैत़ान के बहकाने का अन्दाज़	231
अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से हर एक को डरना चाहिये	236
नशे की ह़ालत में कलिमए कुफ़्र बोलने का हुक्म	238
तयम्मुम का त़रीक़ा	239
तयम्मुम के 2 अह़काम	239
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम	244
ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम	244
मग़्फ़िरत की उम्मीद पर गुनाह करना बहुत ख़त़रनाक है	245
ह़ज़रते वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम	246
ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत	248
त़ाग़ूत का मा'ना	250
इस्लामी ता'लीमात के शाहकार	254
क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आ़दिलाना फ़ैसला	255
नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है	257
बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहने के 3 वाक़िआ़त	263
मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर ह़ाजतें और मग़्फ़िरत त़लब करने के 5 वाक़िआ़त	265
आयत "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا" से मा'लूम होने वाले अह़काम	267
आयत "فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	269

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ का शौके़ रफ़ाक़त	272
सिद्क़ के मा'ना और इस के मरातिब	274
जंगी तय्यारियों से मुतअ़ल्लिक़ हिदायात	277
ख़ुद ग़रज़ी और मफ़ाद परस्ती की मज़म्मत	279
ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का जज़्बए शहादत	280
आयत "وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	282
क़ुरआने मजीद में ग़ौरो फ़िक्र करना इबादत है लेकिन !	289
ज़िन्दगी की इस्लाह़ का एक अहम उसूल	291
सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शुजाअ़त	293
सलाम से मुतअ़ल्लिक़ शरई़ मसाइल	296
इम्काने किज़्ब का रद	297
आयत "وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ" से मा'लूम होने वाले अह़काम	302
मुसल्मान को नाह़क़ क़त्ल करने की मज़म्मत	309
मुसल्मानों का बाहमी तअ़ल्लुक़ कैसा होना चाहिये ?	310
मुसल्मान को क़त्ल करना कैसा है ?	311
निय्यत की अ़ज़मत और जिहाद का सवाब	314
जन्नत में मुजाहिदीन के दरजात और मुजाहिदीन की बख़्शिश	316
हिजरत कब वाजिब है	318
हिजरत की अक़्साम और उन के अह़काम	318
नेकी का इरादा कर के नेकी करने से आ़जिज़ हो जाने वाला उस नेकी का सवाब पाएगा	321
किन कामों के लिये वत़न छोड़ना हिजरत में दाख़िल है	321
नमाज़े क़स्र के बारे में 4 मसाइल	322
आयत में बयान किया गया नमाज़े ख़ौफ़ का त़रीक़ा	325
अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई़ मसाइल	327
सफ़र में दो नमाज़ों को जम्अ़ करने का शरई़ हुक्म	328
हुक्काम फ़ैसला करने में कोताही न करें	332
तअ़स्सुब का रद	332
ख़ियानत करने वालों का साथ देने की मज़म्मत	333
तक़्वा व त़हारत की बुन्याद	335
शफ़ाअ़त का सुबूत	337
गुनाहे जारिया का सबब बनने वाले को गुनाह करने वाले के गुनाह से भी ह़िस्सा मिलेगा	338
बे गुनाह पर तोहमत लगाने की मज़म्मत	339
इस्लाम का आ'ला अख़्लाक़ी उसूल	340
नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें	342
आयत "لَا خَیْرَ فِیْ كَثِیْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ" के चन्द पहलू	344
मुसल्मानों का इज्माअ़ हुज्जत और दलील है	346
आयत "اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	347

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा
लम्बी उम्मीद रखने की मज़म्मत	349
अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई चीज़ों में ख़िलाफ़े शरअ़ तब्दीलियां करने का शरई हुक्म	351
अल्लाह तआ़ला के ख़लील व ह़बीब	355
ख़लील और ह़बीब का फ़र्क़	356
औ़रतों और कमज़ोर लोगों को उन के हुक़ूक़ दिलाना **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है	359
दिल लालच के फन्दे में फंसे हुए हैं	362
औ़रत और मर्द बिल्कुल एक दूसरे के मोह़ताज नहीं	364
ह़क़ फ़ैसले की अ़ज़ीम तरीन मिसाल	369
बुरी सोह़बत की मज़म्मत	374
नमाज़ में सुस्ती करना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत है	377
नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ पैदा करने का आसान नुस्ख़ा	377
छटा पारह	381
एक दूसरे को गाली देने की मज़म्मत	381
मेहमान नवाज़ी से ख़ुश न होने वालों को नसीह़त	383
ज़ालिम के ज़ुल्म को बयान करना जाइज़ है	383
मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल	384
मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त के फ़ज़ाइल	385
कबीरा गुनाह करने वाला काफ़िर नहीं	388
सूद और रिश्वत की मज़म्मत	399
रासिख़ फ़िल इल्म की ता'रीफ़	400
ईसाइयों के फ़िर्क़े और उन के अ़क़ाइद	408
नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान का बयान	411
कलालह की विरासत के अह़काम	415
سورة المائدة	416
सूरए माइदह का तआ़रुफ़	416
मक़ामे नुज़ूल	416
रुकूअ़ और आयात की ता'दाद	416
"माइदह" नाम रखे जाने की वज्ह	416
सूरए माइदह के फ़ज़ाइल	416
सूरए माइदह के मज़ामीन	417
सूरए निसाअ के साथ मुनासबत	419
नेकी के कामों में एक दूसरे की मदद करने और गुनाह के कामों में मदद न करने का हुक्म	424
दीनी काम्याबी के दिन ख़ुशी मनाना जाइज़ है	428
आयत "وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا" से मा'लूम होने वाले अह़काम	429
शिकार के दूसरे त़रीक़े का शरई हुक्म	432
अहले किताब से निकाह़ के चन्द अहम मसाइल	433
वुज़ू के फ़राइज़	435
वुज़ू के चन्द अह़काम	435
जनाबत के अस्बाब और उन का शरई हुक्म	436
आयत "وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	437
अ़दलो इन्साफ़ के दो आ'ला नुमूने	439
नेक आ'माल की तरग़ीब	441
गुनाहों की वज्ह से दिल सख़्त हो जाते हैं	446
ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उलूहिय्यत की तरदीद	453

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
खुद को आ'माल से मुस्तग़्नी जानना ईसाइयों का अ़क़ीदा है	454
ज़मानए फ़ितरत से क्या मुराद है ?	456
मीलाद मनाने का सुबूत	457
इक़्तिदार मिलने पर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करने का बेहतरीन त़रीक़ा	457
हुक्मरानों के लिये नसीह़त आमोज़ 4 अह़ादीस	458
इक़्तिदार के बोझ से अश्कबार	458
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की अफ़्ज़लिय्यत	462
आयत "قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	463
हाबील और क़ाबील का वाक़िआ़	466
हाबील और क़ाबील के वाक़िए से ह़ासिल होने वाले अस्बाक़	468
ह़सद, क़त्ल और हुस्न परस्ती की मज़म्मत	469
क़त्ले नाह़क़ की 2 वईदें	470
अम्नो सलामती का मज़्हब	470
क़त्ल की जाइज़ सूरतें	471
डाकू की सज़ा की शराइत़	472
डाकू की 4 सज़ाएं	473
इस्लामी सज़ाओं की ह़िक्मत	473
नेक बन्दों को वसीला बनाना जाइज़ है	475
ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करना बहुत ज़रूरी है	478
चोरी करने का शरई हुक्म और इस की वईदें	480
चोरी की ता'रीफ़	480
चोरी से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल	480

उ़न्वान	सफ़ह़ा
रिश्वत का शरई हुक्म और इस की वईदें	486
रिश्वत से ह़ासिल किये हुए माल का शरई हुक्म	488
पहली शरीअ़तों के बयान किये गए अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	492
इन्जील पर अ़मल करने से मुतअ़ल्लिक़ एक ए'तिराज़ का जवाब	495
कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात का शरई हुक्म	501
कामिल मुसल्मान का नुमूना	506
आयत "وَ اِذَا نَادَیْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	511
दीनी चीज़ों का मज़ाक़ उड़ाने वालों का रद	511
यहूदियों की सिफ़ात और मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार	516
उ़लमा पर बुराई से मन्अ़ करना ज़रूरी है	517
आयत "وَ لَیَزِیْدَنَّ كَثِیْرًا مِّنْهُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	520
दीन की पाबन्दी और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त वुस्अ़ते रिज़्क़ का ज़रीआ़ है	522
औलियाए किराम और उन के मज़ारात के ह़वाले से गुलू	533
गुनाह से रोकना वाजिब और मन्अ़ करने से बाज़ रहना गुनाह है	536
कुफ़्फ़ार से दोस्ती का दम भरने वाले मुसल्मानों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत	537
मआख़िज़ो मराजेअ़	541
ज़िम्नी फ़ेहरिस्त	546

www.dawateislami.net

لَنۡ تَنَالُوا

4

www.dawateislami.net

पारह नम्बर...... 4

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो और तुम जो कुछ ख़र्च करो **अल्लाह** को मा'लूम है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम हरगिज़ भलाई को नहीं पा सकोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करो और तुम जो कुछ ख़र्च करते हो **अल्लाह** उसे जानता है।

﴾لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا﴿ **: तुम हरगिज़ भलाई को नहीं पा सकोगे जब तक राहे ख़ुदा में ख़र्च न करो।** इस आयत में भलाई से मुराद तक़्वा और फ़रमां बरदारी है और ख़र्च करने के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि "यहां ख़र्च करने में वाजिब और नफ़्ली तमाम सदक़ात दाख़िल हैं।" इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने फ़रमाया : जो माल मुसल्मानों को मह़बूब हो उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करने वाला इस आयत की फ़ज़ीलत में दाख़िल है ख़्वाह वोह एक खजूर ही हो।(1)

राहे ख़ुदा में अपना प्यारा माल ख़र्च करने के 5 वाक़िआ़त

इस आयते मुबारका पर अ़मल के सिल्सिले में हमारे अस्लाफ़ के 5 वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... सह़ीह़ बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है कि "ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीने में बड़े मालदार थे, उन्हें अपने अम्वाल में बैरुह़ा नामी एक बाग़ बहुत पसन्द था, जब येह आयत नाज़िल हुई तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में खड़े हो कर अ़र्ज़ की : मुझे अपने अम्वाल में "बैरुह़ा" बाग़ सब से प्यारा है, मैं उसी को राहे

(1)......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۹۲، ۱/۲۷۲.

www.dawateislami.net

खुदा में सदक़ा करता हूं।'' हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस पर मसर्रत का इज़्हार फ़रमाया और फिर हज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे काएनात صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इशारे पर वोह बाग़ अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम कर दिया।(1)

(2)...... हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि ''मेरे लिये एक बांदी ख़रीद कर भेज दो।'' जब वोह आई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत पसन्द आई, लेकिन फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयत पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उस को आज़ाद कर दिया।(2)

(3)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने इस आयत ''لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ'' की तिलावत की तो मैं ने **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा की हुई ने'मतों में ग़ौर किया (कि कौन सी ने'मत मुझे सब से ज़ियादा प्यारी है, जब ग़ौर किया) तो मैं ने अपनी बांदी को अपने नज़्दीक सब से ज़ियादा प्यारा पाया, इस पर मैं ने कहा कि येह **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये आज़ाद है और अगर येह बात न होती कि जिस चीज़ को मैं ने **अल्लाह** तआ़ला के लिये कर दिया, उस की त़रफ़ न लौटूंगा तो मैं उस बांदी से निकाह़ कर लेता।(3)

(4)...... हज़रते अ़म्र बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब येह आयत ''لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ'' नाज़िल हुई तो हज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने (पसन्दीदा) घोड़े को ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप इस घोड़े को सदक़ा फ़रमा दें। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह घोड़ा उन के बेटे हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा फ़रमा दिया तो हज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मैं ने इस घोड़े को मह़्ज़ (**अल्लाह** तआ़ला की राह में) सदक़ा करने का इरादा किया है ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक तेरा सदक़ा क़बूल कर लिया गया है।''(4)

---

1 ......بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الزکاۃ علی الاقارب، ۱/۴۹۳، الحدیث: ۱۴۶۱، مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ والصدقۃ علی الاقربین... الخ، ص ۵۰۰، الحدیث: ۴۲(۹۹۸).

2 ......بغوی، ال عمران، تحت الآیۃ: ۹۲، ۱/۲۵۳.

3 ......مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہم، ذکر عبد اللّٰہ بن عمر... الخ، کان ابن عمر ازھد القوم واصوبہ رأیًا، ۴/۷۲۸، الحدیث: ۶۴۳۵.

4 ......ابن عساکر، ذکر من اسمہ زید، زید بن حارثہ بن شراحیل، ۱۹/۳۶۷ .

www.dawateislami.net

(5)...... ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शकर की बोरियां ख़रीद कर सदक़ा करते थे। उन से कहा गया : इस की क़ीमत सदक़ा क्यूं नहीं कर देते ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : शकर मुझे मह़बूबो मरग़ूब है, मैं चाहता हूं कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च करूं।[1]

अल्लाह तआ़ला सब मुसल्मानों को अपनी मह़बूब और पसन्दीदा चीज़ें राहे ख़ुदा में देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।[2]

﴿وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ﴾ : **और तुम जो कुछ ख़र्च करते हो अल्लाह उसे जानता है।** या'नी **अल्लाह** तआ़ला जानता है कि तुम उस की राह में उ़म्दा, नफ़ीस और अपनी पसन्दीदा चीज़ ख़र्च कर रहे हो या रद्दी, नाकारा और अपनी ना पसन्दीदा चीज़ ख़र्च कर रहे हो, तो जैसी चीज़ तुम ख़र्च करोगे उसी के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें जज़ा अ़त़ा फ़रमाएगा।[3]

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सब खाने बनी इसराईल को ह़लाल थे मगर वोह जो या'क़ूब ने अपने ऊपर ह़राम कर लिया था तौरैत उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरैत ला कर पढ़ो अगर सच्चे हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तमाम खाने बनी इसराईल के लिये ह़लाल थे सिवाए उन खानों के जो या'क़ूब ने तौरात नाज़िल किये जाने से पहले अपने ऊपर ह़राम कर लिये थे। तुम फ़रमाओ, तौरात लाओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।

---

1 ......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ٩٢، ص ١٧٢.

2 ...... सदक़ात के फ़ज़ाइल व अह़काम और इन से मुतअ़ल्लिक़ दीगर मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "ज़ियाए सदक़ात" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ करना फ़ाएदे मन्द है।

3 ......روح البيان، ال عمران، تحت الآية: ٩٢، ٢/٦٣.

www.dawateislami.net

﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ﴿ : तमाम खाने बनी इसराईल के लिये ह़लाल थे ।﴾ **शाने नुज़ूल :** मदीनए मुनव्वरह के यहूदियों ने सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ए'तिराज़ किया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने आप को मिल्लते इब्राहीमी पर ख़याल करते हैं हालां कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ऊंट का गोश्त और दूध नहीं खाते थे जब कि आप खाते हैं, तो आप मिल्लते इब्राहीमी पर कैसे हुए ? हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ह़लाल थीं । यहूदी कहने लगे कि येह ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर भी ह़राम थीं, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर भी ह़राम थीं और हम तक ह़राम ही चली आई । इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस में बताया गया कि यहूदियों का येह दा'वा ग़लत़ है, बल्कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम, ह़ज़रते इस्माईल, ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ह़लाल थीं । ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने किसी सबब से इन को अपने ऊपर ह़राम फ़रमाया और येह हुरमत उन की औलाद में बाक़ी रही । यहूदियों ने इस का इन्कार किया तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तौरात में येह मज़्मून मौजूद है, अगर तुम्हें इस से इन्कार है तो तौरात लाओ और उस में से निकाल कर दिखा दो कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ह़राम थीं । इस पर यहूदियों को अपनी ज़िल्लतो रुस्वाई का ख़ौफ़ हुवा और वोह तौरात न ला सके, उन का झूटा होना ज़ाहिर हो गया और उन्हें शरमिन्दगी उठानी पड़ी ।[1]

इस से मा'लूम हुवा कि अह़काम का मन्सूख़ होना हमेशा से होता आ रहा है । लिहाज़ा क़ुरआन की बा'ज़ आयात के मन्सूख़ होने पर कोई ए'तिराज़ नहीं । इस पर तफ़्सीली कलाम सूरए बक़रह की आयत 106 में गुज़र चुका है । येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़ल्म शरीफ़ **अल्लाह** तआ़ला की ख़ास अ़त़ा से है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तौरात व इन्जील से ख़बरदार हैं और **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ैबी उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए हैं ।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾

وقف جبریل علیہ السلام

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۹۳، ۱/۲۷۳.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो इस के बा'द जो **अल्लाह** पर झूट बांधे तो वोही ज़ालिम हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर इस के बा'द भी जो **अल्लाह** पर झूट बांधे तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

﴿فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ﴾ : **फिर जो अल्लाह पर झूट बांधे ।** या'नी इस बात की वज़ाहत तो हो गई कि बनी इसराईल पर जो कुछ खाने ह़राम हैं येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से नहीं हैं बल्कि बा'द में ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़राम करने से हुए, तो जो इस ह़क़ीक़त के वाज़ेह़ हो जाने के बा'द भी **अल्लाह** तआ़ला पर झूट बांधे और कहे कि "मिल्लते इब्राहीमी में ऊंटों के गोश्त और दूध **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम किये थे" वोह ज़ालिम है। इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि इ़ल्म के बा वुजूद गुनाह करना ज़ियादा सख़्त है नीज़ ह़लाल को अपनी त़रफ़ से बिला दलील ह़राम कहना **अल्लाह** तआ़ला पर इफ़्तिरा करना है।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۗ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** सच्चा है तो इब्राहीम के दीन पर चलो जो हर बात़िल से जुदा थे और शिर्क वालों में न थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ मह़बूब ! तुम फ़रमाओ, **अल्लाह** ने सच फ़रमाया लिहाज़ा तुम इब्राहीम के दीन पर चलो जो हर बात़िल से जुदा थे और वोह मुश्रिकों में से न थे।

﴿فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا﴾ : **लिहाज़ा तुम इब्राहीम के दीन पर चलो जो हर बात़िल से जुदा थे ।** इस आयत में दीने इब्राहीमी की पैरवी का हुक्म दिया। इस से मुराद येह है कि "दीने मुह़म्मदी की पैरवी करो, क्यूं कि इस की पैरवी मिल्लते इब्राहीमी की पैरवी है, दीने मुह़म्मदी उस मिल्लत को अपने अन्दर लिये हुए है।"

www.dawateislami.net

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक सब से पहला घर जो लोगों की इबादत के लिये बनाया गया वोह है जो मक्का में है बरकत वाला है और सारे जहान वालों के लिये हिदायत है।

﴾إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ﴿ : **बेशक सब से पहला घर जो लोगों की इबादत के लिये बनाया गया।** यहूदियों ने कहा था कि ''हमारा क़िब्ला या'नी बैतुल मुक़द्दस का'बे से अफ़्ज़ल है क्यूं कि येह गुज़श्ता अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का क़िब्ला रहा है, नीज़ येह ख़ानए का'बा से पुराना है।'' उन के रद में येह आयते करीमा उतरी।[1]

और बता दिया गया कि रूए ज़मीन पर इबादत के लिये सब से पहले जो घर तय्यार हुवा वोह ख़ानए का'बा है। ह़दीस शरीफ़ में है कि ''का'बए मुअ़ज़्ज़मा बैतुल मुक़द्दस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया।''[2]

और फ़िरिश्तों का क़िब्ला बैतुल मा'मूर है जो आस्मान में है और ख़ानए का'बा के बिल्कुल ऊपर है।[3]

का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ख़ुसूसिय्यात

इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बहुत सी ख़ुसूसिय्यात बयान हुई हैं :

(1)...... सब से पहली इबादत गाह है कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ी।

(2)...... तमाम लोगों की इबादत के लिये बनाया गया जब कि बैतुल मुक़द्दस मख़्सूस वक़्त में ख़ास लोगों का क़िब्ला रहा।

(3)...... मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वाक़ेअ़ है जहां एक नेकी का सवाब एक लाख है।

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٩٦، ١/٢٧٤.

2 ......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ١١- باب، ٢/٤٢٧، الحدیث: ٣٣٦٦.

3 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فی فضائل الامکنۃ، ٧/٤٩، الجزء الرابع عشر، الحدیث: ٣٨٠٨١.

www.dawateislami.net

(4)...... इस का ह़ज फ़र्ज़ किया गया।

(5)...... ह़ज हमेशा सिर्फ़ इसी का हुवा, बैतुल मुक़द्दस क़िब्ला ज़रूर रहा है लेकिन कभी इस का ह़ज न हुवा।

(6)...... इसे अम्न का मक़ाम क़रार दिया।

(7)...... इस में बहुत सी निशानियां रखी गईं जिन में एक मक़ामे इब्राहीम है।

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : इस में खुली निशानियां हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का ह़ज करना है जो इस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो **अल्लाह** सारे जहान से बे परवाह है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस में खुली निशानियां हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह है और जो इस में दाखि़ल हुवा अम्न वाला हो गया और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का ह़ज करना फ़र्ज़ है जो इस तक पहुंचने की त़ाक़त रखता है और जो इन्कार करे तो **अल्लाह** सारे जहान से बे परवाह है।

﴿فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ **: इस में खुली निशानियां हैं।**﴾ ख़ानए का'बा की अ़ज़्मतो शान का बयान चल रहा है, इसी ज़िम्न में फ़रमाया कि ख़ानए का'बा में बहुत सी फ़ज़ीलतें और निशानियां हैं जो इस की इ़ज़्ज़तो हुरमत और फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं। इन निशानियों में से बा'ज़ येह हैं कि परिन्दे का'बा शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और इस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परिन्दे बीमार हो जाते हैं वोह अपना इ़लाज येही करते हैं कि हवाए का'बा में हो कर गुज़र जाएं, इसी से उन्हें शिफ़ा होती है और वह़शी जानवर एक दूसरे को ह़रम की हुदूद में ईज़ा नहीं देते, ह़त्ता कि इस सर ज़मीन में कुत्ते हिरन के शिकार के लिये नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते नीज़ लोगों के दिल का'बए

www.dawateislami.net

मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ खिंचते हैं और इस की त़रफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमुआ़ को अरवाहे़ औलिया इस के इर्द गिर्द ह़ाज़िर होती हैं और जो कोई इस की बे ह़ुर्मती व बे अदबी का इरादा करता है बरबाद हो जाता है। इन्हीं आयात में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन का आयत में बयान फ़रमाया गया।(1)

﴿مَقَامُ اِبْرٰهِیْمَ : **इब्राहीम के खड़े होने की जगह है।**﴾ मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का'बा शरीफ़ की ता'मीर के वक़्त खड़े हुए थे। येह पथ्थर ख़ानए का'बा की दीवारों की ऊंचाई के मुत़ाबिक़ ख़ुद ब ख़ुद ऊंचा होता जाता था। इस में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़दमे मुबारक के निशान थे जो त़वील ज़माना गुज़रने और ब कसरत हाथों से मस होने के बा वुजूद अभी तक कुछ बाक़ी हैं।(2)

बुज़ुर्गों से निस्बत की बरकत

इस से मा'लूम हुवा कि जिस पथ्थर से पैग़म्बर के क़दम छू जाएं वोह मुतबर्रक और शआ़इरुल्लाह और आयतुल्लाह या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन जाता है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىٕرِ اللّٰهِ(3)

तरजमए कन्ज़ुल इमान : बेशक सफ़ा और मर्वह **अल्लाह** की निशानियों में से हैं।

ज़ाहिर है कि येह दोनों पहाड़ ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के क़दम पड़ जाने से शआ़इरुल्लाह बन गए।

﴿وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا : **और जो इस में दाख़िल हुवा अम्न वाला हो गया।**﴾ ख़ानए का'बा की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला ने पूरे ह़रम की ह़ुदूद को अम्न वाला बना दिया, यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्ल व जुर्म कर के ह़ुदूदे ह़रम में दाख़िल हो जाए तो वहां न उस को क़त्ल किया जाएगा और न उस पर ह़द क़ाइम की जाएगी। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि "अगर मैं अपने वालिद ख़त़्त़ाब के क़ातिल को भी ह़रम शरीफ़ में पाऊं तो उस को हाथ न लगाऊं यहां तक कि वोह वहां से बाहर आए।"(4)

1 ......خازن،ال عمران،تحت الآية:٩٧، ١/٢٧٦،تفسيرات احمديه، ال عمران،تحت الآية:٩٧،ص ٢٠١-٢٠٢،ملتقطاً.
2 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ٩٧، ١/٢٧٦، ملتقطاً.
3 ......بقره:١٥٨.
4 ......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ٩٧، ص ١٧٤.

www.dawateislami.net

हरम से क्या मुराद है ?

हरम से मुराद ख़ानए का'बा के इर्द गिर्द कई किलो मीटर फैला हुवा अ़लाक़ा है जहां बा क़ाइदा निशानात वग़ैरा लगा कर इसे मुमताज़ कर दिया गया है। जो लोग ह़ज व उ़म्रह करने जाते हैं उन्हें उ़मूमन इस की पहचान हो जाती है क्यूं कि वहां जा कर जब लोगों का उ़म्रह करने का इरादा होता है तो उ़म्रह करने के लिये हुदूदे हरम से बाहर जा कर एहराम बांध कर आना होता है।

﴾وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ﴿ : **और अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का ह़ज करना फ़र्ज़ है।** इस आयत में ह़ज की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस का कि इस्तित़ाअ़त शर्त़ है। ह़दीस शरीफ़ में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर "ज़ादे राह" और "सुवारी" से फ़रमाई है।(1)

ह़ज फ़र्ज़ होने के लिये ज़ादे राह की मिक़्दार

खाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जा कर वापस आने तक उस के लिये काफ़ी हो और येह वापसी के वक़्त तक अहलो इ़याल के ख़र्चे के इ़लावा होना चाहिये। रास्ते का अम्न भी ज़रूरी है क्यूं कि इस के बिग़ैर ह़ज की अदाएगी लाज़िम नहीं होती। मज़ीद तफ़्सील फ़िक़्ही किताबों में मुलाहज़ा फ़रमाएं।(2)

﴾وَمَنْ كَفَرَ﴿ : **और जो मुन्किर हो।** इर्शाद फ़रमाया कि "ह़ज की फ़र्ज़िय्यत बयान कर दी गई, अब जो इस का मुन्किर हो तो **अल्लाह** तआ़ला उस से बल्कि सारे जहान से बे नियाज़ है।" इस से **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी ज़ाहिर होती है और येह मस्अला भी साबित होता है कि फ़र्ज़े क़त़ई का मुन्किर काफ़िर है।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾

---

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة ال عمران، ٦/٥، الحديث: ٣٠٠٩.

2 ...... आसान अन्दाज़ में ह़ज के मसाइल सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ "रफ़ीक़ुल ह़रमैन" (मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो **अल्लाह** की आयतें क्यूं नहीं मानते और तुम्हारे काम **अल्लाह** के सामने हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : ऐ अहले किताब ! तुम **अल्लाह** की आयतों का इन्कार क्यूं करते हो हालां कि **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल पर गवाह है ?

﴿لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ﴾ **: तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यूं करते हो ।** यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयतों से मुराद तौरैत की वोह आयात हैं जिन में सुल्ताने दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ का बयान है और वोह अक़्ली दलाइल मुराद हैं जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सदाक़त पर दलालत करते हैं।

قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यूं **अल्लाह** की राह से रोकते हो उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम खुद इस पर गवाह हो और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों से बे ख़बर नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फमाओ : ऐ अहले किताब ! तुम ईमान लाने वालों को **अल्लाह** के रास्ते से क्यूं रोकते हो ? तुम इस में भी टेढ़ापन चाहते हो हालां कि तुम खुद इस पर गवाह हो और **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं।

﴿قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ﴾ **: तुम फ़रमाओ : ऐ अहले किताब !** इस आयत में भी अहले किताब ही से ख़िताब है कि ''ऐ अहले किताब ! तुम उन लोगों को जिन के दिलों में अभी ईमान मज़बूत नहीं हुवा, उन्हें ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में तौरैत की आयतें छुपा कर और येह कह कर क्यूं बहकाते हो कि येह वोह नबी नहीं जिन की ख़बर तौरैत व इन्जील में है। येह कह कर तुम उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते से क्यूं रोकते हो ? हालां कि तुम खुद इस बात के गवाह हो कि सय्यिदे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान तौरैत में लिखी हुई है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जो दीन मक़्बूल है वोह सिर्फ़ दीने इस्लाम ही है।

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ किताबियों के कहे पर चले तो वोह तुम्हारे ईमान के बा'द तुम्हें काफ़िर कर छोड़ेंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम अहले किताब में से किसी गुरौह की इत़ाअ़त करो तो वोह तुम्हें तुम्हारे ईमान के बा'द कुफ़्र की ह़ालत में लौटा देंगे।

﴿اِنْ تُطِيْعُوْا : **अगर तुम इत़ाअ़त करो**।﴾ शास बिन क़ैस यहूदी मुसल्मानों की मजलिस के क़रीब से गुज़रा जिस में अन्सार के दोनों क़बीले औस और ख़ज़रज निहायत मह़ब्बत से बातें कर रहे थे, इस्लाम से पहले इन की आपस में बहुत जंग थी उस यहूदी को इन के इत्तिफ़ाक़ से बड़ी तक्लीफ़ हुई चुनान्चे उस ने एक नौ जवान यहूदी से कहा कि तुम इन की गुज़श्ता जंगें याद दिला कर इन्हें लड़ा दो। उस ने ऐसा ही किया और कुछ क़सीदे पढ़े जिन में इन की गुज़श्ता जंगों का ज़िक्र था। उन क़साइद को सुन कर अन्सार को अपनी गुज़श्ता जंगें याद आ गईं और वोह आपस में लड़ पड़े। क़रीब था कि ख़ूनरेज़ी हो जाए, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ौरन मौक़अ़ पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि क्या जाहिलिय्यत की ह़रकतें करते हो ह़ालां कि मैं तुम्हारे दरमियान मौजूद हूं। येह सुन कर उन्हों ने हथियार फेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे के गले लग गए। इस पर येह आयते करीमा उतरी।[1]

इस से मा'लूम हुवा कि यहां आयत में कुफ़्र से मुराद काफ़िरों वाले काम हैं या'नी अपनी "**अना**" के लिये आपस में जंग करना। **दूसरी बात** येह मा'लूम हुई कि फ़ित्ना फ़साद बरपा करना और मुसल्मानों को आपस में लड़ाना यहूदियों का काम और आपस में प्यार मह़ब्बत पैदा करना और सुल्ह़ करवाना सरापा रह़मत, मुजस्समे शफ़्क़त, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है।

1 ......در منثور، ال عمران، تحت الآية: ١٠٠، ٢/٢٧٨-٢٧٩.

www.dawateislami.net

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ؑ ﴿۱۰۱﴾

ربع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम क्यूंकर कुफ़्र करोगे तुम पर तो **अल्लाह** की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उस का रसूल तशरीफ़ फ़रमा है और जिस ने **अल्लाह** का सहारा लिया तो ज़रूर वोह सीधी राह दिखाया गया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (ईमान वालो ! अब) तुम क्यूं कुफ़्र करोगे हालां कि तुम्हारे सामने **अल्लाह** की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उस का रसूल तशरीफ़ फ़रमा है और जिस ने **अल्लाह** का सहारा मज़बूती से थाम लिया तो उसे यक़ीनन सीधा रास्ता दिखा दिया गया।

﴾وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ : **और तुम क्यूं कुफ़्र करोगे ?**﴿ यहां इब्तिदाअन सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से ख़िताब है कि ऐ जमाअ़ते सहाबा ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) तुम काफ़िरों की त़रह़ आपस में कैसे लड़ सकते हो जब कि तुम हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सोह़बत याफ़्ता हो और उन की ज़बाने मुबारक से क़ुरआने मजीद सुनते हो। इस आयत में आ़म मुसल्मानों को भी इस ए'तिबार से नसीह़त है कि हमारे दरमियान क़ुरआन मौजूद है और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीमात मौजूद हैं तो फिर आपस में नफ़्सानी लड़ाई किस त़रह़ हो सकती है ?

﴾وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ : **और जिस ने अल्लाह का सहारा मज़बूती से थाम लिया।**﴿ जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सहारा थामा या'नी उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उस के दीन को मज़बूती से थाम लिया और ज़िन्दगी के जुम्ला उमूर में उसी की त़रफ़ रुजूअ़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से वोह ज़रूर हिदायत पा जाएगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसल्मान।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो! **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और ज़रूर तुम्हें मौत सिर्फ़ इस्लाम की ह़ालत में आए।

﴿اِتَّقُوا اللّٰهَ : **अल्लाह से डरो।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ऐसा डरो जैसा डरने का ह़क़ है। इस से मुराद येह है कि ब क़दरे त़ाक़त **अल्लाह** तआ़ला से डरो। इस की तफ़्सीर वोह आयत है जिस में फ़रमाया गया :

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो **अल्लाह** से डरो जितनी त़ाक़त रखते हो।

नीज़ आयत के आख़िरी ह़िस्से में फ़रमाया कि इस्लाम पर ही तुम्हें मौत आए। इस से मुराद येह है कि अपनी त़रफ़ से ज़िन्दगी के हर लम्ह़े में इस्लाम पर ही रहने की कोशिश करो ताकि जब तुम्हें मौत आए तो ह़ालते इस्लाम पर ही आए।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِیْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَیْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की रस्सी मज़्बूत़ थाम लो सब मिल कर और आपस में फट न जाना (फ़िर्क़ों में न बट जाना) और **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था (दुश्मनी थी) उस ने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए और तुम एक ग़ार दोज़ख़ के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा दिया **अल्लाह** तुम से यूं ही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ।

(1) تغابن:١٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम सब मिल कर **अल्लाह** की रस्सी को मज़्बूती के साथ थाम लो और आपस में तफ़्रिक़ा मत डालो और **अल्लाह** का एह्सान अपने ऊपर याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में मिलाप पैदा कर दिया पस उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई भाई बन गए और तुम तो आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया। **अल्लाह** तुम से यूं ही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है ताकि तुम हिदायत पा जाओ।

﴾وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِیْعًا﴿ **: और तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़्बूती के साथ थाम लो।** इस आयत में उन अफ़्आल व ह़रकात की मुमानअ़त की गई है जो मुसल्मानों के दरमियान तफ़्रीक़ का सबब हों, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि तुम सब मिल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रस्सी को मज़्बूती से थाम लो और आपस में फ़िर्क़ों में तक़्सीम न हो जाओ जैसे यहूदो नसारा ने फ़िर्क़े बना लिये।

सुल्हे कुल्लिय्यत का रद

याद रहे कि अस्ल रास्ता और त़रीक़ा मज़्हबे अहले सुन्नत है, इस के सिवा कोई राह इख़्तियार करना दीन में तफ़्रीक़ करना है और येह मम्नूअ़ है। बा'ज़ लोग येह आयत ले कर अहले सुन्नत समेत सब को ग़लत़ क़रार देते हैं। येह सरासर ग़लत़ है क्यूं कि हुक्म येह है कि जिस त़रीक़े पर मुसल्मान चलते आ रहे हैं, जो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से जारी है और सुन्नत से साबित है उस से न हटो। अहले सुन्नत व जमाअ़त तो सुन्नते रसूल और जमाअ़ते सह़ाबा के त़रीक़े पर चलते आ रहे हैं तो समझाया तो उन लोगों को जाएगा जो इस से हटे, न कि अस्ल त़रीक़े पर चलने वालों को कहा जाए कि तुम अपना त़रीक़ा छोड़ दो। येह तो ऐसे ही है जैसे एक ख़ानदान इत्तिफ़ाक़ो इत्तिह़ाद के साथ सह़ीह़ उसूलों पर ज़िन्दगी गुज़ार रहा हो, उन में से एक फ़र्द ग़लत़ राह इख़्तियार कर के इन्तिशार पैदा करे तो उस जुदा होने वाले को समझाया जाएगा, न कि ख़ानदान वालों को भी इत्तिह़ाद ख़त्म कर के ग़लत़ राह चलने का कहना शुरूअ़ कर दिया जाए। बिऐनिही येही सूरते ह़ाल अहले सुन्नत और दूसरे फ़िर्क़ों की है। अस्ल ह़क़ीक़त को समझे बिग़ैर सुल्हे कुल्लिय्यत की रट लगाना और सब को एक ही लाठी से हांकना सरासर जहालत है।

"حَبْلُ اللّٰهِ" की तफ़्सीर

"حَبْلُ اللّٰهِ" की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : बा'ज़ कहते हैं कि इस से

www.dawateislami.net

क़ुरआन मुराद है। चुनान्चे मुस्लिम शरीफ़ में है कि क़ुरआने पाक ह़ब्लुल्लाह है जिस ने इस की पैरवी की वोह हिदायत पर है और जिस ने इसे छोड़ा वोह गुमराही पर है।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया की حَبْلُ الله से जमाअ़त मुराद है।[2]

और फ़रमाया कि तुम जमाअ़त को लाज़िम कर लो कि वोह حَبْلُ الله है जिस को मज़बूत़ थामने का हुक्म दिया गया।[3]

जमाअ़त से क्या मुराद है ?

येह याद रहे कि जमाअ़त से मुराद मुसल्मानों की अक्सरिय्यत है, येह नहीं कि तीन आदमी मिल कर ''जमाअ़तुल मुस्लिमीन'' नाम रख लें और बोलें कि क़ुरआन ने हमारी टोली में दाख़िल होने का कहा है, अगर ऐसा ही हुक्म है तो फिर कल कोई अपना नाम ''रसूल'' रख कर बोलेगा कि क़ुरआन ने जहां भी रसूल की इत़ाअ़त का हुक्म दिया उस से मुराद मेरी ज़ात है लिहाज़ा मेरी इत़ाअ़त करो। اَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ جَهْلِ الْجَاهِلِيْن मैं जाहिलों की जहालत से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता हूं।

﴾ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ : **और अल्लाह का एह़सान अपने ऊपर याद करो।**﴿ इस आयत में फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों को याद करो जिन में से एक ने'मत येह भी है कि ऐ मुसल्मानो ! याद करो कि जब तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन थे और तुम्हारे दरमियान त़वील अ़र्से की जंगें जारी थीं ह़त्ता कि औस और ख़ज़रज में एक लड़ाई एक सो बीस साल जारी रही और इस के सबब रात दिन क़त्लो ग़ारत की गर्म बाज़ारी रहती थी लेकिन इस्लाम की बदौलत अ़दावत व दुश्मनी दूर हो कर आपस में दीनी मह़ब्बत पैदा हुई और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारी दुश्मनियां मिटा दीं और जंग की आग ठन्डी कर दी और जंगजू क़बीलों में उल्फ़तो मह़ब्बत के जज़्बात पैदा कर दिये, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें एक दूसरे का भाई भाई बना दिया वरना येह लोग अपने कुफ़्र की वज्ह से जहन्नम के गढ़े के किनारे पर पहुंचे हुए थे और अगर इसी ह़ाल पर मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े दौलते ईमान अ़त़ा कर के इस तबाही से बचा लिया।

---

1 ......مسلم، كتاب فضائل الصحابة رضى الله تعالى عنهم، باب من فضائل على بن ابى طالب رضى الله عنه، ص١٣١٣، الحديث: ٣٧ (٢٤٠٨).

2 ......معجم الكبير، ٢١٢/٩، الحديث: ٩٠٣٣.

3 ......معجم الكبير، ١٩٩/٩، الحديث: ٨٩٧٣.

www.dawateislami.net

जहन्नम से बचने का सब से बड़ा वसीला

इस से मा'लूम हुवा कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे लिये दोज़ख़ से बचने का सब से बड़ा वसीला हैं, चुनान्चे ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि कुछ फ़िरिश्ते हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस वक़्त ह़ाज़िर हुए जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सो रहे थे। उन में से एक ने कहा : येह तो सोए हुए हैं। दूसरे ने कहा : इन की आंख सोती और दिल जागता रहता है। फ़िरिश्तों ने कहा : आप के इन साह़िब की मिसाल है लिहाज़ा वोह मिसाल बयान करो। एक ने कहा : वोह तो सोए हुए हैं। दूसरे ने कहा : इन की आंख सोती और दिल बेदार रहता है। उन्हों ने कहा कि इन की मिसाल उस आदमी जैसी है जिस ने घर बनाया, उस में दस्तर ख़्वान बिछाया और बुलाने वाले को भेजा तो जिस ने उस की दा'वत क़बूल कर ली वोह घर में दाख़िल हुवा और दस्तर ख़्वान से खाना खाया और जिस ने दा'वत क़बूल न की वोह न घर में दाख़िल हुवा और न दस्तर ख़्वान से खाना खा सका। फ़िरिश्तों में से एक ने कहा : इस का मत़लब बयान कीजिये ताकि बात समझ में आ जाए। उन में से एक ने कहा : येह तो सो रहे हैं। दूसरे ने कहा : इन की आंख सोती और दिल बेदार रहता है। फ़िरिश्तों ने कहा : घर से मुराद जन्नत है और बुलाने वाले से मुराद ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं तो जिस ने मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त की और जिस ने इन की ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी की। मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अच्छे और बुरे लोगों में फ़र्क़ करने वाले हैं।(1)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने आग जलाई और जब उस आग ने इर्द गिर्द की जगह को रोशन कर दिया तो उस में पतंगे और ह़श्रातुल अर्द़ गिरने लगे, वोह शख़्स उन को आग में गिरने से रोकता है और वोह उस पर ग़ालिब आ कर आग में धड़ाधड़ गिर रहे हैं, पस येह मेरी मिसाल और तुम्हारी मिसाल है, मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर तुम्हें जहन्नम में जाने से रोक रहा हूं

(1) ......بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنة، باب الاقتداء بسنن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۴/۴۹۹، الحدیث: ۷۲۸۱.

www.dawateislami.net

और कह रहा हूं कि जहन्नम के पास से चले आओ और तुम लोग मेरी बात न मान कर (पतंगों के आग में गिरने की त़रह) जहन्नम में गिरे चले जा रहे हो ।''(1)

सब से आ'ला ने'मत

और येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की सब से आ'ला ने'मत हैं। आयत के शुरूअ़ में फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को याद करो, इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद करना और एक दूसरे को याद दिलाना बहुत उ़म्दा इ़बादत है। लिहाज़ा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद के लिये जो मह़फ़िल मुन्अ़क़िद की जाए ख़्वाह वोह मीलाद शरीफ़ की हो या मे'राज की या कोई और वोह सब बहुत उ़म्दा हैं और हुक्मे इलाही पर अ़मल ही की सूरतें हैं।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۱۰۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम में से एक गुरौह ऐसा होना चाहिये जो भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी बात से मन्अ़ करें और येही लोग फ़लाह़ पाने वाले हैं।

﴿وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ﴾ : **और तुम में से एक गुरौह ऐसा होना चाहिये जो भलाई की त़रफ़ बुलाएं।** आयते मुबारका में फ़रमाया गया कि चूंकि येह तो मुम्किन नहीं है कि तमाम के तमाम मुसल्मान एक ही काम में लग जाएं लेकिन इतना ज़रूर होना चाहिये कि मुसल्मानों का एक गुरौह ऐसा हो जो लोगों को भलाई की त़रफ़ बुलाए, उन्हें नेकी की दा'वत दे, अच्छी बात का हुक्म करे और बुरी बात से मन्अ़ करे।

1 ......مسلم، كتاب الفضائل، باب شفقته صلى الله عليه وسلم على امته... الخ، ص١٢٥٤، الحديث: ١٨(٢٢٨٤).

www.dawateislami.net

तब्लीग़े दीन का हुक्म

इस आयत से मा'लूम हुवा कि मज्मूई तौर पर तब्लीग़े दीन फ़र्ज़े किफ़ाया है। इस की बहुत सी सूरतें हैं जैसे मुसन्निफ़ीन का तस्नीफ़ करना, मुक़र्रिरीन का तक़रीर करना, मुबल्लिग़ीन का बयान करना, इन्फ़िरादी तौर पर लोगों को नेकी की दा'वत देना वग़ैरा, येह सब काम तब्लीग़े दीन के ज़ुमरे में आते हैं और ब क़दरे इख़्लास हर एक को इस की फ़ज़ीलत मिलती है। तब्लीग़ क़ौली भी होती है और अमली भी और बसा अवक़ात अमली तब्लीग़ क़ौली तब्लीग़ से ज़ियादा मुअस्सिर होती है। याद रहे कि जहां कोई शख़्स किसी बुराई को रोकने पर क़ादिर हो वहां उस पर बुराई से रोकना फ़र्ज़े ऐन हो जाता है। चुनान्चे हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से जो बुराई देखे तो उसे हाथ से रोक दे, अगर इस की ताक़त न हो तो ज़बान के ज़रीए रोके, अगर इस की भी क़ुदरत न हो तो दिल में बुरा जाने और येह कमज़ोर ईमान वाला है।"[1]

तब्लीग़े दीन से मुतअल्लिक़ 5 अहादीस

(1)...... हज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है, तुम या तो ज़रूर नेकी का हुक्म दोगे और बुराई से मन्अ करोगे या क़रीब है कि **अल्लाह** तआला अपनी तरफ़ से तुम पर अज़ाब भेजे, फिर तुम उस से दुआ मांगोगे मगर तुम्हारी दुआ क़बूल न होगी।"[2]

(2)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ज़रूर नेकी का हुक्म दोगे और बुराई से मन्अ करोगे या **अल्लाह** तआला तुम पर तुम ही में से बुरे लोगों को मुसल्लत कर देगा, फिर तुम्हारे नेक लोग दुआ करेंगे तो वोह क़बूल नहीं की जाएगी।"[3]

(3)...... हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी मक़ाम पर खड़े हो कर हक़ बात कह सकता है तो उस के लिये दुरुस्त नहीं कि हक़ बात न कहे क्यूं कि हक़ बात कहना उस की मौत को

1 ......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر من الایمان... الخ، ص ٤٤، الحدیث: ٧٨(٤٩).

2 ......ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ٦٩/٤، الحدیث: ٢١٧٦.

3 ......معجم الاوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ٣٧٧/١، الحدیث: ١٣٧٩.

www.dawateislami.net

मुक़द्दम कर सकता है न उस के लिखे हुए रिज़्क़ से उसे महरूम कर सकता है।''[1]

(4)...... हज़रते उ़र्स बिन उ़मैरा किन्दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब ज़मीन में गुनाह किया जाए तो जो वहां मौजूद है मगर उसे बुरा जानता है वोह उस की मिस्ल है जो वहां नहीं है और जो वहां नहीं है मगर उस पर राज़ी है वोह उस की मिस्ल है जो वहां ह़ाज़िर है।''[2]

(5)...... हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना बेहतरीन जिहाद है।[3]

हमारे मुआ़शरे में नेक काम का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के ह़वाले से मज्मूई तौर पर सूरते ह़ाल इन्तिहाई अफ़्सोस नाक है, हुक्काम अपनी रिआ़या के आ'माल से सर्फ़े नज़र किये हुए हैं। अ़दलो इन्साफ़ करने और मुजरिमों को सज़ा देने के मन्सब पर फ़ाइज़ हज़रात अ़दलो इन्साफ़ की धज्जियां उड़ाने और मुजरिमों की पुश्त पनाही करने में लगे हुए हैं। वालिदैन अपनी औलाद, असातिज़ा अपने शागिर्दों और अफ़्सर अपने नौकरों के बुरे आ'माल से चश्म पोशी करते नज़र आ रहे हैं, इसी त़रह़ शौहर अपनी बीवी को, बीवी अपने शौहर को, भाई बहन और अ़ज़ीज़ रिश्तेदार एक दूसरे को नेक कामों की तरग़ीब देते हैं न क़ुदरत के बा वुजूद उन्हें बुरे अफ़्आ़ल से रोकते हैं और मुसल्मानों की इसी रविश का नतीजा है कि आज मुस्लिम क़ौम दुन्या भर में जिस ज़िल्लतो रुस्वाई का शिकार है इस से पहले कभी नहीं थी और इसी वज्ह से रफ़्ता रफ़्ता येह क़ौम तबाही की त़रफ़ बढ़ती चली जा रही है। इस ह़क़ीक़त को दर्जे ज़ैल ह़दीस में इन्तिहाई अह़्सन अन्दाज़ के साथ समझाया गया है, चुनान्चे

हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला की हुदूद में मुदाहनत करने वाले (या'नी ख़िलाफ़े शरअ़ चीज़ देख कर क़ुदरत के बा वुजूद मन्अ़ न करने वाले) और हुदूदुल्लाह में वाक़ेअ़ होने वाले की मिसाल येह है कि एक क़ौम ने जहाज़ के बारे में क़ुरआ़ डाला, बा'ज़ ऊपर के हिस्से में रहे बा'ज़ नीचे के हिस्से में, नीचे वाले पानी लेने ऊपर जाते और पानी ले कर उन के पास से गुज़रते तो उन को तक्लीफ़ होती (उन्हों ने इस की शिकायत की तो) नीचे वाले ने कुल्हाड़ी ले कर नीचे का तख़्ता काटना शुरूअ़ कर दिया। ऊपर वालों ने देखा तो पूछा क्या बात है कि तख़्ता तोड़ रहे हो ? उस ने कहा मैं पानी लेने जाता

1 ......شعب الایمان، الثانی والخمسون من شعب الایمان، ٩٢/٦، الحدیث: ٧٥٧٩.

2 ......ابو داوٗد، اول کتاب الملاحم، باب الامر والنهی، ١٦٦/٤، الحدیث: ٤٣٤٥.

3 ......مدارك، ال عمران، تحت الآیة: ١٠٤، ص١٧٨.

www.dawateislami.net

हूं तो तुम को तक्लीफ़ होती है और पानी लेना मुझे ज़रूरी है। (लिहाज़ा मैं तख़्ता तोड़ कर यहीं से पानी ले लूंगा और तुम लोगों को तक्लीफ़ न दूंगा) पस इस सूरत में अगर ऊपर वालों ने उस का हाथ पकड़ लिया और तख़्ता काटने से रोक दिया तो उसे भी नजात देंगे और ख़ुद को भी बचा लेंगे और अगर छोड़ दिया तो उसे भी हलाक करेंगे और ख़ुद भी हलाक होंगे[1] ।''[2]

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है
जो कुछ भी है सब अपने ही हाथों के हैं करतूत शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है
फ़रियाद है ऐ किश्तिये उम्मत के निगहबां बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ تَفَرَّقُوْا وَ اخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَیِّنٰتُؕ وَ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌۙ(۱۰۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उन में फूट पड़ गई बा'द इस के कि रोशन निशानियां उन्हें आ चुकी थीं और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन लोगों की त़रह़ न होना जो आपस में मुतफ़र्रिक़ हो गए और उन्हों ने अपने पास रोशन निशानियां आ जाने के बा'द (भी) आपस में इख़्तिलाफ़ किया और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

﴾وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ تَفَرَّقُوْا : और उन लोगों की त़रह़ न होना जो आपस में मुतफ़र्रिक़ हो गए ।﴿ इर्शाद फ़रमाया कि आपस में तफ़्रिक़ा बाज़ी और इख़्तिलाफ़ात में न पड़ जाना जैसा कि यहूदो नसारा आपस में इख़्तिलाफ़ात में पड़ गए और उन में एक दूसरे के साथ इनाद और दुश्मनी रासिख़ हो गई या आयत का येह मा'ना है कि आपस में उस त़रह़ इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़ में न पड़ जाना जैसे तुम ज़मानए इस्लाम से पहले जाहिलिय्यत के वक़्त में मुतफ़र्रिक़ थे और तुम्हारे दरमियान बुग़्ज़ो इनाद था।

1 ......بخاری، کتاب الشهادات، باب القرعة فی المشکلات، ۲/۲۰۸، الحدیث: ۲٦۸٦.

2 ...... तब्लीग़े दीन की ज़रूरत व अहम्मिय्यत और इस से मुतअ़ल्लिक़ मजीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ ''नेकी की दा'वत'' (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

इत्तिफ़ाक़ का हुक्म और इख़्तिलाफ़ के अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त

इस आयत में मुसल्मानों को आपस में इत्तिफ़ाक़ व इज्तिमाअ़ का हुक्म दिया गया और इख़्तिलाफ़ और इस के अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई है। अहादीस में भी इस की बहुत ताकीदें वारिद हैं और मुसल्मानों की जमाअ़त से जुदा होने की सख़्ती से मुमानअ़त फ़रमाई गई है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला मेरी उम्मत को गुमराही पर जम्अ़ न करेगा और **अल्लाह** तआ़ला का दस्ते रह़मत जमाअ़त पर है और जो जमाअ़त से जुदा हुवा वोह दोज़ख़ में गया।(1)

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत गुमराही पर कभी जम्अ़ न होगी, जब तुम इख़्तिलाफ़ देखो तो बड़ी जमाअ़त को लाज़िम पकड़ लो।"(2)

आज कल जो फ़िर्क़ा पैदा होता है वोह इस हुक्म की मुख़ालफ़त कर के ही पैदा होता है और मुसल्मानों में तफ़्रिक़ा अन्दाज़ी के जुर्म का मुर्तकिब होता है और ह़दीस के मुत़ाबिक़ वोह शैत़ान का शिकार है।(3)

अल्लाह तआ़ला हमें इस से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। ख़याल रहे कि ना इत्तिफ़ाक़ी और फूट का मुजरिम वोह शख़्स होगा जो मुसल्मानों का रास्ता छोड़ कर नई राह निकाले, जो इस्लाम की राह पर क़ाइम है वोह मुजरिम नहीं।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّ تَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝١٠٦

(1)......ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی لزوم الجماعة، ٤/٦٨، الحديث: ٢١٧٣.
(2)......ابن ماجه، کتاب الفتن، باب السواد الاعظم، ٤/٣٢٧، الحديث: ٣٩٥٠.
(3)......معجم الكبير، باب ما جاء فی لزوم الجماعة... الخ، ١/١٨٦، الحديث: ٤٨٩.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन कुछ मुंह उन्जाले (चमक्ते) होंगे और कुछ मुंह काले तो वोह जिन के मुंह काले हुए क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हुए तो अब अ़ज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस दिन कई चेहरे रोशन होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे तो वोह लोग जिन के चेहरे सियाह होंगे (उन से कहा जाएगा कि) क्या तुम ईमान लाने के बा'द काफ़िर हुए थे ? तो अब अपने कुफ़्र के बदले में अ़ज़ाब का मज़ा चखो ।

﴾يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ : **जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे ।**﴿ यहां आयात में क़ियामत के दिन का मन्ज़र बयान हुवा है कि क़ियामत के दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे जो यक़ीनन अहले ईमान के होंगे और कुछ चेहरे सियाह होंगे जो यक़ीनन कुफ़्फ़ार के होंगे और काफ़िरों से कहा जाएगा कि "क्या तुम ईमान लाने के बा'द काफ़िर हुए थे ? तो अब अपने कुफ़्र के बदले में अ़ज़ाब का मज़ा चखो ।" यहां फ़रमाया कि "ईमान के बा'द काफ़िर हुए थे" इस से अगर तमाम कुफ़्फ़ार को ख़िताब है तो इस सूरत में ईमान से रोज़े मीसाक़ का ईमान मुराद है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन से फ़रमाया था "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं" तो सब ने "بَلٰی" या'नी "क्यूं नहीं" कहा था और ईमान लाए थे । अब जो दुन्या में काफ़िर हुए तो उन से फ़रमाया जाता है कि रोज़े मीसाक़ ईमान लाने के बा'द तुम काफ़िर हो गए । इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि इस से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जिन्हों ने ज़बान से इज़्हारे ईमान किया था और उन के दिल मुन्किर थे । ह़ज़रते इक्रमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि इस से मुराद अहले किताब हैं जो रसूले अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बि'सत से पहले तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए और ज़ुहूर के बा'द आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्कार कर के काफ़िर हो गए । एक क़ौल येह है कि इस के मुख़ात़ब मुरतद्दीन हैं जो इस्लाम ला कर फिर गए और काफ़िर हो गए ।(1)

उन से कहा जाएगा कि अपने कुफ़्र के बदले अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो ।

وَاَمَّا الَّذِیْنَ ابْیَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِیْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

(1)......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٠٦، ١/٢٨٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिन के मुंह उन्जाले (रोशन) हुए वोह **अल्लाह** की रह़मत में हैं वोह हमेशा उस में रहेंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग जिन के चेहरे सफ़ेद होंगे वोह **अल्लाह** की रह़मत में होंगे, वोह हमेशा उस में रहेंगे।

﴿فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ : **तो अल्लाह की रह़मत में होंगे।**﴾ या'नी **अल्लाह** तआ़ला के इत़ाअ़त गुज़ार मोमिन **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत की जगह जन्नत में होंगे और वोह हमेशा उस में रहेंगे।(1)

अल्लाह तआ़ला अपने इत़ाअ़त गुज़ार अहले ईमान के बारे में एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाता है :

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : भलाई करने वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ियादा है और उन के मुंह पर न सियाही छाई होगी और न ज़िल्लत। येही जन्नत वाले हैं, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

और इर्शाद फ़रमाया :

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿۳۸﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बहुत से चेहरे उस दिन रोशन होंगे। हंसते हुए ख़ुशियां मनाते होंगे।

क़ियामत के दिन रोशन चेहरे वाले लोग

रोशन चेहरे वालों से मुराद कौन लोग हैं, दर्जे ज़ैल रिवायात की रोशनी में देखें :

तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर में है, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस आयते करीमा ''يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّ تَسْوَدُّ وُجُوْهٌ'' के बारे में फ़रमाते हैं : ''تَبْيَضُّ وُجُوْهُ اَهْلِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ وَتَسْوَدُّ وُجُوْهُ اَهْلِ الْبِدَعِ وَ الضَّلَالَةِ'' या'नी क़ियामत के दिन अहले सुन्नत के चेहरे चमक्ते होंगे और

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٠٦، ١/٢٨٧.
2 ......يونس:٢٦.
3 ......عبس:٣٨، ٣٩.

www.dawateislami.net

बिद्अ़ती व गुमराहों के चेहरे सियाह होंगे।'' और इसी में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से एक ह़दीस शरीफ़ रिवायत है कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान ''تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ'' के बारे में फ़रमाया : ''تبیض وجوہ اھل السنۃ و تسود وجوہ اھل البدع'' क़ियामत के दिन अहले सुन्नत व जमाअ़त के चेहरे सफ़ेद चमकते होंगे और गुमराहों के चेहरे सियाह होंगे।''

और एक दूसरी रिवायत में है जो कि ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आयते करीमा ''تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ'' तिलावत फ़रमाई और फिर फ़रमाया : ''تبیض وجوہ اھل الجماعات والسنۃ، و تسود وجوہ اھل البدع والاھواء'' या'नी क़ियामत के दिन अहले सुन्नत व जमाअ़त के चेहरे सफ़ेद चमकते होंगे और बिद्अ़ती व गुमराहों के चेहरे सियाह होंगे।''(1)

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾ ع

ربع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुम पर पढ़ते हैं, और **अल्लाह** जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता। और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** ही की त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह **अल्लाह** की आयतें हैं जो हम ह़क़ के साथ तुम्हारे सामने पढ़ते हैं और **अल्लाह** जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता। और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और सब काम **अल्लाह** ही की त़रफ़ लौटाए जाते हैं।

(1) ......در منثور، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۰۷، ۲/۲۹۱.

www.dawateislami.net

﴿وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ﴾ : **और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता ।** या'नी लोग जहन्नम में ले जाने वाले अपने आ'माल की वज्ह से जहन्नम में जाएंगे क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला किसी पर ज़ुल्म नहीं करता और किसी को बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं देता और किसी की नेकी का सवाब कम नहीं करता ।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान लाते तो उन का भला था उन में कुछ मुसल्मान हैं और ज़ियादा काफ़िर ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ मुसल्मानो !) तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों (की हिदायत) के लिये ज़ाहिर की गई, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब (भी) ईमान ले आते तो उन के लिये बेहतर था, उन में कुछ मुसल्मान हैं और उन की अक्सरिय्यत ना फ़रमान है ।

﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ﴾ : **तुम बेहतरीन उम्मत हो ।** यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वहब बिन यहूदा ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द वग़ैरा सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से कहा कि "हम तुम से अफ़्ज़ल हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है।" इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

और **अल्लाह** तआ़ला ने उम्मते मुह़म्मदिय्यह को तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल क़रार दिया। ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे वोह कुछ अ़ता किया गया जो किसी और नबी को अ़ता नहीं किया गया।"

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١١٠، ١/٢٨٧.

www.dawateislami.net

हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, वोह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "रो'ब के साथ मेरी मदद की गई, मुझे ज़मीन की कुन्जियां अ़ता की गईं, मेरा नाम अह़मद रखा गया, मेरे लिये मिट्टी को पाकीज़ा करने वाली बना दिया गया और मेरी उम्मत को बेहतरीन उम्मत बना दिया गया ।"(1)

इस उम्मत का इत्तिह़ाद शरई दलील है

चूंकि येह बेहतरीन उम्मत है, इस लिये इस उम्मत का इत्तिफ़ाक़ी इत्तिह़ाद बहुत बड़ी दलीले शरई है । जो इस से हट कर चले वोह गुमराही के रास्ते पर है चुनान्चे क़ुरआने पाक में है :

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो इस के बा'द कि उस के लिये हिदायत बिल्कुल वाज़ेह़ हो चुकी रसूल की मुख़ालफ़त करे और मुसल्मानों के रास्ते से जुदा रास्ते की पैरवी करे तो हम उसे उधर ही फेर देंगे जिधर वोह फिर गया है और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वोह कितनी बुरी लौटने की जगह है ।

तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला मेरी उम्मत को गुमराही पर जम्अ़ न करेगा और **अल्लाह** तआ़ला का दस्ते रह़मत जमाअ़त पर है और जो जमाअ़त से जुदा हुवा वोह दोज़ख़ में गया ।(3)

बनी इसराईल और उम्मते मुह़म्मदिय्यह की अफ़्ज़लिय्यत में फ़र्क़

इस आयत में हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल फ़रमाया गया और बा'ज़ आयात में बनी इसराईल को भी आ़लमीन या'नी तमाम जहानों से अफ़्ज़ल फ़रमाया गया है, लेकिन उन का अफ़्ज़ल होना उन के ज़माने के वक़्त ही था जब कि ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत का अफ़्ज़ल होना दाइमी है ।

1 ......مسند امام احمد، ومن مسند علی بن ابی طالب، ۱/۲۱۰، الحدیث: ۷۶۳.

2 ......النساء: ۱۱۵.

3 ......ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی لزوم الجماعة، ۴/۶۸، الحدیث: ۲۱۷۳.

www.dawateislami.net

नेकी की दा 'वत देने की तरग़ीब

याद रहे कि नेकी की दा'वत देना वोह अ़ज़ीम मन्सब और ओ़हदा है जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अ़ता फ़रमाया और जब **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमा कर नुबुव्वत का दरवाज़ा हमेशा के लिये बन्द कर दिया तो उस ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को इस मन्सब से सरफ़राज़ फ़रमा दिया और इस अ़ज़ीम ख़ूबी की वज्ह से इन्हें सब से बेहतरीन उम्मत क़रार दिया, लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह ब क़दरे तौफ़ीक़ नेकी की दा'वत देता और बुराई से मन्अ़ करता रहे। अह़ादीस में नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, चुनान्चे इस से मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... एक ह़दीस में है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : लोगों में बेहतर कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा डरने वाला, रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी ज़ियादा करने वाला, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने वाला और सब से ज़ियादा बुराई से मन्अ़ करने वाला (सब से बेहतर है)।"[1]

(2)...... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो न अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से हैं न शुहदा में से, लेकिन क़ियामत के दिन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदा **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में उन का मक़ाम देख कर रश्क करेंगे, वोह लोग नूर के मिम्बरों पर होंगे।" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : वोह कौन लोग हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों को **अल्लाह** तआ़ला का प्यारा बन्दा बना देते हैं और **अल्लाह** तआ़ला को उस के बन्दों का मह़बूब बना देते हैं और वोह लोगों को नसीह़त करते हुए ज़मीन पर चलते हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : वोह **अल्लाह** तआ़ला को **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों का मह़बूब बना देते हैं (येह बात तो समझ में आ रही है) लेकिन वोह **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों को **अल्लाह** तआ़ला का प्यारा बन्दा कैसे बनाते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "वोह लोगों को **अल्लाह** तआ़ला के पसन्दीदा कामों का हुक्म देते हैं और **अल्लाह** तआ़ला के ना पसन्दीदा कामों से

[1] ......شعب الايمان، السادس والخمسون من شعب الايمان... الخ، ٦/٢٢٠، الحديث: ٧٩٥٠.

www.dawateislami.net

मन्अ़ करते हैं तो जब लोग उन की इत़ाअ़त करते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उन से मह़ब्बत फ़रमाने लगता है[1] ।''[2]

﴿وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ﴾ : **और अगर अहले किताब (भी) ईमान ले आते ।** या'नी अगर अहले किताब भी सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आते तो उन के लिये भी बेहतर होता लेकिन उन में कुछ ही लोग ईमान वाले हुए, जैसे यहूदियों में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के साथी और ईसाइयों में से ह़ज़रते नजाशी और उन के साथी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم । इस के बर अ़क्स यहूदो नसारा की अक्सरिय्यत ने इस्लाम क़बूल न किया ।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۟ قف ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर येही सताना और अगर तुम से लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे फिर उन की मदद न होगी ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह तुम्हें सताने के इलावा कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे और अगर तुम से लड़ेंगे तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे फिर उन की मदद नहीं की जाएगी ।

﴿لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى﴾ : **येह तुम्हें सताने के इलावा कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे ।** यहूदियों में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم, यहूदियों के सरदार उन के दुश्मन हो गए थे और उन्हें तक्लीफ़ पहुंचाने की फ़िक्र में लगे रहते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई ।[3]

और **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान लाने वालों को मुत़्मइन कर दिया कि ज़बानी त़ा'नो तश्नीअ़ और धम्कियों के इलावा येह इन मुसल्मानों को कोई तक्लीफ़ न पहुंचा सकेंगे और

---

1 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الفصل الثانى، ٢/٢٧٣، الجزء الثالث، الحديث: ٨٤٥٥.

2 ...... नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का जज़्बा व तरग़ीब पाने और इस के फ़ज़ाइल ह़ासिल करने का एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ ''दा'वते इस्लामी'' के साथ वाबस्ता हो जाना है ।

3 ......تفسير قرطبى، ال عمران، تحت الآية: ١١١، ٢/١٣٥، الجزء الرابع.

www.dawateislami.net

ग़लबा मुसल्मानों ही को ह़ासिल होगा और यहूदियों का अन्जाम ज़िल्लतो रुस्वाई होगा। और अगर येह अहले किताब मुसल्मानों के मुक़ाबले में आए तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे और तुम्हारे मुक़ाबले की ताब न ला सकेंगे। येह ग़ैबी ख़बरें ऐसी ही वाक़ेअ़ हुईं। बा'द में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ ने शाम, रूम वग़ैरा तमाम अ़लाक़ों में फ़त्ह़ ह़ासिल की और यूं येह ग़ैबी ख़बर पूरी हुई।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन पर जमा दी गई ख़्वारी जहां हों अमान न पाएं मगर **अल्लाह** की डोर और आदमियों की डोर से और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुए और उन पर जमा दी गई मोह़ताजी येह इस लिये कि वोह **अल्लाह** की आयतों से कुफ़्र करते और पैग़म्बरों को नाह़क़ शहीद करते येह इस लिये कि ना फ़रमां बरदार और सरकश थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह जहां भी पाए जाएं इन पर ज़िल्लत मुसल्लत़ कर दी गई सिवाए इस के कि इन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से सहारा मिल जाए या लोगों की त़रफ़ से सहारा मिल जाए। येह **अल्लाह** के ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हैं और इन पर मोह़ताजी मुसल्लत़ कर दी गई। येह इस वज्ह से है कि वोह **अल्लाह** की आयतों के साथ कुफ़्र करते थे और नबियों को नाह़क़ शहीद करते थे, और इस लिये कि वोह ना फ़रमान और सरकश थे।

﴿ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ : **इन पर ज़िल्लत मुसल्लत़ कर दी गई।**﴾ इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि यहूदियों पर ज़िल्लत और मोह़ताजी लाज़िम कर दी गई है और साथ ही साथ इस आयत में इस्तिस्ना भी है "اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ" सिवाए इस के कि इन्हें **अल्लाह** की

www.dawateislami.net

तरफ़ से सहारा मिल जाए या लोगों की तरफ़ से सहारा मिल जाए। इस्तिस्ना के आने से मा'ना येह बन गया कि (यहूदी) ज़िल्लतो ख़्वारी से किसी सूरत और किसी तरह नहीं बच सकते मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रस्सी के साथ और लोगों की रस्सी के साथ। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रस्सी के साथ यूं कि यहूदी मुसल्मान हो जाएं तो ख़्वारी से बच सकते हैं और हक़ीक़ी इज़्ज़त हासिल कर सकते हैं और लोगों की रस्सी की सूरत येह कि लोगों से अ़हदो पैमान करें, इस्लामी हुकूमत के ज़िम्मी बन जाएं या काफ़िर हुकूमतों से भीक मांगें और तआ़वुन हासिल करें तो दुन्यावी इज़्ज़त पा सकते हैं और ऐसी सूरत में इन की सल्तनत भी बन सकती है। फ़ी ज़माना अगर दुन्या के किसी ख़ित्ते में कुफ़्फ़ार के तआ़वुन से यहूदी सल्तनत वुजूद में आई है तो इस हुकूमत का क़ाइम होना कुरआने करीम या इस्लाम की सदाक़त के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि कुरआने करीम की सदाक़त की बड़ी साफ़ और वाज़ेह दलील है कि ब हस्बे इस्तिस्ना "وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ" सदियों से ज़लीलो ख़्वार यहूदियों की एक जमाअ़त को दुन्यावी इज़्ज़त मिल गई।(1)

لَيْسُوْا سَوَآءً ۭ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآىِٕمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सब एक से नहीं किताबियों में कुछ वोह हैं कि हक़ पर क़ाइम हैं **अल्लाह** की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में और सज्दा करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह सब एक जैसे नहीं, अहले किताब में कुछ वोह लोग भी हैं जो हक़ पर क़ाइम हैं, वोह रात के लम्हात में **अल्लाह** की आयतों की तिलावत करते हैं और सज्दा करते हैं।

﴿لَيْسُوْا سَوَآءً : **येह सब एक जैसे नहीं।**﴾ जब हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के साथी ईमान लाए तो यहूदी उ़लमा ने जल कर कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर हम में से जो ईमान लाए हैं वोह बुरे लोग हैं, अगर येह बुरे न होते तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते। इस पर येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई।(2)

1...... फ़तावा नूरिया, 5/194 मुलख़्ख़सन

2......تفسير قرطبى، ال عمران، تحت الآية: ١١٣، ٢/١٣٦، الجزء الرابع.

www.dawateislami.net

और बता दिया गया कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुलामी में आने वाले ही तो काम के आदमी हैं बक़िय्या का ह़ाल तो इन्तिहाई बदतर है। ह़ज़रते अ़ता़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि यहां जिन लोगों की ता'रीफ़ की गई है इस से अ़लाक़ा नजरान के **40** आदमी, ह़बशा के **32** आदमी और रूम के **8** आदमी मुराद हैं जो दीने ईसवी पर थे, फिर हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए।[1]

आयते मुबारका "يَتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ" से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि नमाज़े तहज्जुद बहुत आ'ला इ़बादत है कि यहां रात को उठ कर इ़बादत करने वालों की बतौ़रे ख़ास ता'रीफ़ की गई है, इस से नमाज़े इ़शा व तहज्जुद दोनों ही मुराद हो सकते हैं और येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ के अरकान में सज्दा बहुत अफ़्ज़ल है कि सज्दे का भी बतौ़रे ख़ास तज़्किरा किया गया है। येह भी मा'लूम हुवा कि रात की इ़बादत, नमाज़ और तिलावत दिन की इन इ़बादात से अफ़्ज़ल है क्यूं कि जो दिल की यक्सूई रात में मुयस्सर होती है, दिन में नसीब नहीं होती। हमारे बुज़ुर्गाने दीन अपनी रातें इ़बादत व तिलावत में गुज़ारा करते थे, चुनान्चे ह़ज़रते हुसैन बिन अ़ली कराबीसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने कई बार ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रात गुज़ारी और मैं ने देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक तिहाई रात तक नमाज़ पढ़ते और पचास आयात से ज़ियादा तिलावत न करते, अगर कभी ज़ियादा पढ़ते तो भी 100 आयात तक पहुंचते। जब किसी आयते रह़मत की तिलावत करते तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अपने लिये और तमाम मोमिनीन के लिये रह़मत मिलने की दुआ़ करते और जब आयते अ़ज़ाब पढ़ते तो उस से पनाह त़लब करते और अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में नजात की दुआ़ करते।[2]

ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہَا फ़रमाती हैं : "हो सकता है कि कोई शख़्स ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा नमाज़ पढ़ता और रोज़े रखता हो लेकिन मैं ने लोगों में कोई ऐसा शख़्स कभी नहीं देखा जो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरता हो। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (रात के वक़्त) जब घर तशरीफ़ लाते तो सज्दे में सर रख कर रोते और दुआ़ करते रहते यहां तक कि नींद

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١١٣، ١/٢٩٠-٢٩١.

2 ......تاريخ بغداد، ذكر من اسمه محمد واسم ابيه ادريس، محمد بن ادريس بن العباس ابو عبد الله الشافعى، ٢/٦١.

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों पर ग़ालिब आ जाती और रात में फिर जब बेदार होते तो इसी तरह़ करते[1] ।''[2]

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَ اُولٰٓىِٕكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٤

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते हैं और नेक कामों पर दौड़ते हैं और येह लोग लाइक़ हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह **अल्लाह** पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और भलाई का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते हैं और नेक कामों में जल्दी करते हैं और येह लोग (**अल्लाह** के) ख़ास बन्दों में से हैं।

﴿يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ : **येह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं।**﴾ गुज़श्ता आयत और इस आयत में मज्मूई तौर पर ईमान वालों के येह औसाफ़ बयान किये गए हैं : **(1)** रात को इ़बादत में क़ियाम करना, **(2)** नमाज़ पढ़ना, **(3)** रात का एक ह़िस्सा इ़बादत में गुज़ारना, **(4)** रात के वक़्त क़ुरआन की तिलावत करना, **(5)** **अल्लाह** तआ़ला और आख़िरत पर कामिल ईमान रखना, **(6)** नेकी का हुक्म देना, **(7)** बुराई से मन्अ़ करना, **(8)** नेकियों में सब्क़त ले जाना, **(9)** नेकी को इख़्तियार करना। एक कामिल ईमान वाले के भी येही औसाफ़ होने चाहिएं। **अल्लाह** तआ़ला हमें कामिलीन में दाख़िल फ़रमाए।

وَ مَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝١١٥

1 ...... حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، ۵/۲۹۴، رقم: ۷۱۷۴.

2 ...... इ़बादत की लगन व शौक़ पाने और इस में यक्सूई ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तह़रीर कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना और दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना इन्तिहाई मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो भलाई करें उन का हक़ न मारा जाएगा और **अल्लाह** को मा'लूम हैं डर वाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह लोग जो नेक काम करते हैं हरगिज़ इन की नाक़द्री नहीं की जाएगी और **अल्लाह** डरने वालों को जानता है।

﴿فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ : **हरगिज़ इन की नाक़द्री नहीं की जाएगी।**﴾ यहूदियों ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के साथियों से कहा था कि तुम दीने इस्लाम क़बूल कर के ख़सारे में पड़े तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ख़बर दी कि वोह तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में बुलन्द दरजात के मुस्तह़िक़ हुए और वोह तो अपनी नेकियों की जज़ा पाएंगे जब कि यहूदियों की गुफ़्त्गू बे मा'ना है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْــٴًـاؕ وَ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो काफ़िर हुए उन के माल और औलाद उन को **अल्लाह** से कुछ न बचाएंगे और वोह जहन्नमी हैं उन को हमेशा उस में रहना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो काफ़िर हुए उन के माल और उन की औलाद उन को **अल्लाह** के अ़ज़ाब से कुछ बचा न सकेंगे और येही लोग जहन्नमी हैं, येह हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

﴿لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْــٴًـا : **उन के माल और उन की औलाद उन को अल्लाह के अ़ज़ाब से कुछ बचा न सकेंगे।**﴾ **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर के बारे में नाज़िल हुई। यहूदी सरदारों ने मालो दौलत की ख़ातिर सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ दुश्मनी की थी, **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि उन के माल व औलाद उन के कुछ काम न आएंगे, येह सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुश्मनी में नाह़क़ अपनी आ़क़िबत बरबाद कर रहे हैं।(1)

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١١٦، ١/٢٩١.

www.dawateislami.net

एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीने कुरैश के बारे में नाज़िल हुई क्यूं कि अबू जह्ल को अपनी दौलत पर बड़ा फ़ख़्र था, और एक क़ौल येह है कि येह आयत तमाम कुफ़्फ़ार के मुतअ़ल्लिक़ आ़म है।(1)

इन सब को बताया गया कि माल व औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। सिर्फ़ रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामन से वाबस्ता होना ही नजात का ज़रीआ़ है।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कहावत उस की जो इस दुन्या की ज़िन्दगी में ख़र्च करते हैं उस हवा की सी है जिस में पाला हो वोह एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई और **अल्लाह** ने उन पर ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद अपनी जान पर ज़ुल्म करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस दुन्यावी ज़िन्दगी में जो ख़र्च करते हैं उस की मिसाल उस हवा जैसी है जिस में शदीद ठन्ड हो, वोह हवा किसी ऐसी क़ौम की खेती को जा पहुंचे जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया हो तो वोह हवा उस खेती को हलाक कर दे और **अल्लाह** ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वोह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं।

﴿مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا : इस दुन्यावी ज़िन्दगी में ख़र्च करने वालों की मिसाल।﴾ इस आयत में काफ़िर के ख़र्च और रियाकारी के तौर पर ख़र्च करने वाले की मिसाल बयान फ़रमाई गई कि उन के ख़र्च को उन का कुफ़्र या रियाकारी ऐसे तबाह कर देती है जैसे बर्फ़ानी हवा खेती को बरबाद कर देती है और उन के साथ येह मुआ़मला कोई ज़ुल्मो ज़ियादती नहीं बल्कि येह उन के कुफ़्र या निफ़ाक़ या रियाकारी का अन्जाम है तो येह ख़ुद इन का अपनी जानों

(1)......تفسير كبير، ال عمران، تحت الآية: ١١٦، ٣/٣٣٥-٣٣٦.

www.dawateislami.net

पर ज़ुल्म है। मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस ख़र्च से यहूदियों का वोह ख़र्च मुराद है जो वोह अपने उ़लमा और सरदारों पर करते थे, वोह ख़र्चा बे फ़ाएदा है, उस का उन्हें कोई सवाब न मिलेगा। एक क़ौल येह है कि यहां इस से कुफ़्फ़ार के तमाम सदक़ात मुराद हैं कि उन का कोई सवाब नहीं और वोह सदक़ात ज़ाएअ़ हैं और एक क़ौल येह है कि यहां रियाकार का ख़र्च करना मुराद है।[1]

क्यूं कि उस का ख़र्च करना या दुन्यावी नफ़्अ़ के लिये होगा या आख़िरत के नफ़्अ़ के लिये। अगर सिर्फ़ दुन्यावी नफ़्अ़ के लिये हो तो आख़िरत में इस से क्या फ़ाएदा और रियाकार को तो आख़िरत और रिज़ाए इलाही मक़्सूद ही नहीं होती बल्कि उस का अ़मल तो दिखावे और नुमाइश के लिये होता है ऐसे अ़मल का आख़िरत में क्या नफ़्अ़ होगा जब कि काफ़िर के तमाम आ'माल बरबाद हैं, वोह अगर्चे आख़िरत की निय्यत से भी ख़र्च करे तो नफ़्अ़ नहीं पा सकता, इन लोगों के लिये वोह मिसाल बिल्कुल मुत़ाबिक़ है जो इस आयत में ज़िक्र फ़रमाई जा रही है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡا بِطَانَةً مِّنۡ دُوۡنِكُمۡ لَا يَاۡلُوۡنَكُمۡ خَبَالًا ؕ وَدُّوۡا مَا عَنِتُّمۡ ۚ قَدۡ بَدَتِ الۡبَغۡضَآءُ مِنۡ اَفۡوَاهِهِمۡ ۖۚ وَمَا تُخۡفِىۡ صُدُوۡرُهُمۡ اَكۡبَرُ ؕ قَدۡ بَيَّنَّا لَـكُمُ الۡاٰيٰتِ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ग़ैरों को अपना राज़दार न बनाओ वोह तुम्हारी बुराई में गई नहीं करते उन की आरज़ू है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुंचे बैर उन की बातों से झलक उठा और वोह जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है हम ने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अ़क़्ल हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! ग़ैरों को राज़दार न बनाओ, वोह तुम्हारी बुराई में कमी नहीं करेंगे। वोह तो चाहते हैं कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ। बेशक (उन का) बुग़्ज़ तो उन के मुंह से ज़ाहिर हो चुका है और जो उन के दिलों में छुपा हुवा है वोह उस से भी बढ़ कर है। बेशक हम ने तुम्हारे लिये खोल कर आयतें बयान कर दीं अगर तुम अ़क़्ल रखते हो।

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١١٧، ١/٢٩١-٢٩٢.

www.dawateislami.net

﴿لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ﴾ **: ग़ैरों को राज़दार न बनाओ ।** बा'ज़ मुसल्मान अपने क़राबत दार और रिश्तेदार यहूदियों वग़ैरा से क़राबत या पड़ोस की बिना पर दोस्ती और मेलजोल रखते थे । उन के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा उतरी ।[1]

कुफ़्फ़ार से तअ़ल्लुक़ात के बारे में इस्लाम की ता'लीमात

इस से मा'लूम हुवा कि कुफ़्फ़ार से दोस्ताना तअ़ल्लुक़ात, दिली महब्बतो इख़्लास ह़राम है और उन्हें अपना राज़दार बनाना भी ना जाइज़ है और तजरिबात से भी येही साबित है कि कुफ़्फ़ार मुसल्मानों को नुक़्सान पहुंचाने में कमी नहीं करते । नीज़ इस आयत से मा'लूम हुवा कि मुसल्मान हुक्मरान काफ़िरों और मुरतद्दों को अहम तरीन ओ़हदों पर न लगाए जिस से येह लोग ग़द्दारी करने का मौक़अ़ पाएं क्यूं कि येह लोग तुम्हारी बुराई चाहने में कोई कमी नहीं करेंगे, इन की तो ख़्वाहिश ही येह है कि मुसल्मान तक्लीफ़ व मशक़्क़त में पड़े रहें नीज़ इन की दुश्मनियां इन के अल्फ़ाज़ और किरदार से ज़ाहिर हैं जो वक़्तन फ़ वक़्तन सामने आता रहता है । जब ज़बानी दुश्मनी भी सामने आती रहती है तो जो दुश्मनी और मुसल्मानों से बुग़्ज़ो अ़दावत इन के दिलों में होगी वोह किस क़दर होगी ? यक़ीनन इन के दिलों में मौजूद दुश्मनी ज़ाहिरी दुश्मनी से बढ़ कर है । लिहाज़ा ऐ मुसल्मानो ! इन से दोस्ती न करो । **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे सामने अपनी आयतें खोल कर बयान फ़रमाता है । कुरआने पाक की जामेइय्यत और ह़क़्क़ानिय्यत को अगर समझना हो तो इन आयात को सामने रख कर तमाम दुन्या के मुसल्मान और काफ़िर ममालिक के ह़ालात का जाएज़ा लें । क्या **अल्लाह** तआ़ला ने जो कुछ बयान फ़रमाया वोह क़त़्ई त़ौर पर ह़क़ और सच नहीं है ? यक़ीनन सच है । तारीख़े आ़लम, तारीख़े इस्लाम और मौजूदा ह़ालात तमाम के तमाम कुरआन की इन आयात की सदाक़त पर दलालत कर रहे हैं लेकिन अफ़्सोस कि अभी भी हमारी आंखें ख़्वाबे ग़फ़्लत में हैं, हमारे लोग अभी भी उन्ही को अपना मुश्किल कुशा और ह़ाजत रवा मान रहे हैं जिन्हें अपने राज़ बताने से भी **अल्लाह** तआ़ला हमें मन्अ़ फ़रमा रहा है ।

هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَ لَا یُحِبُّوْنَكُمْ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَ اِذَا
لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَ اِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَیْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ

[1] ......صاوی، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۱۸، ۱/۳۰۶.

www.dawateislami.net

الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुनते हो येह जो तुम हो तुम तो उन्हें चाहते हो और वोह तुम्हें नहीं चाहते और ह़ाल येह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो और वोह जब तुम से मिलते हैं कहते हैं हम ईमान लाए और अकेले हों तो तुम पर उंग्लियां चबाएं ग़ुस्से से तुम फ़रमा दो कि मर जाओ अपनी घुटन (क़ल्बी जलन) में **अल्लाह** ख़ूब जानता है दिलों की बात।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ख़बरदार : येह तुम ही हो जो उन्हें चाहते हो और वोह तुम्हें पसन्द नहीं करते ह़ालां कि तुम तमाम किताबों पर ईमान रखते हो और जब वोह तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान ला चुके हैं और जब तन्हाई में होते हैं तो ग़ुस्से के मारे तुम पर उंग्लियां चबाते हैं। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो, अपने ग़ुस्से में मर जाओ। बेशक **अल्लाह** दिलों की बात को ख़ूब जानता है।

﴿تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ﴾ : **तुम उन्हें चाहते हो और वोह तुम्हें पसन्द नहीं करते।** इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐ मुसल्मानो ! येह सिर्फ़ तुम हो जो रिश्तेदारी और दोस्ती वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर उन से मह़बबत करते हो जब कि वोह तुम्हें पसन्द नहीं करते और दीनी मुख़ालफ़त की बिना पर तुम से दुश्मनी रखते हैं ह़ालां कि तुम क़ुरआन पर भी ईमान रखते हो और उन की किताबों पर भी लेकिन वोह तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते तो जब वोह अपने कुफ़्र में इतने पुख़्ता हैं तो तुम अपने ईमान में पुख़्ता क्यूं नहीं होते और उन में से जो मुनाफ़िक़ीन हैं उन का ह़ाल येह है कि जब वोह तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ला चुके हैं और जब तन्हाई में होते हैं तो ग़ुस्से के मारे तुम पर उंग्लियां चबाते हैं। जब उन का येह ह़ाल है तो ऐ मुसल्मानो ! तुम उन से बचो। उन के इस ग़ैज़ो ग़ज़ब पर ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप उन से फ़रमा दें कि तुम मरते दम तक अपने ग़ुस्से पर क़ाइम रहो और इस जलन में जलते रहो लेकिन याद रखो कि इस वज्ह से इस्लाम और मुसल्मानों का कुछ नहीं बिगड़ेगा अलबत्ता तुम्हारे लिये येह ग़ुस्सा अ़ज़ाब का बाइ़स बन जाएगा क्यूं कि तुम्हारी येह क़ल्बी ह़ालत **अल्लाह** तआ़ला को मा'लूम है जो दिलों की बातें भी जानता है।

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ؗ وَ اِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَ

www.dawateislami.net

اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا لَا یَضُرُّكُمْ كَیْدُهُمْ شَیْــٴًـا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ۠ ﴿۱۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़ गारी किये रहो तो उन का दाउं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उन के सब काम ख़ुदा के घेरे में हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगता है और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश होते हैं और अगर तुम सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो तो उन का मक्रो फ़रेब तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। बेशक **अल्लाह** उन के तमाम कामों को घेरे में लिये हुए है।

﴿اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ﴾ **: अगर तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगता है।** ﴾ कुफ़्फ़ार की उ़मूमी ह़ालत येह है कि अगर मुसल्मानों को कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगता है और अगर मुसल्मानों को कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो वोह ख़ुश होते हैं लिहाज़ा मुसल्मानों को काफ़िरों से मह़ब्बत व दोस्ती नहीं रखनी चाहिये। उन के मुक़ाबले में मुसल्मान अगर सब्र और तक़्वा को अपना शिआ़र बना लें तो काफ़िरों का कोई दाव मुसल्मानों पर न चल सकेगा।

وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِیْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۙ﴿۱۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो ऐ मह़बूब जब तुम सुब्ह़ को अपने दौलत ख़ाने से बरआमद हुए मुसल्मानों को लड़ाई के मोरचों पर क़ाइम करते और **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो ऐ ह़बीब ! जब सुब्ह़ के वक़्त तुम अपने दौलत ख़ाने से निकल कर मुसल्मानों को लड़ाई के मोरचों पर मुक़र्रर कर रहे थे और **अल्लाह** सुनने वाला जानने वाला है।

www.dawateislami.net

﴾وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ﴿ : **और याद करो ऐ ह़बीब ! जब सुब्ह़ के वक़्त तुम अपने दौलत ख़ाने से निकले ।** यहां से ग़ज़्वए उहुद का बयान हो रहा है और इस के बा'द ग़ज़्वए बद्र का तज़्किरा है ।

जंगे उहुद का बयान

यहां रुकूअ़ की इब्तिदा में जंगे उहुद का बयान है जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि जंगे बद्र में शिकस्त खाने से कुफ़्फ़ार को बड़ा रन्ज था, इस लिये उन्हों ने इन्तिक़ाम के इरादे से मुसल्मानों से जंग के लिये एक बड़ा भारी लश्कर तय्यार कर लिया । जब सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर मिली कि लश्करे कुफ़्फ़ार उहुद में पहुंचा हुवा है तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मश्वरा फ़रमाया, इस मश्वरे में मुनाफ़िक़ों के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इस से पहले कभी किसी मश्वरे के लिये नहीं बुलाया गया था । अक्सर अन्सार की और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय की राय थी कि हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में ही ठहरे रहें और जब कुफ़्फ़ार यहां आएं तब उन से मुक़ाबला किया जाए । येही सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी थी लेकिन बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की राय येह हुई कि मदीनए त़य्यिबा से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इस पर उन्हों ने इसरार किया । सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत कदे में तशरीफ़ ले गए और अस्लह़ा ज़ेबे तन फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाए । अब ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर उन सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को नदामत हुई और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राय देना और इस पर इसरार करना हमारी ग़लत़ी थी, इस को मुआ़फ़ फ़रमाइये और जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरादा हो वोही कीजिये, हम ह़ाज़िर हैं ।" हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "नबी की शान के लाइक़ नहीं कि हथियार पहन कर जंग से पहले उतार दे ।"

मुश्रिकीन दो तीन दिन से उहुद में पहुंचे हुए थे । सुल्त़ाने अ़रब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के रोज़ नमाज़े जुमुआ़ के बा'द एक अन्सारी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर रवाना हुए और पन्दरह शव्वाल 3 हिजरी बरोज़ इतवार उहुद में पहुंचे और पहाड़ का एक दर्रा जो लश्करे

www.dawateislami.net

इस्लाम के पीछे था, उस त़रफ़ से अन्देशा था कि किसी वक़्त दुश्मन पुश्त पर से आ कर ह़म्ला करे, इस लिये नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहां मुक़र्रर फ़रमा दिया कि अगर दुश्मन इस त़रफ़ से ह़म्ला आवर हो तो तीरों के ज़रीए़ उस का ह़म्ला दफ़्अ़ कर दिया जाए और हुक्म दिया कि किसी ह़ाल में यहां से न हटना और इस जगह को न छोड़ना, ख़्वाह फ़त्ह़ हो या शिकस्त हो। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ जिस ने मदीनए त़य्यिबा में रह कर जंग करने की राय दी थी अपनी राय के ख़िलाफ़ किये जाने की वज्ह से बरहम हुवा और कहने लगा कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नौ उ़म्र लड़कों का कहना तो माना और मेरी बात की परवा न की। इस अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के साथ तीन सो मुनाफ़िक़ थे उन से इस ने कहा कि जब दुश्मन लश्करे इस्लाम के मुक़ाबिल आ जाए उस वक़्त भाग जाना ताकि लश्करे इस्लाम में अब्तरी फैल जाए और तुम्हें देख कर और लोग भी भाग निकलें। मुसल्मानों के लश्कर की कुल ता'दाद इन मुनाफ़िक़ीन समेत एक हज़ार थी और मुश्रिकीन तीन हज़ार थे। मुक़ाबला शुरूअ़ होते ही अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सो मुनाफ़िक़ों को ले कर भाग निकला और हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सात सो सह़ाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ रह गए। **अल्लाह** तआ़ला ने उन को साबित क़दम रखा यहां तक कि मुश्रिकीन को शिकस्त हुई। मुसल्मान मुश्रिकों के पीछे भागे तो पहाड़ी दर्रे पर मौजूद सह़ाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم भी भागते हुए मुश्रिकीन के पीछे पड़ गए और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहां क़ाइम रहने के लिये फ़रमाया था वहां क़ाइम न रहे तो **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें येह दिखा दिया कि बद्र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी की बरकत से फ़त्ह़ हुई थी जब कि यहां हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की मुख़ालफ़त का नतीजा येह हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुश्रिकीन के दिलों से रो'ब व हैबत दूर कर दी और वोह पलट पड़े और मुसल्मानों को नुक़्सान उठाना पड़ा। शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक जमाअ़त रह गई जिस में ह़ज़रते अबू बक्र, ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते अ़ब्बास, ह़ज़रते त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم थे। इसी जंग में दन्दाने अक़्दस शहीद हुए और चेह्रए अक़्दस पर ज़ख़्म आया। इसी के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा नाज़िल हुई।(1)

(1)......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٢١، ١/٢٩٤-٢٩٥.

www.dawateislami.net

اِذْ هَمَّتْ طَّآىٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَاۙ وَ اللّٰهُ وَلِیُّهُمَاؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं और **अल्लाह** उन का संभालने वाला है और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जब तुम में से दो गुरौहों ने इरादा किया कि बुज़्दिली दिखाएं और **अल्लाह** उन को संभालने वाला था और **अल्लाह** ही पर मुसल्मानों को भरोसा करना चाहिये ।

﴿اِذْ هَمَّتْ طَّآىٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا﴾ **: जब तुम में से दो गुरौहों ने इरादा किया कि बुज़्दिली दिखाएं ।**﴾ येह दोनों गुरौह अन्सार में से थे एक क़बीलए बनी सलमा जिस का तअ़ल्लुक़ ख़ज़्रज से था और एक बनी ह़ारिसा जिस का तअ़ल्लुक़ औस से था । येह दोनों लश्कर के बाज़ू थे, जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ भागा तो इन क़बीलों ने भी वापसी का इरादा किया लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने करम फ़रमाया और इन्हें इस से मह़फ़ूज़ रखा और येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साबित क़दम रहे । यहां इस ने'मतो एह़सान का ज़िक्र फ़रमाया है । आयत के आख़िर में तवक्कुल की अ़ज़्मत को भी बयान फ़रमाया । **तवक्कुल का मफ़्हूम** येह है कि अपना काम किसी के सिपुर्द कर के उस पर ए'तिमाद करना, **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल करने का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ीक़ी कारसाज़ होने का यक़ीन रखते हुए अपने काम उस के सिपुर्द कर देना ।(1)

وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

(1) احیاء علوم الدین، کتاب التوحید والتوکل، الشطر الثانی، بیان حال التوکل، ۳۲۱/۴، ملخصاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे तो **अल्लाह** से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे तो **अल्लाह** से डरते रहो ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

﴿وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ﴾ **: और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की।** यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अ़ज़ीम एह़सान को बयान फ़रमा रहा है कि ग़ज़्वए बद्र में जब मुसल्मानों की ता'दाद भी कम थी और उन के पास हथियारों और सुवारों की भी कमी थी जब कि कुफ़्फ़ार ता'दाद और जंगी क़ुव्वत में मुसल्मानों से कई गुना ज़ियादा थे। इस ह़ालत में **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों की मदद फ़रमाई और कुफ़्फ़ार पर फ़त्ह़ो कामरानी अ़त़ा फ़रमाई। जंगे बद्र 17 रमज़ान 2 हिजरी में जुमुआ़ के दिन हुई। मुसल्मान 313 थे जब कि कुफ़्फ़ार तक़रीबन एक हज़ार। बद्र एक कूंवां है जो एक शख़्स बद्र बिन आ़मिर ने खोदा था, उस के नाम पर इस अ़लाक़े का नाम "बद्र" हो गया। (येह अ़लाक़ा मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह के दरमियान है)(1)

अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों का मदद करना दर ह़क़ीक़त अल्लाह तआ़ला का मदद करना है

इस आयते मुबारका से अहले सुन्नत का एक अ़ज़ीम अ़क़ीदा वाज़ेह़ त़ौर पर साबित होता है। वोह येह कि जंगे बद्र में मुसल्मानों की मदद के लिये फ़िरिश्ते नाज़िल हुए जैसा कि अगली आयतों में मौजूद है, जंग में फ़िरिश्ते लड़े, उन्हों ने मुसल्मानों की मदद की लेकिन उन की मदद को **अल्लाह** तआ़ला फ़रमा रहा है कि बद्र में **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारी मदद फ़रमाई। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे जब **अल्लाह** तआ़ला की इजाज़त से मदद फ़रमाते हैं तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की मदद होती है। लिहाज़ा अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم जो मदद फ़रमाएं वोह **अल्लाह** तआ़ला ही की मदद क़रार पाएगी और इसे कुफ़्रो शिर्क नहीं कहा जाएगा।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ

(1)......صاوی، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۲۳، ۱/۳۱۰.

www.dawateislami.net

الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا وَ يَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ
هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब ऐ महबूब तुम मुसल्मानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर। हां क्यूं नहीं अगर तुम सब्र व तक़्वा करो और काफ़िर उसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : याद करो ऐ हबीब ! जब तुम मुसल्मानों से फ़रमा रहे थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे। हां क्यूं नहीं, अगर तुम सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो और काफ़िर उसी वक़्त तुम्हारे ऊपर हम्ला आवर हो जाएं तो तुम्हारा रब पांच हज़ार, निशान वाले फ़िरिश्तों के साथ तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।

﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ : **जब तुम मुसल्मानों से फ़रमा रहे थे।**﴿ शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को हौसला देते हुए और उन की हिम्मत बढ़ाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "तुम अपनी हिम्मत बुलन्द रखो, क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं है कि **अल्लाह** तआला तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद फ़रमाए।" इस के बा'द फ़रमान है कि तीन हज़ार फ़िरिश्तों के साथ ही नहीं बल्कि अगर तुम सब्र व तक़्वा इख़्तियार करो और उस वक़्त दुश्मन तुम पर हम्ला आवर हो जाएं तो **अल्लाह** तआला पांच हज़ार मुमताज़ फ़िरिश्तों के साथ तुम्हारी मदद फ़रमाएगा। येह एक ग़ैबी ख़बर थी जो बा'द में पूरी हुई और सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के सब्र व तक़्वे की बदौलत **अल्लाह** तआला ने पांच हज़ार फ़िरिश्तों को नाज़िल फ़रमाया जिन्हों ने मैदाने बद्र में मुसल्मानों की मदद की।

वाक़िअ़ए बद्र से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत और वाक़िए से 3 बातें मा'लूम हुई :

(1)...... बद्र में शिर्कत करने वाले तमाम मुहाजिरीन व अन्सार साबिर और मुत्तक़ी हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआला ने अपनी मदद उतारने के लिये सब्र और तक़्वा की शर्त रखी थी और चूंकि

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते बा'द में नाज़िल हुए तो इस से मा'लूम हुवा कि शर्त़ पाई गई थी, या'नी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने सब्रो तक़्वा का मुज़ाहरा किया था, लिहाज़ा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के सब्र और तक़्वे पर क़ुरआन गवाह है।

(2)...... बद्र में तशरीफ़ लाने वाले फ़िरिश्ते दूसरे फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं कि रब عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ख़ास निशान लगा दिये थे जिन से वोह दूसरों से मुमताज़ हो गए और अह़ादीस में इस की सराह़त भी मौजूद है कि बद्र में उतरने वाले फ़िरिश्ते दूसरे फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं।

(3)...... सरवरे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत और मुजाहिदीन की मदद आ'ला इ़बादत है कि येह फ़िरिश्ते हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की मदद के लिये नाज़िल हुए और दूसरे फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल क़रार पाए। लिहाज़ा हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم तमाम मुसल्मानों से अफ़्ज़ल हैं कि येह वोह ख़ुश नसीब ह़ज़रात हैं जिन्हें हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत नसीब हुई। ह़दीस में है : **अल्लाह** तआ़ला ने अस्ह़ाबे बद्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के बारे में फ़रमाया : "तुम जो चाहे अ़मल करो तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब हो चुकी है।"[(1)]

शुहदाए बद्र ही की फ़ज़ीलत पर ज़िम्नन दलालत करने वाली येह ह़दीस भी मुलाह़ज़ा हो, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ग़ज़्वए बद्र के दिन ह़ज़रते ह़ारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हो गए तो उन की वालिदा ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप को ब ख़ूबी मा'लूम है कि मुझे ह़ारिसा कितना प्यारा था, अगर वोह जन्नत में है तो मैं सब्र करूं और सवाब की उम्मीद रखूं और ख़ुदा न ख़्वास्ता मुआ़मला बर अ़क्स है तो आप देखेंगे कि मैं क्या करती हूं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुझ पर अफ़्सोस है, क्या तू पगली हो गई है ? क्या ख़ुदा की एक ही जन्नत है ? उस की जन्नतें तो बहुत सारी हैं और बेशक ह़ारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नतुल फ़िरदौस में है।"[(2)]

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَىٕنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا

1 ......بخاری، کتاب المغازی، باب فضل من شهد بدرًا، ۳/۱۲، الحدیث: ۳۹۸۳.

2 ......بخاری، کتاب المغازی، باب فضل من شهد بدرًا، ۳/۱۲، الحدیث: ۳۹۸۲.

www.dawateislami.net

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह फ़त्ह़ **अल्लाह** ने न की मगर तुम्हारी ख़ुशी के लिये और इसी लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले और मदद नहीं मगर **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाले के पास से ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** ने इस इमदाद को सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशी के लिये किया और इस लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले और मदद सिर्फ़ **अल्लाह** की त़रफ़ से होती है जो ज़बर दस्त है ह़िक्मत वाला है ।

﴾وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ : **और अल्लाह ने इस इमदाद को सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशी के लिये किया ।**﴿ फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरिश्तों को उतार कर जो तुम्हारी मदद फ़रमाई वोह सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशी के लिये की और इस लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को इत़्मीनान नसीब हो और दुश्मन की कसरत और अपनी क़िल्लत से तुम्हें परेशानी और बे क़रारी न हो । मुसल्मानों को वैसे ही येह बात याद रखनी चाहिये कि ह़क़ीक़ी मदद अस्बाब से नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से होती है लिहाज़ा चाहिये कि बन्दा सिर्फ़ अस्बाब पर नहीं बल्कि मुसब्बिबुल अस्बाब पर नज़र रखे और उसी पर तवक्कुल करे ।

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की अ़ज़मत

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की ख़ुशी **अल्लाह** तआ़ला को मह़बूब है कि इन की ख़ुशी के लिये इन की मदद की गई ।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآىٕبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : इस लिये कि काफ़िरों का एक ह़िस्सा काट दे या उन्हें ज़लील करे कि ना मुराद फिर जाएं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस लिये कि वोह काफ़िरों का एक ह़िस्सा काट दे या उन्हें ज़लीलो रुस्वा कर दे तो वोह ना मुराद हो कर लौट जाएं ।

www.dawateislami.net

﴿لِيَقۡطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا﴾ **: इस लिये कि वोह काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे ।** अल्लाह तआ़ला ने मुसल्मानों की मदद इस लिये भी फ़रमाई कि काफ़िरों के बड़े बड़े सरदार मारे जाएं, गिरिफ़्तार किये जाएं और इस के ज़रीए़ काफ़िरों की कुव्वत ख़त्म हो, चुनान्चे बद्र में ऐसा ही हुवा ।

لَيۡسَ لَكَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَیۡءٌ اَوۡ يَتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ اَوۡ يُعَذِّبَهُمۡ فَاِنَّهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۹﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या उन पर अ़ज़ाब करे कि वोह ज़ालिम हैं । और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! आप का इस मुआ़मले से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, **अल्लाह** चाहे तो उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे दे और चाहे तो उन्हें अ़ज़ाब में डाल दे क्यूं कि येह ज़ालिम हैं । और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है । जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ।

﴿لَيۡسَ لَكَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَیۡءٌ﴾ **: ऐ ह़बीब ! आप का इस मुआ़मले से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ।** हिजरत के चौथे साल सफ़र के महीने में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सत्तर क़ारी सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को मक्का और अ़सफ़ान के दरमियान एक जगह बिअ्रे मऊ़ना की त़रफ़ भेजा ताकि वहां लोगों को कुरआने पाक और दीनी मसाइल की ता'लीम दें, आ़मिर बिन तुफ़ैल ने धोके से उन्हें शहीद कर दिया, उन काफ़िरों के ख़िलाफ़ हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरबादी की दुआ़ का इरादा फ़रमाया तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रोक दिया, इस के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा उतरी ।(1)

(1)......صاوی، ال عمران، تحت الآية: ١٢٨، ١/٣١١-٣١٢، مدارك، ال عمران، تحت الآية: ١٢٨، ص١٨٤، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

और फ़रमा दिया गया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के लिये कोई दुआ़ न करें। उन का मुआ़मला **अल्लाह** तआ़ला पर छोड़ दें, **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे और चाहे तो अ़ज़ाब दे। येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वोह मुबारक तरबियत है जो रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद फ़रमाई और हर जगह अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कामिल रहनुमाई फ़रमाई।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो सूद दूना दून न खाओ और **अल्लाह** से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! दुगना दर दुगना सूद न खाओ और **अल्लाह** से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें काम्याबी मिल जाए।

﴿لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً﴾ : **दुगना दर दुगना सूद न खाओ।** ﴾ इस आयत में सूद खाने से मन्अ़ किया गया और इसे ह़राम क़रार दिया गया। ज़मानए जाहिलिय्यत में सूद की एक सूरत येह भी राइज थी कि जब सूद की अदाएगी की मुद्दत आती, अगर उस वक़्त मक़रूज़ अदा न कर पाता तो क़र्ज़ ख़्वाह सूद की मिक़्दार में इज़ाफ़ा कर देता और येह अ़मल मुसल्सल किया जाता रहता। इसे दुगना दर दुगना कहा जा रहा है।

सूद से मुतअ़ल्लिक़ वईदें

सूद ह़रामे क़त़्ई है, इसे ह़लाल जानने वाला काफ़िर है। क़ुरआन व ह़दीस में इस के मुतअ़ल्लिक़ सख़्त वईदें बयान हुई हैं। सूरए बक़रह की आयत 275, 276, 278 में भी सूद की ह़ुरमत का बयान मौजूद है और ह़दीस में है :

(1)...... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, सूद लिखने वाले और इस की गवाही देने वाले पर ला'नत फ़रमाई और फ़रमाया कि येह सब इस गुनाह में बराबर हैं।(1)

(2)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सूद का गुनाह **73** दरजे है, इन में सब से छोटा येह है कि आदमी अपनी मां से ज़िना करे।''(2)

(3)...... हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सूद का एक दिरहम जो आदमी को मिलता है उस के **36** बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है।''(3)

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मे'राज की रात मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा जिन के पेट घरों की मानिन्द बड़े थे और उन में सांप थे जो बाहर से नज़र आ रहे थे, मैं ने हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन लोगों के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : येह वोह लोग हैं जो सूद खाते थे।''(4)

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि गुनाहे कबीरा कर लेने से आदमी ईमान से ख़ारिज नहीं होता क्यूं कि यहां सूद की हुरमत बयान करते हुए लोगों से ''ऐ ईमान वालो'' कह कर ख़िताब किया गया है।(5)

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۚ﴿۱۳۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार रखी है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार की गई है।

1 ......مسلم، كتاب المساقاة والمزارعة، باب لعن آكل الربا ومؤكله، ص ٨٦٢، الحديث: ١٠٦(١٥٩٩).
2 ......مستدرك، كتاب البيوع، انّ اربى الربا عرض الرجل المسلم، ٢/٣٣٨، الحديث: ٢٣٠٦.
3 ......شعب الايمان، الثامن والثلاثون من شعب الايمان، ٤/٣٩٥، الحديث: ٥٥٢٣.
4 ......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ في الربا، ٣/٧١، الحديث: ٢٢٧٣.

5...... सूद से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये रिसाला ''सूद और उस का इलाज'' (मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुतालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

﴿وَاتَّقُوا النَّارَ﴾ : **और उस आग से बचो ।** हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : इस आयत में ईमानदारों को तह्दीद (धमकी) है कि सूद वग़ैरा जो चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम फ़रमाई हैं उन को ह़लाल न जानें क्यूं कि ह़रामे क़त़ई को ह़लाल जानना कुफ़्र है ।[(1)]

وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** व रसूल के फ़रमां बरदार रहो इस उम्मीद पर कि तुम रह़्म किये जाओ ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** और रसूल की फ़रमां बरदारी करते रहो ताकि तुम पर रह़्म किया जाए ।

﴿وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ﴾ : **और अल्लाह और रसूल की फ़रमां बरदारी करते रहो ।** फ़रमाया गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करो और येह बात यक़ीनी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त को कहते हैं, रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार नहीं हो सकता ।

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ۙ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं परहेज़ गारों के लिये तय्यार रखी है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की त़रफ़ दौड़ो जिस की वुस्अ़त आस्मानों और ज़मीन के बराबर है । वोह परहेज़ गारों के लिये तय्यार की गई है ।

(1) ......خازن، آل عمران، تحت الآية: ۱۳۱، ۱/ ۳۰۰.

www.dawateislami.net

﴿وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ : **और अपने रब की बख़्शिश की त़रफ़ दौड़ो ।**﴾ फ़रमाया गया कि गुनाहों से तौबा कर के, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ को अदा कर के, नेकियों पर अ़मल पैरा हो कर और तमाम आ'माल में इख़्लास पैदा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बख़्शिश और जन्नत की त़रफ़ जल्दी करो। फिर जन्नत की वुस्अ़त इस त़रह़ बयान फ़रमाई कि लोग समझ सकें क्यूं कि लोग जो सब से वसीअ़ चीज़ देखते हैं वोह आस्मान व ज़मीन ही है, इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर तमाम आस्मानों और ज़मीनों को तरतीब से एक लाइन में रख कर जोड़ दिया जाए तो जो वुस्अ़त बनेगी उस से जन्नत की चौड़ाई का अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जन्नत कितनी वसीअ़ है। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से दरयाफ़्त किया गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में ? फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान ऐसा है जिस में जन्नत समा सके। अ़र्ज़ किया गया : फिर कहां है ? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर, अ़र्श के नीचे।(1)

जन्नत निहायत अ़ज़ीमुश्शान जगह है, **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और उस के दीदार का मक़ाम है। क़ुरआने पाक में जन्नत की अ़ज़मत को ब कसरत बयान किया गया है, **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए। येह बात भी सामने रखें कि इस आयत और इस से ऊपर की आयत "وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ" से साबित हुवा कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकी हैं और दोनों मौजूद हैं क्यूं कि दोनों आयतों में माज़ी के ज़माने में जन्नत व दोज़ख़ के तय्यार होने का ज़िक्र फ़रमाया गया है।

الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَ الْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِؕ-وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَۚ(۱۳۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रन्ज में और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के मह़बूब हैं।

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۳۳، ۱/ ۳۰۱.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जो ख़ुशह़ाली और तंगदस्ती में **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं और गु़स्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले हैं और **अल्लाह** नेक लोगों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

﴿اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ﴾ **: वोह जो ख़ुशह़ाली और तंगदस्ती में अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं।** आयते मुबारका में मुत्तक़ीन के चार औसाफ़ बयान किये गए हैं : **(1)** ख़ुशह़ाली और तंगदस्ती दोनों ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला की राह में ख़र्च करना, **(2)** गु़स्सा पी जाना, **(3)** लोगों को मुआ़फ़ कर देना, **(4)** एह़सान करना।

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के बारे में एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो चीज़ तुम **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले में और देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

और इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾ لِیُوَفِّیَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ یَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो **अल्लाह** की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमारे दिये हुए रिज़्क़ में से पोशीदा और ए'लानिया कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं जो हरगिज़ तबाह नहीं होगी। ताकि **अल्लाह** उन्हें उन के सवाब भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला, क़द्र फ़रमाने वाला है।

और बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे दो

(1) ......سبا:۳۹.
(2) ......فاطر:۲۹،۳۰.

www.dawateislami.net

आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है ‘‘ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा।’’(1)

या’नी तुम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करो, तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मिलेगा।

ग़ुस्से पर क़ाबू पाने के चार फ़ज़ाइल

अह़ादीस में ग़ुस्से पर क़ाबू पाने के कसीर फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं उन में से 4 फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘बहादुर वोह नहीं जो पहलवान हो और दूसरे को पछाड़ दे बल्कि बहादुर वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद को क़ाबू में रखे।’’(2)

(2)...... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘जो शख़्स अपनी ज़बान को मह़फ़ूज़ रखेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा और जो अपने ग़ुस्से को रोकेगा, क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला अपना अ़ज़ाब उस से रोक देगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उ़ज़्र करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के उ़ज़्र को क़बूल फ़रमाएगा।’’(3)

(3)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है ‘‘जो अपने ग़ुस्से में मुझे याद रखेगा मैं उसे अपने जलाल के वक़्त याद करूंगा और हलाक होने वालों के साथ उसे हलाक न करूंगा।’’(4)

(4)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘**अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिये बन्दे ने ग़ुस्से का घूंट पिया, इस से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कोई घूंट नहीं(5)।’’(6)

---

1 ......بـخاری، کتاب التفسیر، باب و کان عرشه علی الماء، ٣/٢٤٥، الحدیث: ٤٦٨٤، مسلم، کتاب الزکاة، باب الحث علی النفقة و تبشیر المنفق بالخلف، ص٤٩٨، الحدیث: ٣٦(٩٩٣).

2 ......بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ٤/١٣٠، الحدیث: ٦١١٤.

3 ......شعب الایمان، السابع و الخمسون من شعب الایمان، فصل فی ترك الغضب... الخ، ٦/٣١٥، الحدیث: ٨٣١١.

4 ......فردوس الاخبار، باب القاف، ٢/١٣٧، الحدیث: ٤٤٧٦.

5 ......شعب الایمان، السابع و الخمسون من شعب الایمان، فصل فی ترك الغضب... الخ، ٦/٣١٤، الحدیث: ٨٣٠٧.

6 ...... ग़ुस्से की आ़दत ख़त्म करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला ‘‘ग़ुस्से का इ़लाज’’ पढ़ना बहुत फ़ाएदे मन्द है।

www.dawateislami.net

अ़फ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल

अहादीस में अ़फ़्वो दर गुज़र के भी कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से दो फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं तो उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो इसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो इस से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नात़ा जोड़े।''(1)

(2)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब लोग ह़िसाब के लिये ठहरे होंगे तो उस वक़्त एक मुनादी येह ए'लान करेगा : जिस का अज्र **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। फिर दूसरी बार ए'लान करेगा कि जिस का अज्र **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा कि वोह कौन है जिस का अज्र **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है ? मुनादी कहेगा : उन का जो लोगों (की ख़त़ाओं) को मुआ़फ़ करने वाले हैं। फिर तीसरी बार मुनादी ए'लान करेगा : जिस का अज्र **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।''(2)

ह़िल्म व अ़फ़्व के दो अ़ज़ीम वाक़िआ़त

(1)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह चल रहा था और आप एक नजरानी चादर ओढ़े हुए थे जिस के किनारे मोटे और खुर्दरे थे, अचानक एक दीहाती ने आप की चादरे मुबारक को पकड़ कर इतने ज़बर दस्त झटके से खींचा कि आप की मुबारक गरदन पर ख़राश आ गई। वोह कहने लगा : **अल्लाह** तआ़ला का जो माल आप के पास है आप हुक्म फ़रमाइये कि उस में से कुछ मुझे मिल जाए। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और मुस्कुरा दिये, फिर उसे कुछ माल अ़त़ा

1 ......مستدرك، كتاب التفسير، شرح آية: كنتم خير امّة... الخ، ١٢/٣، الحديث: ٣٢١٥.

2 ......معجم الاوسط، باب الالف، من اسمه احمد، ٥٤٢/١، الحديث: ١٩٩٨.

www.dawateislami.net

फ़रमाने का हुक्म दिया ।[1]

(2)...... इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की लौंडी वुज़ू करवाते हुए उन पर पानी डाल रही थी कि अचानक उस के हाथ से बरतन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे पर गिर गया जिस से चेहरा ज़ख़्मी हो गया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस की त़रफ़ सर उठा कर देखा तो उस ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ "और गुस्सा पीने वाले" इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं ने अपना गुस्सा पी लिया। उस ने फिर अ़र्ज़ की : وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ "और लोगों से दर गुज़र करने वाले" इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला तुझे मुआ़फ़ करे। फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुई : وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ "और **अल्लाह** एह्सान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है" इर्शाद फ़रमाया : जा ! तू **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये आज़ाद है।[2]

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪۫ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं। ऐसों का बदला उन के रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (इन्आ़म, हिस्सा) है।

1 ......بخاری، کتاب فرض الخمس، باب ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یعطی المؤلفۃ قلوبھم...الخ، ۲/۳۵۹، الحدیث:۳۱۴۹.

2 ......ابن عساکر، ذکر من اسمہ علی، علی بن الحسین بن علی بن ابی طالب، ۴۱/۳۸۷.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग कि जब किसी बे ह़याई का इरतिकाब कर लें या अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लें तो **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगें और **अल्लाह** के इ़लावा कौन गुनाहों को मुआ़फ़ कर सकता है और येह लोग जान बूझ कर अपने बुरे आ'माल पर इसरार न करें। येह वोह लोग हैं जिन का बदला उन के रब की त़रफ़ से बख़्शिश है और वोह जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं। (येह लोग) हमेशा उन (जन्नतों) में रहेंगे और नेक आ'माल करने वालों का कितना अच्छा बदला है।

﴿ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ﴾ **: अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगें।** परहेज़ गारों के औसाफ़ का बयान जारी है और यहां उन का मज़ीद एक वस्फ़ बयान फ़रमाया, वोह येह कि अगर उन से कोई कबीरा या सग़ीरा गुनाह सरज़द हो जाए तो वोह फ़ौरन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद कर के गुनाहों से तौबा करते हैं, अपने गुनाह पर शरमिन्दा होते हैं और उसे छोड़ देते हैं और आयिन्दा के लिये उस से बाज़ रहने का पुख़्ता अ़ज़्म कर लेते हैं और अपने गुनाह पर इसरार नहीं करते और येही मक़्बूल तौबा की शराइत़ हैं। इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि ''तैहान नामी एक खजूर फ़रोश के पास एक ह़सीन औ़रत खजूरें ख़रीदने आई। दुकानदार ने कहा कि येह खजूरें अच्छी नहीं हैं, बेहतरीन खजूरें घर में हैं, येह कह कर उस औ़रत को घर ले गया और वहां जा कर उस का बोसा ले लिया और उसे अपने साथ चिमटा लिया। उस औ़रत ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर। येह सुनते ही तैहान ने उस औ़रत को छोड़ दिया और शरमिन्दा हो कर हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में सारा माजरा अ़र्ज़ किया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।'' एक रिवायत येह है कि ''दो शख़्सों में बड़ा प्यार था, उन में से एक जिहाद के लिये गया और अपना घरबार दूसरे के सिपुर्द कर गया। एक रोज़ उस मुजाहिद की बीवी ने उस अन्सारी से गोश्त मंगाया, वोह आदमी गोश्त ले आया, जब उस मुजाहिद की बीवी ने गोश्त लेने के लिये हाथ आगे बढ़ाया तो उस ने हाथ चूम लिया लेकिन चूमते ही उसे सख़्त शरमिन्दगी हुई और वोह जंगल में निकल गया और मुंह पर त़मांचे मारना और सर पर ख़ाक डालना शुरूअ़ कर दी। जब वोह मुजाहिद अपने घर वापस आया तो अपनी बीवी से अपने उस दोस्त का ह़ाल पूछा। औ़रत बोली कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे दोस्त से बचाए। वोह मुजाहिद उस को तलाश कर के हु़ज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया। उस के ह़क़ में येह आयात उतरीं।''(1)

(1)......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۳۵، ۱/۳۰۲۔

www.dawateislami.net

हो सकता है कि येह दोनों वाक़िआ़त इस आयत का शाने नुज़ूल हों।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से पहले कुछ त़रीके़ बरताव में आ चुके हैं तो ज़मीन में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा झुटलाने वालों का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम से पहले कई त़रीके़ गुज़र चुके हैं तो ज़मीन में चल फिर कर देखो झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा ?

﴿قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ : **तुम से पहले कई त़रीके़ गुज़र चुके हैं।**﴾ इस आयत में फ़रमाया गया कि ऐ लोगो ! काफ़िरों को शुरूअ़ में मोहलत देने और फिर उन की गिरिफ़्त करने के ह़वाले से तुम से पहले भी कई त़रीके़ गुज़र चुके हैं। वोह लोग जिन्हों ने दुन्या की ह़िर्स और इस की लज़्ज़ात की त़लब में अम्बिया व मुरसलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुख़ालफ़त की, लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फिर भी मोहलतें अ़त़ा फ़रमाईं। इस के बा वुजूद वोह राहे रास्त पर न आए तो उन्हें उन के आ'माल के सबब मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों के ज़रीए़ हलाको बरबाद कर दिया। तो ऐ लोगो ! उन ज़मीनों की त़रफ़ सफ़र करो जहां पहले कुफ़्फ़ार आबाद थे जिन्हों ने अपने रसूलों की मुख़ालफ़त की, जिस की वज्ह से उन पर अ़ज़ाबे इलाही आया और वोह तबाह कर दिये गए। उन की उजड़ी बस्तियां देख कर इ़ब्रत पकड़ो और सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाओ। याद रहे कि इ़ब्रतो नसीह़त और सह़ीह़ मक़्सद के लिये सैरो सियाह़त करने में बहुत फ़वाइद हैं। नीज़ येह भी याद रखें कि जैसे अ़ज़ाब की जगह जा कर इ़ब्रत ह़ासिल होती है ऐसे ही रह़मत की जगह जा कर बरकत व नसीह़त ह़ासिल होती है। जैसे किसी वली के मज़ार पर जाएं तो जा कर मा'लूम होता है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने प्यारों की दुन्या में ही कैसी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाता है और लोगों के दिलों में उन की कैसी मह़ब्बत डाल देता है। इस लिये ऐसी रह़मत वाली जगहों पर भी बरकत व नसीह़त के लिये जाना चाहिये।

www.dawateislami.net

هٰذَا بَیَانٌ لِّلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़ गारों को नसीह़त है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह लोगों के लिये एक बयान और रहनुमाई है और परहेज़ गारों के लिये नसीह़त है।

﴾هٰذَا بَیَانٌ لِّلنَّاسِ وَ هُدًى **: येह लोगों के लिये एक बयान और रहनुमाई है।**﴿ क़ुरआने पाक को **अल्लाह** तआ़ला ने हमारी हिदायत और नसीह़त के लिये नाज़िल फ़रमाया लिहाज़ा क़ुरआन का ह़क़ है कि इस की तिलावत के वक़्त इस पहलू को भी सामने रखा जाए और इस में मज़्कूर **अल्लाह** तआ़ला के नबियों और रसूलों عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ना फ़रमानी करने वाली क़ौमों का अन्जाम, क़ियामत की सख़्तियां और जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाबात वग़ैरा के बारे में पढ़ कर इ़ब्रत और नसीह़त ह़ासिल करने की कोशिश की जाए।

وَ لَا تَهِنُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम हिम्मत न हारो और ग़म न खाओ, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम ही ग़ालिब आओगे।

﴾وَ لَا تَهِنُوْا **: और सुस्ती न करो।**﴿ ग़ज़्वए उहुद में नुक़्सान उठाने के बा'द मुसल्मान बहुत ग़मज़दा थे और इस की वज्ह से बा'ज़ के दिल सुस्ती की त़रफ़ माइल थे। उन की इस्लाह़ के लिये फ़रमाया कि जंगे उहुद में जो तुम्हारे साथ पेश आया है उस की वज्ह से ग़म न करो और सुस्ती का मुज़ाहरा न करो। जंगे बद्र में शिकस्त के बा वुजूद इन काफ़िरों ने हिम्मत न हारी और तुम से मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती और कम हिम्मती नहीं करनी चाहिये लिहाज़ा तुम हिम्मत जवां रखो। अगर तुम सच्चे ईमान वाले हो और **अल्लाह** तआ़ला पर कामिल भरोसा रखने वाले हो तो बिल आख़िर तुम ही कामयाब होगे। चुनान्चे मुसल्मानों ने इस हुक्म पर अ़मल कर के दिखाया और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के ज़मानए मुबारका में मुसल्मानों को हर त़रफ़ फ़त्हो नुसरत ह़ासिल हुई।

www.dawateislami.net

إِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٠

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंची तो वोह लोग भी वैसी ही तक्लीफ़ पा चुके हैं और येह दिन हैं जिन में हम ने लोगों के लिये बारियां रखी हैं और इस लिये कि **अल्लाह** पहचान करा दे ईमान वालों की और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा दे और **अल्लाह** दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंची है तो वोह लोग भी वैसी ही तक्लीफ़ पा चुके हैं और येह दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान फेरते रहते हैं और येह इस लिये होता है कि **अल्लाह** ईमान वालों की पहचान करा दे और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा अ़ता फ़रमा दे और **अल्लाह** ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता ।

﴿إِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ﴾ **: अगर तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंची है ।** इस आयत का ख़ुलासा कुछ यूं है कि ऐ मुसल्मानो ! याद रखो कि अगर इस वक़्त मैदाने उहुद में तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंची है तो वोह लोग भी वैसी ही तक्लीफ़ इस से पहले मैदाने बद्र में पा चुके हैं और येह दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान फेरते रहते हैं कि कभी एक की फ़त्ह़ होती है तो कभी दूसरे की । नीज़ येह भी याद रखो कि कभी कभार जो काफ़िरों को ग़लबा ह़ासिल हो जाता है तो वोह इस लिये होता है कि **अल्लाह** तआ़ला ईमान वालों की पहचान करवाना चाहता है कि इन में कौन हर ह़ाल में सब्रो इस्तिक़ामत का पैकर रहता है और कौन बुज़दिल बनता है नीज़ काफ़िरों की फ़त्ह़ के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा अ़ता फ़रमाना चाहता है तो काफ़िरों के ग़लबे में भी बहुत सी ह़िक्मतें होती हैं, लिहाज़ा हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहो । **दर्स :** यहां आयते मुबारका में मुसल्मानों को बार बार बुलन्द हिम्मत, बा ह़ौसला, चुस्त और होशियार होने का फ़रमाया है और कम हिम्मती, सुस्ती व काहिली से मन्अ़ फ़रमाया है ।

www.dawateislami.net

हर लह्ज़ा है मोमिन की नई आन नई शान   गुफ़्तार में किरदार में अल्लाह की बुरहान

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस लिये कि **अल्लाह** मुसल्मानों का निखार कर दे और काफ़िरों को मिटा दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इस लिये कि **अल्लाह** मुसल्मानों को निखार दे और काफ़िरों को मिटा दे।

﴿وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ : **और इस लिये कि अल्लाह निखार दे**।﴾ काफ़िरों से जिहाद की एक और हिक्मत बयान की जा रही है कि काफ़िरों से जो मुसल्मानों को तक्लीफ़ें पहुंचती हैं वोह तो मुसल्मानों के लिये शहादत और पाकीज़गी का ज़रीआ़ बनती हैं जब कि मुसल्मान जिन कुफ़्फ़ार को क़त्ल करते हैं तो येह कुफ़्फ़ार की बरबादी का ज़रीआ़ बनता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी **अल्लाह** ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़्माइश की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम इस गुमान में हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालां कि अभी **अल्लाह** ने तुम्हारे मुजाहिदों का इम्तिहान नहीं लिया और न (ही) सब्र वालों की आज़्माइश की है।

﴿اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ : **क्या तुम इस गुमान में हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ?**﴾ यहां मुसल्मान पर आने वाली आज़्माइशों की हिक्मत का बयान है कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से अगर तुम्हें आज़्माइशें आती हैं तो इस पर बे क़रार और हैरत ज़दा होने

www.dawateislami.net

की ज़रूरत नहीं कि हम तो मुसल्मान हैं, हमें **अल्लाह** तआ़ला क्यूं तक्लीफ़ों में मुब्तला फ़रमा रहा है ? याद रखो कि तुम्हारा इम्तिह़ान किया जाएगा, तुम्हें ईमान की कसोटी पर परखा जाएगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये कैसे ज़ख़्म खाते और तक्लीफ़ उठाते हो और कितना साबित क़दम रहते हो। थोड़ी सी तक्लीफ़ पर चिल्ला उठना और दुहाई देना शुरूअ़ कर देना ईमान वालों का शेवा नहीं। जन्नत में दाख़िला मत़्लूब है तो इन आज़्माइशों पर पूरा उतरना पड़ेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़ुरबानी देना पड़ेगी और हर ह़ाल में साबित क़दमी का मुज़ाहरा करना पड़ेगा।

ज़बां पे शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते — नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

इस में उन लोगों को सर्‌ज़निश (तम्बीह) है जो उहुद के दिन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागे थे। नीज़ इस आयत को सामने रख कर हमें अपने आ'माल और अपनी ह़ालत पर भी ग़ौर करना चाहिये कि अगर हमें राहे ख़ुदा में अपना माल या वक़्त देना पड़े तो हम उस में कितना पूरा उतरते हैं ? अफ़्सोस कि हमारी ह़ालत कुछ अच्छी नहीं। फ़ुज़ूलिय्यात में ख़र्च करने के लिये पैसा भी है और वक़्त भी लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करते वक़्त न पैसा बाक़ी रहता है और न वक़्त।

तम्बीह : आयत में इ़ल्म का लफ़्ज़ है, यहां इस से मुराद आज़्माइश करना है।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۪ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ ع

رکوع ٥

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम तो मौत की तमन्ना किया करते थे उस के मिलने से पहले तो अब वोह तुम्हें नज़र आई आंखों के सामने।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम मौत का सामना करने से पहले तो उस की तमन्ना किया करते थे, अब तुम ने उसे आंखों के सामने देख लिया।

﴾وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ﴿ **: और तुम मौत की तमन्ना किया करते थे।** जब बद्र के शुहदा के दरजे और मर्तबे और उन पर **अल्लाह** तआ़ला के इन्आ़म व एह़सान बयान फ़रमाए गए तो जो

www.dawateislami.net

मुसल्मान ग़ज़्वए बद्र में शरीक न हुए थे उन्हें ह़सरत हुई और उन्हों ने आरज़ू की, कि काश किसी जिहाद में उन्हें ह़ाज़िरी मुयस्सर आए और शहादत के दरजात मिलें, इन्ही लोगों ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उहुद पर जाने के लिये इसरार किया था उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई,(1)

कि पहले तो शहादत की मौत की तमन्ना करते थे मगर जब मैदाने जंग में पहुंचे तो भागने लगे, येह क्या है ? येह गोया उन की तफ़्हीम है या'नी उन्हें समझाया गया है।

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوۡلٌ ۚ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِہِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۠ئِنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ انۡقَلَبۡتُمۡ عَلٰۤی اَعۡقَابِکُمۡ ؕ وَ مَنۡ یَّنۡقَلِبۡ عَلٰی عَقِبَیۡہِ فَلَنۡ یَّضُرَّ اللّٰہَ شَیۡئًا ؕ وَ سَیَجۡزِی اللّٰہُ الشّٰکِرِیۡنَ ﴿۱۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा **अल्लाह** का कुछ नुक़्सान न करेगा और अ़न्क़रीब **अल्लाह** शुक्र वालों को सिला देगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुह़म्मद एक रसूल ही हैं, इन से पहले भी कई रसूल गुज़र चुके हैं तो क्या अगर वोह विसाल कर जाएं या उन्हें शहीद कर दिया जाए तो तुम उलटे पाउं पलट जाओगे ? और जो उलटे पाउं फिरेगा वोह **अल्लाह** का कुछ न बिगाड़ेगा और अ़न्क़रीब **अल्लाह** शुक्र अदा करने वालों को सिला अ़ता फ़रमाएगा।

﴾وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ﴿ **: और मुह़म्मद तो एक रसूल ही हैं।** **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में जब काफ़िरों ने शोर मचाया कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए और शैत़ान ने येह झूटी अफ़्वाह मश्हूर कर दी तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को बहुत इज़्त़िराब हुवा और उन में से कुछ लोग मैदाने जंग से भाग निकले लेकिन फिर जब निदा की गई कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ीह़ सलामत तशरीफ़ रखते हैं तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

(1)......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ١٤٣، ص١٨٨.

www.dawateislami.net

की एक जमाअ़त वापस आ गई। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें यूं भाग जाने पर मलामत की तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हमारे मां बाप आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा हों, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहादत की ख़बर सुन कर हमारे दिल टूट गए और हम से ठहरा न गया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

और फ़रमाया गया कि अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द भी उम्मतों पर उन के दीन की पैरवी लाज़िम रहती है तो अगर ऐसा होता भी कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो जाते या इन का विसाल हो जाता तो भी हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन की पैरवी और इस की हिमायत लाज़िम रहती क्यूं कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले भी बहुत से रसूल गुज़रे हैं लेकिन उन के पैरौकार उन के बा'द उन के दीन पर क़ाइम रहे। रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बि'सत का मक़्सद तो रिसालत की तब्लीग़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम पहुंचाना होता है न कि अपनी क़ौम के दरमियान हमेशा मौजूद रहना, तो जैसे पहले रसूल गुज़र गए इसी त़रह़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी दुन्या से तशरीफ़ ले जाएंगे लिहाज़ा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन पर साबित क़दम रहो। येह क्या बात है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने के बा'द उन के दीन ही से फिर जाओ। जो ऐसा करेगा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का तो कुछ नहीं बिगाड़ेगा बल्कि अपना ही नुक़्सान करेगा जब कि जो दीने इस्लाम से न फिरे और अपने दीन पर साबित रहे वोह शुक्र गुज़ारों में शुमार किया जाएगा क्यूं कि उन्हों ने अपनी साबित क़दमी से ने'मते इस्लाम का शुक्र अदा किया, ऐसे लोग **अल्लाह** तआ़ला से सवाब व जज़ा के उम्मीद वार हैं।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ یُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْیَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ یُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِی الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۴۵﴾

[1]......تفسير كبير، ال عمران، تحت الآية: ١٤٤، ٣/٣٧٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई जान बे हुक्मे ख़ुदा मर नहीं सकती सब का वक़्त लिखा रखा है और जो दुन्या का इन्आ़म चाहे हम उस में से उसे दें और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहे हम उस में से उसे दें और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अ़ता करें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कोई जान **अल्लाह** के हुक्म के बिग़ैर नहीं मर सकती, सब का वक़्त लिखा हुवा है और जो शख़्स दुन्या का इन्आ़म चाहता है हम उसे दुन्या का कुछ इन्आ़म दे देंगे और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहता है हम उसे आख़िरत का इन्आ़म अ़ता फ़रमाएंगे और अ़न्क़रीब हम शुक्र अदा करने वालों को सिला अ़ता करेंगे।

﴿كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا : **सब का वक़्त लिखा हुवा है।**﴾ इस आयत में जिहाद की तरग़ीब है और मुसल्मानों को दुश्मन के मुक़ाबले पर जरी बनाया जा रहा है कि कोई शख़्स बिग़ैर हुक्मे इलाही के मर नहीं सकता, चाहे वोह कितनी ही हलाकत ख़ेज़ लड़ाई में शिर्कत करे और कितने ही तबाह कुन मैदाने जंग में दाख़िल हो जाए, जब कि इस के बर अ़क्स जब मौत का वक़्त आता है तो कोई तदबीर नहीं बचा सकती ख़्वाह वोह हज़ारों पहरेदार और मुहाफ़िज़ मुक़र्रर कर ले और क़ल्ओं में जा छुपे क्यूं कि हर एक की मौत का वक़्त लिखा हुवा है, वोह वक़्त आगे पीछे नहीं हो सकता।

﴿وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا : **और जो दुन्या का इन्आ़म चाहता है।**﴾ यहां से लोगों के दो गुरौहों का तज़्किरा शुरूअ़ होता है और फ़रमाया जाता है कि जो शख़्स सिर्फ़ दुन्या की ने'मतें और आसाइशें चाहता है और उस के अ़मल से सिर्फ़ दुन्या का हुसूल मक़्सूद होता है हम उसे दुन्या दे देते हैं या'नी उस के अ़मल पर उसे दुन्या का फ़ाएदा मिल जाता है और चूंकि आख़िरत उस का मत़्लूब नहीं लिहाज़ा आख़िरत के सवाब से वोह महरूम रहता है। जब कि जो शख़्स अपने अ़मल से आख़िरत का त़ालिब होता है उसे उख़्रवी सवाब अ़ता फ़रमाया जाता है और दुन्या तो सब को मिल ही जाती है।

आ'माल के सवाब का दारो मदार निय्यत पर है

इस से मा'लूम हुवा आ'माल में दारो मदार निय्यत पर है जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस है : ''اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتُ'' आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।(1)

1 ......بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۱/۵، الحدیث: ۱.

www.dawateislami.net

जैसे यहां जिहाद की बात चल रही है तो जिस का मक़्सद जिहाद से सिर्फ़ शोहरत, दौलत और माले ग़नीमत होगा, हो सकता है कि उसे येह चीज़ें मिल जाएं लेकिन आख़िरत का सवाब हरगिज़ नहीं मिलेगा जब कि अगर वोह आख़िरत का त़लब गार हो तो आख़िरत का सवाब तो उसे मिलेगा, इस के साथ वोह इ़ज़्ज़तो शोहरत और माले ग़नीमत से भी मह़रूम नहीं रहेगा।

وَ كَاَیِّنْ مِّنْ نَّبِیٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّیُّوْنَ كَثِیْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ مَا ضَعُفُوْا وَ مَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया उन के साथ बहुत ख़ुदा वाले थे तो न सुस्त पड़े उन मुसीबतों से जो **अल्लाह** की राह में उन्हें पहुंचीं और न कमज़ोर हुए और न दबे और सब्र वाले **अल्लाह** को मह़बूब हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया, उन के साथ बहुत से **अल्लाह** वाले थे तो उन्हों ने **अल्लाह** की राह में पहुंचने वाली तक्लीफ़ों की वज्ह से न तो हिम्मत हारी और न कमज़ोरी दिखाई और न (दूसरों से) दबे और **अल्लाह** सब्र करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

﴾وَ كَاَیِّنْ مِّنْ نَّبِیٍّ قٰتَلَ﴿ **: और कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया।** मुसल्मानों का ह़ौसला बढ़ाया जा रहा है और इन्हें बताया जा रहा है कि तुम से पहले बहुत से अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जिहाद किया, उन के साथ उन के सह़ाबा भी हुवा करते थे। उन्हों ने जिहाद की तकालीफ़ के बा वुजूद हिम्मत न हारी और कमज़ोरी न दिखाई और काफ़िरों के सामने पसपाई का मुज़ाहरा न किया बल्कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में डटे रहे और मर्दाना वार तमाम तकालीफ़ व मसाइब को बरदाश्त करते रहे और सब्रो इस्तिक़ामत के पैकर बने रहे तो ऐ मुसल्मानो ! तुम तो वोह हो कि तुम्हारे नबी उन तमाम नबियों के सरदार हैं और तुम उन तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल हो तो चाहिये कि तुम्हारी बहादुरी और इस्तिक़ामत उन से ज़ियादा हो, तुम्हारी हिम्मत और ह़ौसला उन से बढ़ कर हो, तुम में सब्र का माद्दा उन से ज़ियादा हो, लिहाज़ा तुम भी अपने अन्दर वोही औसाफ़ पैदा करो। इस आयत के शुरूअ़ में बयान हुवा कि बहुत से अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

ने जिहाद किया और उन के साथ रब्बानी लोग थे। दोनों चीज़ों के बारे में तफ़्सील येह है कि जिहाद हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से शुरूअ़ हुवा, सब से पहले आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जिहाद फ़रमाया, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पहले किसी नबी ने जिहाद न किया था। अलबत्ता आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द बहुत से पैग़म्बरों की शरीअ़त में जिहाद था जैसे हज़रते मूसा, हज़रते दावूद, हज़रते यूशअ़ عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वग़ैरहा और रब्बानी लोगों से मुराद उ़लमा, मशाइख़ और मुत्तक़ी लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने की कोशिश में लगे रहें।[1]

आयत "وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ" से ह़ासिल होने वाला दर्स

इस आयते मुबारका में बहुत से दर्स हैं, उन में से 2 येह हैं :

(1)...... अफ़्ज़ल को अफ़्ज़ल नेकियां करनी चाहिएं, वोह तमाम मा तह़तों से अ़मल में बढ़ कर होना चाहिये, लिहाज़ा सय्यिदों, आ़लिमों और पीरों को दूसरों से ज़ियादा नेक होना चाहिये।

(2)...... दूसरों के आ'माल दिखा कर, सुना कर किसी को जोश दिलाना सुन्नते इलाहिय्यह है बल्कि तारीख़ी ह़ालात का जानना इस निय्यत से बहुत बेहतर है। इसी लिये मुख़्तलिफ़ महफ़िलों, उ़र्सों, बुज़ुर्गाने दीन के अय्याम में उन की इ़बादतो रियाज़त, ज़ोह्दो तक़्वा के वाक़िआ़त बयान किये जाते हैं ताकि अ़मल का जज़्बा पैदा हो।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِیْۤ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ़ के कि ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने काम में कीं और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह अपनी इस दुआ़ के सिवा कुछ भी न कहते थे कि ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को और हमारे मुआ़मले में जो हम से ज़ियादतियां हुईं उन्हें बख़्श दे और हमें साबित क़दमी अ़ता फ़रमा और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।

---

1 ......بيضاوى، ال عمران، تحت الآية: ١٤٦، ٢/١٠٠.

www.dawateislami.net

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا : और वोह अपनी इस दुआ़ के सिवा कुछ भी न कहते थे कि ऐ हमारे रब ! या'नी रसूलों के साथी तकालीफ़ पर बे सब्री न दिखाते और दीन की हिमायत और जंग के मक़ामात में उन की ज़बान पर कोई ऐसा कलिमा न आता जिस में घबराहट, परेशानी और तज़ल्ज़ुल (डगमगाने) का शाएबा भी होता बल्कि वोह साबित क़दम रहते और मग़्फ़िरत, साबित क़दमी और फ़त्ह़ो नुसरत की दुआ़ करते। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ाबा की जो दुआ़ बयान की गई है उस में उन्हों ने अपने आप को गुनहगार कहा है, येह आ़जिज़ी, इन्किसारी और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ के आदाब में से है। लेकिन लुत़्फ़ की बात येह है कि वोह ख़ुद को गुनहगार कह रहे हैं और उन का परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ उन्हें रब्बानी या'नी **अल्लाह** वाले फ़रमा रहा है। और ह़क़ीक़त में लुत़्फ़ की बात येही है बन्दा ख़ुद को गुनहगार कहे और उस का रब عَزَّوَجَلَّ उसे अबरार (नेकोकार) फ़रमाए। किसी बुज़ुर्ग का फ़रमान है कि "सारी दुन्या मुझे मरदूद कहे और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में, मैं मक़्बूल क़रार पाऊं येह इस से बेहतर है कि सारी दुन्या मुझे मक़्बूल कहे और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में, मैं मरदूद क़रार पाऊं।" आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अपनी ह़ाजत पेश करने से पहले तौबा व इस्तिग़्फ़ार करना आदाबे दुआ़ में से है।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** ने उन्हें दुन्या का इन्आ़म दिया और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी और नेकी वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो **अल्लाह** ने उन्हें दुन्या का इन्आ़म (भी) अ़त़ा फ़रमाया और आख़िरत का अच्छा सवाब भी और **अल्लाह** नेकी करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا : तो अल्लाह ने उन्हें दुन्या का इन्आ़म (भी) अ़त़ा फ़रमाया। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मइय्यत में दीने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये जिद्दो जहद करने वालों के बारे में फ़रमाया कि इन की ह़ुस्ने निय्यत और ह़ुस्ने अ़मल की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला

www.dawateislami.net

ने इन्हें दोनों जहान की काम्याबियां अ़ता फ़रमाईं, दुन्या में इन्हें फ़त्हो नुसरत से नवाज़ा और दुश्मनों पर ग़लबा अ़ता फ़रमाया जब कि आख़िरत में इन के लिये मग़्फ़िरत, जन्नत और रिज़ाए इलाही का इन्आ़म रखा। इस से मा'लूम हुवा कि आख़िरत का सवाब दुन्या के इन्आ़म से कहीं ज़ियादा है क्यूं कि आख़िरत के सवाब पर लफ़्ज़ "حُسْنَ" ज़ियादा फ़रमाया है और येह भी मा'लूम हुवा कि दीन की ख़िदमत करने वाले को दुन्या भी मिलती है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले तो वोह तुम्हें उलटे पाउं लौटा देंगे फिर टोटा खा के पलट जाओगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम काफ़िरों के कहने पर चले तो वोह तुम्हें उलटे पाउं फेर देंगे फिर तुम नुक़्सान उठा कर पलटोगे।

﴿اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا : **अगर तुम काफ़िरों की इताअ़त करोगे।**﴾ यहां मुसल्मानों को बहुत वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में समझाया गया है कि अगर तुम काफ़िरों के कहने पर चलोगे या उन के पीछे चलोगे ख़्वाह वोह यहूदी हों या ईसाई या मुनाफ़िक़ या मुश्रिक, जिस के कहने पर भी चलोगे वोह तुम्हें कुफ़्र, बे दीनी, बद अ़मली और **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी की त़रफ़ ही ले कर जाएंगे और इस का नतीजा येह निकलेगा कि तुम आख़िरत के साथ साथ अपनी दुन्या भी तबाह कर बैठोगे। कितने वाज़ेह़ और खुले अल्फ़ाज़ में फ़रमा दिया कि काफ़िरों से हिदायात ले कर चलोगे तो वोह तुम्हारी दुन्या व आख़िरत तबाह कर देंगे और आज तक का सारी दुन्या में मुशाहदा भी येही है लेकिन ह़ैरत है कि हम फिर भी अपना निज़ाम चलाने में, अपने किरदार में, अपने कल्चर में, अपने घरेलू मुआ़मलात में, अपने कारोबार में हर जगह काफ़िरों के कहने पर और उन के त़रीक़े पर ही चल रहे हैं, जिस से हमारा रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ हमें बार बार मन्अ़ फ़रमा रहा है।

www.dawateislami.net

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि **अल्लाह** तुम्हारा मौला है और वोह सब से बेहतर मददगार।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बल्कि **अल्लाह** ही तुम्हारा मददगार है और वोही सब से बेहतरीन मददगार है।

﴿بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ : **बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा मददगार है।**﴾ काफ़िरों की बात मानने से रोकने के बा'द फ़रमाया कि याद रखो कि येह काफ़िर तुम्हारे मददगार नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही तुम्हारा मददगार है और वोही सब से बेहतरीन मददगार है, लिहाज़ा तुम उस की इत़ाअ़त करो क्यूं कि हर एक अपने मौला की इत़ाअ़त करता है तो जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा मौला है तो तुम उसी की इत़ाअ़त करो।

سَنُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ
بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِیْنَ ﴿١٥١﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डालेंगे कि उन्हों ने **अल्लाह** का शरीक ठहराया जिस पर उस ने कोई समझ न उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा ठिकाना ना इन्साफ़ों का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अ़न्क़रीब हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डाल देंगे क्यूं कि उन्हों ने **अल्लाह** के साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराया जिस की **अल्लाह** ने कोई दलील नहीं उतारी और उन का ठिकाना आग है और वोह ज़ालिमों का कितना बुरा ठिकाना है।

﴿سَنُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ : **अ़न्क़रीब हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डाल देंगे।**﴾ इस आयत में ग़ैब की ख़बर है, जब अबू सुफ़्यान वग़ैरा जंगे उहुद के बा'द वापस हुए तो रास्ते में ख़याल किया कि क्यूं लौट आए, सब मुसल्मानों को ख़त्म क्यूं न कर दिया हालां कि येह अच्छा मौक़अ़ था। जब वापस होने पर आमादा हुए तो क़ुदरती त़ौर पर उन तमाम के दिलों

www.dawateislami.net

में मुसल्मानों का ऐसा रो'ब त़ारी हुवा कि वोह मक्का चले गए और येह ख़बर पूरी हुई।[1]

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَعَصَیْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَؕ مِنْكُمْ مَّنْ یُّرِیْدُ الدُّنْیَا وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّرِیْدُ الْاٰخِرَةَۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِیَبْتَلِیَكُمْۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۵۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वा'दा जब कि तुम उस के हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल करते थे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा डाला और ना फ़रमानी की बा'द इस के कि **अल्लाह** तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात तुम में कोई दुन्या चाहता था और तुम में कोई आख़िरत चाहता था फिर तुम्हारा मुंह उन से फेर दिया कि तुम्हें आज़्माए और बेशक उस ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया और **अल्लाह** मुसल्मानों पर फ़ज़्ल करता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक **अल्लाह** ने तुम्हें अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया जब तुम उस के हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल कर रहे थे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली दिखाई और हुक्म में आपस में इख़्तिलाफ़ किया और तुम ने उस के बा'द ना फ़रमानी की जब **अल्लाह** तुम्हें वोह काम्याबी दिखा चुका था जो तुम्हें पसन्द थी। तुम में कोई दुन्या का त़लब गार है और तुम में कोई आख़िरत का त़लब गार है। फिर उस ने तुम्हारा मुंह उन से फेर दिया ताकि तुम्हें आज़्माए और बेशक उस ने तुम्हें मुआफ़ फ़रमा दिया है और **अल्लाह** मुसल्मानों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।

﴿ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ : और बेशक अल्लाह ने तुम्हें अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया ﴾ यहां ग़ज़्वए उहुद की बात हो रही है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जंगे उहुद में अपना वा'दा पूरा फ़रमा दिया कि "وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ" या'नी तुम ही ग़ालिब

1 ......بیضاوی، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۱، ۲/۱۰۲.

www.dawateislami.net

होगे अगर तुम सच्चे ईमान वाले हो। तो तुम ग़ालिब थे और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल कर रहे थे लेकिन जब तुम ने बुज़दिली दिखाई और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो एक पहाड़ी दर्रे पर जमे रहने का हुक्म दिया था उस में आपस में इख़्तिलाफ़ किया और इस हुक्म में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त की हालां कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें तुम्हारी पसन्दीदा काम्याबी दिखा चुका था लेकिन तुम में से बा'ज़ ने माले ग़नीमत ह़ासिल करने की ख़ातिर दुन्या त़लबी के लिये दर्रा छोड़ दिया जिस का नतीजा येह निकला कि तुम्हें बहुत ज़ियादा नुक़्सान उठाना पड़ा। **वाक़िए़ का ख़ुलासा** येह है कि कुफ़्फ़ार की शिकस्त के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जो तीर अन्दाज़ थे वोह आपस में कहने लगे कि मुश्रिकीन को शिकस्त हो चुकी है, लिहाज़ा अब यहां ठहर कर क्या करेंगे। चलो, कुछ माले ग़नीमत ह़ासिल करने की कोशिश करें। बा'ज़ ह़ज़रात ने येह सुन कर कहा कि येह जगह मत छोड़ो क्यूं कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ताकीद के साथ हुक्म फ़रमाया था कि तुम अपनी जगह ठहरे रहना और किसी ह़ाल में येह जगह न छोड़ना, जब तक मेरा हुक्म न आ जाए, मगर लोग ग़नीमत के लिये चल पड़े और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दस से कम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم रह गए।(1)

दुन्या त़लब करने वालों से मुराद वोह लोग हैं जिन्हों ने वोह दर्रा छोड़ दिया और माले ग़नीमत ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो गए और **आख़िरत के त़लब गारों** से मुराद वोह लोग हैं जो अपने अमीर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ अपनी जगह पर क़ाइम रहे ह़त्ता कि शहीद हो गए। आयत के आख़िर में फ़रमाया कि ग़ज़्वए उहुद में इस मक़ाम पर जिन लोगों ने ख़ता की **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया। लिहाज़ा याद रहे कि जो इस त़रह़ के वाक़िआ़त को ले कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की शान में गुस्ताख़ी करे वोह बद बख़्त है कि इन की मुआ़फ़ी का ए'लान रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ख़ुद फ़रमा चुका।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَ لَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ یَدْعُوْكُمْ فِیْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَیْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَ لَا مَاۤ اَصَابَكُمْؕ وَ اللّٰهُ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٥٢، ١/ ٣١١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया और मुआ़फ़ी इस लिये सुनाई कि जो हाथ से गया और जो उफ़्ताद पड़ी उस का रन्ज न करो और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जब तुम मुंह उठाए चले जा रहे थे और किसी को पीछे मुड़ कर भी न देखते थे और तुम्हारे पीछे रह जाने वाली दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे तो **अल्लाह** ने तुम्हें ग़म के बदले ग़म दिया और मुआ़फ़ी इस लिये सुना दी ताकि जो तुम्हारे हाथ से निकल गया न तो उस पर ग़म करो और न ही उस तक्लीफ़ पर जो तुम्हें पहुंची है और **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल से ख़बरदार है।

﴿فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ﴾ **: तो अल्लाह ने तुम्हें ग़म के बदले ग़म दिया ।**﴾ जंगे उहुद में जब कुफ़्फ़ार पीछे से आ पड़े तो मुसल्मान घबरा कर भाग पड़े मगर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कुछ सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم अपनी जगह से न हटे और साबित क़दम रहे। साबित क़दम रहने वाली जमाअ़त से दूसरी जमाअ़त को आवाज़ें दी जा रही थीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! इधर आओ मगर घबराहट और शोर में येह लोग न सुन सके। इस आयत में इसी का ज़िक्र है और इसी के हवाले से फ़रमाया जा रहा है कि ऐ मुसल्मानो ! याद करो जब तुम अफ़रा तफ़री में मुंह उठाए चले जा रहे थे और किसी को पीछे मुड़ कर भी न देखते थे और तुम्हारे पीछे साबित क़दम रह जाने वाली दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे लेकिन तुम सुन ही न रहे थे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें ग़म दिया इस लिये कि तुम ने उस के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बात न मान कर उन्हें ग़म पहुंचाया था। लेकिन इस के साथ साथ तुम्हें मुआ़फ़ी की बिशारत भी सुना दी ताकि राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ कोशिश करने के बा वुजूद जो माले ग़नीमत तुम्हारे हाथ से निकल गया तुम उस पर ग़म न करो और चूंकि तुम्हारे बहुत से साथी इस जंग में शहीद हुए और तुम्हें भी बहुत से ज़ख़्म आए तो **अल्लाह** तआ़ला के मुआ़फ़ी का ए'लान कर देने की वज्ह से तुम्हारे दिलों पर मरहम हो जाए। इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला को हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा और ख़ुशी किस क़दर अ़ज़ीज़ है कि सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की वज्ह से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सदमा हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें भी सदमे में मुब्तला किया और

www.dawateislami.net

फिर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ की जां निसारी और इख़्लास की भी कितनी क़द्र फ़रमाई कि चूंकि उन की ख़ता बुरी निय्यत से न थी बल्कि इज्तिहादी तौर पर वहां ख़ता की तो **अल्लाह** तआला ने उन की दिलजूई के लिये उन की मुआफ़ी का ए'लान भी फ़रमा दिया।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآىٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ
وَ طَآىٕفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ
يُخْفُوْنَ فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِیْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ
عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَ لِيَبْتَلِیَ اللّٰهُ مَا فِیْ
صُدُوْرِكُمْ وَ لِيُمَحِّصَ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ग़म के बा'द तुम पर चैन की नींद उतारी कि तुम्हारी एक जमाअ़त को घेरे थी और एक गुरौह को अपनी जान की पड़ी थी **अल्लाह** पर बे जा गुमान करते थे जाहिलिय्यत के से गुमान कहते इस काम में कुछ हमारा भी इख़्तियार है ? तुम फ़रमा दो कि इख़्तियार तो सारा **अल्लाह** का है अपने दिलों में छुपाते हैं जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं हमारा कुछ बस होता तो हम यहां न मारे जाते तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी जिन का मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्ल गाहों तक निकल कर आते और इस लिये कि **अल्लाह** तुम्हारे सीनों की बात आज़्माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे खोल दे और **अल्लाह** दिलों की बात जानता है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर उस ने तुम पर ग़म के बा'द चैन की नींद उतारी जो तुम में से एक गुरौह पर छा गई और एक गुरौह वोह था जिसे अपनी जान की फ़िक्र पड़ी हुई थी वोह **अल्लाह** पर नाह़क़ गुमान करते थे, जाहिलिय्यत के से गुमान । वोह कह रहे थे कि क्या इस मुआ़मले में कुछ हमारा भी इख़्तियार है ? तुम फ़रमा दो कि इख़्तियार तो सारा **अल्लाह** ही का है । येह अपने दिलों में वोह बातें छुपा कर रखते हैं जो आप पर ज़ाहिर नहीं करते । कहते हैं, अगर हमें भी इस मुआ़मले में कुछ इख़्तियार होता तो हम यहां न मारे जाते । ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते जब भी जिन का मारा जाना लिखा जा चुका था वोह अपनी क़त्ल गाहों की त़रफ़ निकल कर आ जाते और येह इस लिये हुवा कि **अल्लाह** तुम्हारे दिलों की बात आज़्माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में पोशीदा है उसे खोल कर रख दे और **अल्लाह** दिलों की बात जानता है ।

﴿ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا﴾ **: फिर उस ने तुम पर ग़म के बा'द चैन की नींद उतारी ।** ग़ज़्वए उहुद में तकालीफ़ उठाने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मुख़्लिस मोमिनों पर ख़ास करम नवाज़ी हुई, वोह येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन की परेशानी दूर करने के लिये उन पर ग़म के बा'द चैन की नींद उतारी जो सिर्फ़ मुख़्लिस सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم पर ही उतरी, इस की बरकत से मुसल्मानों के दिलों में जो रो'ब और हैबत त़ारी था वोह ख़त्म हो गया और मुसल्मान सुकूनो इत़्मीनान की कैफ़िय्यत में आ गए । ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रोज़े उहुद नींद हम पर छा गई हम मैदान में थे तलवार मेरे हाथ से छूट जाती थी फिर उठाता था फिर छूट जाती थी ।[1]

दूसरी त़रफ़ मुनाफ़िक़ों का गुरौह था जिन्हें सिर्फ़ अपनी जान की फ़िक्र पड़ी हुई थी, वोह **अल्लाह** तआ़ला पर مَعَاذَاللّٰہ बद गुमानियां कर रहे थे कि **अल्लाह** तआ़ला हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद न फ़रमाएगा या येह कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए लिहाज़ा अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीन बाक़ी न रहेगा ।[2]

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب امنة نعاسًا، ۳/۱۹۵، الحدیث: ۴۵۶۲.

2 ......صاوی، ال عمران، تحت الآیة: ۱۵۴، ۱/۳۲۵.

www.dawateislami.net

येह सिर्फ़ जाहिलिय्यत के गुमान थे। फिर मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमाया कि येह अपने दिलों में अपना कुफ़्र, **अल्लाह** तआला के वा'दों पर भरोसा न होना और जिहाद में मुसल्मानों के साथ आने पर अफ़्सोस करना छुपाए हुए हैं, इन के दिलों में येह बात बैठी हुई है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वा'दे مَعَاذَ الله सच्चे नहीं हैं लेकिन येह बातें मुसल्मानों के सामने ज़ाहिर नहीं कर सकते। येह कहते हैं कि अगर हमारी भी कुछ चलती होती और जंगे उहुद के बारे में हमारा मश्वरा मान लिया जाता तो हम यहां न मारे जाते। **अल्लाह** तआला ने उन की बद गुमानियों और बद कलामियों के रद में फ़रमाया कि "ऐ हबीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते जब भी जिन का मारा जाना तक्दीर में लिखा जा चुका था वोह अपनी क़त्ल गाहों की तरफ़ निकल कर आ जाते क्यूं कि जैसे मौत का वक़्त मुक़र्रर है ऐसे ही मौत की जगह भी मुतअय्यन है। जिस ने जहां, जैसे मरना है, वोह वहां वैसे ही मरेगा। घरों में बैठ रहना कुछ काम नहीं आता और तक्दीर के सामने सारी तदबीरें और हीले बेकार हो जाते हैं।" इस आयत के आख़िर में **अल्लाह** तआला ने ग़ज़्वए उहुद में पेश आने वाले वाक़िआत की हिक्मत बयान फ़रमाई कि ग़ज़्वए उहुद में जो कुछ हुवा वोह इस लिये हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिलों के इख़्लास और मुनाफ़क़त आज़्माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में पोशीदा है उसे सब के सामने खोल कर रख दे।

आयत "ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً" से हासिल होने वाला दर्स

इस आयत में मज़्कूर वाक़िए में बहुत से दर्स हैं :

(1)...... आज़्माइश के वक़्त ही खरे खोटे की पहचान होती है।

(2)...... मुसल्मान साबिर जब कि मुनाफ़िक़ बे सब्रा होता है।

(3)...... मुसल्मान को सब से ज़ियादा फ़िक्र दीन की होती है जब कि मुनाफ़िक़ को सिर्फ़ अपनी जान की फ़िक्र होती है।

(4)...... मोमिन हर हाल में **अल्लाह** तआला पर भरोसा रखता है और **अल्लाह** तआला से हुस्ने ज़न रखता है जब कि मुनाफ़िक़ मा'मूली सी तक्लीफ़ पर **अल्लाह** तआला के बारे में बद गुमानियों का शिकार हो जाता है।

(5)...... **अल्लाह** तआला के वा'दे पर कामिल यक़ीन रखना कामिल ईमान की निशानी है।

(6)...... मौत से कोई शख़्स फ़िरार नहीं हो सकता, जिस की मौत जहां लिखी है वहां आ कर ही रहेगी लिहाज़ा जिहाद से फ़िरार मुसल्मान की शान के लाइक़ नहीं।

www.dawateislami.net

(7)...... ग़ज़्वए उहुद में मुनाफ़िक़ीन के इलावा जितने मुसल्मान थे वोह सब **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर ख़ुसूसी करम नवाज़ी फ़रमाई।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ
بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम में से फिर गए जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं उन्हें शैत़ान ही ने लग़िज़श दी उन के बा'ज़ आ'माल के बाइ़स और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला हि़ल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम में से वोह लोग जो उस दिन भाग गए जिस दिन दोनों फ़ौजों का मुक़ाबला हुवा, उन्हें शैत़ान ही ने उन के बा'ज़ आ'माल की वज्ह से लग़िज़श में मुब्तला किया और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया है, बेशक **अल्लाह** बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा हि़ल्म वाला है।

﴿إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ **: बेशक तुम में से वोह लोग जो उस दिन भाग गए।**﴾ जंगे उहुद में चौदह अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के सिवा जिन में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी शामिल हैं जो हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे बाक़ी तमाम अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के क़दम उखड़ गए थे और ख़ुसूसन वोह ह़ज़रात जिन्हें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहाड़ी मोरचे पर मुक़र्रर किया था और हर ह़ाल में वहीं डटे रहने का हुक्म दिया था लेकिन वोह साबित क़दम न रह सके बल्कि जब पहले ह़म्ले ही में कुफ़्फ़ार के क़दम उखड़ गए और मुसल्मान ग़ालिब आए, तब उन दर्रे वालों ने कहा कि चलो हम भी माले ग़नीमत जम्अ़ करें। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मन्अ़ फ़रमाया मगर येह लोग समझे कि फ़त्ह़ हो चुकी, अब ठहरने की क्या ज़रूरत है। दर्रा छोड़ दिया, भागते हुए कुफ़्फ़ार ने दर्रे को ख़ाली देखा तो पलट कर दर्रे की राह से मुसल्मानों पर पीछे से ह़म्ला कर दिया जिस से जंग का नक़्शा बदल गया, यहां उसी का ज़िक्र है। उन ह़ज़रात से येह लग़िज़श ज़रूर सरज़द हुई लेकिन चूंकि उन के ईमान कामिल

www.dawateislami.net

थे और वोह मुख़्लिस मोमिन और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे ग़ुलाम थे और आगे पीछे कई मवाक़ेअ़ पर येही हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपनी जानें क़ुरबान करने वाले थे, इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआन में इन की मुआ़फ़ी का ए'लान फ़रमा दिया ताकि अगर इन की लग़्ज़िश सामने आए तो रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इन की अ़ज़्मत भी सामने रहे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो उन काफ़िरों की त़रह़ न होना जिन्हों ने अपने भाइयों की निस्बत कहा जब वोह सफ़र या जिहाद को गए कि हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते इस लिये कि **अल्लाह** उन के दिलों में इस का अफ़्सोस रखे और **अल्लाह** जिलाता (ज़िन्दा रखता) और मारता है और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! उन काफ़िरों की त़रह़ न होना जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में कहा जब वोह सफ़र में या जिहाद में गए कि अगर येह हमारे पास होते तो न मरते और न क़त्ल किये जाते। (उन की त़रह़ येह न कहो) ताकि **अल्लाह** उन के दिलों में इस बात का अफ़्सोस डाल दे और **अल्लाह** ही ज़िन्दा रखता और मारता है और **अल्लाह** तुम्हारे तमाम आ'माल को ख़ूब देख रहा है।

﴿لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا : **काफ़िरों की त़रह़ न होना ।**﴾ यहां काफ़िरों से मुराद अस्ली काफ़िर भी बयान किये गए हैं और मुनाफ़िक़ भी। हम मुनाफ़िक़ीन वाला मा'ना सामने रख कर तफ़्सीर करते हैं। चुनान्चे फ़रमाया गया कि ऐ ईमान वालो ! अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और उन जैसे काफ़िरों मुनाफ़िक़ों की त़रह़ न होना जिन के नसबी भाई या मुनाफ़क़त में भाईबन्द सफ़र

www.dawateislami.net

में गए और मर गए या जिहाद में गए और मारे गए तो येह मुनाफ़िक़ कहते हैं कि अगर येह जाने वाले हमारे पास रहते और सफ़र व जिहाद में न जाते तो न मरते और न मारे जाते। इस पर ईमान वालों से फ़रमाया गया कि ऐ ईमान वालो ! तुम उन काफ़िरों की त़रह़ की कोई बात न कहना ताकि उन की बात और उन का येह अ़क़ीदा कि अगर सफ़र व जिहाद में न जाते तो न मरते उन के दिलों में बाइसे ह़सरत बन जाए। ह़क़ीक़ी मुसल्मान तो येह अ़क़ीदा रखता है कि मौत व ह़यात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के इख़्तियार में है वोह चाहे तो मुसाफ़िर और ग़ाज़ी को सलामत ले आए और मह़फ़ूज़ घर में बैठे हुए को मौत दे दे। क्या घरों में बैठा रहना किसी को मौत से बचा सकता है और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वोह मौत घर की मौत से कई दरजे बेहतर है। लिहाज़ा मुनाफ़िक़ीन का येह क़ौल बात़िल और फ़रेब है और उन का मक़्सद मुसल्मानों को जिहाद से नफ़्रत दिलाना है जैसा कि अगली आयत में इर्शाद होता है।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَیْرٌ مِّمَّا یَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक अगर तुम **अल्लाह** की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो **अल्लाह** की बख़्शिश और रह़मत उन के सारे धन दौलत से बेहतर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक अगर तुम **अल्लाह** की राह में शहीद कर दिये जाओ या मर जाओ तो **अल्लाह** की बख़्शिश और रह़मत इस दुन्या से बेहतर जो येह जम्अ़ कर रहे हैं।

﴿وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ﴾ **: और बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में शहीद कर दिये जाओ।** आयत में फ़रमाया गया कि अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में शहीद कर दिये जाओ या तुम्हें त़ब्ई मौत ही आए लेकिन तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में हो तो येह मौत मग़्फ़िरत और रह़मत का सबब होगी और ऐसी मौत दुन्या के धन दौलत से बेहतर है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मरना येह है कि जिहाद के रास्ते में मौत आए और इसी हुक्म में येह भी दाख़िल है कि इबादत करते

www.dawateislami.net

हुए या ज़िक्र करते हुए या इल्मी ख़िदमत करते हुए या तब्लीगे़ दीन करते हुए मौत आ जाए इस ह़ाल में मौत भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मौत है और इस का नतीजा भी रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और मग़्फ़िरत है।

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो **अल्लाह** ही की त़रफ़ उठना है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम मर जाओ या मारे जाओ (बहर ह़ाल) तुम्हें **अल्लाह** की बारगाह में जम्अ़ किया जाएगा।

﴿وَلَئِنْ مُّتُّمْ : **और अगर तुम मर जाओ**।﴾ सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यहां निहायत पुर लुत़्फ़ तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : यहां मक़ामाते अ़ब्दिय्यत के तीनों मक़ामों का बयान फ़रमाया गया **पहला मक़ाम** तो येह है कि बन्दा ब ख़ौफ़े दोज़ख़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की इबादत करे तो उस को अ़ज़ाबे नार से अम्न दी जाती है, इस की त़रफ़ "لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ" में इशारा है। **दूसरी क़िस्म** वोह बन्दे हैं जो जन्नत के शौक़ में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की इबादत करते हैं इस की त़रफ़ "وَرَحْمَةٌ" में इशारा है क्यूं कि रह़मत भी जन्नत का एक नाम है। **तीसरी क़िस्म** वोह मुख़्लिस बन्दे हैं जो इ़श्क़े इलाही और उस की ज़ाते पाक की मह़ब्बत में उस की इबादत करते हैं और उन का मक़्सूद उस की ज़ात के सिवा और कुछ नहीं है इन्हें ह़क़ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی अपने दाइरए करामत में अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा इस की त़रफ़ "لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ" में इशारा है।(1)

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ

1...... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, आले इमरान, तह़तल आयह : 158, स. 141

www.dawateislami.net

فِى الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ **अल्लाह** की मेह्रबानी है कि ऐ मह्बूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआफ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअ़त करो और कामों में उन से मश्वरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ऐ ह़बीब ! **अल्लाह** की कितनी बड़ी मेह्रबानी है कि आप इन के लिये नर्म दिल हैं और अगर आप तुर्श मिज़ाज, सख़्त दिल होते तो येह लोग ज़रूर आप के पास से भाग जाते तो आप इन को मुआ़फ़ फ़रमाते रहो और इन की मग़्फ़िरत की दुआ़ करते रहो और कामों में इन से मश्वरा लेते रहो फिर जब किसी बात का पुख़्ता इरादा कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक **अल्लाह** तवक्कुल करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है ।

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ : **तो अल्लाह की कितनी बड़ी रह़मत है ।**﴾ इस आयत में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा का बयान किया जा रहा है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** तआ़ला की आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कितनी बड़ी रह़मत है कि उस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नर्म दिल, शफ़ीक़ और रह़ीमो करीम बनाया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिज़ाज में इस दरजा लुत्फ़ो करम और शफ़्क़तो रह़मत पैदा फ़रमाई कि ग़ज़्वए उहुद जैसे मौक़अ़ पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़ब का इज़्हार न फ़रमाया ह़ालां कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस दिन किस क़दर अज़िय्यतो तक्लीफ़ पहुंची थी और अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सख़्त मिज़ाज होते और मेल बरताव में सख़्ती से काम लेते तो येह लोग आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दूर हो जाते । तो ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन की ग़लतियों को मुआ़फ़ कर दें और इन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमा दें ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ारिश पर **अल्लाह** तआ़ला भी इन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दे ।

www.dawateislami.net

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा की एक झलक

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमाना की तो क्या शान है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तौरात व इन्जील में भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े आ़लिया का ज़िक्र फ़रमाया था : चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : जब **अल्लाह** तआ़ला ने ज़ैद बिन सअ़ना की हिदायत का इरादा फ़रमाया तो ज़ैद बिन सअ़ना ने कहा : मैं ने जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रूए अन्वर की ज़ियारत की तो उसी वक़्त आप में नुबुव्वत की तमाम अ़लामात पहचान लीं, अलबत्ता दो अ़लामतें ऐसी थीं जिन की मुझे ख़बर न थी (कि वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हैं या नहीं) एक येह कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िल्म आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब पर सब्क़त ले जाता है और दूसरी येह कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जितना ज़ियादा जहालत का बरताव किया जाए आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िल्म उतना ही बढ़ता चला जाएगा। मैं मौक़अ़ की तलाश में रहा ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िल्म देख सकूं। एक दिन नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हुजरों से बाहर तशरीफ़ लाए और ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे कि दीहाती जैसा एक शख़्स अपनी सुवारी पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : फ़ुलां क़बीले की बस्ती में रहने वाले क़ह़त़ और ख़ुश्क साली की मुसीबत में मुब्तला हैं, मैं ने उन से कहा कि अगर तुम लोग इस्लाम क़बूल कर लो तो तुम्हें कसीर रिज़्क़ मिलेगा। उन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया है, **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मुझे डर है कि जिस त़रह़ वोह रिज़्क़ मिलने की उम्मीद पर इस्लाम में दाख़िल हुए कहीं वोह रिज़्क़ न मिलने की वज्ह से इस्लाम से निकल न जाएं। अगर मुम्किन हो तो उन की त़रफ़ कोई ऐसी चीज़ भेज दें जिस से उन की मदद हो जाए। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स की त़रफ़ देखा और ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को दिखाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, इस में से कुछ बाक़ी नहीं बचा। ज़ैद बिन सअ़ना कहते हैं : मैं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब हुवा और कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) क्या आप एक मुक़र्रर मुद्दत तक फ़ुलां क़बीले के बाग़ की मुअ़य्यन मिक़्दार में खजूरें मुझे बेच सकते हैं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ यहूदी ! ऐसे नहीं, मैं एक मुक़र्ररा मुद्दत तक और मुअ़य्यन मिक़्दार

www.dawateislami.net

में खजूरें तुम्हें बेचूंगा लेकिन किसी बाग़ को ख़ास नहीं करूंगा।'' ज़ैद बिन सअ़ना कहते हैं : मैं ने कहा ठीक है। चुनान्चे मैं ने एक मुक़र्ररा मुद्दत तक मुअ़य्यन मिक़्दार में खजूरों के बदले 80 मिस्क़ाल सोना हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दे दिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह सोना उस शख़्स को दे कर फ़रमाया ''येह सोना उन लोगों के दरमियान तक़्सीम कर दो और इस के ज़रीए़ उन की मदद करो।''

ज़ैद बिन सअ़ना कहते हैं, जब वोह मुद्दत पूरी होने में दो या तीन दिन रह गए तो मैं ने मस्जिद में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दामने अक़्दस पकड़ कर तेज़ निगाह से देखते हुए यूं कहा : ऐ मुह़म्मद ! मेरा ह़क़ अदा करो। ऐ अ़ब्दुल मुत्तलिब के ख़ानदान वालो ! तुम सब का येही त़रीक़ा है कि तुम लोग हमेशा लोगों के हुक़ूक़ अदा करने में देर लगाया करते हो और टाल मटोल करना तुम लोगों की आ़दत बन चुकी है। इस दौरान मैं ने ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ देखा तो उन की आंखें उन के चेहरे पर घूम रही थीं, उन्हों ने जलाल भरी नज़रों से देखते हुए मुझ से फ़रमाया : ऐ दुश्मने ख़ुदा ! क्या तुम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ऐसी बात और ऐसी ह़रकत कर रहे हो ! उस ख़ुदा की क़सम जिस ने इन्हें ह़क़ के साथ भेजा, अगर मुझे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लिह़ाज़ न होता तो मैं अभी अपनी तलवार से तेरा सर उड़ा देता। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पुर सुकून अन्दाज़ में ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ देखने लगे और मुस्कुराए, फिर इर्शाद फ़रमाया ''हम दोनों को इस के इ़लावा चीज़ की ज़ियादा ज़रूरत थी कि तुम मुझे अच्छे त़रीक़े से अदाएगी का कहते और इसे अच्छे अन्दाज़ में मुत़ालबा करने का कहते। ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, तुम इसे इस का ह़क़ दे दो और बीस साअ़ खजूरें इस के ह़क़ से ज़ियादा दे देना।''

ज़ैद बिन सअ़ना कहते हैं : (जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे ज़ियादा खजूरें दीं) तो मैं ने कहा : ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, मुझे ज़ियादा खजूरें क्यूं दी जा रही हैं ? ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है कि जो मैं ने तुम्हें डांटा उस के बदले इतनी खजूरें तुम्हें ज़ियादा दे दूं।'' मैं ने कहा : ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप जानते हैं मैं कौन हूं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''नहीं। मैं ने कहा : मैं यहूदियों का आ़लिम ज़ैद बिन सअ़ना हूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''फिर तुम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जो बातें कहीं और उन के साथ जो ह़रकत की वोह क्यूं की ?'' मैं ने कहा : मैं ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की ज़ियारत करते

www.dawateislami.net

ही आप में नुबुव्वत की तमाम अ़लामात पहचान ली थीं, अलबत्ता इन दो अ़लामतों को देखना बाक़ी था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़िल्म आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब पर सब्क़त ले जाता है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जितना ज़ियादा जहालत का बरताव किया जाए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़िल्म उतना ही बढ़ता चला जाएगा। बेशक मैं ने येह अ़लामतें भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पा ली हैं, तो ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप गवाह हो जाएं कि मैं **अल्लाह** तआ़ला के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हुवा। मैं बहुत मालदार हूं, आप गवाह हो जाएं कि मैं ने अपना आधा माल ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत पर सदक़ा कर दिया। फिर ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और कहा : "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।"[1]

﴾وَ شَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِ﴿ : **और कामों में इन से मश्वरा लेते रहो।**﴾ या'नी अहम कामों में इन से मश्वरा भी लेते रहें क्यूं कि इस में इन की दिलदारी भी है और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई भी और येह फ़ाएदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आयिन्दा उम्मत इस से नफ़्अ़ उठाती रहेगी, फिर जब मश्वरे के बा'द आप किसी बात का पुख़्ता इरादा कर लें तो अपने काम को पूरा करने में **अल्लाह** तआ़ला पर भरोसा करें बेशक **अल्लाह** तआ़ला तवक्कुल करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है और उन की मदद करता और उन्हें उस चीज़ की त़रफ़ हिदायत देता है जो उन के लिये बेहतर हो।

मश्वरा और तवक्कुल के मा'ना और तवक्कुल की तरग़ीब

मश्वरा के मा'ना हैं किसी मुआ़मले में दूसरे की राय दरयाफ़्त करना। मश्वरा लेने के साथ **अल्लाह** तआ़ला ने येह भी फ़रमा दिया कि "मश्वरे के बा'द जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चीज़ का पुख़्ता इरादा कर लें तो उसी पर अ़मल करें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करें।" तवक्कुल के मा'ना हैं : **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना। मक़्सूद येह कि बन्दे का ए'तिमाद तमाम कामों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर होना चाहिये, सिर्फ़ अस्बाब पर नज़र न रखे।

ह़ज़रते इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करे तो हर मुश्किल में **अल्लाह** तआ़ला उसे

1 ......مستدرك، كتاب معرفة الصحابة رضى الله تعالى عنهم، ذكر اسلام زيد بن سعنة... الخ، ٧٩٢/٤، الحديث: ٦٦٠٦.

www.dawateislami.net

काफ़ी होगा और उसे वहां से रिज़्क़ देगा जहां उस का गुमान भी न हो और जो दुन्या पर भरोसा करे तो **अल्लाह** तआ़ला उसे दुन्या के सिपुर्द फ़रमा देता है।''(1)

हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर जैसा चाहिये वैसा तवक्कुल करो तो तुम को ऐसे रिज़्क़ दे जैसे परिन्दों को देता है कि वोह सुब्ह़ को भूके जाते हैं और शाम को शिकम सैर लौटते हैं।''(2)

اِنۡ یَّنۡصُرۡكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡ ۚ وَ اِنۡ یَّخۡذُلۡكُمۡ فَمَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَنۡصُرُكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَ عَلَی اللّٰهِ فَلۡیَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۶۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर **अल्लाह** तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वोह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर तुम्हारी मदद करे और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर **अल्लाह** तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वोह तुम्हें छोड़ दे तो फिर इस के बा'द कौन तुम्हारी मदद कर सकता है ? और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा करना चाहिये।

﴿اِنۡ یَّنۡصُرۡكُمُ اللّٰهُ﴾ **: अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे।** इर्शाद फ़रमाया कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और येह याद रखो कि **अल्लाह** तआ़ला की मदद वोही पाता है जो अपनी क़ुव्वतो ताक़त पर भरोसा नहीं करता बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतो रह़मत का उम्मीद वार रहता है और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें छोड़ दे तो उस के छोड़ने के बा'द कौन तुम्हारी मदद कर सकता है ? यक़ीनन कोई नहीं। ग़ज़्वए बद्र व हुनैन से दोनों बातें वाज़ेह़ हो जाती हैं। ग़ज़्वए बद्र में कुफ़्फ़ार का लश्कर ता'दाद, अस्लह़ा और जंगी ताक़त के ए'तिबार से मुसल्मानों से बढ़ कर था लेकिन मुसल्मानों का पूरा भरोसा **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात पर था जिस का नतीजा मुसल्मानों की फ़त्ह़ो कामरानी की शक्ल

1 ......معجم الاوسط، باب الجيم، من اسمه جعفر، ٢/٣٠٢، الحديث: ٣٣٥٩.
2 ......ترمذی، کتاب الزهد، باب فی التوكل على الله، ٤/١٥٤، الحديث: ٢٣٥١.

www.dawateislami.net

में ज़ाहिर हुवा और फ़िरिश्तों की सूरत में **अल्लाह** तआला की मदद नाज़िल हुई जब कि ग़ज़्वए हुनैन में बा'ज़ मुसल्मानों ने अपनी अ़ददी कसरत पर फ़ख़्र का इज़्हार किया जिस के नतीजे में मुसल्मानों को सख़्त नुक़्सान उठाना पड़ा। पूरा वाक़िआ़ सूरए तौबह आयत 25 में मज़्कूर है।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और किसी नबी पर येह गुमान नहीं हो सकता कि वोह कुछ छुपा रखे और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा फिर हर जान को उन की कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और किसी नबी का ख़ियानत करना मुम्किन ही नहीं और जो ख़ियानत करे तो वोह क़ियामत के दिन उस चीज़ को ले कर आएगा जिस में उस ने ख़ियानत की होगी फिर हर शख़्स को उस के आ'माल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

﴿وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ : **और किसी नबी का ख़ियानत करना मुम्किन ही नहीं।**﴾ नबी عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ियानत करना मुम्किन नहीं क्यूं कि येह शाने नुबुव्वत के ख़िलाफ़ है, नीज़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गुनाहों से मा'सूम होते हैं लिहाज़ा उन से ऐसा मुम्किन नहीं। वोह न तो वह़ी के मुआ़मले में ख़ियानत करते हैं और न किसी और मुआ़मले में। **शाने नुज़ूल :** एक जंग में माले ग़नीमत में एक चादर गुम हो गई। बा'ज़ मुनाफ़िक़ों ने कहा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने लिये रख ली होगी। इस पर येह आयत उतरी।(1)

इस से कई मस्अले मा'लूम हुए : **एक** येह कि ग़नीमत की तक़्सीम के बिग़ैर ना जाइज़ त़रीक़े पर कुछ लेना सख़्त ह़राम है। **दूसरा** येह कि नबी عَلَيْهِ السَّلَام गुनाहों से मा'सूम हैं। गुनाह और

1 ......جمل على الجلالين، ال عمران، تحت الآية: ١٦١، ١/٥٠٥.

www.dawateislami.net

नुबुव्वत में वोही निस्बत है जो अंधेरे और उजाले में है। **तीसरा** येह कि नबी عَلَيْهِ السَّلَام पर बद गुमानी मुनाफ़िक़ों का काम है और कुफ़्र है। **चौथा** येह कि नबी عَلَيْهِ السَّلَام रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ के ऐसे प्यारे होते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला उन पर से लोगों की तोहमतें दूर फ़रमाता है।

ख़ियानत की मज़म्मत

इस आयत में ख़ियानत की मज़म्मत भी बयान फ़रमाई कि जो कोई ख़ियानत करेगा वोह कल क़ियामत में उस ख़ियानत वाली चीज़ के साथ पेश किया जाएगा। अहादीस में भी ख़ियानत की बहुत मज़म्मत बयान की गई है, चुनान्चे सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नमियों में ऐसे शख़्स को भी शुमार फ़रमाया जिस की ख़्वाहिश और त़मअ़ अगर्चे कम ही हो मगर वोह उसे ख़ियानत का मुर्तकिब कर दे।(1)

हज़रते अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो अमानत दार नहीं उस का कोई ईमान नहीं और जिस में अ़हद की पाबन्दी नहीं उस का कोई दीन नहीं।"(2)

हज़रते अबू उमामा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन हर आदत अपना सकता है मगर झूटा और ख़ियानत करने वाला नहीं हो सकता।"(3)

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۶۲﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِیْرٌۢ بِمَا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या जो **अल्लाह** की मरज़ी पर चला वोह उस जैसा होगा जिस ने **अल्लाह** का ग़ज़ब ओढ़ा और उस का ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की। वोह **अल्लाह** के यहां दरजा दरजा हैं और **अल्लाह** उन के काम देखता है।

1 ......مسلم، کتاب الجنة وصفة نعيمها و اهلها، باب الصفات التی يعرف بها فی الدنيا اهل الجنة و اهل النار، ص ۱۵۳۲، الحديث: ۶۳(۲۸۶۵).

2 ......مسند امام احمد، مسند المكثرين من الصحابة، مسند انس بن مالك بن النضر، ۲۷۱/۴، الحديث: ۱۲۳۸۶.

3 ......مسند امام احمد، مسند الانصار، حديث ابی امامة الباهلی، ۲۷۶/۸، الحديث: ۲۲۲۳۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या वोह शख़्स जो **अल्लाह** की ख़ुशनूदी के पीछे चला वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो **अल्लाह** के ग़ज़ब का मुस्तह़िक़ हुवा और उस का ठिकाना जहन्नम हो ? और वोह क्या ही बुरा ठिकाना है। लोगों के **अल्लाह** की बारगाह में मुख़्तलिफ़ दरजात हैं और **अल्लाह** उन के तमाम आ'माल को देख रहा है।

﴿اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ﴾ **: क्या वोह शख़्स जो अल्लाह की ख़ुशनूदी के पीछे चला।** **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा का त़ालिब और **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़गी का मुस्तह़िक़ दोनों बराबर नहीं हो सकते। कहां वोह जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सच्ची मह़ब्बत करने वाला, उस की इत़ाअ़त करने वाला, उस की ख़ुशनूदी के लिये सब कुछ क़ुरबान कर देने वाला जैसे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और इन के बा'द के सालिह़ीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم और कहां **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी करने वाला, उस के अह़काम से मुंह मोड़ने वाला, उस की नाराज़ी की परवाह न करने वाला और अपनी ख़्वाहिश को रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर तरजीह़ देने वाला जैसे कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन और इन के पैरोकार ना फ़रमान लोग, येह दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं ? इन लोगों के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुख़्तलिफ़ दरजात हैं, हर एक की मन्ज़िलें और मक़ामात जुदागाना हैं। बुरों के अलग मक़ाम और अच्छों के अलग जैसा कि इस से अगली आयत में फ़रमाया गया है।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۚ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱۶۴﴾

النصف

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** का बड़ा एह़सान हुवा मुसल्मानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता और उन्हें किताब व ह़िक्मत सिखाता है और वोह ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही में थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने ईमान वालों पर बड़ा एह़सान फ़रमाया जब उन में एक रसूल मब्ऊ़स फ़रमाया जो उन्हीं में से है। वोह उन के सामने **अल्लाह** की आयतें तिलावत

www.dawateislami.net

फ़रमाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत की ता'लीम देता है अगर्चे येह लोग इस से पहले यक़ीनन खुली गुमराही में पड़े हुए थे।

﴾لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ﴿ : **बेशक अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा एहसान फ़रमाया** ।﴾

अ़रबी में **مِنَّت** अ़ज़ीम ने'मत को कहते हैं। मुराद येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने अ़ज़ीम एहसान फ़रमाया कि उन्हें अपना सब से अ़ज़ीम रसूल अ़ता फ़रमाया। कैसा अ़ज़ीम रसूल अ़ता फ़रमाया कि अपनी विलादते मुबारका से ले कर विसाले मुबारक तक और इस के बा'द तमाम ज़माने में अपनी उम्मत पर मुसल्सल रह़मतो शफ़्क़त के दरिया बहा रहे हैं बल्कि हमारा तो वुजूद भी हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े से है कि अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न होते तो काएनात और इस में बसने वाले भी वुजूद में न आते। पैदाइशे मुबारका के वक़्त ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम उम्मतियों को याद फ़रमाया, शबे मे'राज भी रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में याद फ़रमाया, विसाल शरीफ़ के बा'द क़ब्रे अन्वर में उतारते हुए भी देखा गया तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबारका पर उम्मत की नजात व बख़्शिश की दुआ़एं थीं। आराम देह रातों में जब सारा जहां मह़्वे इस्तिराह़त होता वोह प्यारे आक़ा ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना बिस्तरे मुबारक छोड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हम गुनाहगारों के लिये दुआ़एं फ़रमाया करते हैं। उ़मूमी और ख़ुसूसी दुआ़एं हमारे ह़क़ में फ़रमाते रहते। क़ियामत के दिन सख़्त गरमी के आ़लम में शदीद प्यास के वक़्त रब्बे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारे लिये सर सज्दे में रखेंगे और उम्मत की बख़्शिश की दरख़्वास्त करेंगे। कहीं उम्मतियों के नेकियों के पलड़े भारी करेंगे, कहीं पुल सिरात़ से सलामती से गुज़ारेंगे, कहीं हौज़े कौसर से सैराब करेंगे, कभी जहन्नम में गिरे हुए उम्मतियों को निकाल रहे होंगे, किसी के दरजात बुलन्द फ़रमा रहे होंगे, ख़ुद रोएंगे हमें हंसाएंगे, ख़ुद ग़मगीन होंगे हमें ख़ुशियां अ़त़ा फ़रमाएंगे, अपने नूरानी आंसूओं से उम्मत के गुनाह धोएंगे और दुन्या में हमें क़ुरआन दिया, ईमान दिया, ख़ुदा का इ़रफ़ान दिया और हज़ारहा वोह चीज़ें जिन के हम क़ाबिल न थे अपने सायए रह़मत के सदक़े हमें अ़त़ा फ़रमाईं। अल ग़रज़ हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एह़सानात इस क़दर कसीर दर कसीर हैं कि इन्हें शुमार करना इन्सानी त़ाक़त से बाहर है। इस आयते मुबारका के अल्फ़ाज़ की वज़ाह़त के लिये सूरए बक़रह आयत नम्बर 129 की तफ़्सीर देखें।

www.dawateislami.net

اَوَ لَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِیْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَیْهَاۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَاؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۶۵﴾ وَ مَاۤ اَصَابَكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَ لِیَعْلَمَ الْمُؤْمِنِیْنَۙ ﴿۱۶۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे कि उस से दूनी तुम पहुंचा चुके हो तो कहने लगो कि येह कहां से आई तुम फ़रमा दो कि वोह तुम्हारी ही त़रफ़ से आई बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है। और वोह मुसीबत जो तुम पर आई जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं वोह **अल्लाह** के हुक्म से थी और इस लिये कि पहचान करा दे ईमान वालों की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या जब तुम्हें कोई ऐसी तक्लीफ़ पहुंची जिस से दुगनी तक्लीफ़ तुम पहुंचा चुके थे तो तुम कहने लगे कि येह कहां से आ गई ? ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! येह तुम्हारी अपनी ही त़रफ़ से आई है। बेशक **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है। और दो गुरौहों के मुक़ाबले के दिन तुम्हें जो तक्लीफ़ पहुंची तो वोह **अल्लाह** के हुक्म से थी और इस लिये (पहुंची) कि **अल्लाह** ईमान वालों की पहचान करा दे।

﴾اَوَ لَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِیْبَةٌ : **क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंची।**﴿ यहां ग़ज़्वए उहुद का बयान है। उसी पैराए में यहां बयान किया जा रहा है कि तुम्हें मैदाने उहुद में तक्लीफ़ पहुंची कि तुम में से सत्तर शहीद हुए जब कि मैदाने बद्र में कुफ़्फ़ार के सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर गिरिफ़्तार हुए तो कुफ़्फ़ार का नुक़्सान तो दुगना हुवा। इस पर फ़रमाया कि जब तुम्हें मैदाने उहुद में ऐसी तक्लीफ़ पहुंची जिस से दुगनी तक्लीफ़ तुम काफ़िरों को मैदाने बद्र में पहुंचा चुके थे तो तुम कहने लगे कि हमें येह तक्लीफ़ कैसे आ गई ? जब कि हम मुसल्मान हैं और हम में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। इस पर उन्हें जवाब दिया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम उन से फ़रमा दो कि येह तुम्हारी अपनी ही त़रफ़ से आई है कि तुम ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी के ख़िलाफ़ मदीनए त़य्यिबा से बाहर निकल कर जंग करने पर इसरार किया, फिर वहां पहुंचने के बा'द ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शदीद मुमानअ़त के बा वुजूद ग़नीमत के लिये मर्कज़ को छोड़ा। येही बात तुम्हारे क़त्ल

www.dawateislami.net

और नुक़्सान का सबब बनी है। मज़ीद अगली आयत में फ़रमाया कि मैदाने उहुद में काफ़िरों और मुसलमानों के मुक़ाबले के दिन तुम्हें जो तक्लीफ़ पहुंची तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से थी और इस लिये पहुंची कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ईमान वालों की पहचान करा दे लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर राज़ी रहो।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۚ﴿۱۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस लिये कि पहचान करा दे उन की जो मुनाफ़िक़ हुए और उन से कहा गया कि आओ **अल्लाह** की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और उस दिन ज़ाहिरी ईमान की ब निस्बत खुले कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब हैं अपने मुंह से कहते हैं जो उन के दिल में नहीं और **अल्लाह** को मा'लूम है जो छुपा रहे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इस लिये (पहुंची) कि **अल्लाह** मुनाफ़िक़ों की पहचान करा दे और (जब) उन से कहा गया कि आओ **अल्लाह** की राह में जिहाद करो या दुश्मनों से दिफ़ाअ़ करो तो कहने लगे : अगर हम अच्छे तरीक़े से लड़ना जानते (या कहने लगे कि अगर हम इस लड़ाई को सहीह समझते) तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, येह लोग उस दिन ज़ाहिरी ईमान की निस्बत खुले कुफ़्र के ज़ियादा क़रीब थे। अपने मुंह से वोह बातें कहते हैं जो इन के दिलों में नहीं हैं और **अल्लाह** बेहतर जानता है जो बातें येह छुपा रहे हैं।

﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ﴿ **: और ताकि मुनाफ़िक़ों की पहचान करा दे।** ग़ज़्वए उहुद में मुसलमानों के नुक़्सान उठाने की हिक्मतों को मुतअ़द्दद मक़ामात पर बयान फ़रमाया गया है जिस में बहुत बड़ी हिक्मत मुसलमानों और मुनाफ़िक़ों के दरमियान इम्तियाज़ ज़ाहिर करना था चुनान्चे यहां

www.dawateislami.net

पर भी फ़रमाया गया कि मुसल्मान लश्कर को मैदाने उहुद में इस लिये तक्लीफ़ पहुंची ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों को मुनाफ़िक़ों की पहचान करा दे, क्यूं कि मुनाफ़िक़ों की ह़ालत येह थी कि जब जंगे उहुद शुरूअ़ होने से पहले अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ों से कहा गया कि आओ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करो या सिर्फ़ हमारे साथ मिल कर हमारी ता'दाद बढ़ाओ जिस से एक क़िस्म का दिफ़ाअ़ मज़बूत़ होगा तो येह मुनाफ़िक़ कहने लगे कि "अगर हम अच्छे त़रीक़े से लड़ना जानते" या कहने लगे कि "अगर हम इस लड़ाई को सह़ीह़ समझते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते।" इन मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमाया गया कि येह दर ह़क़ीक़त उस दिन अपने ज़ाहिरी ईमान की निस्बत खुले कुफ़्र के ज़ियादा क़रीब थे। येह अपने मुंह से वोह बातें कहते हैं जो इन के दिलों में नहीं हैं या'नी येह मुंह से तो येह कहते हैं हम मुसल्मान हैं लेकिन हम जंग करना नहीं जानते लेकिन दिल में येह कहते हैं कि कुफ़्फ़ार को अपना दुश्मन न बनाओ, मुसल्मानों को इन के हाथों तबाह हो जाने दो।

اَلَّذِیْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَ قَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۱۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में कहा और आप बैठ रहे कि वोह हमारा कहना मानते तो न मारे जाते तुम फ़रमा दो तो अपनी ही मौत टाल दो अगर सच्चे हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में कहा और ख़ुद बैठे रहे कि अगर वोह हमारी बात मान लेते तो न मारे जाते। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो अगर तुम सच्चे हो तो अपने से मौत दूर कर के दिखा दो।

﴾اَلَّذِیْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ : **जिन्हों ने अपने भाइयों के मुतअ़ल्लिक़ कहा।**﴿ मुनाफ़िक़ीन ने उहुद में शहीद होने वालों के बारे में कहा कि अगर येह लोग हमारी बात मान लेते और हमारी त़रह़ घर बैठे रहते तो मारे न जाते। उन के जवाब में फ़रमाया गया कि अगर तुम सच्चे हो तो अपने से मौत को दूर कर के तो दिखाओ। यक़ीनन मौत तो बहर ह़ाल आ कर ही रहेगी ख़्वाह आदमी घर में छुप कर बैठ जाए, तो येह कहना सरासर ग़लत़ है कि "अगर लोग हमारी बात मान कर जिहाद में न जाते तो न मारे जाते।"

www.dawateislami.net

وَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًاؕ-بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَۙ(۱۶۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** की राह में शहीद किये गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ख़याल न करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है।

﴿وَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا﴾ **: और जो अल्लाह की राह में शहीद किये गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ख़याल न करना।** **शाने नुज़ूल :** अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत शुहदाए उहुद के हक़ में नाज़िल हुई। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम्हारे भाई उहुद में शहीद हुए तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन की अरवाह़ को सब्ज़ परिन्दों के जिस्म अ़त़ा फ़रमाए, वोह जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं, जन्नती मेवे खाते हैं, सोने की उन क़िन्दीलों में रहते हैं जो अ़र्श के नीचे लटक रही हैं। जब उन शुहदाए किराम ने खाने, पीने और रहने के पाकीज़ा ऐ़श पाए तो कहा कि पीछे दुन्या में रह जाने वाले हमारे भाइयों को कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वोह जिहाद से बे रग़बती न करें और जंग से बैठ न रहें। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा। पस येह आयत नाज़िल फ़रमाई।(1)

शुहदा की शान

इस से साबित हुवा कि अरवाह़ बाक़ी हैं जिस्म के फ़ना होने के साथ फ़ना नहीं होतीं। यहां आयत में शुहदा की कई शानें बयान हुई हैं : फ़रमाया कि वोह कामिल ज़िन्दगी वाले हैं, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास हैं, उन्हें रब्बे करीम की त़रफ़ से रोज़ी मिलती रहती है, वोह बहुत

1 ......ابو داوٗد، كتاب الجهاد، باب فی فضل الشهادة، ۳/۲۲، الحديث: ۲۵۲۰.

www.dawateislami.net

ख़ुशबाश हैं। शुहदाए किराम ज़िन्दों की त़रह़ खाते पीते और ऐ़श करते हैं। आयते मुबारका इस पर दलालत करती है कि शहीदों की रूह़ और जिस्म दोनों ज़िन्दा हैं। उ़लमा ने फ़रमाया कि शुहदा के जिस्म क़ब्रों में मह़फ़ूज़ रहते हैं, मिट्टी इन को नुक़्सान नहीं पहुंचाती और सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ के ज़माने में और इस के बा'द इस बात का ब कसरत मुआ़यना हुवा है कि अगर कभी शुहदा की क़ब्रें खुल गईं तो उन के जिस्म तरो ताज़ा पाए गए।(1)

فَرِحِیْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۙ وَ یَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِیْنَ لَمْ یَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝۱۷۰

وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : शाद हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उन से न मिले कि उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (वोह) उस पर ख़ुश हैं जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है और अपने पीछे (रह जाने वाले) अपने भाइयों पर भी ख़ुश हैं जो अभी उन से नहीं मिले कि उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे।

﴾ فَرِحِیْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ : उस पर ख़ुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है।﴿ शुहदाए किराम के बारे में फ़रमाया जा रहा है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम, इन्आ़मो एह़सान, ए'ज़ाज़ो इक्राम और मौत के बा'द आ'ला क़िस्म की ज़िन्दगी दिये जाने पर ख़ुश हैं नीज़ इस पर ख़ुश हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें अपना मुक़र्रब बनाया, जन्नत का रिज़्क़ और उस की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं और जन्नत की मन्ज़िलें ह़ासिल करने के लिये शहादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। नीज़ वोह इस बात पर भी ख़ुशी मना रहे हैं कि इन के बा'द दुन्या में रह जाने वाले इन के मुसल्मान भाई दुन्या में ईमान और तक़्वा पर क़ाइम हैं और जब वोह भी शहीद हो कर इन के साथ मिलेंगे तो वोह भी इन करम नवाज़ियों को पाएंगे और क़ियामत के दिन अम्न और चैन के साथ उठाए जाएंगे।

(1)......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۶۹، ۱/۳۲۳.

www.dawateislami.net

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ख़ुशियां मनाते हैं **अल्लाह** की ने'मत और फ़ज़्ल की और येह कि **अल्लाह** ज़ाएअ़ नहीं करता अज्र मुसल्मानों का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह **अल्लाह** की ने'मत और फ़ज़्ल पर ख़ुशियां मना रहे हैं और इस बात पर कि **अल्लाह** ईमान वालों का अज्र ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाएगा।

﴿يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ﴾ : **वोह अल्लाह की ने'मत और फ़ज़्ल पर ख़ुशियां मना रहे हैं।** शुहदा **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल और उस की ने'मत पर ख़ुशियां मनाते हैं और उन के हर ज़ख़्म के बदले **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत की बारिशें उन पर नाज़िल होती हैं।

शुहदा के छे फ़ज़ाइल

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस किसी के राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ख़्म लगा वोह रोज़े क़ियामत वैसा ही आएगा जैसा ज़ख़्म लगने के वक़्त था, उस के ख़ून में ख़ुश्बू मुश्क की होगी और रंग ख़ून का।"[1]

(2)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "शहीद को क़त्ल से तक्लीफ़ नहीं होती मगर ऐसी जैसी किसी को एक ख़राश लगे।"[2]

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "शहीद के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं सिवाए क़र्ज़ के।"[3]

(4)...... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب من یجرح فی سبیل اللّٰہ عزوجل، ٢/٢٥٤، الحدیث: ٢٨٠٣.
2 ......ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ما جاء فی فضل المرابط، ٣/٢٥٢، الحدیث: ١٦٧٤.
3 ......مسلم، کتاب الامارة، باب من قتل فی سبیل اللّٰہ کفرت خطایاه الا الدّین، ص١٠٤٦، الحدیث: ١١٩(١٨٨٦).

www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में जाने के बा'द शहीद येह तमन्ना करेगा कि मुझे दोबारा दुन्या में भेज दिया जाए और दस बार (**अल्लाह** के रास्ते में) क़त्ल किया जाऊं।(1)

(5)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मेरी येह तमन्ना है कि मैं **अल्लाह** तआला के रास्ते में जिहाद करूं, फिर शहीद किया जाऊं, फिर जिहाद करूं, फिर शहीद किया जाऊं, फिर जिहाद करूं फिर शहीद किया जाऊं।"(2)

(6)...... हज़रते अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने येह दुआ मांगी : "اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی شَھَادَةً فِیْ سَبِیْلِکَ، وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِکَ" ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी राह में शहादत अ़ता फ़रमा और मुझे अपने रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर में वफ़ात नसीब फ़रमा।(3)

مع

اَلَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِیْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۷۲﴾ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हुए बा'द इस के कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था उन के निकोकारों और परहेज़ गारों के लिये बड़ा सवाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो **अल्लाह** और रसूल के बुलाने पर ज़ख़्मी होने के बा वुजूद (फ़ौरन) हाज़िर हो गए उन नेक बन्दों और परहेज़ गारों के लिये बड़ा सवाब है।

﴿اَلَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ : **वोह लोग जो अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो गए ।**﴾

शाने नुज़ूल : जंगे उहुद से फ़ारिग़ होने के बा'द जब अबू सुफ़्यान, अपने हमराहियों के साथ "रौहा" नामी जगह पहुंचा तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि वोह वापस क्यूं आ गए, मुसल्मानों का

1 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الشھادۃ فی سبیل اللّٰہ تعالٰی، ص١٠٤٣، الحدیث: ١٠٩(١٨٧٧).

2 ......مسلم ، کتاب الامارۃ، باب فضل الجھاد والخروج فی سبیل اللّٰہ، ص١٠٤٢، الحدیث: ١٠٣(١٨٧٦).

3 ......بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، ١٣- باب، ٦٢٢/١، الحدیث: ١٨٩٠.

www.dawateislami.net

बिल्कुल ख़ातिमा ही क्यूं न कर दिया। येह ख़याल कर के उन्हों ने फिर वापस होने का इरादा किया तो ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब के लिये रवानगी का ए'लान फ़रमा दिया, सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की एक जमाअ़त जिन की ता'दाद सत्तर थी और जो जंगे उहुद के ज़ख़्मों से चूर हो रहे थे, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'लान पर ह़ाज़िर हो गए और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस जमाअ़त को ले कर अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब में रवाना हो गए। जब हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "ह़म्रा अल असद" नामी जगह पर पहुंचे जो मदीनए मुनव्वरह से आठ मील के फ़ासिले पर है तो वहां मा'लूम हुवा कि मुश्रिकीन ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग गए हैं। इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई।[1]

इस आयत में सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की अ़ज़्मतो हिम्मत का बयान भी है कि ज़ख़्मों से चूर चूर होने के बा वुजूद सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर फ़ौरन ह़ाज़िर हो गए।

येह ग़ाज़ी येह तेरे पुर असरार बन्दे जिन्हें तू ने बख़्शा है ज़ौक़े ख़ुदाई
दो नीम इन की ठोकर से दरिया व सह़रा सिमट कर पहाड़ इन की हैबत से राई

اَلَّذِیْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِیْمَانًا ۗ وَّ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِیْلُ ﴿۱۷۳﴾ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ لَّمْ یَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّ اتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन से लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे लिये जथ्था जोड़ा तो उन से डरो तो उन का ईमान और ज़ाइद हुवा और बोले **अल्लाह** हम को बस है और क्या अच्छा कारसाज़। तो पलटे **अल्लाह** के एह़सान और फ़ज़्ल से कि उन्हें कोई बुराई न पहुंची और **अल्लाह** की ख़ुशी पर चले और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

1......مدارك، ال عمران، تحت الآية: ١٧٢، ص١٩٧.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह वोह लोग हैं जिन से लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे लिये (एक लश्कर) जम्अ़ कर लिया है सो उन से डरो तो उन के ईमान में और इज़ाफ़ा हो गया और कहने लगे : हमें **अल्लाह** काफ़ी है और क्या ही अच्छा कारसाज़ है। फिर येह **अल्लाह** के एह़सान और फ़ज़्ल के साथ वापस लौटे, उन्हें कोई तक्लीफ़ न पहुंची और उन्हों ने **अल्लाह** की रिज़ा की पैरवी की और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

﴿اَلَّذِیْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ﴾ **: येह वोह लोग हैं जिन से लोगों ने कहा।** **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से वापस होते हुए अबू सुफ़्यान ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आप की मक़ामे बद्र में जंग होगी। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के जवाब में फ़रमाया : "اِنْ شَآءَ اللّٰه" जब वोह वक़्त आया और अबू सुफ़्यान अहले मक्का को ले कर जंग के लिये रवाना हुए तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिल में ख़ौफ़ डाला और उन्हों ने वापस होने का इरादा किया। इस मौक़अ़ पर अबू सुफ़्यान की नुऐ़म बिन मस्ऊ़द से मुलाक़ात हुई जो उ़म्रह करने आया था। अबू सुफ़्यान ने उस से कहा कि ऐ नुऐ़म ! इस ज़माने में मेरी लड़ाई मक़ामे बद्र में मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ त़ै हो चुकी है और इस वक़्त मुझे मुनासिब येह मा'लूम होता है कि मैं जंग में न जाऊं बल्कि वापस चला जाऊं। लिहाज़ा तुम मदीने जाओ और ह़िक्मतो तदबीर के साथ मुसल्मानों को मैदाने जंग में जाने से रोक दो। इस के इ़वज़ मैं तुझे दस ऊंट दूंगा। नुऐ़म ने मदीने पहुंच कर देखा कि मुसल्मान जंग की तय्यारी कर रहे हैं, येह देख कर उन से कहने लगा कि तुम जंग के लिये जाना चाहते हो, अहले मक्का ने तुम्हारे लिये बड़े लश्कर जम्अ़ किये हैं। ख़ुदा की क़सम ! तुम में से एक भी सलामत वापस न आएगा। हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मैं ज़रूर जाऊंगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो।" चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सत्तर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को साथ ले कर "حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِیْلُ" पढ़ते हुए रवाना हुए और बद्र में पहुंचे, वहां आठ दिन क़ियाम किया, माले तिजारत साथ था उसे फ़रोख़्त किया और ख़ूब नफ़्अ़ हुवा और फिर सलामती के साथ मदीनए त़य्यिबा वापस आए और जंग नहीं हुई। चूंकि अबू सुफ़्यान और अहले मक्का ख़ौफ़ज़दा हो कर मक्कए मुकर्रमा को वापस हो गए थे इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत और इस के बा'द वाली आयत नाज़िल हुई।[1]

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۷۲، ۱/ ۳۲۵-۳۲۶.

www.dawateislami.net

इस वाक़िए़ को बद्रे सुग़रा का वाक़िआ़ कहते हैं। इस वाक़िए़ से भी सहा़बए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم की अ़ज़मत वाज़ेह़ होती है कि जब उन्हें काफ़िरों के बड़े बड़े लश्करों से डराया जा रहा है तो बजाए डरने और बुज़दिली दिखाने के उन की हिम्मत और जवांमर्दी और बढ़ जाती है, उन के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है। उन की ज़बानों पर एक ही वज़ीफ़ा जारी होता है कि हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है और वोही सब से अच्छा कारसाज़ है।

काफ़िर है तो शमशीर पे करता है भरोसा   मोमिन है तो बे तैग़ भी लड़ता है सिपाही

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَٰنُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهُۥ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो शैता़न ही है कि अपने दोस्तों से धम्काता है तो उन से न डरो और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह तो शैता़न ही है जो अपने दोस्तों से डराता है तो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो।

﴿إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَٰنُ﴾ **: बेशक वोह तो शैता़न ही है।** यहां पिछले वाक़िए़ ही का बयान है कि वोह तो शैता़न है जो मुसल्मानों को मुश्रिकीन की कसरत से डराता है जैसा कि नुऐ़म बिन मस्ऊ़द ने किया कि वोह अपने दोस्तों से डराता है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें हुक्म देता है कि उन मुनाफ़िक़ीन और मुश्रिकीन का ख़ौफ़ न करो जो शैता़न के दोस्त हैं, बल्कि सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला से डरो क्यूं कि ईमान का तक़ाज़ा ही येह है कि बन्दे को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ही का ख़ौफ़ हो और जब येह ख़ौफ़ पैदा हो जाता है तो फिर किसी दूसरे का ख़ौफ़ बाक़ी नहीं रहता। इस आयते मुबारका से पता चला कि मुसल्मानों को काफ़िरों से डराना, मुसल्मानों के हौसले पस्त करना, इन के सामने काफ़िरों की ता़क़त को बढ़ा चढ़ा कर पेश करना ताकि मुसल्मान हिम्मत हार बैठें और कुफ़्फ़ार से मुक़ाबले का नाम तक न लें येह सब ह़रकतें कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन की हैं। ऐसे लोगों की हमारे ज़माने में कमी नहीं जिन्हें मुसल्मानों को तो हिम्मतो हौसला देने की तौफ़ीक़

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٧٢، ١/٣٢٥-٣٢٦.

www.dawateislami.net

नहीं लेकिन वोह कुफ़्फ़ार की त़ाक़त को ऐसा बढ़ा चढ़ा कर पेश करेंगे कि मुसल्मान उन से मुक़ाबले का नाम लेने से भी घबराएं। अख़्बार वग़ैरा का मुत़ालआ़ करने वालों से येह बात पोशीदा नहीं।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब तुम उन का कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं वोह **अल्लाह** का कुछ न बिगाड़ेंगे **अल्लाह** चाहता है कि आख़िरत में उन का कोई ह़िस्सा न रखे और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! तुम उन का कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र में दौड़े जाते हैं वोह **अल्लाह** का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। **अल्लाह** येह चाहता है कि उन का आख़िरत में कोई ह़िस्सा न रखे और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

﴿وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ﴾ **: और ऐ ह़बीब ! तुम उन का कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र में दौड़े जाते हैं।** हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तसल्ली के लिये येह आयते मुबारका नाज़िल हुई कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन लोगों का ग़म न करें जो कुफ़्र में दौड़े जाते हैं और इस के लिये कोशिश करते हैं ख़्वाह वोह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हों या मुनाफ़िक़ीन या यहूदियों के सरदार या मुरतद्दीन, येह सब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले के लिये कितने ही लश्कर जम्अ़ कर लें, काम्याब न होंगे। और उन के ह़क़ में **अल्लाह** तआ़ला येह चाहता है कि क़ियामत के दिन लोगों को मिलने वाले सवाब में उन का कोई ह़िस्सा न रखे इसी लिये उस ने उन्हें उन के कुफ़्रो सरकशी में भटकता छोड़ दिया और उन के लिये उख़्रवी सवाब से मुकम्मल त़ौर पर मह़रूमी के साथ साथ जहन्नम का बड़ा अ़ज़ाब भी है तो ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जिन

www.dawateislami.net

के लिये नाकामी, महरूमी और दर्दनाक अ़ज़ाब मुक़द्दर हो चुका है उन से कोई अन्देशा करने की ज़रूरत नहीं।

اِنَّ الَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ لَنْ یَّضُرُّوا اللّٰهَ شَیْــٴًـاۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया **अल्लाह** का कुछ न बिगाड़ेंगे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने ईमान की बजाए कुफ़्र इख़्तियार किया वोह हरगिज़ **अल्लाह** का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

﴾اِنَّ الَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ : **बेशक वोह जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार किया।**﴿ इर्शाद फ़रमाया कि वोह मुनाफ़िक़ीन जो कलिमए ईमान पढ़ने के बा'द काफ़िर हुए या वोह लोग जो ईमान पर क़ादिर होने के बा वुजूद काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए येह **अल्लाह** तआ़ला का कुछ न बिगाड़ सकेंगे बल्कि इन के कुफ़्र का वबाल इन्ही के सर आएगा।

وَ لَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ خَیْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْؕ اِنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ لِیَزْدَادُوْۤا اِثْمًاۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ﴿۱۷۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उन के लिये भला है हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें और उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और काफ़िर हरगिज़ येह गुमान न रखें कि हम उन्हें जो मोहलत दे रहे हैं येह उन के लिये बेहतर है, हम तो सिर्फ़ इस लिये उन्हें मोहलत दे रहे हैं कि उन के गुनाह और ज़ियादा हो जाएं और उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

www.dawateislami.net

﴿وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا﴾ **: और काफ़िर हरगिज़ येह गुमान न रखें।** **अल्लाह** तआ़ला उ़मूमन फ़ौरी तौर पर किसी गुनाह पर गिरिफ़्त नहीं फ़रमाता बल्कि मोहलत देता है और दुन्यावी आसाइशों का सिल्सिला इसी त़रह़ चलता रहता है इस से बहुत से लोग इस धोके में पड़े रहते हैं कि उन का कुफ़्र और उन की ह़रकतें कुछ नुक़्सान देह नहीं हैं उन के बारे में फ़रमाया गया कि काफ़िरों को लम्बी उ़म्र मिलना, उन्हें फ़ौरी अ़ज़ाब न होना और उन्हें मोहलत दिया जाना ऐसी चीज़ नहीं कि जिसे वोह अपने ह़क़ में बेहतर समझें बल्कि तौबा न करने की सूरत में येही मोहलत उन के गुनाहों में इज़ाफ़े और उन की तबाही व बरबादी का सबब बनने वाली होती है। लिहाज़ा इस मोहलत को अपने ह़क़ में हरगिज़ बेहतर न समझें।

लम्बी उ़म्र पाना कैसा है ?

लम्बी उ़म्र पाना अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी। जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्रह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि कौन शख़्स अच्छा है ? इर्शाद फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल अच्छे हों। अ़र्ज़ किया गया : और बदतर कौन है ? इर्शाद फ़रमाया, जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल ख़राब हों।(1)

और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : कुज़ाआ़ क़बीले के दो शख़्स नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए, उन में एक तो शहीद हो गया और दूसरा मज़ीद एक साल तक ज़िन्दा रहा, ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : मैं ने देखा कि बा'द में मरने वाला शहीद से भी पहले जन्नत में दाख़िल हो गया, मुझे इस पर तअ़ज्जुब हुवा तो सुब्ह़ मैं ने येह वाक़िआ़ हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया तो इर्शाद फ़रमाया : क्या इस ने उस के बा'द एक रमज़ान के रोज़े न रखे थे और छे हज़ार रक्अ़त नमाज़ और इतनी इतनी सुन्नतें न पढ़ी थीं ?(2)

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ

1 ......ترمذی، کتاب الفتن، ۲۲-باب منه، ۱۴۸/۴، الحدیث: ۲۳۳۷.

2 ......مسند امام احمد، مسند ابی ھریرة، ۲۲۹/۳، الحدیث: ۸۴۰۷.

www.dawateislami.net

اَلْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا
وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** मुसल्मानों को इसी ह़ाल पर छोड़ने का नहीं जिस पर तुम हो जब तक जुदा न कर दे गन्दे को सुथरे से और **अल्लाह** की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे दे हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूलों पर और अगर ईमान लाओ और परहेज़ गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा सवाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** की येह शान नहीं कि मुसल्मानों को इस ह़ाल पर छोड़े जिस पर (अभी) तुम हो जब तक वोह नापाक को पाक से जुदा न कर दे और (ऐ आ़म लोगो !) **अल्लाह** तुम्हें ग़ैब पर मुत्त़लअ़ नहीं करता अलबत्ता **अल्लाह** अपने रसूलों को मुन्तख़ब फ़रमा लेता है जिन्हें पसन्द फ़रमाता है तो तुम **अल्लाह** और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाओ और मुत्तक़ी बनो तो तुम्हारे लिये बहुत बड़ा अज्र है।

﴾مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ﴿ **: अल्लाह की येह शान नहीं कि मुसल्मानों को इस ह़ाल पर छोड़े जिस पर (अभी) तुम हो।** इस आयत का ख़ुलासा येह है कि ऐ सह़ाबा ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم, येह ह़ाल नहीं रहेगा कि मुनाफ़िक़ व मोमिन मिले जुले रहें बल्कि अ़न्क़रीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ मुसल्मानों और मुनाफ़िक़ों को जुदा जुदा कर देगा। इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल कुछ इस त़रह़ है कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मेरी उम्मत की पैदाइश से पहले जब मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उस वक़्त वोह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई जैसा कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर पेश की गई और मुझे इ़ल्म दिया गया कि कौन मुझ पर ईमान लाएगा और कौन कुफ़्र करेगा।" येह ख़बर जब मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो उन्हों ने इस्तिहज़ा के त़ौर पर कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुमान है कि वोह येह जानते हैं कि जो लोग अभी

www.dawateislami.net

पैदा भी नहीं हुए उन में से कौन उन पर ईमान लाएगा और कौन कुफ़्र करेगा, जब कि हम उन के साथ रहते हैं और वोह हमें पहचानते नहीं । इस पर हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर खड़े हुए और **अल्लाह** तआला की हम्दो सना के बा'द फ़रमाया : ''उन लोगों का क्या हाल है जो मेरे इल्म में ता'न (ए'तिराज़) करते हैं, आज से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उस में से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझ से सुवाल करो और मैं तुम्हें उस की ख़बर न दे दूं।'' हज़रते अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने खड़े हो कर कहा : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मेरा बाप कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : हुज़ाफ़ा । फिर हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने खड़े हो कर अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रबूबिय्यत पर राज़ी हुए, इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए, क़ुरआन के इमाम व पेशवा होने पर राज़ी हुए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हुए, हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुआफ़ी चाहते हैं । ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम बाज़ आओगे ? क्या तुम बाज़ आओगे ? फिर मिम्बर से उतर आए इस पर **अल्लाह** तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई ।[1]

हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐसे सुवालात किये गए जो ना पसन्द थे जब ज़ियादा किये गए तो आप नाराज़ हो गए, फिर लोगों से फ़रमाया कि जो चाहो मुझ से पूछ लो । एक शख़्स अर्ज़ गुज़ार हुवा : मेरा बाप कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा बाप हुज़ाफ़ा है । फिर दूसरा आदमी खड़ा हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मेरा बाप कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : सालिम मौला शैबा है । जब हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की हालत देखी तो अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ तौबा करते हैं ।[2]

दूसरी रिवायत यूं है : हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि सूरज ढलने पर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और नमाज़े ज़ोहर पढ़ी, फिर मिम्बर पर खड़े हो कर क़ियामत का ज़िक्र किया और बताया कि इस में बड़े बड़े उमूर हैं । फिर फ़रमाया : जो किसी चीज़ के बारे में मुझ से पूछना चाहता हो तो पूछ ले और तुम मुझ से किसी चीज़ के बारे में नहीं पूछोगे मगर मैं तुम्हें इसी जगह बता दूंगा, पस लोग बहुत ज़ियादा

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٧٩، ٣٢٨/١.

2 ......بخاری، کتاب العلم، باب الغضب فی الموعظة و التعليم... الخ، ٥١/١، الحديث: ٩٢.

www.dawateislami.net

रोए और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बार बार फ़रमाते रहे कि मुझ से पूछ लो। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه खड़े हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : मेरा बाप कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा बाप हुज़ाफ़ा है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बार बार फ़रमाते रहे कि मुझ से पूछ लो। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه घुटनों के बल खड़े हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : हम **अल्लाह** तआ़ला के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हैं। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए, फिर फ़रमाया : "अभी मुझ पर जन्नत और जहन्नम इस दीवार के गोशे में पेश की गईं, मैं ने ऐसी भली और बुरी चीज़ नहीं देखी।"(1)

इन अह़ादीस से साबित हुवा कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत तक की तमाम चीज़ों का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया है और येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब में ए'तिराज़ करना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। आयत में फ़रमाया गया कि ऐ आ़म लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ग़ैब पर मुत्त़लअ़ नहीं करता अलबत्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूलों को मुन्तख़ब फ़रमा लेता है और इन बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब का इ़ल्म देता है और सय्यिदुल अम्बिया, ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रसूलों में सब से अफ़्ज़ल और आ'ला हैं, इन्हें सब से बढ़ कर ग़ैब का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया है। इस आयत से और इस के सिवा ब कसरत आयात व अह़ादीस से साबित है कि **अल्लाह** तआ़ला ने सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ैब के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए और ग़ैबों का इ़ल्म आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है। आयत के आख़िर में फ़रमाया कि ऐ लोगो ! तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म नहीं दिया जाता, तुम्हारा काम येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल पर ईमान लाओ, जिस में येह बात भी दाख़िल है कि इस बात की तस्दीक़ करो कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब पर मुत्त़लअ़ किया है।

इ़ल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ 10 अह़ादीस

(1)...... ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखा, उस ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरे कन्धों के

1......بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب وقت الظھر عند الزوال، ۱/ ۲۰۰، الحدیث: ۵۴۰.

www.dawateislami.net

दरमियान रखा, मेरे सीने में उस की ठन्डक मह़सूस हुई, उसी वक़्त हर चीज़ मुझ पर रोशन हो गई और मैं ने सब कुछ पहचान लिया।"(1)

(2)...... सुनने तिरमिज़ी में ही ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी रिवायत में है कि "जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब मेरे इ़ल्म में आ गया।"(2)

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक मेरे सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या उठा ली है और मैं इसे और जो कुछ इस में क़ियामत तक होने वाला है सब कुछ ऐसे देख रहा हूं जैसे अपनी हथेली को देख रहा हूं, उस रोशनी के सबब जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी के लिये रोशन फ़रमाई जैसे मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से पहले अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये रोशन की थी।"(3)

(4)...... ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हु़ज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गुज़श्ता रात मुझ पर मेरी उम्मत इस हु़जरे के पास मेरे सामने पेश की गई, बेशक मैं इन के हर शख़्स को उस से ज़ियादा पहचानता हूं जैसा तुम में कोई अपने साथी को पहचानता है।"(4)

(5)...... ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम लोगों में खड़े थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मख़्लूक़ की पैदाइश से बताना शुरूअ़ किया ह़त्ता कि जन्नती अपने मनाज़िल पर जन्नत में दाख़िल हो गए और जहन्नमी अपने ठिकाने पर जहन्नम में पहुंच गए। जिस ने इस बयान को याद रखा उस ने याद रखा जो भूल गया सो भूल गया।(5)

(6)...... मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अ़म्र बिन अख़्त़ब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, एक दिन हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र से गुरूबे आफ़्ताब तक ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया, बीच में ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ों के इ़लावा कुछ काम न किया उस में वोह सब कुछ

---

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ص، ۵/۱۶۰، الحدیث: ۳۲۴۶.

2 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ص، ۵/۱۵۸، الحدیث: ۳۲۴۴.

3 ......حلیۃ الاولیاء، حدیر بن کریب،۶/۱۰۷، الحدیث:۷۹۷۹.

4 ......معجم الکبیر، حذیفہ بن اسید... الخ، ۳/۱۸۱، الحدیث: ۳۰۵۴.

5 ......بخاری،کتاب بدء الخلق،باب ما جاء فی قول اللّٰہ تعالٰی: وھو الذی یبدء الخلق... الخ، ۲/۳۷۵، الحدیث: ۳۱۹۲.

www.dawateislami.net

हम से बयान फ़रमा दिया जो कुछ क़ियामत तक होने वाला था और हम में ज़ियादा इल्म वाला वोह है जिसे ज़ियादा याद रहा।[1]

(7)...... हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उहुद पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अबू बक्र व उमर व उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी थे, नागाह पहाड़ लरज़ने लगा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे फ़रमाया : ऐ उहुद ! ठहर जा कि तुझ पर एक नबी और एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।[2]

(8)...... हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए बद्र से एक दिन पहले नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें अहले बद्र के गिरने या'नी मरने की जगहें दिखाईं और फ़रमाया : कल फ़ुलां शख़्स के गिरने या'नी मरने की येह जगह है। हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं उस ज़ात की क़सम जिस ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! जो निशान **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस के लिये लगाया था वोह उसी पर गिरा।[3]

(9)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दो ऐसी क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन में अ़ज़ाब हो रहा था तो इर्शाद फ़रमाया : ''इन्हें अ़ज़ाब हो रहा है और इन को अ़ज़ाब किसी ऐसी शै की वज्ह से नहीं दिया जा रहा जिस से बचना बहुत मुश्किल हो, एक तो पेशाब के छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ली किया करता था।''[4]

(10)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सुल्हे हुदैबिया से वापसी पर एक जगह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के ऊंट मुन्तशिर हो गए, सब अपने अपने ऊंट वापस ले आए लेकिन हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب اخبار النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم فیما یکون الی قیام الساعة، ص ١٥٤٦، الحدیث: ٢٥(٢٨٩٢).

2 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم، باب قول النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم: لو کنت متخذاً خلیلاً، ٥٢٤/٢، الحدیث:٣٦٧٥.

3 ......مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، باب عرض مقعد المیت من الجنة او النار علیه... الخ، ص١٥٣٦، الحدیث: ٧٦(٢٨٧٣).

4 ......بخاری، کتاب الوضوء، ٥٩-باب، ٩٦/١، الحدیث: ٢١٨.

www.dawateislami.net

की ऊंटनी न मिली, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि वहां से ऊंटनी ले आओ, तो मैं ने ऊंटनी को उसी ह़ाल में पकड़ लिया जैसा मुझ से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था।[1]

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۸۰﴾ ع ١٨

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा और **अल्लाह** ही वारिस है आस्मानों और ज़मीन का और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो लोग उस चीज़ में बुख़्ल करते हैं जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी है वोह हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि येह बुख़्ल उन के लिये बुरा है। अ़न्क़रीब क़ियामत के दिन उन के गलों में उसी माल का तौक़ बना कर डाला जाए जिस में उन्हों ने बुख़्ल किया था और **अल्लाह** ही आस्मानों और ज़मीन का वारिस है और **अल्लाह** तुम्हारे तमाम कामों से ख़बरदार है।

﴿ اَلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ : **वोह जो बुख़्ल करते हैं।**﴾ इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला की राह में माल ख़र्च करने में बुख़्ल करने वालों के बारे में शदीद वई़द बयान की गई है और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां बुख़्ल से ज़कात का न देना मुराद है।

ज़कात अदा न करने की वई़द

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

1 ......معجم الكبير، ١٠/٢٢٥، الحديث: ١٠٥٤٨.

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग जो सोना और चांदी जम्अ़ कर रखते हैं और उसे **अल्लाह** की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुश ख़बरी सुनाओ। जिस दिन वोह माल जहन्नम की आग में तपाया जाएगा फिर उस के साथ उन की पेशानियों और उन के पहलूओं और उन की पुश्तों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा) येह वोह माल है जो तुम ने अपने लिये जम्अ़ कर रखा था तो अपने जम्अ़ करने का मज़ा चखो।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल दिया और उस ने ज़कात अदा न की, रोज़े क़ियामत वोह माल सांप बन कर उस को तौक़ की तरह लिपटेगा और येह कह कर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।''(2)

बुख़्ल की ता'रीफ़

बुख़्ल की ता'रीफ़ येह है कि जहां शरअ़न या उ़र्फ़ो आ़दत के ए'तिबार से ख़र्च करना वाजिब हो वहां ख़र्च न करना बुख़्ल है। ज़कात सदक़ए फ़ित्र वग़ैरा में ख़र्च करना शरअ़न वाजिब है और दोस्त अह़बाब, अ़ज़ीज़ रिश्तेदारों पर ख़र्च करना उ़र्फ़ो आ़दत के ए'तिबार से वाजिब है।(3)

बुख़्ल की मज़म्मत

क़ुरआने मजीद और कसीर अहा़दीस में बुख़्ल की शदीद मज़म्मत बयान की गई है, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हां हां येह जो तुम लोग हो तुम बुलाए जाते हो ताकि तुम **अल्लाह** की

1 ......توبہ:٣٥،٣٤.
2 ......بخاری، کتاب الزکاة، باب اثم مانع الزکاة، ٤٧٤/١، الحدیث: ١٤٠٣.
3 ......احیاء علوم الدین، کتاب ذمّ البخل وذمّ حبّ المال، بیان حدّ السخاء والبخل وحقیقتھما، ٣٢٠/٣، ملخصاً.

www.dawateislami.net

يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ الْغَنِیُّ وَ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا یَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَیْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا یَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ (1)

राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे वोह अपनी ही जान से बुख़्ल करता है और **अल्लाह** बे नियाज़ है और तुम सब मोह़ताज हो और अगर तुम मुंह फेरोगे तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल देगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे ।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आदमी की दो आ़दतें बुरी हैं (1) बख़ीली जो रुलाने वाली है। (2) बुज़दिली जो ज़लील करने वाली है।''(2)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मालदार बुख़्ल करने की वज्ह से बिला ह़िसाब जहन्नम में दाख़िल होंगे।''(3)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कोई बख़ील जन्नत में नहीं जाएगा।''(4)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बख़ील, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर है, जन्नत से और आदमियों से दूर है जब कि जहन्नम से क़रीब है।''(5)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बुख़्ल जहन्नम में एक दरख़्त है, जो बख़ील है उस ने उस की टहनी पकड़ ली है, वोह टहनी उसे जहन्नम में दाख़िल किये बिग़ैर न छोड़ेगी।''(6)

बुख़्ल का इ़ल्मी और अ़मली इ़लाज

बुख़्ल का इ़लाज यूं मुम्किन है कि बुख़्ल के अस्बाब पर ग़ौर कर के उन्हें दूर करने की कोशिश करे, जैसे बुख़्ल का बहुत बड़ा सबब माल की मह़ब्बत है, माल से मह़ब्बत नफ़्सानी

1 ......سورۂ محمد:٣٨.
2 ......ابو داوٗد، کتاب الجهاد، باب فی الجرأة والجبن، ١٨/٣، الحديث: ٢٥١١.
3 ......فردوس الاخبار، باب السين، ٤٤٤/١، الحديث: ٣٣٠٩.
4 ......معجم الاوسط، باب العين، من اسمه علی، ١٢٥/٣، الحديث: ٤٠٦٦.
5 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی السخاء، ٣٨٧/٣، الحديث: ١٩٦٨.
6 ......شعب الايمان، الرابع و السبعون من شعب الايمان، ٤٣٥/٧، الحديث: ١٠٨٧٧.

www.dawateislami.net

ख़्वाहिश और लम्बी उ़म्र तक ज़िन्दा रहने की उम्मीद की वज्ह से होती है, इसे क़नाअ़त और सब्र के ज़रीए़ और ब कसरत मौत की याद और दुन्या से जाने वालों के ह़ालात पर ग़ौर कर के दूर करे। यूंही बुख़्ल की मज़म्मत और सख़ावत की फ़ज़ीलत, हुब्बे माल की आफ़ात पर मुश्तमिल अह़ादीस व रिवायात और ह़िकायात का मुत़ालआ़ कर के ग़ौरो फ़िक्र करना भी इस मोहलिक मरज़ से नजात ह़ासिल करने में मुमिद्दो मुआ़विन साबित होगा।(1)

وقف لازم

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِیْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ فَقِیْرٌ وَّ نَحْنُ اَغْنِیَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَ قَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِیَآءَ بِغَیْرِ حَقٍّ ۙ وَّ نَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿۱۸۱﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۱۸۲﴾ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ने सुना जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह** मोह़ताज है और हम ग़नी अब हम लिख रखेंगे उन का कहा और अम्बिया को उन का नाह़क़ शहीद करना और फ़रमाएंगे कि चखो आग का अ़ज़ाब येह बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और **अल्लाह** बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने उन का क़ौल सुन लिया जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह** मोह़ताज है और हम मालदार हैं। अब हम उन की कही हुई बात और उन का अम्बिया को नाह़क़ शहीद करना लिख रखेंगे और कहेंगे : जला देने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखो। येह उन आ'माल का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे और **अल्लाह** बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

﴿لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ : बेशक अल्लाह ने सुन लिया।﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि जब येह आयत नाज़िल हुई "مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" कि कौन है जो रब तआ़ला को अच्छा क़र्ज़ दे, तो यहूदियों ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला हम से क़र्ज़ मांग रहा है तो हम ग़नी हुए और **अल्लाह** तआ़ला फ़क़ीर। इस पर येह आयते करीमा उतरी।(2)

1 ...... کیمیائے سعادت، رکن سوم، اصل ششم، علاج بخل، ۲/۶۵۰-۶۵۱، ملخصاً.

2 ...... تفسیر کبیر، ال عمران، تحت الآیة: ۱۸۱، ۳/۴۴۶.

www.dawateislami.net

और फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन गुस्ताख़ों की बात सुन ली है जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोह़ताज है और हम मालदार हैं। अब हम उन के आ'माल नामों में उन की कही हुई बात और उन के दूसरे कुफ़्रिय्यात जैसे उन का अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद करना लिख रखेंगे और क़ियामत के दिन उन की इन गुस्ताख़ियों के बदले में कहेंगे कि "अब जला देने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखो।"

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी अल्लाह तआ़ला की गुस्ताख़ी है

यहां आयत में **अल्लाह** तआ़ला की गुस्ताख़ी और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़त्ल करने को साथ साथ बयान कर के अ़ज़ाब की एक ही वईद बयान की है, इस से मा'लूम हुवा कि येह दोनों जुर्म बहुत अ़ज़ीम तरीन हैं और क़बाह़त में बराबर हैं और शाने अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में गुस्ताख़ी करने वाला शाने इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुस्ताख़ी करने वाले की त़रह़ जहन्नम का मुस्तह़िक़ है क्यूं कि अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी **अल्लाह** तआ़ला की गुस्ताख़ी है।

اَلَّذِیْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَیْنَاۤ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى یَاْتِیَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِیْ بِالْبَیِّنٰتِ وَ بِالَّذِیْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۱۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो कहते हैं **अल्लाह** ने हम से क़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं जब तक ऐसी क़ुरबानी का हुक्म न लाए जिसे आग खाए तुम फ़रमा दो मुझ से पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां और येह हुक्म ले कर आए जो तुम कहते हो फिर तुम ने उन्हें क्यूं शहीद किया अगर सच्चे हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो कहते हैं (कि) **अल्लाह** ने हम से वा'दा लिया था कि हम किसी रसूल की उस वक़्त तक तस्दीक़ न करें जब तक वोह ऐसी क़ुरबानी पेश न करे जिसे

www.dawateislami.net

आग खा जाए। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो (कि) बेशक मुझ से पहले बहुत से रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां और वोही (मो'जिज़ात) ले कर आए जो तुम ने कहे थे फिर अगर तुम सच्चे हो तो तुम ने उन्हें क्यूं शहीद किया ?

﴿اَلَّذِیْنَ قَالُوْا : **वोह जो कहते हैं।**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि यहूदियों की एक जमाअ़त ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा था कि हम से तौरैत में अ़हद लिया गया है कि नुबुव्वत का दा'वा करने वाला जो शख़्स ऐसी कुरबानी पेश न कर सके जिसे आस्मान से सफ़ेद आग उतर कर खाए, उस पर हम हरगिज़ ईमान न लाएं। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

और उन के इस ख़ालिस झूट और बोहतान को बात़िल क़रार दिया गया क्यूं कि इस शर्त़ का तौरैत में नामो निशान भी नहीं है और ज़ाहिर है कि नबी की तस्दीक़ के लिये मो'जिज़ा काफ़ी है ख़्वाह वोह कोई भी हो, जब नबी ने कोई मो'जिज़ा दिखा दिया तो उस के सच्चा होने पर दलील क़ाइम हो गई, अब उस की तस्दीक़ करना और उस की नुबुव्वत को मानना लाज़िम हो गया। नुबुव्वत की सदाक़त साबित हो जाने के बा'द फिर किसी ख़ास मो'जिज़े का इसरार करना ह़क़ीक़त में नबी की तस्दीक़ का इन्कार है। फिर येह बात भी बयान फ़रमा दी कि गुज़श्ता अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बा'ज़ अवक़ात वोही मो'जिज़ात ले कर आए जिस का तुम ने उन से मुत़ालबा किया, जैसे बा'ज़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कुरबानी लाने वाला मो'जिज़ा भी दिखा दिया लेकिन इस के बा वुजूद तुम ने उन्हें न माना बल्कि बहुत से अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद कर दिया, अगर तुम सच्चे थे तो उन को क्यूं शहीद किया ? तुम्हारा साबिक़ा किरदार इस बात की गवाही देता है कि तुम्हारा मक़्सद सिर्फ़ ह़ीले बहाने कर के इस्लाम क़बूल करने से बचना और अपने जाहिलों को वर्ग़लाना है वरना दलील नाम की कोई चीज़ तुम्हारे पास नहीं।

एक अहम नुक्ता

ऊपर की पूरी गुफ़्तगू से एक बहुत मुफ़ीद बात सामने आती है कि जब कोई चीज़ किसी मा'क़ूल दलील से साबित हो जाए तो उसे मान लेना लाज़िम है। दलील से साबित हो जाने के बा'द ख़्वाह म ख़्वाह मख़्सूस क़िस्म की दलील का मुत़ालबा करना यहूदियों का काम है

1 ......جمل، ال عمران، تحت الآية: ۱۸۳، ۱/۵۲۳.

www.dawateislami.net

और इस में भी ऐसे लोगों का मक़्सद मानना नहीं होता बल्कि मुफ़्त की बह़्स करना होता है। जैसे मुसल्मानों में राइज बहुत से मा'मूलात ऐसे हैं जो मा'क़ूल शर्ई दलील से साबित हैं लेकिन बा'ज़ लोगों का ख़्वाह म ख़्वाह इसरार होता है कि नहीं, इसे हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने से साबित करो, इसे बुख़ारी से साबित करो। येह त़र्ज़े अ़मल सरासर जाहिलाना है और ऐसे लोगों को समझाना बे फ़ाएदा होता है।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ मह़बूब अगर वोह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं तो तुम से अगले रसूलों की भी तक्ज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां और सह़ीफ़े और चमक्ती किताब ले कर आए थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ऐ ह़बीब ! अगर वोह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं तो तुम से पहले रसूलों की भी तक्ज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां और सह़ीफ़े और रोशन किताब ले कर आए थे।

﴿فَاِنْ كَذَّبُوْكَ : **तो अगर वोह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं।**﴾ यहां हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली दी जा रही है क्यूं कि जब कोई ह़क़ पर हो और उस की ह़क़्क़ानिय्यत सूरज से ज़ियादा रोशन हो लेकिन फिर भी एक गुरौह उसे झुटलाए और उस की ह़क़्क़ानिय्यत तस्लीम न करे तो उसे क़ल्बी रन्ज ज़रूर होता है और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि **अल्लाह** तआला के ह़बीब हैं इस लिये **अल्लाह** तआला क़ुरआन में बार बार सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली देता है, चुनान्चे यहां भी इसी का बयान हुवा और फ़रमाया गया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अगर येह कुफ़्फ़ार तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़मज़दा न हों क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले रसूलों की भी तक्ज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां, सह़ीफ़े और रोशन किताब ले कर आए थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उन की त़रह़ सब्रो इस्तिक़ामत से तब्लीग़े दीन फ़रमाते रहें।

www.dawateislami.net

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ ؕ وَ اِنَّمَا تُوَفَّوۡنَ اُجُوۡرَكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ فَمَنۡ زُحۡزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدۡخِلَ الۡجَنَّةَ فَقَدۡ فَازَ ؕ وَ مَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الۡغُرُوۡرِ ﴿۱۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है और क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे अज्र पूरे पूरे दिये जाएंगे तो जिसे आग से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वोह काम्याब हो गया और दुन्या की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोके का सामान है।

﴾كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ : **हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है।**﴿ या'नी इन्सान हों या जिन्न या फ़िरिश्ता, ग़रज़ येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर ज़िन्दा को मौत आनी है और हर चीज़ फ़ानी है।

मौत की याद और इस की तय्यारी की तरग़ीब

इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला ने हर जानदार पर मौत मुक़र्रर फ़रमा दी है और इस से किसी को छुटकारा मिलेगा और न कोई इस से भाग कर कहीं जा सकेगा। मौत रूह के जिस्म से जुदा होने का नाम है और येह जुदाई इन्तिहाई सख़्त तक्लीफ़ और अज़िय्यत के साथ होगी और इस की तक्लीफ़ दुन्या में बन्दे को पहुंचने वाली तमाम तक्लीफ़ों से सख़्त तर होगी। मौत और इस की सख़्ती के बारे में **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتۡ سَكۡرَةُ الۡمَوۡتِ بِالۡحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنۡتَ مِنۡهُ تَحِيۡدُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मौत की सख़्ती हक़ के साथ आ गई, (उस वक़्त कहा जाता है) येह वोह (मौत) है जिस से तू भागता था।

(1) ق:١٩.

www.dawateislami.net

हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते का'ब अहबार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ का'ब ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हमें मौत के बारे में बताइये। हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, मौत एक ऐसी कांटेदार टहनी की त़रह़ है जिसे किसी आदमी के पेट में दाख़िल किया जाए और उस का हर कांटा एक एक रग में पैवस्त हो जाए, फिर कोई त़ाक़त वर शख़्स उस टहनी को अपनी पूरी कुव्वत से खींचे तो उस टहनी की ज़द में आने वाली हर चीज़ कट जाए और जो ज़द में न आए वोह बच जाए।(1)

हज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मोमिन पर दुन्या और आख़िरत का कोई ख़ौफ़ मौत से बढ़ कर नहीं, येह ख़ौफ़ आरों से चीरने, क़ैंचियों से काटने और हांडियों में उबालने से भी ज़ियादा सख़्त है। अगर कोई मय्यित क़ब्र से निकल कर दुन्या वालों को मौत की सख़्तियां बता दे तो वोह न ज़िन्दगी से नफ़्अ़ न उठा सकेंगे और न नींद से लज़्ज़त ह़ासिल कर सकेंगे।(2)

मरवी है कि जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का विसाल हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन से फ़रमाया : ऐ मेरे ख़लील ! عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, तुम ने मौत को कैसा पाया ? आप ने अ़र्ज़ की : जिस त़रह़ गर्म सीख़ को तर रूई में रखा जाए फिर उसे खींच लिया जाए। **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : "हम ने आप पर मौत को आसान किया है।"(3)

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : बेशक **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पानी का एक बरतन रखा हुवा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दोनों हाथ पानी में दाख़िल करते, फिर उन्हें चेहरए अन्वर पर मलते और कहते : बेशक मौत में तक्लीफ़ होती है। फिर दस्ते मुबारक उठा कर फ़रमाते : "रफ़ीक़े आ'ला में।" यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई और दस्ते मुबारक झुक गया।(4)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : मैं ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त जो सख़्ती

1......احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت وشدتہ... الخ، ۵/۲۱۰.

2......احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت وشدتہ... الخ، ۵/۲۰۹.

3......احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت وشدتہ... الخ، ۵/۲۰۹.

4......بخاری، کتاب الرقاق، باب سکرات الموت، ۴/۲۵۰، الحدیث: ۶۵۱۰.

www.dawateislami.net

देखी उस के बा'द मुझे किसी की आसान मौत पर रश्क नहीं है।(1)

जब ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन के बेटे ने उन से कहा : ऐ बाबाजान ! आप कहा करते थे कि कोई अ़क़्ल मन्द इन्सान मुझे नज़्अ़ के आ़लम में मिल जाए तो मैं उस से मौत के ह़ालात दरयाफ़्त करूं, तो आप से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द कौन होगा, बराए मेह़रबानी आप ही मुझे मौत के ह़ालात बता दीजिये। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! ख़ुदा की क़सम, ऐसा मा'लूम होता है कि मेरे दोनों पहलू एक तख़्त पर हैं और मैं सूई के नुक्के के बराबर सूराख़ से सांस ले रहा हूं और एक कांटेदार शाख़ मेरे क़दमों की त़रफ़ से सर की जानिब खींची जा रही है।''(2)

हमें ग़ौर करना चाहिये कि हम तो सर ता पा गुनाहों में डूबे हुए हैं और हमारे ऊपर मौत की सख़्तियों के इ़लावा न जाने और कितनी मुसीबतें आएंगी इस लिये अ़क़्ल मन्दी का तक़ाज़ा येही है कि मौत को ब कसरत याद किया जाए और दुन्या में रह कर मौत और उस के बा'द की तय्यारी की जाए।

ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अ़क़्ल मन्द वोह है जो अपने नफ़्स को अपना ताबेअ़ दार बना ले और मौत के बा'द के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ वोह शख़्स है जो अपनी ख़्वाहिशात पर चलता हो और **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत की उम्मीद भी करता हो।''(3)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था कि एक अन्सारी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, कौन सा मोमिन अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया : ''जिस के अख़्लाक़ उ़म्दा हों।'' उस ने अ़र्ज़ की : सब से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द कौन है ? इर्शाद फ़रमाया : ''जो मौत को ज़ियादा याद करता हो और उस की अच्छी त़रह़ तय्यारी करता हो तो वोही सब से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द है।''(4)

1 ......ترمذی، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی التشدید عند الموت، ۲/۲۹۵، الحدیث: ۹۸۱.

2 ......التذکرہ للقرطبی، باب ما جاء انّ للموت سکرات... الخ، ص۲٤.

3 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۲۵-باب، ٤/۲۰۷.

4 ......ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الموت والاستعداد لہ، ٤/٤۹٦، الحدیث: ٤۲۵۹.

www.dawateislami.net

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और मैं वहां मौजूद अफ़राद में से दसवां था। इसी दौरान एक अन्सारी शख़्स आए और अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, लोगों में सब से ज़ियादा अक़्ल मन्द और मोहतात कौन है ? नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह लोग जो मौत आने से पहले उसे ज़ियादा याद करते और उस के लिये ज़ियादा तय्यारी करते हैं वोही अक़्ल मन्द हैं, वोह दुन्या की शराफ़त और आख़िरत की बुज़ुर्गी ले गए।''(1)

सदरुश्शरीअह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौत की याद और उस के बा'द की तय्यारी की तरग़ीब देते हुए फ़रमाते हैं : ''जब इस दारे फ़ना से एक न एक दिन कूच करना ही है तो अक़्ल मन्द इन्सान को चाहिये कि वहां की तय्यारी करे जहां हमेशा रहना है।

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से फ़रमाया : दुन्या में ऐसे रहो जैसे मुसाफ़िर बल्कि राह चलता।(2)

तो मुसाफ़िर जिस तरह एक अजनबी शख़्स होता है और राहगीर रास्ते के खेल तमाशों में नहीं लगता कि मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचने में नाकामी होगी इसी तरह मुसल्मान को चाहिये कि दुन्या और इस की रंगीनियों में न फंसे और न ऐसे तअ़ल्लुक़ात पैदा करे कि मक़्सूदे अस्ली हासिल करने में आड़े आएं और मौत को कसरत से याद करे कि दुन्या और इस की लज़्ज़तों में मश्ग़ूल होने से रोकेगी, हदीस में है : लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली मौत को कसरत से याद करो।(3)

मगर किसी मुसीबत पर मौत की आरज़ू न करे। कि हदीस में इस की मुमानअ़त आई है और नाचार करनी ही पड़े तो यूं कहे, **या अल्लाह !** मुझे ज़िन्दा रख जब तक मेरी ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर हो, और मौत दे जब मेरे लिये बेहतर हो।(4)

यूंही मुसल्मान को चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला से नेक गुमान रखे और उस की रहमत का उम्मीद वार रहे। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक नौ जवान के पास इस हाल में तशरीफ़ ले गए कि वोह मरने के क़रीब था। इर्शाद फ़रमाया : ''तू अपने आप को किस हाल

1 ......معجم الكبير، ١٢/٣١٨، الحديث: ١٣٥٣٦.
2 ......بخارى، كتاب الرقاق، باب قول النبى صلى الله عليه وسلم: كن فى الدنيا كانّك غريب...الخ، ٤/٢٢٣، الحديث: ٦٤١٦.
3 ......ترمذى، كتاب الزهد، باب ما جاء فى ذكر الموت، ٤/١٣٨، الحديث: ٢٣١٤.
4 ......بخارى، كتاب المرضى، باب تمنّى المريض الموت، ٤/١٣، الحديث: ٥٦٧١.

www.dawateislami.net

में पाता है ?" अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** तआ़ला से उम्मीद है और अपने गुनाहों से डर। इर्शाद फ़रमाया : "येह दोनों ख़ौफ़ और उम्मीद इस मौक़अ़ पर जिस बन्दे के दिल में होंगे **अल्लाह** तआ़ला उसे वोह देगा जिस की उम्मीद रखता हो और उस से अम्न में रखेगा जिस से ख़ौफ़ करता है।"(1)

याद रखिये ! रूह क़ब्ज़ होने का वक़्त बहुत ही सख़्त वक़्त है कि इसी पर सारे आ'माल का दारो मदार है बल्कि ईमान के उख़्रवी नताइज इसी पर मुरत्तब होंगे कि ए'तिबार ख़ातिमे ही का है और शैताने लईन ईमान लेने की फ़िक्र में है जिस को **अल्लाह** तआ़ला उस के मक्रो फ़रेब से बचाए और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए वोह ही मुराद को पहुंचा।(2)

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हम सब का ख़ातिमा अच्छा फ़रमाए और हम पर मौत की सख़्तियां आसान फ़रमाए।(3)

﴿وَ اِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ : और क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे अज्र पूरे पूरे दिये जाएंगे।﴾ इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे अच्छे बुरे आ'माल की जज़ा क़ियामत के दिन तुम्हें पूरी पूरी दी जाएगी, तो उस दिन जिसे जहन्नम की आग से बचा लिया गया और उस से नजात दे कर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया उसी ने ह़क़ीक़ी काम्याबी ह़ासिल की।(4)

याद रहे कि बुरे आ'माल की वज्ह से दुन्या में जो अ़ज़ाब आता है या मरने के बा'द क़ब्र में जो अ़ज़ाब होता है, यूंही नेक आ'माल पर क़ब्र में जो राह़तें नसीब होती हैं येह आ'माल की पूरी जज़ा नहीं बल्कि आख़िरत में मिलने वाली जज़ा का एक नमूना है जब कि आ'माल की पूरी जज़ा क़ियामत के दिन ही मिलेगी।

ह़क़ीक़ी काम्याबी क्या है ?

इस आयत से मा'लूम हुवा कि क़ियामत में ह़क़ीक़ी काम्याबी येह है कि बन्दे को जहन्नम से नजात दे कर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए जब कि दुन्या में काम्याबी फ़ी नफ़्सिही काम्याबी तो है लेकिन अगर येह काम्याबी आख़िरत में नुक़्सान पहुंचाने वाली है तो ह़क़ीक़त में येह ख़सारा है। और ख़ुसूसन वोह लोग कि दुन्या की काम्याबी के लिये सब कुछ

1...... ترمذی، کتاب الجنائز، ١١-باب، ٢/٢٩٦، الحدیث: ٩٨٥.
2...... बहारे शरीअ़त, मौत आने का बयान, ह़िस्सए चहारुम, 1/806, 807 मुलख़्ख़सन
3...... अपने दिल में मौत की याद को मज़बूत़ करने के लिये रिसाला "मौत का तसव्वुर" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ करना मुफ़ीद है।
4...... روح البیان، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ١٨٥، ٢/١٣٨.

www.dawateislami.net

करें और आख़िरत की काम्याबी के लिये कुछ न करें वोह तो यक़ीनन नुक़्सान ही में हैं। लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह ऐसे आ'माल की त़रफ़ ज़ियादा तवज्जोह दे और उन के लिये ज़ियादा कोशिश करे जिन से उसे ह़क़ीक़ी काम्याबी नसीब हो सकती है और उन आ'माल से बचे जो उस की ह़क़ीक़ी काम्याबी की राह में रुकावट बन सकते हैं।

﴿وَمَا الۡحَیٰوةُ الدُّنۡیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الۡغُرُوۡرِ﴾ : **और दुन्या की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोके का सामान है।** या'नी दुन्या की लज़्ज़तें, इस की ख़्वाहिशात और रा'नाइयां सिर्फ़ धोके का सामान है क्यूं कि इन का ज़ाहिर तो बहुत ख़ूब सूरत नज़र आता है लेकिन इन का बातिन फ़साद से भरपूर है।

दुन्या की ज़िन्दगी धोके का सामान है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि दुन्या की ऐशो इशरत और ज़ेबो ज़ीनत अगर्चे कितनी ही ज़ियादा हो, येह धोके के सामान के इलावा कुछ नहीं, लिहाज़ा हर इन्सान को चाहिये कि वोह दुन्या की रंगीनियों से हरगिज़ धोका न खाए, ज़लील दुन्या को ह़ासिल करने के लिये अपनी क़ीमती तरीन आख़िरत को हरगिज़ तबाह न करे, इसी की तरग़ीब देते हुए **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اتَّقُوۡا رَبَّكُمۡ وَ اخۡشَوۡا یَوۡمًا لَّا یَجۡزِیۡ وَالِدٌ عَنۡ وَّلَدِهٖ ۫ وَ لَا مَوۡلُوۡدٌ هُوَ جَازٍ عَنۡ وَّالِدِهٖ شَیۡـًٔا ؕ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الۡحَیٰوةُ الدُّنۡیَا ٝ وَ لَا یَغُرَّنَّكُمۡ بِاللّٰهِ الۡغَرُوۡرُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपनी औलाद के काम न आएगा और न कोई बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़्अ देने वाला होगा। बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है तो दुन्या की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोका न दे और हरगिज़ बड़ा धोका देने वाला तुम्हें **अल्लाह** के ह़िल्म पर धोके में न डाले।

और ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स अपनी दुन्या से मह़ब्बत करता है वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचा लेता है और जो शख़्स अपनी आख़िरत से मह़ब्बत करता है तो वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है, लिहाज़ा तुम फ़ना हो जाने वाली (दुन्या) पर बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को तरजीह़ दो।"(2)

(1)......لقمان: ٣٣.

(2)......مسند امام احمد، مسند الكوفيين، حديث ابی موسى الاشعری، ١٦٥/٧، الحديث: ١٩٧١٧.

www.dawateislami.net

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बुज़ुर्ग के ह़वाले से लिखते हैं कि ''ऐ लोगो ! इस फ़ुरसत के वक़्त में नेक अ़मल कर लो और **अल्लाह** तआ़ला से डरते रहो। उम्मीदों पर फूले मत समाओ और अपनी मौत को न भूलो। दुन्या की त़रफ़ माइल न हो जाओ, बेशक येह धोकेबाज़ है और धोके के साथ बन ठन कर तुम्हारे सामने आती है और अपनी ख़्वाहिशात के ज़रीए़ तुम्हें फ़ितने में डाल देती है, दुन्या अपनी पैरवी करने वालों के लिये इस त़रह़ सजती संवरती है जैसे दुल्हन सजती है। दुन्या ने अपने कितने ही आ़शिक़ों को हलाक कर दिया और जिन्हों ने इस से इत़्मीनान ह़ासिल करना चाहा उन्हें ज़लीलो रुस्वा कर दिया, लिहाज़ा इसे ह़क़ीक़त की निगाह से देखो क्यूं कि येह मुसीबतों से भरपूर मक़ाम है, इस के ख़ालिक़ ने इस की मज़म्मत की, इस का नया पुराना हो जाता है और इसे चाहने वाला भी मर जाता है। **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ और इस से पहले नींद से आंखें खोल लो कि यूं ए'लान किया जाए : फ़ुलां शख़्स बीमार है और उस की बीमारी ने शिद्दत इख़्तियार कर ली है, क्या कोई दवा है ? या किसी डॉक्टर तक जाने की कोई सूरत है ? अब तुम्हारे लिये ह़कीमों (और डॉक्टरों) को बुलाया जाता है, लेकिन शिफ़ा की उम्मीद ख़त्म हो जाती है, फिर कहा जाता है : फ़ुलां ने वसिय्यत की और अपने माल का ह़िसाब किया है। फिर कहा जाता है : अब उस की ज़बान भारी हो गई, अब वोह अपने भाइयों से बात नहीं करता और पड़ोसियों को नहीं पहचानता, अब तुम्हारी पेशानी पर पसीना आ गया, रोने की आवाज़ें आने लगीं और तुम्हें मौत का यक़ीन हो गया, तुम्हारी पलकें बन्द होने से मौत का गुमान यक़ीन में बदल गया, ज़बान थरथरा रही है, तेरे बहन भाई रो रहे हैं, तुम्हें कहा जाता है कि येह तुम्हारा फ़ुलां बेटा है, येह फ़ुलां भाई है, लेकिन तू कलाम करने से रोक दिया गया है, पस तू बोल नहीं सकता, तुम्हारी ज़बान पर मोहर लग गई जिस की वज्ह से आवाज़ नहीं निकलती, फिर तुम्हें मौत आ गई और तेरी रूह़ आ'ज़ा से पूरी त़रह़ निकल गई, फिर उसे आस्मान की त़रफ़ ले जाया गया, उस वक़्त तुम्हारे भाई जम्अ़ होते हैं, फिर तुम्हारा कफ़न लाते हैं और तुम्हें ग़ुस्ल दे कर कफ़न पहनाते हैं अब तुम्हारी इयादत करने वाले ख़ामोश हो कर बैठ जाते हैं और तुझ से ह़सद करने वाले भी आराम पाते हैं, घर वाले तुम्हारे माल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते और तुम्हारे आ'माल गिरवी हो जाते हैं।''(1)

अल्लाह तआ़ला हमारे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाए और हमें दुन्या की ह़क़ीक़त को पहचानने, इस के धोके और फ़रेब कारी से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

(1)......احیاء علوم الدین، کتاب ذمّ الدنیا، بیان المواعظ فی ذم الدنیا وصفتها، ۳/۲۶۰، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

لَتُبْلَوُنَّ فِیْۤ اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ۫ وَ لَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَذًى كَثِیْرًاؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا
فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़्माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों और मुश्रिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो येह बड़ी हिम्मत का काम है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम्हारे मालों और तुम्हारी जानों के बारे में तुम्हें ज़रूर आज़्माया जाएगा और तुम ज़रूर उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुश्रिकों से बहुत सी तक्लीफ़ देह बातें सुनोगे और अगर तुम सब्र करते रहो और परहेज़ गार बनो तो येह बड़ी हिम्मत के कामों में से है।

﴾لَتُبْلَوُنَّ﴿ : **तुम ज़रूर आज़्माए जाओगे।** मुसल्मानों से ख़ित़ाब फ़रमाया गया कि तुम पर फ़राइज़ मुक़र्रर होंगे, तुम्हें हुक़ूक़ की अदाएगी करना पड़ेगी, ज़िन्दगी में कई मुआ़मलात में नुक़्सान उठाना पड़ेगा, जान व माल के कई मुआ़मलात में तक्लीफ़ें बरदाश्त करना होंगी, बीमारियां, परेशानियां और बहुत क़िस्म की मुसीबतें ज़िन्दगी में पेश आएंगी, येह सब तुम्हारे इम्तिह़ान के लिये होगा लिहाज़ा इस के लिये तय्यार रहना और **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और इस के सवाब पर नज़र रख कर इन तमाम इम्तिह़ानात में काम्याब हो जाना क्यूं कि इन इम्तिह़ानात के ज़रीए़ ही तो खरे और खोटे में फ़र्क़ किया जाता है, सच्चे और झूटे में इम्तियाज़ ज़ाहिर होता है। दीनी मुआ़मलात में मुश्रिकों, यहूदियों और ईसाइयों से तुम्हें बहुत तकालीफ़ पहुंचेंगी। इन मुआ़मलात में और ज़िन्दगी के दीगर तमाम मुआ़मलात में अगर तुम सब्र करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और परहेज़ गारी इख़्तियार किये रहो तो येह तुम्हारे लिये निहायत बेहतर रहेगा क्यूं कि येह बड़ी हिम्मत के काम हैं।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَیِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا

www.dawateislami.net

تَكْتُمُوْنَهٗ٘ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَ اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़ह्द लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले ज़लील दाम ह़ासिल किये तो कितनी बुरी ख़रीदारी है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब **अल्लाह** ने उन लोगों से अ़ह्द लिया जिन्हें किताब दी गई कि तुम ज़रूर इस किताब को लोगों से बयान करना और इसे छुपाना नहीं तो उन्हों ने उस अ़ह्द को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले थोड़ी सी क़ीमत ह़ासिल कर ली तो येह कितनी बुरी ख़रीदारी है।

﴿وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ﴾ **: और जब अल्लाह ने अ़ह्द लिया ।** **अल्लाह** तआ़ला ने तौरैत व इन्जील के उ़लमा पर वाजिब किया था कि इन दोनों किताबों में सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत पर दलालत करने वाले जो दलाइल हैं वोह लोगों को ख़ूब अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ कर के समझा दें और हरगिज़ न छुपाएं लेकिन उन्हों ने रिश्वतें ले कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उन औसाफ़ को छुपाया जो तौरैत व इन्जील में मज़्कूर थे।

इ़ल्मे दीन छुपाना गुनाह है

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि इ़ल्मे दीन को छुपाना गुनाह है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स से कुछ दरयाफ़्त किया गया जिस को वोह जानता है और उस ने उस को छुपाया रोज़े क़ियामत उसे आग की लगाम डाली जाएगी।''(1)

उ़लमा पर वाजिब है कि अपने इ़ल्म से फ़ाएदा पहुंचाएं और ह़क़ ज़ाहिर करें और किसी ग़रज़े फ़ासिद के लिये उस में से कुछ न छुपाएं।

(1)......ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی کتمان العلم، ٤/٢٩٥، الحدیث: ٢٦٥٨.

www.dawateislami.net

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हरगिज़ गुमान न करो उन लोगों को जो अपने आ'माल पर ख़ुश होते हैं और पसन्द करते हैं कि उन की ऐसे कामों पर ता'रीफ़ की जाए जो उन्हों ने किये ही नहीं, उन्हें हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न समझो और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है ।

﴿لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا﴾ **: हरगिज़ गुमान न करो उन लोगों को जो अपने आ'माल पर ख़ुश होते हैं ।** येह आयत उन यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जो लोगों को धोका देने और गुमराह करने पर ख़ुश होते और नादान और जाहिल होने के बा वुजूद येह पसन्द करते कि उन्हें आ़लिम कहा जाए ।(1)

ख़ुद पसन्दी और हुब्बे जाह की मज़म्मत

इस आयत में ख़ुद पसन्दी करने वालों के लिये वईद है और उन के लिये जो हुब्बे जाह या'नी इ़ज़्ज़त, ता'रीफ़, शोहरत के हुसूल की तमन्ना में मुब्तला हैं । जब किसी शख़्स के दिल में येह आरज़ू पैदा होने लगे कि लोग उस के शैदाई हों, हर ज़बान उस की ता'रीफ़ में तर हो, सब मेरे कमाल के मो'तरिफ़ हों, मुझे हर जगह इ़ज़्ज़त से नवाज़ा जाए, आ़लिम नहीं हों फिर भी अ़ल्लामा साहि़ब कहा जाए, मुल्क व क़ौम की कोई ख़िदमत नहीं की फिर भी मि'मारे क़ौम कहा जाए, नजात दिहन्दा समझा जाए, मोह़सिने क़ौम क़रार दिया जाए, मेरा तआ़रुफ़ बेहतरीन अल्क़ाबात के साथ हो, मुलाक़ात पुर तपाक अन्दाज़ में की जाए, सलाम झुक कर किया जाए तो उसे चाहिये कि अपने दिल पर ग़ौर कर ले कि कहीं वोह हुब्बे जाह का शिकार तो नहीं हो

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۱۸۸، ۱/ ۳۳٤.

www.dawateislami.net

चुका, अगर ऐसा हो तो इस आयत से सबक़ ह़ासिल करते हुए फ़ौरन से पेशतर उस से छुटकारे की कोशिश करे। याद रखिये ख़ुद पसन्दी और हुब्बे जाह के मरज़ में मुब्तला शख़्स उख़्रवी इन्आ़मात से मह़रूमी का शिकार होता है और दिल में मुनाफ़क़त की ज़ियादती, क़ल्बी नूरानिय्यत से मह़रूमी, दीन की ख़राबी में मुब्तला हो जाता है नीज़ बुराई से मन्अ़ करने और नेकी की दा'वत देने से मह़रूमी, ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना, उख़्रवी लज़्ज़त से मह़रूमी, क़ल्बी सुकून की बरबादी और दौलते इख़्लास से मह़रूमी जैसे नुक़्सानात का सामना कर सकता है, लिहाज़ा उसे चाहिये कि दुन्या की बे सबाती, ता'रीफ़ पसन्दी की मज़म्मत, मन्सबो मर्तबे के तअ़ल्लुक़ से उख़्रवी मुआ़मलात और बुज़ुर्गाने दीन के ह़ालात व अक़्वाल का ब कसरत मुत़ालआ़ करे ताकि इन मज़्मूम अमराज़ से नजात की कोई सूरत हो। तरग़ीब के लिये हम यहां ख़ुद पसन्दी और हुब्बे जाह से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीस और बुज़ुर्गाने दीन के अह़वाल व अक़्वाल ज़िक्र करते हैं, चुनान्चे

ह़ज़रते जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शोहरत त़लब करेगा (क़ियामत के दिन) उस के ऐ़बों की तश्हीर होगी और जो शख़्स लोगों को दिखाने के लिये अ़मल करेगा **अल्लाह** तआ़ला उसे उस का बदला देगा।''(1)

ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो वोह इतना नुक़्सान नहीं करते जितना माल और मर्तबे की ह़िर्स करने वाला अपने दीन के लिये नुक़्सान देह है।''(2)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर ख़ुद पसन्दी इन्सानी शक्ल में होती तो वोह सब से बद सूरत इन्सान होती।''(3)

ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ख़ुद पसन्दी 70 साल के अ़मल को बरबाद कर देती है।''(4)

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعة، ٤/٢٤٧، الحدیث: ٦٤٩٩.

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، ٤٣-باب، ٤/١٦٦، الحدیث: ٢٣٨٣.

3 ......الفردوس بماثور الخطاب، باب اللام، ٢/١٩٣، الحدیث: ٥٠٦٤.

4 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، حرف العین، ٢/٢٠٥، الجزء الثالث، الحدیث: ٧٦٦٦.

www.dawateislami.net

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद पसन्दी से बहुत ज़ियादा डरते थे और जब लोग आप की ता'रीफ़ करते तो आप दुआ़ मांगते : **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, मुझे इस से बेहतर बना दे जो कुछ येह कहते हैं और जो कुछ येह नहीं जानते मेरा वोह अ़मल बख़्श दे।

इसी त़रह़ जब लोग ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ करते तो वोह दुआ़ मांगते : **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, मैं उस चीज़ के शर से तेरी पनाह चाहता हूं जो कुछ येह कहते हैं और तुझ से उस अ़मल की बख़्शिश चाहता हूं जिस का इन्हें इ़ल्म नहीं।(1)

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मिम्बर पर खु़त्बा देते तो खुद पसन्दी से डरते हुए गुफ़्त्गू छोड़ कर उस अ़मल की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाते जिस में खुद पसन्दी न हो और बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता कि ख़त़ लिखते वक़्त खुद पसन्दी के ख़ौफ़ से फाड़ देते और कहते : **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, मैं नफ़्स के शर से तेरी पनाह चाहता हूं।(2)

हज़रते बिश्रे ह़ाफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ऐसा शख़्स नहीं देखा जो शोहरत का त़ालिब हो और उस का दीन बरबाद न हुवा हो और उस के ह़िस्से में रुस्वाई न आई हो।(3)

हज़रते मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने ज़माने के इ़बादत गुज़ारों से फ़रमाते थे : तुम पर अफ़्सोस है, तुम्हारे आ'माल कम होने के बा वुजूद उन में खुद पसन्दी दाख़िल हो गई और तुम से पहले लोग अपने आ'माल की कसरत के बा वुजूद उन पर तकब्बुर नहीं करते थे। **अल्लाह** की क़सम ! पहले लोगों की इ़बादत को देखा जाए तो (उस के मुक़ाबले में) तुम मह़ज़ खेलने वाले हो।(4)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۸۹﴾ ع

رکوع ۱۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

1 ......تنبیہ المغترین، الباب الرابع فی جملۃ اخری من الاخلاق، ومن اخلاقھم عدم العجب ... الخ، ص ٢٤١-٢٤٢.
2 ......تنبیہ المغترین، الباب الرابع فی جملۃ اخری من الاخلاق، ومن اخلاقھم عدم العجب ... الخ، ص ٢٣٩-٢٤٠.
3 ......کیمیائے سعادت، رکن سوم، اصل ہفتم، اندر علاج دوستی جاہ وحشمت، ٢/٦٥٩.
4 ......تنبیہ المغترین، الباب الرابع فی جملۃ اخری من الاخلاق، ومن اخلاقھم عدم العجب ... الخ، ص ٢٤٢.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** ही के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाही है और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

﴿وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ﴾ : और अल्लाह ही के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाही है। इस आयत में उन गुस्ताख़ों का रद किया गया है जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़क़ीर है। उन के रद में फ़रमाया गया कि जो ज़मीन व आस्मान के दाएरे में आने वाली हर चीज़ का मालिक है उस की त़रफ़ फ़क़्र की निस्बत किस त़रह़ की जा सकती है।(1)

अल्लाह तआ़ला की शान

यहां हम **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मतो शान से मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे क़ुदसी ज़िक्र करते हैं जिस से उन गुस्ताख़ों की जहालत और **अल्लाह** तआ़ला की शान मजीद ज़ाहिर होती है, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दो ! मैं ने अपने ऊपर ज़ुल्म को ह़राम किया है और मैं ने तुम्हारे दरमियान भी ज़ुल्म को ह़राम कर दिया लिहाज़ा तुम एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो। ऐ मेरे बन्दो ! जिसे मैं हिदायत दूं उस के इ़लावा तुम सब गुमराह हो, इस लिये तुम मुझ से हिदायत त़लब करो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा। ऐ मेरे बन्दो ! जिसे मैं खिलाऊं उस के सिवा तुम सब भूके हो, तो तुम मुझ से खाना त़लब करो मैं तुम्हें खिलाऊंगा। ऐ मेरे बन्दो ! जिसे मैं लिबास पहनाऊं उस के इ़लावा तुम सब बे लिबास हो लिहाज़ा तुम मुझ से लिबास मांगो मैं तुम्हें लिबास पहनाऊंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब रात दिन गुनाह करते हो और मैं गुनाह बख़्शता हूं, तुम मुझ से बख़्शिश त़लब करो मैं तुम्हें बख़्श दूंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम किसी नुक़्सान के मालिक नहीं हो कि मुझे नुक़्सान पहुंचा सको और तुम किसी नफ़्अ़ के मालिक नहीं हो कि मुझे नफ़्अ़ पहुंचा सको। ऐ मेरे बन्दो ! तुम्हारे पहले और आख़िरी, तुम्हारे इन्सान और जिन्न तुम में से सब से ज़ियादा मुत्तक़ी शख़्स की त़रह़ हो जाएं तो मेरे मुल्क में कोई इज़ाफ़ा नहीं कर सकते और अगर तुम्हारे पहले और आख़िरी, तुम्हारे इन्सान और जिन्न तुम में सब से ज़ियादा बदकार शख़्स की त़रह़ हो जाएं तो मेरे मुल्क से कोई चीज़

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآیۃ: ۱۸۹، ۱/۳۳۵.

www.dawateislami.net

कम नहीं कर सकते और ऐ मेरे बन्दो ! तुम्हारे पहले और आखि़री, तुम्हारे इन्सान और जिन्न किसी एक जगह खड़े हो कर मुझ से सुवाल करें और मैं हर इन्सान का सुवाल पूरा कर दूं तो जो कुछ मेरे पास है उस से सिर्फ़ इतना कम होगा जिस त़रह़ सूई को समुन्दर में डाल कर (निकालने से) उस में कमी होती है। ऐ मेरे बन्दो ! येह तुम्हारे आ'माल हैं जिन्हें मैं तुम्हारे लिये जम्अ़ कर रहा हूं, फिर मैं तुम्हें इन की पूरी पूरी जज़ा दूंगा तो जो शख़्स ख़ैर को पाए वोह **अल्लाह** की ह़म्द करे और जिस को ख़ैर के सिवा कोई चीज़ (जैसे आफ़त या मुसीबत) पहुंचे वोह अपने नफ़्स के सिवा और किसी को मलामत न करे।''(1)

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अ़क़्ल मन्दों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम तब्दीली में अ़क़्ल मन्दों के लिये निशानियां हैं।

﴿لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ : **अ़क़्ल मन्दों के लिये निशानियां हैं।**﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, मैं ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर रात में ठहरा और उस दिन सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन के हां आराम फ़रमा थे, जब रात का तिहाई हि़स्सा गुज़रा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुए फिर आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर इन आयाते मुबारका की तिलावत फ़रमाई।(2)

एक रिवायत में है कि तिलावत के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''उस पर अफ़्सोस है जो येह आयत पढ़े और इस में ग़ौर न करे।''(3)

1 ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تحریم الظلم، ص١٣٩٣، الحدیث: ٥٥(٢٥٧٧).

2 ......بخاری، کتاب الادب، باب رفع البصر الی السماء، ٤/١٥٩، الحدیث: ٦٢١٥.

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب التوبة، ٢/٨، الحدیث: ٦١٩.

www.dawateislami.net

साइन्सी उ़लूम ह़ासिल करना कब बाइसे सवाब है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि इल्मे जुग़राफ़िया और साइन्स ह़ासिल करना भी सवाब है जब कि अच्छी निय्यत हो जैसे इस्लाम और मुसल्मानों की ख़िदमत या **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत का इल्म ह़ासिल करने के लिये, लेकिन येह शर्त़ है कि इस्लामी अ़क़ाइद के ख़िलाफ़ न हो। इस आयते मुबारका में आस्मान व ज़मीन की तख़्लीक़ में क़ुदरते इलाही की निशानियों का फ़रमाया गया है लिहाज़ा इसी के पेशे नज़र इस तफ़क्कुर की एक झलक आप के सामने पेश करते हैं : इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "क़ुदरते इलाही की छटी निशानी आस्मानों, सितारों की मम्लकत और इन के अ़जाइब में है, क्यूं कि जो कुछ ज़मीन के अन्दर और रूए ज़मीन पर है वोह सब कुछ इस के मुक़ाबले में कम है। आस्मान और सितारों के अ़जाइब में तफ़क्कुर करने के लिये क़ुरआने पाक में तम्बीह फ़रमाई गई है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया :

وَ جَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّ هُمْ عَنْ اٰیٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने आस्मान को एक मह़फ़ूज़ छत बनाया और वोह लोग उस की निशानियों से मुंह फेरे हुए हैं।

दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश आदमियों की पैदाइश से बहुत बड़ी है लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

तो तुम्हें हुक्म दिया गया है कि ज़मीन व आस्मान की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र करो। आस्मान की नीलाहट और सितारों की टिमटिमाहट को देख लेना ग़ौर नहीं कि येह तो जानवर भी कर लेते हैं बल्कि मक़ामे अफ़्सोस तो येह है कि तू अपने अ़जाइब और अपनी ज़ात को जो तेरे पास हैं और वोह ज़मीन व आस्मान के अ़जाइब की ब निस्बत एक ज़र्रा भी नहीं जिस को तू पहचान सकता तो फिर ज़मीन व आस्मान के अ़जाइब को कैसे पहचान सकेगा। तुझे ब तदरीज मा'रिफ़त के दरजात पर तरक़्क़ी करनी चाहिये। तुझे पहले अपनी ज़ात को पहचानना चाहिये, फिर ज़मीन और इस की तमाम अश्या का इरफ़ान ह़ासिल करना चाहिये, फिर हवा, बादल वग़ैरा के अ़जाइब की पहचान करनी चाहिये, फिर आस्मान और सितारों की मा'रिफ़त

1 ......انبیاء:٣٢.
2 ......مومن:٥٧.

www.dawateislami.net

हासिल करनी चाहिये, फिर कुरसी और अर्श को पहचानना चाहिये, फिर आलमे अज्साम से निकल कर आलमे अरवाह की सैर करनी चाहिये, फिर फ़िरिश्तों, जिन्नों और शैतानों को जानना चाहिये, फिर फ़िरिश्तों के दरजात और मक़ामात का इरफ़ान हासिल करना चाहिये, आस्मान और सितारों की गर्दिश, इन की हरकत और इन के मशारिक़ व मग़ारिब को देखना चाहिये कि इन की हक़ीक़त क्या है। सितारों की कसरत पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये। इन्हें कोई भी शुमार नहीं कर सकता, इन में हर सितारे का रंग मुख़्तलिफ़ है, कुछ छोटे हैं और कुछ बड़े हैं। फिर इन में से हर एक की शक्ल मुख़्तलिफ़ है मसलन कुछ बैल की शक्ल के हैं और कुछ बिच्छू की शक्ल के। फिर इन्सान इन की मुख़्तलिफ़ हरकात पर ग़ौर करे, कई एक माह में सारे आस्मान को तै कर जाते हैं। कुछ साल भर लगाते हैं, कई उन्हें तै करने में बारह साल लगाते हैं, कई सितारे तीस सालों में सारे आस्मानों की गर्दिश पूरी करते हैं, अक्सर सितारे 30,000 साल में सारे आस्मानों की मसाहत तै करते हैं। जब तू ने ज़मीन के कुछ अजाइबात को जान लिया तो येह भी समझ ले कि अजाइबात का फ़र्क़ हर एक चीज़ की शक्ल के इख़्तिलाफ़ के मुताबिक़ होता है, क्यूं कि ज़मीन अगर्चे इतनी वसीअ है कि कोई इस की हद को नहीं छू सकता मगर सूरज ज़मीन से बड़ा है। इस से मा'लूम हो जाना चाहिये कि आफ़्ताब कितना दूर है जो इतना छोटा नज़र आता है। येह भी मा'लूम हुवा कि वोह कितनी तेज़ी से हरकत करता है कि आधी साअत में आफ़्ताब का तमाम घेरा ज़मीन से निकलता है...... यूंही आस्मान पर एक सितारा है जो ज़मीन से सो गुना बड़ा है। वोह बुलन्दी की वज्ह से छोटा नज़र आता है, एक सितारा अगर इतना बड़ा है तो सारे आस्मान का अन्दाज़ा लगाएं कि वोह कितना बड़ा होगा। इन सब की अज़मतो बुज़ुर्गी के बा वुजूद तेरी निगाहों में छोटा कर दिया गया ताकि तू इस से मालिके हक़ीक़ी की अज़मतो फ़ज़ीलत से आगाही हासिल कर सके।''(1)

اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًاۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ(۱۹۱)

(1)...... کیمیائے سعادت، رکن چہارم، اصل ہفتم، ۲/۹۱۷-۹۱۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं ऐ रब हमारे तू ने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तो हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो खड़े और बैठे और पहलूओं के बल लैटे हुए **अल्लाह** को याद करते हैं और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं। ऐ हमारे रब ! तू ने येह सब बेकार नहीं बनाया। तू पाक है, तो हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

﴾ اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ : **वोह जो अल्लाह को याद करते हैं।**﴿ यहां अ़क़्ल मन्द लोगों का बयान है कि वोह हैं कौन ? और उन के चन्द अहम काम बयान फ़रमाए गए हैं।

अ़क़्ल मन्द लोगों के अहम काम

(1)...... अ़क़्ल मन्द लोग खड़े, बैठे और बिस्तरों पर लैटे हर ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करते हैं। मौला करीम की याद हर वक़्त उन के दिलों पर छाई रहती है।

(2)...... अ़क़्ल मन्द लोग काएनात में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं, आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और काएनात के दीगर अ़जाइबात में ग़ौर करते हैं और उन का मक़्सद **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मतो क़ुदरत का ज़ियादा से ज़ियादा इ़ल्म ह़ासिल करना है।

(3)...... काएनात में ग़ौरो फ़िक्र के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत उन पर आशकार होती है और उन के दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत के सामने झुक जाते हैं और उन की ज़बानें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत के तराने पढ़ती हैं।

(4)...... **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दोज़ख़ के अ़ज़ाब से पनाह मांगते हैं।

मज़्कूरा बाला तमाम चीज़ें कामिलुल ईमान लोगों के औसाफ़ हैं, इन को ह़ासिल करने की कोशिश करनी चाहिये। हमारे अस्लाफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद में बहुत रग़्बत रखते थे, चुनान्चे ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते जुरजानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास सत्तू देखे जिस से वोह भूक मिटा लेते थे। मैं ने कहा : आप खाना और दूसरी अश्या क्यूं नहीं खाते ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने चबाने और येह सत्तू खा कर गुज़ारा करने में नव्वे तस्बीह़ात का फ़र्क़ पाया है, लिहाज़ा चालीस साल से मैं ने रोटी नहीं चबाई ताकि इन तस्बीह़ात का वक़्त ज़ाएअ़ न हो।

www.dawateislami.net

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मा'मूल येह था कि आप बाज़ार जाते और अपनी दुकान खोल कर उस के आगे पर्दा डाल देते और चार सो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के दुकान बन्द कर के घर वापस आ जाते ।(1)

काएनात में तफ़क्कुर की ज़रूरत

जिस त़रह़ किसी की अ़ज़्मत, क़ुदरत, ह़िक्मत और इ़ल्म की मा'रिफ़त ह़ासिल करने का एक अहम ज़रीआ़ उस की बनाई हुई चीज़ होती है कि उस में ग़ौरो फ़िक्र करने से येह सब चीज़ें आशकार हो जाती हैं इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मत, क़ुदरत, ह़िक्मत, वह़्दानिय्यत और उस के इ़ल्म की पहचान ह़ासिल करने का बहुत बड़ा ज़रीआ़ उस की पैदा की हुई येह काएनात है, इस में मौजूद तमाम चीज़ें अपने ख़ालिक़ की वह़्दानिय्यत पर दलालत करने वाली और उस के जलाल व किब्रियाई की मुज़्हिर हैं और इन में तफ़क्कुर और तदब्बुर करने से ख़ालिक़े काएनात की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है येही वज्ह है कि क़ुरआने मजीद में ब कसरत मक़ामात पर इस काएनात में मौजूद मुख़्तलिफ़ चीज़ों जैसे इन्सानों की तख़्लीक़, ज़मीन व आस्मान की बनावट, ज़मीन की पैदावार, हवा और बारिश, समुन्दर में किश्तियों की रवानी, ज़बानों और रंगों का इख़्तिलाफ़ वग़ैरा बे शुमार अश्या में ग़ौरो फ़िक्र करने की दा'वत और तरग़ीब दी गई ताकि इन्सान इन में ग़ौरो फ़िक्र के ज़रीए़ अपने ह़क़ीक़ी रब عَزَّوَجَلَّ को पहचाने, सिर्फ़ उसी की इ़बादत बजा लाए और उस के तमाम अह़काम पर अ़मल करे ।

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''आस्मान अपने सितारों, सूरज, चांद, इन की ह़रकत और तुलूअ़ व ग़ुरूब में इन की गर्दिश के साथ देखा जाता है। ज़मीन का मुशाहदा इस के पहाड़ों, नहरों, दरियाओं, ह़ैवानात व नबातात के ज़रीए़ होता है और जो आस्मान और ज़मीन के दरमियान हैं जैसे बादल, बारिश, बर्फ़, गरज चमक, टूटने वाले सितारे और तेज़ हवाएं । येह वोह अज्नास हैं जो आस्मानों, ज़मीनों और इन के दरमियान देखी जाती हैं, फिर इन में से हर जिन्स की कई अन्वाअ़ हैं, हर नौअ़ की कई अक़्साम हैं, हर क़िस्म की कई शाख़ें हैं और सिफ़ात, हैअत और ज़ाहिरी व बात़िनी मआ़नी के इख़्तिलाफ़ की वज्ह से इस की तक़्सीम का सिल्सिला कहीं रुकता नहीं । ज़मीन व आस्मान के जमादात, नबातात, ह़ैवानात, फ़लक और सितारों में से एक ज़र्रा भी **अल्लाह** तआ़ला के ह़रकत दिये

1 ......مکاشفة القلوب، الباب الحادی عشر فی طاعة اللّٰه ومحبة رسوله صلی اللّٰه علیه وسلم، ص٣٨.

www.dawateislami.net

बिग़ैर ह़रकत नहीं कर सकता और इन की ह़रकत में एक ह़िक्मत हो या दो, दस हों या हज़ार, येह सब **अल्लाह** तआ़ला की वह़्दानिय्यत की गवाही देती हैं और उस के जलाल व किब्रियाई पर दलालत करती हैं और येही **अल्लाह** तआ़ला की वह़्दानिय्यत पर दलालत करने वाली निशानियां और अ़लामात हैं।''(1)

फ़ी ज़माना मुसल्मान **अल्लाह** तआ़ला की बनाई हुई इस काएनात में ग़ौरो फ़िक्र करने और इस के ज़रीए़ अपने रब तआ़ला के कमालो जमाल और जलाल की मा'रिफ़त ह़ासिल करने और उस के अह़्काम की बजा आवरी करने से इन्तिहाई ग़फ़्लत का शिकार हैं और इन के इ़ल्म की ह़द सिर्फ़ येह रह गई है जब भूक लगी तो खाना खा लिया, जब प्यास लगी तो पानी पी लिया, जब कामकाज से थक गए तो सो कर आराम कर लिया, जब शह्वत ने बेताब किया तो ह़लाल या ह़राम ज़रीए़ से इस की बेताबी को दूर कर लिया और जब किसी पर ग़ुस्सा आया तो उस से झगड़ा कर के ग़ुस्से को ठन्डा कर लिया अल ग़रज़ हर कोई अपने तन की आसानी में मस्त नज़र आ रहा है।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''अन्धा वोही है जो **अल्लाह** तआ़ला की तमाम सन्अ़तों को देखे लेकिन उन्हें पैदा करने वाले ख़ालिक़ की अ़ज़मत से मदहोश न हो और उस के जलालो जमाल पर आ़शिक़ न हो। ऐसा बे अ़क़्ल इन्सान हैवानों की त़रह़ है जो फ़ित़रत के अ़जाइबात और अपने जिस्म में ग़ौरो फ़िक्र न करे, **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा कर्दा अ़क़्ल जो तमाम ने'मतों से बढ़ कर है उसे ज़ाएअ़ कर दे और इस से ज़ियादा इ़ल्म न रखे कि जब भूक लगे तो खाना खा लिया, किसी पर ग़ुस्सा आए तो झगड़ा कर लिया।''(2)

अल्लाह तआ़ला मुसल्मानों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۚ﴿۱۹۳﴾

1 ......احياء علوم الدين، كتاب التفكر، بيان كيفية التفكر فى خلق اللّٰه تعالى، ٥/١٧٥.

2 ......كيميائے سعادت، ركن چهارم، اصل هفتم، پيدا كردن تفكر در عجايب خلق خداى تعالى، ٢/٩١٠.

www.dawateislami.net

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدۡتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخۡزِنَا يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخۡلِفُ الۡمِيۡعَادَ ﴿١٩٤﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तू ने रुस्वाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ रब हमारे हम ने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए ऐ रब हमारे तो हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां मह्व फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर। ऐ रब हमारे और हमें दे वोह जिस का तू ने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हमारे रब ! बेशक जिसे तू दोज़ख़ में दाख़िल करेगा उसे तू ने ज़रूर रुस्वा कर दिया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं है। ऐ हमारे रब ! बेशक हम ने एक निदा देने वाले को ईमान की निदा (यूं) देते हुए सुना कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए पस ऐ हमारे रब ! तो हमारे गुनाह बख़्श दे और हम से हमारी बुराइयां मिटा दे और हमें नेक लोगों के गुरोह में मौत अ़ता फ़रमा। ऐ हमारे रब ! और हमें वोह सब अ़ता फ़रमा जिस का तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वा'दा फ़रमाया है और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न करना। बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

﴿**رَبَّنَا : ऐ हमारे रब।**﴾ رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هٰذَا بَاطِلًا से ले कर اِنَّكَ لَا تُخۡلِفُ الۡمِيۡعَادَ तक बहुत प्यारी दुआ़ है। इसे अपने मा'मूलात में शामिल कर लेना चाहिये।

﴿**رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعۡنَا مُنَادِيًا : ऐ हमारे रब ! बेशक हम ने एक निदा देने वाले को सुना।**﴾ इस मुनादी से मुराद सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन की शान में "دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذۡنِهٖ" वारिद हुवा है या इस से क़ुरआने करीम मुराद है।

﴿**وَتَوَفَّنَا مَعَ الۡاَبۡرَارِ : और हमें नेक लोगों के गुरोह में मौत अ़ता फ़रमा।**﴾ यहां **अल्लाह** तआ़ला ने सिखाया है कि दुआ़ करो कि मौत भी नेक लोगों के साथ हो या'नी इन की फ़रमां

www.dawateislami.net

बरदारी करते हुए मौत आए और इन की मइय्यत नसीब हो जाए।

नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार करने की तरग़ीब

याद रहे कि नेक लोगों की सोह़बत बहुत अ़ज़ीम चीज़ है। रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया :

كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सच्चों के साथ हो जाओ।

और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم को सोह़बत ने ही अ़ज़ीम तरीन मर्तबे पर फ़ाइज़ किया। ज़िन्दगी में नेक लोगों का साथ तो ने'मत है ही, मरने के बा'द भी नेकों का साथ **अल्लाह** तआ़ला की बहुत बड़ी ने'मत है चुनान्चे पसन्दीदा बन्दे को मौत के वक़्त फ़रमाया जाता है :

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِیْ جَنَّتِیْ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ इत़्मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ इस ह़ाल में वापस आ कि तू उस से राज़ी हो वोह तुझ से राज़ी हो। फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

देखें, फ़ौत होने वाली रूह़ से कहा जाता है कि मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो जा। लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह अपनी ज़िन्दगी में नेक लोगों के साथ रहे और उन्ही के गुरौह में मौत मिलने की दुआ़ करे ताकि उन के सदक़े जन्नत की आ'ला तरीन ने'मतों से फ़ैज़्याब हो और मौत के बा'द नेक लोगों के क़ुर्ब में दफ़्न होने की वसिय्यत करे। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने मुर्दों को नेक लोगों के दरमियान दफ़्न करो क्यूं कि मय्यित बुरे पड़ोसी से इसी त़रह़ अज़िय्यत पाती है जिस त़रह़ ज़िन्दा इन्सान बुरे पड़ोसी से अज़िय्यत पाता है।"(3)

1 ......توبہ:۱۱۹.   2 ......فجر:۲۷-۳۰.

3 ......كنز العمال، كتاب الموت، قسم الاقوال، الفصل السادس، ٢٥٤/٨، الجزء الخامس عشر، الحديث: ٤٢٣٦٤.

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रत मियां साह़िब क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّهٗ को फ़रमाते सुना : एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा। देखा कि गुलाब की दो शाख़ें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो फूल उस के नथनों पर रखे हैं। उस के अ़ज़ीज़ों ने इस ख़याल से कि यहां क़ब्र पानी के सदमे से खुल गई, दूसरी जगह क़ब्र खोद कर उस में रखें, अब जो देखें तो दो अज़्दहे उस के बदन से लिपटे अपने फनों से उस का मुंह भमोड़ रहे हैं, ह़ैरान हुए। किसी साह़िबे दिल से येह वाक़िआ़ बयान किया, उन्हों ने फ़रमाया : वहां भी येह अज़्दहा ही थे मगर एक वलिय्युल्लाह के मज़ार का क़ुर्ब था उस की बरकत से वोह अ़ज़ाब रह़मत हो गया था, वोह अज़्दहे दरख़्ते गुल की शक्ल हो गए थे और उन के फन गुलाब के फूल। इस की ख़ैरियत चाहो तो वहीं ले जा कर दफ़्न करो। वहीं ले जा कर रखा फिर वोही दरख़्ते गुल थे और वोही गुलाब के फूल।[1]

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَاۤ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ
وَ اُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ
عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन की दुआ़ सुन ली उन के रब ने कि मैं तुम में काम वाले की मेह़नत अकारत नहीं करता मर्द हो या औ़रत तुम आपस में एक हो तो वोह जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां **अल्लाह** के पास का सवाब और **अल्लाह** ही के पास अच्छा सवाब है।

1...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए दुवुम, स. 270

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन के रब ने उन की दुआ क़बूल फ़रमा ली कि मैं तुम में से अ़मल करने वालों के अ़मल को ज़ाएअ़ नहीं करूंगा वोह मर्द हो या औ़रत। तुम आपस में एक ही हो, पस जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में उन्हें सताया गया और उन्हों ने जिहाद किया और क़त्ल कर दिये गए तो मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उन से मिटा दूंगा और ज़रूर उन्हें ऐसे बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं (येह) **अल्लाह** की बारगाह से अज्र है और **अल्लाह** ही के पास अच्छा सवाब है।

﴿فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ : **तो उन के रब ने उन की दुआ क़बूल फ़रमा ली।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन की दुआ क़बूल फ़रमा ली और उन्हें वोह अ़ता कर दिया जो उन्हों ने मांगा और उन से फ़रमाया कि ऐ ईमान वालों ! मैं तुम में से किसी मर्द या औ़रत के अ़मल को ज़ाएअ़ नहीं करूंगा बल्कि उस अ़मल का सवाब अ़ता फ़रमाऊंगा।(1)

दुआ क़बूल होने के लिये एक अ़मल

यहां फ़रमाया गया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन की दुआ क़बूल फ़रमा ली। इस के बारे में उ़लमाए किराम ने फ़रमाया है कि यहां दुआ में पांच बार "رَبَّنَا" आया है और इस के बा'द दुआ की क़बूलिय्यत की बात हो रही है, तो अगर दुआ में पांच मरतबा "يَارَبَّنَا" कह दिया जाए तो क़बूलिय्यते दुआ की उम्मीद है।

﴿بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ : **तुम आपस में एक ही हो।**﴾ इस का एक मा'ना येह है कि तुम सब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की औलाद ही हो। दूसरा मा'ना येह है कि इत़ाअ़त पर सवाब मिलने और ना फ़रमानी पर सज़ा मिलने में तुम सब एक ही हो।(2)

﴿فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا : **पस जिन्हों ने हिजरत की।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि वोह लोग जिन्हों ने मेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत के लिये अपने वत़नों से हिजरत की और वोह मुश्रिकों की त़रफ़ से पहुंचने वाली अज़िय्यतों के सबब अपने उन घरों से निकलने पर मजबूर हो गए जहां वोह पले बढ़े थे और मुझ पर ईमान लाने और मेरी वह़दानिय्यत का इक़रार करने की वज्ह से उन्हें मुश्रिकों की त़रफ़ से सताया गया और उन्हों ने मेरी राह में काफ़िरों के साथ जिहाद किया

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٩٥، ١/٣٣٨.
2 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٩٥، ١/٣٣٨.

www.dawateislami.net

और शहीद कर दिये गए तो मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उन से मिटा दूंगा और ज़रूर उन्हें ऐसे बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं। येह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह से उन के लिये अज्र है और **अल्लाह** तआ़ला ही के पास अच्छा सवाब है।(1)

हिजरत और जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस

इस आयत में हिजरत और जिहाद के सवाब का बयान हुवा इस मुनासबत से हम यहां हिजरत और जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस ज़िक्र करते हैं, चुनान्चे

ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की, तो जिस की हिजरत **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हो तो उस की हिजरत **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ ही है और जिस की हिजरत दुन्या ह़ासिल करने या किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये हो तो उस की हिजरत उसी चीज़ की त़रफ़ है जिस की जानिब उस ने हिजरत की।"(2)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे राहे ख़ुदा में कोई ज़ख़्म आए तो वोह क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस के ज़ख़्म से सुर्ख़ रंग का ख़ून बह रहा होगा और उस की ख़ुश्बू मुश्क जैसी होगी।"(3)

ह़ज़रते शद्दाद बिन हाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक आ'राबी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने सरे तस्लीम ख़म किया, फिर अ़र्ज़ की : मैं हिजरत कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहना चाहता हूं। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (उसे हिजरत की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और) अपने बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को उस (के रहन सहन वग़ैरा का इन्तिज़ाम करने) के बारे में कुछ हुक्म फ़रमाया। जब एक ग़ज़्वे में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चन्द क़ैदी बत़ौरे ग़नीमत ह़ासिल हुए तो आप

1 ......روح البيان، ال عمران، تحت الآية: ١٩٥، ٢/١٥١.
2 ......بخارى، كتاب الايمان، باب ما جاء انّ الاعمال بالنية والحسبة... الخ، ١/٣٤، الحديث: ٥٤.
3 ......بخارى، كتاب الذبائح والصيد... الخ، باب المسك، ٣/٥٦٦، الحديث: ٥٥٣٣.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन क़ैदियों को तक़्सीम फ़रमा दिया और उस आ'राबी का हिस्सा निकाल कर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के सिपुर्द कर दिया। वोह आ'राबी सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन के पीछे पहरा दिया करते थे (ताकि दुश्मन अचानक ह़म्ला न कर दे)। जब वोह (पहरे की जगह से) आया तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने उस का हिस्सा उसे दिया। उस ने अ़र्ज़ की : येह क्या है ? सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने फ़रमाया : ''येह तुम्हारा हिस्सा है, जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ता फ़रमाया है।'' वोह आ'राबी अपने हिस्से को ले कर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, येह क्या है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने येह तुम्हारा हिस्सा निकाला है।'' उस ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मैं ने माल के हुसूल के लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी नहीं की बल्कि मैं ने तो इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी की है ताकि मुझे यहां गले पर तीर लगे और मैं शहीद हो कर जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।'' हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम (अपनी बात में मुख़्लिस और) सच्चे हो तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी येह ख़्वाहिश ज़रूर पूरी फ़रमाएगा।'' इस के बा'द लोग कुछ देर के लिये ठहरे रहे, फिर दुश्मन के साथ जिहाद के लिये उठे तो (जिहाद के दौरान) कुछ आदमी उस आ'राबी को इस ह़ाल में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाए कि उसे वहीं तीर लगा हुवा था जहां तीर लगने का उस ने इशारा किया था। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या येह वोही शख़्स है ?'' अ़र्ज़ किया गया : जी हां। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''येह अपनी बात में मुख़्लिस था तो **अल्लाह** तआ़ला ने इस की ख़्वाहिश पूरी फ़रमा दी।'' हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (बरकत के लिये) उसे अपने जुब्बए मुबारका में कफ़न दिया, फिर उसे अपने सामने रखा और उस का जनाज़ा पढ़ाया। उस की नमाज़े जनाज़ा में जो दुआ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाई वोह येह थी :

''اَللّٰهُمَّ هٰذَا عَبْدُكَ خَرَجَ مُهَاجِرًا فِیْ سَبِيْلِكَ فَقُتِلَ شَهِيْدًا اَنَا شَهِيْدٌ عَلٰى ذٰلِكَ''

ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, येह तेरा वोही बन्दा है जिस ने तेरी राह में हिजरत की और शहीद हो गया और मैं इस चीज़ का गवाह हूं।(1)

1 ......نسائی، کتاب الجنائز، الصلاۃ علی الشهداء، ص ٣٣٠، الحدیث: ١٩٥٠.

www.dawateislami.net

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले काफ़िरों का शहरों में अहले गहले फिरना हरगिज़ तुझे धोका न दे। थोड़ा बरत्ना है फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछोना।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ मुख़ातब ! काफ़िरों का शहरों में चलना फिरना हरगिज़ तुझे धोका न दे। (येह तो ज़िन्दगी गुज़ारने का) थोड़ा सा सामान है फिर उन का ठिकाना जहन्नम होगा और वोह क्या ही बुरा ठिकाना है।

﴾لَا يَغُرَّنَّكَ﴿ **: तुझे हरगिज़ धोका न दे।** **शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों की एक जमाअ़त ने कहा कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन हैं लेकिन येह तो ऐ़शो आराम में हैं और हम तंगी और मशक़्क़त में मुब्तला हैं। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

और इन्हें बताया गया कुफ़्फ़ार का येह ऐ़शो आराम दुन्यवी ज़िन्दगी का थोड़ा सा सामान है जब कि उन का अन्जाम बहुत बुरा है। इस को यूं समझें कि किसी को कहा जाए भाई आप दस मिनट धूप में खड़े हो जाएं, इस के बा'द उसे हमेशा के लिय एयर कन्डीशन्ड बंगला दे दिया जाए और दूसरे शख़्स को दस मिनट साएदार दरख़्त के नीचे बिठाने के बा'द हमेशा के लिय तपते हुए सहरा में रखा जाए तो दोनों में फ़ाएदे में कौन रहा ? यक़ीनन पहले वाला। मुसल्मान की हालत पहले शख़्स की तरह बल्कि इस से भी बेहतर है और काफ़िरों की हालत दूसरे शख़्स से भी बदतर है।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾

الثلاثة

1 ……بيضاوى، ال عمران، تحت الآية: ١٩٦، ١٣٥/٢.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लेकिन वोह जो अपने रब से डरते हैं उन के लिये जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में रहें **अल्लाह** की त़रफ़ की मेहमानी और जो **अल्लाह** के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लेकिन वोह लोग जो अपने रब से डरते हैं उन के लिये जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे (येह) **अल्लाह** की त़रफ़ से मेहमान नवाज़ी का सामान है और जो **अल्लाह** के पास है वोह नेकों के लिये बेहतरीन चीज़ है।

﴿لَهُمْ جَنّٰتٌ : **उन के लिये जन्नतें हैं।**﴾ काफ़िरों की दुन्यावी, आ़रिज़ी और फ़ानी राह़तो आराम के ज़िक्र के बा'द मुसल्मानों के आख़िरत के दाइमी, अबदी राह़तो आराम या'नी जन्नत का बयान हो रहा है।

दुन्या की राह़तें और जन्नत की अबदी ने'मतें किस के लिये हैं ?

सह़ीह़ बुख़ारी और सह़ीह़ मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे रह़मत में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि सुल्त़ाने कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बोरिये पर आराम फ़रमा रहे हैं, सरे अक़्दस के नीचे चमड़े का तक्या है जिस में नारियल के रेशे भरे हुए हैं और जिस्मे मुबारक पर बोरिये के निशानात नक़्श हो गए हैं। येह ह़ाल देख कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रो पड़े। सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो अ़र्ज़ किया कि "**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, क़ैसरो किसरा तो ऐ़शो आराम में हों और आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हो कर इस ह़ालत में।" नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उन के लिये दुन्या हो और हमारे लिये आख़िरत।[(1)]

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं एक दिन सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ ले गए, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ऊंट के बालों से बुना मोटा लिबास पहने चक्की में आटा पीस रही थीं, जब नबियों के सुल्त़ान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उन पर नज़र पड़ी तो आंखों से सैले अश्क रवां हो

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب تبتغی مرضاۃ ازواجک... الخ، ۳/۳۵۹، الحدیث: ۴۹۱۳.

www.dawateislami.net

गया, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या की तंगी व सख़्ती का घूंट पी लो ताकि जन्नत की अबदी ने'मतें ह़ासिल हों।"(1)

ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा पानी त़लब फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शह्द का पियाला पेश किया गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पियाले को अपने हाथ पर रख कर फ़रमाया : "अगर मैं इसे पी लूं तो इस की मिठास चली जाएगी लेकिन इस का ह़िसाब (मेरे ज़िम्मे) बाक़ी रहेगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन मरतबा येह बात इर्शाद फ़रमाई, फिर वोह पियाला एक शख़्स को दे दिया और उस ने वोह शह्द पी लिया।(2)

ह़ज़रते इब्ने अबी मुलैका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने सामने खाना रखा हुवा था, इस दौरान एक ग़ुलाम ने आ कर अ़र्ज़ की : ह़ज़रते उ़त्बा बिन अबी फ़रक़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़े पर खड़े हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दी। जब ह़ज़रते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस खाने में से कुछ उन्हें दिया। ह़ज़रते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे खाया तो वोह ऐसा बद मज़ा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे निगल न सके। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, क्या आप को ह़वारी नामी खाने में रग़बत है (ताकि आप की बारगाह में वोह खाना पेश किया जाए)। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या वोह खाना हर मुसल्मान को मुयस्सर है ?" ह़ज़रते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ख़ुदा की क़सम ! नहीं। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ उ़त्बा ! तुम पर अफ़्सोस है, क्या तुम येह चाहते हो कि मैं दुन्यवी ज़िन्दगी में मज़ेदार खाना खाऊं और आसूदगी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारूं।"(3)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये वोह ने'मतें तय्यार कर रखी हैं कि जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल पर

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزھد، بیان تفضیل الزھد فیما ھو من ضروریات الحیاۃ، ۴/۲۸۷۔
2 ......اسد الغابہ، باب العین والمیم، عمر بن الخطاب، ۴/۱۶۷۔
3 ......اسد الغابہ، باب العین والمیم، عمر بن الخطاب، ۴/۱۶۸۔

www.dawateislami.net

उन का ख़त्रा गुज़रा।''(1)

हज़रते सहल बिन सा'द साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत की इतनी जगह जिस में कोड़ा रख सकें दुन्या और जो कुछ इस में है सब से बेहतर है।''(2)

وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो उन की त़रफ़ उतरा उन के दिल **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए **अल्लाह** की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते येह वोह हैं जिन का सवाब उन के रब के पास है और **अल्लाह** जल्द हि़साब करने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक कुछ अहले किताब ऐसे हैं जो **अल्लाह** पर और जो तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया गया उस पर और जो उन की त़रफ़ नाज़िल किया गया उस पर इस हाल में ईमान लाते हैं कि उन के दिल **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए हैं वोह **अल्लाह** की आयतों के बदले ज़लील क़ीमत नहीं लेते। येही वोह लोग हैं जिन का सवाब उन के रब के पास है और **अल्लाह** जल्द हि़साब करने वाला है।

﴾وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ﴿ **: और बेशक कुछ अहले किताब ।** हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत ह़बशा के बादशाह नजाशी के बारे में नाज़िल हुई, उन की वफ़ात के दिन सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया, चलो और अपने भाई की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो जिस ने दूसरे मुल्क में वफ़ात

1 ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ما جاء فی صفة الجنة وانّها مخلوقة، ۳۹۱/۲، الحدیث: ۳۲۴۴.

2 ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ما جاء فی صفة الجنة وانّها مخلوقة، ۳۹۲/۲، الحدیث: ۳۲۵۰.

www.dawateislami.net

पाई है। चुनान्चे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बक़ीअ़ शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और ह़बशा की सर ज़मीन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने की गई और ह़ज़रते नजाशी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का जनाज़ा सामने हो गया। उस पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार तक्बीरों के साथ नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उस के लिये इस्तिग़्फ़ार फ़रमाया। (سُبْحٰنَ الله ! क्या नज़र है और क्या शान है कि सर ज़मीने ह़बशा मदीनए मुनव्वरह में सामने पेश कर दी जाती है।) मुनाफ़िक़ीन ने इस पर ए'तिराज़ किया और कहा कि देखो, ह़बशा के नसरानी पर नमाज़ पढ़ते हैं जिस को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी देखा भी नहीं और वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन पर भी न था। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई।[1]

और उन की शान में फ़रमाया गया कि मुनाफ़िक़ जिन को ईसाई कह रहे हैं ह़क़ीक़त में वोह मुसल्मान हैं क्यूं कि कुछ अहले किताब ऐसे हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर और पिछली किताबों पर ईमान रखते हैं और इस के साथ हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप पर नाज़िल होने वाले क़ुरआन पर ईमान रखते हैं और उन की ह़ालत येह है कि उन के दिल आ़जिज़ी व इन्किसारी और तवाज़ोअ़ व इख़्लास के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर झुके हुए हैं और यहूदी सरदारों की त़रह़ वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयतें बेच कर ज़लील क़ीमत नहीं लेते बल्कि सच्चे दिल से ईमान रखते हैं। तो उन लोगों के लिये **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अज्रो सवाब का ख़ज़ाना है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا ۟ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरह़द पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और इस्लामी सरह़द की निगहबानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि तुम काम्याब हो जाओ।

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ١٩٩، ١/٣٣٩.

www.dawateislami.net

﴿اِصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا﴾ : **सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो ।** सब्र का मा'ना है नफ़्स को उस चीज़ से रोकना जो शरीअ़त और अ़क़्ल के तक़ाज़ों के मुताबिक़ न हो । और मुसाबरा का मा'ना है दूसरों की ईज़ा रसानियों पर सब्र करना । सब्र के तह़त इस की तमाम अक़्साम दाख़िल हैं जैसे तौह़ीद, अ़द्ल, नुबुव्वत और ह़श्रो नश्र की मा'रिफ़त ह़ासिल करने में नज़र व इस्तिद्लाल की मशक़्क़त बरदाश्त करने पर सब्र करना । वाजिबात और मुस्तह़ब्बात की अदाएगी की मशक़्क़त पर सब्र करना । मम्नूआ़त से बचने की मशक़्क़त पर सब्र करना । दुन्या की मुसीबतों और आफ़तों जैसे बीमारी, मोह़ताजी क़ह़त और ख़ौफ़ वग़ैरा पर सब्र करना और मुसाबरा में घर वालों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों की बद अख़्लाक़ी बरदाश्त करना और बुरा सुलूक करने वालों से बदला न लेना दाख़िल है । इसी त़रह़ नेकी का हुक्म देना, बुराई से मन्अ़ करना और कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद करना भी मुसाबरा में दाख़िल है ।(1)

﴿وَرَابِطُوْا﴾ : **और इस्लामी सरह़द की निगह़बानी करो ।** इस के दो मा'ना हो सकते हैं : **(1)** सरह़द पर अपने जिस्मों और घोड़ों को कुफ़्फ़ार से जिहाद के लिये तय्यार रखो । **(2) अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त पर कमर बस्ता रहो ।(2)

इस्लामी सरह़द की निगह़बानी करने के फ़ज़ाइल

इस्लामी मुल्क की सरह़द की ह़िफ़ाज़त के लिये वहां रुकने की बहुत फ़ज़ीलत है, चुनान्चे

ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द साइदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''राहे ख़ुदा में एक दिन सरह़द की निगह़बानी करना दुन्या व मा फ़ीहा से बेहतर है ।''(3)

ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक दिन और एक रात सरह़द की ह़िफ़ाज़त करना एक महीने के रोज़ों और क़ियाम से बेहतर है, ह़िफ़ाज़त करने वाला अगर मर गया तो उस के इस अ़मल का अज्र जारी रहेगा और वोह फ़ित्नए क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहेगा ।''(4)

---

1 ......خازن، ال عمران، تحت الآية: ۲۰۰، ۱/۳٤۰، تفسير كبير، ال عمران، تحت الآية: ۲۰۰، ۳/٤۷۳، ملتقطاً.
2 ......بيضاوى، ال عمران، تحت الآية: ۲۰۰، ۲/۱۳۷.
3 ......بخارى، كتاب الجهاد والسير، باب فضل رباط يوم فى سبيل اللّٰه، ۲/۲۷۹، الحديث: ۲۸۹۲.
4 ......مسلم، كتاب الامارة، باب فضل الرباط فى سبيل اللّٰه عزوجل، ص ۱۰۵۹، الحديث: ۱۶۳(۱۹۱۳).

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ النِّسَآء

सूरए निसाअ का तआरुफ़

मक़ामे नुज़ूल

सूरए निसाअ मदीनए मुनव्वरह में नाज़िल हुई है।[1]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस में **24** रुकूअ़ और **176** आयतें हैं।

"निसाअ" नाम रखे जाने की वज्ह

अ़रबी में औ़रतों को "निसाअ" कहते हैं और इस सूरत में ब कसरत वोह अह़काम बयान किये गए हैं जिन का तअ़ल्लुक़ औ़रतों के साथ है इस लिये इसे "सूरए निसाअ" कहते हैं।

सूरए निसाअ के फ़ज़ाइल

(1)...... सूरए निसाअ की एक आयते मुबारका के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "मुझे क़ुरआने मजीद पढ़ कर सुनाओ।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं आप को पढ़ कर सुनाऊं ह़ालां कि येह तो आप पर नाज़िल फ़रमाया गया है ! इर्शाद फ़रमाया : "हां (तुम पढ़ कर सुनाओ)।" चुनान्चे मैं ने सूरए निसाअ पढ़ी ह़त्ता कि जब मैं इस आयत पर पहुंचा :

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِیْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِیْدًا[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो कैसा ह़ाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और ऐ ह़बीब ! तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान बना कर लाएंगे।

तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बस करो, अब तुम्हारे लिये येही काफ़ी है।" मैं ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो देखा कि आप की

---

1 ......خازن، النساء، ۱/۳٤۰.
2 ......نساء: ٤۱.

www.dawateislami.net

मुबारक आंखों से आंसू रवां हैं।[1]

(2)...... हज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''सूरए बक़रह, सूरए निसाअ, सूरए माइदह, सूरए ह़ज्ज और सूरए नूर सीखो क्यूं कि इन सूरतों में फ़र्ज़ उ़लूम बयान किये गए हैं।''[2]

(3)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''जिस ने सूरए निसाअ पढ़ी तो वोह जान लेगा कि विरासत में कौन किस से मह़रूम होता है और कौन किस से मह़रूम नहीं होता।''[3]

(4)...... हज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''जिस ने सूरए बक़रह, सूरए आले इमरान और सूरए निसाअ पढ़ी तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़िक्मत वाले लोगों में से लिखा जाएगा।''[4]

सूरए निसाअ के मज़ामीन

इस सूरत का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में यतीम बच्चों और औ़रतों के हुक़ूक़ और इन से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम बयान किये गए हैं जैसे यतीम बच्चों के माल को अपने माल में मिला कर खा जाने को बड़ा गुनाह क़रार दिया गया। ना समझ यतीम बच्चों का माल उन के ह़वाले करने से मन्अ़ किया गया और जब वोह शादी के क़ाबिल और समझदार हो जाएं तो उन का माल उन के सिपुर्द कर देने का हुक्म दिया गया। यतीमों के माल नाह़क़ खा जाने पर वई़द बयान की गई। इसी त़रह़ औ़रतों का महर उन्हें देने का हुक्म दिया गया और महर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द और मसाइल बयान किये गए। मीरास के माल में औ़रतों के बा क़ाइ़दा ह़िस्से मुक़र्रर किये गए। उन औ़रतों का ज़िक्र किया गया जिन से नसब, रज़ाअ़त और मुसाहरत की वज्ह से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम है और जिन औ़रतों से किसी सबब की वज्ह से आ़रिज़ी त़ौर पर निकाह़ ह़राम है। एक से ज़ियादा औ़रतों के साथ शादी करने के अह़काम बयान किये गए और ना फ़रमान औ़रत की इस्लाह़ का त़रीक़ा ज़िक्र किया गया। इस के इ़लावा सूरए निसाअ में येह मज़ामीन बयान हुए हैं :

(1)...... वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, क़रीबी और दूर के पड़ोसियों, मुसाफ़िरों और लौंडी ग़ुलामों के साथ हुस्ने सुलूक और भलाई करने का हुक्म दिया गया।

1 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب قول المقریء للقاریء: حسبک، ۴۱۶/۳، الحدیث: ۵۰۵۰.
2 ......مستدرک، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ النور، ۱۵۸/۳، الحدیث: ۳۵۴۵.
3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفرائض، ما قالوا فی تعلیم الفرائض، ۳۲۴/۷، الحدیث: ۵.
4 ......شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان، فصل فی فضائل السور والآیات، ۴۶۸/۲، الحدیث: ۲۴۲۴.

www.dawateislami.net

(2)...... मीरास के अह्काम तफ़्सील के साथ बयान किये गए।

(3)...... किन लोगों की तौबा मक़्बूल है और किन की तौबा क़ुबूल नहीं की जाएगी।

(4)...... शौहर, बीवी के एक दूसरे पर हुक़ूक़ और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के रहनुमा उसूल बयान किये हैं।

(5)...... माल और ख़ून में मुसल्मान के इज्तिमाई मुआ़मलात के अह्काम बयान किये गए।

(6)...... कबीरा गुनाहों से बचने की फ़ज़ीलत बयान की गई, ह़सद से बचने का हुक्म दिया गया नीज़ तकब्बुर, बुख़्ल और रियाकारी की मज़म्मत भी बयान की गई।

(7)...... जिहाद के बारे में अह्कामात बयान किये गए।

(8)...... क़ातिल के बारे में अह्काम, हिजरत के बारे में अह्काम और नमाज़े ख़ौफ़ का त़रीक़ा बयान किया गया है।

(9)...... नेक आ'माल करने और गुनाहों से तौबा करने की तल्क़ीन की गई है।

(10)...... अख़्लाक़ी और मुल्की मुआ़मलात के उसूल और जंग के बा'ज़ अह्काम बयान किये गए हैं।

(11)...... मुनाफ़िक़ों, ईसाइयों और बत़ौरे ख़ास यहूदियों के ख़त़रात से मुसल्मानों को आगाह किया गया है।

(12)...... इस सूरत के आख़िर में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में ईसाइयों की गुमराहियों का ज़िक्र किया गया है।

सूरए आले इमरान के साथ मुनासबत

सूरए निसाअ की अपने से मा क़ब्ल सूरत "आले इमरान" के साथ कई त़रह़ से मुनासबत है, जैसे सूरए आले इमरान के आख़िर में मुसल्मानों को तक़्वा और परहेज़ गारी इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया था और सूरए निसाअ के इब्तिदा में तमाम लोगों को इस चीज़ का हुक्म दिया गया है। सूरए आले इमरान में ग़ज़्वए उहुद का वाक़िआ़ तफ़्सील के साथ बयान किया गया था और इस सूरत की आयत नम्बर 88 में भी ग़ज़्वए उहुद का ज़िक्र है। सूरए आले इमरान में ग़ज़्वए उहुद के बा'द होने वाले ग़ज़्वे ह़म्राउल असद का ज़िक्र है और इस सूरत की आयत नम्बर 104 में भी इस ग़ज़्वे की त़रफ़ इशारा किया गया है। दोनों सूरतों में यहूदियों और इसाइयों के ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में बात़िल नज़रिय्यात का रद किया गया है।[1]

1 ......تناسق الدرر، سورة النساء، ص٧٦-٧٧.

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है ।

يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ بَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِیْرًا وَّ نِسَآءً ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ①

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत मर्द व औ़रत फैला दिये और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो बेशक **अल्लाह** हर वक़्त तुम्हें देख रहा है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उस का जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से कसरत से मर्द व औ़रत फैला दिये और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर एक दूसरे से मांगते हो और रिश्तों (को तोड़ने से बचो ।) बेशक **अल्लाह** तुम पर निगहबान है ।

﴿ يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ : **ऐ लोगो ।**﴾ इस आयते मुबारका में तमाम बनी आदम को ख़ित़ाब किया गया है और सब को तक़्वा का हुक्म दिया है । काफ़िरों के लिये तक़्वा येह है कि वोह ईमान लाएं और आ'माले सालिह़ा करें और मुसल्मानों के लिये तक़्वा येह है कि ईमान पर साबित क़दम रहें और आ'माले सालिह़ा बजा लाएं । हर एक को उस के मुताबिक़ तक़्वे का हुक्म होगा । इस के बा'द यहां चन्द चीज़ें बयान फ़रमाईं :

(1)...... अल्लाह तआ़ला ने तमाम इन्सानों को एक जान या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पैदा किया ।

www.dawateislami.net

(2)...... ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वुजूद से उन का जोड़ा या'नी ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को पैदा किया ।

(3)...... इन्ही दोनों ह़ज़रात से ज़मीन में नस्ल दर नस्ल कसरत से मर्द व औ़रत का सिल्सिला जारी हुवा ।

(4)...... चूंकि नस्ले इन्सानी के फैलने से बाहम ज़ुल्म और ह़क़ तलफ़ी का सिल्सिला भी शुरूअ़ हुवा लिहाज़ा ख़ौफ़े ख़ुदा का हुक्म दिया गया ताकि ज़ुल्म से बचें और चूंकि ज़ुल्म की एक सूरत और बदतर सूरत रिश्तेदारों से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी है लिहाज़ा इस से बचने का हुक्म दिया ।

इन्सानों की इब्तिदा किस से हुई ?

मुसल्मानों का अ़क़ीदा है कि इन्सानों की इब्तिदा ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से हुई और इसी लिये आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अबुल बशर या'नी इन्सानों का बाप कहा जाता है। और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इन्सानियत की इब्तिदा होना बड़ी क़वी दलील से साबित है मसलन दुन्या की मर्दम शुमारी से पता चलता है कि आज से सो साल पहले दुन्या में इनसानों की ता'दाद आज से बहुत कम थी और उस से सो बरस पहले और भी कम तो इस त़रह़ माज़ी की त़रफ़ चलते चलते इस कमी की इन्तिहा एक ज़ात क़रार पाएगी और वोह ज़ात ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं या यूं कहिये कि क़बीलों की कसीर ता'दाद एक शख़्स पर जा कर ख़त्म हो जाती हैं मसलन सय्यिद दुन्या में करोड़ों पाए जाएंगे मगर उन की इन्तिहा रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक ज़ात पर होगी, यूंही बनी इसराईल कितने भी कसीर हों मगर इस तमाम कसरत का इख़्तिताम ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की एक ज़ात पर होगा। अब इसी त़रह़ और ऊपर को चलना शुरूअ़ करें तो इन्सान के तमाम कुम्बों क़बीलों की इन्तिहा एक ज़ात पर होगी जिस का नाम तमाम आस्मानी किताबों में आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है और येह तो मुम्किन नहीं है कि वोह एक शख़्स पैदाइश के मौजूद त़रीक़े से पैदा हुवा हो या'नी मां बाप से पैदा हुवा हो क्यूं कि अगर उस के लिये बाप फ़र्ज़ भी किया जाए तो मां कहां से आए और फिर जिसे बाप माना वोह ख़ुद कहां से आया ? लिहाज़ा ज़रूरी है कि उस की पैदाइश बिग़ैर मां बाप के हो और जब बिग़ैर मां बाप के पैदा हुवा तो बिल यक़ीन वोह इस त़रीक़े से हट कर पैदा हुवा और वोह त़रीक़ा क़ुरआन ने बताया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उसे मिट्टी से पैदा किया जो इन्सान की रिहाइश या'नी दुन्या का बुन्यादी जुज़ है। फिर येह भी ज़ाहिर है कि जब एक इन्सान यूं वुजूद

www.dawateislami.net

में आ गया तो दूसरा ऐसा वुजूद चाहिये जिस से नस्ले इन्सानी चल सके तो दूसरे को भी पैदा किया गया लेकिन दूसरे को पहले की त़रह़ मिट्टी से बिग़ैर मां बाप के पैदा करने की बजाए जो एक शख़्से इन्सानी मौजूद था उसी के वुजूद से पैदा फ़रमा दिया क्यूं कि एक शख़्स के पैदा होने से नौअ़ मौजूद हो चुकी थी चुनान्चे दूसरा वुजूद पहले वुजूद से कुछ कमतर और आ़म इन्सानी वुजूद से बुलन्द तर त़रीक़े से पैदा किया गया या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की एक बाईं पस्ली उन के आराम के दौरान निकाली और उन से उन की बीवी ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पैदा किया गया। चूंकि ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मर्द व औ़रत वाले बाहमी मिलाप से पैदा नहीं हुई इस लिये वोह औलाद नहीं हो सकतीं। ख़्वाब से बेदार हो कर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने पास ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देखा तो हम जिन्स की मह़ब्बत दिल में पैदा हुई। मुख़ात़ब कर के ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया तुम कौन हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : औ़रत। फ़रमाया : किस लिये पैदा की गई हो ? अ़र्ज़ किया : आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्कीन की ख़ात़िर, चुनान्चे ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन से मानूस हो गए।(1)

येह वोह मा'क़ूल और समझ में आने वाला त़रीक़ा है जिस से नस्ले इन्सानी की इब्तिदा का पता चलता है। बक़िय्या वोह जो कुछ लोगों ने बन्दरों वाला त़रीक़ा निकाला है कि इन्सान बन्दर से बना है तो येह परले दरजे की ना मा'क़ूल बात है। यहां हम सन्जीदगी के साथ चन्द सुवालात सामने रखते हैं। आप इन पर ग़ौर कर लें, ह़क़ीक़त आप के सामने आ जाएगी। सुवाल येह है कि अगर इन्सान बन्दर ही से बना है तो कई हज़ार सालों से कोई जदीद बन्दर इन्सान क्यूं न बन सका और आज सारी दुन्या पूरी कोशिश कर के किसी बन्दर को इन्सान क्यूं न बना सकी ? नीज़ बन्दरों से इन्सान बनने का सिल्सिला कब शुरूअ़ हुवा था ? किस ने येह बनते देखा था ? कौन इस का रावी है ? किस पुरानी किताब से येह बात मुत़ालए में आई है ? नीज़ येह सिल्सिला शुरूअ़ कब हुवा और कब से बन्दरों पर पाबन्दी लग गई कि जनाब ! आयिन्दा आप में कोई इन्सान बनने की जुरअत न करे। नीज़ बन्दर से इन्सान बना तो दुम का क्या बना था ? क्या इन्सान बनते ही दुम झड़ गई थी या कुछ अ़र्से बा'द काटी गई या घिसट घिसट कर ख़त्म हो गई और बहर ह़ाल जो कुछ भी हुवा, क्या इस बात का सुबूत है कि दुम वाले इन्सान पाए जाते थे। अल ग़रज़ बन्दरों वाली बात बन्दर ही कर सकता है। ह़ैरत है कि दुन्या भर में जिस बात का शोर मचाया हुवा है उस की कोई कल सीधी नहीं, उस की कोई कड़ी सलामत नहीं, उस की कोई तारीख़ नहीं। बस ख़याली मफ़रूज़े क़ाइम कर के अच्छे भले इन्सान को बन्दर से जा मिलाया।

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١، ١/٣٤٠.

www.dawateislami.net

﴿وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیۡ تَسَآءَلُوۡنَ بِهٖ وَالۡاَرۡحَامَ﴾ : **और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो ।** इर्शाद फ़रमाया कि उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो जिस के नाम से एक दूसरे से मांगते हो या'नी कहते हो कि **अल्लाह** के वासिते मुझे येह दो, वोह दो । नीज़ रिश्तेदारी तोड़ने के मुआमले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ।

रिश्तेदारी तोड़ने की मज़म्मत

कुरआने मजीद और अहादीसे मुबारका में रिश्तेदारी तोड़ने की शदीद मज़म्मत बयान की गई है, चुनान्चे **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِیۡنَ یَنۡقُضُوۡنَ عَہۡدَ اللّٰہِ مِنۡۢ بَعۡدِ مِیۡثَاقِہٖ وَ یَقۡطَعُوۡنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰہُ بِہٖۤ اَنۡ یُّوۡصَلَ وَ یُفۡسِدُوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ ۙ اُولٰٓئِکَ لَہُمُ اللَّعۡنَۃُ وَلَہُمۡ سُوۡٓءُ الدَّارِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो **अल्लाह** का अ़हद उसे पुख़्ता करने के बा'द तोड़ देते हैं और जिसे जोड़ने का **अल्लाह** ने हुक्म फ़रमाया है उसे काटते हैं और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन के लिये ला'नत ही है और उन के लिये बुरा घर है ।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस क़ौम में रिश्तेदारी तोड़ने वाला होता है उस पर रहमत नहीं उतरती ।"(2)

और हज़रते अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस गुनाह की सज़ा दुन्या में भी जल्द ही दे दी जाए और उस के लिये आख़िरत में भी अ़ज़ाब रहे वोह बग़ावत और क़त्ए़ रेहमी से बढ़ कर नहीं ।"(3)

लिहाज़ा हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह रिश्तेदारी तोड़ने से बचे और रिश्तेदारों के साथ तअ़ल्लुक़ात जोड़ कर रखने की भरपूर कोशिश करे ।

وَاٰتُوا الۡیَتٰمٰۤی اَمۡوَالَہُمۡ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الۡخَبِیۡثَ بِالطَّیِّبِ ۪ وَلَا تَاۡکُلُوۡۤا

1 ......رعد: ٢٥.

2 ......شعب الايمان، السادس والخمسون من شعب الايمان، ٢٢٣/٦، الحديث: ٧٩٦٢.

3 ......ترمذى، كتاب صفة القيامة، ٥٧-باب، ٢٢٩/٤، الحديث: ٢٥١٩.

www.dawateislami.net

اَمۡوَالَهُمۡ اِلٰۤى اَمۡوَالِكُمۡ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوۡبًا كَبِيۡرًا ۝۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यतीमों को उन के माल दो और सुथरे के बदले गन्दा न लो और उन के माल अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक येह बड़ा गुनाह है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यतीमों को उन के माल दे दो और पाकीज़ा माल के बदले गन्दा माल न लो और उन के मालों को अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक येह बड़ा गुनाह है।

﴾وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ : **और यतीमों को उन का माल दो।**﴿ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि एक शख़्स की निगरानी में उस के यतीम भतीजे का बहुत ज़ियादा माल था, जब वोह यतीम बालिग़ हुवा और उस ने अपना माल त़लब किया तो चचा ने देने से इन्कार कर दिया इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिसे सुन कर उस शख़्स ने यतीम का माल उस के ह़वाले कर दिया और कहा कि हम **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते हैं।(1)

आयत का मफ़्हूम येह है कि जब यतीम अपना माल त़लब करें तो उन का माल उन के ह़वाले कर दो जब कि दीगर शरई तक़ाज़ों को पूरा कर लिया है और अपने ह़लाल माल के बदले यतीम का माल न लो जो तुम्हारे लिये ह़राम है। जिस की सूरत येह है कि अपना घटिया माल यतीम को दे कर उस का उ़म्दा माल ले लो। येह तुम्हारा घटिया माल तुम्हारे लिये उ़म्दा है क्यूं कि येह तुम्हारे लिये ह़लाल है और यतीम का उ़म्दा माल तुम्हारे लिये घटिया और ख़बीस है क्यूं कि वोह तुम्हारे लिये ह़राम है। येह भी मा'लूम हुवा कि जब यतीम का माल अपने माल से मिला कर खाना ह़राम हुवा या'नी घटिया मुआ़वज़ा दे कर खाना भी ह़राम है तो बिग़ैर मुआ़वज़ा के खा लेना तो ब त़रीक़े औला ह़राम हुवा। हां शरीअ़त ने जहां उन का माल मिला कर इस्ति'माल की इजाज़त दी वोह जुदा है जिस का बयान सूरए बक़रह आयत 220 में है।

यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मसाइल

यतीम उस ना बालिग़ लड़के या लड़की को कहते हैं जिस का बाप फ़ौत हो जाए।

1 ......بیضاوی، النساء، تحت الآیۃ: ۲، ۲/۱٤۱.

www.dawateislami.net

आयते मुबारका को सामने रखते हुए यहां यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मसाइल बयान किये जाते हैं :

(1)...... यतीम को तोह़फ़ा दे सकते हैं मगर उस का तोह़फ़ा ले नहीं सकते।

(2)...... कोई शख़्स फ़ौत हो और उस के वुरसा में यतीम बच्चे भी हों तो उस तर्के से तीजा, चालीसवां, नियाज़, फ़ातिह़ा और ख़ैरात करना सब ह़राम है और लोगों का यतीमों के माल वाली उस नियाज़, फ़ातिह़ा के खाने को खाना भी ह़राम है। येह मस्अला बहुत ज़ियादा पेश आने वाला है लेकिन अफ़्सोस कि लोग बे धड़क यतीमों का माल खा जाते हैं।

(3)...... ऐसे मौक़अ़ पर जाइज़ नियाज़ का त़रीक़ा येह है कि बालिग़ वुरसा ख़ास अपने माल से नियाज़ दिलाएं। येह भी याद रहे कि यहां वोह दा'वत मुराद नहीं है जो तदफ़ीन के बा'द या सिवुम के दिन की पकाई जाती है क्यूं कि वोह दा'वत तो बहर सूरत ना जाइज़ है ख़्वाह अपने माल से करें। **मस्अला :** तीजा, फ़ातिह़ा का ईसाले सवाब जाइज़ है लेकिन रिश्तेदारों और अहले मह़ल्ला की जो दा'वत की जाती है येह ना जाइज़ है, वोह खाना सिर्फ़ फ़ुक़रा को खिलाने की इजाज़त है। इस के बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 9वीं जिल्द से इन दो रसाइल का मुत़ालआ़ फ़रमाएं (1) اَلْحُجَّةُ الْفَائِحَۃُ لِطِیْبِ التَّعْیِیْنِ وَالْفَاتِحَۃ۔ (दिन मुतअ़य्यन करने और मुरव्वजा फ़ातिह़ा, सिवुम वग़ैरा का सुबूत) (2) جَلِیُّ الصَّوْتِ لِنَھْیِ الدَّعْوَۃِ اَمَامَ مَوْتْ۔ (किसी की मौत पर दा'वत करने की मुमानअ़त का वाज़ेह़ बयान)।

وَ اِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِی الْیَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ؕ﴿۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे तो निकाह़ में लाओ जो औ़रतें तुम्हें ख़ुश आएं दो दो और तीन तीन और चार चार फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें जिन के तुम मालिक हो येह इस से ज़ियादा क़रीब है कि तुम से ज़ुल्म न हो।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न कर सकोगे तो उन औ़रतों से निकाह़ करो जो तुम्हें पसन्द हों, दो दो और तीन तीन और चार चार फिर अगर तुम्हें इस बात का डर हो कि तुम इन्साफ़ नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक (से निकाह़ करो) या लौंडियों (पर गुज़ारा करो) जिन के तुम मालिक हो। येह इस से ज़ियादा क़रीब है कि तुम से ज़ुल्म न हो।

﴿وَ اِنْ خِفْتُمْ : **और अगर तुम्हें डर हो।**﴾ इस आयत के मा'ना में चन्द अक़्वाल हैं :

(1)...... इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि पहले ज़माने में मदीने के लोग अपनी ज़ेरे सर परस्ती यतीम लड़कियों से उन के माल की वज्ह से निकाह़ कर लेते ह़ालां कि उन की त़रफ़ उन्हें कोई रग़बत न होती थी, फिर उन यतीम लड़कियों के ह़ुक़ूक़ पूरे न करते और उन के साथ अच्छा सुलूक न करते और उन के माल के वारिस बनने के लिये उन की मौत के मुन्तज़िर रहते, इस आयत में उन्हें इस ह़रकत से रोका गया।[1]

(2)...... दूसरा क़ौल येह है कि लोग यतीमों की सर परस्ती करने से तो ना इन्साफ़ी हो जाने के डर से घबराते थे लेकिन ज़िना की परवाह न करते थे, इन्हें बताया गया कि अगर तुम ना इन्साफ़ी के अन्देशे से यतीमों की सर परस्ती से गुरेज़ करते हो तो ज़िना से भी ख़ौफ़ करो और उस से बचने के लिये जो औ़रतें तुम्हारे लिये ह़लाल हैं उन से निकाह़ करो और ह़राम के क़रीब मत जाओ।[2]

(3)...... तीसरा क़ौल येह है कि लोग यतीमों की सर परस्ती में तो ना इन्साफ़ी करने से डरते थे लेकिन बहुत से निकाह़ करने में कुछ ख़त़रा मह़सूस नहीं करते थे, उन्हें बताया गया कि जब ज़ियादा औ़रतें निकाह़ में हों तो उन के ह़क़ में ना इन्साफ़ी से भी डरो जैसे यतीमों के ह़क़ में ना इन्साफ़ी करने से डरते हो और उतनी ही औ़रतों से निकाह़ करो जिन के ह़ुक़ूक़ अदा कर सको।[3]

(4)...... ह़ज़रते इ़क्रमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया कि क़ुरैश दस दस बल्कि इस से ज़ियादा औ़रतें करते थे और जब उन का बोझ न उठा सकते तो जो यतीम लड़कियां उन की सर परस्ती में होतीं उन के माल ख़र्च कर

1 ......صاوی، النساء، تحت الآیة: ۳، ۳۵۹/۲.
2 ......تفسیر کبیر، النساء، تحت الآیة: ۳، ۴۸۵/۳.
3 ......مدارك، النساء، تحت الآیة: ۳، ص۲۰۹.

www.dawateislami.net

डालते ।[1]

इस आयत में फ़रमाया गया कि अपनी माली पोज़ीशन देख लो और चार से ज़ियादा न करो ताकि तुम्हें यतीमों का माल ख़र्च करने की ह़ाजत पेश न आए।

निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल

(1)...... इस आयत से मा'लूम हुवा कि आज़ाद मर्द के लिये एक वक़्त में चार औ़रतों तक से निकाह़ जाइज़ है।

(2)...... तमाम उम्मत का इज्माअ़ है कि एक वक़्त में चार औ़रतों से ज़ियादा निकाह़ में रखना किसी के लिये जाइज़ नहीं सिवाए रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के और येह बात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खुसूसिय्यात में से है। अबू दावूद की ह़दीस में है कि एक शख़्स ने इस्लाम क़बूल किया, उस की आठ बीवियां थीं, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन में से सिर्फ़ चार रखना।[2]

﴾فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا﴿ : **फिर अगर तुम्हें अ़द्ल न कर सकने का डर हो।** ﴾ आयत में चार तक शादियां करने की इजाज़त दी गई है लेकिन इस के साथ ही फ़रमाया कि अगर तुम्हें इस बात का डर हो कि एक से ज़ियादा शादियां करने की सूरत में सब के दरमियान अ़द्ल नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक से शादी करो। इसी से येह मा'लूम हुवा कि अगर कोई चार में अ़द्ल नहीं कर सकता लेकिन तीन में कर सकता है तो तीन शादियां कर सकता है और तीन में अ़द्ल नहीं कर सकता लेकिन दो में कर सकता है तो दो की इजाज़त है। येह भी मा'लूम हुवा कि बीवियों के दरमियान अ़द्ल करना फ़र्ज़ है, इस में नई, पुरानी, कुंवारी या दूसरे की मुत़ल्लक़ा, बेवा सब बराबर हैं। येह अ़द्ल लिबास में, खाने पीने में, रहने की जगह में और रात को साथ रहने में लाज़िम है। इन उमूर में सब के साथ यक्सां सुलूक हो।

وَ اٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةًؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓــٴًـا مَّرِیْٓــٴًـا ④

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٣، ١/٣٤٠.

2 ......ابو داوٗد، كتاب الطلاق، باب فى من اسلم وعنده نساء... الخ، ٢/٣٩٦، الحديث: ٢٢٤١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और औ़रतों को उन के महर् ख़ुशी से दो फिर अगर वोह अपने दिल की ख़ुशी से महर् में से तुम्हें कुछ दे दें तो उसे खाओ रचता पचता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और औ़रतों को उन के महर् ख़ुशी से दो फिर अगर वोह ख़ुशदिली से महर् में से तुम्हें कुछ दे दें तो उसे पाकीज़ा, ख़ुश गवार (समझ कर) खाओ।

﴿وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً﴾ **: और औ़रतों को उन के महर् ख़ुशी से दो।** इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने शौहरों को हुक्म दिया कि वोह अपनी बीवियों को उन के महर् ख़ुशी से अदा करें फिर अगर उन की बीवियां ख़ुशदिली से अपने महर् में से उन्हें कुछ तोह़फ़े के त़ौर पर दे दें तो वोह उसे पाकीज़ा और ख़ुश गवार समझ कर खाएं, इस में उन का कोई दुन्यवी या उख़्रवी नुक़्सान नहीं है।[(1)]

महर् से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल

इस आयत से कई चीज़ें मा'लूम हुईं :

(1)...... महर् की मुस्तह़िक़ औ़रतें हैं न कि उन के सर परस्त, लिहाज़ा अगर सर परस्तों ने महर् वुसूल कर लिया हो तो उन्हें लाज़िम है कि वोह महर् उस की मुस्तह़िक़ औ़रत को पहुंचा दें।

(2)...... महर् बोझ समझ कर नहीं देना चाहिये बल्कि औ़रत का शर्ई ह़क़ समझ कर **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करने की निय्यत से ख़ुशी ख़ुशी देना चाहिये।

(3)...... महर् देने के बा'द ज़बर दस्ती या उन्हें तंग कर के वापस लेने की इजाज़त नहीं।

(4)...... अगर औ़रतें ख़ुशी से पूरा या कुछ महर् तुम्हें दे दें तो वोह ह़लाल है उसे ले सकते हैं। हमारे ज़माने में लोग औ़रतों को महर् वापस देने या मुआ़फ़ करने पर बा क़ाइदा तो मजबूर नहीं करते लेकिन कुछ अपनी चर्ब ज़बानी से और कुछ अपने रवय्ये को बिगाड़ कर और मूड ऑफ़ कर के और मेल बरताव में अन्दाज़ तब्दील कर के महर् की मुआ़फ़ी या वापसी पर औ़रत को मजबूर करते हैं। येह सब सूरतें मम्नूअ़ हैं बल्कि बा'ज़ ए'तिबार से इस में ज़ियादा ख़बासत और कमीनगी है। ऐसे लोग महर् मुआ़फ़ भी करवा लेते हैं और अपने नफ़्स को भी राज़ी रखते हैं कि हम ने कौन सा मजबूर किया है ? इन्हें **अल्लाह** तआ़ला ही हिदायत दे।

---

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٤، ١/٣٤٤، جلالين مع صاوی، النساء، تحت الآية: ٤، ٢/٣٦٠، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِیْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِیٰمًا وَّ ارْزُقُوْهُمْ فِیْهَا وَ اكْسُوْهُمْ وَ قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बे अ़क़्लों को उन के माल न दो जो तुम्हारे पास हैं जिन को **अल्लाह** ने तुम्हारी बसरे अवक़ात किया है और उन्हें उस में से खिलाओ और पहनाओ और उन से अच्छी बात कहो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कम अ़क़्लों को उन के वोह माल न दो जिसे **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये गुज़र बसर का ज़रीआ़ बनाया है और उन्हें उस माल में से खिलाओ और पहनाओ और उन से अच्छी बात कहो ।

﴿وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمْ : **और कम अ़क़्लों को उन के माल न दो ।**﴾ इस आयत में चन्द अह़काम बयान फ़रमाए जिन का ख़ुलासा येह है कि जिन बच्चों की परवरिश तुम्हारे ज़िम्मे है और उन का माल तुम्हारे पास है और वोह बच्चे इतनी समझ नहीं रखते कि माल का मसरफ़ पहचानें बल्कि वोह उसे बे मह़ल ख़र्च करते हैं और अगर उन का माल उन पर छोड़ दिया जाए तो वोह जल्द ज़ाएअ़ कर देंगे ह़ालां कि माल की बहुत अहम्मिय्यत है कि इसी के साथ ज़िन्दगी की बक़ा है लिहाज़ा जब तक माल की अच्छी त़रह़ समझ बूझ उन्हें ह़ासिल न हो जाए तब तक उन के माल उन के ह़वाले न करो बल्कि उन की ज़रूरिय्यात जैसे खाने पीने और पहनने के अख़राजात वग़ैरा इन के माल से पूरे करते रहो । अलबत्ता इन से अच्छी बात कहते रहो जिस से इन के दिल को तसल्ली रहे और वोह परेशान न हों मसलन इन से कहो कि भाई ! माल तुम्हारा ही है और जब तुम होशियार, समझदार हो जाओगे तो येह तुम्हारे ह़वाले कर दिया जाएगा ।(1)

अच्छी बात कहने का मा'ना यहां मुफ़स्सिरीन ने वोह लिया है जो ऊपर बयान हुवा अलबत्ता मुत़्लक़न अच्छी बात में बहुत सी चीज़ें दाख़िल हैं, येह भी इस में दाख़िल है कि उन

(1)......مدارك، النساء، تحت الآية: ٥، ص ٢١٠.

www.dawateislami.net

को आदाबे ज़िन्दगी सिखाओ, खाने पीने, उठने बैठने, बातचीत करने सब कामों में उन की तरबियत करो।

وَ ابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰۤى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْۤا اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَ لَا تَاْكُلُوْهَاۤ اِسْرَافًا وَّ بِدَارًا اَنْ یَّكْبَرُوْا ؕ وَ مَنْ كَانَ غَنِیًّا فَلْیَسْتَعْفِفْ ۚ وَ مَنْ كَانَ فَقِیْرًا فَلْیَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَیْهِمْ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ حَسِیْبًا ۝۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यतीमों को आज़्माते रहो यहां तक कि जब वोह निकाह़ के क़ाबिल हों तो अगर तुम उन की समझ ठीक देखो तो उन के माल उन्हें सिपुर्द कर दो और उन्हें न खाओ ह़द से बढ़ कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जाएं और जिसे ह़ाजत न हो वोह बचता रहे और जो ह़ाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खाए फिर जब तुम उन के माल उन्हें सिपुर्द करो तो उन पर गवाह कर लो और **अल्लाह** काफ़ी है ह़िसाब लेने को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यतीमों (की समझदारी) को आज़्माते रहो यहां तक कि जब वोह निकाह़ के क़ाबिल हों तो अगर तुम उन की समझदारी देखो तो उन के माल उन के ह़वाले कर दो और उन के माल फ़ुज़ूल ख़र्ची से और (इस डर से) जल्दी जल्दी न खाओ कि वोह बड़े हो जाएंगे और जिसे ह़ाजत न हो तो वोह बचे और जो ह़ाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खा सकता है फिर जब तुम उन के माल उन के ह़वाले करो तो उन पर गवाह कर लो और ह़िसाब लेने के लिये **अल्लाह** काफ़ी है।

﴿وَ ابْتَلُوا الْیَتٰمٰى : **और यतीमों को आज़्माते रहो।**﴾ इस आयते मुबारका में यतीमों के ह़वाले से बहुत वाज़ेह़ अह़काम दिये हैं, चुनान्चे फ़रमाया कि जिन यतीमों का माल तुम्हारे पास हो उन की समझदारी को आज़्माते रहो जिस की एक सूरत येह है कि उन का माल दे कर वक़्तन फ़ वक़्तन उन्हें देखते रहो कि कैसे ख़र्च करते हैं। यूं उन्हें आज़्माते रहो यहां तक कि जब वोह निकाह़

www.dawateislami.net

की उम्र को पहुंच जाएं या'नी बालिग़ हो जाएं तो अगर तुम उन में समझदारी के आसार देखो कि वोह माली मुआमलात अच्छे त़रीक़े से कर लेते हैं तो उन के माल उन के ह़वाले कर दो। यहां तक उन के बारे में हुक्म देने के बा'द अब सर परस्तों को बत़ौरे ख़ास चन्द हिदायात दी हैं चुनान्चे फ़रमाया कि यतीमों के माल को फ़ुज़ूल ख़र्ची से इस्ति'माल न करो और उन का माल जल्दी जल्दी न खाओ इस डर से कि जब वोह बड़े हो जाएंगे तो चूंकि तुम्हें उन के माल वापस करना पड़ेंगे लिहाज़ा जितना ज़ियादा हो सके उन का माल खा जाओ, येह ह़राम है। मज़ीद हिदायत येह है कि यतीम का सर परस्त अगर ख़ुद मालदार हो या'नी उसे यतीम का माल इस्ति'माल करने की ह़ाजत नहीं तो वोह उस का माल इस्ति'माल करने से बचे और जो ह़ाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खा सकता है या'नी जितनी मा'मूली सी ज़रूरत हो। इस में कोशिश येह होनी चाहिये कि कम से कम खाए।[1]

आयत के आख़िर में मज़ीद पहले वाले हुक्म के बारे में फ़रमाया कि जब तुम यतीमों के माल उन के ह़वाले करने लगो तो इस बात पर गवाह बना लो ताकि बा'द में कोई झगड़ा न हो। येह हुक्म मुस्तह़ब है।

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيبًا مَّفْرُوْضًا ۝۷

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मर्दों के लिये हि़स्सा है उस में से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले और औ़रतों के लिये हि़स्सा है उस में से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले तर्का थोड़ा हो या बहुत हि़स्सा है अन्दाज़ा बांधा हुवा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मर्दों के लिये उस (माल) में से (विरासत का) हि़स्सा है जो मां बाप और रिश्तेदार छोड़ गए और औ़रतों के लिये उस में से हि़स्सा है जो मां बाप और रिश्तेदार छोड़ गए, माले विरासत थोड़ा हो या ज़ियादा। (**अल्लाह** ने येह) मुक़र्रर हि़स्सा (बनाया है।)

1 ......جمل، النساء، تحت الآية: ٦، ٢/ ١٣.

www.dawateislami.net

﴾وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ : **और औ़रतों का भी विरासत में ह़िस्सा है ।**﴿ ज़मानए जाहिलिय्यत में औ़रतों और बच्चों को विरासत से ह़िस्सा न देते थे, इस आयत में उस रस्म को बाति़ल किया गया । इस से येह भी मा'लूम हुवा कि बेटे को मीरास देना और बेटी को न देना सरीह़ ज़ुल्म और क़ुरआन के ख़िलाफ़ है दोनों मीरास के ह़क़्दार हैं और इस से इस्लाम में औ़रतों के ह़ुक़ूक़ की अहम्मिय्यत का भी पता चला ।

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْیَتٰمٰى وَالْمَسٰكِیْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बांटते वक़्त अगर रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन आ जाएं तो उस में से उन्हें भी कुछ दो और उन से अच्छी बात कहो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तक़्सीम करते वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन आ जाएं तो उस माल में से उन्हें भी कुछ दे दो और उन से अच्छी बात कहो ।

﴾وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى : **और जब तक़्सीम करते वक़्त रिश्तेदार आ जाएं ।**﴿ जिन अफ़राद का विरासत में ह़िस्सा है उन का बयान तो तफ़्सील के साथ बा'द की आयतों में मज़्कूर है उन के इ़लावा दीगर रिश्तेदारों और मोह़ताज अफ़राद के बारे में फ़रमाया कि उन्हें भी विरासत तक़्सीम करने से पहले माल में से कुछ दे दिया करो और उन से अच्छी बात कहो जैसे येह कि येह माल तो दर ह़क़ीक़त वारिसों का ह़िस्सा है लेकिन तुम्हें वैसे ही थोड़ा सा दिया गया है, यूंही उन के लिये दुआ़ कर दी जाए ।

विरासत तक़्सीम करने से पहले ग़ैर वारिसों को देना

इस आयत में ग़ैर वारिसों को विरासत के माल में से कुछ देने का जो हुक्म दिया गया है, येह देना मुस्तह़ब है । इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है ह़ज़रते उ़बैदा सलमानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मीरास तक़्सीम की तो इसी आयत पर अ़मल करते हुए एक बकरी

www.dawateislami.net

ज़ब्ह़ करवा कर खाना पकवाया फिर यतीमों में तक़्सीम कर दिया और कहा अगर येह आयत न होती तो मैं येह सब ख़र्चा अपने माल से करता।(1)

तफ़्सीरे क़ुरतुबी में यूं है कि ''येह अ़मल उ़बैदा सलमानी और इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهِما दोनों ने किया।''(2)

दुर्रे मन्सूर में एक रिवायत येह है कि ''ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने जब अपने वालिद की मीरास तक़्सीम की तो उसी माल से एक बकरी ज़ब्ह़ करवा कर खाना पकवाया, जब येह बात ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बारगाह में अ़र्ज़ की गई तो उन्हों ने फ़रमाया : अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़ुरआन पर अ़मल किया।''(3)

इस मुस्तह़ब हुक्म पर यूं भी अ़मल हो सकता है कि बा'ज़ अवक़ात कोई बेटा यतीम बच्चे छोड़ कर फ़ौत हो जाता है और उस के बा'द बाप का इन्तिक़ाल होता है तो वोह यतीम बच्चे चूंकि पोते बनते हैं और चचा या'नी फ़ौत होने वाले का दूसरा बेटा मौजूद होने की वज्ह से येह पोते दादा की मीरास से मह़रूम होते हैं तो दादा को चाहिये कि ऐसे पोतों को वसिय्यत कर के माल का मुस्तह़िक़ बना दे और अगर दादा ने ऐसा न किया हो तो वारिसों को चाहिये कि ऊपर वाले हुक्म पर अ़मल करते हुए अपने ह़िस्से में से उसे कुछ दे दें। इस हुक्म पर अ़मल करने में मुसल्मानों में बहुत सुस्ती पाई जाती है बल्कि इस हुक्म का इ़ल्म ही नहीं होता। अलबत्ता येह याद रहे कि ना बालिग़ और ग़ैर मौजूद वारिस के ह़िस्से में से देने की इजाज़त नहीं।

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۪ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और डरें वोह लोग अगर अपने बा'द नातुवान औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि **अल्लाह** से डरें और सीधी बात करें।

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٨، ١/٣٤٨.
2 ......قرطبی، النساء، تحت الآية: ٨، ٣/٣٦، الجزء الخامس.
3 ......در منثور، النساء، تحت الآية: ٨، ٢/٤٤٠.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग डरें जो अगर अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ते तो उन के बारे में कैसे अन्देशों का शिकार होते। तो उन्हें चाहिये कि **अल्लाह** से डरें और दुरुस्त बात कहें।

﴿وَلْيَخْشَ : **और चाहिये कि डरें**﴾ यतीमों के सर परस्तों को फ़रमाया जा रहा है कि वोह यतीमों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला से डरें और उन की येह समझ कर परवरिश करें कि अगर हमारे बच्चे यतीम रह जाएं और कोई दूसरा उन की परवरिश करे तो वोह कैसी परवरिश चाहते हैं, तो ऐसी ही परवरिश वोह दूसरे के यतीमों की करें। येह आयते करीमा अख़्लाक़ की बेहतरीन ता'लीम है। हमेशा दूसरे के साथ वोह मुआ़मला करना चाहिये जो अपने साथ पसन्द है और जो अपने लिये पसन्द न हो वोह दूसरों के लिये भी पसन्द नहीं होना चाहिये। ह़दीसे मुबारक में भी फ़रमाया गया कि तुम में कोई शख़्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वोह पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।[1]

लिहाज़ा यतीमों के सर परस्तों को चाहिये कि वोह यतीमों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला से डरें और उन से अच्छी और सह़ीह़ बात कहें मसलन येह कि तुम फ़िक्र न करो हम भी तुम्हारे बाप जैसे हैं, तुम्हें परेशानी नहीं आने देंगे।[2]

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾

ع ١٢

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़क्ते धड़े (आतश कदे) में जाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो ज़ुल्म करते हुए यतीमों का माल खाते हैं वोह अपने पेट में बिल्कुल आग भरते हैं और अ़न्क़रीब येह लोग भड़क्ती हुई आग में जाएंगे।

1 ......بخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحبّ لاخیہ... الخ، ۱/۱٦، الحدیث: ۱۳.
2 ......خازن، النساء، تحت الآیۃ: ۹، ۱/۳٤۹، مدارك، النساء، تحت الآیۃ: ۹، ص ۲۱۲، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا : बेशक वोह लोग जो ज़ुल्म करते हुए यतीमों का माल खाते हैं । इस से पहली आयात में यतीमों का माल नाहक़ खाने से मन्अ़ किया गया और इस आयत में यतीमों का माल नाहक़ खाने पर सख़्त वईद बयान की गई है और येह सब यतीमों पर **अल्लाह** तआ़ला की रहमत है क्यूं कि वोह इन्तिहाई कमज़ोर और आ़जिज़ होने की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला के मज़ीद लुत्फ़ो करम के हक़दार थे । इस आयत में जो येह इर्शाद फ़रमाया गया कि "वोह अपने पेट में बिल्कुल आग भरते हैं" इस से मुराद येह है कि यतीमों का माल नाहक़ खाना गोया आग खाना है क्यूं कि येह माल खाना जहन्नम की आग के अ़ज़ाब का सबब है ।(1)

यतीमों का माल नाहक़ खाने की वईदें

अहादीसे मुबारका में भी यतीमों का माल नाहक़ खाने पर कसीर वईदें बयान की गई हैं, उन में से 3 वईदें दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... हज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन एक क़ौम अपनी क़ब्रों से इस तरह उठाई जाएगी कि उन के मूंहों से आग निकल रही होगी ।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम ने **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान को नहीं देखा "اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَیَصْلَوْنَ سَعِیْرًا" बेशक वोह लोग जो ज़ुल्म करते हुए यतीमों का माल खाते हैं वोह अपने पेट में बिल्कुल आग भरते हैं और अ़न्क़रीब येह लोग भड़कती हुई आग में जाएंगे ।"(2)

(2)...... हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने मे'राज की रात ऐसी क़ौम देखी जिन के होंट ऊंटों के होंटों की तरह थे और उन पर ऐसे लोग मुक़र्रर थे जो उन के होंटों को पकड़ते फिर उन के मूंहों में आग के पथ्थर डालते जो उन के पीछे से निकल जाते । मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! عَلَیْہِ السَّلَام, येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : "येह वोह लोग हैं जो यतीमों का माल ज़ुल्म से खाते थे ।"(3)

---

1 ......تفسیر کبیر، النساء، تحت الآیۃ: ۱۰، ۵۰۶/۳.

2 ......کنز العمال، کتاب البیوع، قسم الاقوال، ۹/۲، الجزء الرابع، الحدیث: ۹۲۷۹.

3 ......تھذیب الآثار، مسند عبداللّٰہ بن عباس، السفر الاول، ذکر من روی عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم انہ رأی، ۴۶۷/۲، الحدیث: ۷۲۵.

www.dawateislami.net

(3)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "चार शख़्स ऐसे हैं जिन्हें जन्नत में दाख़िल न करना और उस की ने'मतें न चखाना **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है : (1) शराब का आ़दी। (2) सूद खाने वाला। (3) नाह़क़ यतीम का माल खाने वाला। (4) वालिदैन का ना फ़रमान।"[1]

यतीम का माल खाने से क्या मुराद है ?

यतीम का माल नाह़क़ खाना कबीरा गुनाह और सख़्त ह़राम है। क़ुरआने पाक में निहायत शिद्दत के साथ इस के ह़राम होने का बयान किया गया है। अफ़्सोस कि लोग इस में भी परवाह नहीं करते। उ़मूमन यतीम बच्चे अपने ताया, चचा वग़ैरा के ज़ुल्मो सितम का शिकार होते हैं, उन्हें इस ह़वाले से ग़ौर करना चाहिये यहां एक और अहम मस्अले की त़रफ़ तवज्जोह करना ज़रूरी है वोह येह कि यतीम का माल खाने का येह मत़लब नहीं कि आदमी बा क़ाइदा किसी बुरी निय्यत से खाए तो ही ह़राम है बल्कि कई सूरतें ऐसी हैं कि आदमी को ह़राम का इ़ल्म भी नहीं होता और वोह यतीमों का माल खाने के ह़राम फ़े'ल में मुलव्वस हो जाता है जैसे जब मय्यित के वुरसा में कोई यतीम है तो उस के माल से या उस के माल समेत मुश्तरक माल से फ़ातिह़ा तीजा वग़ैरा का खाना ह़राम है कि इस में यतीम का ह़क़ शामिल है, लिहाज़ा येह खाने सिर्फ़ फ़ुक़रा के लिये बनाए जाएं और सिर्फ़ बालिग़ मौजूद वुरसा के माल से तय्यार किये जाएं वरना जो भी जानते हुए यतीम का माल खाएगा वोह दोज़ख़ की आग खाएगा और क़ियामत में उस के मुंह से धूआं निकलेगा।

यतीम की अच्छी परवरिश के फ़ज़ाइल

जिस के ज़ेरे साया कोई यतीम हो तो उसे चाहिये कि वोह उस यतीम की अच्छी परवरिश करे, अह़ादीस में यतीम की अच्छी परवरिश करने के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 4 फ़ज़ाइल दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस त़रह़ होंगे।" फिर अपनी शहादत वाली और दरमियान वाली उंगली से इशारा फ़रमाया और उन्हें कुशादा किया।[2]

1 ......مستدرك، كتاب البيوع، انّ اربى الربا عرض الرجل المسلم، ٢/٣٣٨، الحديث: ٢٣٠٧.

2 ......بخارى، كتاب الطلاق، باب اللعان، ٣/٤٩٧، الحديث: ٥٣٠٤.

www.dawateislami.net

(2)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, इमामुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुसल्मानों के किसी यतीम बच्चे के खाने पीने की ज़िम्मादारी ली, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा मगर येह कि वोह ऐसा गुनाह करे जिस की मुआ़फ़ी न हो।"(1)

(3)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मानों के घरों में सब से अच्छा घर वोह है जिस में यतीम से अच्छा सुलूक किया जाए और मुसल्मानों के घरों में से बुरा घर वोह है जिस में यतीम से बुरा सुलूक किया जाए।"(2)

(4)...... हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने यतीम के सर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हाथ रखा तो उस के लिये हर बाल के बदले जिन पर उस का हाथ गुज़रा नेकियां हैं।"(3)

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ

1 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی رحمة الیتیم، و کفالته، ۳/۳۶۸، الحدیث: ۱۹۲۴.

2 ......ابن ماجه، کتاب الادب، باب حق الیتیم، ۴/۱۹۳، الحدیث: ۳۶۷۹.

3 ......مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث ابی امامة الباهلی، ۸/۳۰۰، الحدیث: ۲۲۳۴۷.

www.dawateislami.net

إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ
لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا
تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ؕ وَ
إِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَّلَهٗ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ
فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوْٓا أَكْثَرَ مِنْ
ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ
أَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारी औलाद के बारे में बेटे का हिस्सा दो बेटियों बराबर फिर अगर निरी लड़कियां हों अगर्चे दो से ऊपर तो उन को तर्के की दो तिहाई और अगर एक लड़की तो उस का आधा और मय्यित के मां बाप को हर एक को उस के तर्के से छटा अगर मय्यित के औलाद हो फिर अगर उस की औलाद न हो और मां बाप छोड़े तो मां का तिहाई फिर अगर उस के कई बहन भाई तो मां का छटा बा'द उस वसिय्यत के जो कर गया और दैन के तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि उन में कौन तुम्हारे ज़ियादा काम आएगा येह हिस्सा बांधा हुवा है **अल्लाह** की तरफ़ से बेशक **अल्लाह** इल्म वाला हिक्मत वाला है । और तुम्हारी बीबियां जो छोड़ जाएं उस में से तुम्हें आधा है अगर उन की औलाद न हो फिर अगर उन की औलाद हो तो उन के तर्के में से तुम्हें चौथाई है जो वसिय्यत वोह कर गईं और दैन निकाल कर

www.dawateislami.net

और तुम्हारे तर्के में औ़रतों का चौथाई है अगर तुम्हारे औलाद न हो फिर अगर तुम्हारे औलाद हो तो उन का तुम्हारे तर्के में से आठवां जो वसिय्यत तुम कर जाओ और दैन निकाल कर और अगर किसी ऐसे मर्द या औ़रत का तर्का बटता हो जिस ने मां बाप औलाद कुछ न छोड़े और मां की त़रफ़ से उस का भाई या बहन है तो उन में से हर एक को छटा फिर अगर वोह बहन भाई एक से ज़ियादा हों तो सब तिहाई में शरीक हैं मय्यित की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिस में उस ने नुक़्सान न पहुंचाया हो येह **अल्लाह** का इर्शाद है और **अल्लाह** इ़ल्म वाला हि़ल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है, बेटे का हि़स्सा दो बेटियों के बराबर है फिर अगर सिर्फ़ लड़कियां हों अगर्चे दो से ऊपर तो उन के लिये तर्के का दो तिहाई हि़स्सा होगा और अगर एक लड़की हो तो उस के लिये आधा हि़स्सा है और अगर मय्यित की औलाद हो तो मय्यित के मां बाप में से हर एक के लिये तर्के से छटा हि़स्सा होगा फिर अगर मय्यित की औलाद न हो और मां बाप छोड़े तो मां के लिये तिहाई हि़स्सा है फिर अगर उस (मय्यित) के कई बहन भाई हों तो मां का छटा हि़स्सा होगा, (येह सब अह़काम) उस वसिय्यत (को पूरा करने) के बा'द (होंगे) जो वोह (फ़ौत होने वाला) कर गया और क़र्ज़ (की अदाएगी) के बा'द (होंगे।) तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम्हें मा'लूम नहीं कि उन में कौन तुम्हें ज़ियादा नफ़्अ़ देगा, (येह) **अल्लाह** की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा हि़स्सा है। बेशक **अल्लाह** बड़े इ़ल्म वाला, हि़क्मत वाला है। और तुम्हारी बीवियां जो (माल) छोड़ जाएं अगर उन की औलाद न हो तो उस में से तुम्हारे लिये आधा हि़स्सा है, फिर अगर उन की औलाद हो तो उन के तर्के में से तुम्हारे लिये चौथाई हि़स्सा है। (येह हि़स्से) उस वसिय्यत के बा'द (होंगे) जो उन्हों ने की हो और क़र्ज़ (की अदाएगी) के बा'द (होंगे।) और अगर तुम्हारे औलाद न हो तो तुम्हारे तर्के में से औ़रतों के लिये चौथाई हि़स्सा है, फिर अगर तुम्हारे औलाद हो तो उन का तुम्हारे तर्के में से आठवां हि़स्सा है (येह हि़स्से) उस वसिय्यत के बा'द (होंगे) जो वसिय्यत तुम कर जाओ और क़र्ज़ (की अदाएगी) के बा'द (होंगे।) और अगर किसी ऐसे मर्द या औ़रत का तर्का तक़्सीम किया जाना हो जिस ने मां बाप और औलाद (में से) कोई न छोड़ा और (सिर्फ़) मां की त़रफ़ से उस का एक भाई या एक बहन हो तो उन में से हर एक के लिये छटा हि़स्सा होगा फिर अगर वोह (मां की त़रफ़ वाले) बहन भाई एक से ज़ियादा हों तो सब तिहाई में शरीक होंगे (येह दोनों सूरतें भी) मय्यित की उस वसिय्यत और क़र्ज़ (की अदाएगी) के बा'द होंगी जिस (वसिय्यत) में उस ने (वुरसा को) नुक़्सान न पहुंचाया हो। येह **अल्लाह** की त़रफ़ से हुक्म है और **अल्लाह** बड़े इ़ल्म वाला, बड़े हि़ल्म वाला है।

www.dawateislami.net

﴾يُوۡصِيۡكُمُ اللّٰهُ فِىۡۤ اَوۡلَادِكُمۡ : **अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है।**﴿ विरासत के अह्काम में काफ़ी तफ़्सील है, इन्हें जब तक बा क़ाइदा किसी के पास बैठ कर मश्क़ के ज़रीए हल न किया जाए तब तक समझना मुश्किल है इस लिये इन्हें समझने के लिये बा क़ाइदा किसी इल्मे मीरास के आ़लिम के पास बैठ कर समझें। यहां आयाते मुबारका की तफ़्सीर के पेशे नज़र आयात में मज़्कूर वुरसा की मुकम्मल सूरतें तह़रीर कर दी हैं, इन्हें देख लें। लेकिन येह याद रखें कि यहां बयान कर्दा हिस्सों के साथ बहुत से उसूल व क़वाइद को मिला कर मीरास का मस्अला ह़ल किया जाता है लिहाज़ा मज़ीद तफ़्सीलात के लिये मीरास की किताबों का मुत़ालआ़ करें। नीज़ यहां तफ़्सीर में तमाम वुरसा के ह़ालात बयान नहीं किये गए बल्कि सिर्फ़ उन के बयान किये हैं जिन की सूरत यहां आयात में मज़्कूर है।

वुरसा में विरासत का माल तक़्सीम करने की सूरतें

(1)...... बाप की तीन सूरतें हैं : (1) अगर मय्यित का बाप हो और साथ में बेटा भी हो तो बाप को **1/6** एक बटा छे मिलेगा। (2) अगर मय्यित का बाप हो और साथ में बेटा न हो बल्कि सिर्फ़ बेटी हो तो बाप को **1/6** एक बटा छे मिलेगा और बक़िय्या वुरसा को देने के बा'द अगर कुछ बच जाए तो वोह बाप को बत़ौर अ़सबा के मिलेगा। (3) अगर मय्यित का बाप हो और साथ में न कोई बेटा हो और न कोई बेटी हो तो बाप को बत़ौर अ़सबा के मिलेगा।

(2)...... मां शरीक भाई की तीन सूरतें हैं : (1) अख़्याफ़ी भाई अगर एक हो तो अख़्याफ़ी भाई को **1/6** एक बटा छे मिलेगा। (2) अख़्याफ़ी भाई अगर दो या दो से ज़ियादा हों ख़्वाह भाई हो या बहनें या दोनों मिल कर तो उन्हें **1/3** एक बटा तीन मिलेगा। (3) बाप, दादा, बेटा, बेटी, पोता, पोती के होते हुए अख़्याफ़ी भाई मह़रूम हो जाएगा। इसी त़रह़ अख़्याफ़ी बहन के भी येही तीन अह़वाल हैं।

(3)...... शौहर की दो सूरतें हैं : (1) अगर फ़ौत होने वाली की औलाद है तो शौहर को **1/4** एक बटा चार मिलेगा। (2) अगर फ़ौत होने वाली की औलाद नहीं तो शौहर को **1/2** एक बटा दो मिलेगा।

(4)...... बीवी की दो सूरतें हैं : (1) अगर फ़ौत होने वाले की औलाद है तो बीवी को **1/8** एक बटा आठ मिलेगा। (2) अगर फ़ौत होने वाले की औलाद नहीं है तो बीवी को **1/4** एक बटा चार मिलेगा।

www.dawateislami.net

(5)...... बेटी की तीन सूरतें हैं : (1) अगर बेटी एक हो तो **1/2** एक बटा दो या'नी आधा माल मिलेगा। (2) अगर दो या दो से ज़ियादा बेटियां हों तो उन को **2/3** दो बटा तीन मिलेगा। (3) अगर बेटियों के साथ बेटा भी हो तो बेटियां अ़सबा बन जाएंगी और लड़के को लड़की से दो गुना दिया जाएगा।

(6)...... मां की तीन सूरतें हैं : (1) अगर मय्यित का बेटा, बेटी, पोता, पोती या किसी भी क़िस्म के दो बहन भाई हों तो मां को कुल माल का **1/6** एक बटा छे मिलेगा। (2) अगर मय्यित का बेटा, बेटी, पोता, पोती कोई न हो और बहन भाइयों में से दो अफ़राद न हों ख़्वाह एक हो तो मां को कुल माल का **1/3** एक बटा तीन मिलेगा। (3) अगर मय्यित ने बीवी और मां बाप या शौहर और मां बाप छोड़े हों तो बीवी या शौहर को उस का ह़िस्सा देने के बा'द जो माल बाक़ी बचे उस का **1/3** एक बटा तीन मां को दिया जाएगा।

इस के इलावा दो अहम उसूल

(1)...... बेटे को बेटी से दुगना मिलता है और जहां भाई अ़सबा बनते हों वहां इन्हें बहनों से दुगना मिलता है और कई जगह बहनें भी अ़सबा बन जाती हैं और अस्ह़ाबे फ़राइज़ को देने के बा'द बक़िय्या सारा माल ले लेती हैं।

(2)...... एक और अहम क़ाइदा है कि क़रीबी के होते हुए दूर वाला मह़रूम हो जाता है जैसे बेटे के होते हुए पोता, बाप के होते हुए दादा, भाई के होते हुए भाई की औलाद वग़ैरा।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِؕ وَ مَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ یُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۳﴾
وَ مَنْ یَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ یُدْخِلْهُ نَارًا
خَالِدًا فِیْهَا۪ وَ لَهٗ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ﴿۱۴﴾ ع

ركوع ۲ | ۱۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है

www.dawateislami.net

बड़ी काम्याबी और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की कुल ह़दों से बढ़ जाए **अल्लाह** उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और जो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल की इत़ाअ़त करे तो **अल्लाह** उसे जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे, और येही बड़ी काम्याबी है। और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की (तमाम) ह़दों से गुज़र जाए तो **अल्लाह** उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में (वोह) हमेशा रहेगा और उस के लिये रुस्वा कुन अ़ज़ाब है।

﴿تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ : **येह अल्लाह की ह़दें हैं।**﴾ विरासत के मसाइल को **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी हुदूद क़रार दिया और इन के तोड़ने को **अल्लाह** की ह़दें तोड़ना क़रार दिया। इस से मा'लूम हुवा कि मीरास की तक़्सीम में ज़ुल्म करना अ़ज़ाबे इलाही का बाइ़स है। इस से उन मुसल्मानों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये जो लड़कियों या दूसरे वारिसों को विरासत से मह़रूम करते हैं। ह़दीसे मुबारका है : "जो अपने वारिस को मीरास से मह़रूम करे **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उसे जन्नत में उस के ह़िस्से से मह़रूम कर देगा।"[1]

﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ : **और जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इत़ाअ़त करे तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाख़िल फ़रमाएगा।**﴾ इस आयत में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त पर जन्नत का वा'दा है और अगली आयत में ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी पर जहन्नम की वई़द है। इस से मा'लूम हुवा कि सरकारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी ह़राम है। नीज़ किसी भी ह़द्दे शरई़ को तोड़ना ह़राम है लेकिन तमाम हुदूद को तोड़ने वाला काफ़िर ही है या'नी जो ईमान की ह़द भी तोड़ देता है और अगली आयतों में येही मुराद है क्यूं कि वहां ना फ़रमान के लिये हमेशा जहन्नम में दाख़िले की वई़द है और जहन्नम में हमेशा काफ़िर ही रहेगा मुसल्मान नहीं।

1 ......ابن ماجه، كتاب الوصايا، باب الحيف في الوصية، ٣/٣٠٤، الحديث: ٢٧٠٣.

www.dawateislami.net

وَ الّٰتِیْ یَاْتِیْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآىٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَیْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِی الْبُیُوْتِ حَتّٰى یَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ یَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِیْلًا ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारी औ़रतों में जो बदकारी करें उन पर ख़ास अपने में के चार मर्दों की गवाही लो फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औ़रतों को घर में बन्द रखो यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या **अल्लाह** उन की कुछ राह निकाले।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हारी औ़रतों में से जो बदकारी कर लें उन पर अपनों में से चार मर्दों की गवाही लो फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औ़रतों को घर में बन्द कर दो यहां तक कि मौत उन (की ज़िन्दगी) को पूरा कर दे या **अल्लाह** उन के लिये कोई रास्ता बना दे।

﴿فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَیْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ : **उन पर अपनों में से चार मर्दों की गवाही लो।**﴾ मुसल्मानों में से जो औ़रतें ज़िना का इरतिकाब करें उन के बारे में हुक्म दिया गया कि उन पर ज़िना के सुबूत के लिये चार मुसल्मान मर्दों का गवाह होना ज़रूरी है जो औ़रतों के ज़िना पर गवाही दें और एक क़ौल येह है कि यहां हुक्काम से ख़ित़ाब है या'नी वोह चार मर्दों से गवाही सुनें।(1)

ज़िना के सुबूत के लिये गवाही की शराइत़

ज़िना का सुबूत गवाही से हो तो ज़रूरी है कि ज़िना के गवाह चार आ़क़िल, बालिग़, मुसल्मान मर्द हों कोई औ़रत न हो, चारों नेक और मुत्तक़ी हों, और उन्हों ने एक वक़्ते मुअ़य्यन में ज़िना का यूं मुशाहदा किया हो जैसे सुरमा दानी में सलाई नीज़ येह चारों गवाह ह़ल्फ़े शरई के साथ गवाही दें। अगर इन में से एक बात भी कम हुई तो ज़िना साबित न होगा और गवाही देने वाले शर्अ़न अस्सी अस्सी कोड़ों के मुस्तह़िक़ होंगे।(2)

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٥، ٣٥٧/١.

2 ...... फ़तावा रज़विय्या, 13/623 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

﴿فَاَمۡسِكُوۡهُنَّ فِی الۡبُیُوۡتِ﴾ **: उन औ़रतों को घर में बन्द कर दो ।** ज़ानिया औ़रतों को मौत आने तक घरों में क़ैद रखने का हुक्म ज़िना से मुतअ़ल्लिक़ कोड़ों और रज्म की सज़ा मुक़र्रर होने से पहले था जब ज़िना की ह़द के बारे में अह़काम नाज़िल हुए तो येह हुक्म मन्सूख़ हो गया ।(1)

ज़िना और क़ज़्फ़ की सज़ा का बयान सूरए नूर आयत नम्बर 2 और 4 में बयान हुवा है ।

ज़िना की मज़म्मत

इस आयत में ज़िना करने वालों की सज़ा से मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ अह़काम बयान हुए, इस मुनासबत से हम यहां ज़िना की मज़म्मत पर **4** अह़ादीस ज़िक्र करते हैं ताकि मुसल्मानों पर ज़िना की क़बाह़त व बुराई मज़ीद वाज़ेह़ हो और वोह इस बुरे फ़े'ल से बचने की कोशिश करें, चुनान्चे

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''जो औ़रत किसी क़ौम में उस को दाख़िल कर दे जो उस क़ौम से न हो (या'नी ज़िना कराया और उस से औलाद हुई) तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का ह़िस्सा नहीं मिलेगा और **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल न फ़रमाएगा ।''(2)

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''जिस बस्ती में ज़िना और सूद ज़ाहिर हो जाए तो उन्हों ने अपने लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब को ह़लाल कर लिया ।''(3)

(3)...... ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''जिस क़ौम में ज़िना ज़ाहिर होगा, वोह क़ह़त़ में गिरिफ़्तार होगी और जिस क़ौम में रिश्वत का ज़ुहूर होगा, वोह रो'ब में गिरिफ़्तार होगी ।''(4)

(4)...... ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''सातों आस्मान और सातों ज़मीनें बूढ़े ज़ानी पर ला'नत करती हैं और ज़ानियों की

---

1 ......تفسیرات احمدیہ، النساء، تحت الآیۃ: ۱۵، ص ۲۴۰.

2 ......ابو داؤد، کتاب الطلاق، باب التغلیظ فی الانتفاء، ۴۰۶/۲، الحدیث: ۲۲۶۳.

3 ......مستدرک، کتاب البیوع، اذا ظہر الزنا والربا فی قریۃ... الخ، ۳۳۹/۲، الحدیث: ۲۳۰۸.

4 ......مشکوۃ المصابیح، کتاب الحدود، الفصل الثالث، ۶۵۶/۱، الحدیث: ۳۵۸۲.

www.dawateislami.net

शर्मगाह की बदबू जहन्नम वालों को ईज़ा देगी।"(1)

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो मर्द औ़रत ऐसा काम करें उन को ईज़ा दो फिर अगर वोह तौबा कर लें और नेक हो जाएं तो उन का पीछा छोड़ दो बेशक **अल्लाह** बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम में जो मर्द औ़रत ऐसा काम करें उन को तक्लीफ़ पहुंचाओ फिर अगर वोह तौबा कर लें और अपनी इस्लाह़ कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो। बेशक **अल्लाह** बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, मेहरबान है।

﴿**فَاٰذُوْهُمَا : उन दोनों को तक्लीफ़ पहुंचाओ।**﴾ बे ह़याई का इरतिकाब करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ सज़ा का बयान करते हुए फ़रमाया कि उन्हें ईज़ा दो जैसे झिड़क कर, बुरा भला कह कर, शर्म दिला कर, जूतियां वग़ैरा मार कर ज़बानी और बदनी दोनों त़रह़ से ईज़ा दो। ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा देना मुक़र्रर की गई, फिर क़ैद करना, फिर कोड़े मारना या संगसार करना।(2)

येह आयत भी ह़द्दे ज़िना की आयत से मन्सूख़ है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि पिछली आयत में फ़ाह़िशा से मुराद ख़ुद औ़रत का औ़रत से बे ह़याई का काम करना है और "وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا" से मर्द का मर्द से लिवात़त करना मुराद है। इस सूरत में येह आयत मन्सूख़ नहीं बल्कि मोह़कम है और इस से येह भी मा'लूम हुवा कि लिवात़त और मुसाह़क़त (औ़रतों की औ़रतों से बे ह़याई) में ह़द मुक़र्रर नहीं बल्कि ता'ज़ीर है। या'नी क़ाज़ी की सवाब दीद पर है वोह जो चाहे सज़ा दे। येह ही इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा का क़ौल है।(3)

1 ......مجمع الزوائد، كتاب الحدود والديات، باب ذم الزنا، ٣٨٩/٦، الحديث: ١٠٥٤١.
2 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ١٦، ص٢١٧.
3 ......تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ١٦، ٥٢٨/٣، تفسيرات احمديه، النساء، تحت الآية: ١٦، ص٢٤٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

येही वज्ह है कि लिवातृत के मुर्तकिब को सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने मुख़्तलिफ़ सज़ाएं दीं अगर लिवातृत में ह़द होती तो एक ही सज़ा दी जाती इस में इख़्तिलाफ़ न होता। "**ह़द**" मख़्सूस होती है जैसे सो कोड़े, अस्सी कोड़े वग़ैरा। जब कि **ता'ज़ीर** वहां होती है जहां शरई ह़द मुक़र्रर न हो बल्कि क़ाज़ी की सवाब दीद पर छोड़ दिया जाए, चाहे तो दस कोड़े मारने का फ़ैसला कर दे और चाहे तो बीस का और चाहे तो कोई और सज़ा दे दे।

﴿فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا : **फिर अगर वोह तौबा कर लें और अपनी इस्लाह़ कर लें।**﴾ फ़रमाया गया कि बे ह़याई का इरतिकाब करने वाले अगर पिछले गुनाहों पर नादिम हो जाएं और आयिन्दा के लिये अपनी इस्लाह़ कर लें तो उन्हें छोड़ दो। इस से मा'लूम हुवा कि ता'ज़ीर का मुस्तह़िक़ मुजरिम अगर ता'ज़ीर से पहले सह़ीह़ मा'ना में तौबा कर ले तो उस पर ख़्वाह म ख़्वाह ता'ज़ीर लगाना ज़रूरी नहीं।

तौबा के मा'ना

तौबा के मा'ना होते हैं रुजूअ़ करना, लौटना। अगर येह बन्दे की सिफ़त हो तो मा'ना होंगे गुनाह या इरादए गुनाह से रुजूअ़ करना और अगर रब तआ़ला की सिफ़त हो तो मा'ना होंगे बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमाना या अपनी रह़मत को बन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह करना।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ یَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِیْبٍ فَاُولٰٓىٕكَ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَیْهِمْؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَكِیْمًا ﴿۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी देर में तौबा कर लें ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है।

www.dawateislami.net

﴿ثُمَّ يَتُوبُوْنَ مِن قَرِيْبٍ﴾ **: फिर थोड़ी देर में तौबा कर लें।** **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम रह़मत है कि गुनाह के बा'द तौबा करने पर मुआ़फ़ फ़रमा देता है और मौत के वक़्त तक तौबा क़बूल फ़रमाता है। यहां फ़रमाया गया कि जो गुनाह कर के थोड़ी देर में तौबा कर लें तो यहां थोड़ी देर से मुराद एकआध घन्टा या दो चार साल नहीं बल्कि मौत से पहले जब भी तौबा कर ली वोह क़रीब ही शुमार होगी। हां जब मौत का आ़लम त़ारी हो जाए और ग़ैब का मुआ़मला ज़ाहिर हो जाए तो उस वक़्त तौबा मक़्बूल नहीं।

﴿وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا﴾ **: और अल्लाह इल्मो ह़िक्मत वाला है।** इस्लाम में तौबा का क़ानून बनाना ऐन ह़िक्मत व इ़ल्म पर मब्नी है। जिन दीनों में तौबा नहीं उन के मानने वाले गुनाह पर ज़ियादा दिलेर होते हैं क्यूं कि मायूसी जुर्म पर दिलेर कर देती है और मुआ़फ़ी की उम्मीद तौबा पर उभारती है। जिस शख़्स को फांसी की सज़ा सुना दी गई हो उसे सब से जुदा क़ैद में रखा जाता है ताकि किसी और को क़त्ल न कर दे क्यूं कि वोह अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका है और जिसे एक मुक़र्ररा मुद्दत तक सज़ा के बा'द रिहाई का हुक्म हो उसे दीगर मुजरिमों के साथ क़ैद में रखा जाता है, उस से येह ख़त़रा नहीं होता क्यूं कि उसे रिहाई की उम्मीद है।(1)

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓىٕكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की और न उन की जो काफ़िर मरें उन के लिये हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन लोगों की तौबा नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहने लगे अब मैं ने तौबा की और न उन लोगों की (कोई तौबा है) जो कुफ़्र की ह़ालत में मरें। उन के लिये हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

1 ...... तौबा की तरग़ीब और फ़ज़ाइल व अह़काम वग़ैरा जानने के लिये किताब "तौबा की रिवायात व ह़िकायात" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

﴾وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ : **और तौबा क़बूल नहीं ।**﴿ ऊपर वाली आयत में तौबा की क़बूलिय्यत का जो वा'दा गुज़रा उस की वज़ाह़त कर दी गई, अब उन अफ़राद के बारे में बताया जा रहा है कि जिन की तौबा क़बूल न होगी । आयत में ''سَیِّاٰت'' से मुराद गुनाह हों तो मा'ना येह होगा कि जो लोग कुफ़्र के इलावा दीगर गुनाहों में मुलव्वस रहे जब मौत के आसार ज़ाहिर हुए, अ़ज़ाबाते इलाही का मुशाहदा कर लिया और रूह़ ह़ल्क़ तक आ पहुंची, अब तौबा करें तो मक़्बूल नहीं लेकिन येह वक़्त आने से एक लम्ह़ा पहले भी अगर तौबा कर ली तो क़बूल है और अगर उन मुसल्मानों की तौबा मक़्बूल न भी हो तब भी वोह अफ़राद हमेशा जहन्नम में न रहेंगे **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो उन्हें बख़्श दे, चाहे तो सज़ा दे लेकिन सज़ा पूरी होने के बा'द जन्नत में जाएंगे अलबत्ता वोह लोग जो काफ़िर मरे क़ियामत के दिन उन की तौबा क़बूल नहीं या'नी किसी सूरत नजात न पाएंगे, हमेशा हमेशा जहन्नम के अ़ज़ाब में मुब्तला रहेंगे । एक क़ौल येह है कि आयत में ''سَیِّاٰت'' से मुराद कुफ़्र है, इस सूरत मा'ना येह होगा कि वोह कुफ़्फ़ार जो मौत के आसार देख कर या'नी ग़ैब का मुशाहदा करने के बा'द अपने कुफ़्र से तौबा करें और अपने ईमान का इक़्रार करें तो उन की येह तौबा और इक़्रारे ईमान क़ाबिले क़बूल नहीं, ऐसी तौबा तो फ़िरऔ़न ने भी की थी यूंही वोह लोग जो ह़ालते कुफ़्र में मर गए या'नी ब वक़्ते मौत भी तौबा न की तो वोह हमेशा के लिये जहन्नम की सज़ा पाएंगे ।(1)

काफ़िर के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने का शरई हुक्म

जो किसी काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द उस के कुफ़्र का इ़ल्म होने की सूरत में दुआ़ए मग़्फ़िरत करे या किसी मुर्दा मुरतद को मर्हूम या मग़्फ़ूर कहे या किसी मरे हुए हिन्दू को बैकुंठ बाशी (या'नी जन्नती) कहे वोह ख़ुद काफ़िर है ।(2)

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : नबी और ईमान वालों के लाइक़ नहीं कि मुश्रिकों के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगें अगर्चे वोह रिश्तेदार हों जब कि उन के लिये वाज़ेह़ हो चुका है कि वोह दोज़ख़ी हैं ।

1 ......تفسیر قرطبی، النساء، تحت الآیة: ۱۸، ۳/۶۶، الجزء الخامس، تفسیر کبیر، النساء، تحت الآیة: ۱۸، ۴/۸، ملتقطاً.

2 ...... बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, ईमान व कुफ़्र का बयान, 1/185

3 ...... توبہ: ۱۱۳.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا يَحِلُّ لَـكُمۡ اَنۡ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرۡهًا‌ ؕ وَلَا تَعۡضُلُوۡهُنَّ لِتَذۡهَبُوۡا بِبَعۡضِ مَاۤ اٰتَيۡتُمُوۡهُنَّ اِلَّاۤ اَنۡ يَّاۡتِيۡنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ‌ ۚ وَعَاشِرُوۡهُنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ‌ ۚ فَاِنۡ كَرِهۡتُمُوۡهُنَّ فَعَسٰۤى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـئًا وَّيَجۡعَلَ اللّٰهُ فِيۡهِ خَيۡرًا كَثِيۡرًا ﴿۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम्हें ह़लाल नहीं कि औ़रतों के वारिस बन जाओ ज़बर दस्ती और औ़रतों को रोको नहीं इस निय्यत से कि जो महर उन को दिया था उस में से कुछ ले लो मगर इस सूरत में कि सरीह़ बे ह़याई का काम करें और उन से अच्छा बरताव करो फिर अगर वोह तुम्हें पसन्द न आएं तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द हो और **अल्लाह** उस में बहुत भलाई रखे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे लिये ह़लाल नहीं कि तुम ज़बर दस्ती औ़रतों के वारिस बन जाओ और औ़रतों को इस निय्यत से रोको नहीं कि जो महर तुम ने उन्हें दिया था उस में से कुछ ले लो सिवाए इस सूरत के कि वोह खुली बे ह़याई का इरतिकाब करें और उन के साथ अच्छे त़रीक़े से गुज़र बसर करो फिर अगर तुम्हें वोह ना पसन्द हों तो हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द हो और **अल्लाह** उस में बहुत भलाई रख दे।

﴿لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا﴾ **: तुम्हारे लिये ह़लाल नहीं कि तुम ज़बर दस्ती औ़रतों के वारिस बन जाओ।** इस्लाम से पहले अहले अ़रब का येह दस्तूर था कि लोग माल की त़रह़ अपने रिश्तेदारों की बीवियों के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो महर के बिग़ैर उन्हें अपनी ज़ौजिय्यत में रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और उन का महर ख़ुद ले लेते या उन्हें आगे शादी न करने देते बल्कि अपने पास ही रखते ताकि उन्हें जो माल विरासत में मिला है वोह इन लोगों को दे दें और तब येह उन की जान छोड़ें या औ़रतों को इस लिये रोक रखते कि येह मर जाएंगी तो येह रोकने वाले लोग उन के वारिस बन जाएं। अल ग़रज़ वोह औ़रतें इन के हाथ में बिल्कुल मजबूर होतीं और अपने इख़्तियार से कुछ भी न कर सकती थीं

www.dawateislami.net

इस रस्म को मिटाने के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई।[1]

﴿لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ : **ताकि जो महर तुम ने उन्हें दिया था उस में से कुछ ले लो**।﴾ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया येह आयत उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ है जो अपनी बीवी से नफ़रत रखता हो और उस के साथ बद सुलूकी इस लिये करता हो कि वोह परेशान हो कर महर वापस कर दे या महर मुआ़फ़ कर दे, इस से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमा दिया। एक क़ौल येह है कि लोग औ़रत को त़लाक़ देते फिर रुजूअ़ कर लेते फिर त़लाक़ देते इस त़रह़ औ़रत को मुअ़ल्लक़ (लटका हुवा) रखते थे, वोह न उन के पास आराम पा सकती न दूसरी जगह शादी कर के घर बसा सकती, इस को मन्अ़ फ़रमाया गया।[2]

बीवियों पर ज़ुल्मो सितम करने वाले ग़ौर करें

यहां जो ह़ालात ज़मानए जाहिलिय्यत के बयान किये जा रहे हैं उन पर ग़ौर करें कि क्या उन्ही ह़ालात पर इस वक़्त हमारा मुआ़शरा नहीं चल रहा। बीवियों को तंग करना, जब्री त़ौर पर महर मुआ़फ़ करवाना, उन के ह़ुक़ूक़ अदा न करना, ज़ेह्नी अज़िय्यतें देना, कभी औ़रत को उस के मां बाप के घर बिठा देना और कभी अपने घर में रख कर बातचीत बन्द कर देना, दूसरों के सामने डांट डपट करना, लताड़ना, झाड़ना वग़ैरा। औ़रत बेचारी शौहर के पीछे पीछे फिर रही होती है और शौहर साहिब फ़िरऔ़न बने आगे आगे जा रहे होते हैं, औ़रत के घर वालों से सराह़तन बीवी के ज़रीए़ नित नए मुत़ालबे किये जाते हैं, कभी कुछ दिलाने और कभी कुछ दिलाने का। अल ग़रज़ ज़ुल्मो सितम की वोह कौन सी सूरत है जो हमारे घरों में नहीं पाई जा रही। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे कि क़ुरआन की येह आयतें उन लोगों को समझ आ जाएं और वोह अपनी इस बुरी रविश से बाज़ आ जाएं। नीज़ इन आयात की रोशनी में वोह लोग भी कुछ ग़ौर करें जो इस्लाम से शरमिन्दा शरमिन्दा से रहते हैं और ढके छुपे अल्फ़ाज़ में कहते हैं कि इस्लाम में औ़रतों पर बहुत सख़्तियां हैं। वोह देखें कि इस्लाम में औ़रतों पर सख़्तियां की गई हैं या इन्हें सख़्तियों से नजात दिलाई गई है?

﴿فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا : **तो हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द हो**।﴾ घरों को अम्न का गहवारा बनाने के लिये एक बहुत उ़म्दा नफ़्सियाती त़रीक़ा बयान किया जा रहा है। बीवी के ह़वाले से फ़रमाया कि अगर बद ख़ुल्क़ी या सूरत अच्छी न होने की वज्ह से औ़रत तुम्हें पसन्द

[1] ......بخاری ، کتاب التفسیر ، باب لا یحلّ لکم ان ترثوا النساء کرهًا ، ۲۰۳/۳ ، الحدیث: ۴۵۷۹، تفسیر قرطبی، النساء، تحت الآیۃ: ۱۹، ۶۷/۳، الجزء الخامس، ملتقطاً.

[2] ......خازن، النساء، تحت الآیۃ: ۱۹، ۳۶۰/۱.

www.dawateislami.net

न हो तो सब्र करो और बीवी को त़लाक़ देने में जल्दी न करो क्यूं कि मुम्किन है कि **अल्लाह** तआ़ला इसी बीवी से तुम्हें ऐसी औलाद दे जो नेक और फ़रमां बरदार हो, बुढ़ापे की बे कसी में तुम्हारा सहारा बने।

मुस्बत ज़ेहनी सोच के फ़वाइद

येह त़रीक़ा सिर्फ़ मियां बीवी के तअ़ल्लुक़ात में नहीं बल्कि ज़िन्दगी के हज़ारों मुआ़मलात में काम आता है। इस त़रीक़े को "मुस्बत ज़ेह्नी सोच" कहते हैं या'नी अगर किसी काम या चीज़ में ख़राबी की कोई सूरत पाई जा रही है तो उस के अच्छे पहलूओं पर भी ग़ौर कर लो। हो सकता है कि अच्छे पहलू ज़ियादा हों या अच्छा पहलू ज़ियादा फ़ाएदे मन्द हो मसलन किसी की बीवी बद सूरत है लेकिन उसी से आदमी को नेक औलाद ह़ासिल है, यहां अगर बद सूरती को गवारा कर ले तो उस की ज़िन्दगी अम्न से गुज़रेगी लेकिन अगर त़लाक़ दे दे तो नतीजा येह निकलेगा कि बीवी तो छूट ही जाएगी लेकिन उस के साथ बच्चे भी छूट जाएंगे और सारी ज़िन्दगी ऐसी तल्ख़ियों, ज़ेह्नी अज़िय्यतों, औलाद के ह़ुसूल की जंग और ह़ुक़ूक़ की लड़ाई में गुज़रेगी कि चौदह त़बक़ रोशन हो जाएंगे। यूंही किसी आदमी को इदारे में रखा हुवा है जो किसी वज्ह से ना पसन्द है लेकिन उसी की वज्ह से निज़ाम बहुत उ़म्दा चल रहा है, अब उस आदमी को रखना अगर्चे पसन्द नहीं लेकिन सिर्फ़ ना पसन्दीदगी की वज्ह से उसे निकाल देना पूरे निज़ाम को तबाह कर देगा तो ऐसी जगह फ़वाइद पर नज़र रखते हुए उसे बरदाश्त कर लेना ही बेहतर है। येह दो मिसालें अ़र्ज़ की हैं, इन को सामने रखते हुए ज़िन्दगी के बहुत से मुआ़मलात को ह़ल किया जा सकता है। सिर्फ़ "मुस्बत ज़ेह्नी सोच" पैदा करने की ज़रूरत है, हमारी ज़िन्दगी की बहुत सी तल्ख़ियां ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाएंगी। इसी "मुस्बत ज़ेह्नी सोच" का एक पहलू येह होता है कि आदमी परेशानियों की बजाए ने'मतों को सामने रखे या'नी आदमी अगर एक तक्लीफ़ में है तो उसी वक़्त में वोह लाखों ने'मतों और सेंकड़ों काम्याबियों में भी होता है तो क्या ज़रूरत है कि परेशानी और नाकामी की याद तो अपना वज़ीफ़ा बना ले और ख़ुशी और काम्याबी को भूले से भी न सोचे। इस नुस्ख़े पर अ़मल कर के देखें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दगी में ख़ुशियां ही ख़ुशियां भर जाएंगी।

www.dawateislami.net

فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَیْــٴًـا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो और उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो क्या उसे वापस लोगे झूट बांध कर और खुले गुनाह से।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम एक बीवी के बदले दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो। क्या तुम कोई झूट बांध कर और खुले गुनाह के मुरतकिब हो कर वोह लोगे।

﴿وَّاٰتَیْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا﴾ : **और तुम उसे ढेरों माल दे चुके हो।** चूंकि औ़रतों के हुक़ूक़ का बयान चल रहा है यहां मजीद इन के हुक़ूक़ बयान फ़रमाए गए हैं, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम्हारा इरादा बीवी को छोड़ने का हो तो महर की सूरत में जो माल तुम उसे दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो। अहले अ़रब में येह भी त़रीक़ा था कि अपनी बीवी के इ़लावा कोई दूसरी औ़रत उन्हें पसन्द आ जाती तो अपनी बीवी पर झूटी तोहमत लगाते ताकि वोह इस से परेशान हो कर जो कुछ ले चुकी है वापस कर दे और त़लाक़ ह़ासिल कर ले।[1]

इसी को फ़रमाया कि क्या तुम बोहतान और गुनाह के ज़रीए़ उन से माल लेना चाहते हो, येह ह़राम है। अलबत्ता येह याद रहे कि सूरए बक़रह की आयत नम्बर 229 की तफ़्सीर में वज़ाह़त से हम ख़ुलअ़ और दीगर सूरतों में माल लेने और न लेने की सूरतें बयान कर चुके हैं। उस का मुत़ालआ़ भी यहां कर लेना चाहिये।

ज़ियादा महर मुक़र्रर करना जाइज़ है

इस आयत में ढेरों माल देने का तज़्किरा है इस से साबित होता है कि ज़ियादा महर मुक़र्रर करना जाइज़ है अगर्चे बेहतर कम महर है या इतना महर कि जिस की अदाएगी आसान हो। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा बर सरे मिम्बर फ़रमाया : औ़रत के महर ज़ियादा मुक़र्रर न करो। एक औ़रत ने येही आयत पढ़ कर कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! **अल्लाह** हमें देता है और तुम मन्अ़ करते हो। इस पर ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़

1 ......بیضاوی، النساء، تحت الآیۃ: ۲۰، ۲/۱۶۳.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुम से हर शख़्स ज़ियादा समझदार है, (ऐ लोगो !) तुम जो चाहो महर मुक़र्रर करो।[1]

سُبۡحٰنَ اللہ ! ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की शाने इन्साफ़ और त़हारते नफ़्स किस क़दर आ'ला थी, **अल्लाह** तआ़ला हमें इन की पैरवी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

وَكَيۡفَ تَاۡخُذُوۡنَهٗ وَقَدۡ اَفۡضٰى بَعۡضُكُمۡ اِلٰى بَعۡضٍ وَّاَخَذۡنَ مِنۡكُمۡ مِّيۡثَاقًا غَلِيۡظًا ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क्यूंकर उसे वापस लोगे ह़ालां कि तुम में एक दूसरे के सामने बे पर्दा हो लिया और वोह तुम से गाढ़ा अ़ह्द ले चुकीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम वोह (माल) कैसे वापस ले सकते हो ह़ालां कि तुम (तन्हाई में) एक दूसरे से मिल चुके हो और वोह तुम से मज़बूत़ अ़ह्द (भी) ले चुकी हैं।

﴾وَكَيۡفَ تَاۡخُذُوۡنَهٗ : **और तुम वोह (माल) कैसे वापस ले सकते हो।**﴿ महर की वापसी का बयान करते हुए मज़ीद फ़रमाया तुम वोह माल औ़रतों से कैसे वापस ले सकते हो ह़ालां कि तुम तन्हाई में एक दूसरे से मिल चुके हो और वोह तुम से मज़बूत़ अ़ह्द भी ले चुकी हैं। वोह अ़ह्द **अल्लाह** तआ़ला का येह इर्शाद है :

فَاِمۡسَاكٌۢ بِمَعۡرُوۡفٍ اَوۡ تَسۡرِيۡحٌۢ بِاِحۡسَانٍ[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : कि अच्छे त़रीक़े से उन्हें रखोगे और अगर छोड़ोगे तो अच्छे त़रीक़े से छोड़ोगे।

ख़ल्वते सह़ीह़ा की ता'रीफ़ और इस का हुक्म

इस आयते मुबारका से येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ल्वते सह़ीह़ा हो जाने से पूरा महर देना पड़ता है। ख़ल्वते सह़ीह़ा येह है कि मियां बीवी किसी ऐसी जगह जम्अ़ हो जाएं जहां हम बिस्तरी करने से कोई चीज़ रुकावट न हो। इस मस्अले की मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 का मुत़ालआ़ कीजिये।

1 ......مدارک، النساء، تحت الآیۃ: ۲۰، ص۲۱۹.
2 ......بقرہ: ۲۲۹.

www.dawateislami.net

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّ مَقْتًاؕ وَ سَآءَ سَبِیْلًا۠ (۲۲)

ع٣

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बाप दादा की मन्कूहा से निकाह न करो मगर जो हो गुज़रा वोह बेशक बे हयाई और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने बाप दादा की मन्कूहा से निकाह न करो अलबत्ता जो पहले हो चुका (वोह मुआफ़ है।) बेशक येह बे हयाई और ग़ज़ब का सबब है, और येह बहुत बुरा रास्ता है।

﴾وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ﴿ **: और अपने बाप दादा की मन्कूहा से निकाह न करो।** ज़मानए जाहिलिय्यत में रवाज था कि बाप के इन्तिक़ाल के बा'द बेटा अपनी सगी मां को छोड़ कर बाप की दूसरी बीवी से शादी कर लेता था, इस आयत में ऐसा करने से मन्अ़ किया गया।(1)

यहां अगर निकाह से मुराद अ़क़्दे निकाह है तो मा'लूम हुवा कि सोतेली मां से निकाह हराम है अगर्चे बाप ने ख़ल्वत से पहले उसे त़लाक़ दे दी हो और अगर निकाह से मुराद सोहबत है तो मा'लूम हुवा कि जिस औ़रत से अपना बाप सोहबत करे ख़्वाह निकाह कर के या ज़िना की सूरत में या लौंडी बना कर बहर सूरत वोह औ़रत बेटे पर हराम है क्यूं कि येह बेटे की मां की त़रह है।

﴾مَا قَدْ سَلَفَ﴿ **: जो हो गुज़रा।** या'नी जाहिलिय्यत के ज़माने में तुम ने जो ऐसे निकाह कर लिये और अब वोह औ़रतें मर भी चुकीं तुम पर उस का गुनाह नहीं क्यूं कि वोह गुनाह क़ानून बनने से पहले थे। यहां एक मस्अला याद रखें कि अगर मजूसी इस्लाम लाए और उस के निकाह में अपनी मां या बहन है तो उसे छोड़ देना फ़र्ज़ है लेकिन उस ने ज़मानए कुफ़्र में जो निकाह किये हों, उन से जो औलाद हो चुकी हो वोह औलाद हलाली हो गई, क्यूं कि कुफ़्फ़ार पर इस त़रह के शरई अह़काम जारी नहीं।

1 ......تفسیر قرطبی، النساء، تحت الآیۃ: ۲۲، ۳/۷۳، الجزء الخامس.

www.dawateislami.net

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَ بَنٰتُكُمْ وَ اَخَوٰتُكُمْ وَ عَمّٰتُكُمْ وَ خٰلٰتُكُمْ وَ بَنٰتُ الْاَخِ وَ بَنٰتُ الْاُخْتِ وَ اُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِیْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَ اَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَ اُمَّهٰتُ نِسَآىٕكُمْ وَ رَبَآىٕبُكُمُ الّٰتِیْ فِیْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕكُمُ الّٰتِیْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ٘ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ٘ وَ حَلَآىٕلُ اَبْنَآىٕكُمُ الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْۙ وَ اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًاۙ (۲۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ह़राम हुई तुम पर तुम्हारी माएं और बेटियां और बहनें और फूफियां और ख़ालाएं और भतीजियां और भान्जियां और तुम्हारी माएं जिन्हों ने दूध पिलाया और दूध की बहनें और औ़रतों की माएं और उन की बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं उन बीबियों से जिन से तुम सोह़बत कर चुके हो फिर अगर तुम ने उन से सोह़बत न की हो तो उन की बेटियों में ह़रज नहीं और तुम्हारी नस्ली बेटों की बीबियें और दो बहनें इकठ्ठी करना मगर जो हो गुज़रा बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम पर ह़राम कर दी गईं तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं और तुम्हारी भतीजियां और तुम्हारी भान्जियां और तुम्हारी वोह माएं जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और दूध (के रिश्ते) से तुम्हारी बहनें और तुम्हारी बीवियों की माएं और तुम्हारी बीवियों की वोह बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं (जो उन बीवियों से हों) जिन से तुम हम बिस्तरी कर चुके हो फिर अगर तुम ने उन (बीवियों) से हम बिस्तरी न की हो तो उन की बेटियों से निकाह़ करने में तुम पर कोई ह़रज नहीं और तुम्हारे ह़क़ीक़ी बेटों की बीवियां और दो बहनों को इकठ्ठा करना (ह़राम है।) अलबत्ता जो पहले गुज़र गया। बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

www.dawateislami.net

﴿حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ﴾ : **तुम पर ह़राम कर दी गई तुम्हारी माएं ।** नसब की वज्ह से सात औ़रतें ह़राम है वोह येह हैं (1) मां, इसी त़रह़ वोह औ़रत जिस की त़रफ़ बाप या मां के ज़रीए़ से नसब बनता हो या'नी दादियां व नानियां ख़्वाह क़रीब की हों या दूर की सब माएं हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं। सोतेली माओं की हुरमत का ज़िक्र पहले हो चुका। (2) बेटी, पोतियां और नवासियां किसी दरजे की हों बेटियों में दाख़िल हैं। (3) बहन (4) फूफी (5) ख़ाला (6) भतीजी (7) भान्जी, इस में भान्जियां, भतीजियां और उन की औलाद भी दाख़िल है खुलासा येह है कि अपनी औलाद और अपने उसूल ह़राम हैं। इस की तसरीह़ ख़ुद इसी आयत में आगे आ रही है।

﴿وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ﴾ : **तुम्हारी वोह माएं जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया ।** रज़ाई रिश्ते दूध के रिश्तों को कहते हैं। रज़ाई माओं और रज़ाई बहन भाइयों से भी निकाह़ ह़राम है बल्कि रज़ाई भतीजे, भान्जे, ख़ाला, मामूं वग़ैरा सब से निकाह़ ह़राम है। ह़दीसे मुबारक में फ़रमाया गया कि जो रिश्ता नसब से ह़राम होता है वोह रज़ाअ़त से भी ह़राम होता है।[1]

﴿وَاُمَّهٰتُ نِسَآىٕكُمْ﴾ : **और तुम्हारी बीवियों की माएं ।** चार त़रह़ की औ़रतें मुसाहरत की वज्ह से ह़राम हैं और वोह येह हैं (1) वोह बीवी जिस से सोह़बत की गई हो उस की लड़कियां। (2) बीवी की मां, दादियां, नानियां। (3) बाप दादा वग़ैरा उसूल की बीवियां। (4) बेटे पोते वग़ैरा फ़ुरूअ़ की बीवियां।

﴿وَرَبَآىٕبُكُمُ﴾ : **और तुम्हारी सोतेली बेटियां ।** जिन बीवियों से सोह़बत कर ली हो उन की दूसरे शौहर से जो बेटी हो उस से निकाह़ ह़राम है अगर्चे वोह शौहर की परवरिश में न हो क्यूं कि परवरिश की क़ैद इत्तिफ़ाक़ी है मगर येह सोतेली लड़की सिर्फ़ शौहर के लिये ह़राम है, शौहर की औलाद के लिये ह़लाल और शौहर के लिये भी जब ह़राम है जब कि बीवी से सोह़बत कर ली हो और अगर बिग़ैर सोह़बत त़लाक़ दी या वोह फ़ौत हो गई तो उस की बेटी ह़लाल है।

1 ......بخاری، کتاب الشهادات، باب الشهادة علی الانساب... الخ، ۲/۱۹۱، الحدیث: ۲٦٤٥.

www.dawateislami.net

﴿وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ﴾ : **तुम्हारे ह़क़ीक़ी बेटों की बीवियां ।** इस से मा'लूम हुवा कि मुंह बोले बेटों की औ़रतों के साथ निकाह़ जाइज़ है और रज़ाई बेटे की बीवी भी ह़राम है क्यूं कि वोह नसबी बेटे के हुक्म में है और पोते परपोते भी बेटों में दाख़िल हैं।

﴿وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ﴾ : **और दो बहनों को इकठ्ठा करना ।** या'नी एक बहन निकाह़ में मौजूद है और दूसरी से निकाह़ कर लेना, येह ह़राम है और ह़दीस शरीफ़ में फूफी भतीजी और ख़ाला भान्जी को निकाह़ में जम्अ़ करना भी ह़राम फ़रमाया गया है।[1]

नोट : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द नम्बर 11 से और बहारे शरीअ़त हिस्सा 7 से "**मुह़र्रमात का बयान**" पढ़िये।

1 ......بخاری، کتاب النکاح، باب لا تنکح المرأة علی عمّتها، ۴۳۵/۳، الحدیث: ۵۱۰۹.

www.dawateislami.net

وَالْمُحْصَنٰتُ

5

पारह नम्बर...... 5

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ ۚ وَ اُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِیْنَ غَیْرَ مُسٰفِحِیْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِیْضَةً ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ فِیْمَا تَرٰضَیْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِیْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیْمًا حَكِیْمًا ﴿۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ह़राम हैं शौहर दार औ़रतें मगर काफ़िरों की औ़रतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं येह **अल्लाह** का नविश्ता है तुम पर और उन के सिवा जो रहीं वोह तुम्हें ह़लाल हैं कि अपने मालों के इ़वज़ तलाश करो क़ैद लाते न पानी गिराते तो जिन औ़रतों को निकाह़ में लाना चाहो उन के बंधे हुए मह्र उन्हें दो और क़रार दाद के बा'द अगर तुम्हारे आपस में कुछ रिज़ा मन्दी हो जाए तो इस में गुनाह नहीं बेशक **अल्लाह** इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और शौहर वाली औ़रतें तुम पर ह़राम हैं सिवाए काफ़िरों की औ़रतों के जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं। येह तुम पर **अल्लाह** का लिखा हुवा है और इन औ़रतों के इ़लावा सब तुम्हें ह़लाल हैं कि तुम उन्हें अपने मालों के ज़रीए़ निकाह़ करने को तलाश करो न कि ज़िना के लिये तो उन में से जिन औ़रतों से निकाह़ करना चाहो उन के मुक़र्ररा मह्र उन्हें दे दो और मुक़र्ररा मह्र के बा'द अगर तुम आपस में (किसी मिक़्दार पर) राज़ी हो जाओ तो इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं। बेशक **अल्लाह** इ़ल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।

﴿وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ **: और शौहर वाली औ़रतें**।﴾ उन औ़रतों का बयान जारी है जिन से निकाह़ ह़राम है, यहां बताया जा रहा है कि वोह औ़रत जिस का शौहर हो वोह दूसरे मर्द पर उस वक़्त तक ह़राम है जब तक पहले के निकाह़ या उस की इ़द्दत में हो अलबत्ता काफ़िरों की

वोह औ़रतें जिन के मुसल्मान मालिक बन जाएं वोह उन के लिये ह़लाल हैं, इस की सूरत येह है कि मैदाने जंग से कुफ़्फ़ार की औ़रतें गिरिफ़्तार हों और उन के शौहर दारुल ह़र्ब में हों तो बादशाहे इस्लाम या लश्कर का मजाज़ अमीर उन औ़रतों को मुजाहिदीन में तक़्सीम कर दे और जो क़ैदी औ़रत जिस मुजाहिद के ह़िस्से में आए वोह उस के लिये ह़लाल है कि मिल्क मुख़्तलिफ़ होने की वज्ह से उन का साबिक़ा निकाह़ ख़त्म हो गया, वोह औ़रत अगर ह़ामिला है तो वज़्ए़ ह़म्ल के बा'द वरना एक माहवारी आ जाने के बा'द उस से हम बिस्तरी कर सकता है।

जंगी क़ैदियों से मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम की ता'लीमात

फ़ी ज़माना जंगी क़ैदियों के साथ जो वह़शियाना सुलूक किया जाता है वोह किसी से ढका छुपा नहीं, उन पर जो ज़ुल्मो सितम ढाए जाते हैं उन का तसव्वुर तक लरज़ा देने वाला होता है। इस्लाम ने जंगी क़ैदियों के मस्अले में ऐसा बेहतरीन ह़ल पेश किया कि जिस की मिसाल कहीं नहीं मिलती, वोह येह कि जंग में क़ैद होने वाले मर्दों को ग़ुलाम बना लिया जाए और औ़रतों को लौंडियां, फिर उन्हें भूका प्यासा रखने, त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें देने या दिन रात उन से जब्री मज़दूरी लेने की बजाए उन के साथ ह़ुस्ने सुलूक की हिदायत की, बल्कि फ़िदया लिये बिग़ैर या फ़िदया ले कर ही सही उन्हें छोड़ देने की तरग़ीब भी दी, आज़ाद करने पर सवाब की बे शुमार बिशारतें सुनाईं, जंगी क़ैदियों को लौंडी ग़ुलाम बनाना लाज़िमी क़रार नहीं दिया बल्कि मुकाफ़ाते अ़मल के त़ौर पर सिर्फ़ इजाज़त दी क्यूं कि उस दौर में जंगी क़ैदियों को लौंडी ग़ुलाम बनाने का रवाज था जिस को ऊपर बयान कर्दा त़रीक़ों के मुत़ाबिक़ तदरीजन ख़त्म किया गया।

﴾وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ﴿ : **और इन के इलावा सब तुम्हारे लिये ह़लाल हैं।** ﴾ या'नी जिन औ़रतों से निकाह़ ह़राम है उन के इ़लावा तमाम औ़रतों से निकाह़ ह़लाल है। लेकिन येह याद रहे कि मज़ीद कुछ औ़रतें ऐसी हैं कि जिन का ज़िक्र मज़्कूरा बाला आयात में अगर्चे नहीं मगर उन से निकाह़ ह़राम है जैसे चार औ़रतों के निकाह़ में होते हुए पांचवीं से निकाह़, मुश्रिका औ़रत से निकाह़, तीन त़लाक़ें देने के बा'द ह़लाला से पहले उसी औ़रत से दोबारा निकाह़, इसी त़रह़ फूफी भतीजी, ख़ाला भान्जी को एक शख़्स के निकाह़ में जम्अ़ करना यूंही त़लाक़ या वफ़ात की इ़द्दत में निकाह़ करना ह़राम है अलबत्ता इन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम नहीं, निकाह़ में जो रुकावट है वोह ख़त्म होने के बा'द इन से निकाह़ हो सकता है।

www.dawateislami.net

﴿اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ﴾ : **तुम अपने मालों के ज़रीए तलाश करो ।** औरत से निकाह़ महर के बदले किया जाए और इस निकाह़ से मक़्सूद मह़ज़ लज़्ज़ते नफ़्स और शह्वत पूरा करना न हो बल्कि औलाद का हुसूल, नस्ल की बक़ा और अपने नफ़्स को ह़राम से बचाना मक़्सूद हो । यहां ज़ानी को तम्बीह की जा रही है क्यूं कि उस के पेशे नज़र येह बातें नहीं होतीं बल्कि उस का मक़्सूद सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिश की तक्मील होता है और यूं वोह अपने नुत्फ़े और माल को ज़ाएअ़ कर के दीनो दुन्या के ख़सारे में गिरिफ़्तार हो जाता है ।

महर के चन्द ज़रूरी मसाइल

इस आयत में महर का ज़िक्र हुवा इस मुनासबत से यहां महर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल ज़िक्र किये जाते हैं :

(1)...... महर की कम अज़ कम मिक़्दार दस दिरहम है, चांदी में इस का वज़्न दो तोले साढ़े सात माशे है, इस की जो क़ीमत बनती हो वोह महर की कम अज़ कम मिक़्दार है, ज़ियादा की कोई ह़द नहीं बाहमी रिज़ा मन्दी से जितना चाहे मुक़र्रर किया जा सकता है लेकिन येह ख़याल रखें कि महर इतना मुक़र्रर करें जितना दे सकते हों ।

(2)...... महर का माल होना ज़रूरी है और जो चीज़ माल नहीं वोह महर नहीं बन सकती, मसलन महर येह ठहरा कि शौहर औरत को क़ुरआने मजीद या इल्मे दीन पढ़ा देगा तो इस सूरत में महरे मिस्ल वाजिब होगा ।

(3)...... निकाह़ में महर का ज़िक्र ही न हुवा या महर की नफ़ी कर दी कि महर के बिग़ैर निकाह़ किया तो निकाह़ हो जाएगा और अगर ख़ल्वते सह़ीह़ा हो गई या दोनों में से कोई मर गया और निकाह़ के बा'द मियां बीवी में कोई महर तै नहीं पाया था तो महरे मिस्ल वाजिब है वरना जो तै पाया था वोह वाजिब है । महर से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

﴿فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ﴾ : **तो उन में से जिन औरतों से निकाह़ करना चाहो ।** या'नी जिन औरतों से तुम शरई निकाह़ कर के जिमाअ़ वग़ैरा का फ़ाएदा ह़ासिल करना चाहो तो उन्हें उन के मुक़र्रर कर्दा महर अदा करो ।

औरत से नफ़्अ़ उठाने की जाइज़ सूरतें

याद रहे कि इस्लाम में औरत से नफ़्अ़ उठाने की सिर्फ़ दो सूरतें जाइज़ हैं जो क़ुरआने पाक में बयान की गई हैं : (1) शरई निकाह़ के ज़रीए । (2) औरत जिस सूरत में लौंडी बन

www.dawateislami.net

जाए । लिहाज़ा इस के इलावा हर सूरत ह़राम है । शुरूए़ इस्लाम में कुछ वक़्त के लिये निकाह़ से कुछ मिलता जुलता मुआ़हदा कर के फ़ाएदा उठाने की इजाज़त थी लेकिन बा'द में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे क़ियामत तक के लिये ह़राम फ़रमा दिया । जैसा कि ह़ज़रते सबुरह जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं ने तुम्हें औ़रतों से (मुतआ़ की सूरत में) नफ़्अ़ उठाने की इजाज़त दी थी और अब **अल्लाह** तआ़ला ने इसे क़ियामत तक के लिये ह़राम कर दिया है तो जिस के पास कोई ऐसी औ़रत हो वोह उसे छोड़ दे और जो उन्हें दे चुके हो उस में से कुछ न लो ।[1]

और ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुतआ़ से मन्अ़ फ़रमा दिया ।[2]

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ع

रुकूअ़ 4

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में बे मक़्दूरी के बाइ़स जिन के निकाह़ में आज़ाद औ़रतें ईमान वालियां न हों तो उन से निकाह़ करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क हैं ईमान वाली कनीज़ें और

1 ......مسلم، کتاب النکاح، باب نکاح المتعۃ وبیان انّہ ابیح ثمّ نسخ... الخ، ص٧٢٩، الحدیث: ٢١(١٤٠٦).

2 ......ترمذی، کتاب النکاح، باب ما جاء فی نکاح المتعۃ، ٣٦٥/٢، الحدیث: ١١٢٤.

www.dawateislami.net

अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है तुम में एक दूसरे से है तो उन से निकाह़ करो उन के मालिकों की इजाज़त से और ह़स्बे दस्तूर उन के मह्र उन्हें दो क़ैद में आतियां न मस्ती निकालती और न यार बनाती जब वोह क़ैद में आ जाएं फिर बुरा काम करें तो उन पर उस सज़ा की आधी है जो आज़ाद औ़रतों पर है येह उस के लिये जिसे तुम में से ज़िना का अन्देशा है और सब्र करना तुम्हारे लिये बेहतर है और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम में से जो कोई इतनी क़ुदरत न रखता हो कि आज़ाद मुसल्मान औ़रतों से निकाह़ कर सके तो उन मुसल्मान कनीज़ों से निकाह़ कर ले जो तुम्हारी मिल्क हैं और **अल्लाह** तुम्हारे ईमान को खूब जानता है। तुम सब आपस में एक जैसे हो तो उन के मालिकों की इजाज़त से उन से निकाह़ कर लो और अच्छे त़रीक़े से उन्हें उन के मह्र दे दो इस ह़ाल में कि वोह निकाह़ करने वाली हों, न ज़िना करने वाली और न पोशीदा आशना बनाने वाली। फिर जब उन का निकाह़ हो जाए तो अगर वोह किसी बे ह़याई का इरतिकाब करें तो उन पर आज़ाद औ़रतों की निस्बत आधी सज़ा है। येह तुम में से उस शख़्स के लिये मुनासिब है जिसे बदकारी (में पड़ जाने) का अन्देशा है और तुम्हारा सब्र करना तुम्हारे लिये बेहतर है और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

﴿وَمَنۡ لَّمۡ یَسۡتَطِعۡ مِنۡكُمۡ طَوۡلًا : **और तुम में से जो कोई क़ुदरत न रखता हो।**﴾ जो शख़्स आज़ाद औ़रत से निकाह़ की क़ुदरत और वुस्अ़त न रखता हो तो उसे चाहिये कि वोह किसी मुसल्मान की मोमिना कनीज़ से उस के मालिक की इजाज़त के साथ निकाह़ कर ले। अपनी कनीज़ से निकाह़ नहीं हो सकता क्यूं कि वोह मालिक के लिये निकाह़ के बिग़ैर ही ह़लाल है।(1)

बांदी से निकाह़ करने के मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल

(1)...... जो शख़्स आज़ाद औ़रत से निकाह़ की क़ुदरत रखता हो उसे भी मुसल्मान कनीज़ से निकाह़ करना जाइज़ है अलबत्ता अगर आज़ाद औ़रत निकाह़ में हो तो अब बांदी से निकाह़ नहीं कर सकता।(2)

(2)...... अह़नाफ़ के नज़्दीक किताबिया लौंडी से निकाह़ भी कर सकता है जब कि मोमिना कनीज़ के साथ मुस्तह़ब है।(3)

﴿وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِاِیۡمَانِكُمۡ : **और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है।**﴾ अहले अ़रब अपने

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٢٥، ١/٣٦٧. 2 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٢٥، ١/٣٦٨.

3 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ٢٥، ص٢٢٢.

www.dawateislami.net

नसब पर फ़ख़्र करते और लौंडियों से निकाह़ को बाइ़से आ़र समझते थे, उन के इस ख़याल की तरदीद की गई कि नसब में तुम सब बराबर हो कि सभी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद हो लिहाज़ा लौंडियों से निकाह़ करना बाइ़से शर्म नहीं। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि तुम सब ईमान में मुश्तरक हो कि तुम्हारा दीन इस्लाम है और ईमान वाला होना बड़ी फ़ज़ीलत का ह़ामिल है बल्कि फ़ज़ीलत का दारो मदार तो ईमान और तक़्वा पर है इस लिये जब लौंडियों से निकाह़ की ह़ाजत हो तो शरमाओ नहीं, उन का ईमान वाला होना काफ़ी है।(1)

﴿فَاِنْ اَتَیْنَ بِفَاحِشَةٍ﴾ **: तो अगर वोह किसी बे ह़याई का इरतिकाब करें।** निकाह़ के बा'द अगर लौंडी ज़िना करे तो आज़ाद औ़रत के मुक़ाबले में इस की सज़ा आधी है या'नी आज़ाद कुंवारी औ़रत ज़िना में मुलव्वस हो तो उस की सज़ा सो कोड़े है और लौंडी की सज़ा इस से आधी या'नी पचास कोड़े है। लौंडी चाहे कुंवारी हो या शादी शुदा इस की सज़ा पचास कोड़े ही है, शादी शुदा लौंडी को आज़ाद औ़रत की त़रह़ रज्म नहीं किया जाएगा क्यूं कि रज्म में तन्सीफ़ या'नी इस सज़ा को आधा करना मुम्किन नहीं।(2)

﴿ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ﴾ **: येह उस शख़्स के लिये मुनासिब है जिसे ज़िना का अन्देशा है।** या'नी आज़ाद औ़रत की बजाए बांदी से निकाह़ करना उस शख़्स के लिये मुनासिब है जिसे ग़लबए शह्वत की वज्ह से ज़िना में पड़ जाने का डर हो और अगर वोह इस ख़ौफ़ के बा वुजूद सब्र करे और परहेज़ गार रहे तो येह बेहतर है और जहां तक मुम्किन हो लौंडी से निकाह़ न करे क्यूं कि कनीज़ से निकाह़ करने की सूरत में जो औलाद होगी वोह उस के मालिक की ग़ुलाम बनेगी और लौंडी अपने मालिक की इजाज़त के बिग़ैर शौहर की ख़िदमत के लिये भी न आ सकेगी।(3)

फिर अगर सब्र नहीं कर सकता तो लौंडी से निकाह़ कर ले। याद रहे कि फ़ी ज़माना बैनल अक़्वामी त़ौर पर मर्द को ग़ुलाम और औ़रत को लौंडी बनाने का क़ानून ख़त्म हो चुका है।

निकाह़ का शरई़ ह़ुक्म

मर्द के लिये निकाह़ का शरई़ ह़ुक्म येह है कि ए'तिदाल की ह़ालत में या'नी न शह्वत का ज़ियादा ग़लबा हो और वोह नामर्द भी न हो, नीज़ महर और नान नफ़्क़ा देने पर क़ुदरत रखता हो तो उस के लिये निकाह़ करना सुन्नते मुअक्कदा है। लेकिन अगर उसे ज़िना में पड़ने

1 ......تفسیر کبیر، النساء، تحت الآیۃ: ۲۵، ۴۹/۴، جمل، النساء، تحت الآیۃ: ۲۵، ۳۹/۲، ملتقطاً.

2 ......قرطبی، النساء، تحت الآیۃ: ۲۵، ۱۰۲/۳، الجزء الخامس. 3 ......بیضاوی، النساء، تحت الآیۃ: ۲۵، ۱۷۴/۲.

www.dawateislami.net

का अन्देशा है और वोह ज़ौजिय्यत के हुक़ूक़ पूरे करने पर क़ादिर है तो उस के लिये निकाह़ करना वाजिब है और अगर उसे ज़िना में पड़ने का यक़ीन हो तो उस पर निकाह़ करना फ़र्ज़ है। अगर उसे ज़ौजिय्यत के हुक़ूक़ पूरे न कर सकने का अन्देशा हो तो उस का निकाह़ करना मक्रूह और हुक़ूक़ पूरे न कर सकने का यक़ीन हो तो उस के लिये निकाह़ करना ह़राम है।(1)

औ़रत के लिये निकाह़ का शर्ई हुक्म येह है कि जिस औ़रत को अपने नफ़्स से इस बात का ख़ौफ़ हो कि ग़ालिबन वोह शौहर की इत़ाअ़त न कर सकेगी और शौहर के वाजिब हुक़ूक़ उस से अदा न हो सकेंगे तो उसे निकाह़ करना मम्नूअ़ व ना जाइज़ है, अगर करेगी तो गुनाहगार होगी। अगर उसे इन चीज़ों का ख़ौफ़ यक़ीनी हो तो उसे निकाह़ करना ह़रामे क़त़ई है। जिस औ़रत को अपने नफ़्स से ऐसा ख़ौफ़ न हो उसे अगर निकाह़ की शदीद ह़ाजत है कि निकाह़ के बिग़ैर مَعَاذَ الله गुनाह में मुब्तला हो जाने का ज़न्ने ग़ालिब है तो ऐसी औ़रत को निकाह़ करना वाजिब है और अगर निकाह़ के बिग़ैर गुनाह में पड़ने का यक़ीने कुल्ली हो तो उस पर निकाह़ करना फ़र्ज़ है। अगर ह़ाजत की ह़ालत ए'तिदाल पर हो या'नी न निकाह़ से बिल्कुल बे परवाई हो, न इस शिद्दत का शौक़ हो कि निकाह़ के बिग़ैर गुनाह में पड़ने का ज़न्ने ग़ालिब हो तो ऐसी ह़ालत में उस के लिये निकाह़ करना सुन्नत है जब कि वोह अपने आप पर इस बात का काफ़ी इत़्मीनान रखती हो कि उस से शौहर की इत़ाअ़त तर्क न होगी और वोह शौहर के हुक़ूक़ अस्लन ज़ाएअ़ न करेगी।(2)

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ يَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** चाहता है कि अपने अह़काम तुम्हारे लिये साफ़ बयान कर दे और तुम्हें अगलों की रविशें बतावे और तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाए और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** चाहता है कि अपने अह़काम तुम्हारे लिये बयान कर दे और तुम्हें तुम से पहले लोगों के त़रीक़े बता दे और तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाए और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है।

1...... बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए हफ़्तुम, 2/4,5 मुलख़्ख़सन
2...... फ़तावा रज़विय्या, 12/291, 293 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

﴾ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ : **और तुम्हें तुम से पहले लोगों के त़रीक़े बता दे ।**﴿ इस से मुराद येह है कि मा क़ब्ल आयात में तुम्हारे लिये जो औ़रतें ह़राम या ह़लाल हैं बयान हुई येही औ़रतें पिछली शरीअ़तों में भी इसी त़रह़ ह़राम व ह़लाल थीं । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस से मुराद येह है कि तुम्हारे लिये जिस काम में बेहतरी है **अल्लाह** तआ़ला वोह बयान कर दे जैसा कि पहले लोगों से बयान किया था ।(1)

इस आयत से येह मा'लूम हुवा कि गुज़श्ता अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जो शरई़ अह़काम क़ुरआन या ह़दीस में तरदीद के बिग़ैर मन्क़ूल हुए वोह हमारे लिये भी लाइक़े अ़मल हैं और जो मुमानअ़त के साथ नक़्ल हुए उन पर हमें अ़मल जाइज़ नहीं ।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۫ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝٢٧

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाना चाहता है और जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वोह चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाना चाहता है और जो लोग अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी कर रहे हैं वोह चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत दूर हो जाओ ।

﴾ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ : **और जो लोग नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी कर रहे हैं ।**﴿ **शाने नुज़ूल :** यहूदो नसारा और मजूसी भाई और बहन की बेटियों से निकाह़ ह़लाल समझते थे जब **अल्लाह** तआ़ला ने इन से निकाह़ करने को ह़राम फ़रमाया तो वोह मुसल्मानों से कहने लगे कि जिस त़रह़ आप ख़ाला और फूफी की बेटी से निकाह़ जाइज़ समझते हो जब कि ख़ाला और फूफी तुम पर ह़राम है इसी त़रह़ तुम भाई और बहन की बेटियों से भी निकाह़ करो । इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि येह लोग चाहते हैं कि तुम भी उन की त़रह़ ज़िना में पड़ जाओ ।(2)

1 ......جمل، النساء، تحت الآية: ٢٦، ٢/٤١، خازن، النساء، تحت الآية: ٢٦، ١/٣٦٩، ملتقطاً.

2 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ٢٧، ص٢٢٣، تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ٢٧، ٤/٥٤-٥٥، جلالين، النساء، تحت الآية: ٢٧، ص٧٥، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह चाहता है कि तुम पर तख़्फ़ीफ़ करे और आदमी कमज़ोर बनाया गया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह चाहता है कि तुम पर आसानी करे और आदमी कमज़ोर बनाया गया है।

﴿يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ﴾ **: अल्लाह चाहता है कि तुम पर आसानी करे।** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर आसानी चाहता है इसी लिये उन्हें नर्म अह्काम अ़ता फ़रमाता है और कई जगह रुख़्सतें अ़ता फ़रमाता है, लोगों की ताक़त के मुताबिक़ ही उन्हें हुक्म देता है और उन के फ़ित्री तक़ाज़ों की रिआ़यत फ़रमाता है लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि इन्सान फ़ित्री तौ़र पर कमज़ोर पैदा किया गया है और इसी फ़ित्री कमज़ोरी का येह नतीजा है कि मर्द औ़रत की त़रफ़ बड़ी जल्दी माइल हो जाता है, इस के लिये औ़रत और शह्वत से सब्र दुश्वार है। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों पर रह्म फ़रमाते हुए मर्दों के लिये औ़रतों से शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए नफ़्अ़ उठाने की इजाज़त दी और सिर्फ़ उन औ़रतों से मन्अ़ किया जिन से नफ़्अ़ उठाने में फ़सादे अ़ज़ीम और बड़े नुक़्सान का ख़दशा था। इसी लिये मुत्तक़ी, परहेज़ गार और गुनाहों का तक़ाज़ा और मौक़अ़ मौजूद होने के बा वुजूद गुनाहों से बच रहने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बड़े मह़बूब हैं कि इन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपनी कमज़ोरी का मुक़ाबला किया और अपनी ख़्वाहिशात को पसे पुश्त डाला। तरग़ीब के लिये एक ऐसे ही मुत्तक़ी बुज़ुर्ग का वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है :

मुश्क की ख़ुश्बू में बसे हुए बुज़ुर्ग

बसरा में एक बुज़ुर्ग मिस्की या'नी "मुश्क की ख़ुश्बू में बसा हुवा" के नाम से मश्हूर थे, किसी ने ब इसरार उस ख़ुश्बू से मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : मैं कोई ख़ुश्बू नहीं लगाता, मेरा क़िस्सा बड़ा अ़जीब है, मैं बग़दादे मुअ़ल्ला का रहने वाला हूं, जवानी में बहुत ह़सीनो जमील था और साहिबे शर्मो ह़या भी। एक कपड़े वाले की दुकान पर मैं ने मुलाज़मत इख़्तियार की, एक रोज़ एक बुढ़िया आई और उस ने कुछ क़ीमती कपड़े निकलवाए और

www.dawateislami.net

दुकानदार से कहा : मैं इन कपड़ों को घर ले जाना चाहती हूं, इस नौ जवान को मेरे साथ भेज दें, जो कपड़े पसन्द आएंगे वोह रख लेंगे फिर उन की क़ीमत और बक़िय्या कपड़े इस नौ जवान के हाथ भेज देंगे। चुनान्चे मालिके दुकान के कहने पर मैं बुढ़िया के साथ हो लिया। वोह मुझे एक आ़लीशान कोठी पर ले आई और मुझे एक कमरे में बिठा दिया। कुछ देर बा'द एक नौ जवान औ़रत कमरे में दाख़िल हुई और उस ने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर दिया, फिर मेरे क़रीब बैठ गई, मैं घबरा कर निगाहें नीची किये फ़ौरन वहां से हट गया मगर उस पर शह्वत सुवार थी वोह मेरे पीछे पड़ गई, मैं ने बहुत कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर, वोह हमें देख रहा है लेकिन वोह मेरे साथ मुंह काला करने पर मुसिर थी। मेरे ज़ेह्न में इस गुनाह से बचने की एक तज्वीज़ आई तो मैं ने उस से कहा : मुझे बैतुल ख़ला जाने दो, उस ने इजाज़त दे दी। मैं ने बैतुल ख़ला में जा कर दिल मज़बूत कर के वहां की नजासत अपने हाथ मुंह और कपड़ों पर मल ली, अब जूं ही बाहर आया तो मेरी आ़शिक़ा घबरा कर भागी और कोठी में "पागल, पागल" का शोर उठा। मैं ने वहां से भाग कर एक बाग़ में पनाह ली, ग़ुस्ल किया और कपड़े पाक कर के वहां से चल दिया। रात जब मैं सोया तो ख़्वाब में देखा कि कोई आया है और मेरे चेहरे और लिबास पर अपना हाथ फेर रहा है और कह रहा है : मुझे जानते हो मैं कौन हूं ? सुनो ! मैं जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام हूं। जब मेरी आंख खुली तो मेरे सारे बदन और लिबास में ख़ुश्बू आ रही थी जो आज तक क़ाइम है और येह सब हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के हाथ की बरकत है।(1)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۫ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ मगर येह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी का हो और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक **अल्लाह** तुम पर मेहरबान है।

1 ......روض الرياحين، الحكاية السابعة عشرة بعد الاربع مائة، ص ٣٣٤-٣٣٥.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! बातिल त़रीक़े से आपस में एक दूसरे के माल न खाओ अलबत्ता येह (हो) कि तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी से तिजारत हो और अपनी जानों को क़त्ल न करो। बेशक **अल्लाह** तुम पर मेहरबान है।

﴿لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ : **बातिल त़रीक़े से आपस में एक दूसरे के माल न खाओ।**﴾ निकाह़ के ज़रीए़ नफ़्स में तसर्रुफ़ की वज़ाह़त के बा'द अब माल में तसर्रुफ़ का शरई त़रीक़ा बयान किया जा रहा है, इस आयत में बातिल त़रीक़े से मुराद वोह त़रीक़ा है जिस से माल ह़ासिल करना शरीअ़त ने ह़राम क़रार दिया है जैसे सूद, चोरी और जूए के ज़रीए़ माल ह़ासिल करना, झूटी क़सम, झूटी वकालत, ख़ियानत और ग़स्ब के ज़रीए़ माल ह़ासिल करना और गाने बजाने की उजरत येह सब बातिल त़रीक़े में दाख़िल और ह़राम है। यूंही अपना माल बातिल त़रीक़े से खाना या'नी गुनाह व ना फ़रमानी में ख़र्च करना भी इस में दाख़िल है।[(1)]

इसी त़रह़ रिश्वत का लेन देन करना, डन्डी मार कर सौदा बेचना, मिलावट वाला माल फ़रोख़्त करना, क़र्ज़ दबा लेना, डाका ज़नी, भत्ताख़ोरी और परचियां भेज कर हिरासां कर के माल वुसूल करना भी इस में शामिल है।

ह़राम माल कमाने की मज़म्मत

ह़राम कमाना और खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सख़्त ना पसन्दीदा है और अह़ादीस में इस की बड़ी सख़्त वईदें बयान की गई हैं, उन में से 4 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं,

(1)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो बन्दा माले ह़राम ह़ासिल करता है, अगर उस को सदक़ा करे तो मक़्बूल नहीं और ख़र्च करे तो उस के लिये उस में बरकत नहीं और अपने बा'द छोड़ कर मरे तो जहन्नम में जाने का सामान है। **अल्लाह** तआ़ला बुराई से बुराई को नहीं मिटाता, हां नेकी से बुराई को मिटा देता है। बेशक ख़बीस को ख़बीस नहीं मिटाता।"[(2)]

(2)...... ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने उस जिस्म पर जन्नत ह़राम फ़रमा दी

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٢٩، ١/٣٧٠.

2 ......مسند امام احمد، مسند عبد الله بن مسعود رضى الله تعالى عنه، ٢/٣٣، الحديث: ٣٦٧٢.

www.dawateislami.net

है जो ह़राम ग़िज़ा से पला बढ़ा हो ।[1]

(3)...... ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सा'द ! अपनी ग़िज़ा पाक कर लो ! मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! बन्दा ह़राम का लुक़्मा अपने पेट में डालता है तो उस के 40 दिन के अ़मल क़बूल नहीं होते और जिस बन्दे का गोश्त ह़राम से पला बढ़ा हो उस के लिये आग ज़ियादा बेहतर है ।"[2]

(4)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स का ज़िक्र किया जो लम्बा सफ़र करता है, उस के बाल परागन्दा और बदन ग़ुबार आलूद है और वोह अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ उठा कर या रब ! या रब ! पुकार रहा है ह़ालां कि उस का खाना ह़राम, पीना ह़राम, लिबास ह़राम और ग़िज़ा ह़राम हो फिर उस की दुआ़ कैसे क़बूल होगी ।[3]

﴾ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ : **मगर येह कि तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी से तिजारत हो ।**﴿

या'नी बाहमी रिज़ा मन्दी से जो तिजारत करो वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है । बाहमी रिज़ा मन्दी की क़ैद से मा'लूम हुवा कि ख़रीदो फ़रोख़्त की वोह तमाम सूरतें जिन में फ़रीक़ैन की रिज़ा मन्दी न हो दुरुस्त नहीं जैसे अक्सर ज़ब्त़ शुदा चीज़ों की नीलामी ख़रीदना कि इस में मालिक राज़ी नहीं होता यूंही किसी की दुकान, मकान ज़मीन या जाएदाद पर जब्री क़ब्ज़ा कर लेना ह़राम है । याद रहे कि माल का मालिक बनने के तिजारत के इ़लावा और भी बहुत से जाइज़ अस्बाब हैं जैसे तोह़फ़े की सूरत में, वसिय्यत या विरासत में माल ह़ासिल हो तो येह भी जाइज़ माल है । तिजारत का बत़ौरे ख़ास इस लिये ज़िक्र किया गया कि येह मालिक बनने की इख़्तियारी सूरत है ।

तिजारत के फ़ज़ाइल

अह़ादीस में तिजारत के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 4 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

1 ......كنز العمال، كتاب البيوع، قسم الاقوال، ٨/٢، الجزء الرابع، الحديث: ٩٢٥٧.
2 ......معجم الاوسط، من اسمه محمد، ٣٤/٥، الحديث: ٦٤٩٥.
3 ......مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقة من الكسب الطيب وتربيتها، ص٥٠٦، الحديث: ٦٥(١٠١٥).

www.dawateislami.net

(1)...... हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सच्चा और अमानत दार ताजिर अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, सिद्दीक़ीन और शुहदा के साथ होगा।"(1)

(2)...... हज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पाकीज़ा कमाई उन ताजिरों की है जो गुफ़्तगू के वक़्त झूट नहीं बोलते, वा'दा करें तो ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं करते, जब उन के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत नहीं करते, जब कोई चीज़ ख़रीदें तो उस की बुराई बयान नहीं करते और जब कुछ बेचें तो उस की ता'रीफ़ नहीं करते, जब उन पर किसी का आता हो तो देने में पसो पेश नहीं करते और जब उन्हों ने किसी से लेना हो तो उस पर तंगी नहीं करते।"(2)

(3)...... हज़रते रिफ़ाआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन ताजिर फ़ासिक़ उठाए जाएंगे सिवाए उस ताजिर के जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे, भलाई करे और सच बोले।"(3)

(4)...... हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम से पहले लोगों में एक शख़्स था जिस के पास उस की रूह क़ब्ज़ करने फ़िरिश्ता आया तो उस से कहा गया : क्या तू ने कोई नेकी की है ? वोह बोला : मैं नहीं जानता। उस से कहा गया : ग़ौर तो कर। कहने लगा : इस के सिवा कुछ और नहीं जानता कि मैं दुन्या में लोगों से तिजारत करता था और उन से (अपनी रक़म का) तक़ाज़ा करता तो अमीर को मोहलत देता था और ग़रीब को मुआ़फ़ कर देता था, **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़िरिश्तो ! इस से दर गुज़र करो।"(4)

तिजारत के आदाब

इस से पहले तिजारत के फ़ज़ाइल बयान किये गए और ज़ैली सुतूर में तिजारत के 14 आदाब बयान किये गए हैं जिन में से अक्सर आदाब ऐसे हैं जिन पर अ़मल करना हर ताजिर के लिये शरअ़न लाज़िम है :

1......ترمذی، کتاب البیوع، باب ما جاء فی التجار وتسمیة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ایاھم، ۵/۳، الحدیث: ۱۲۱۲.

2......در منثور، النساء، تحت الآیۃ: ۲۹، ۴۹۵/۲.

3......ترمذی، کتاب البیوع، باب ما جاء فی التجار وتسمیة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ایاھم، ۵/۳، الحدیث: ۱۲۱۴.

4......مسند امام احمد، حدیث حذیفة بن الیمان، ۹۸/۹، الحدیث: ۲۳۴۱۳، مسلم، کتاب المساقاة والمزارعة، باب فضل انظار المعسر، ص۸۴۳، الحدیث: ۲۶(۱۵۶۰).

www.dawateislami.net

(1)...... ताजिर को चाहिये कि वोह रोज़ाना सुब्ह् के वक़्त अच्छे इरादे या'नी निय्यतें दिल में ताज़ा करे कि बाज़ार इस लिये जाता हूं ताकि ह़लाल कमाई से अपने अहलो इ़याल की शिकम परवरी करूं और वोह मख़्लूक़ से बे नियाज़ हो जाएं और मुझे इतनी फ़रागत मिल जाए कि मैं **अल्लाह** तआ़ला की बन्दगी करता रहूं और राहे आख़िरत पर गामज़न रहूं। नीज़ येह भी निय्यत करे कि मैं मख़्लूक़ के साथ शफ़्क़त, ख़ुलूस और अमानत दारी करूंगा, नेकी का हुक्म दूंगा, बुराई से मन्अ़ करूंगा और ख़ियानत करने वाले से बाज़पुर्स करूंगा।

(2)...... तिजारत करने वाला जा'ली और अस्ली नोटों को पहचानने का त़रीक़ा सीखे और न ख़ुद जा'ली नोट ले न किसी और को दे ताकि मुसल्मानों का ह़क़ ज़ाएअ़ न हो।

(3)...... अगर कोई जा'ली नोट दे जाए (और देने वाले का पता न चले) तो वोह किसी और को नहीं देना चाहिये (और अगर देने वाले का पता चल जाए तो उसे भी वोह जा'ली नोट वापस नहीं देना चाहिये) बल्कि फाड़ के फेंक दे ताकि वोह किसी और को धोका न दे सके।

(4)...... अपने माल की ह़द से ज़ियादा ता'रीफ़ न करे कि येह झूट और फ़रेब है और अगर ख़रीदार उस माल की सिफ़ात से पहले ही आगाह हो तो उस की जाइज़ और सह़ीह़ ता'रीफ़ भी न करे कि येह फ़ुज़ूल है।

(5)...... ऐबदार माल ही न ख़रीदे अगर ख़रीदे तो दिल में येह अ़ह्द करे कि मैं ख़रीदार को तमाम ऐब बता दूंगा और अगर किसी ने मुझे धोका दिया तो उस नुक़्सान को अपनी ज़ात तक मह़दूद रखूंगा दूसरों पर न डालूंगा क्यूं कि जब येह ख़ुद धोकाबाज़ पर ला'नत कर रहा है तो अपनी ज़ात को दूसरों की ला'नत में शामिल नहीं करना चाहिये।

(6)...... अगर अपने पास मौजूद सह़ीह़ माल में कोई ऐब पैदा हो गया तो उसे गाहक से न छुपाए वरना ज़ालिम और गुनाहगार होगा।

(7)...... वज़्न करने और नापने में फ़रेब न करे बल्कि पूरा तोले और पूरा नापे।

(8)...... अस्ल क़ीमत को छुपा कर किसी आदमी को क़ीमत में धोका नहीं देना चाहिये।

(9)...... बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ न ले अगर्चे ख़रीदार किसी मजबूरी की वज्ह से उस ज़ियादती पर राज़ी हो।

(10)...... मोह़ताजों का माल ज़ियादा क़ीमत से ख़रीदे ताकि उन्हें भी मसर्रत नसीब हो जैसे बेवा का सूत और वोह फल जो फ़ुक़रा के हाथ से वापस आया हो क्यूं कि इस त़रह़ की चश्म पोशी सदक़े से भी ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती है।

www.dawateislami.net

(11)...... क़र्ज़ ख़्वाह के तक़ाज़े से पहले उस का क़र्ज़ अदा कर दे और उसे अपने पास बुला कर देने की बजाए उस के पास जा कर दे ।

(12)...... जिस शख़्स से मुआमला करे, अगर वोह मुआमले के बा'द परेशान हो तो उस से मुआमला फ़स्ख़ कर दे ।

(13)...... दुन्या का बाज़ार उसे आख़िरत के बाज़ार से न रोके और आख़िरत का बाज़ार मसाजिद हैं ।

(14)...... बाज़ार में ज़ियादा देर रहने की कोशिश न करे मसलन सब से पहले जाए और सब के बा'द आए ।[1]

﴿وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ﴾ **: और अपनी जानों को क़त्ल न करो ।** या'नी ऐसे काम कर के जो दुन्या व आख़िरत में हलाकत का बाइस हों अपनी जानों को क़त्ल न करो ।[2]

ख़ुद को हलाक करने की सूरतें

ख़ुद को हलाक करने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, और उन में से 4 सूरतें दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... मुसल्मानों का एक दूसरे को क़त्ल करना ख़ुद को हलाक करना है क्यूं कि अहादीस में मुसल्मानों को एक जिस्म की मानिन्द फ़रमाया गया है, जैसा कि ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम मुसल्मानों को देखोगे कि वोह एक दूसरे पर रहम करने, दोस्ती रखने और शफ़्क़त का मुज़ाहरा करने में एक जिस्म की मानिन्द होंगे चुनान्चे जिस्म के जब किसी भी हिस्से को तक्लीफ़ पहुंचती है तो सारा जिस्म जागने और बुख़ार वग़ैरा में उस का शरीक होता है ।"[3]

ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ही रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान (बाहम) एक शख़्स की त़रह़ हैं, अगर उस की आंख में तक्लीफ़ हो तो उस के सारे जिस्म को तक्लीफ़ होती है और अगर उस के सर में तक्लीफ़ हो तो उस के सारे जिस्म को तक्लीफ़ होती है ।"[4]

जब मुसल्मान एक जिस्म की त़रह़ हैं तो एक मुसल्मान का दूसरे मुसल्मान को क़त्ल करना ऐसा है जैसे उस ने ख़ुद को क़त्ल किया ।

---

1 ......كيميائے سعادت، رکن دوم در معاملات، اصل سوم آداب کسب، ۳۲۶/۱-۳۴۰، ملتقطاً.

2 ......خازن، النساء، تحت الآية: ۲۹، ۳۷۰/۱.

3 ......بخاری، کتاب الادب، باب رحمة الناس والبهائم، ۱۰۳/۴، الحديث: ۶۰۱۱.

4 ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تراحم المؤمنين وتعاطفهم وتعاضدهم، ص۱۳۹۶، الحديث: ۶۷(۲۵۸۶).

www.dawateislami.net

(2)......ऐसा काम करना जिस की सज़ा में उसे क़त्ल कर दिया जाए जैसे किसी मुसल्मान को क़त्ल करना, शादी शुदा होने के बा वुजूद ज़िना करना या मुरतद होना भी ख़ुद को हलाक करने की सूरतें हैं। याद रहे कि ज़िना करना और किसी मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करना कबीरा गुनाह है, ज़िना के बारे में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे हयाई है और बहुत ही बुरा रास्ता है।

और किसी मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करने वाले के बारे में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो किसी मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उस का बदला जहन्नम है अ़र्सए दराज़ तक उस में रहेगा और **अल्लाह** ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

और मुरतद होने वालों के बारे में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम में जो कोई अपने दीन से मुरतद हो जाए फिर काफ़िर ही मर जाए तो उन लोगों के तमाम आ'माल दुन्या व आख़िरत में बरबाद हो गए और वोह दोज़ख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे।

(3)...... ख़ुद को हलाक करने की तीसरी सूरत ख़ुदकुशी करना है। ख़ुदकुशी भी ह़राम है ह़दीस शरीफ़ में है : ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की आग में अपना गला घोंटता रहेगा और जिस ने ख़ुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में ख़ुद को नेज़ा मारता रहेगा।"(4)

1......بنی اسرائیل:۳۲. 2......النساء:۹۳. 3......بقرہ:۲۱۷.

4......بخاری، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی قاتل النفس، ۱/۴۶۰، الحدیث: ۱۳۶۵.

www.dawateislami.net

इन ही से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो पहाड़ से गिर कर ख़ुदकुशी करेगा वोह नारे दोज़ख़ में हमेशा गिरता रहेगा और जो शख़्स ज़हर खा कर ख़ुदकुशी करेगा वोह जहन्नम की आग में हमेशा ज़हर खाता रहेगा। जिस ने लोहे के हथियार से ख़ुदकुशी की तो दोज़ख़ की आग में वोह हथियार उस के हाथ में होगा और वोह उस से अपने आप को हमेशा ज़ख़्मी करता रहेगा।"[1]

(4)...... ऐसा काम करना जिस के नतीजे में काम करने वाला दुन्या या आख़िरत में हलाकत में पड़ जाए जैसे भूक हड़ताल करना या बातिल तरीक़े से माल खाना वग़ैरा। चुनान्चे हज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मुझे ग़ज़्वए ज़ातुस्सलासिल के वक़्त एक सर्द रात में एह़तिलाम हो गया, मुझे ग़ुस्ल करने की सूरत में (सर्दी से) हलाक होने का ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा तो मैं ने तयम्मुम कर लिया और अपने साथियों के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली। उन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अ़म्र ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, तुम ने अपने साथियों के साथ इस ह़ाल में नमाज़ पढ़ ली कि तुम जुनुबी थे।" मैं ने ग़ुस्ल न करने का उ़ज़्र बयान किया और अ़र्ज़ की : मैं ने **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान सुना है :

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِیْمًا [2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपनी जानों को क़त्ल न करो, बेशक **अल्लाह** तुम पर मेहरबान है।

येह सुन कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और कुछ न फ़रमाया।[3]

وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِیْهِ نَارًاؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرًا ۳۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अ़न्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह **अल्लाह** को आसान है।

1 ......بخاری، کتاب الطب، باب شرب السمّ والدواء به... الخ، ٤/٤٣، الحدیث: ٥٧٧٨.

2 ......النساء: ٢٩. 3 ......ابو داؤد، کتاب الطهارة، باب اذا خاف الجنب البرد... الخ، ١/١٥٣، الحدیث: ٣٣٤.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अन्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह **अल्लाह** पर बहुत आसान है।

﴿ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا ﴾ **: और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा।** यहां ज़ुल्मो ज़ियादती की क़ैद इस लिये लगाई कि जिन सूरतों में मोमिन का क़त्ल जाइज़ है उस सूरत में क़त्ल करना जुर्म नहीं जैसे मुरतद को सज़ा में या क़ातिल को क़िसास में या शादी शुदा ज़ानी को संगसार करने में या डाकू को मुक़ाबले या सज़ा में या बाग़ियों को लड़ाई में क़त्ल करना येह सब हुकूमत के लिये जाइज़ है बल्कि हुकूमत को इस का हुक्म है। क़त्ल के बारे में मज़ीद तफ़्सील सूरए माइदह की मुतअ़द्दद आयात के तहत आएगी।

إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमानअ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर कबीरा गुनाहों से बचते रहो जिन से तुम्हें मन्अ़ किया जाता है तो हम तुम्हारे दूसरे गुनाह बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

﴿ إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَآئِرَ ﴾ **: अगर कबीरा गुनाहों से बचते रहो।** इस से पहली आयात में बा'ज़ कबीरा गुनाह करने पर वईद बयान की गई और इस आयत में कबीरा गुनाहों से बचने पर (सग़ीरा गुनाह बख़्शने और इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करने का) वा'दा ज़िक्र किया गया है।[1]

कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ और ता'दाद

कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ येह है कि वोह गुनाह जिस का मुरतकिब क़ुरआनो सुन्नत में बयान की गई किसी ख़ास सख़्त वईद का मुस्तहिक़ हो।[2]

1 ......البحر المحيط، النساء، تحت الآية: ٣٠، ٣/٢٤٣. 2 ......الزواجر، مقدمة فى تعريف الكبيرة، ١/١٢.

www.dawateislami.net

कबीरा गुनाहों की ता'दाद मुख़्तलिफ़ बयान की गई है चुनान्चे **7**, **10**, **17**, **40**, और **700** तक बयान की गई है।

गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ 3 अहादीस

(1)...... हज़रते अबू सा'लबा ख़ुशनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने कुछ फ़राइज़ मुक़र्रर किये हैं लिहाज़ा तुम उन्हें हरगिज़ ज़ाएअ़ न करो, कुछ चीज़ें ह़राम की हैं उन्हें हरगिज़ हलका न जानो, कुछ ह़दें क़ाइम की हैं तुम हरगिज़ उन से तजावुज़ न करो, और उस ने तुम पर रह़मत फ़रमाते हुए जान बूझ कर कुछ चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ कुछ नहीं फ़रमाया तो उन की जुस्त्जू न करो।"(1)

(2)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्ता लगा दिया जाता है, जब वोह उस गुनाह से बाज़ आ जाता है और तौबा व इस्तिग़्फ़ार कर लेता है तो उस का दिल साफ़ हो जाता है और अगर वोह फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि पूरा दिल सियाह हो जाता है।"(2)

(3)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "ऐ गुनाहगार ! तू गुनाह के अन्जामे बद से क्यूं बेख़ौफ़ है ? ह़ालां कि गुनाह की त़लब में रहना गुनाह करने से भी बड़ा गुनाह है, तेरा दाईं, बाईं जानिब के फ़िरिश्तों से ह़या न करना और गुनाह पर क़ाइम रहना भी बहुत बड़ा गुनाह है या'नी तौबा किये बिग़ैर तेरा गुनाह पर काइम रहना इस से भी बड़ा गुनाह है, तेरा गुनाह कर लेने पर ख़ुश होना और क़हक़हा लगाना इस से भी बड़ा गुनाह है ह़ालां कि तू नहीं जानता कि **अल्लाह** तआ़ला तेरे साथ क्या सुलूक फ़रमाने वाला है, और तेरा गुनाह में नाकामी पर ग़मगीन होना इस से भी बड़ा गुनाह है, गुनाह करते हुए तेज़ हवा से दरवाज़े का पर्दा उठ जाए तो तू डर जाता है मगर **अल्लाह** तआ़ला की उस नज़र से नहीं डरता जो वोह तुझ पर रखता है, तेरा येह अ़मल इस से भी बड़ा गुनाह है।"(3)

---

1 ......دار قطنی، کتاب الرضاع، ٤/٢١٧، الحدیث: ٤٣٥٠.
2 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ویل للمطففین، ٥/٢٢٠، الحدیث: ٣٣٤٥.
3 ......الزواجر، مقدمۃ فی تعریف الکبیرۃ، ١/٢٧.

www.dawateislami.net

कबीरा गुनाहों के बारे में मश्हूर ह़दीस

बड़े बड़े कबीरा गुनाहों के बारे में मश्हूर ह़दीस येह है : ह़ज़रते अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह होंगे : **(1)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना। **(2)** मुसल्मान को नाह़क़ क़त्ल करना। **(3)** जंग के दिन राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद से फ़िरार होना। **(4)** वालिदैन की ना फ़रमानी करना। **(5)** पाक दामन औ़रतों पर तोहमत लगाना। **(6)** जादू सीखना। **(7)** सूद खाना और **(8)** यतीम का माल खाना।"[1]

चालीस गुनाहों की फ़ेहरिस्त

यहां मुसल्मानों के फ़ाएदे के लिये हम चालीस गुनाहों की एक फ़ेहरिस्त बयान करते हैं जिन में अक्सर कबीरा हैं ताकि कम अज़् कम येह तो इ़ल्म हो कि येह गुनाह हैं और हमें इन से बचना है। **(1)** **अल्लाह** तआ़ला का कोई शरीक ठहराना। **(2)** रियाकारी। **(3)** कीना। **(4)** ह़सद। **(5)** तकब्बुर **(6)** और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना। **(7)** तकब्बुर की वज्ह से मख़्लूक़ को ह़क़ीर जानना। **(8)** बद गुमानी करना। **(9)** धोका देना। **(10)** लालच। **(11)** ह़िर्स। **(12)** तंगदस्ती की वज्ह से फ़ुक़रा का मज़ाक़ उड़ाना। **(13)** तक़्दीर पर नाराज़ होना। **(14)** गुनाह पर ख़ुश होना। **(15)** गुनाह पर इसरार करना। **(16)** नेकी करने पर ता'रीफ़ का त़लब गार होना। **(17)** ह़ैज़ वाली औ़रत से सोह़बत करना। **(18)** जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देना। **(19)** सफ़ को सीधा न करना। **(20)** नमाज़ में इमाम से सब्क़त करना। **(21)** ज़कात अदा न करना। **(22)** रमज़ान का कोई रोज़ा छोड़ देना। **(23)** क़ुदरत के बा वुजूद ह़ज न करना। **(24)** रेशमी लिबास पहनना। **(25)** मर्द व औ़रत का एक दूसरे से मुशाबहत इख़्तियार करना। **(26)** औ़रतों का बारीक लिबास पहनना। **(27)** इतरा कर चलना। **(28)** मुसीबत के वक़्त चेहरा नोचना, थप्पड़ मारना या गिरेबान चाक करना। **(29)** मक़रूज़ को बिला वज्ह तंग करना। **(30)** सूद लेना देना। **(31)** ह़राम ज़राएअ़ से रोज़ी कमाना। **(32)** ज़ख़ीरा अन्दोज़ी। **(33)** शराब बनाना, पीना, बेचना। **(34)** नाप तोल में कमी करना। **(35)** यतीम का माल खाना। **(36)** गुनाह के काम में माल ख़र्च करना। **(37)** मुश्तरका कारोबार में एक शरीक का दूसरे से ख़ियानत करना। **(38)** ग़ैर के माल पर ज़ुल्मन क़ाबिज़ हो जाना। **(39)** उजरत देने में ताख़ीर करना। **(40)** और

[1] ......سنن الكبرى للبيهقى، كتاب الزكاة، باب كيف فرض الصدقة، ٤/١٤٩، الحديث: ٧٢٥٥.

www.dawateislami.net

अमानत में ख़ियानत करना। येह चन्द बातिनी और ज़ाहिरी गुनाह ज़िक्र किये हैं, इन सब गुनाहों की मा'लूमात हासिल करना और इन के अह़काम सीखना ज़रूरी है। अफ़्सोस कि मुसल्मानों की एक बड़ी ता'दाद को इन गुनाहों की ता'रीफ़ें तक याद नहीं कि येह होते क्या हैं ?[1]

﴿نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ﴾ : **हम तुम से दूसरे गुनाह मिटा देंगे।** इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम कबीरा गुनाहों से बचते रहोगे और इस के साथ दीगर इबादात बजा लाते रहोगे तो हम तुम्हारे दूसरे सग़ीरा गुनाहों को अपने फ़ज़्ल से मुआ़फ़ फ़रमा देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह या'नी जन्नत में दाख़िल करेंगे। याद रहे कि येह मुआ़मला भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत और मरज़ी पर है। येह बयान सग़ीरा गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ है, कबीरा गुनाह तौबा ही से मुआ़फ़ होते हैं, अलबत्ता ह़ज्जे मक़्बूल पर भी येह बिशारत है। इस की मज़ीद तह़क़ीक़ के लिये फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की चौबीसवीं जिल्द में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की निहायत तह़क़ीक़ी किताब "اَعْجَبُ الْاِمْدَاد فِیْ مُكَفِّرَاتِ حُقُوْقِ الْعِبَاد" (बन्दों के हुक़ूक़ के मुआ़फ़ करवाने के त़रीक़े) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।[2]

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِیْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِیْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْــٴَـلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ۝۳۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी मर्दों के लिये उन की कमाई से ह़िस्सा है और औ़रतों के लिये उन की कमाई से ह़िस्सा और **अल्लाह** से उस का फ़ज़्ल मांगो बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है।

1...... कबीरा गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ करना बहुत मुफ़ीद है।

2...... आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह किताब तस्हील व तख़्रीज के साथ बनाम "हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों ?" मक्तबतुल मदीना ने भी शाएअ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है, वहां से ख़रीद कर इस का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम उस चीज़ की तमन्ना न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है। मर्दों के लिये उन के आ'माल से हिस्सा है, और औरतों के लिये उन के आ'माल से हिस्सा है और **अल्लाह** से उस का फ़ज़्ल मांगो। बेशक **अल्लाह** हर शै को जानने वाला है।

﴿وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ﴾ **: और उस की आरज़ू न करो जिस से अल्लाह ने बड़ाई दी।** जब एक इन्सान दूसरे के पास कोई ऐसी ने'मत देखता है जो उस के पास नहीं तो उस का दिल तश्वीश में मुब्तला हो जाता है ऐसी सूरत में उस की हालत दो तरह की होती है (1) वोह इन्सान येह तमन्ना करता है कि येह ने'मत दूसरे से छिन जाए और मुझे हासिल हो जाए। येह हसद है और हसद मज़्मूम और हराम है। (2) दूसरे से ने'मत छिन जाने की तमन्ना न हो बल्कि येह आरज़ू हो कि उस जैसी मुझे भी मिल जाए, इसे गिब्ता कहते हैं येह मज़्मूम नहीं।[1]

लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला ने जिस बन्दे को दीन या दुन्या की जिहत से जो ने'मत अ़ता की उसे उस पर राज़ी रहना चाहिये। **शाने नुज़ूल :** जब आयते मीरास में ''لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ'' वाला हिस्सा नाज़िल हुवा और मय्यित के तर्के में मर्द का हिस्सा औरत से दुगना मुक़र्रर किया गया तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आख़िरत में नेकियों का सवाब भी हमें औरतों से दुगना मिलेगा और औरतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अ़ज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने जिस को जो फ़ज़ीलत दी वोह ऐन हिक्मत है बन्दे को चाहिये कि वोह उस की क़ज़ा पर राज़ी रहे।[2]

दिल के सब्रो क़रार का नुस्ख़ा

दिल के सब्रो क़रार का नुस्ख़ा ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना है। वरना दुन्या में कोई शख़्स किसी ने'मत की इन्तिहा को नहीं पहुंचा हुवा और अगर बिलफ़र्ज़ कोई पहुंचा भी हो तो किसी दूसरी ने'मत में ज़रूर कमतर होगा तो अगर दिल को इन्ही आरज़ूओं और तमन्नाओं का मर्कज़ बना कर रखा तो हज़ारों ने'मतों का मालिक हो कर भी दिल को क़रार नहीं मिल सकता, जैसे एक आदमी एक अरब रुपै का मालिक है लेकिन ख़ूब सूरत नहीं तो अगर वोह ख़ूब सूरती की तमन्ना करता रहेगा तो जीना दूभर हो जाएगा और अगर एक आदमी ख़ूब सूरत है लेकिन जेब में पैसा नहीं और वोह पैसे को रोता रहेगा तो भी बे क़रार रहेगा और

1 ......تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ٣٢، ٦٥/٤.
2 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٣٢، ٣٧٢/١.

www.dawateislami.net

जिस के पास पैसा और ख़ूब सूरती कुछ न हो लेकिन वोह कहे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी हूं और फिर वोह सब्र कर के आख़िरत के सवाब को पेशे नज़र रखे तो यक़ीनन ऐसा आदमी दिल का सुकून पा लेगा। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर इब्ने आदम के पास माल की दो वादियां भी हों तो वोह येह पसन्द करेगा कि उस के पास तीसरी वादी भी हो और उस का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है, **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा जो तौबा करे।(1)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने से नीचे वाले को देखो और जो तुम से ऊपर हो उसे न देखो, येह इस से बेहतर है कि तुम **अल्लाह** तआ़ला की अपने ऊपर ने'मत को ह़क़ीर जानो।(2)

﴾لِلرِّجَالِ نَصِیْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا﴿ : **मर्दों के लिये उन की कमाई से हिस्सा है।** मियां बीवी में से हर एक को उस के अपने नेक आ'माल की जज़ा मिलेगी, दोनों का नेक और परहेज़ गार होना उन्हें आ'माल से बे नियाज़ न करेगा।

शाने नुज़ूल : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि हम भी अगर मर्द होते तो जिहाद करते और मर्दों की त़रह़ जान फ़िदा करने का सवाबे अ़ज़ीम पाते।(3)

इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन्हें तस्कीन दी गई कि मर्द जिहाद से सवाब ह़ासिल कर सकते हैं तो औ़रतें शौहरों की फ़रमां बरदारी और पाक दामनी से सवाब ह़ासिल कर सकती हैं।

﴾وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ﴿ : **और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो।** سُبْحٰنَ الله ! दिलों के क़रार का कितना प्यारा बयान फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस का फ़ज़्ल मांगो कि ह़क़ीक़त में सब से बड़ी चीज़ **अल्लाह** करीम का फ़ज़्लो करम है। आ'माल में किसी को दूसरे से लाख गुना ज़ियादा भी सवाब मिलता हो लेकिन इस के बा वुजूद वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल ही का मोह़ताज है क्यूं कि उस का जन्नत में दाख़िला तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल ही से होगा। बिग़ैर फ़ज़्ल के अपने अ़मल से कोई जन्नत में नहीं जाएगा लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस का फ़ज़्ल मांगना चाहिये।

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب ما یتقی من فتنة المال، ٤/٢٢٨، الحدیث:٦٤٣٦.

2 ......مسلم، کتاب الزهد والرقائق، ص١٥٨٤، الحدیث:٩(٢٩٦٣).

3 ......جلالین، النساء، تحت الآیة: ٣٢، ص٢٧.

www.dawateislami.net

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ
اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿۳۳﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने सब के लिये माल के मुस्तहिक़ बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जाएं मां बाप और क़राबत वाले और वोह जिन से तुम्हारा ह़ल्फ़ बंध चुका उन्हें उन का ह़िस्सा दो, बेशक हर चीज़ **अल्लाह** के सामने है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मां बाप और रिश्तेदार जो कुछ माल छोड़ें हम ने सब के लिये (उस माल में) मुस्तहिक़ बना दिये हैं और जिन से तुम्हारा मुआ़हदा हो चुका है उन्हें उन का ह़िस्सा दो। बेशक **अल्लाह** हर शै पर गवाह है।

﴿وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ﴾ **: और जिन से तुम्हारा मुआ़हदा हो चुका है।** इस से अ़क़्दे मुवालात मुराद है इस की सूरत येह है कि ऐसा शख़्स जिस का नसब मज्हूल हो वोह दूसरे से येह कहे कि तू मेरा मौला है मैं मर जाऊं तो तू मेरा वारिस होगा और मैं कोई जुर्म करूं तो तुझे दियत देनी होगी। दूसरा कहे : मैं ने क़बूल किया। इस सूरत में येह अ़क़्द सह़ीह़ हो जाता है और क़बूल करने वाला वारिस बन जाता है और दियत भी उस पर आ जाती है और दूसरा भी इसी की त़रह़ से मज्हूलुन्नसब हो और ऐसा ही कहे और येह भी क़बूल कर ले तो उन में से हर एक दूसरे का वारिस और उस की दियत का ज़िम्मादार होगा। येह अ़क़्द साबित है और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم इस के क़ाइल हैं।(1)

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَاۤ
اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا

1 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ۳۳، ص۲۲۵.

www.dawateislami.net

حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَ الّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَ اهْجُرُوْهُنَّ فِی
الْمَضَاجِعِ وَ اضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَیْهِنَّ سَبِیْلًا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیًّا كَبِیْرًا ﴿۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर इस लिये कि **अल्लाह** ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिये कि मर्दों ने उन पर अपने माल ख़र्च किये तो नेक बख़्त औ़रतें अदब वालियां हैं ख़ावन्द के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं जिस त़रह़ **अल्लाह** ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो तो उन्हें समझाओ और उन से अलग सोओ और उन्हें मारो फिर अगर वोह तुम्हारे हुक्म में आ जाएं तो उन पर ज़ियादती की कोई राह न चाहो बेशक **अल्लाह** बुलन्द बड़ा है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मर्द औ़रतों पर निगहबान हैं इस वज्ह से कि **अल्लाह** ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस वज्ह से कि मर्द औ़रतों पर अपना माल ख़र्च करते हैं तो नेक औ़रतें (शौहरों की) इत़ाअ़त करने वाली (और) उन की अ़दम मौजूदगी में **अल्लाह** की हिफ़ाज़त व तौफ़ीक़ से हिफ़ाज़त करने वाली होती हैं और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो तो उन्हें समझाओ और (न समझने की सूरत में) उन से अपने बिस्तर अलग कर लो और (फिर न समझने पर) उन्हें मारो फिर अगर वोह तुम्हारी इत़ाअ़त कर लें तो (अब) उन पर (ज़ियादती करने का) रास्ता तलाश न करो । बेशक **अल्लाह** बहुत बुलन्द, बहुत बड़ा है ।

﴾اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ : **मर्द औ़रतों पर निगहबान हैं ।**﴿ औ़रत की ज़रूरिय्यात, इस की हिफ़ाज़त, इसे अदब सिखाने और दीगर कई उमूर में मर्द को औ़रत पर तसल्लुत़ ह़ासिल है गोया कि औ़रत रिआ़या और मर्द बादशाह, इस लिये औ़रत पर मर्द की इत़ाअ़त लाज़िम है, इस से एक बात येह वाज़ेह़ हुई कि मियां बीवी के ह़ुक़ूक़ एक जैसे नहीं बल्कि मर्द के ह़ुक़ूक़ औ़रत से ज़ियादा हैं और ऐसा होना औ़रत के साथ ना इन्साफ़ी या ज़ुल्म नहीं बल्कि ऐ़न इन्साफ़ और ह़िक्मत के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ है । **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी बीवी ह़बीबा को किसी ख़त़ा पर एक त़मांचा मारा जिस से उन के चेहरे पर निशान पड़ गया, येह अपने वालिद के साथ ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

बारगाह में अपने शौहर की शिकायत करने ह़ाज़िर हुईं। सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़िसास लेने का हुक्म फ़रमाया, तब येह आयत नाज़िल हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़िसास लेने से मन्अ़ फ़रमा दिया।[1]

लेकिन येह याद रहे कि औ़रत को ऐसा मारना ना जाइज़ है।

﴿بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ﴾ : **इस वज्ह से कि अल्लाह ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी।** मर्द को औ़रत पर जो हुक्मरानी अ़ता हुई इस की एक वज्ह येह है कि रब तआ़ला ने मर्द को औ़रत पर फ़ज़ीलत बख़्शी है।

मर्द के औ़रत से अफ़्ज़ल होने की वुजूहात

मर्द के औ़रत से अफ़्ज़ल होने की वुजूहात कसीर हैं, उन सब का ह़ासिल दो चीज़ें हैं इल्म और क़ुदरत। इस में कोई शक नहीं कि मर्द अ़क़्ल और इल्म में औ़रत से फ़ाइक़ होते हैं, अगर्चे बा'ज़ जगह औ़रतें बढ़ जाती हैं लेकिन मज्मूई त़ौर पर अभी भी पूरी दुन्या पर निगाह डालें तो अ़क़्ल के उमूर मर्दों ही के सिपुर्द होते हैं। यूंही मुश्किल तरीन आ'माल सर अन्जाम देने पर इन्हें क़ुदरत ह़ासिल है येही वज्ह है कि मर्द अ़क़्लो दानाई और क़ुव्वत में औ़रतों से फ़ौक़िय्यत रखते हैं। मज़ीद येह कि जितने भी अम्बिया, ख़ुलफ़ा और अइम्मा हुए सब मर्द ही थे। घुड़ सुवारी, तीर अन्दाज़ी और जिहाद मर्द करते हैं। इमामते कुब्रा या'नी हुकूमत व सल्त़नत और इमामते सुग़रा या'नी नमाज़ की इमामत यूंही अज़ान, ख़ुत़्बा, हुदूदो क़िसास में गवाही बिल इत्तिफ़ाक़ मर्दों के ज़िम्मे है। निकाह़, त़लाक़, रुजूअ़ और ब यक वक़्त एक से ज़ाइद शादियां करने का ह़क़ मर्द के पास है और नसब मर्दों ही की त़रफ़ मन्सूब होते हैं, येह सब क़राइन मर्द के औ़रत से अफ़्ज़ल होने पर दलालत करते हैं। मर्दों की औ़रतों पर हुक्मरानी की दूसरी वज्ह येह है कि मर्द औ़रतों पर महर और नान नफ़्क़ा की सूरत में अपना माल ख़र्च करते हैं इस लिये उन पर ह़ाकिम हैं। ख़याल रहे कि मज्मूई त़ौर पर जिन्से मर्द जिन्से औ़रत से अफ़्ज़ल है न कि हर मर्द हर औ़रत से अफ़्ज़ल। बा'ज़ औ़रतें इल्मो दानाई में कई मर्दों से ज़ियादा हैं जैसे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا, हम जैसे लाखों मर्द उन के ना'लैन की ख़ाक के बराबर भी नहीं। यूंही सह़ाबिय्या औ़रतें ग़ैरे सह़ाबी बड़े बड़े बुज़ुर्गों से अफ़्ज़ल हैं।

﴿فَالصّٰلِحٰتُ﴾ : **नेक औ़रतें।** नेक और पारसा औ़रतों के औसाफ़ बयान फ़रमाए जा रहे हैं कि

1......بغوی، النساء، تحت الآیة: ٣٤، ١/٣٣٥.

www.dawateislami.net

जब इन के शौहर मौजूद हों तो उन की इत़ाअ़त करती और उन के हुक़ूक़ की अदाएगी में मसरूफ़ रहती और शौहर की ना फ़रमानी से बचती हैं और जब मौजूद न हों तो **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से उन के माल और इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करती हैं।

नेक बीवी के औसाफ़ और फ़ज़ाइल

कसीर अह़ादीस में नेक और पारसा बीवियों के औसाफ़ और इन के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, उन में से 2 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तक़्वा के बा'द मोमिन के लिये नेक बीवी से बेहतर कोई चीज़ नहीं कि अगर वोह उसे हुक्म दे तो वोह इत़ाअ़त करे और अगर उसे देखे तो ख़ुश कर दे और उस पर क़सम खा बैठे तो क़सम सच्ची कर दे और कहीं चला जाए तो अपने नफ़्स और शौहर के माल में भलाई करे।"[1]

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे चार चीज़ें मिलीं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई मिली : (1) शुक्र गुज़ार दिल। (2) यादे ख़ुदा करने वाली ज़बान (3) मुसीबत पर सब्र करने वाला बदन (4) ऐसी बीवी कि अपने नफ़्स और शौहर के माल में गुनाह की मुतलाशी (या'नी उस में ख़ियानत करने वाली) न हो।"[2]

निकाह़ कैसी औ़रत से करना चाहिये ?

निकाह़ के लिये औ़रत के इन्तिख़ाब के वक़्त उस की दीनदारी देख ली जाए और दीन वाली ही को तरजीह़ दी जाए। जो लोग औ़रत का सिर्फ़ हुस्न या मालदारी या इ़ज़्ज़तो मन्सब पेशे नज़र रखते हैं वोह इस ह़दीस पर ग़ौर कर लें, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो किसी औ़रत से उस की इ़ज़्ज़त के सबब निकाह़ करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ज़िल्लत में ज़ियादती करेगा और जो किसी औ़रत से उस के माल की वज्ह से निकाह़ करेगा, **अल्लाह** तआ़ला उस की मोह़ताजी ही बढ़ाएगा और जो उस

1 ......ابن ماجه، كتاب النكاح، باب افضل النساء، ٢/٤١٤، الحديث: ١٨٥٧.
2 ......معجم الكبير، طلق بن حبيب عن ابن عباس، ١١/١٠٩، الحديث: ١١٢٧٥.

www.dawateislami.net

के ह़सब (ख़ानदानी मर्तबे) के सबब निकाह़ करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के कमीने पन में ज़ियादती करेगा।''(1)

﴿وَالّٰتِیۡ تَخَافُوۡنَ نُشُوۡزَهُنَّ﴾ **: और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें डर हो ।** इस आयत में ना फ़रमान औ़रत की इस्लाह़ का त़रीक़ा बड़े अह़्सन पैराए में बयान फ़रमाया गया है।

ना फ़रमान बीवी की इस्लाह़ का त़रीक़ा

सब से पहले ना फ़रमान बीवी को अपनी इत़ाअ़त के फ़वाइद और ना फ़रमानी के नुक़्सानात बताओ नीज़ क़ुरआनो ह़दीस में इस तअ़ल्लुक़ से मन्क़ूल फ़ज़ाइल और वई़दें बता कर समझाओ, अगर इस के बा'द भी न मानें तो उन से अपने बिस्तर अलग कर लो फिर भी न मानें तो मुनासिब अन्दाज़ में उन्हें मारो। इस मार से मुराद है कि हाथ या मिस्वाक जैसी चीज़ से चेहरे और नाज़ुक आ'ज़ा के इ़लावा दीगर बदन पर एक दो ज़र्बें लगा दे। वोह मार मुराद नहीं जो हमारे हां जाहिलों में राइज है कि चेहरे और सारे बदन पर मारते हैं, मुक्कों, घूंसों और लातों से पीटते हैं, डन्डा या जो कुछ हाथ में आए उस से मारते और लहू लुहान कर देते हैं येह सब ह़राम व ना जाइज़, गुनाहे कबीरा और परले दरजे की जहालत और कमीनगी है।

शौहर और बीवी दोनों एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखें

औ़रत और मर्द दोनों को चाहिये कि वोह एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखें, इस सिल्सिले में 5 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अ़म्र बिन अह़वस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हें औ़रतों के ह़क़ में भलाई की वसिय्यत करता हूं, वोह तुम्हारे पास मुक़य्यद हैं, तुम उन की किसी चीज़ के मालिक नहीं हो अलबत्ता येह कि वोह खुल्लम खुल्ला बे ह़याई की मुरतकिब हों, अगर वोह ऐसा करें तो उन्हें बिस्तरों में अ़लाह़दा छोड़ दो, (अगर न मानें तो) हलकी मार मारो, पस अगर वोह तुम्हारी बात मान लें तो उन के ख़िलाफ़ कोई रास्ता तलाश न करो। तुम्हारे औ़रतों पर और औ़रतों के तुम्हारे ज़िम्मे कुछ ह़ुक़ूक़ हैं। तुम्हारा ह़क़ येह है कि वोह तुम्हारे बिस्तरों को तुम्हारे ना पसन्दीदा लोगों से पामाल न कराएं और ऐसे लोगों को तुम्हारे घरों में न आने दें जिन्हें तुम ना पसन्द करते हो। तुम्हारे ज़िम्मे उन का ह़क़ येह है कि उन से भलाई करो, उ़म्दा

1 ......معجم الاوسط، من اسمه ابراهيم، ۲/۱۸، الحديث: ۲۳۴۲.

www.dawateislami.net

लिबास और अच्छी गिज़ा दो।''(1)

(2)...... हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब औ़रत अपने शौहर को दुन्या में ईज़ा देती है तो हूरे ईन कहती हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तुझे क़त्ल करे, इसे ईज़ा न दे, येह तो तेरे पास मेहमान है, अ़न्क़रीब तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आ जाएगा।''(2)

(3)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो औ़रत इस हाल में मरी कि उस का शौहर उस पर राज़ी था वोह जन्नत में दाख़िल हो गई।''(3)

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हें औ़रतों के बारे में भलाई करने की वसिय्यत करता हूं तुम मेरी इस वसिय्यत को क़बूल करो। वोह पस्ली से पैदा की गई और पस्लियों में से ज़ियादा टेढ़ी ऊपर वाली है। अगर तू उसे सीधा करने चले तो तोड़ देगा और अगर वैसी ही रहने दे तो टेढ़ी बाक़ी रहेगी।''(4)

(5)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''औ़रत पस्ली से पैदा की गई वोह तेरे लिये कभी सीधी नहीं हो सकती अगर तू उसे बरत्ना चाहे तो इसी हालत में बरत सकता है और सीधा करना चाहेगा तो तोड़ देगा और तोड़ना तलाक़ देना है।''(5)

﴿فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ : **फिर अगर वोह तुम्हारी इताअ़त कर लें।**﴾ या'नी जब गुनाह के बा'द तौबा करने की सूरत में **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेता है तो तुम्हें भी चाहिये कि तुम्हारी ज़ेर दस्त औ़रत जब क़ुसूर करने के बा'द मुआ़फ़ी तलब करे और ना फ़रमानी छोड़ कर इताअ़त गुज़ार बन जाए तो उस की मा'ज़िरत क़बूल कर लो और तौबा के बा'द उसे तंग न करो।

बीवी जब अपनी ग़लती की मुआ़फ़ी मांगे तो उसे मुआ़फ़ कर दिया जाए

इस आयत से उन लोगों को नसीहत हासिल करनी चाहिये जो औ़रत के हज़ार बार

1......ترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حقّ المرأة علی زوجها، ۲/۳۸۷، الحدیث: ۱۱۶۶.
2......ترمذی، کتاب الرضاع، ۱۹-باب، ۲/۳۹۲، الحدیث: ۱۱۷۷.
3......ترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حقّ الزوج علی المرأة، ۲/۳۸۶، الحدیث: ۱۱۶٤.
4......بخاری، کتاب النکاح، باب الوصاة بالنساء، ۳/٤۵۷، الحدیث: ۵۱۸۵.
5......مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصیة بالنساء، ص۷۷۵، الحدیث: ٦١(١٤٦٨).

www.dawateislami.net

मा'ज़िरत करने, गिड़गिड़ा कर पाउं पड़ने, त़रह़ त़रह़ के वासित़े देने के बा वुजूद अपनी नाक नीची नहीं करते और सिन्फ़े नाज़ुक को मश्क़े सितम बना कर अपनी बुज़दिली को बहादुरी समझते हैं। **अल्लाह** तआ़ला इन बहादुरों को आ़जिज़ी और समझने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَیْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَاۚ اِنْ یُّرِیْدَاۤ اِصْلَاحًا یُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَیْنَهُمَاؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیْمًا خَبِیْرًا ﴿۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम को मियां बीबी के झगड़े का ख़ौफ़ हो तो एक पन्च मर्द वालों की त़रफ़ से भेजो और एक पन्च औ़रत वालों की त़रफ़ से येह दोनों अगर सुल्ह़ कराना चाहेंगे तो **अल्लाह** उन में मेल कर देगा, बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम को मियां बीवी के झगड़े का ख़ौफ़ हो तो एक मुन्सिफ़ मर्द के घर वालों की त़रफ़ से भेजो और एक मुन्सिफ़ औ़रत के घर वालों की त़रफ़ से (भेजो) येह दोनों अगर सुल्ह़ कराना चाहेंगे तो **अल्लाह** उन के दरमियान इत्तिफ़ाक़ पैदा कर देगा। बेशक **अल्लाह** ख़ूब जानने वाला, ख़बरदार है।

﴿وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَیْنِهِمَا : **और अगर तुम को मियां बीवी के झगड़े का ख़ौफ़ हो।**﴾ जब बीवी को समझाने, अलग रखने और मारने के बा वुजूद इस्लाह़ की सूरत न बन रही हो तो न मर्द त़लाक़ देने में जल्दी करे, न औ़रत ख़ुलअ़ के मुत़ालबे पर इसरार करे बल्कि दोनों के ख़ानदान के ख़ास क़रीबी रिश्तेदारों में से एक एक शख़्स को मुन्सिफ़ मुक़र्रर कर लिया जाए, इस का फ़ाएदा येह होगा कि चूंकि रिश्तेदार एक दूसरे के ख़ानगी मुआ़मलात से वाक़िफ़ होते हैं, फ़रीक़ैन को उन पर इत़्मीनान होता है और उन से अपने दिल की बात कहने में कोई झिजक भी नहीं होती, येह मुन्सिफ़ मुनासिब त़रीक़े से उन के मस्अले का ह़ल निकाल लेंगे और अगर मुन्सिफ़, मियां बीवी में सुल्ह़ करवाने का इरादा रखते हों तो **अल्लाह** तआ़ला उन के माबैन इत्तिफ़ाक़ पैदा कर देगा इस लिये ह़त्तल मक्दूर सुल्ह़ के ज़रीए इस मुआ़मले को ह़ल किया जाए लेकिन येह याद रखें कि उन्हें मियां बीवी में जुदाई करवा देने का इख़्तियार नहीं या'नी येह जुदाई का फ़ैसला करें तो शरअ़न उन में जुदाई हो जाए, ऐसा नहीं हो सकता।

www.dawateislami.net

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ الْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْجَارِ الْجُنُبِ وَ الصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ ۙ وَ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَاۙ ﴿۳۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोह्ताजों और पास के हमसाए और दूर के हमसाए और करवट के साथी और राहगीर और अपनी बांदी गुलाम से बेशक **अल्लाह** को खुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ और मां बाप से अच्छा सुलूक करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोह्ताजों और क़रीब के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी और पास बैठने वाले साथी और मुसाफ़िर और अपने गुलाम लौंडियों (के साथ अच्छा सुलूक करो।) बेशक **अल्लाह** ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करता जो मुतकब्बिर, फ़ख़्र करने वाला हो।

﴾وَاعْبُدُوا اللّٰهَ : **और अल्लाह की इबादत करो**﴿ इस आयते करीमा में **अल्लाह** तआला और बन्दों दोनों के हुक़ूक़ की ता'लीम दी गई है, **अल्लाह** तआला का बन्दों पर हक़ येह है कि सिर्फ़ उसी की इबादत की जाए और उस के साथ किसी को भी शरीक न ठहराया जाए और बन्दों के आपस में हुक़ूक़ येह हैं :

बन्दों के बाहमी हुक़ूक़

(1)...... वालिदैन के साथ एह्सान करना : उन के साथ एह्सान येह है कि वालिदैन का अदब और इताअत करे, ना फ़रमानी से बचे, हर वक़्त इन की ख़िदमत के लिये तय्यार रहे और इन पर ख़र्च करने में ब क़दरे तौफ़ीक़ व इस्तिताअत कमी न करे। हज़रते अबू हुरैरा

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा फ़रमाया : उस की नाक ख़ाक आलूद हो। किसी ने पूछा : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, कौन ? इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मां बाप दोनों को या इन में से एक को बुढ़ापे में पाया और जन्नत में दाख़िल न हुवा।(1)

(2)...... रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करना : इन से हुस्ने सुलूक येह है कि रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहमी करे और क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी से बचे। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के रिज़्क़ में वुस्अ़त हो और उस की उ़म्र लम्बी हो तो उसे चाहिये कि अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करे।(2)

ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़्अ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।''(3)

सिलए रेह़मी का मत़्लब बयान करते हुए सदरुश्शरीअ़ह मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सिलए रेह़म के मा'ना रिश्ते को जोड़ना है, या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना, सारी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि सिलए रेह़म वाजिब है और क़त्ए़ रेह़म (या'नी रिश्ता काटना) ह़राम है।(4)

(3,4)...... यतीमों और मोह़ताजों से हुस्ने सुलूक करना : यतीम के साथ हुस्ने सुलूक येह है कि इन की परवरिश करे, इन के साथ नरमी से पेश आए और इन के सर पर शफ़्क़त से हाथ फेरे। ह़ज़रते सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यतीम की कफ़ालत करे मैं और वोह जन्नत में इस त़रह होंगे। हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कलिमे की उंगली और बीच की उंगली से इशारा किया और दोनों उंग्लियों के दरमियान थोड़ा सा फ़ासिला किया।(5)

---

1 ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب رغم من ادرك ابويه او احدهما عند الكبر...الخ، ص ١٣٨١، الحديث: ٩(٢٥٥١).
2 ......بخاری، کتاب البیوع، باب من احبّ البسط فی الرزق، ٢/ ١٠، الحديث: ٢٠٦٧.
3 ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب صلة الرحم وتحريم قطيعتها، ص١٣٨٣، الحديث: ١٨(٢٥٥٦).
4 ...... बहारे शरीअ़त, हिस्सए शांज़ दहुम, सुलूक करने का बयान, 3/558
5 ......بخاری، کتاب الطلاق، باب اللعان، ٣/ ٤٩٧، الحديث: ٥٣٠٤.

www.dawateislami.net

और मिस्कीन से हुस्ने सुलूक येह है कि उन की इमदाद करे और उन्हें ख़ाली हाथ न लौटाए। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेवा और मिस्कीन की इमदाद व ख़बरगीरी करने वाला राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।(1)

(5)...... हमसायों से हुस्ने सुलूक करना : क़रीब के हमसाए से मुराद वोह है जिस का घर अपने घर से मिला हुवा हो और दूर के हमसाए से मुराद वोह है जो मह़ल्ला दार तो हो मगर उस का घर अपने घर से मिला हुवा न हो या जो पड़ोसी भी हो और रिश्तेदार भी वोह क़रीब का हमसाया है और वोह जो सिर्फ पड़ोसी हो, रिश्तेदार न हो वोह दूर का हमसाया या जो पड़ोसी भी हो और मुसल्मान भी वोह क़रीब का हमसाया और वोह जो सिर्फ़ पड़ोसी हो मुसल्मान न हो वोह दूर का हमसाया है।(2)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام मुझे पड़ोसी के मुतअ़ल्लिक़ बराबर वसिय्यत करते रहे, यहां तक कि मुझे गुमान हुवा कि पड़ोसी को वारिस बना देंगे।(3)

(6)...... पास बैठने वालों से हुस्ने सुलूक करना : इस से मुराद बीवी है या वोह जो सोह़बत में रहे जैसे रफ़ीक़े सफ़र, साथ पढ़ने वाला या मजलिस व मस्जिद में बराबर बैठे ह़त्ता कि लम्ह़ा भर के लिये भी जो पास बैठे उस के साथ भी हुस्ने सुलूक का हुक्म है।

(7)...... मुसाफ़िर के साथ हुस्ने सुलूक करना : इस में मेहमान भी दाख़िल है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला और रोज़े क़ियामत पर ईमान रखता है वोह मेहमान का इक्राम करे।(4)

(8)...... लौंडी ग़ुलाम के साथ हुस्ने सुलूक करना। इन से हुस्ने सुलूक येह है कि इन्हें उन की त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ न दे, सख़्त कलामी न करे और खाना कपड़ा वग़ैरा ब क़दरे ज़रूरत दे। ह़दीस में है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ुलाम तुम्हारे भाई हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें तुम्हारे मा तह़त किया है, तो जो तुम खाते हो उस में से उन्हें खिलाओ,

1 ......بخاری، کتاب النفقات، باب فضل النفقة علی الاهل، ۳/۵۱۱، الحدیث: ۵۳۵۳.
2 ......تفسیرات احمدیه، النساء، تحت الآیة: ۳۶، ص۲۷۵.
3 ......بخاری، کتاب الادب، باب الوصاة بالجار، ۴/۱۰۴، الحدیث: ۶۰۱۴.
4 ......مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار... الخ، ص۴۳، الحدیث: ۷۴(۴۷).

www.dawateislami.net

जो लिबास तुम पहनते हो, वैसा ही उन्हें पहनाओ, और उन की ताक़त से ज़ियादा उन पर बोझ न डालो और अगर ऐसा हो तो तुम भी साथ में उन की मदद करो।[1]

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا﴾ : **बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करता जो मुतकब्बिर, फ़ख़्र करने वाला हो।** किसी को ख़ुद से हक़ीर समझना और हक़ बात क़बूल न करना तकब्बुर है, येह इन्तिहाई मज़्मूम वस्फ़ और कबीरा गुनाह है, हदीस में है : क़ियामत के दिन मुतकब्बिरीन को इन्सानी शक्लों में च्यूंटियों की मानिन्द उठाया जाएगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत तारी होगी, उन्हें जहन्नम के "बूलस" नामी क़ैदख़ाने की तरफ़ हांका जाएगा और बहुत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में ले कर उन पर ग़ालिब आ जाएगी, उन्हें "तीनतुल ख़बाल" या'नी जहन्नमियों की पीप पिलाई जाएगी[2] ।[3]

الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ وَ یَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًاۚ﴿۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल के लिये कहें और **अल्लाह** ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं और काफ़िरों के लिये हम ने ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो ख़ुद बुख़्ल करते हैं और दीगर लोगों को बुख़्ल का कहते हैं और **अल्लाह** ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाते हैं (उन के लिये शदीद वईद है) और काफ़िरों के लिये हम ने ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

﴿الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ﴾ : **वोह लोग जो ख़ुद बुख़्ल करते हैं।** लुग़ते अ़रब में **बुख़्ल से मुराद** येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से जो माल दिया उस में से साइल को न देना। और बुख़्ल

1......مسلم، كتاب الايمان والنذور، باب اطعام المملوك مما ياكل... الخ، ص٩٠٦، الحديث: ٣٨(١٦٦١).

2......ترمذى، كتاب صفة القيامة، ٤٧-باب، ٢٢١/٤، الحديث: ٢٥٠٠.

3...... तकब्बुर की अक़्साम, उन के अह़काम और इस के इ़लाज से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "तकब्बुर" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

की शरई ता'रीफ़ येह है कि जो चीज़ ज़िम्मे में वाजिब हो उसे अदा न करना।[1]

और सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : **बुख़्ल** येह है कि ख़ुद खाए दूसरे को न दे। **शुह** येह है कि न खाए न खिलाए। **सख़ा** येह है कि ख़ुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए, **जूद** येह है कि आप न खाए दूसरे को खिलाए।[2]

यहां बुख़्ल से मुराद येह है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तौरैत में मज़्कूर औसाफ़ बयान करने में बुख़्ल करना और इस का हुक्म देना। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जो तौरैत में मज़्कूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ बयान करने में बुख़्ल करते और छुपाते थे।[3]

एक क़ौल येह है कि इस से मुराद माल ख़र्च करने में बुख़्ल करना है।[4]

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरवरे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दो ख़स्लतें किसी मोमिन में जम्अ नहीं हो सकतीं, बुख़्ल और बद ख़ुल्क़ी।"[5]

तम्बीह : इस से मौजूदा ज़माने के उन उलमा को इब्रत हासिल करनी चाहिये जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़े हमीदा ख़ुद भी बयान नहीं करते और बयान करने वालों को भी तरह तरह के हीले बहाने कर के रोकने की कोशिश करते हैं। आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयां रहे　　फिर कहे मरदक कि हूं उम्मत रसूलुल्लाह की

नोट : बुख़्ल के बारे में काफ़ी तफ़्सील सूरए आले इमरान आयत 180 में गुज़र चुकी है।

﴿وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ﴾ **: और अल्लाह ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाते हैं।﴿ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो ने'मत अता फ़रमाए उसे अच्छी निय्यत के साथ मौक़अ महल की मुनासबत से हिक्मत को सामने रखते हुए ज़ाहिर करना चाहिये। हज़रते अबुल अहूवस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, मेरे वालिद परागन्दा बाल और ना पसन्दीदा हैअत में सरकारे आली

1 ......بغوی، النساء، تحت الآية: ٣٧، ١/٣٣٩.
2 ...... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, अन्निसाअ, तहूतल आयह : 37, स. 166, مدارك، النساء، تحت الآية: ٣٧، ص٢٢٧.
3 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٣٧، ١/٣٧٩.
4 ......تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ٣٧، ٤/٧٨.
5 ......ترمذی، كتاب البر والصلة، باب ما جاء فی البخل، ٣/٣٨٧، الحديث: ١٩٦٩.

www.dawateislami.net

वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तेरे पास माल नहीं ? अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने हर त़रह़ का माल अ़त़ा फ़रमाया है। इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला बन्दे को जब कोई ने'मत अ़त़ा फ़रमाए तो उस का असर बन्दे पर देखना पसन्द फ़रमाता है।(1)

मस्अला : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी ह़ैसिय्यत के लाइक़ जाइज़ लिबासों में बेहतर पहनना मुस्तह़ब है।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्चते हैं और ईमान नहीं लाते **अल्लाह** और न क़ियामत पर, और जिस का मुसाह़िब शैत़ान हुवा तो कितना बुरा मुसाह़िब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग जो अपने माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करते हैं और न **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और न ही आख़िरत के दिन पर (तो उन के लिये शदीद वईद है।) और जिस का साथी शैत़ान बन जाए तो कितना बुरा साथी हो गया।

﴾وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ﴿ **: और वोह लोग जो अपने माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करते हैं।** बुख़्ल की बुराई बयान फ़रमाने के बा'द अब उन लोगों के बारे में बताया जा रहा है कि जो मह़ज़ दिखावे और शोहरत के लिये माल ख़र्च करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का ह़ुसूल उन का मक़्सद नहीं होता। येह भी उसी ह़ुक्म में दाख़िल हैं जो ऊपर गुज़रा।

रियाकारी की मज़म्मत

इस से उन लोगों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये कि जो नेक कामों में लाखों रुपै ख़र्च करते

1 ......مسند امام احمد، مسند المکیین،حدیث مالك بن نضلة ابی الاحوص رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، ٥/٣٨٤،الحدیث:١٥٨٩٢.

www.dawateislami.net

हैं लेकिन मक़्सद सिर्फ़ वाह वाह करवाना होता है, ब कसरत ख़ैरात करते हैं लेकिन साथ ही येह शर्त़ रखते हैं कि अख़्बार में ख़बर और तस्वीर ज़रूर आनी चाहिये, इसी त़रह़ शादियों की फ़ुज़ूल रुसूमात में लाखों रुपै उड़ा देने वाले भी इब्रत ह़ासिल करें जो सिर्फ़ इस लिये रस्में करते हैं कि अगर येह रस्में भरपूर अन्दाज़ में न की गईं तो लोग क्या कहेंगे, फ़ुलां ने इतना ख़र्च किया था, मैं क्यूं पीछे रहूं वग़ैरा। ह़ज़रते मह़मूद बिन लुबैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे तुम पर सब से ज़ियादा शिर्के असग़र या'नी दिखावे में मुब्तला होने का ख़ौफ़ है, **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन कुछ लोगों को उन के ह़िसाब के वक़्त इर्शाद फ़रमाएगा कि उन लोगों के पास जाओ जिन के लिये दुन्या में तुम दिखावा करते थे और देखो कि क्या तुम उन के पास कोई जज़ा पाते हो ?"(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मरतबा पनाह मांगती है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्यह के उन रियाकारों के लिये तय्यार की है जो क़ुरआने पाक के ह़ाफ़िज़, राहे ख़ुदा में सदक़ा करने वाले, **अल्लाह** तआ़ला के घर के ह़ाजी और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में निकलने वाले होंगे (लेकिन येह सारे काम सिर्फ़ रियाकारी के लिये कर रहे होंगे)(2) ।"(3)

﴿وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا﴾ : **और जिस का साथी शैत़ान बन जाए ।** दुन्या में शैत़ान का साथी इस त़रह़ होगा कि वोह शैत़ानी काम कर के उसे ख़ुश करे क्यूं कि जो शैत़ान को ख़ुश करता है शैत़ान उस के साथ रहता है ह़त्ता कि खाने पीने, रात बसर करने और दीगर कई मुआ़मलात में शरीक हो जाता है इसी लिये येह हुक्म है कि हर जाइज़ काम بِسْمِ اللہ पढ़ कर शुरूअ़ किया जाए ताकि शैत़ान के लिये रोक हो और आख़िरत में शैत़ान का साथी होना यूं होगा कि वोह एक शैत़ान के साथ आतिशी ज़न्जीर में जकड़ा होगा।(4)

येह वई़द ख़ास गुनाहों के ज़रीए़ शैत़ान का साथी बनने वाले के बारे में है और जिस का साथी शैत़ान हो वोह अपने अन्जाम पर ख़ुद ही ग़ौर कर ले कि कैसा होगा।

1......مسند امام احمد، حدیث محمود بن لبید رضی اللہ عنہ، ۹/۱۶۱، الحدیث: ۲۳۶۹۷

2......معجم الکبیر، الحسن عن ابن عباس، ۱۲/۱۳۶، الحدیث: ۱۲۸۰۳.

3...... रियाकारी के बारे में मुफ़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "रियाकारी" (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये।

4......خازن، النساء، تحت الآیۃ: ۳۸، ۱/۳۷۹.

www.dawateislami.net

शैत़ान के बहकाने का अन्दाज़

शैत़ान मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से इन्सान को बहकाने और **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत व फ़रमां बरदारी करने से रोकता है जैसे शैत़ान पहले इन्सान को **अल्लाह** तआ़ला की त़ाअ़तो इ़बादत से रोकता है, अगर **अल्लाह** तआ़ला इन्सान को शैत़ान से मह़फ़ूज़ कर लेता है तो इन्सान शैत़ान को येह कह कर दूर कर देता है कि मुझे **अल्लाह** तआ़ला की त़ाअ़तो इ़बादत की बहुत सख़्त ज़रूरत है क्यूं कि मुझे इस दारे फ़ानी से आख़िरत के लिये तोशा और ज़ादे राह तय्यार करना बहुत ज़रूरी है कि इस के बिग़ैर आख़िरत का सफ़र मुम्किन नहीं।

जब इन्सान शैत़ान के इस मक्र से बच जाता है तो शैत़ान उसे इस त़रह़ बहकाने और गुमराह करने की कोशिश करता है कि वोह उसे इ़बादत करने में काहिली और सुस्ती का हुक्म देता है और कहता है कि आज रहने दो कल कर लेना। अगर **अल्लाह** तआ़ला इन्सान को इस से भी मह़फ़ूज़ कर लेता है तो वोह शैत़ान को येह कह कर ठुकरा देता है कि मेरी मौत मेरे क़ब्ज़े में नहीं, नीज़ अगर मैं आज का काम कल पर छोड़ूंगा तो कल का काम किस दिन करूंगा क्यूं कि हर दिन के लिये एक काम है।

जब शैत़ान इस ह़ीले से भी ना उम्मीद हो जाता है तो कहता है कि ऐ इन्सान ! तुम **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत जल्दी जल्दी करो ताकि फ़ुलां फ़ुलां काम के लिये फ़ारिग़ हो सको। अगर **अल्लाह** तआ़ला इन्सान को इस ह़ीले से भी बचा ले तो इन्सान शैत़ान को येह कह कर दफ़्अ़ कर देता है कि थोड़ी और कामिल इ़बादत ज़ियादा मगर नाक़िस इ़बादत से कहीं बेहतर है।

अगर शैत़ान इस ह़ीले में भी नाकामो ना मुराद हो जाता है तो वोह इन्सान को रियाकारी के साथ इ़बादत करने की तरग़ीब देता और उसे रियाकारी में मुब्तला करने की पूरी कोशिश करता है। अगर इन्सान **अल्लाह** तआ़ला की मदद से इस ह़ीले से मह़फ़ूज़ हो गया तो वोह येह कह कर रियाकारी के वस्वसे को ठुकरा देता है कि मैं किसी और की नुमाइश और दिखावे के लिये इ़बादत क्यूं करूं, क्या **अल्लाह** तआ़ला का देख लेना मेरे लिये काफ़ी नहीं।

जब शैत़ान अपने इस हथकन्डे से भी नाकाम हो जाता है तो वोह इन्सान को ख़ुद पसन्दी में मुब्तला करने की कोशिश करता है और कहता है कि तुम ने कितना उ़म्दा काम किया और तुम ने कितनी ज़ियादा शब बेदारी की। अगर इन्सान **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से इस बार भी मह़फ़ूज़ रहा और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होने से बच गया तो वोह शैत़ान के इस वस्वसे को येह कह कर रद कर देता है कि मुझ में कोई ख़ूबी और बुज़ुर्गी नहीं, येह तो सब **अल्लाह** तआ़ला का एह़साने अ़ज़ीम है कि उस ने मुझ जैसे गुनाहगार को ख़ास तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई

www.dawateislami.net

और येह भी उसी का फ़ज़्लो करम है कि उस ने मेरी ह़क़ीर और नाक़िस इ़बादत को शरफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाया, अगर उस का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल न होता तो मेरे गुनाहों के मुक़ाबले में मेरी इन इ़बादतों की ह़ैसिय्यत ही क्या थी।

जब लईन शैत़ान इन तमाम तदबीरों से नाकाम हो जाता है तो फिर येह ह़र्बा इस्ति'माल करता है जो सब से ज़ियादा ख़त़रनाक है और शैत़ान के इस ह़र्बे से बहुत अ़क़्ल मन्द और होशियार दिल शख़्स़ के इ़लावा कोई और नहीं बच सकता, चुनान्चे शैत़ान कहता है कि ऐ नेक बख़्त इन्सान! तुम लोगों से छुप छुप कर नेकियां करने में कोशां हो और **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी इन नेकियों को अ़न्क़रीब तमाम लोगों में मश्हूर कर देगा तो लोग तुम्हें **अल्लाह** का मुक़र्रब बन्दा कह कर याद किया करेंगे। इस त़रह़ शैत़ान उसे रियाकारी में मुब्तला करना चाहता है। अगर **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मतो इ़नायत से इन्सान को शैत़ान के इस ह़र्बे से भी मह़फ़ूज़ फ़रमा दे तो वोह शैत़ान को येह कह कर ज़लीलो ख़्वार और ना मुराद कर देता है कि ऐ मल्ऊ़न! अभी तक तो तू मेरे पास मेरे आ'माल को फ़ासिद व बेकार करने आया करता था और अब उन आ'माल की इस्लाह़ व दुरुस्ती के लिये आता है ताकि मेरे आ'माल को बिल्कुल ख़त्म कर दे, चल दफ़्अ़ हो जा, मैं **अल्लाह** तआ़ला का बन्दा हूं, वोही मेरा आक़ा व मौला है, मैं अपनी नेकियों की शोहरत का मुश्ताक़ और त़लब गार नहीं हूं, मेरा परवर्दगार चाहे मेरे आ'माल ज़ाहिरो मश्हूर कर दे चाहे पोशीदा रखे, चाहे मुझे इ़ज़्ज़तो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाए चाहे मुझे ज़लीलो रुस्वा कर दे। सब का सब उसी के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है, मुझे इस की कोई परवा नहीं कि वोह लोगों के सामने मेरे आ'माल का इज़्हार फ़रमाए या न फ़रमाए। इन्सानों के क़ब्ज़े में कोई चीज़ नहीं है।

अगर इन्सान शैत़ान के इस वार से भी बच जाए तो वोह इन्सान के पास आ कर कहता है कि तुझे आ'माल करने की क्या ज़रूरत है क्यूं कि इन्सान के नेक और बद होने का फ़ैसला तो रोज़े अव्वल में हो चुका है, उस दिन जो बुरा हो गया वोह बुरा ही रहेगा और जो अच्छा और नेक हो गया वोह नेक ही रहेगा इस लिये अगर तुझे नेक बख़्त पैदा किया गया है तो आ'माल को छोड़ना तुम्हारे लिये नुक़्सान देह नहीं और अगर तुझे बद बख़्त व शक़ी पैदा किया गया है तो तुम्हारा अ़मल तुम्हें कोई फ़ाएदा नहीं पहुंचा सकता। अगर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने फ़ज़्लो करम से इन्सान को शैत़ान के इस वार से बचा लिया तो इन्सान शैत़ान मरदूद से यूं मुख़ात़िब होता है कि मैं तो **अल्लाह** तआ़ला का बन्दा हूं और बन्दे का काम येह है कि वोह अपने आक़ा व मौला के अह़काम बजा लाए और **अल्लाह** तआ़ला सारे जहान का परवर्दगार है, जो चाहता

www.dawateislami.net

है हुक्म करता और जो चाहता है करता है। यक़ीनन आ'माल मेरे लिये फ़ाएदे मन्द हैं किसी सूरत में भी नुक़्सान देह नहीं हो सकते क्यूं कि अगर मैं **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म में नेक बख़्त हूं तो **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ज़ियादा सवाब का मोह़ताज हूं और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता इ़ल्मे इलाही में मेरा नाम बद बख़्तों में है तो भी इ़बादत करने से अपने आप पर मलामत तो नहीं करूंगा कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे त़ाअ़तो इ़बादत करने पर सज़ा न देगा और कम अज़् कम इतना तो ज़रूर है कि ना फ़रमान हो कर दोज़ख़ में जाने से फ़रमां बरदार हो कर दोज़ख़ में जाना बेहतर है और फिर येह कि सब मह़्ज़ एह़तिमालात हैं वरना उस का वा'दा बिल्कुल ह़क़ है और उस का फ़रमान बिल्कुल सच है और **अल्लाह** तआ़ला ने त़ाअ़तो इ़बादत पर सवाब अ़त़ा फ़रमाने का बे शुमार मक़ामात पर वा'दा फ़रमाया है तो जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ईमान और त़ाअ़त के साथ ह़ाज़िर होगा वोह हरगिज़ हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल न होगा बल्कि **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम और उस के सच्चे व मुक़द्दस वा'दे की वज्ह से जन्नत में जाएगा।

लिहाज़ा (ऐ लोगो !) तुम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ, शैत़ान के ह़ीलों से होशियार रहो, हर वक़्त **अल्लाह** तआ़ला से मदद त़लब करते रहो और शैत़ान मरदूद से उसी की पनाह मांगते रहो क्यूं कि तमाम मुआ़मलात उसी के क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं और वोही तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाने वाला है, गुनाहों से बचने और त़ाअ़तो इ़बादत करने की त़ाक़त **अल्लाह** तआ़ला की तौफ़ीक़ से ही मिलती है।[1]

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन का क्या नुक़्सान था अगर ईमान लाते **अल्लाह** और क़ियामत पर और **अल्लाह** के दिये में से उस की राह में ख़र्च करते और **अल्लाह** उन को जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर वोह **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाते और **अल्लाह** के दिये हुए रिज़्क़ में से उस की राह में ख़र्च करते तो उन का क्या नुक़्सान था और **अल्लाह** उन्हें जानता है।

1 ......منهاج العابدين، العقبة الثالثة، العائق الثالث: الشيطان، ص ٦١-٦٢ .

www.dawateislami.net

﴿وَمَاذَا عَلَيْهِمْ﴾ : **और उन का क्या नुक़्सान था ।** नामवरी और दिखावे के तौर पर माल ख़र्च करने वालों को तम्बीह की जा रही है कि येह अगर **अल्लाह** तआ़ला पर और आख़िरत पर सहीह़ ईमान लाते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए माल में से उस की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये ख़र्च करते तो इस में सरासर उन का नफ़्अ़ ही था । मा'लूम हुवा कि राहे ख़ुदा में ख़र्च करते वक़्त **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और सवाब ह़ासिल करने की निय्यत होनी चाहिये, ब सूरते दीगर अ़मल ज़ाएअ़ हो जाएगा और इस पर सज़ा भी मिलेगी ।

> إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** एक ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो वोह उसे कई गुना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाता है ।

﴿إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ﴾ : **बेशक अल्लाह एक ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता ।** **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि वोह किसी पर एक ज़र्रे जितना भी ज़ुल्म फ़रमाए । यहां येह बात इस मा'ना में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के नेक आ'माल बिग़ैर किसी वज्ह के ज़ाएअ़ फ़रमा कर उन की जज़ा से मह़रूम कर दे या किसी मुजरिम को उस के जुर्म से ज़ियादा सज़ा दे दे, येह उस की शान के लाइक़ नहीं बल्कि अपने फ़ज़्लो रह़मत से नेकी का सवाब अ़मल के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा अ़ता फ़रमाता है । ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ज़ुल्म से पाक है मोमिन नेकी करता है तो दुन्या में रिज़्क़ और आख़िरत में जन्नत की सूरत में सवाब पाता है और काफ़िर कोई नेकी करता है तो उस के बदले दुन्या में ही उसे रिज़्क़ दे दिया जाता है और क़ियामत के दिन उस के पास कोई नेकी न होगी जिस पर उसे कोई जज़ा मिले ।"(1)

(1)......مسلم، کتاب صفة القیامة والجنة والنار، باب جزاء المؤمن بحسناته فی الدنیا والآخرة... الخ، ص١٥٠٨، الحدیث:٥٦(٢٨٠٨).

www.dawateislami.net

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं और ऐ मह़बूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान बना कर लाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो कैसा ह़ाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और ऐ ह़बीब ! तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान बना कर लाएंगे।

﴿فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ﴾ **: तो कैसा ह़ाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएं।** इस आयत में कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन और यहूदो नसारा के लिये शदीद वई़द है कि जब क़ियामत के दिन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी उम्मत के हर नेक और बद के ईमान, कुफ़्र, निफ़ाक़ और तमाम अच्छे बुरे आ'माल की गवाही देंगे, फिर उन सब पर हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गवाह बनाया जाएगा तो उन का अन्जाम क्या होगा। क़ियामत के दिन दी जाने वाली इस गवाही की तफ़्सील सूरए बक़रह की आयत नम्बर 143 के तह़त गुज़र चुकी है।

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ عَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُؕ وَ لَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۲﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन तमन्ना करेंगे वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की ना फ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाए और कोई बात **अल्लाह** से न छुपा सकेंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस दिन कुफ़्फ़ार और रसूल की ना फ़रमानी करने वाले तमन्ना करेंगे कि काश उन्हें मिट्टी में दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाए और वोह कोई बात **अल्लाह** से छुपा न सकेंगे।

www.dawateislami.net

﴿ يَوۡمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا : **उस दिन काफ़िर तमन्ना करेंगे ।**﴾ क़ियामत के दिन की होलनाकी और अपने आ'माल का बदला देख कर कुफ़्फ़ार तमन्ना करेंगे कि काश हमें पैदा ही न किया गया होता । काश ! ज़मीन फट जाए और हम उस में दफ़्न हो जाएं । काश ! हमें भी जानवरों की तरह मिट्टी कर दिया जाता फिर जब उन की ख़ताओं पर बाज़पुर्स होगी तो क़समें खा कर कहेंगे कि ऐ हमारे रब ! हम मुश्रिक न थे, तब उन के मुंह पर मोहर लगा दी जाएगी फिर उन के आ'ज़ा बोल उठेंगे और सब आ'माल बयान कर देंगे, इस तरह येह अपनी पूरी कोशिश के बा वुजूद **अल्लाह** तआला से कोई बात भी छुपा न सकेंगे ।

अल्लाह तआला के अज़ाब से हर एक को डरना चाहिये

येह आयत तो काफ़िरों के बारे में नाज़िल हुई लेकिन बहर हाल दुन्या में तो हर आदमी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब से डरना चाहिये येही वज्ह है क़ियामत की होलनाकी और अज़ाबे जहन्नम की शिद्दत के पेशे नज़र हमारे अकाबिर अस्लाफ़ और बुज़ुर्गाने दीन भी तमन्ना करते थे कि काश वोह पैदा ही न हुए होते । अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार परिन्दे को देख कर इर्शाद फ़रमाया : ऐ परिन्दे ! काश ! मैं तुम्हारी तरह होता और मुझे इन्सान न बनाया जाता । अमीरुल मुअमिनीन हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है : मेरी तमन्ना है कि मैं एक मेंढा होता जिसे मेरे अहले ख़ाना अपने मेहमानों के लिये ज़ब्ह कर देते । हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है : काश ! मैं एक दरख़्त होता जो काट दिया जाता । अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मुझे वफ़ात के बा'द न उठाया जाए । हज़रते तल्हा और हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाया करते : काश ! हम पैदा ही न हुए होते । उम्मुल मुअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाया करतीं : काश ! मैं कोई भूली बिसरी चीज़ होती । हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : काश ! मैं राख होता ।(1)

येह कलिमात उन हस्तियों के हैं जो ज़बाने रिसालत से क़त्ई जन्नती होने की बिशारत से बहरा मन्द हुए, जब कि अब के लोगों की हालत येह है कि अमल नाम की कोई चीज़ पल्ले

1 ......قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون، شرح مقام الخوف ووصف الخائفین... الخ، ١/٤٥٩-٤٦٠، ملخصاً.

www.dawateislami.net

नहीं और बे हिसाब मग़्फ़िरत का यक़ीन दिल में सजाए बैठे हैं। ऐ काश ! हमें भी ह़क़ीक़ी मा'नों में ईमान पर ख़ातिमे की फ़िक्र, क़ब्रो ह़श्र के पुरहोल लम्ह़ात की तय्यारी की सोच, अ़ज़ाबे जहन्नम से डर और जब्बारो क़ह्हार रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नसीब हो जाए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا
تَقُوْلُوْنَ وَ لَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِیْ سَبِیْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآىٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَآءً فَتَیَمَّمُوْا صَعِیْدًا طَیِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَیْدِیْكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا (۴۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और न नापाकी की ह़ालत में बे नहाए मगर मुसाफ़िरी में और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में या तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया या तुम ने औ़रतों को छुवा और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का मस्ह़ करो बेशक **अल्लाह** मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ जब तक समझने न लगो वोह बात जो तुम कहो और न नापाकी की ह़ालत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) ह़त्ता कि तुम ग़ुस्ल कर लो सिवाए इस के कि तुम ह़ालते सफ़र में हो (तो तयम्मुम कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया हो या तुम ने औ़रतों से हम बिस्तरी की हो और पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का मस्ह़ कर लिया करो बेशक **अल्लाह** मुआ़फ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।

www.dawateislami.net

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا : **ऐ ईमान वालो !**﴾ **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुछ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की दा'वत की, जिस में खाने के बा'द शराब पेश की गई, बा'ज़ ह़ज़रात ने शराब पी ली क्यूं कि उस वक़्त तक शराब ह़राम न हुई थी फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, इमाम ने नशे की ह़ालत में सूरए काफ़िरून की तिलावत की और कलिमा "لَا" छोड़ गए जिस से "न" की जगह "हां" का मा'ना बन गया। इस से मा'ना ग़लत़ हो गए। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें नशे की ह़ालत में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया।(1)

चुनान्चे मुसल्मानों ने नमाज़ के अवक़ात में शराब तर्क कर दी, इस के बा'द सूरए माइदह में शराब को बिल्कुल ह़राम कर दिया गया।

नशे की ह़ालत में कलिमए कुफ़्र बोलने का हुक्म

मज़्कूरा वाक़िए से मा'लूम हुवा कि अगर नशे की ह़ालत में कोई शख़्स कुफ़्रिय्या कलिमा बोल दे तो वोह काफ़िर नहीं होता क्यूं कि "قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" में दोनों जगह "لَا" का तर्क कुफ़्र है क्यूं कि इस से मा'ना बनेगा कि ऐ काफ़िरो ! जिन बुतों की तुम इबादत करते हो उन की मैं भी इबादत करता हूं। और येह कलिमा यक़ीनन कुफ़्रिय्या है लेकिन चूंकि यहां नशे की ह़ालत थी इस लिये ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस पर कुफ़्र का हुक्म न फ़रमाया बल्कि क़ुरआने पाक में उन को "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" से ख़िताब फ़रमाया गया।(2)

﴿وَلَا جُنُبًا : **और न ह़ालते जनाबत में।**﴾ **आयत में पहला हुक्म था** कि नशे की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ। **दूसरा हुक्म येह दिया गया** कि जब तुम जनाबत की ह़ालत में हो तो जब तक ग़ुस्ल न कर लो तब तक नमाज़ के क़रीब न जाओ या'नी पहले ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है। हां अगर सफ़र की ह़ालत में हो और पानी न मिले तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो। यहां सफ़र की क़ैद इस लिये है कि पानी न मिलना अक्सर सफ़र ही में होता है वरना न तो सफ़र में तयम्मुम की कुल्ली इजाज़त है और न तयम्मुम की इजाज़त सफ़र के साथ ख़ास है या'नी अगर सफ़र में पानी मुयस्सर हो तो तयम्मुम की इजाज़त न होगी और यूंही अगर सफ़र की

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٤٣، ١/٣٨٢.

2 ...... कुफ़्रिय्या जुम्लों और अल्फ़ाज़ के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालआ़ ज़रूर कीजिये।

www.dawateislami.net

हालत नहीं लेकिन बीमारी वग़ैरा है जिस में पानी का इस्ति'माल नुक़्सान देह हो तो तयम्मुम की इजाज़त है।

﴿وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى : **और अगर तुम बीमार हो**।﴾ आयत में **तीसरी बात** जो इर्शाद फ़रमाई गई उस में तयम्मुम के हुक्म में तफ़्सील बयान कर दी गई जिस में येह भी दाख़िल है कि तयम्मुम की इजाज़त जिस त़रह़ बे ग़ुस्ल होने की सूरत में है इसी त़रह़ बे वुज़ू होने की सूरत में है। चुनान्चे फ़रमाया गया कि अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो और तुम्हें वुज़ू या ग़ुस्ल की ह़ाजत है या तुम बैतुल ख़ला से क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ हो कर आओ और तुम्हें वुज़ू की ह़ाजत हो या तुम ने औ़रतों से हम बिस्तरी की हो और तुम पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया हो तो इन तमाम सूरतों में अगर तुम पानी के इस्ति'माल पर क़ादिर न हो ख़्वाह पानी मौजूद न होने के बाइ़स या दूर होने के सबब या इस के ह़ासिल करने का सामान न होने के सबब या सांप, दरिन्दा, दुश्मन वग़ैरा के डर से तो तयम्मुम कर सकते हो। याद रहे कि जब औ़रत को हैज़ व निफ़ास से फ़ारिग़ होने के बा'द ग़ुस्ल की ह़ाजत हो और अगर उस वक़्त पानी पर क़ुदरत न पाए तो इस सूरत में इसे भी तयम्मुम की इजाज़त है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है।

﴿فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا : **तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो**।﴾ आयत के आख़िर में तयम्मुम करने का त़रीक़ा भी इर्शाद फ़रमाया जिस का ख़ुलासा और चन्द अह़काम येह हैं :

तयम्मुम का त़रीक़ा

तयम्मुम करने वाला पाकी ह़ासिल करने की निय्यत करे और जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे गर्द, रेत, पथ्थर, मिट्टी का फ़र्श वग़ैरा, उस पर दो मरतबा हाथ मारे, एक मरतबा हाथ मार कर चेहरे पर फेर ले और दूसरी मरतबा ज़मीन पर हाथ फेर कर कोहनियों समेत दोनों हाथों पर फेर ले।

तयम्मुम के 2 अह़काम

(1)...... एक तयम्मुम से बहुत से फ़राइज़ व नवाफ़िल पढ़े जा सकते हैं।

(2)...... तयम्मुम करने वाले के पीछे ग़ुस्ल और वुज़ू करने वाले की इक़्तिदा सह़ीह़ है।

नोट : तयम्मुम के बारे में मज़ीद अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त, जिल्द 1, ह़िस्सा नम्बर 2 "तयम्मुम का बयान" मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

आयते मुबारका के आख़िरी जुज़ का शाने नुज़ूल येह है कि ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में जब लश्करे इस्लाम रात के वक़्त एक बयाबान में ठहरा जहां पानी न था और सुब्ह़ वहां से कूच करने का इरादा था, वहां उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का हार गुम हो गया, उस की तलाश के लिये सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां क़ियाम फ़रमाया, सुब्ह़ हुई तो पानी न था। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने तयम्मुम की आयत नाज़िल फ़रमाई। येह देख कर ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि "ऐ आले अबू बक्र ! येह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है या'नी तुम्हारी बरकत से मुसल्मानों को बहुत आसानियां हुईं और बहुत फ़वाइद पहुंचे।" फिर जब ऊंट उठाया गया तो उस के नीचे हार मिल गया।(1)

हार गुम होने और रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के न बताने में बहुत सी ह़िक्मतें थीं। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हार की वज्ह से नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वहां क़ियाम फ़रमाना ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की फ़ज़ीलत व मर्तबे को ज़ाहिर करता है और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के हार तलाश करने में इस बात की हिदायत है कि हुज़ूर ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात की ख़िदमत मोमिनीन की सआ़दत है, नीज़ इस वाक़िए से तयम्मुम का हुक्म भी मा'लूम हो गया जिस से क़ियामत तक मुसल्मान नफ़्अ़ उठाते रहेंगे। سُبْحٰنَ اللّٰہ।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ یَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِیْلَ ﴿۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन को किताब से एक ह़िस्सा मिला गुमराही मोल लेते हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से बहक जाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने उन लोगों को न देखा जिन्हें किताब से एक ह़िस्सा मिला कि वोह गुमराही ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ।

1 ......بخاری، كتاب التيمم، باب التيمم، ١/١٣٣، الحديث: ٣٣٤.

www.dawateislami.net

﴿اَلَمْ تَرَ : **क्या तुम ने न देखा ।**﴾ यहां यहूदियों के बारे में फ़रमाया गया कि उन लोगों को **अल्लाह** तआ़ला की किताब या'नी तौरात मिली जिस से उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत को तो पहचाना लेकिन इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ तौरात में बयान किया था उस हिस्से से मह़रूम रहे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए। इस लिये फ़रमाया कि उन्हें किताब का एक हिस्सा मिला। गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब रखने के बा वुजूद हिदायत की बजाए गुमराही के पैरौकार हुए और इस के साथ ऐ मुसल्मानो ! तुम्हें भी गुमराह करने की कोशिशें करते रहते हैं। मा'लूम हुवा कि हिदायत का दारो मदार ही हुज़ूर सय्यिदे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कामिल ईमान लाने पर है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآىٕكُمْؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِیًّا٘ۗ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِیْرًا(۴۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को और **अल्लाह** काफ़ी है वाली और **अल्लाह** काफ़ी है मददगार।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और हिफ़ाज़त के लिये **अल्लाह** ही काफ़ी है और **अल्लाह** ही काफ़ी मददगार है।

﴿وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآىٕكُمْ : **और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और उस ने तुम्हें भी उन की अ़दावत (दुश्मनी) पर ख़बरदार कर दिया है लिहाज़ा तुम्हें चाहिये कि उन दुश्मनों से बचते रहो। यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा हमारे दुश्मनों को जानता है लिहाज़ा जिसे वोह दुश्मन फ़रमा दे वोह यक़ीनन हमारा दुश्मन है जैसे शैतान और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन।

مِنَ الَّذِیْنَ هَادُوْا یُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ یَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا
وَ عَصَیْنَا وَ اسْمَعْ غَیْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَیًّۢا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَ طَعْنًا فِی الدِّیْنِؕ
وَ لَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا وَ اسْمَعْ وَ انْظُرْنَا لَكَانَ

www.dawateislami.net

خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ यहूदी कलामों को उन की जगह से फेरते हैं और कहते हैं हम ने सुना और न माना और सुनिये आप सुनाए न जाएं और राइना कहते हैं ज़बानें फेर कर और दीन में ता'ने के लिये और अगर वोह कहते कि हम ने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हम पर नज़र फ़रमाएं तो उन के लिये भलाई और रास्ती में ज़ियादा होता लेकिन उन पर तो **अल्लाह** ने ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो यक़ीन नहीं रखते मगर थोड़ा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : यहूदियों में कुछ वोह हैं जो कलिमात को उन की जगह से बदल देते हैं और कहते हैं : हम ने सुना और माना नहीं और आप सुनें, आप को न सुनाया जाए और ''राइना'' कहते हैं ज़बानें मरोड़ कर और दीन में ता'ने के लिये, और अगर वोह कहते कि हम ने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हम पर नज़र फ़रमाएं तो येह उन के लिये बेहतर और ज़ियादा दुरुस्त होता लेकिन उन पर तो **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र की वज्ह से ला'नत कर दी तो वोह बहुत थोड़ा यक़ीन रखते हैं।

﴿مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا : **यहूदियों में कुछ वोह हैं।**﴾ आयत का ख़ुलासए कलाम येह है कि बहुत से यहूदियों की ख़स्लतो आ़दत निहायत ही बुरी और क़बीह़ है, उन में कई बुरी आ़दतें हैं : **पहली** येह कि तौरैत शरीफ़ में **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में जो बयान फ़रमाया है, यहूदी उन कलिमात को बदल देते हैं। **दूसरी बात** येह कि जब ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें कुछ हुक्म फ़रमाते हैं तो येह ज़बान से तो कहते हैं कि हम ने मान लिया लेकिन दिल से कहते हैं कि हम ने क़बूल नहीं किया। **तीसरी बात** येह कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कई त़रह़ से मुनाफ़क़त करते हैं जिस की एक सूरत येह भी है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ऐसे जुम्ले बोलते हैं जिन के दो मा'ना बनते हों, एक अच्छे और दूसरे बुरे। और उन यहूदियों का त़रीक़ा येह है कि ज़ाहिरन तो अच्छे मा'ना का तअस्सुर देते हैं लेकिन दिल में वोही ख़बीस मा'ना मुराद लेते हैं जैसे कहते हैं कि सुनिये और आप को न सुनाया जाए। ''न सुनाया जाए'' से ज़ाहिरी मा'ना येह निकलता कि कोई ना गवार बात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुनने में न आए और दूसरा मा'ना जो वोह

www.dawateislami.net

मुराद लेते येह होता कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनना नसीब न हो। और इसी की दूसरी मिसाल "رَاعِنَا" का कलिमा है जिस का ज़ाहिरी मा'ना "हमारी रिआयत फ़रमाइये" है और यहूदी इस का मा'ना वोह लेते जो शाने मुबारक के लाइक़ न हो हालां कि इस लफ़्ज़ के इस्ति'माल से मन्अ़ फ़रमा दिया गया था। फिर उस के साथी यहूदी अपने साथियों से कहते थे कि हम तो मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुरा भला कहते हैं, अगर आप नबी होते तो आप इस को जान लेते। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के अन्दर की ख़बासत को यहां ज़ाहिर फ़रमा दिया। इस से मा'लूम हुवा कि सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म पर ता'न करना दर ह़क़ीक़त दीने इस्लाम पर ता'न करना है और येह यहूदियों का त़रीक़ा है। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि अगर येह लोग भी अहले अदब का त़रीक़ा इख़्तियार करते और उन्ही की त़रह़ कहते कि "**या रसूलल्लाह ! हम ने सुना और दिलो जान से तस्लीम किया, हुज़ूर ! हमारी बात सुनिये और हम पर नज़रे करम फ़रमाएं**" तो येह उन के लिये दुन्या व आख़िरत हर ए'तिबार से बेहतर होता। लेकिन चूंकि येह मल्ऊ़न हैं लिहाज़ा इन्हें अदब की तौफ़ीक़ नहीं होगी।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो ईमान लाओ उस पर जो हम ने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब की तस्दीक़ फ़रमाता क़ब्ल इस के कि हम बिगाड़ दें कुछ मूंहों को तो उन्हें फेर दें उन की पीठ की त़रफ़ या उन्हें ला'नत करें जैसी ला'नत की हफ़्ते वालों पर और ख़ुदा का हुक्म हो कर रहे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ किताब वालो ! जो हम ने तुम्हारे पास मौजूद किताब की तस्दीक़ करने वाला (क़ुरआन) उतारा है उस पर ईमान ले आओ, इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ दें फिर उन्हें उन की पीठ की सूरत फेर दें या उन पर भी ऐसे ही ला'नत करें जैसे हफ़्ते वालों पर ला'नत की थी और **अल्लाह** का हुक्म हो कर ही रहता है।

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ : **ऐ किताब वालो !**﴾ यहां यहूदियों से ख़िताब है कि ऐ अहले किताब ! हम ने कुरआन उतारा है जो तुम्हारे पास मौजूद किताब या'नी तौरैत की तस्दीक़ करने वाला है उस पर ईमान ले आओ वरना ऐसा न हो कि हम तुम्हारे चेहरे से आंख, नाक, कान, अब्रू वग़ैरा मिटा कर तुम्हारी शक्लें बिगाड़ दें और तुम्हारे चेहरे को आगे से भी एक ऐसी खाल की तरह कर दें जैसे सर का पिछला हिस्सा होता है कि उस में न आंखें रहें, न नाक मुंह वग़ैरा और या इन यहूदियों पर भी हम ऐसे ही ला'नत करें जैसे हफ़्ते के दिन ना फ़रमानी करने वाले यहूदी गुरौह पर ला'नत की गई थी। ला'नत तो यहूदियों पर ऐसी पड़ी कि दुन्या इन्हें मल्ऊन कहती है। इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : बा'ज़ कहते हैं कि येह वईद दुन्या के ए'तिबार से है और बा'ज़ इसे आख़िरत के ए'तिबार से क़रार देते हैं नीज़ बा'ज़ कहते हैं कि ला'नत हो चुकी है और वईद वाक़ेअ़ हो गई है और बा'ज़ कहते हैं अभी इन्तिज़ार है। बा'ज़ का क़ौल है कि चेहरे बिगड़ने की येह वईद इस सूरत में थी जब कि यहूदियों में से कोई ईमान न लाता और चूंकि बहुत से यहूदी ईमान ले आए इस लिये शर्त़ नहीं पाई गई और वईद उठ गई।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़बूले इस्लाम

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो बहुत बड़े यहूदी आ़लिम थे, उन्हों ने मुल्के शाम से वापस आते हुए रास्ते में येह आयत सुनी और अपने घर पहुंचने से पहले इस्लाम ला कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** मैं नहीं ख़याल करता था कि मैं अपना मुंह पीठ की त़रफ़ फिर जाने से पहले और चेहरे का नक़्शा मिट जाने से क़ब्ल आप की ख़िदमत में हाज़िर हो सकूंगा या'नी इस ख़ौफ़ से उन्हों ने ईमान लाने में जल्दी की क्यूं की तौरैत शरीफ़ से उन्हें आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रसूले बरह़क़ होने का यक़ीनी इ़ल्म था।[1]

हज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़बूले इस्लाम

हज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो उ़लमाए यहूद में बड़ी क़द्रो मन्ज़िलत रखते थे उन्हों ने एक रात किसी शख़्स से येही आयत सुनी तो ख़ौफ़ज़दा हुए और हज़रत उ़मरे फ़ारूक़

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٤٧، ١/ ٣٩٠-٣٩١.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में हाज़िर हो कर मुसलमान हो गए।[1]

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया उस ने बड़े गुनाह का तूफ़ान बांधा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** इस बात को नहीं बख़्शता कि उस के साथ शिर्क किया जाए और इस से नीचे जो कुछ है जिसे चाहता है मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जिस ने **अल्लाह** का शरीक ठहराया तो बेशक उस ने बहुत बड़े गुनाह का बोहतान बांधा।

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ﴾ **: बेशक अल्लाह इस बात को नहीं बख़्शता कि उस के साथ शिर्क किया जाए।**﴾ आयत का मा'ना येह है कि जो कुफ़्र पर मरे उस की बख़्शिश नहीं होगी बल्कि उस के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है और जिस ने कुफ़्र न किया हो वोह ख़्वाह कितना ही गुनहगार और कबीरा गुनाहों में मुलव्वस हो और बे तौबा भी मर जाए तब भी उस के लिये जहन्नम में हमेशा का दाख़िला नहीं होगा बल्कि उस की मग़्फ़िरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत (या'नी उस के चाहने) पर है, चाहे तो वोह करीम मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो उस बन्दे को उस के गुनाहों पर अ़ज़ाब देने के बा'द फिर अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। इस आयत में यहूदियों को ईमान लाने की तरग़ीब है।

मग़्फ़िरत की उम्मीद पर गुनाह करना बहुत ख़त़रनाक है

येह याद रहे कि कुफ़्र के इ़लावा क़ियामत के दिन हर गुनाह के बख़्शे जाने का इम्कान ज़रूर है मगर इस इम्कान की उम्मीद पर गुनाहों में पड़ना बहुत ख़त़रनाक है बल्कि बा'ज़ सूरतों में गुनाह को हलका समझने की सूरत में ख़ुद कुफ़्र हो जाएगा। कितना करीम है वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जो लाखों गुनाह करने वाले बन्दे को मुआ़फ़ी की उम्मीद दिला रहा है और कितना घटिया है

[1] فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ص٢٣٤-٢٣٥، الجزء الاول.

www.dawateislami.net

वोह बन्दा जो ऐसे करीम के करम व रह़मत पर दिलो जान से क़ुरबान हो कर उस की बन्दगी में लगने की बजाए उस की ना फ़रमानियों पर कमर बस्ता है।

ह़ज़रते वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि वह़शी जिस ने ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया था वोह सुल्त़ाने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मुझे अमान दीजिये ताकि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ुदा का कलाम सुनूं कि इस में मेरी मग़्फ़िरत और नजात है। इर्शाद फ़रमाया : मुझे येह पसन्द था कि मेरी नज़र तुम पर इस त़रह़ पड़ती कि तू अमान त़लब न कर रहा होता लेकिन अब तू ने अमान मांगी है तो मैं तुम्हें अमान देता हूं ताकि तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुन सके, इस पर येह आयत नाज़िल हुई :

وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰہِ اِلٰـہًا اٰخَرَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते।

वह़शी ने कहा : मैं शिर्क में मुब्तला रहा हूं और मैं ने नाह़क़ ख़ून भी किया है और ज़िना का भी मुरतकिब हुवा हूं क्या इन गुनाहों के होते ह़क़ तआ़ला मुझे बख़्श देगा ? इस पर सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई और कोई कलाम न फ़रमाया, फिर येह आयत नाज़िल हुई :

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे।

वह़शी ने कहा : इस आयत में शर्त़ की गई है कि गुनाहों से मग़्फ़िरत उसे ह़ासिल होगी जो तौबा कर ले और नेक अ़मल करे, जब कि मैं नेक अ़मल न कर सका तो मेरा क्या होगा ? तब येह आयत तिलावत फ़रमाई :

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

1 ......الفرقان: ٦٨.
2 ......الفرقان: ٧٠.
3 ......النساء: ٤٨.

www.dawateislami.net

अब वह्शी ने कहा : इस आयत में मग़्फ़िरत मशिय्यते इलाही के साथ वाबस्ता है, मुम्किन है मैं उन लोगों में से होउं जिन के साथ ह़क़ तआला की मशिय्यते मग़्फ़िरत वाबस्ता न हो, इस के बा'द येह आयत नाज़िल हुई :

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो।

येह आयत सुन कर वह्शी ने कहा : अब मैं कोई क़ैद और शर्त़ नहीं देखता और उसी वक़्त मुसल्मान हो गया।(2)

मदारिज के इलावा बक़िय्या किताबों में येह मज़्कूर है कि येह अ़र्ज़ मा'रूज़ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में न हुई बल्कि दूसरे ज़रीए से हुई।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ یُزَكِّیْ مَنْ یَّشَآءُ وَ لَا یُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا ﴿۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ख़ुद अपनी सुथराई बयान करते हैं बल्कि **अल्लाह** जिसे चाहे सुथरा करे और उन पर ज़ुल्म न होगा दानए ख़ुरमा के डोरे बराबर।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो ख़ुद अपनी पाकीज़गी बयान करते हैं बल्कि **अल्लाह** जिसे चाहता है पाकीज़ा बना देता है। और उन पर खजूर के अन्दर की झिल्ली के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

﴾اَلَّذِیْنَ یُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ : **जो ख़ुद अपनी पाकीज़गी बयान करते हैं।**﴿ येह आयत यहूदो नसारा के बारे में नाज़िल हुई जो अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेटा और उस का प्यारा बताते थे और कहते थे कि यहूदो नसारा के सिवा कोई जन्नत में न दाख़िल होगा और यूं अपनी ता'रीफ़ आप करते थे और वोह भी झूटी।

(1)......الزمر: ۵۳.

(2)......مدارج النبوہ، قسم سوم، باب ھفتم: ذکر سال ھفتم وفتح مکہ، ۲/۳۰۲.

www.dawateislami.net

ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत

इस आयते करीमा में ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत का बयान है। ख़ुद पसन्दी येह है कि जिसे **अल्लाह** तआला ने अपने फ़ज़्लो करम से दीनी या दुन्यावी कोई ने'मत अता की हो वोह येह तसव्वुर करे कि इस ने'मत का मिलना मेरी ज़ाती काविश का नतीजा है और उस पर नाज़ करने लगे।[1]

ख़ुद पसन्दी एक मज़्मूम बातिनी मरज़ है और फ़ी ज़माना मुसल्मानों की अक्सरिय्यत इस में मुब्तला नज़र आती है। अपने इल्मो अमल पर नाज़ करना, कस्रते इबादत पर इतराना, इज़्ज़त, मन्सब और दौलत पर नाज़ां होना, फ़न्नी महारत पर किसी की अंगुश्त नुमाई बरदाश्त न कर सकना, किसी और को ख़ातिर में ही न लाना बहुत आम है। ऐसे हज़रात को चाहिये कि इन रिवायात का बग़ौर मुतालआ करें :

(1)...... रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी नेक अमल पर अपनी ता'रीफ़ की तो उस का शुक्र ज़ाएअ हुवा और अमल बरबाद हो गया।"[2]

(2)...... हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है, सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें हलाकत में डालने वाली हैं : (1) लालच जिस की इताअत की जाए (2) ख़्वाहिश जिस की पैरवी की जाए (3) बन्दे का अपने अमल को पसन्द करना या'नी ख़ुद पसन्दी।"[3]

(3)...... नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सुराक़ा ! क्या मैं तुम्हें जन्नती और जहन्नमी लोगों के बारे में न बताऊं ?" अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** ज़रूर बताइये। इर्शाद फ़रमाया : "हर सख़्ती करने वाला, इतरा कर चलने वाला, अपनी बड़ाई चाहने वाला जहन्नमी है जब कि कमज़ोर और मग़्लूब लोग जन्नती हैं।"[4]

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَ كَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۠(۵۰)

1 ...... كيميائے سعادت، ركن سوم: مهلكات، اصل نهم، حقيقت عجب وادلال، ۷۲۵/۲.

2 ...... كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، العجب، ۲۰۶/۲، الجزء الثالث، الحديث: ۷۶۷۴.

3 ...... معجم الاوسط، من اسمه محمد، ۲۱۲/٤، الحديث: ٥٧٥٤.

4 ...... معجم الكبير، علی بن رباح عن سراقة بن مالك، ۱۲۹/۷، الحديث: ٦٥٨٩.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : देखो कैसा **अल्लाह** पर झूट बांध रहे हैं और येह काफ़ी है सरीह़ गुनाह ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : देखो येह **अल्लाह** पर कैसे झूट बांध रहे हैं और खुले गुनाह के लिये येही झूट काफ़ी है ।

﴿اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ﴾ **: देखो येह अल्लाह पर कैसे झूट बांध रहे हैं ।** जो लोग अपने आप को बे गुनाह और मक़्बूले बारगाह बताते हैं ह़ालां कि वोह ऐसे नहीं हैं उन के बारे में फ़रमाया कि देखो कि येह कैसे **अल्लाह** तआ़ला पर झूट बांधते हैं ।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ
وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾
اُولٰٓىٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने वोह न देखे जिन्हें किताब का एक ह़िस्सा मिला ईमान लाते हैं बुत और शैत़ान पर और काफ़िरों को कहते हैं कि येह मुसल्मानों से ज़ियादा राह पर हैं । येह हैं जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और जिसे ख़ुदा ला'नत करे तो हरगिज़ उस का कोई यार न पाएगा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने उन लोगों को न देखा जिन्हें किताब का एक ह़िस्सा मिला वोह बुत और शैत़ान पर ईमान लाते हैं और काफ़िरों को कहते हैं कि येह (मुश्रिक) मुसल्मानों से ज़ियादा हिदायत याफ़्ता हैं । येही वोह लोग हैं जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और जिस पर **अल्लाह** ला'नत कर दे तो हरगिज़ तुम उस के लिये कोई मददगार न पाओगे ।

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ﴾ **: क्या तुम ने उन लोगों को न देखा जिन्हें किताब का एक ह़िस्सा मिला ।** का'ब बिन अशरफ़ और उस के साथ मज़ीद सत्तर यहूदी मुश्रिकीने मक्का के पास पहुंचे और उन्हें हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने पर आमादा

www.dawateislami.net

किया। क़ुरैश बोले कि हमें ख़त़रा है कि तुम भी किताबी हो और उन से क़रीब तर हो। अगर हम ने उन से जंग की और तुम उन से मिल गए तो हम क्या करेंगे? अगर हमें इत़्मीनान दिलाना हो तो हमारे बुतों को सज्दा करो, उन बद नसीबों ने सज्दा कर लिया। अबू सुफ़्यान ने कहा कि बताओ हम ठीक रास्ते पर हैं या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)? का'ब बिन अशरफ़ ने कहा कि तुम ठीक राह पर हो। इस पर येह आयत उतरी।[1]

और **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर ला'नत फ़रमाई कि उन्हों ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़दावत में मुश्रिकीन के बुतों तक को पूजा।

त़ाग़ूत का मा'ना

इस आयत में "त़ाग़ूत" का लफ़्ज़ आया है। येह "त़ग़ा" से बना है जिस का मा'ना है "सरकशी"। जो रब عَزَّوَجَلَّ से सरकश हो और दूसरों को सरकश बनाए वोह त़ाग़ूत है ख़्वाह शैत़ान हो या इन्सान। क़ुरआने करीम ने सरदाराने कुफ़्र को भी त़ाग़ूत कहा है। चूंकि त़ाग़ूत के लफ़्ज़ में सरकशी का माद्दा मौजूद है इस लिये मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही के लिये येह लफ़्ज़ हरगिज़ इस्ति'माल नहीं हो सकता बल्कि जो उन के लिये येह लफ़्ज़ इस्ति'माल करे वोह ख़ुद "त़ाग़ूत" है।

اَمْ لَهُمْ نَصِیْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا یُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِیْرًاۙ ﴿۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या मुल्क में उन का कुछ ह़िस्सा है ऐसा हो तो लोगों को तिल भर न दें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या उन के लिये सल्त़नत का कुछ ह़िस्सा है? ऐसा हो तो येह लोगों को तिल बराबर भी कोई शै न देते।

﴾اَمْ لَهُمْ نَصِیْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ : **क्या उन के लिये सल्त़नत का कुछ ह़िस्सा है?**﴿ यहूदी कहते थे कि हम मुल्क और नुबुव्वत के ज़ियादा ह़क़दार हैं तो हम कैसे अ़रबों की इत्तिबाअ़ करें? **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इस दा'वे को झुटला दिया कि उन का मुल्क में कैसे ह़िस्सा है या'नी कोई ह़िस्सा नहीं है और अगर बिलफ़र्ज़ उन का सल्त़नत में कुछ ह़िस्सा होता तो इन का बुख़्ल इस दरजे का है कि येह लोगों को तिल बराबर भी कोई शै न देते।

1 ......تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ٥١، ٤/١٠١، خازن، النساء، تحت الآية: ٥١، ١/٣٩٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ اٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : या लोगों से ह़सद करते हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो हम ने इब्राहीम की औलाद को किताब और ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बल्कि येह लोगों से उस चीज़ पर ह़सद करते हैं जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़त़ा फ़रमाई है पस बेशक हम ने इब्राहीम की औलाद को किताब और ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई और उन्हें बहुत बड़ी सल्त़नत दी।

﴾اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ﴿ **: बल्कि येह लोगों से ह़सद करते हैं।** इस आयत में यहूदियों के अस्ल मरज़ को बयान फ़रमाया कि ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई और इन के साथ इन के ग़ुलामों को जो नुसरत, ग़लबा, इ़ज़्ज़त वग़ैरा ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं इन पर येह लोग नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अहले ईमान से ह़सद करते हैं ह़ालां कि यहूदियों का येह फ़े'ल सरासर जहालत व ह़माक़त है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद पर फ़ज़्ल फ़रमाया था कि किसी को किताब अ़त़ा फ़रमाई, किसी को नुबुव्वत और किसी को ह़ुकूमत और किसी को इकठ्ठी कई चीज़ें जैसे ह़ज़रते यूसुफ़, ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नवाज़ा तो फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीब, इमामुल अम्बिया, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने करम से किताब और नुबुव्वत व रिसालत अ़त़ा फ़रमाता है तो ऐ यहूदियो ! तुम इस से क्यूं जलते और ह़सद करते हो ?

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ مِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَ كَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन में कोई उस पर ईमान लाया और किसी ने उस से मुंह फेरा और दोज़ख़ काफ़ी है भड़कती आग।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर उन में कोई तो उस पर ईमान ले आया और किसी ने उस से मुंह फेरा और अ़ज़ाब के लिये जहन्नम काफ़ी है।

﴿فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ : **फिर उन में कोई तो उस पर ईमान ले आया।**﴾ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल जारी व सारी रहा, उस ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर पर रिसालत का ताज सजाया, किताब अ़ता फ़रमाई और उन्हें इ़ज़्ज़त व ग़लबा से नवाज़ा। फिर किसी को तो ईमान लाने की तौफ़ीक़ मिल गई जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ और उन के साथ वाले ईमान ले आए और कई मह़रूम रहे जैसे का'ब बिन अशरफ़ वग़ैरा। तो जो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाया उस के लिये जहन्नम की भड़कती आग काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِیْهِمْ نَارًاؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَیْرَهَا لِیَذُوْقُوا الْعَذَابَؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِیْزًا حَكِیْمًا ﴿۵۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया अ़न्क़रीब हम उन को आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया अ़न्क़रीब हम उन को आग में दाख़िल करेंगे। जब कभी उन की खालें ख़ूब जल जाएंगी तो हम उन की खालों को दूसरी खालों से बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा चख लें। बेशक **अल्लाह** ज़बर दस्त है, ह़िक्मत वाला है।

www.dawateislami.net

﴿كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ﴾ **: जब कभी उन की खालें ख़ूब जल जाएंगी ।** यहां काफ़िरों के सख़्त अ़ज़ाब का तज़्किरा है और जहन्नम के अ़ज़ाब की शिद्दत का बयान है कि जहन्नम में ऐसा नहीं होगा कि अ़ज़ाब की वज्ह से जल कर आदमी छूट जाए बल्कि अ़ज़ाब होता रहेगा, खालें जलती रहेंगी और **अल्लाह** तआ़ला नई खालें पैदा फ़रमाता रहेगा ताकि अ़ज़ाब की शिद्दत में कमी न आए । येह ऐसे ही होगा जैसे दुन्या में किसी की खाल जल जाए तो कुछ अ़र्से बा'द सह़ीह़ हो जाती है ।

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِیْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّ نُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِیْلًا ﴿۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न्क़रीब हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे जिन के नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे, उन के लिये वहां सुथरी बीबियां हैं और हम उन्हें वहां दाख़िल करेंगे जहां साया ही साया होगा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किये अ़न्क़रीब हम उन्हें उन बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें जारी हैं (वोह) उन में हमेशा रहेंगे, उन के लिये वहां पाकीज़ा बीवियां हैं और हम उन्हें वहां दाख़िल करेंगे जहां साया ही साया होगा ।

﴿وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: और ईमान वाले ।** काफ़िरों के अ़ज़ाब और जहन्नम के ज़िक्र के बा'द ईमान वालों पर करम नवाज़ियों और जन्नतों का बयान किया गया है । येह क़ुरआने पाक का एक अन्दाज़ है कि काफ़िरों के अफ़्आ़ल व अ़ज़ाब के ज़िक्र के साथ अहले ईमान के आ'माल व जज़ा का ज़िक्र उ़मूमन होता है । चुनान्चे मोमिनों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि उन्हें बाग़ों में दाख़िल किया जाएगा जहां उन्हें पाकीज़ा बीवियां मिलेंगी और वहां धूप नहीं होगी बल्कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ के नूर की तजल्ली की रोशनी होगी और दरख़्त होंगे और ऐसी रह़मत होगी कि उस की राह़तो आसाइश इन्सानी फ़ह्म और बयान से बालातर है ।

www.dawateislami.net

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَاۙ وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَیْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا یَعِظُكُمْ بِهٖؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِیْعًۢا بَصِیْرًا ﴿۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो बेशक **अल्लाह** तुम्हें क्या ही खूब नसीहत फ़रमाता है बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन के सिपुर्द करो और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो बेशक **अल्लाह** तुम्हें क्या ही खूब नसीहत फ़रमाता है, बेशक **अल्लाह** सुनने वाला, देखने वाला है।

﴿اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ﴾ **: बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है।** यहां आयत में दो हुक्म बयान किये गए। **पहला हुक्म** येह कि अमानतें उन के ह़वाले कर दो जिन की हैं और **दूसरा हुक्म** येह है कि जब फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ करो।

इस्लामी ता'लीमात के शाहकार

येह दोनों हुक्म इस्लामी ता'लीमात के शाहकार हैं और अम्नो अमान के क़ियाम और हुक़ूक़ की अदाएगी में मर्कज़ी हैसिय्यत रखते हैं। दोनों की कुछ तफ़्सील यूं है :

(1)...... अमानत की अदाएगी : अमानत की अदाएगी में बुन्यादी चीज़ तो माली मुआ़मलात में ह़क़दार को उस का ह़क़ दे देना है। अलबत्ता इस के साथ और भी बहुत सी चीज़ें अमानत की अदाएगी में दाख़िल हैं। जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मुसल्मानों का ह़ाकिम बना फिर उस ने उन पर किसी ऐसे शख़्स को ह़ाकिम मुक़र्रर किया जिस के बारे में येह ख़ुद जानता है कि इस से बेहतर और इस से ज़ियादा किताब व सुन्नत का आ़लिम मुसल्मानों में मौजूद है तो उस ने **अल्लाह** तआ़ला, उस के रसूल और तमाम मुसल्मानों से ख़ियानत की।"(1)

1 ......معجم الكبير، عمرو بن دينار عن ابن عباس، ٩٤/١١، الحديث: ١١٢١٦.

www.dawateislami.net

(2)...... इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करना : निज़ामे अ़द्लो अ़दालत की रूह़ ही येह है कि इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जाए। फ़रीक़ैन में से अस्लन किसी की रिआ़यत न की जाए। उ़लमा ने फ़रमाया कि ह़ाकिम को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे : (1) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़अ़ दे, दूसरे को भी दे। (2) निशस्त दोनों को एक जैसी दे। (3) दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे। (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे। (5) फ़ैसला देने में ह़क़ की रिआ़यत करे जिस का दूसरे पर ह़क़ हो पूरा पूरा दिलाए। ह़दीस शरीफ़ में है कि इन्साफ़ करने वालों को क़ुर्बे इलाही में नूर के मिम्बर अ़त़ा किये जाएंगे।[1]

क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आ़दिलाना फ़ैसला

मुसल्मान क़ाज़ियों ने इस्लाम के आ़दिलाना निज़ाम और बरह़क़ फ़ैसलों की ऐसी अ़ज़ीमुश्शान मिसालें क़ाइम की हैं कि दुन्या उन की नज़ीर पेश नहीं कर सकती, इस मौक़अ़ पर एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़अ़ पर ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की एक ज़िरह गुम हो गई, बा'द में जब आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो वोह ज़िरह एक यहूदी के पास पाई, उसे फ़रमाया : येह ज़िरह मेरी है, मैं ने तुम्हें बेची है न तोह़फ़े में दी है। यहूदी ने कहा : येह ज़िरह मेरी है क्यूं कि मेरे क़ब्ज़े में है। फ़रमाया : हम क़ाज़ी साहि़ब से फ़ैसला करवाते हैं, चुनान्चे येह क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़दालत में पहुंचे, ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم उन के साथ तशरीफ़ फ़रमा हुए। क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! इर्शाद फ़रमाइये। फ़रमाया : इस यहूदी के क़ब्ज़े में जो ज़िरह है वोह मेरी है, मैं ने इसे न बेची है न तोह़फ़े में दी है। क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहूदी से फ़रमाया : ऐ यहूदी ! तुम क्या कहते हो ? यहूदी बोला : येह ज़िरह मेरी है क्यूं कि मेरे क़ब्ज़े में है। क़ाज़ी साहि़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! क्या आप के पास कोई दलील है ? फ़रमाया : हां, क़म्बर और ह़सन दोनों इस बात के गवाह हैं। क़ाज़ी साहि़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : (कि ह़सन आप के बेटे हैं और शरई़ उसूल येह है कि) बेटे की गवाही बाप के ह़क़ में जाइज़ नहीं। जब उस यहूदी ने क़ाज़ी साहि़ब का आ़दिलाना फ़ैसला सुना तो ह़ैरत ज़दा हो कर

1 ......مسلم، کتاب الامارة، باب فضیلة الامام العادل... الخ، ص ١٠١٥، الحدیث: ١٨(١٨٢٧).

www.dawateislami.net

कहने लगा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप मुझे क़ाज़ी साहि़ब के पास ले कर आए और क़ाज़ी साहि़ब ने आप ही के ख़िलाफ़ फ़ैसला कर दिया ! मैं गवाही देता हूं कि येही मज़हब ह़क़ है और मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं, येह ज़िरह आप ही की है। ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم उस के इस्लाम क़बूल करने से बहुत ख़ुश हुए, वोह ज़िरह और एक घोड़ा उसे तोह़फ़े में दे दिया।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾ ع

ع ٨ ٥

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे **अल्लाह** व रसूल के ह़ुज़ूर रुजूअ़ करो अगर **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान रखते हो येह बेहतर है और इस का अन्जाम सब से अच्छा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की इत़ाअ़त करो और रसूल की इत़ाअ़त करो और उन की जो तुम में से हुकूमत वाले हैं। फिर अगर किसी बात में तुम्हारा इख़्तिलाफ़ हो जाए तो अगर **अल्लाह** और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो तो उस बात को **अल्लाह** और उस के रसूल की बारगाह में पेश करो। येह बेहतर है और इस का अन्जाम सब से अच्छा है।

﴿وَاَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ﴾ : **और रसूल की इत़ाअ़त करो ।** यहां आयत में रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का हुक्म दिया गया है क्यूं कि रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की इत़ाअ़त है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ह़ुज़ूरे पुरनूर

[1] ......تاریخ الخلفاء،ابو السبطین:علی بن ابی طالب،فصل فی نبذ من اخبار علی...الخ، ص١٨٤-١٨٥، الکامل فی التاریخ، سنۃ اربعین، ذکر بعض سیرتہ، ٣/٢٦٥.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मेरी इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की।(1)

रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त के बा'द अमीर की इत़ाअ़त का हुक्म दिया गया है। सह़ीह़ बुख़ारी की साबिक़ा ह़दीस में ही है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने अमीर की इत़ाअ़त की उस ने मेरी इत़ाअ़त की और जिस ने अमीर की ना फ़रमानी की उस ने मेरी ना फ़रमानी की।(2)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है

हु़ज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी फ़र्ज़ है, क़ुरआने पाक की मुतअ़द्दद आयात में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का हुक्म दिया गया बल्कि रब तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार दिया और इस पर सवाबे अ़ज़ीम का वा'दा फ़रमाया और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी पर अ़ज़ाबे जहन्नम का मुज़्दा सुनाया, लिहाज़ा जिस काम का आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया उसे करना और जिस से मन्अ़ फ़रमाया उस से रुक जाना ज़रूरी है, **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं उस से बाज़ रहो और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी और उस चीज़ की जिस के साथ **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे भेजा मिसाल उस शख़्स की सी है जो अपनी क़ौम के पास आ कर कहने लगा : ऐ मेरी क़ौम मैं ने अपनी आंखों से एक लश्कर देखा है, मैं वाज़ेह़ त़ौर पर तुम्हें उस से डरा रहा हूं, अपनी नजात की राह तलाश कर लो। अब एक गुरौह उस की बात मान कर मोहलत से फ़ाएदा उठाते हुए रातों रात वहां से चला गया वोह तो नजात पा गया और एक गुरौह ने उस की बात न मानी और वहीं रुका रहा तो सुब्ह़ के वक़्त

1 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب یقاتل من وراء الامام ویتقی به، ۲/۲۹۷، الحدیث: ۲۹۵۷.
2 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب یقاتل من وراء الامام ویتقی به، ۲/۲۹۷، الحدیث: ۲۹۵۷.
3 ......حشر:۷.

www.dawateislami.net

लश्कर ने उन पर ह़म्ला कर के उन्हें हलाक कर दिया। तो जिस ने मेरी इत़ाअ़त की और जो मैं लाया उस पर अ़मल पैरा हुवा वोह उस गुरौह जैसा है जो नजात पा गया और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की और जो मैं लाया उसे झुटलाया तो वोह उस गुरौह की त़रह़ है जो न मान कर हलाकत में पड़ा।[1]

इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मान हुक्मरानों की इत़ाअ़त का भी हुक्म है जब तक वोह ह़क़ के मुवाफ़िक़ रहें और अगर ह़क़ के ख़िलाफ़ हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त नहीं की जाएगी। नीज़ इस आयत से मा'लूम हुवा कि अह़काम तीन क़िस्म के हैं एक वोह जो ज़ाहिर किताब या'नी क़ुरआन से साबित हों। दूसरे वोह जो ज़ाहिर ह़दीस से साबित हों और तीसरे वोह जो क़ुरआन व ह़दीस की त़रफ़ क़ियास के ज़रीए़ रुजूअ़ करने से मा'लूम हों। आयत में ''اُولِی الْاَمْرِ'' की इत़ाअ़त का हुक्म है, इस में इमाम, अमीर, बादशाह, ह़ाकिम, क़ाज़ी, उ़लमा सब दाख़िल हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ
يَّكْفُرُوْا بِهٖؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝٦٠

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दा'वा है कि वोह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैत़ान को अपना पन्च बनाएं और उन को तो हुक्म येह था कि उसे असलन न मानें और इब्लीस येह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन का दा'वा है कि वोह उस पर ईमान ले आए हैं जो तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम से पहले नाज़िल किया गया, वोह चाहते हैं कि फ़ैसले शैत़ान के पास ले जाएं ह़ालां कि उन्हें तो येह हुक्म दिया गया था कि उसे बिल्कुल न मानें और शैत़ान येह चाहता है कि उन्हें दूर की गुमराही में भटकाता रहे।

1 ......مسلم، كتاب الفضائل، باب شفقته صلى الله عليه وسلم على امته... الخ، ص١٢٥٣، الحديث: ١٦(٢٢٨٣).

www.dawateislami.net

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا﴾ **: क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन का दा'वा है कि वोह ईमान ले आए हैं।** **शाने नुज़ूल :** बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा हो गया। यहूदी ने कहा चलो मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ैसला करवा लेते हैं। मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो किसी की रिआयत नहीं करेंगे और इस से मेरा मत़लब ह़ासिल न होगा, इस लिये उस ने मुसल्मान होने का दा'वा करने के बा वुजूद येह कहा कि का'ब बिन अशरफ़ यहूदी को पन्च बनाओ (यहां आयत में त़ागूत से इस का'ब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि का'ब बिन अशरफ़ रिश्वत ख़ोर है, इस लिये उस ने यहूदी होने के बा वुजूद उस को पन्च तस्लीम न किया, नाचार मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर आना पड़ा। रसूले सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो फ़ैसला दिया वोह यहूदी के मुवाफ़िक़ हुवा और मुनाफ़िक़ के ख़िलाफ़। यहां से फ़ैसला सुनने के बा'द फिर मुनाफ़िक़ उस यहूदी को मजबूर कर के ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास ले आया, यहूदी ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अ़र्ज़ किया कि मेरा और इस का मुआ़मला आप के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तै फ़रमा चुके लेकिन येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से राज़ी नहीं बल्कि आप से फ़ैसला चाहता है। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि हां मैं अभी आ कर इस का फ़ैसला करता हूं, येह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गए और तलवार ला कर उस को क़त्ल कर दिया और फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से राज़ी न हो उस का मेरे पास येही फ़ैसला है। उस मुनाफ़िक़ के वुरसा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए लेकिन इन आयात में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ताईद नाज़िल हो गई थी लिहाज़ा वुरसा के मुत़ालबे को मुस्तरद कर दिया गया।[1]

وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ اِلَى الرَّسُوْلِ رَاَیْتَ الْمُنٰفِقِیْنَ یَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾ فَكَیْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ یَحْلِفُوْنَ ۗ بِاللّٰهِ اِنْ

[1] خازن، النساء، تحت الآية: ٦٠، ١/٣٩٧.

www.dawateislami.net

اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ اِحْسَانًا وَّ تَوْفِیْقًا ﴿۶۲﴾ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ یَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ ۗ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ عِظْهُمْ وَ قُلْ لَّهُمْ فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِیْغًا ﴿۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से कहा जाए कि **अल्लाह** की उतारी किताब और रसूल की त़रफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ तुम से मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं । कैसी होगी जब उन पर कोई उफ़्ताद पड़े बदला उस का जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर ऐ मह़बूब तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों **अल्लाह** की क़सम खाते कि हमारा मक़्सूद तो भलाई और मेल ही था उन के दिलों की तो बात **अल्लाह** जानता है तो तुम उन से चश्म पोशी करो और उन्हें समझाओ और उन के मुआ़मले में उन से रसा बात कहो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब उन से कहा जाए कि **अल्लाह** की उतारी हुई किताब और रसूल की त़रफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ तुम से मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं । तो कैसी (ह़ालत) होगी जब उन पर उन के अपने आ'माल की वज्ह से कोई मुसीबत आ पड़े फिर ऐ ह़बीब ! क़समें खाते हुए तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर होते हैं कि हमारा मक़्सद तो सिर्फ़ भलाई और इत्तिफ़ाक़ कराना था । उन के दिलों की बात तो **अल्लाह** जानता है पस तुम उन से चश्म पोशी करते रहो और उन्हें समझाते रहो और उन के बारे में उन से पुर असर कलाम करते रहो ।

﴿فَكَیْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ **: तो कैसी होगी जब उन पर उन के अपने आ'माल की वज्ह से कोई मुसीबत आ पड़े**﴾ यहां मुनाफ़िक़ों के बारे में फ़रमाया कि वैसे तो ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप से मुंह फेरते हैं लेकिन जब उन पर उन के अपने आ'माल की वज्ह से कोई मुसीबत आ पड़े जैसे बिश्र मुनाफ़िक़ पर आ पड़ी तो क्या फिर भी येह आप से ए'राज़ करेंगे ? हरगिज़ नहीं । बल्कि उस वक़्त अपनी करतूतों की तावीलें करने के लिये क़समें खाते हुए आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते हैं कि हमारा मक़्सद तो सिर्फ़ भलाई और दो फ़रीक़ों में इत्तिफ़ाक़ कराना था, इस लिये हमारा आदमी यहूदियों के पास फ़ैसले के लिये जाने लगा था ।

www.dawateislami.net

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِیُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने कोई रसूल न भेजा मगर इस लिये कि **अल्लाह** के हुक्म से उस की इत़ाअ़त की जाए और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान पाएं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने कोई रसूल न भेजा मगर इस लिये कि **अल्लाह** के हुक्म से उस की इत़ाअ़त की जाए और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे तो ऐ ह़बीब ! तुम्हारी बारगाह में ह़ाज़िर हो जाते फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगते और रसूल (भी) उन की मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाते तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला, मेह्रबान पाते।

﴿وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِیُطَاعَ : **और हम ने कोई रसूल न भेजा मगर इस लिये कि उस की इत़ाअ़त की जाए।**﴾ यहां रसूलों की तशरीफ़ आवरी का मक़्सद बयान किया गया है कि **अल्लाह** तआ़ला रसूलों को भेजता ही इस लिये है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उन की इत़ाअ़त की जाए। इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मा'सूम बनाता है क्यूं कि अगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुद गुनाहों के मुरतकिब होंगे तो दूसरे इन की इत़ाअ़त व इत्तिबाअ़ क्या करेंगे। रसूल की इत़ाअ़त इस लिये ज़रूरी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त का त़रीक़ा ही रसूल की इत़ाअ़त करना है। इस से हट कर इत़ाअ़ते इलाही का कोई दूसरा त़रीक़ा नहीं लिहाज़ा जो रसूल की इत़ाअ़त का इन्कार करेगा वोह काफ़िर होगा अगर्चे सारी ज़िन्दगी सर पर क़ुरआन उठा कर फिरता रहे।

﴿وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ : **और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे।**﴾ आयत के इस हिस्से में अगर्चे एक ख़ास वाक़िए के ए'तिबार से कलाम फ़रमाया गया,

www.dawateislami.net

अलबत्ता इस में मौजूद हुक्म आम है और क़ियामत तक आने वाले मुसल्मानों को सरवरे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर शफ़ाअ़त त़लब करने का त़रीक़ा बताया गया है। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि अगर येह लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठें तो ऐ ह़बीब ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप की बारगाह में आ जाएं कि येह बारगाह, रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह है, यहां की रिज़ा, रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है और यहां की ह़ाज़िरी, रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की ह़ाज़िरी है, यहां आएं और अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब करने के साथ ह़बीबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में भी शफ़ाअ़त के लिये अ़र्ज़ करें और नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के लिये सिफ़ारिश फ़रमा दें तो उन लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व मग़्फ़िरत की बारिशें बरसना शुरूअ़ हो जाएंगी और उस पाक बारगाह में आ कर येह ख़ुद भी गुनाहों से पाक हो जाएंगे।

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बन्दों को हुक्म है कि इन (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें। **अल्लाह** तो हर जगह सुनता है, उस का इ़ल्म, उस का सम्अ़ (या'नी सुनना), उस का शुहूद (या'नी देखना) सब जगह एक सा है, मगर हुक्म येही फ़रमाया कि मेरी त़रफ़ तौबा चाहो तो मेरे मह़बूब के हुज़ूर ह़ाज़िर हो। قَالَ تَعَالٰی :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا

अगर वोह जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तेरे पास ह़ाज़िर हो कर ख़ुदा से बख़्शिश चाहें और रसूल उन की मग़्फ़िरत मांगे तो ज़रूर ख़ुदा को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

हुज़ूर के आ़लमे ह़याते ज़ाहिरी में हुज़ूर (या'नी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होना) ज़ाहिर था, अब हुज़ूरे मज़ारे पुर अन्वार है और जहां येह भी मुयस्सर न हो तो दिल से हुज़ूरे पुरनूर की त़रफ़ तवज्जोह, हुज़ूर से तवस्सुल, फ़रियाद, इस्तिग़ासा, त़लबे शफ़ाअ़त (की जाए) कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब भी हर मुसल्मान के घर में जल्वा फ़रमा हैं। मौलाना अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی शर्हे शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाते हैं : ''رُوْحُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ حَاضِرَةٌ فِيْ بُيُوْتِ اَهْلِ الْاِسْلَامِ'' **तरजमा :** नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर मुसल्मान के घर में जल्वा फ़रमा हैं।(1)

(1)...... फ़तावा रज़विय्या, 15/654

www.dawateislami.net

याद रहे कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर और विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दे कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहने, अपनी मग़्फ़िरत व नजात की इल्तिजा करने और अपनी मुश्किलात की दूरी चाहने का सिलसिला सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से चलता आ रहा है। चुनान्चे ज़ैल में इस से मुतअ़ल्लिक़ चन्द वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा हों :

बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहने के 3 वाक़िआ़त

(1)...... ह़ज़रते अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ग़ज़्वए बनू क़ुरैज़ा के मौक़अ़ पर एक ख़त़ा सरज़द हो गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस क़दर नादिम हुए कि ख़ुद को एक सुतून के साथ बांध दिया और कहा : जब तक **अल्लाह** तआ़ला मेरी तौबा क़बूल नहीं फ़रमाएगा तब तक न मैं कुछ खाऊंगा, न पियूंगा, न कोई चीज़ चखूंगा, यहां तक कि मुझे मौत आ जाए या **अल्लाह** तआ़ला मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले। ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब इन के बारे में पता चला तो इर्शाद फ़रमाया : **अगर येह मेरे पास आ जाता तो मैं इस के लिये मग़्फ़िरत त़लब करता लेकिन अब इस ने ख़ुद को बांध लिया है** तो जब तक **अल्लाह** तआ़ला इन की तौबा क़बूल न फ़रमाएगा, मैं नहीं खोलूंगा। सात दिन तक ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न कोई चीज़ खाई, न पी, न चखी, ह़त्ता कि इन पर ग़शी त़ारी हो गई। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने इन की तौबा क़बूल फ़रमाई, जब इन्हें तौबा की क़बूलिय्यत के बारे में बताया गया तो फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं उस वक़्त तक ख़ुद को नहीं खोलूंगा जब तक कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ला कर अपने दस्ते अक़्दस से मुझे नहीं खोलते। चुनान्चे ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और अपने प्यारे सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बन्दिशों से आज़ाद फ़रमा दिया।[2]

(2)...... बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में तौबा व रुजूअ़ की एक दूसरी रिवायत मुलाह़ज़ा फ़रमाएं, चुनान्चे ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं ने एक ऐसा

1......دلائل النبوه للبیهقی ، باب مرجع النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم من الاحزاب و مخرجه الی بنی قریظة... الخ ، ٤ / ١٣-١٤، خازن، الانفال، تحت الآیة: ٢٧، ٢ / ١٩٠.

www.dawateislami.net

बिस्तर ख़रीदा जिस पर तस्वीरें बनी हुई थीं जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे देखा तो दरवाज़े पर खड़े हो गए और घर में दाख़िल न हुए, मैं ने आप के रूए अन्वर पर ना पसन्दीदगी के आसार देखे तो अ़र्ज़ गुज़ार हुई : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, **मुझ से जो ना फ़रमानी हुई मैं उस से अल्लाह और उस के रसूल की बारगाह में तौबा करती हूं।** इर्शाद फ़रमाया : येह गद्दा यहां क्यूं है ? अ़र्ज़ की : मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़रीदा था ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर तशरीफ़ फ़रमा हों और इस से टेक लगाएं। सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इन तस्वीरों (को बनाने) वाले क़ियामत के दिन अ़ज़ाब दिये जाएंगे तो उन से कहा जाएगा : जो तुम ने बनाया उन्हें ज़िन्दा करो। और इर्शाद फ़रमाया : जिस घर में तस्वीरें हों उस में फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।(1)

(3)...... हज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि चालीस सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जिन में हज़रते अबू बक्र और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी थे जम्अ़ हो कर जब्र व क़द्र में बहस करने लगे तो रूहुल अमीन हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप बाहर अपनी उम्मत के पास तशरीफ़ ले जाएं उन्हों ने एक नया काम शुरूअ़ कर दिया है। चुनान्चे हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस हाल में बाहर तशरीफ़ लाए कि गुस्से से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक सुर्ख़ी में इस तरह नुमायां था जैसे सुर्ख़ अनार का दाना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे मुबारक पर निचोड़ा गया हो। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस कैफ़िय्यत को देख कर खुले बाज़ू आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिक़्बाल के लिये आगे बढ़े और उन का हाल येह था कि उन के हाथ और बाज़ू कांप रहे थे और अ़र्ज़ की : **''تُبْنَا اِلَی اللّٰہِ وَرَسُوْلِہٖ''** हम ने **अल्लाह** तआ़ला और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में तौबा पेश की। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़रीब था कि तुम अपने ऊपर जहन्नम को वाजिब कर लेते, मेरे पास जिब्राईल अमीन عَلَیْہِ السَّلَام हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर उम्मत के पास तशरीफ़ ले जाएं, उन्हों ने नया काम शुरूअ़ कर दिया है।''(2)

1 ......بخاری، کتاب البیوع، باب التجارة فیما یکره لبسه للرجال والنساء، ۲/۲۱، الحدیث: ۲۱۰۵.

2 ......معجم الکبیر، ثوبان مولی رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیه وسلم، ۲/۵۹، الحدیث: ۱۴۲۳.

www.dawateislami.net

मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर ह़ाजतें और मग़्फ़िरत त़लब करने के 5 वाक़िआत

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी का येह त़रीक़ा सिर्फ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में न था बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले मुबारक के बा'द भी येह अ़र्ज़ो मा'रूज़ बाक़ी रही और आज तक सारी उम्मत में चलती आ रही है। चुनान्चे

(2)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ पड़ गया तो सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस अल मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुल्त़ाने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अपनी उम्मत के लिये बारिश की दुआ़ फ़रमा दीजिये वोह हलाक हो रही है। सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में उन से इर्शाद फ़रमाया : तुम ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जा कर मेरा सलाम कहो और बिशारत दे दो कि बारिश होगी और येह भी कह दो कि वोह नरमी इख़्तियार करें। ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हुए और ख़बर दे दी। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर रोने लगे, फिर फ़रमाया : या रब ! عَزَّوَجَلَّ, मैं कोताही नहीं करता मगर उसी चीज़ में कि जिस से मैं आ़जिज़ हूं।(1)

(2)...... एक मरतबा मदीनए मुनव्वरह में शदीद क़ह़त़ पड़ा, अहले मदीना ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में इस की शिकायत की तो उन्हों ने फ़रमाया : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर देखो और छत में एक रोशन दान बनाओ ह़त्ता कि रौज़ए मुनव्वर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न रहे, अहले मदीना ने जैसे ही रोशन दान बनाया तो इतनी कसीर बारिश हुई कि सब्ज़ घास उग आई और ऊंट मोटे हो गए यहां तक कि गोश्त से भर गए।(2)

(3)...... बादशाह अबू जा'फ़र मन्सूर ने ह़ज़रत इमामे मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मुनाज़रा किया, दौराने मुनाज़रा अबू जा'फ़र की आवाज़ कुछ बुलन्द हुई तो इमामे मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे (डांटते हुए) कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! इस मस्जिद में

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب رضی اللّٰہ عنہ، ۷/۴۸۲، الحدیث: ۳۵، وفاء الوفاء، الباب الثامن فی زیارۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الفصل الثالث، ۲/۱۳۷۴، الجزء الرابع.

2 ......سنن دارمی، باب ما اکرم اللّٰہ تعالٰی نبیہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم بعد موتہ، ۱/۵۶، الحدیث: ۹۲.

www.dawateislami.net

अपनी आवाज़ ऊंची न करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने एक जमाअ़त को अदब सिखाया कि "तुम अपनी आवाज़ों को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ से बुलन्द मत करो।" और दूसरी जमाअ़त की ता'रीफ़ फ़रमाई कि "बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पस्त करते हैं।" और एक क़ौम की मज़म्मत बयान की, कि "बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं।" बेशक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो हुरमत अब भी उसी त़रह़ है जिस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात में थी। येह सुन कर अबू जा'फ़र ख़ामोश हो गया, फिर दरयाफ़्त किया : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! मैं क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगूं या **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर ? फ़रमाया : तुम क्यूं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुंह फेरते हो हालां कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे और तुम्हारे वालिद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वसीला हैं बल्कि तुम हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शफ़ाअ़त मांगो फिर **अल्लाह** तआ़ला आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।(1)

(4)...... मरवान ने अपने ज़मानए तसल्लुत़ में एक साह़िब को देखा कि हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर अपना मुंह रखे हुए हैं, मरवान ने (उन की गरदन मुबारक पकड़ कर) कहा : जानते हो क्या कर रहे हो ? इस पर उन साह़िब ने उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : हां, मैं किसी ईंट पथ्थर के पास नहीं आया हूं, मैं तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा हूं, मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "दीन पर न रोओ जब इस का अह्ल इस पर वाली हो, हां उस वक़्त दीन पर रोओ जब कि ना अह्ल वाली हो।" येह सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه थे।(2)

(5)...... हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ के बा'द एक आ'राबी रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और रौज़ए अन्वर की ख़ाके पाक अपने सर पर डाली और अ़र्ज़ करने लगा : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जो आप ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा उस में येह आयत भी है "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا"

1 ......شفا شریف، القسم الثانی، الباب الثالث، فصل واعلم انّ حرمة النبی... الخ، ص ٤١، الجزء الثانی.

2 ......مسند امام احمد، حدیث ابی ایوب الانصاری، ١٤٨/٩، الحدیث: ٢٣٦٤٦.

www.dawateislami.net

मैं ने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाह की बख़्शिश चाहने हाज़िर हुवा हूं तो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराइये । इस पर क़ब्र शरीफ़ से निदा आई कि तुझे बख़्श दिया गया ।(1)

अल ग़रज़ येह आयते मुबारका सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम मद्ह़ो सना पर मुश्तमिल है । इसी की त़रफ़ इशारा करते हुए आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बहुत से अश्आ़र फ़रमाए हैं । चुनान्चे "ह़दाइक़े बख़्शिश" में फ़रमाते हैं :

मुजरिम बुलाए आए हैं جَآءُوْكَ है गवाह   फिर रद हो कब येह शान करीमों के दर की है

और फ़रमाया :

बख़ुदा ख़ुदा का येही है दर, नहीं और कोई मफ़र मक़र   जो वहां से हो यहीं आ के हो, जो यहां नहीं तो वहां नहीं

और फ़रमाया :

वोही रब है जिस ने तुझ को हमातन करम बनाया   हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया

आयत "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا" से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत से 4 बातें मा'लूम हुईं :

(1)...... **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाजत पेश करने के लिये उस के मक़्बूलों को वसीला बनाना काम्याबी का ज़रीआ़ है ।

(2)...... क़ब्रे अन्वर पर ह़ाजत के लिये ह़ाज़िर होना भी "جَآءُوْكَ" में दाख़िल और ख़ैरुल क़ुरून का मा'मूल है ।

(3)...... बा'दे वफ़ात मक़्बूलाने ह़क़ को "या" के साथ निदा करना जाइज़ है ।

(4)...... मक़्बूलाने बारगाहे इलाही मदद फ़रमाते हैं और इन की दुआ़ से ह़ाजत रवाई होती है ।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

1......مدارك، النساء، تحت الآية: ٦٤، ص٢٣٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसल्मान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से मान लें।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ऐ ह़बीब ! तुम्हारे रब की क़सम, येह लोग मुसल्मान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें ह़ाकिम न बना लें फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से कोई रुकावट न पाएं और अच्छी त़रह़ दिल से मान लें।

﴾**فَلَا وَ رَبِّكَ : तो ऐ ह़बीब ! तुम्हारे रब की क़सम**।﴿ इस आयत का **शाने नुज़ूल** येह है कि अहले मदीना पहाड़ से आने वाले पानी से बाग़ों में आबपाशी करते थे। वहां एक अन्सारी का ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से झगड़ा हुवा कि कौन पहले अपने खेत को पानी देगा। येह मुआ़मला ह़बीबे करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़ूर पेश किया गया। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ ज़ुबैर ! तुम अपने बाग़ को पानी दे कर अपने पड़ोसी की त़रफ़ पानी छोड़ दो। ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहले पानी की इजाज़त इस लिये दी गई कि उन का खेत पहले आता था, इस के बा वुजूद सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सारी के साथ भी एह़सान करने का फ़रमा दिया लेकिन मज्मूई फ़ैसला अन्सारी को ना गवार गुज़रा और उस की ज़बान से येह कलिमा निकला कि ज़ुबैर आप के फूफीज़ाद भाई हैं। बा वुजूद इस के कि फ़ैसले में ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अन्सारी के साथ एह़सान की हिदायत फ़रमाई गई थी लेकिन अन्सारी ने इस की क़द्र न की तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि अपने बाग़ को सैराब कर के पानी रोक लो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

और बता दिया गया कि ह़बीबे ख़ुदा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म को तस्लीम करना फ़र्ज़े क़त़ई है। जो शख़्स ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले को तस्लीम नहीं करता वोह काफ़िर है, ईमान का मदार ही **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म को तस्लीम करने पर है।

1 ......بخاری، کتاب الصلح، باب اذا اشار الامام بالصلح... الخ، ۲/۲۱۵، الحدیث: ۲۷۰۸.

www.dawateislami.net

आयत “فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ” से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयते मुबारका से 7 मसाइल मा'लूम हुए :

(1)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने रब होने की निस्बत अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ फ़रमाई और फ़रमाया ऐ ह़बीब! तेरे रब की क़सम। येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम शान है कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी पहचान अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ से करवाता है।

(2)...... हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना फ़र्ज़ क़रार दिया और इस बात को अपने रब होने की क़सम के साथ पुख़्ता किया।

(3)...... हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानने से इन्कार करने वाले को काफ़िर क़रार दिया।

(4)...... ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ाकिम हैं।

(5)...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी ह़ाकिम है और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी अलबत्ता दोनों में ला मुतनाही फ़र्क़ है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि बहुत सी सिफ़ात जो **अल्लाह** तआ़ला के लिये इस्ति'माल होती हैं अगर वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इस्ति'माल की जाएं तो शिर्क लाज़िम नहीं आता जब तक कि शिर्क की ह़क़ीक़त न पाई जाए।

(6)...... रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म दिलो जान से मानना ज़रूरी है और उस के बारे में दिल में भी कोई रुकावट नहीं होनी चाहिये। इसी लिये आयत के आख़िर में फ़रमाया कि फिर अपने दिलों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुतअ़ल्लिक़ कोई रुकावट न पाएं और दिलो जान से तस्लीम कर लें।

(7)...... इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इस्लामी अह़काम का मानना फ़र्ज़ है और इन को न मानना कुफ़्र है नीज़ इन पर ए'तिराज़ करना, इन का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है। इस से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो काफ़िरों के क़वानीन को इस्लामी क़वानीन पर फ़ौक़िय्यत देते हैं।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا
فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ

www.dawateislami.net

خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّاۤ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾
وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर हम उन पर फ़र्ज़ करते कि अपने आप को क़त्ल कर दो या अपने घरबार छोड़ कर निकल जाओ तो उन में थोड़े ही ऐसा करते और अगर वोह करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती है तो उस में उन का भला था और ईमान पर ख़ूब जमना। और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पास से बड़ा सवाब देते और ज़रूर उन को सीधी राह की हिदायत करते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर हम उन पर फ़र्ज़ कर देते कि अपने आप को क़त्ल कर दो या अपने घरबार छोड़ कर निकल जाओ तो उन में थोड़े ही ऐसा करते और अगर वोह हर वोह काम कर लेते जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो उन के लिये बहुत बेहतर और साबित क़दमी का ज़रीआ होता। और ऐसा होता तो हम ज़रूर उन्हें अपने पास से बहुत बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाते। और हम उन्हें ज़रूर सीधे रास्ते की हिदायत देते।

﴿وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ : **और अगर हम उन पर फ़र्ज़ कर देते।**﴾ यहां मुख़्लिस व मुनाफ़िक़ सब के ए'तिबार से फ़रमाया जा रहा है कि अगर हम उन पर फ़र्ज़ कर देते कि अपने आप को क़त्ल करो या अपने घरों से निकल जाओ तो उन में से थोड़े ही ऐसा करते जैसा कि बनी इसराईल को मिस्र से निकल जाने और तौबा के लिये अपने आप को क़त्ल का हुक्म दिया था। इस आयत का **शाने नुज़ूल** कुछ इस त़रह़ है कि ह़ज़रते साबित बिन क़ैस बिन शमास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक यहूदी ने कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम पर ख़ुद को क़त्ल करना और घरबार छोड़ना फ़र्ज़ किया था, हम इस को बजा लाए थे। इस पर ह़ज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर फ़र्ज़ करता तो हम भी ज़रूर बजा लाते इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[(1)]

कि येह कहना तो आसान है लेकिन अगर वाक़ेई ऐसा हुक्म दे दिया जाता तो एक बड़ी ता'दाद इस हुक्म पर अ़मल न करती। इस में बत़ौरे ख़ास मुनाफ़िक़ीन या नए नए मुसल्मान

1 ......تفسیر طبری، النساء، تحت الآیۃ: ٦٦، ٤/١٦٣.

www.dawateislami.net

होने वाले दाख़िल होंगे जैसे मुनाफ़िक़ीन अक्सर जिहाद से फ़िरार की राह ही इख़्तियार करते थे और नए नए मुसल्मान होने वाले भी कई जंगों में साबित क़दम न रह सके। जहां तक मुख़्लिसीन या'नी जलीलुल क़द्र सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का तअ़ल्लुक़ है तो कितने ही सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ऐसे हैं जिन्हों ने मुख़्तलिफ़ जंगों में ख़ुद को सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे खड़ा कर दिया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त में अपनी जानें क़ुरबान कर दीं। मज़ीद फ़रमाया कि अगर तुम्हें ख़ुद को क़त्ल करने या अपने घरों से निकल जाने का हुक्म दिया जाता तो तुम में से थोड़े लोग ही करते लेकिन अगर वोह हर उस हुक्म पर अ़मल करें जो उन्हें दिया जाए ख़्वाह ख़ुद को जान से मार देने का हो या घरों से निकल जाने का बहर सूरत येह उन के लिये बहुत बेहतर होता और ईमान पर साबित क़दमी का ज़रीआ़ होता और इस पर हम उन्हें अ़ज़ीम अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाते और उन्हें सिराते़ मुस्तक़ीम की आ'ला दरजे की हिदायत अ़ता फ़रमाते।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** और रसूल की इत़ाअ़त करे तो वोह उन लोगों के साथ होगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिह़ीन और येह कितने अच्छे साथी हैं।

﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ : **और जो अल्लाह और रसूल की इत़ाअ़त करे।**﴾ आयते मुबारका का शाने नुज़ूल कुछ इस त़रह़ है कि ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कमाल दरजे की मह़ब्बत रखते थे और उन्हें जुदाई की ताब न

www.dawateislami.net

थी । एक रोज़ इस क़दर ग़मगीन और रन्जीदा हाज़िर हुए कि चेहरे का रंग बदल गया था तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, आज रंग क्यूं बदला हुवा है ? अ़र्ज़ किया : न मुझे कोई बीमारी है और न दर्द सिवाए इस के कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सामने नहीं होते तो इन्तिहा दरजे की वह्शत व परेशानी हो जाती है, जब आख़िरत को याद करता हूं तो येह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस त़रह़ दीदार पा सकूंगा ? आप आ'ला तरीन मक़ाम में होंगे और मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से जन्नत भी दी तो उस मक़ामे आ़ली तक रसाई कहां ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई ।[1]

और उन्हें तस्कीन दी गई कि मन्ज़िलों के फ़र्क़ के बा वुजूद फ़रमां बरदारों को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी और मइय्यत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा और अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुख़्लिस फ़रमां बरदार जन्नत में उन की सोह़बत व दीदार से मह़रूम न होंगे । ह़दीस शरीफ़ में है : आदमी उसी के साथ होगा जिस से मह़ब्बत करे ।[2]

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का शौक़े रफ़ाक़त

इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को बहुत मह़बूब थी और दुन्या की रफ़ाक़त के साथ साथ उख़्रवी रफ़ाक़त का शौक़ भी उन के दिलों में रचा बसा था और वोह इस के लिये बड़े फ़िक्र मन्द हुवा करते थे । ज़ैली सुतूर में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के शौक़े रफ़ाक़त के चन्द और वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा हों, चुनान्चे

ह़ज़रते रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं रात को **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में रहा करता था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वुज़ू के लिये पानी लाया करता और दीगर ख़िदमत भी बजा लाया करता था । एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : سَلْ (मांगो) । मैं ने अ़र्ज़ किया : "اَسْئَلُکَ مُرَافَقَتَکَ فِی الْجَنَّۃ" मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जन्नत में आप का साथ मांगता हूं । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस के इलावा और कुछ ?" मैं ने अ़र्ज़ की : मेरा

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٦٩، ١/٤٠٠.

2 ......ابو داوٗد، كتاب الادب، باب اخبار الرجل الرجل بمحبته اياه، ٤/٤٢٩، الحديث: ٥١٢٧.

www.dawateislami.net

मक़्सूद तो वोही है। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “तो फिर ज़ियादा सज्दे कर के अपने मुआ़मले में मेरी मदद करो।”(1)

जंगे उहुद के मौक़अ़ पर ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, आप दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला हम लोगों को जन्नत में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ अ़ता फ़रमाए। उस वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये और उन के शौहर और उन के बेटों के लिये इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई कि “**اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھُمْ رُفَقَائِیْ فِی الْجَنَّۃِ**” **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ, इन सब को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे। ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ज़िन्दगी भर अ़लानिया येह कहती रहीं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा’द दुन्या में बड़ी से बड़ी मुसीबत मुझ पर आ जाए तो मुझ को उस की कोई परवा नहीं है।(2)

आ़शिक़ों के इमाम ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन की ज़ौजा शिद्दते ग़म से फ़रमाने लगीं : हाए ग़म। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : वाह ! बड़ी ख़ुशी की बात है कि कल हम अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के अस्ह़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मुलाक़ात करेंगे।(3)

एक जंग के मौक़अ़ पर ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते हाशिम बिन उ़त्बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : “ऐ हाशिम ! رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, तुम जन्नत से भागते हो ह़ालां कि जन्नत तो तलवारों (के साए) में है। आज मैं अपनी मह़बूब तरीन हस्तियों मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के साथियों से मुलाक़ात करूंगा।” चुनान्चे इसी जंग में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहादत पाई।(4)

जब ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हुए तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए (जब उन्हों ने देखा कि येह इसी मरज़ में वफ़ात पा जाएंगे) तो फ़रमाया : “तुम ख़ुश हो जाओ, कल तुम मह़बूब तरीन हस्ती मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मुलाक़ात करोगे।”(5)

---

1 ......مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضل السجود والحث علیہ، ص۲۵۲، الحدیث: ۲۲۶(۴۸۹).
2 ......الطبقات الکبری لابن سعد، ومن نساء بنی النجار ... الخ، امّ عمارۃبنت کعب، ۳۰۵/۸.
3 ......سیرت حلبیہ، باب استخفائہ صلی اللہ علیہ وسلم واصحابہ فی دار الارقم... الخ، ۴۲۲/۱.
4 ......اسد الغابہ، باب العین والمیم، عمار بن یاسر، ۱۴۴/۴.
5 ......البدایہ والنہایہ، ثمّ دخلت سنۃ سبع وثلاثین، ذکر من توفی فیھا من الاعیان، ۴۱۷/۵.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआला इन मुक़द्दस हस्तियों के शौक़े रफ़ाक़त के सदक़े हमें भी अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रो ह़श्र और जन्नत में रफ़ाक़त नसीब फ़रमाए, आमीन ।

सिद्क़ के मा'ना और इस के मरातिब

इस आयत में सिद्दीक़ीन का लफ़्ज़ आया है । **सिद्दीक़ीन** अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सच्चे मुत्तबेईन को कहते हैं जो इख़्लास के साथ उन की राह पर क़ाइम रहें । इसी मुनासबत से यहां हम इस के मआनी और इस के दरजात बयान करते हैं चुनान्चे इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सिद्क़ 6 मआनी में इस्ति'माल होता है : (1) गुफ़्त्गू में सिद्क़ । (2) निय्यत व इरादे में सिद्क़ । (3) अ़ज़्म में सिद्क़ । (4) अ़ज़्म को पूरा करने में सिद्क़ । (5) अ़मल में सिद्क़ । (6) दीन के तमाम मक़ामात की तह़क़ीक़ में सिद्क़ । इन मआनी के ए'तिबार से सादिक़ीन के बहुत से दरजात हैं और जिस शख़्स में किसी ख़ास चीज़ में सिद्क़ पाया जाए तो वोह उसी चीज़ की निस्बत से सादिक़ कहलाएगा, चुनान्चे :

पहला सिद्क़ ''ज़बान का सिद्क़'' है और येह सिर्फ़ ख़बरें देने में या उन बातों में होता है जो ख़बरों में शामिल हों और उन से आगाही हो और उस में वा'दे को पूरा करना और उस की ख़िलाफ़ वरज़ी करना भी दाख़िल है, लिहाज़ा हर बन्दे को चाहिये कि वोह अपने अल्फ़ाज़ की ह़िफ़ाज़त करे और (हमेशा) सच्ची बात ही कहे ।

दूसरा सिद्क़ इरादे और निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ है और येह इख़्लास की त़रफ़ लौटता है, या'नी बन्दे की ह़रकातो सकनात का बाइ़स सिर्फ़ **अल्लाह** तआला की ज़ात होती है, अगर इस में कोई नफ़्सानी ग़रज़ भी आ जाए तो सिद्क़े निय्यत बात़िल हो जाता है और ऐसे शख़्स को झूटा कहना सह़ीह़ है लिहाज़ा हर सादिक़ का मुख़्लिस होना ज़रूरी है ।

तीसरा सिद्क़ ''अ़ज़्म का सिद्क़'' है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान किसी अ़मल का पुख़्ता इरादा करता है और दिल में कहता है कि अगर **अल्लाह** तआला ने मुझे माल अ़ता फ़रमाया तो मैं तमाम माल सदक़ा कर दूंगा या येह कि अगर **अल्लाह** तआला के रास्ते में मेरा दुश्मन से मुक़ाबला हुवा तो मैं उस से लड़ूंगा और इस लड़ाई में अगर मैं क़त्ल भी हो जाऊं तो मुझे इस की परवा न होगी या अगर **अल्लाह** तआला मुझे हुकूमत दे तो मैं इन्साफ़ करूंगा और ज़ुल्म करने और मख़्लूक़ की त़रफ़ मैलान के ज़रीए **अल्लाह** तआला की ना फ़रमानी नहीं करूंगा । येह अ़ज़्मो इरादा दिल में होता है और इन्तिहाई पुख़्ता और सच्चा होता है लेकिन बा'ज़

www.dawateislami.net

अवक़ात इस में दूसरी त़रफ़ मैलान और तरद्दुद होता है, नीज़ ऐसी कमज़ोरी होती है जो अ़ज़्म में सिद्क़ के मुक़ाबिल और उस की ज़िद होती है तो सादिक़ और सिद्दीक़ वोह शख़्स है जिस का पुख़्ता इरादा तमाम नेकियों में क़ुव्वते ताम्मा के साथ होता है, इस में किसी क़िस्म का मैलान, तरद्दुद और कमज़ोरी नहीं होती और उस का नफ़्स हमेशा नेक कामों पर पुख़्ता इरादा रखता है।

चौथा सिद्क़ "अ़ज़्म को पूरा करने का सिद्क़" है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात नफ़्स फ़िलह़ाल अ़ज़्म कर लेता है और उस की वज्ह येह होती है कि वा'दे और अ़ज़्म में कोई मशक़्क़त नहीं होती और इस में मेह़नत भी कम होती है लेकिन जब ह़क़ीक़त का सामना होता है और क़ुदरत ह़ासिल हो जाती है और शह्वत का ज़ोर होता है तो अ़ज़्म ख़त्म हो जाता है और ख़्वाहिशात ग़ालिब आ जाती हैं जिस की वज्ह से वोह अ़ज़्म को पूरा नहीं कर सकता और येह बात सिद्क़ के ख़िलाफ़ है।

पांचवां सिद्क़ "आ'माल का सिद्क़" है, या'नी इन्सान कोशिश करे ह़त्ता कि उस के ज़ाहिरी आ'माल ऐसी बात पर दलालत न करें कि उस के दिल में जो कुछ है वोह ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है। येह कोशिश आ'माल को छोड़ने से न हो बल्कि बातिन को ज़ाहिर की तस्दीक़ की त़रफ़ खींचने से हो और येह बात तर्के रिया से ह़ासिल होती है क्यूं कि रियाकार तो येही चाहता है कि उस के ज़ाहिर से बातिन की अच्छी सिफ़ात समझी जाएं अलबत्ता कई नमाज़ी नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की सूरत में खड़े होते हैं और उन का मक़्सद दूसरों को दिखाना नहीं होता लेकिन उन का दिल नमाज़ से ग़ाफ़िल होता है और जो शख़्स उसे देखता है वोह उसे **अल्लाह** तआ़ला के सामने खड़ा देखता है जब कि बातिनी त़ौर पर वोह ख़्वाहिशात में से किसी ख़्वाहिश के सामने बाज़ार में खड़ा होता है, इस त़रह़ येह आ'माल ज़बाने ह़ाल से बातिन की ख़बर देते हैं और वोह उस में झूटा होता है और उस से आ'माल में सिद्क़ की बाज़पुर्स होगी। इसी त़रह़ कोई शख़्स सुकूनो वक़ार से चल रहा होता है ह़ालां कि उस का बातिन सुकूनो वक़ार से मौसूफ़ नहीं होता तो येह भी अपने अ़मल में सच्चा नहीं अगर्चे उस की तवज्जोह मख़्लूक़ की त़रफ़ न हो और न ही वोह उन को दिखा रहा हो। ख़ुलासा येह है कि अगर ज़ाहिर का बातिन के ख़िलाफ़ होना क़स्द व इरादे से हो तो वोह रिया है और इस से इख़्लास ख़त्म हो जाता है और क़स्द व इरादे के बिग़ैर हो तो इस से सिद्क़ फ़ौत हो जाता है और इस क़िस्म की ख़राबी से नजात की सूरत येही है कि ज़ाहिरो बातिन एक जैसा हो बल्कि बातिन ज़ाहिर से बेहतर हो।

www.dawateislami.net

छटा और सब से आ'ला व मुअ़ज़्ज़ज़ दरजे का सिद्क़ "मक़ामाते दीन में सिद्क़" है, जैसे ख़ौफ़, उम्मीद, ता'ज़ीम, ज़ोह्द, रिज़ा, तवक्कुल, मह़ब्बत और बाक़ी उमूरे दीनिया में सिद्क़ पाया जाना। इन उमूर की कुछ बुन्यादें हैं जिन के ज़ाहिर होने से येह नाम बोले जाते हैं, फिर इन के कुछ मक़ासिद और ह़क़ाइक़ हैं तो ह़क़ीक़ी सादिक़ वोह है जो इन उमूर की ह़क़ीक़त को पा ले और जब कोई चीज़ ग़ालिब आ जाए और उस की ह़क़ीक़त कामिल हो तो उस से मौसूफ़ शख़्स को सादिक़ कहा जाता है।(1)

याद रहे कि इस आयत में सिद्दीक़ीन से सुल्ताने दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अकाबिर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم सब से पहले मुराद हैं जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه। **शुहदा से मुराद** वोह ह़ज़रात हैं जिन्हों ने राहे ख़ुदा में जानें दीं और **सालिह़ीन से मुराद** वोह दीनदार लोग हैं जो ह़क़्क़ुल इबाद और ह़क़्क़ुल्लाह दोनों अदा करें और उन के अह़वाल व आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन अच्छे और पाक हों।

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ عَلِیْمًا ۠﴿۷۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है और **अल्लाह** काफ़ी है जानने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है, और **अल्लाह** जानने वाला काफ़ी है।

﴾ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ﴿ **: येह अल्लाह का फ़ज़्ल है।** ﴾ मा'लूम हुवा कि जन्नत में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब जन्नत की बहुत बड़ी ने'मत होगी क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे बत़ौरे ख़ास फ़ज़ीलत में शुमार फ़रमाया और इसे अपना फ़ज़्ल क़रार दिया है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِیْعًا ﴿۷۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो फिर दुश्मन की त़रफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकट्ठे चलो।

(1) ......احياء علوم الدين، كتاب النية والاخلاص والصدق، الباب الثالث، بيان حقيقة الصدق ومعناه ومراتبه، ٥/١١٧-١٢٢.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! होशियारी से काम लो फिर दुश्मन की त़रफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकठ्ठे चलो।

﴿خُذُوۡا حِذۡرَکُمۡ : **होशियारी से काम लो।**﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान है कि उस ने हमें ज़िन्दगी के किसी भी शो'बे में अपने अह़काम से मह़रूम नहीं रखा बल्कि हर जगह हमारी रहनुमाई फ़रमाई। मां बाप, बीवी बच्चे, रिश्तेदार, पड़ोसी, अपने बेगाने सब के मुतअ़ल्लिक़ वाज़ेह़ हिदायात अ़त़ा फ़रमाईं। इसी सिल्सिले में हमारी भलाई के लिये हमें होशियार रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि दुन्या के दीगर मुआ़मलात की त़रह़ दुश्मनों के मुक़ाबले में भी होशियारी और समझदारी से काम लो, दुश्मन की घात से बचो और उसे अपने ऊपर मौक़अ़ न दो और अपनी ह़िफ़ाज़त का सामान ले रखो फिर मौक़अ़ मह़ल की मुनासबत से दुश्मन की त़रफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकठ्ठे चलो। या'नी जहां जो मुनासिब हो अमीर की इत़ाअ़त में रहते हुए और तजरिबात व अ़क़्ल की रोशनी में मुफ़ीद तदबीरें इख़्तियार करो। येह आयते मुबारका जंगी तय्यारियों, जंगी चालों, दुश्मनों की ह़र्बी त़ाक़त के अन्दाज़े लगाने, मा'लूमात रखने, उन के मुक़ाबले में भरपूर तय्यारी और बेहतरीन जंगी ह़िक्मते अ़मली के जुम्ला उसूलों में रहनुमाई करती है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि अस्बाब का इख़्तियार करना भी निहायत अहम है। बिग़ैर अस्बाब लड़ना मरने के मुतरादिफ़ है, तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि अस्बाब इख़्तियार कर के उम्मीदें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से वाबस्ता करने का नाम है।

जंगी तय्यारियों से मुतअ़ल्लिक़ हिदायात

जंगी तय्यारी के लिये हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की हिदायात मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

(1)...... ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (इस आयत) "وَ اَعِدُّوۡا لَهُمۡ مَّا اسۡتَطَعۡتُمۡ مِّنۡ قُوَّةٍ" और उन के लिये तय्यार रखो जो क़ुव्वत तुम से बन पड़े।" (की तफ़्सीर में) फ़रमाया : "ख़बरदार ! वोह क़ुव्वत तीर अन्दाज़ी है, ख़बरदार ! वोह क़ुव्वत तीर अन्दाज़ी है, ख़बरदार ! वोह क़ुव्वत तीर अन्दाज़ी है।"[(1)]

(2)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुश्रिकीन से, अपने माल, हाथ और ज़बान से जिहाद करो (या'नी दीने ह़क़ की इशाअ़त में हर क़िस्म की क़ुरबानी के लिये तय्यार हो जाओ)।"[(2)]

1 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الرمی والحث علیہ... الخ، ص۱۰۶۱، الحدیث: ۱۶۷(۱۹۱۷).

2 ......نسائی، کتاب الجہاد، باب وجوب الجہاد، ص۵۰۳، الحدیث: ۳۰۹۳.

www.dawateislami.net

(3)...... हज़रते उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तआ़ला एक तीर के बदले तीन अफ़राद को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा (1) सवाब की निय्यत से तीर बनाने वाले को (2) तीर फेंकने वाले को (3) तीर पकड़वाने वाले को। और तीर अन्दाज़ी और घुड़ सुवारी में मुक़ाबला किया करो, तुम्हारा तीर अन्दाज़ी में मुक़ाबला करना शह सुवारी में मुक़ाबला करने से ज़ियादा मुझे पसन्द है और जो तीर अन्दाज़ी सीखने के बा'द इस से ग़फ़्लत करते हुए छोड़ दे तो उस ने एक ने'मत को गंवा दिया।[1]

(4)...... हज़रते उ़मर बिन ख़त़्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अहले शाम को ख़त़ लिखा कि अपनी औलाद को तैराकी और घुड़ सुवारी सिखाओ।[2]

وَ اِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّیُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِیْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِیْدًا ﴿۷۲﴾ وَ لَىٕنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَیَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ بَیْنَكُمْ وَ بَیْنَهٗ مَوَدَّةٌ یّٰلَیْتَنِیْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِیْمًا ﴿۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई वोह है कि ज़रूर देर लगाएगा फिर अगर तुम पर कोई उफ़्ताद पड़े तो कहे ख़ुदा का मुझ पर एह़सान था कि मैं उन के साथ ह़ाज़िर न था। और अगर तुम्हें **अल्लाह** का फ़ज़्ल मिले तो ज़रूर कहे गोया तुम में उस में कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम में कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़रूर देर लगाएंगे फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े तो देर लगाने वाला कहेगा : बेशक **अल्लाह** ने मुझ पर बड़ा एह़सान किया कि मैं उन के साथ मौजूद न था। और अगर तुम्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से फ़ज़्ल मिले तो

1 ......ابو داوٗد، کتاب الجهاد، باب فی الرمی، ۱۹/۳، الحدیث: ۲۵۱۳.

2 ......در منثور، الانفال، تحت الآیة: ۶۰، ۸۶/۴.

www.dawateislami.net

(तक्लीफ़ पहुंचने वाली सूरत में तो) गोया तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती ही न थी (जब कि अब) ज़रूर कहेगा : ऐ काश ! मैं (भी) उन के साथ होता तो बड़ी काम्याबी ह़ासिल कर लेता।

﴿وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ﴾ **: और तुम में कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़रूर देर लगाएंगे।** ﴾ यहां मुनाफ़िक़ों का बयान है कि मुनाफ़िक़ों की ह़ालत येह है कि ह़त्तल इम्कान मैदाने जंग में जाने में देर लगाएंगे ताकि किसी त़रह़ इन की जान छूट जाए और अगर फिर वाक़ेई ऐसा हो जाए कि मुसल्मानों को कोई मुसीबत आ पहुंचे और येह मुनाफ़िक़ीन वहां मौजूद न हों तो बड़ी ख़ुशी से कहेंगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि मैं वहां मौजूद न था वरना मैं भी मुसीबत में पड़ जाता। और अगर इस की जगह मुसल्मानों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी फ़ज़्ल हो जाए कि इन्हें फ़त्ह़ ह़ासिल हो जाए और माले ग़नीमत मिल जाए तो फिर वोही जो तक्लीफ़ के वक़्त अजनबी और बेगाने बन गए थे अब कहेंगे कि ऐ काश कि हम भी उन के साथ होते तो हमें भी कुछ माल मिल जाता। गोया मुनाफ़िक़ीन का अव्वलो आख़िर सिर्फ़ माल की हवस है। उन्हें न मुसल्मानों की फ़त्ह़ से ख़ुशी और न शिकस्त से रन्ज बल्कि शिकस्त पर ख़ुश और फ़त्ह़ पर रन्जीदा होते हैं।

ख़ुद ग़रज़ी और मफ़ाद परस्ती की मज़म्मत

इस से येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ुद ग़रज़ी, मौक़अ़ शनासी, मफ़ाद परस्ती और माल की हवस मुनाफ़िक़ों का त़रीक़ा है। दुन्या में वोह शख़्स कभी काम्याब नहीं होता जो तक्लीफ़ के मौक़अ़ पर तो किसी का साथ न दे लेकिन अपने मफ़ाद के मौक़अ़ पर आगे आगे होता फिरे। मफ़ाद परस्त और ख़ुद ग़रज़ आदमी कुछ अ़र्से तक तो अपनी मुनाफ़क़त छुपा सकता है लेकिन इस के बा'द ज़िल्लतो रुस्वाई उस का मुक़द्दर होती है।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۷۴﴾

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हें **अल्लाह** की राह में लड़ना चाहिये जो दुन्या की ज़िन्दगी बेच कर आख़िरत लेते हैं और जो **अल्लाह** की राह में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए तो अ़न्क़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : पस जो लोग दुन्या की ज़िन्दगी को आख़िरत के बदले में बेच देते हैं उन्हें चाहिये कि **अल्लाह** की राह में लड़ें और जो **अल्लाह** की राह में लड़े फिर शहीद कर दिया जाए या ग़ालिब आ जाए तो अ़न्क़रीब हम उसे बहुत बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाएंगे।

﴿فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ : **तो अल्लाह की राह में लड़ना चाहिये**﴾ यहां अहले ईमान का बयान है कि जिन लोगों की निगाहें आख़िरत की ज़िन्दगी पर लगी हुई हैं और वोह आख़िरत की ख़ातिर दुन्या की ज़िन्दगी क़ुरबान करने को तय्यार हैं उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में लड़ना चाहिये और इस में दुन्यवी नफ़्अ़ का हरगिज़ ख़याल न करें बल्कि उन का मत़लूबो मक़्सूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा, दीने इस्लाम की सर बुलन्दी और ह़क़ का बोलबाला होना चाहिये। जब इस निय्यत से कोई जिहाद करेगा तो वोह शहीद हो जाए या बच कर आ जाए दोनों सूरतों में बारगाहे इलाही में मक़्बूल हो जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़ज़ीम अज्र का मुस्तह़िक़ होगा।

ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जज़्बए शहादत

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मेरे चचा ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़ज़्वए बद्र में न जा सके, उन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन से जो पहली जंग की थी मैं उस में ह़ाज़िर न हो सका। अगर अब **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे किसी ग़ज़्वे में शिर्कत का मौक़अ़ दिया तो **अल्लाह** तआ़ला दिखा देगा जो मैं करूंगा, फिर जब ग़ज़्वए उहुद का मौक़अ़ आया तो कुछ लोग भागने लगे, ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवरदगार ! عَزَّوَجَلَّ, इन भागने वालों में जो मुसल्मान हैं, मैं उन की त़रफ़ से मा'ज़िरत ख़्वाह हूं और जो मुश्रिक हैं, मैं उन से बरी हूं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तलवार ले कर मैदाने जंग की त़रफ़ दीवाना वार बढ़े। रास्ते में ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मुलाक़ात हुई तो फ़रमाया : "ऐ सा'द ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, जन्नत। उस पाक परवरदगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान

www.dawateislami.net

है ! मैं उहुद पहाड़ के क़रीब जन्नत की ख़ुश्बू मह़सूस कर रहा हूं।" ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जैसा कारनामा उन्हों ने सर अन्जाम दिया हम ऐसा नहीं कर सकते। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम ने उन्हें शहीदों में इस ह़ाल में पाया कि उन के जिस्मे मुबारक पर तीरों, तलवारों और नेज़ों के अस्सी (80) से ज़ाइद ज़ख़्म थे, और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आ'ज़ा जगह जगह से काट दिये गए थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहचानना बहुत मुश्किल हो चुका था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हमशीरा ने आप को उंग्लियों के निशानात से पहचाना।[1]

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۟ؕ ﴿٧٥﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें क्या हुवा कि न लड़ो **अल्लाह** की राह में और कमज़ोर मर्दों और औ़रतों और बच्चों के वासिते़ जो येह दुआ़ कर रहे हैं कि ऐ रब हमारे हमें इस बस्ती से निकाल जिस के लोग ज़ालिम हैं और हमें अपने पास से कोई ह़िमायती दे दे और हमें अपने पास से कोई मददगार दे दे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम्हें क्या हो गया कि तुम **अल्लाह** के रास्ते में न लड़ो और कमज़ोर मर्दों और औ़रतों और बच्चों की ख़ाति़र (न लड़ो जो) येह दुआ़ कर रहे हैं कि ऐ हमारे रब ! हमें इस शह्र से निकाल दे जिस के बाशिन्दे ज़ालिम हैं और हमारे लिये अपने पास से कोई ह़िमायती बना दे और हमारे लिये अपनी बारगाह से कोई मददगार बना दे।

﴿وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ : **और तुम्हें क्या हो गया कि तुम अल्लाह के रास्ते में न लड़ो।**﴾ इर्शाद फ़रमाया गया कि जिहाद फ़र्ज़ है और इस के तर्क का तुम्हारे पास कोई उ़ज़्र नहीं तो तुम्हें क्या हो गया कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद न करो ह़ालां कि दूसरी त़रफ़ मुसल्मान मर्द व औ़रत और बच्चे ज़ुल्म की चक्की में पिस रहे हैं और उन का कोई पुरसाने ह़ाल नहीं

1 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب قول الله تعالٰی: من المؤمنین رجال صدقوا... الخ، ۲/ ۲۵۵، الحدیث: ۲۸۰۵، عیون الحکایات، الحکایة العاشرة، ص۲۷، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

और वोह रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़एं मांग रहे हैं कि ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ, हमें इस बस्ती के ज़ालिमों से नजात अ़ता फ़रमा और हमें अपने पास से कोई मददगार अ़ता फ़रमा। तो जब मुसल्मान मज़्लूम हैं और तुम उन को बचाने की ताक़त रखते हो तो क्यूं उन की मदद के लिये नहीं उठते।

आयत ''وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से 3 बातें मा'लूम हुईं :

(1)...... जिहाद फ़र्ज़ है, बिला वज्ह जिहाद न करने वाला ऐसा ही गुनहगार होगा जैसे नमाज़ छोड़ने वाला बल्कि कई सूरतों में इस से भी बढ़ कर है। अलबत्ता येह ख़याल रहे कि जिहाद की फ़र्ज़िय्यत की कुछ शराइत़ हैं जिन में एक अहम शर्त़ इस्तित़ाअ़त या'नी जंग की ताक़त होना भी है। जिहाद येह नहीं है कि ताक़त हो नहीं और चन्द मुसल्मानों को लड़ाई में झोंक कर मरवा दिया जाए। जिहाद कभी फ़र्ज़े ऐन होता है और कभी फ़र्ज़े किफ़ाया।

(2)...... आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब देने के लिये मुसल्मानों की मज़्लूमिय्यत का बयान करना बहुत मुफ़ीद है। आयत में जिन कमज़ोरों का तज़्किरा है इस से मुराद मक्कए मुकर्रमा के मुसल्मान हैं। इस आयत में मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दी गई ताकि वोह उन कमज़ोर मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार के पन्जए ज़ुल्म से छुड़ाएं जिन्हें मक्कए मुकर्रमा में मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया था और त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं दे रहे थे और उन की औ़रतों और बच्चों तक पर बे रह़माना मज़ालिम करते थे और वोह लोग उन के हाथों में मजबूर थे इस ह़ालत में वोह **अल्लाह** तआ़ला से अपनी ख़लासी और मददे इलाही की दुआ़एं करते थे। येह दुआ़ क़बूल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ को उन का वली व नासिर किया और उन्हें मुश्रिकीन के हाथों से छुड़ाया और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ कर के उन की ज़बर दस्त मदद फ़रमाई।

(3)...... आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि ग़ैरुल्लाह को वली और नासिर (या'नी मददगार) कह सकते हैं।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ

www.dawateislami.net

سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْۤا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ
ضَعِيْفًا ﴿۷۶﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْۤا اَيْدِيَكُمْ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ع
وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ
النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَ قَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا
الْقِتَالَ ۚ لَوْ لَاۤ اَخَّرْتَنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ
وَ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَ لَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۷۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले **अल्लाह** की राह में लड़ते हैं और कुफ़्फ़ार शैत़ान की राह में लड़ते हैं तो शैत़ान के दोस्तों से लड़ो बेशक शैत़ान का दाव कमज़ोर है। क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन से कहा गया अपने हाथ रोक लो और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उन में बा'ज़े लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे **अल्लाह** से डरे या इस से भी ज़ाइद और बोले ऐ रब हमारे तू ने हम पर जिहाद क्यूं फ़र्ज़ कर दिया थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने दिया होता, तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरत्ना थोड़ा है और डर वालों के लिये आख़िरत अच्छी और तुम पर तागे बराबर ज़ुल्म न होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ईमान वाले **अल्लाह** की राह में जिहाद करते हैं और कुफ़्फ़ार शैत़ान की राह में लड़ते हैं तो तुम शैत़ान के दोस्तों से जिहाद करो बेशक शैत़ान का मक्रो फ़रेब कमज़ोर है। क्या तुम ने उन लोगों को न देखा जिन से कहा गया अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उन में एक गुरोह लोगों से ऐसे डरने लगा जैसे **अल्लाह** से डरना होता है या इस से भी ज़ियादा और कहने लगे : ऐ हमारे रब ! तू ने हम पर जिहाद क्यूं फ़र्ज़ कर दिया ? थोड़ी सी मुद्दत तक हमें और मोहलत क्यूं न अ़ता कर दी। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो कि दुन्या का साज़ो सामान थोड़ा सा है और परहेज़ गारों के लिये आख़िरत बेहतर है और तुम पर एक धागे के बराबर भी ज़ुल्म न किया जाएगा।

www.dawateislami.net

﴿اَلَمْ تَرَ﴾ **: क्या तुम ने न देखा ।** इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल यूं है कि मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा में मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं देते थे । हिजरत से पहले सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की एक जमाअ़त ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप हमें काफ़िरों से लड़ने की इजाज़त दीजिये, इन्हों ने हमें बहुत सताया है और बहुत ईज़ाएं दी हैं । हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उन के साथ जंग करने से अभी हाथ रोक कर रखो और अभी सिर्फ़ नमाज़ और ज़कात अदा करो । इसी के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि क्या तुम ने उन लोगों को न देखा जिन से शुरूए इस्लाम में मक्कए मुकर्रमा में कहा गया कि अभी जिहाद से अपने हाथ रोके रखो और अभी सिर्फ़ नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो ।(1)

लेकिन फिर जब मदीनए मुनव्वरह में उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो वोह उस वक़्त तब्ई ख़ौफ़ का शिकार हो गए जो इन्सानी फ़ित्रत है और हालत येह थी कि उन में एक गुरोह लोगों से ऐसे डरने लगा जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना होता है या इस से भी कुछ ज़ियादा ही ख़ौफ़ज़दा था और कहने लगे : ऐ हमारे रब ! عَزَّوَجَلَّ, तू ने हम पर जिहाद क्यूं फ़र्ज़ कर दिया ? इस की हिक्मत क्या है ? येह सुवाल हिक्मत दरयाफ़्त करने के लिये था, ए'तिराज़ करने के लिये नहीं । इसी लिये उन को इस सुवाल पर तौबीख़ो ज़ज्र न फ़रमाया गया बल्कि तसल्ली बख़्श जवाब अ़ता करते हुए फ़रमाया गया कि ऐ हबीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, तुम इन से फ़रमा दो कि दुन्या का साज़ो सामान थोड़ा सा है, फ़ना होने वाला है जब कि परहेज़ गारों के लिये आख़िरत तय्यार की गई है और वोही उन के लिये बेहतर है । लिहाज़ा जिहाद में ख़ुशी से शिर्कत करो ।

اَیْنَ مَا تَكُوْنُوْا یُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ فِیْ بُرُوْجٍ مُّشَیَّدَةٍؕ
وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ یَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ
سَیِّئَةٌ یَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ
الْقَوْمِ لَا یَكَادُوْنَ یَفْقَهُوْنَ حَدِیْثًا ﴿۷۸﴾

(1)......خازن، النساء، تحت الآية: ٧٧، ١/٤٠٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी अगर्चे मज़बूत क़ल्ओं में हो और उन्हें कोई भलाई पहुंचे तो कहें येह **अल्लाह** की तरफ़ से है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे तो कहें येह हुज़ूर की तरफ़ से आई तुम फ़रमा दो सब **अल्लाह** की तरफ़ से है तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम जहां कहीं भी होगे मौत तुम्हें ज़रूर पकड़ लेगी अगर्चे तुम मज़बूत क़ल्ओं में हो और उन (मुनाफ़िक़ों) को कोई भलाई पहुंचे तो कहते हैं येह **अल्लाह** की तरफ़ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे तो कहते हैं : (ऐ मुहम्मद !) येह आप की वज्ह से आई है । ऐ हबीब ! तुम फ़रमा दो : सब **अल्लाह** की तरफ़ से है तो उन लोगों को क्या हुवा कि किसी बात को समझने के क़रीब ही नहीं आते ।

﴾اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ﴿ **: तुम जहां कहीं भी होगे मौत तुम्हें ज़रूर पकड़ लेगी ।** लोगों से फ़रमाया गया कि ऐ जिहाद से डरने वालो ! तुम जहां कहीं भी होगे मौत तुम्हें ज़रूर पकड़ लेगी अगर्चे तुम मज़बूत क़ल्ओं में हो और इस से रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत नागुज़ीर है तो बिस्तर पर मर जाने से राहे ख़ुदा में जान देना बेहतर है कि येह सआदत आख़िरत की काम्याबी का सबब है ।

﴾وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ﴿ **: और अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचे ।** यहां से मुनाफ़िक़ीन का बयान है कि अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचे जैसे माल में फ़रावानी आ जाए, कारोबार अच्छा हो जाए, पैदावार ज़ियादा हो जाए तो कहते हैं येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे जैसे क़हत़ पड़ जाए या कोई और मुसीबत आ जाए तो कहते हैं : ऐ मुहम्मद ! येह आप की वज्ह से आई है, जब से आप आए हैं ऐसी ही सख़्तियां पेश आ रही हैं । महबूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिफ़ाअ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ हबीब ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम इन से फ़रमा दो कि रिज़्क़ में कमी बेशी, क़हत़ या ख़ुशहाली, रन्ज या राहत, फ़त्ह या शिकस्त सब ह़क़ीक़त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से हैं या'नी हर राहतो मुसीबत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इरादे से आती है, हां हम इस के अस्बाब मुहय्या कर लेते हैं नीज़ येह बात भी याद रहे कि नेकी राहत का ज़रीआ है और गुनाह मुसीबत का सबब है ।

www.dawateislami.net

مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ٘ وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ سَیِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ﴿۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुंचे वोह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और जो बुराई पहुंचे वोह तेरी अपनी त़रफ़ से है और ऐ मह़बूब हम ने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल भेजा और **अल्लाह** काफ़ी है गवाह।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ सुनने वाले ! तुझे जो भलाई पहुंचती है वोह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और तुझे जो बुराई पहुंचती है वोह तेरी अपनी त़रफ़ से है और ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल बना कर भेजा है और गवाही के लिये **अल्लाह** ही काफ़ी है।

﴾ مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ **: तुझे जो भलाई पहुंचती है।**﴿ इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐ मुख़ात़ब ! तुम्हें जो भलाई पहुंचती है वोह **अल्लाह** करीम का फ़ज़्लो रह़मत है और तुझे जो बुराई पहुंचती है वोह तेरी अपनी वज्ह से है कि तू ने ऐसे गुनाहों का इरतिकाब किया कि तू इस का मुस्तह़िक़ हुवा। यहां भलाई की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ और बुराई की निस्बत बन्दे की त़रफ़ की गई है जब कि ऊपर की आयत में सब की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ है, ख़ुलासा येह है कि बन्दा जब मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी की त़रफ़ नज़र करे तो हर चीज़ को उसी की त़रफ़ से जाने और जब अस्बाब पर नज़र करे तो बुराइयों को अपनी शामते नफ़्स के सबब से समझे।

﴾ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا **: और ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल बना कर भेजा है।**﴿ रसूले काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अ़रबो अ़जम और सारी मख़्लूक़ के लिये रसूल बनाए गए और कुल जहान आप का उम्मती किया गया। येह सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र मन्सब और अ़ज़ीमुल मर्तबत क़द्रो मन्ज़िलत का बयान है। अव्वलीनो आख़िरीन सारे इन्सानों के आप नबी हैं, ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर यौमे क़ियामत तक सब इन्सान आप के उम्मती हैं, इसी लिये तमाम नबियों ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ पढ़ी।

www.dawateislami.net

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ﴿۸۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना और जिस ने मुंह फेरा तो हम ने तुम्हें उन के बचाने को न भेजा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना और जिस ने मुंह मोड़ा तो हम ने तुम्हें उन्हें बचाने के लिये नहीं भेजा।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ **: जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने अल्लाह का हुक्म माना।** आयते मुबारका का शाने नुज़ूल कुछ इस त़रह़ है कि सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा फ़रमाया : जिस ने मेरी इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की, इस पर आज कल के गुस्ताख़ बद दीनों की त़रह़ उस ज़माने के बा'ज़ मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह चाहते हैं कि हम इन्हें रब मान लें जैसे ईसाइयों ने ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को रब माना है। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कलाम की तस्दीक़ फ़रमा दी कि बेशक रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** की इत़ाअ़त है।(1)

तो जिस ने इन की इत़ाअ़त से ए'राज़ किया तो इस का वबाल उसी पर है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें इस लिये नहीं भेजा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहर सूरत उन्हें जहन्नम से बचाएं बल्कि सिर्फ़ तब्लीग़ के लिये भेजा है।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ

1 ......بغوی، النساء، تحت الآیة: ۸۰، ۱/۳۶۲.

www.dawateislami.net

الَّذِیْ تَقُوْلُ ؕ وَ اللّٰهُ یَكْتُبُ مَا یُبَیِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ
تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِیْلًا ﴿۸۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कहते हैं हम ने हुक्म माना फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उन में एक गुरोह जो कह गया था उस के ख़िलाफ़ रात को मन्सूबे गांठता है और **अल्लाह** लिख रखता है उन के रात के मन्सूबे तो ऐ महबूब तुम उन से चश्म पोशी करो और **अल्लाह** पर भरोसा रखो और **अल्लाह** काफ़ी है काम बनाने को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कहते हैं : हम ने फ़रमां बरदारी की फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उन में एक गुरौह आप के फ़रमान के बर ख़िलाफ़ रात को मन्सूबे बनाता है और **अल्लाह** उन के रात के मन्सूबे लिख रहा है तो ऐ हबीब ! तुम उन से चश्म पोशी करो और **अल्लाह** पर भरोसा रखो और **अल्लाह** काफ़ी कारसाज़ है।

﴿وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ : **और कहते हैं : हम ने फ़रमां बरदारी की।**﴾ येह आयत मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई, जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने कहते थे कि हम आप पर ईमान लाए और आप की इताअत हम पर फ़र्ज़ है लेकिन वहां से उठ कर इस के ख़िलाफ़ करते थे।(1)

उन के बारे में फ़रमाया कि इन के सब मन्सूबे इन के नामए आ'माल में लिखे जा रहे हैं और इन्हें उस का बदला भी मिलेगा। लेकिन चूंकि येह ज़ाहिरन कलिमा पढ़ते थे और ज़ाहिरी तौर पर कुफ़्र नहीं करते थे इस लिये इन के बारे में कहा गया कि इन से चश्म पोशी करो या'नी इन के काफ़िरों की तरह दुन्यवी अहकाम नहीं हैं। हां चूंकि इन की तरफ़ से ख़तरा पाया जाता है तो इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखो, इन की तरफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को किफ़ायत करेगा।

اَفَلَا یَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَ لَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَیْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِیْهِ
اخْتِلَافًا كَثِیْرًا ﴿۸۲﴾

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٨١، ١/٤٠٥.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या ग़ौर नहीं करते कुरआन में और अगर वोह ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या येह लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते और अगर येह कुरआन **अल्लाह** के इलावा किसी और की त़रफ़ से होता तो ज़रूर इस में बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ पाते।

﴿اَفَلَا یَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ﴾ **: तो क्या येह लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते।** यहां कुरआन की अ़ज़मत का बयान है और लोगों को इस में ग़ौरो फ़िक्र करने की दा'वत दी गई है। चुनान्चे फ़रमाया गया कि क्या येह लोग कुरआने ह़कीम में ग़ौर नहीं करते और इस के उ़लूम और ह़िक्मतों को नहीं देखते कि इस ने अपनी फ़साह़त से तमाम मख़्लूक़ को अपने मुक़ाबले से आ़जिज़ कर दिया है और ग़ैबी ख़बरों से मुनाफ़िक़ीन के अह़वाल और उन के मक्रो फ़रेब को खोल कर रख दिया है और अव्वलीनो आख़िरीन की ख़बरें दी हैं। अगर कुरआन में ग़ौर करें तो यक़ीनन इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है और इसे लाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल है।

कुरआने मजीद में ग़ौरो फ़िक्र करना इ़बादत है लेकिन !

इस से मा'लूम हुवा कि कुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करना आ'ला दरजे की इ़बादत है। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एह़याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं कि एक आयत समझ कर और ग़ौरो फ़िक्र कर के पढ़ना बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये पूरा कुरआन पढ़ने से बेहतर है।[1]

कुरआन का ज़िक्र करना, इसे पढ़ना, देखना, छूना सब इ़बादत है। कुरआन में ग़ौरो फ़िक्र की दा'वत दी गई है लेकिन येह बात वाज़ेह़ है कि कुरआन में वोही ग़ौरो फ़िक्र मो'तबर और सह़ीह़ है जो साह़िबे कुरआन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सोह़बत याफ़्ता सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ और इन से तरबियत ह़ासिल करने वाले ताबिई़न رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِم के उ़लूम की रोशनी में हो क्यूं कि वोह ग़ौरो फ़िक्र जो उस ज़ात के फ़रामीन के ख़िलाफ़ हो जिन पर कुरआन उतरा और उस ग़ौरो फ़िक्र के ख़िलाफ़ हो जो वह़ी के नुज़ूल का मुशाहदा करने वाले बुज़ुर्गों के ग़ौरो फ़िक्र के ख़िलाफ़ हो, वोह यक़ीनन मो'तबर नहीं हो सकता। इस लिये दौरे जदीद के उन नित नए मुह़क़्क़िक़ीन से बचना ज़रूरी है जो चौदह

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب التفکر، بیان مجاری الفکر، ۵/۱۷۰.

www.dawateislami.net

सो साल के उ़लमा, फ़ुक़हा, मुह़द्दिसीन व मुफ़स्सिरीन और सारी उम्मत के फ़हम को ग़लत़ क़रार दे कर क़ौलन या अ़मलन येह कहते नज़र आते हैं कि क़ुरआन अगर समझा है तो हम ने ही समझा है, पिछली सारी उम्मत जाहिल ही गुज़र गई है। येह लोग यक़ीनन गुमराह हैं।

﴿وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ﴾ **: और अगर येह क़ुरआन अल्लाह के इलावा किसी और की त़रफ़ से होता।** यहां क़ुरआने पाक की ह़क़्क़ानिय्यत पर एक निहायत आसान और वाज़ेह़ दलील दी जा रही है कि अगर क़ुरआने पाक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी और की त़रफ़ से होता तो इस में बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ होता, इस में जो ग़ैब की ख़बरें दी गई हैं वोह सो फ़ीसद पूरी न होतीं बल्कि कोई बात तो पूरी हो जाती और कोई न होती लेकिन जब ऐसा न हुवा बल्कि क़ुरआने पाक की तमाम ग़ैबी ख़बरें बिल्कुल सच्ची साबित हो रही हैं तो साबित हुवा कि यक़ीनन येह किताब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है नीज़ इस के मज़ामीन में भी बाहम इख़्तिलाफ़ नहीं कि कहीं कोई बात कह दी और कहीं उस के बर ख़िलाफ़ कोई दूसरी बात कह दी। इसी त़रह़ फ़साह़तो बलाग़त में भी इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं क्यूं कि मख़्लूक़ का कलाम फ़सीह़ भी हो तो सब यक्सां नहीं होता कुछ बलाग़त से भरपूर होता है तो कुछ रकीक व घटिया क़िस्म का होता है जैसा कि शुअ़रा और ज़बान दानों के कलाम में देखा जाता है कि बड़े से बड़े शाइ़र का कोई कलाम बड़ा शानदार होता है और कोई बिल्कुल गया गुज़रा। लेकिन क़ुरआन चूंकि **अल्लाह** तआ़ला का कलाम है और **अल्लाह** तआ़ला ही के कलाम की शान है कि उस का तमाम कलाम फ़साह़तो बलाग़त के आ'ला मर्तबे पर है।

وَ اِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى اُولِی الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِیْنَ یَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّیْطٰنَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۸۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन के पास कोई बात इत़्मीनान या डर की आती है उस का चरचा कर बैठते हैं और अगर उस में रसूल और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों की त़रफ़ रुजूअ़ लाते तो ज़रूर उन से उस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बात में काविश करते हैं और अगर तुम पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह़मत न होती तो ज़रूर तुम शैत़ान के पीछे लग जाते मगर थोड़े।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब अम्न या ख़ौफ़ की कोई बात उन के पास आती है तो उसे फैलाने लगते हैं हालां कि अगर उस बात को रसूल और अपने बा इख़्तियार लोगों की ख़िदमत में पेश करते तो ज़रूर उन में से नतीजा निकालने की सलाहिय्यत रखने वाले उस (ख़बर की हक़ीक़त) को जान लेते और अगर तुम पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो ज़रूर तुम में से चन्द एक के इलावा सब शैतान के पीछे लग जाते।

﴿وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ﴾ **: और जब अम्न या ख़ौफ़ की कोई बात उन के पास आती है।** यहां अगर्चे एक ख़ास सियाक़ो सबाक़ में एक चीज़ बयान की गई है लेकिन इस में जो हुक्म बयान किया गया है येह हमारी ज़िन्दगी के हज़ारों गोशों में इस्लाह के लिये काफ़ी है। ख़ुलासए कलाम येह फ़रमाया गया कि जब कभी अम्न मसलन मुसल्मानों की फ़त्ह या ख़ौफ़ मसलन मुसल्मानों की शिकस्त की कोई बात लोगों के पास आती है जो फ़साद का बाइस बन सकती है तो वोह फ़ौरन उसे फैलाने लगते हैं हालां कि अगर उस बात को येह लोग रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने बा इख़्तियार लोगों जैसे अकाबिर सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم जो साहिबे राय और साहिबे बसीरत हैं की ख़िदमत में पेश करते और ख़ुद कुछ दख़्ल न देते तो समझदार लोग ज़रूर अपनी अक़्लो दानिश या अपनी तहक़ीक़ की रोशनी में उस ख़बर की हक़ीक़त को जान लेते और यूं बात का बतंगड़ बनने की बजाए हक़ीक़ते हाल खुल कर सामने आ जाती।

ज़िन्दगी की इस्लाह का एक अहम उसूल

इस आयत को सामने रख कर हम अपने घरों के मुआमलात बल्कि मुल्की व बैनल अक़्वामी मुआमलात और सहाफ़ती मुआमलात को जांच सकते हैं। हमारे हां का हाल येह है कि एक बात को कोई शख़्स उछालता है और फिर वोह मौजूदा मीडिया के ज़रीए पूरी दुन्या में गर्दिश करने लगती है और कुछ अर्से बा'द पता चलता है कि इस बात का कोई सर पैर ही नहीं और वोह सरासर झूटी है। मुसल्मानों को और इस्लाम को बदनाम करने के लिये ऐसी साज़िशें, अफ़्वाहें और ख़बरें दिन रात फैलाई जा रही हैं हत्ता कि बा'ज़ जगहों पर येह बात फैलाई गई है कि मुसल्मानों का मज़हब येह है कि कोई मुसल्मान उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जाएगा जब तक वोह किसी एक काफ़िर को क़त्ल नहीं कर लेगा। اَلْاَمان وَالْحفيظ, कैसा झूट और कैसी दीदा दिलेरी है। कुफ़्फ़ार के ममालिक में मुसल्मानों का जो तशख़्ख़ुस फैलाया जा रहा

www.dawateislami.net

है वोह भी इसी त़रह़ की झूटी अफ़्वाहों के ज़रीए है और फिर ऐसी ही बातें सुन कर मग़रिब से मरऊ़ब कुछ पढ़े लिखे समझे जाने वाले हमारे लोग इन बातों को इस्लाम के नाम पर पेश कर के इस्लाम को बदनाम करते हैं। येही मुआ़मला घरों में है कि किसी ने कुछ बात कही, वोह फैलते फैलते दस मरतबा इज़ाफ़ों के साथ ऐसी हो गई कि ख़ानदानों में लड़ाइयां छिड़ गईं और तबाहियां मच गईं। ऐसी सेंकड़ों बातों का हम सब को तजरिबा होगा। इन सब के लिये क़ुरआन ने येह उसूल दिया है कि जब ऐसी कोई बात पहुंचे तो अहले दानिश और समझदार लोगों तक पहुंचा दी जाए वोह ग़ौरो फ़िक्र और तह़क़ीक़ से उस की ह़क़ीक़ते ह़ाल मा'लूम कर लेंगे और यूं बात का बतंगड़ और राई का पहाड़ नहीं बनेगा। ह़ज़रते ह़फ़्स बिन आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : किसी शख़्स के झूटा होने के लिये येही बात काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात बयान कर दे।[1]

एक अहम मस्अला

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि इस आयत में इस बात पर दलील है कि क़ियास जाइज़ है और येह भी मा'लूम होता है कि एक इ़ल्म तो वोह है जो क़ुरआन व ह़दीस से सराह़त से ह़ासिल होता है और एक इ़ल्म वोह है जो क़ुरआन व ह़दीस से इस्तिम्बात़ व क़ियास के ज़रीए ह़ासिल होता है। येह भी मा'लूम हुवा कि उमूरे दीनिया में हर शख़्स को दख़्ल देना जाइज़ नहीं जो इस का अह्ल हो वोही इस में ग़ौर करे।

فَقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ اللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ اَشَدُّ تَنْكِیْلًا ﴿۸۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ मह़बूब **अल्लाह** की राह में लड़ो तुम तक्लीफ़ न दिये जाओगे मगर अपने दम की और मुसल्मानों को आमादा करो क़रीब है कि **अल्लाह** काफ़िरों की सख़्ती रोक दे और **अल्लाह** की आंच सब से सख़्त तर है और उस का अ़ज़ाब सब से कर्रा।

1 ......مسلم، باب النهی عن الحديث بكلّ ما سمع، ص٨، الحديث: ٥(٥).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो ऐ ह़बीब ! **अल्लाह** की राह में जिहाद करें । आप को आप की त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं दी जाएगी और मुसल्मानों को (जिहाद की) तरग़ीब देते रहो । अ़न्क़रीब **अल्लाह** काफ़िरों की त़ाक़त रोक देगा और **अल्लाह** की त़ाक़त सब से ज़ियादा मज़्बूत़ है और उस का अ़ज़ाब सब से ज़ियादा शदीद है ।

﴿فَقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ : **तो ऐ ह़बीब ! अल्लाह की राह में जिहाद करें ।**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि बद्रे सुग़रा (छोटा ग़ज़्वए बद्र, उस) की जंग जो अबू सुफ़्यान से त़ै थी जब उस का वक़्त आ पहुंचा तो सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां जाने के लिये लोगों को दा'वत दी, बा'ज़ लोगों पर येह गिरां हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि आप जिहाद न छोड़ें अगर्चे तन्हा हों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का नासिर व मददगार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वा'दा सच्चा है । येह हुक्म पा कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बद्रे सुग़रा की जंग के लिये रवाना हुए और सिर्फ़ सत्तर सुवार हमराह थे ।[1]

चुनान्चे फ़रमाया गया कि आप जिहाद के लिये जाएं और आप को आप की त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं दी जाएगी ख़्वाह कोई आप का साथ दे या न दे और अगर्चे आप अकेले रह जाएं, हां मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दो और बस । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** करीम काफ़िरों की सख़्ती को रोक देगा, चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि मुसल्मानों के इस छोटे से लश्कर से कुफ़्फ़ार ऐसे मरऊ़ब हुए कि वोह मुसल्मानों के मुक़ाबले में मैदान में न आ सके ।

सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शुजाअ़त

इस आयत से साबित हुवा कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शुजाअ़त में सब से आ'ला हैं कि आप को तन्हा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल तशरीफ़ ले जाने का हुक्म हुवा और आप आमादा हो गए ।

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से ज़ियादा शुजाअ़ और बहादुर थे ।[2]

1 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ٨٤، ص٢٤٢.

2 ......مسلم، كتاب الفضائل، باب فى شجاعة النبى عليه السلام وتقدّمه للحرب، ص١٢٦٢، الحديث: ٤٨(٢٣٠٧).

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा बहादुर और त़ाक़त वर, सख़ी और पसन्दीदा किसी को नहीं देखा ।[1]

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे मिस्ल शुजाअ़तो बहादुरी का येह आ़लम था कि हज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم जैसे बहादुर सह़ाबी का येह क़ौल है : जब लड़ाई ख़ूब गर्म हो जाती थी और जंग की शिद्दत देख कर बड़े बड़े बहादुरों की आंखें पथरा कर सुर्ख़ पड़ जाया करती थीं उस वक़्त हम लोग नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में खड़े हो कर अपना बचाव करते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम सब लोगों से ज़ियादा आगे बढ़ कर और दुश्मनों के बिल्कुल क़रीब पहुंच कर जंग फ़रमाते थे और हम लोगों में सब से ज़ियादा बहादुर वोह शख़्स शुमार किया जाता था जो जंग में हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब रह कर दुश्मनों से लड़ता था ।[2]

ग़ज़्वए हुनैन के दिन जब इब्तिदाअन मुसल्मान कुफ़्फ़ार के ह़म्ले की ताब न लाते हुए मैदाने जंग से फ़िरार हुए तो ऐसे नाज़ुक वक़्त में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक क़दम भी पीछे नहीं हटे बल्कि अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सुवार दुश्मनों की जानिब पेश क़दमी फ़रमाते रहे ।[3]

ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मौक़अ़ पर ख़न्दक़ खोदते हुए एक ऐसी चट्टान ज़ाहिर हुई जो किसी से न टूट सकी, सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वार से वोह चट्टान पारह पारह हो गई ।[4]

एक रात अहले मदीना एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुन कर दहशत ज़दा हो गए तो उस आवाज़ की सम्त सब से पहले हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए ।[5]

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

तुम हो ह़फ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वोह दुश्मन ख़बीस　　तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोड़ों दुरूद

1 ......الشفا، القسم الاول، الباب الثانی، فصل واماّ الشجاعة والنجدة، ص١١٦، الجزء الاول.
2 ......الشفا، القسم الاول، الباب الثانی، فصل واماّ الشجاعة والنجدة، ص١١٦، الجزء الاول.
3 ......مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب فی غزوة حنین، ص٩٧٨، الحدیث: ٧٦(١٧٧٥).
4 ......نسائی، کتاب الجهاد، غزوة الترک والحبشة، ص٥١٧، الحدیث: ٣١٧٣.
5 ......بخاری، کتاب الادب، باب حسن الخلق والسخاء... الخ، ٤/١٠٨، الحدیث: ٦٠٣٣.

www.dawateislami.net

مَنۡ يَّشۡفَعۡ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنۡ لَّهٗ نَصِيۡبٌ مِّنۡهَا‌ ۚ وَمَنۡ يَّشۡفَعۡ
شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنۡ لَّهٗ كِفۡلٌ مِّنۡهَا‌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ مُّقِيۡتًا ﴿۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो अच्छी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस में से हिस्सा है और जो बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस में से हिस्सा है और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो अच्छी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस का अज्र है और जो बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस में से हिस्सा है और **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है।

﴿مَنۡ يَّشۡفَعۡ شَفَاعَةً حَسَنَةً : **जो अच्छी सिफ़ारिश करे।**﴾ **अच्छी सिफ़ारिश** वोह है जिस में किसी को जाइज़ नफ़्अ़ पहुंचाया जाए या तक्लीफ़ से बचाया जाए, इस पर सवाब है जैसे कोई नोकरी का वाक़ेई मुस्तहिक़ है और किसी दूसरे की हक़ तलफ़ी नहीं हो रही तो सिफ़ारिश करना जाइज़ है या कोई मज़्लूम है और पोलीस से इन्साफ़ दिलवाने में मदद के लिये सिफ़ारिश की जाए। **बुरी सिफ़ारिश** वोह है जिस में ग़लत़ सिफ़ारिश की जाए, ज़ालिम को ग़लत़ त़रीक़े से बचाया जाए या किसी की हक़ तलफ़ी की जाए जैसे किसी ग़ैर मुस्तहिक़ को नोकरी दिलाने के लिये सिफ़ारिश की जाए या किसी को शराब या सिनेमा के लायसन्स दिलवाने के लिये सिफ़ारिश की जाए, येह ह़राम है।

وَاِذَا حُيِّيۡتُمۡ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوۡا بِاَحۡسَنَ مِنۡهَاۤ اَوۡ رُدُّوۡهَا‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى
كُلِّ شَىۡءٍ حَسِيۡبًا ﴿۸۶﴾

النصف

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम्हें किसी लफ़्ज़ से सलाम किया जाए तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ से जवाब दो या वोही अल्फ़ाज़ कह दो। बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर ह़िसाब लेने वाला है।

﴿وَ اِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ : **और जब तुम्हें किसी लफ़्ज़ से सलाम किया जाए।**﴾ इस्लाम से पहले अहले अ़रब की आ़दत येह थी कि जब वोह एक दूसरे से मिलते तो कहते "حَیَّاکَ اللہ" या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुझे ज़िन्दा रखे और जब दीने इस्लाम आया तो उस में इस कलिमे को "सलाम" से तब्दील कर दिया गया और येह कलिमा "حَیَّاکَ اللہ" के मुक़ाबले में ज़ियादा कामिल है क्यूं कि जो शख़्स सलामत होगा तो वोह लाज़िमी तौर पर ज़िन्दा होगा और सिर्फ़ ज़िन्दा शख़्स सलामत नहीं हो सकता क्यूं कि उस की ज़िन्दगी मुसीबतों और आफ़ात से मिली हुई है।[1]

सलाम से मुतअ़ल्लिक़ शरई मसाइल

इस आयत में सलाम के बारे में बयान हुवा, इस मुनासबत से हम यहां सलाम से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई मसाइल ज़िक्र करते हैं :

(1)...... सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना फ़र्ज़ और जवाब में अफ़्ज़ल येह है कि सलाम करने वाले के सलाम पर कुछ बढ़ाए मसलन पहला शख़्स اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहे तो दूसरा शख़्स وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ कहे और और अगर पहले ने وَرَحْمَةُ اللهِ भी कहा था तो येह وَبَرَکَاتُهٗ और बढ़ाए पस इस से ज़ियादा सलाम व जवाब में और कोई इज़ाफ़ा नहीं है।

(2)...... काफ़िर, गुमराह, फ़ासिक़ और इस्तिन्जा करते मुसल्मानों को सलाम न करें। यूंही जो शख़्स ख़ुत्बा, तिलावते क़ुरआन, ह़दीस, मुज़ाकरए इ़ल्म, अज़ान और तक्बीर में मश्ग़ूल हो, इस ह़ाल में उन को भी सलाम न किया जाए और अगर कोई सलाम कर दे तो उन पर जवाब देना लाज़िम नहीं।

(3)...... जो शख़्स शत़रन्ज, चौसर, ताश, गन्जिफ़ा वग़ैरा कोई ना जाइज़ खेल खेल रहा हो या गाने बजाने में मश्ग़ूल हो या पाख़ाने या ग़ुस्ल ख़ाने में हो या बरहना हो उस को सलाम न किया जाए।

(4)...... आदमी जब अपने घर में दाख़िल हो तो बीवी को सलाम करे, बा'ज़ जगह येह बड़ी ग़लत़ रस्म है कि मियां बीवी के इतने गहरे तअ़ल्लुक़ात होते हुए भी एक दूसरे को सलाम करने से

[1] ......تفسیر کبیر، النساء، تحت الآیة: ٨٦، ١٦١/٤.

www.dawateislami.net

महरूम करते हैं हालां कि सलाम जिस को किया जाता है उस के लिये सलामती की दुआ है। **(5)**...... बेहतर सुवारी वाला, कमतर सुवारी वाले को और कमतर सुवारी वाला, पैदल चलने वाले को और पैदल चलने वाला, बैठे हुए को और छोटा बड़े को और थोड़े ज़ियादा को सलाम करें। सलाम से मुतअ़ल्लिक़ शर्ई मसाइल की मज़ीद मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 16 का मुतालआ़ कीजिये।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَیَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا ﴿۸۷﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** है कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और वोह ज़रूर तुम्हें इकठ्ठा करेगा क़ियामत के दिन जिस में कुछ शक नहीं और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात सच्ची।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ही है जिस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और वोह ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकठ्ठा करेगा जिस में कोई शक नहीं और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात सच्ची।

﴿وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا﴾ **: और अल्लाह से ज़ियादा किस की बात सच्ची।** इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा किस की बात सच्ची या'नी उस से ज़ियादा सच्चा कोई नहीं इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का झूट बोलना ना मुम्किन व मुहाल है क्यूं कि झूट ऐब है और हर ऐब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुहाल है, वोह जुम्ला उ़यूब से पाक है।

इम्काने किज़्ब का रद

मुसल्मानों का अ़क़ीदा है कि **अल्लाह** तआ़ला के किसी कलाम में झूट का मुम्किन होना ज़ाती तौर पर मुहाल है और **अल्लाह** तआ़ला की तमाम सिफ़ात मुकम्मल तौर पर सिफ़ाते कमाल हैं और जिस तरह किसी सिफ़ते कमाल की उस से नफ़ी ना मुम्किन है इसी तरह किसी नक़्स व ऐब की सिफ़त का सुबूत भी **अल्लाह** तआ़ला के लिये मुहाल है। **अल्लाह** तआ़ला का येही फ़रमान :

www.dawateislami.net

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात सच्ची।

इस अक़ीदे की बहुत बड़ी दलील है, चुनान्चे इस आयत के तह़त अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इस आयत में इस्तिफ़्हामे इन्कारी है या'नी ख़बर, वा'दा और वई़द किसी बात में कोई शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से ज़ियादा सच्चा नहीं कि उस का झूट तो बिज़्ज़ात मुह़ाल है क्यूं कि झूट ख़ुद अपने मा'ना ही की रू से क़बीह़ है कि झूट वाक़ेअ़ के ख़िलाफ़ ख़बर देने का नाम है।(1)

अ़ल्लामा बैज़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला इस आयत में इस से इन्कार फ़रमाता है कि कोई शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से ज़ियादा सच्चा हो क्यूं कि उस की ख़बर तक तो किसी झूट को किसी त़रह़ राह ही नहीं कि झूट ऐ़ब है और ऐ़ब **अल्लाह** तआ़ला पर मुह़ाल है।(2)

नीज़ **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो **अल्लाह** हरगिज़ वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करेगा।

इस आयत के तह़त इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान इस बात पर दलालत करता है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने हर वा'दे और वई़द में झूट से पाक है, हमारे अस्ह़ाबे अहले सुन्नत व जमाअ़त इस दलील से किज़्बे इलाही को ना मुम्किन जानते हैं क्यूं कि झूट सिफ़ते नक़्स है और नक़्स **अल्लाह** तआ़ला पर मुह़ाल है और मो'तज़िला इस दलील से **अल्लाह** तआ़ला के झूट को मुम्तनेअ़ मानते हैं क्यूं कि झूट फ़ी नफ़्सिही क़बीह़ है तो **अल्लाह** तआ़ला से इस का सादिर होना मुह़ाल है। अल ग़रज़ साबित हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का झूट बोलना अस्लन मुम्किन ही नहीं।(4)

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला की ख़बर अज़ली है, कलाम में झूट होना अ़ज़ीम नक़्स है लिहाज़ा वोह **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़ात में हरगिज़ राह नहीं पा सकता कि **अल्लाह** तआ़ला तमाम उ़यूबो नक़ाइस से पाक है, उस के ह़क़ में ख़बर के ख़िलाफ़ होना सरापा नक़्स है।(5)

1......مدارك، النساء، تحت الآية: ٨٧، ص٢٤٣.

2......بيضاوى، النساء، تحت الآية: ٨٧، ٢/٢٢٩.

3......بقره: ٨٠.

4......تفسير كبير، البقرة، تحت الآية: ٨٠، ١/٥٦٧، ملخصاً.

5...... तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), अल बक़रह, तह़तल आयह : 80, 2/547 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

और **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और सच और इन्साफ़ के ए'तिबार से तेरे रब के कलिमात मुकम्मल हैं। उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं और वोही सुनने वाला, जानने वाला है।

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयत के तह्त फ़रमाते हैं : येह आयत इस चीज़ पर दलालत करती है कि **अल्लाह** तआला की बात बहुत सी सिफ़तों के साथ मौसूफ़ है, उन में से एक सिफ़त उस का सच्चा होना है और इस पर दलील येह है कि झूट ऐब है और ऐब **अल्लाह** तआला पर मुहाल है। मज़ीद फ़रमाते हैं कि कुरआनो हदीस के दलाइल का सहीह होना इस पर मौक़ूफ़ है कि **अल्लाह** तआला के किज़्ब को मुहाल माना जाए।(2)

नीज़ झूट फ़ी नफ़्सिही दो बातों से ख़ाली नहीं, या तो वोह नक़्स होगा या नहीं होगा और येह बात ज़ाहिर है कि झूट ज़रूर नक़्स है और जब येह नक़्स है तो बिल इत्तिफ़ाक़ **अल्लाह** तआला के लिये मुहाल हो गया क्यूं कि वोह हर नक़्स व ऐब से पाक है। दूसरी सूरत में अगर झूट को नक़्स व ऐब न भी माना जाए तो भी येह **अल्लाह** तआला के लिये मुहाल है क्यूं कि अगर झूट नक़्स नहीं तो कमाल भी नहीं और **अल्लाह** तआला न सिर्फ़ नक़्सो ऐब से पाक है बल्कि वोह हर उस शै से भी पाक है जो कमाल से ख़ाली हो अगर्चे वोह नक़्सो ऐब में से न भी हो क्यूं कि **अल्लाह** तआला की हर सिफ़त सिफ़ते कमाल है और जिस में कोई कमाल ही नहीं तो वोह **अल्लाह** तआला की सिफ़त किस तरह हो सकता है।

याद रहे कि लोगों के झूट बोलने पर क़ादिर होने और **अल्लाह** तआला के लिये झूट ना मुम्किन व मुहाल होने से येह हरगिज़ लाज़िम नहीं आता कि लोगों की कुदरत مَعَاذَ الله **अल्लाह** तआला की कुदरत से बढ़ गई या'नी येह कहना कि **बन्दा झूट बोल सके और अल्लाह तआला झूट न बोल सके,** इस से लाज़िम आता है कि इन्सान की कुदरत مَعَاذَ الله **अल्लाह** तआला की कुदरत से बढ़ जाएगी, येह बात सरासर ग़लत है नीज़ अगर येह बात सच्ची हो कि आदमी जो कुछ कर सकता है वोह **अल्लाह** तआला भी कर सकता है तो इस से येह लाज़िम आएगा कि जिस तरह निकाह करना और बीवी से हम बिस्तरी करना वग़ैरा इन्सान की कुदरत में है इसी तरह **अल्लाह** तआला भी مَعَاذَ الله येह कर सकता है, यूंही अगर

1 ......انعام:١١٥. 2 ......تفسير كبير، الانعام، تحت الآية: ١١٥، ٥/١٢٥.

www.dawateislami.net

वोह बात सच्ची हो तो इस से येह लाज़िम आएगा कि जिस त़रह़ आदमी खाना खाने, पानी पीने, अपने आप को दरिया में डुबो देने, आग से जलाने, ख़ाक और कांटों पर लिटाने की क़ुदरत रखता है तो फिर येह सब बातें **अल्लाह** तआ़ला भी अपने लिये कर सकता होगा। इन सूरतों में इन्सान हर त़रह़ ख़ुदाई से हाथ धो बैठेगा क्यूं कि अगर **अल्लाह** तआ़ला येह सब बातें अपने लिये कर सकता हो तो वोह नाक़िस व मोह़ताज हुवा और नाक़िस व मोह़ताज ख़ुदा नहीं हो सकता और अगर न कर सका तो आ़जिज़ ठहरेगा और कमाले क़ुदरत में आदमी से कम हो जाएगा और आ़जिज़ ख़ुदा नहीं हो सकता। जब कि हमारा सच्चा ख़ुदा सब ऐ़बों से और मुह़ाल पर क़ुदरत की तोहमत से पाक और मुनज़्ज़ह है, न कोई मुम्किन उस की क़ुदरत से बाहर है न किसी की क़ुदरत उस की क़ुदरत के हमसर, न अपने लिये किसी ऐ़ब व नक़्स पर क़ादिर होना उस की क़ुद्दूसी शान के लाइक़ है।

नोट : इस मस्अले पर तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये फ़तावा रज़विय्या की 15वीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इन रसाइल का मुत़ालआ़ फ़रमाएं : (1) سُبْحٰنُ السُّبُّوْح عَنْ عَیْبِ کِذْبٍ مَقْبُوْح (झूट जैसे बद तरीन ऐ़ब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पाक होने का बयान)। (2) دَامَانِ بَاغِ سُبْحٰنِ السُّبُّوْح (रिसाला सुब्ह़ानुस्सुब्बूह़ के बाग़ का दामन) (3) اَلْقَمْعُ الْمُبِیْن لِآمَالِ الْمُكَذِّبِیْن (**अल्लाह** तआ़ला के लिये झूट मुम्किन मानने वालों के इस्तिद्लाल का रद)।

فَمَا لَكُمْ فِی الْمُنٰفِقِیْنَ فِئَتَیْنِ وَ اللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِیْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَ مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِیْلًا ﴿۸۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम्हें क्या हुवा कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए और **अल्लाह** ने उन्हें औंधा कर दिया उन के कौतकों के सबब क्या येह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ जिसे **अल्लाह** ने गुमराह किया और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे तो हरगिज़ तू उस के लिये कोई राह न पाएगा।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो तुम्हें क्या हुवा कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गुरौह हो गए ह़ालां कि **अल्लाह** ने उन के आ'माल के सबब उन (के दिलों) को उलटा दिया है। क्या तुम येह चाहते हो कि तुम उसे राह दिखाओ जिसे **अल्लाह** ने गुमराह कर दिया और जिसे **अल्लाह** गुमराह कर दे तो हरगिज़ तू उस के लिये (हिदायत का) रास्ता न पाएगा।

﴿فَمَا لَكُمْ فِی الْمُنٰفِقِیْنَ فِئَتَیْنِ : तो तुम्हें क्या हुवा कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गुरौह हो गए ?﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि मुनाफ़िक़ीन की एक जमाअ़त खुल्लम खुल्ला मुरतद हो कर मुश्रिकीन से जा मिली। उन के बारे में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم के दो गुरौह हो गए। एक फ़िर्क़ा उन को क़त्ल करने पर इसरार कर रहा था और एक उन के क़त्ल से इन्कार करता था। इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई।(1)

और फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो ! तुम्हें क्या हो गया कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गुरौह बन गए ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इरतिदाद और मुश्रिकों के साथ जा मिलने की वज्ह से उन के दिलों को उलटा दिया है, क्या तुम येह चाहते हो कि जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने गुमराह कर दिया उसे हिदायत की राह दिखा दो ! येह मुह़ाल है क्यूं कि जिसे **अल्लाह** तआ़ला गुमराह कर दे तो तुम उस के लिये हिदायत का कोई रास्ता न पाओगे।(2)

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
اَوْلِیَآءَ حَتّٰی یُهَاجِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ
حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِیًّا وَّلَا نَصِیْرًا ۙ﴿۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो येह चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वोह काफ़िर हुए तो तुम सब एक से हो जाओ तो उन में किसी को अपना दोस्त न बनाओ जब तक **अल्लाह** की राह में घरबार न छोड़ें फिर अगर वोह मुंह फेरें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और उन में किसी को न दोस्त ठहराओ न मददगार।

1 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ٨٨، ص٢٤٣.
2 ......روح البيان، النساء، تحت الاية: ٨٨، ٢/٢٥٦.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह तो येह चाहते हैं कि जैसे वोह काफ़िर हुए काश कि तुम भी वैसे ही काफ़िर हो जाओ फिर तुम सब एक जैसे हो जाओ। तो तुम उन में से किसी को अपना दोस्त न बनाओ जब तक वोह **अल्लाह** की राह में हिजरत न करें फिर अगर वोह मुंह फेरें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और उन में किसी को न दोस्त बनाओ और न ही मददगार।

﴿وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا﴾ **: वोह तो येह चाहते हैं कि जैसे वोह काफ़िर हुए काश कि तुम भी वैसे ही काफ़िर हो जाओ।** ﴾ इस से पहली आयात में मुनाफ़िक़ों की अपनी सरकशी का बयान हुवा और इस आयत में उन के कुफ़्रो सरकशी में ह़द से बढ़ने का बयान है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ मुसल्मानो ! जो मुनाफ़िक़ ईमान छोड़ कर कुफ़्रो इरतिदाद की त़रफ़ पलट गए वोह तो येह चाहते हैं कि जैसे वोह काफ़िर हुए काश कि तुम भी वैसे ही काफ़िर हो जाओ फिर तुम सब कुफ़्र में एक जैसे हो जाओ और जब उन का येह ह़ाल है तो तुम उन में से किसी को उस वक़्त तक अपना दोस्त न बनाओ जब तक वोह **अल्लाह** तआ़ला की राह में हिजरत न करें और इस से उन के ईमान का सुबूत न मिल जाए कि उन का ईमान **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये है किसी दुन्यवी मक़्सद के लिये नहीं है, फिर अगर वोह हिजरत करने से मुंह फेरें और कुफ़्र पर क़ाइम रहने को इख़्तियार करें तो ऐ मुसल्मानो ! तुम उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और अगर वोह तुम्हारी दोस्ती का दा'वा करें और दुश्मनों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद के लिये तय्यार हों तो उन की मदद न क़बूल करो क्यूं कि येह भी दुश्मन हैं।[1]

आयत "وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ" से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत से चन्द बातें मा'लूम हुई :

(1)...... दूसरे को काफ़िर करने की कोशिश करना कुफ़्र है।

(2)...... काफ़िर, मुरतद, बद मज़हब को दोस्त बनाना और उन से दिली मह़ब्बत रखना ह़राम है अगर्चे वोह कलिमा पढ़ता हो और अपने को मुसल्मान कहता हो जैसे उस ज़माने के मुनाफ़िक़ थे। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन से इत्तिह़ादो विदाद ह़रामे क़त़्ई

[1]......روح البيان، النساء، تحت الآية: ٨٩، ٢/٢٥٦، خازن، النساء، تحت الآية: ٨٩، ١/٤١١، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

है कुरआने अ़ज़ीम की नुसूस इस की तह़रीम से गूंज रहे हैं और कुछ न हो तो इतना काफ़ी है कि वाह़िदे क़ह्हार फ़रमाता है कि तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा वोह बेशक उन्हीं में से है। وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ (1)[2]

(3)...... दीनी उमूर में मुश्रिक से मदद न ली जाए। ह़ज़रते अबू हुमैद साइदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम मुश्रिकीन से मदद नहीं लेंगे।"[3]

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ۝٩٠

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जो ऐसी क़ौम से अ़लाक़ा रखते हैं कि तुम में उन में मुआ़हदा है या तुम्हारे पास यूं आए कि उन के दिलों में सकत न रही कि तुम से लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें और **अल्लाह** चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर क़ाबू देता तो वोह बेशक तुम से लड़ते फिर अगर वोह तुम से किनारा करें और न लड़ें और सुल्ह़ का पयाम डालें तो **अल्लाह** ने तुम्हें उन पर कोई राह न रखी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मगर (उन लोगों को क़त्ल न करो) जो ऐसी क़ौम से तअ़ल्लुक़ रखते हों कि तुम्हारे और उन के दरमियान (अम्न का) मुआ़हदा हो या तुम्हारे पास इस ह़ाल में आएं कि उन के दिल तुम से लड़ाई करने से तंग आ चुके हों या (तुम्हारे साथ मिल कर) अपने क़ौम से लड़ें और **अल्लाह** अगर चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर मुसल्लत़ कर देता तो वोह बेशक तुम से लड़ते

1 ......مائدہ:٥١.

2 ...... फ़तावा रज़विय्या, 21/229

3 ......مستدرك، كتاب الجهاد، لا نستعين بالمشركين على المشركين، ٢/٤٥٦، الحديث: ٢٦١٠.

www.dawateislami.net

फिर अगर वोह तुम से दूर रहें और न लड़ें और तुम्हारी त़रफ़ सुल्ह़ का पैग़ाम भेजें तो (सुल्ह़ की सूरत में) **अल्लाह** ने तुम्हें उन पर (लड़ाई) का कोई रास्ता नहीं रखा।

﴿اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ﴾ : **मगर जो ऐसी क़ौम से तअ़ल्लुक़ रखते हों।** गुज़श्ता आयत में क़त्ल का हुक्म दिया गया था, अब फ़रमाया जा रहा है कि कुछ लोग इस हुक्म से ख़ारिज हैं, वोह येह हैं :

(1)...... वोह लोग जिन का ऐसी क़ौम से तअ़ल्लुक़ हो जिन से तुम्हारा अम्न का मुआ़हदा हो चुका हो।

(2)...... वोह लोग जो तुम से लड़ाई न करें।

(3)...... वोह लोग जो तुम्हारे साथ मिल कर अपनी क़ौम से लड़ें। इन सब लोगों को क़त्ल करने की इजाज़त नहीं। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपना मज़ीद एह़सान बयान फ़रमाया कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर मुसल्लत़ कर देता तो वोह बेशक तुम से लड़ते और तुम पर ग़ालिब भी आ जाते लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाल दिया और मुसल्मानों को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा।

﴿فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ﴾ : **फिर अगर वोह तुम से दूर रहें।** यहां फ़रमाया कि अगर कुफ़्फ़ार तुम से दूर रहें और न लड़ें बल्कि सुल्ह़ का पैग़ाम भेजें तो इस सूरत में तुम्हें इजाज़त नहीं कि तुम उन से जंग करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि येह आयत मन्सूख़ है और अब इस्लामी सुल्त़ान को सुल्ह़ करने, न करने का इख़्तियार है।[1]

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَ اُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۠﴿۹۱﴾ ع

---

1 ......جمل، النساء، تحت الآية: ٩٠، ٩٩/٢، خازن، النساء، تحت الآية: ٩٠، ٤١٢/١، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो येह चाहते हैं कि तुम से भी अमान में रहें और अपनी क़ौम से भी अमान में रहें जब कभी उन की क़ौम उन्हें फ़साद की त़रफ़ फेरे तो उस पर औंधे गिरते हैं फिर अगर वोह तुम से किनारा न करें और सुल्ह़ की गरदन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और येह हैं जिन पर हम ने तुम्हें सरीह़ इख़्तियार दिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अ़न्क़रीब तुम कुछ दूसरों को पाओगे जो चाहते हैं कि वोह तुम से भी अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें (लेकिन) जब कभी उन्हें फ़ितने की त़रफ़ फेरा जाता है तो उस में औंधे जा पड़ते हैं। फिर अगर वोह तुम से किनारा कशी न करें और तुम्हारे साथ सुल्ह़ न करें और अपने हाथ तुम (से लड़ने) से न रोकें तो तुम उन्हें पकड़ लो और जहां पाओ उन्हें क़त्ल कर दो और येही वोह लोग हैं जिन के ख़िलाफ़ हम ने तुम्हें खुला इख़्तियार दिया है।

﴿سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ : **अ़न्क़रीब तुम कुछ दूसरों को पाओगे**।﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि मदीनए त़य्यिबा में असद व ग़त़फ़ान दो क़बीलों के लोग रियाकारी के त़ौर पर कलिमा पढ़ते और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते और जब उन में से कोई अपनी क़ौम से मिलता और वोह लोग उन से कहते कि तुम किस चीज़ पर ईमान लाए ? तो येह कहते कि बन्दरों बिच्छूओं वग़ैरा पर (या'नी इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते)। इस अन्दाज़ से उन का मत़लब येह था कि दोनों त़रफ़ तअ़ल्लुक़ात रखें और किसी जानिब से उन्हें नुक़्सान न पहुंचे येह लोग मुनाफ़िक़ीन थे, उन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई।[1]

और उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि येह लोग तुम से भी अम्न चाहते हैं और अपनी क़ौम से भी लेकिन ह़क़ीक़त में तुम्हारे साथ नहीं हैं क्यूं कि जब उन्हें किसी फ़ितने मसलन शिर्क या मुसल्मानों से जंग की त़रफ़ बुलाया जाता है तो येह मुसल्मानों के दुश्मनों ही के साथ होते हैं। मज़ीद उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि अगर येह लोग तुम्हारे साथ जंग करने से बाज़ आ कर एक त़रफ़ न हो जाएं और तुम्हारे साथ सुल्ह़ न करें तो उन के कुफ़्र और ग़द्दारी और मुसल्मानों को नुक़्सान पहुंचाने के सबब हम ने तुम्हें उन के क़त्ल करने का खुला इख़्तियार दिया है।

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٩١، ١/٤١٢.

www.dawateislami.net

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ
فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖ وَ
تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ٝ
تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मुसल्मानों को नहीं पहुंचता कि मुसल्मान का ख़ून करे मगर हाथ बहक कर और जो किसी मुसल्मान को ना दानिस्ता क़त्ल करे तो उस पर एक मम्लूक मुसल्मान का आज़ाद करना है और ख़ूं बहा कि मक़्तूल के लोगों को सिपुर्द की जाए मगर येह कि वोह मुआफ़ कर दें फिर अगर वोह उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है और ख़ुद मुसल्मान है, तो सिर्फ़ एक मम्लूक मुसल्मान का आज़ाद करना और अगर वोह उस क़ौम में हो कि तुम में उन में मुआहदा है तो उस के लोगों को ख़ूं बहा सिपुर्द की जाए और एक मुसल्मान मम्लूक आज़ाद करना तो जिस का हाथ न पहुंचे वोह लगातार दो महीने के रोज़े रखे येह **अल्लाह** के यहां उस की तौबा है और **अल्लाह** जानने वाला हिक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं है कि किसी मुसल्मान को क़त्ल करे मगर येह कि ग़लती से हो जाए और जो किसी मुसल्मान को ग़लती से क़त्ल कर दे तो एक मुसल्मान ग़ुलाम को आज़ाद करना और दियत देना लाज़िम है जो मक़्तूल के घर वालों के ह़वाले की जाएगी सिवाए इस के कि वोह मुआफ़ कर दें फिर अगर वोह मक़्तूल तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वोह मक़्तूल ख़ुद मुसल्मान हो तो सिर्फ़ एक मुसल्मान ग़ुलाम का आज़ाद करना लाज़िम है और अगर वोह मक़्तूल उस क़ौम में से हो कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआहदा हो तो उस के घर वालों के ह़वाले दियत की जाए और एक मुसल्मान ग़ुलाम या लौंडी को आज़ाद किया जाए फिर जिसे (ग़ुलाम) न मिले तो दो महीने के मुसल्सल रोज़े (लाज़िम हैं। येह) **अल्लाह** की बारगाह में उस की तौबा है और **अल्लाह** जानने वाला हिक्मत वाला है।

www.dawateislami.net

﴾وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا﴿ : **और किसी मुसल्मान के लिये दूसरे मुसल्मान को क़त्ल करना जाइज़ नहीं ।** येह आयते मुबारका अ़य्याश बिन रबीआ़ मख़्ज़ूमी के बारे में नाज़िल हुई। इन का वाक़िआ़ यूं है कि वोह हिजरत से पहले मक्कए मुकर्रमा में मुसल्मान हो गए और घर वालों के ख़ौफ़ से मदीनए तृय्यिबा जा कर पनाह गुज़ीं हो गए। उन की मां को इस से बहुत बे क़रारी हुई और उस ने ह़ारिस और अबू जह्ल अपने दोनों बेटों से जो अ़य्याश के सोतेले भाई थे येह कहा कि ख़ुदा की क़सम न मैं साए में बैठूंगी और न खाना चखूंगी और न पानी पियूंगी जब तक तुम अ़य्याश को मेरे पास न ले कर आओ। वोह दोनों ह़ारिस बिन ज़ैद को साथ ले कर तलाश के लिये निकले और मदीनए तृय्यिबा पहुंच कर अ़य्याश को पा लिया और उन को मां के जज़अ़ फ़ज़अ़ करने, बे क़रारी और खाना पीना छोड़ने की ख़बर सुनाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर येह अ़ह्द किया कि हम दीन के मुतअ़ल्लिक़ तुझ से कुछ न कहेंगे, बस तुम मक्कए मुकर्रमा चलो। इस त़रह़ वोह अ़य्याश को मदीने से निकाल लाए और मदीने से बाहर आ कर उस को बांधा और हर एक ने सो सो कोड़े मारे फिर मां के पास लाए तो मां ने कहा मैं तेरी मुश्कें न खोलूंगी जब तक तू अपना दीन तर्क न करेगा, फिर अ़य्याश को धूप में बंधा हुवा डाल दिया और इन मुसीबतों में मुब्तला हो कर अ़य्याश ने उन का कहा मान लिया और अपना दीन तर्क कर दिया। इस पर ह़ारिस बिन ज़ैद ने अ़य्याश को मलामत की और कहा तू इस्लाम पर था, अगर येह ह़क़ था तो तू ने ह़क़ को छोड़ दिया और अगर बात़िल था तो तू बात़िल दीन पर रहा। येह बात अ़य्याश को बड़ी ना गवार गुज़री और अ़य्याश ने ह़ारिस से कहा कि मैं तुझे अकेला पाऊंगा तो ख़ुदा की क़सम, ज़रूर तुम्हें क़त्ल कर दूंगा इस के बा'द अ़य्याश इस्लाम ले आए और उन्हों ने मदीनए तृय्यिबा हिजरत कर ली और इन के बा'द ह़ारिस भी इस्लाम ले आए और वोह भी हिजरत कर के रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंच गए लेकिन उस रोज़ अ़य्याश मौजूद न थे और न उन्हें ह़ारिस के इस्लाम की इत्त़िलाअ़ हुई। क़ुबा शरीफ़ के क़रीब अ़य्याश ने ह़ारिस को देख लिया और क़त्ल कर दिया तो लोगों ने कहा, ऐ अ़य्याश! तुम ने बहुत बुरा किया, ह़ारिस इस्लाम ला चुके थे। इस पर अ़य्याश को बहुत अफ़्सोस हुवा और उन्हों ने रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया और कहा कि मुझे क़त्ल के वक़्त तक उन के इस्लाम की ख़बर ही न हुई इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई और कफ़्फ़ारे की सूरत बयान की गई।(1)

1 ......بغوی، النساء، تحت الآية: ٩٢، ١/٣٦٨.

www.dawateislami.net

﴿وَمَنْ قَتَلَ﴾ : **और जो क़त्ल करे ।** यहां आयत में क़त्ल की चार सूरतों का बयान है और फिर तीन सूरतों में कफ़्फ़ारे का बयान है ।

पहली सूरत येह कि मुसल्मान का किसी दूसरे मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करना ह़राम है ।

दूसरी सूरत येह कि कोई मुसल्मान किसी दूसरे मुसल्मान को ग़लती से क़त्ल कर दे जैसे शिकार को मार रहा हो मगर गोली मुसल्मान को लग जाए या किसी को ह़र्बी काफ़िर समझ कर मारा लेकिन क़त्ल के बा'द मा'लूम हुवा कि मक़्तूल तो मुसल्मान है । इस सूरत में क़ातिल पर एक ग़ुलाम या लौंडी को आज़ाद करना लाज़िम है और इस के साथ वोह दियत भी अदा करेगा जो मक़्तूल के वारिसों को दी जाएगी और वोह उसे मीरास की त़रह़ तक़्सीम कर लें । दियत मक़्तूल के तर्के के हुक्म में है, इस से मक़्तूल का क़र्ज़ा भी अदा किया जाएगा और वसिय्यत भी पूरी की जाएगी । हां अगर मक़्तूल के वुरसा दियत मुआफ़ कर दें तो वोह मुआफ़ हो जाएगी ।

तीसरी सूरत येह है कि अगर वोह मक़्तूल दुश्मन क़ौम से हो लेकिन वोह मक़्तूल बज़ाते ख़ुद मुसल्मान हो तो सिर्फ़ एक मुसल्मान ग़ुलाम का आज़ाद करना लाज़िम है और दियत वग़ैरा कुछ लाज़िम न होगी ।

चौथी सूरत येह है कि अगर मक़्तूल ज़िम्मी हो या मुसल्मान हुकूमत की इजाज़त से मुसल्मान मुल्क में आया हो जिसे मुस्तामन कहते हैं तो उस को क़त्ल करने की सूरत में उस के घर वालों को दियत दी जाएगी और एक मुसल्मान ग़ुलाम या लौंडी को आज़ाद किया जाएगा अलबत्ता अगर ग़ुलाम लौंडी न मिले जैसे हमारे ज़माने में ग़ुलाम लौंडी हैं ही नहीं तो फिर दो महीने के मुसल्सल रोज़े रखे जाएंगे । येह याद रहे कि क़त्ले ख़त़ा के कफ़्फ़ारे में काफ़िर ग़ुलाम आज़ाद न किया जाएगा । बाक़ी कफ़्फ़ारात में ह़नफ़ी मज़्हब में हर त़रह़ का ग़ुलाम आज़ाद कर सकते हैं जैसे रोज़े का या ज़िहार का कफ़्फ़ारा हो ।

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और **अल्लाह** ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब ।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो किसी मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उस का बदला जहन्नम है अ़र्सए दराज़ तक उस में रहेगा और **अल्लाह** ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

﴿وَمَنْ يَّقْتُلْ﴾ : **और जो क़त्ल करे।** ﴾ इस से पहली आयत में ग़लती से किसी मुसल्मान को क़त्ल कर देने का हुक्म बयान किया गया और इस आयत में जान बूझ कर किसी मुसल्मान को क़त्ल करने की उख़रवी वईद बयान की गई है।[(1)]

मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करने की मज़म्मत

किसी मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल करना शदीद तरीन कबीरा गुनाह है और कसीर अहादीस में इस की बहुत मज़म्मत बयान की गई है, उन में से 4 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बड़े कबीरा गुनाहों में से एक किसी जान को (नाहक़) क़त्ल करना है।[(2)]

(2)...... किसी मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करने वाला क़ियामत के दिन बड़े ख़सारे का शिकार होगा। हज़रते अबू बकरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर ज़मीनो आस्मान वाले किसी मुसल्मान के क़त्ल पर जम्अ़ हो जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला सब को औंधे मुंह जहन्नम में डाल दे।''[(3)]

(3)...... हज़रते अबू बकरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब दो मुसल्मान अपनी तलवारों से लड़ें तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में जाएंगे। रावी फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : मक़्तूल जहन्नम में क्यूं जाएगा ? इर्शाद फ़रमाया : इस लिये कि वोह अपने साथी को क़त्ल करने पर मुसिर था।[(4)]

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने किसी मोमिन के क़त्ल पर एक हर्फ़ जितनी भी मदद की तो वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में इस हाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा **''येह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रह़मत से मायूस है।''**[(5)]

1 ......تفسیر کبیر، النساء، تحت الآیۃ: ۹۳، ۱۸۲/۴.
2 ......بخاری، کتاب الدیات، باب قول اللّٰہ تعالٰی: ومن احیاھا، ۳۵۸/۴، الحدیث: ۶۸۷۱.
3 ......معجم صغیر، باب العین، من اسمہ علی، ص ۲۰۵ ، الجزء الاول.
4 ......بخاری، کتاب الایمان، باب وان طائفتان من المؤمنین اقتتلوا... الخ، ۲۳/۱، الحدیث: ۳۱.
5 ......ابن ماجہ، کتاب الدیات، باب التغلیظ فی قتل مسلم ظلماً، ۲۶۲/۳، الحدیث: ۲۶۲۰.

www.dawateislami.net

अफ़्सोस कि आज कल क़त्ल करना बड़ा मा'मूली काम हो गया है छोटी छोटी बातों पर जान से मार देना, ग़ुन्डा गर्दी, दहशत गर्दी, डकैती, ख़ानदानी लड़ाई, तअ़स्सुब वाली लड़ाइयां आ़म हैं। मुसल्मानों का ख़ून पानी की त़रह़ बहाया जाता है, ग्रूप और जथ्थे और अ़स्करी विंग बने हुए हैं जिन का काम ही क़त्लो ग़ारत गरी करना है।

मुसल्मानों का बाहमी तअ़ल्लुक़ कैसा होना चाहिये ?

एक मुसल्मान का दूसरे मुसल्मान से तअ़ल्लुक़ कैसा होना चाहिये, इस बारे में 5 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दीगर मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें।[(1)]

(2)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये भी वोही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।[(2)]

(3)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान मुसल्मान का भाई है। न उस पर ज़ुल्म करे न उसे ह़क़ीर जाने। तक़्वा यहां है और अपने सीने की त़रफ़ तीन बार इशारा फ़रमाया। इन्सान के लिये येह बुराई काफ़ी है कि अपने मुसल्मान भाई को ह़क़ीर जाने। मुसल्मान पर मुसल्मान की हर चीज़ ह़राम है, उस का ख़ून, उस का माल, उस की आबरू।[(3)]

(4)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह हम में से नहीं जो हमारे छोटों पर रह़्म न करे और हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न करे और अच्छी बातों का हुक्म न दे और बुरी बातों से मन्अ़ न करे।[(4)]

(5)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है।[(5)]

---

1 ......بخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من سلم المسلمون... الخ، ۱/۱۵، الحدیث: ۱۰.

2 ......بخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحبّ لاخیہ... الخ، ۱/۱۶، الحدیث: ۱۳.

3 ......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تحریم ظلم المسلم وخذلہ... الخ، ص۱۳۸۶، الحدیث: ۳۲(۲۵۶۴).

4 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی رحمة الصبیان، ۳/۳۶۹، الحدیث: ۱۹۲۸.

5 ......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم: سباب المسلم... الخ، ص۵۲، الحدیث: ۱۱۶(۶۴).

www.dawateislami.net

मुसल्मान को क़त्ल करना कैसा है ?

अगर मुसल्मानों के क़त्ल को ह़लाल समझ कर इस का इरतिकाब किया तो येह ख़ुद कुफ़्र है और ऐसा शख़्स हमेशा जहन्नम में रहेगा और क़त्ल को ह़राम ही समझा लेकिन फिर भी इस का इरतिकाब किया तब येह गुनाहे कबीरा है और ऐसा शख़्स मुद्दते दराज़ तक जहन्नम में रहेगा। आयत में "خَالِدًا" का लफ़्ज़ है इस का एक मा'ना हमेशा होता है और दूसरा मा'ना अ़र्सए दराज़ होता है यहां दूसरे मा'ना में मज़्कूर है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब तुम जिहाद को चलो तो तह़क़ीक़ कर लो और जो तुम्हें सलाम करे उस से येह न कहो कि तू मुसल्मान नहीं तुम जीती दुन्या का अस्बाब चाहते हो तो **अल्लाह** के पास बहुतेरी ग़नीमतें हैं पहले तुम भी ऐसे ही थे फिर **अल्लाह** ने तुम पर एह़सान किया तो तुम पर तह़क़ीक़ करना लाज़िम है बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जब तुम **अल्लाह** के रास्ते में चलो तो ख़ूब तह़क़ीक़ कर लिया करो और जो तुम्हें सलाम करे उसे येह न कहो कि तू मुसल्मान नहीं। तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान चाहते हो पस **अल्लाह** के पास बहुत से ग़नीमत के माल हैं। पहले तुम भी ऐसे ही थे तो **अल्लाह** ने तुम पर एह़सान किया तो ख़ूब तह़क़ीक़ कर लो बेशक **अल्लाह** तमाम आ'माल से ख़बरदार है।

﴿اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا﴾ **: जब तुम अल्लाह के रास्ते में चलो तो ख़ूब तह़क़ीक़ कर लिया करो।** इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल कुछ इस त़रह़ है कि मिरदास बिन नहीक जो फ़िदक के रहने वाले थे और उन के सिवा उन की क़ौम का कोई शख़्स इस्लाम न लाया

www.dawateislami.net

था, इस क़ौम को ख़बर मिली कि लश्करे इस्लाम इन की त़रफ़ आ रहा है तो क़ौम के सब लोग भाग गए मगर मिरदास ठहरे रहे। जब इन्हों ने दूर से लश्कर को देखा तो इस ख़याल से कि कहीं कोई ग़ैर मुस्लिम जमाअ़त न हो येह पहाड़ की चोटी पर अपनी बकरियां ले कर चढ़ गए। जब लश्कर आया और इन्हों ने **अल्लाहु अक्बर** के ना'रों की आवाज़ें सुनीं तो येह ख़ुद भी तक्बीर पढ़ते हुए उतर आए और कहने लगे : **لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ،السّلام علیکم** । मुसल्मानों ने ख़याल किया कि अहले फ़िदक तो सब काफ़िर हैं येह शख़्स धोका देने के लिये ईमान का इज़्हार कर रहा है। इस ख़याल से ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को क़त्ल कर दिया और बकरियां ले आए। जब ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर हो कर तमाम माजरा अ़र्ज़ किया तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निहायत रन्ज हुवा और फ़रमाया तुम ने उस के सामान के सबब उस को क़त्ल कर दिया। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि मक़्तूल की बकरियां उस के अहले ख़ाना को वापस कर दो।[1]

येह रिवायत अल्फ़ाज़ के कुछ फ़र्क़ के साथ बुख़ारी और दीगर कुतुबे ह़दीस में भी मौजूद है। यहां इसी के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया जा रहा है कि ऐ ईमान वालो ! जब तुम **अल्लाह** तआ़ला के रास्ते में चलो तो ख़ूब तह़क़ीक़ कर लिया करो और जो तुम्हें सलाम करे या जिस में इस्लाम की अ़लामत व निशानी पाओ तो उस से हाथ रोक लो और जब तक उस का कुफ़्र साबित न हो जाए उस पर हाथ न डालो और उसे येह न कहो कि तू मुसल्मान नहीं। अबू दावूद और तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस में है कि नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब कोई लश्कर रवाना फ़रमाते तो हुक्म देते कि अगर तुम कोई मस्जिद देखो या अज़ान सुनो तो क़त्ल न करना।[2]

﴿كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ : **पहले तुम भी ऐसे ही थे।**﴾ मुसल्मानों को समझाने के लिये मज़ीद फ़रमाया कि पहले तुम भी ऐसे ही थे या'नी जब तुम इस्लाम में दाख़िल हुए थे तो तुम्हारी ज़बान से कलिमए शहादत सुन कर तुम्हारे जानो माल मह़फ़ूज़ कर दिये गए थे और तुम्हारा इज़्हारे ईमान बे ए'तिबार न क़रार दिया गया था ऐसा ही इस्लाम में दाख़िल होने वालों के साथ तुम्हें भी सुलूक करना चाहिये और येह तुम पर **अल्लाह** तआ़ला का एह़सान है कि तुम्हें इस्लाम पर

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ٩٤، ١/٤١٧.

2 ......ابو داؤد، كتاب الجهاد، باب فى دعاء المشركين، ٣/٦٠، الحديث: ٢٦٣٥، ترمذى، كتاب السير، ٢-باب، ٣/١٩٤، الحديث: ١٥٥٤.

www.dawateislami.net

इस्तिक़ामत बख़्शी और तुम्हारा मोमिन होना मश्हूर किया, लिहाज़ा ख़ूब तह्क़ीक़ कर लिया करो कि कहीं तुम्हारे हाथों कोई ईमानदार क़त्ल न हो। मा'लूम हुवा कि जो मुसल्मान काफ़िरों में रहता हो और उस के ईमान की मुसल्मानों को ख़बर न हो तो उस के क़त्ल से न कफ़्फ़ारा वाजिब होगा और न दियत। याद रहे कि पिछली आयत में वोह सूरत मज़्कूर हुई जहां मुसल्मान का इस्लाम सब को मा'लूम हो मगर अंधेरे वग़ैरा की वज्ह से पता न लगे और मुसल्मानों के हाथ से मारा जाए और इस आयत में वोह सूरत बयान हुई है जिस में मुसल्मान का ईमान किसी को मा'लूम नहीं। लिहाज़ा इन दोनों आयात में तआ़रुज़ नहीं।

لَا یَسْتَوِی الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ غَیْرُ اُولِی الضَّرَرِ وَ الْمُجٰهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِیْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ عَلَی الْقٰعِدِیْنَ دَرَجَةً ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰی ؕ وَ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِیْنَ عَلَی الْقٰعِدِیْنَ اَجْرًا عَظِیْمًا ۙ﴿۹۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बराबर नहीं वोह मुसल्मान कि बे उ़ज़्र जिहाद से बैठ रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं **अल्लाह** ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद वालों का दरजा बैठने वालों से बड़ा किया और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया और **अल्लाह** ने जिहाद वालों को बैठने वालों पर बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उ़ज़्र वालों के इ़लावा जो मुसल्मान जिहाद से बैठे रहे वोह और **अल्लाह** की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करने वाले बराबर नहीं। अपनी जानों और मालों के साथ जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर **अल्लाह** ने दरजे के ए'तिबार से फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया है और **अल्लाह** ने जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर बहुत बड़े अज्र की फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है।

www.dawateislami.net

﴿لَا يَسْتَوِی الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ غَیْرُ اُولِی الضَّرَرِ﴾ : **उ़ज़्र वालों के इलावा जो मुसलमान जिहाद से बैठे रहे वोह बराबर नहीं ।** इस आयत में जिहाद की तरग़ीब है कि बैठ रहने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं बल्कि मुजाहिदीन के लिये बड़े दरजातो सवाब हैं, और येह मस्अला भी साबित होता है कि जो लोग बीमारी या बुढ़ापे या ना त़ाक़ती या ना बीनाई या हाथ पाउं के नाकारा होने और उ़ज़्र की वज्ह से जिहाद में ह़ाज़िर न हों वोह फ़ज़ीलत से मह़रूम न किये जाएंगे जब कि अच्छी निय्यत रखते हों । बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि जब इस आयत का पहला हिस्सा नाज़िल हुवा कि मुजाहिदीन और ग़ैरे मुजाहिदीन बराबर नहीं तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो नाबीना सह़ाबी थे अ़र्ज़ करने लगे कि **"या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं नाबीना हूं, जिहाद में क्यूंकर जाऊं ?" इस पर आयत "غَیْرُ اُولِی الضَّرَرِ" नाज़िल हुई या'नी मा'ज़ूरों को मुस्तस्ना कर दिया गया ।[1]

और बुख़ारी शरीफ़ में ही ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ग़ज़्वए तबूक से वापसी के वक़्त) फ़रमाया : कुछ लोग मदीने में रह गए हैं हम किसी घाटी या आबादी में नहीं चलते मगर वोह हमारे साथ होते हैं, उन्हें उ़ज़्र ने रोक लिया है ।[2]

निय्यत की अ़ज़मत और जिहाद का सवाब

इस से मा'लूम हुवा कि निय्यत बहुत अ़ज़ीम अ़मल है कि ह़क़ीक़तन अ़मल किये बिग़ैर भी सच्ची निय्यत होने की सूरत में सवाब मिल जाता है । हां येह है जो उ़ज़्र की वज्ह से जिहाद में ह़ाज़िर न हो सके अगर्चे वोह निय्यत का सवाब पाएंगे लेकिन जिहाद करने वालों को अ़मल की फ़ज़ीलत इस से ज़ियादा ह़ासिल है । राहे ख़ुदा में जानो माल ख़र्च करने की कितनी अ़ज़ीम फ़ज़ीलत है इस के लिये ज़ैल की 4 अह़ादीस को मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

(1)...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, लोगों में से कौन सा शख़्स अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की राह में अपने माल और जान के

1 ......بخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب قول اللّٰہ: لا یستوی القاعدون... الخ، ۲/۲۶۳، الحدیث: ۲۸۳۲.

2 ......بخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب من حبسہ العذر عن الغزو، ۲/۲۶۵، الحدیث: ۲۸۳۹.

www.dawateislami.net

साथ जिहाद करता है।''(1)

(2)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : क्या **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद के बराबर भी कोई इबादत है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने सुवाल फिर दोहराया, या तीन बार पूछा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर बार फ़रमाया कि तुम इस की त़ाक़त नहीं रखते। तीसरी बार फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करने वाला जिहाद से वापसी तक उस शख़्स की त़रह़ है जो रोज़ेदार हो, क़ियाम करने वाला हो, **अल्लाह** तआ़ला की आयतों पर अ़मल करने वाला हो, रोज़े और नमाज़ से थकता या उक्ताता न हो।(2)

(3)...... हज़रते ख़ुरैम बिन फ़ातक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने **अल्लाह** तआ़ला की राह में कुछ ख़र्च किया उस के लिये सात सो गुना सवाब लिखा जाता है।''(3)

(4)...... हज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** तआ़ला की राह में (निकल कर) ज़िक्र करने का सवाब माल ख़र्च करने से सात लाख गुना ज़ियादा है।''(4)

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ ع ١٠ ٣

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस की त़रफ़ से दरजे और बख़्शिश और रह़मत और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस की त़रफ़ से बहुत से दरजात और बख़्शिश और रह़मत (है) और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿دَرَجٰتٍ مِّنْهُ : **उस की त़रफ़ से बहुत से दरजात** ﴾ इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मुजाहिदीन का अज्र बयान फ़रमाया कि इन के लिये **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से जन्नत के बहुत से दरजात, इन के गुनाहों की बख़्शिश और जन्नत की ने'मतें हैं और **अल्लाह** तआ़ला

1 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب افضل الناس مؤمن یجاهد بنفسه... الخ، ۲/۲۴۹، الحدیث: ۲۷۸۶.

2 ......مسلم، کتاب الامارة، باب فضل الشهادة فی سبیل اللّٰه تعالٰی، ص۱۰۴۴، الحدیث: ۱۱۰(۱۸۷۸).

3 ......ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ما جاء فی فضل النفقة فی سبیل اللّٰه، ۳/۲۳۳، الحدیث: ۱۶۳۱.

4 ......مسند امام احمد، مسند المکیین، حدیث معاذ بن انس الجهنی رضی اللّٰه تعالٰی عنه، ۵/۳۱۴، الحدیث: ۱۵۶۴۷.

www.dawateislami.net

जिहाद करने वालों को बख़्शने वाला और इन पर मेहरबान है।[1]

जन्नत में मुजाहिदीन के दरजात और मुजाहिदीन की बख़्शिश

अह़ादीस में मुजाहिदीन के जन्नती दरजात के बारे में तफ़्सील बयान की गई है, चुनान्चे इस से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला ने मुजाहिदीन के लिये जन्नत में सो दरजे मुहय्या फ़रमाए, हर दो दरजों में इतना फ़ासिला होगा जितना आस्मान व ज़मीन के दरमियान है।''[2]

(2)...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू सईद ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हो गया उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।'' मुझे येह बात अच्छी लगी तो अ़र्ज़ करने लगे : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इस बात को दोबारा इर्शाद फ़रमाएं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा इसी त़रह़ फ़रमाया, फिर इर्शाद फ़रमाया : ''एक बात और भी है जिस की वज्ह से बन्दे के सो दरजात बुलन्द होते हैं और हर दो दरजों के दरमियान ज़मीन व आस्मान जितना फ़ासिला है।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, वोह दरजा किस चीज़ से मिलता है ? इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करने से, **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करने से।''[3]

(3)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करे और उस का घर से निकलना सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करने और उस के दीन की तस्दीक़ की ख़ातिर हो तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये इस बात का ज़ामिन हो जाता है कि (अगर वोह शहीद हो गया तो) उस को जन्नत में दाख़िल करेगा या अज्र और ग़नीमत के साथ उस को उस के मस्कन में वापस कर देगा जहां से वोह रवाना हुवा था।[4]

---

1 ......تفسیر سمرقندی، النساء، تحت الآیۃ: ۹۶، ۱/۳۸۰.

2 ......بخاری، کتاب الجھاد والسیر، باب درجات المجاھدین فی سبیل اللّٰہ... الخ، ۲/۲۵۰، الحدیث: ۲۷۹۰.

3 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان ماأعدّ اللّٰہ تعالٰی للمجاھد فی الجنّۃ من الدرجات، ص۱۰۴۵، الحدیث: ۱۱۶(۱۸۸۴).

4 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجھاد والخروج فی سبیل اللّٰہ، ص۱۰۴۲، الحدیث: ۱۰۴(۱۸۷۶).

www.dawateislami.net

اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓىٕكَةُ ظَالِمِیْۤ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِیْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا
كُنَّا مُسْتَضْعَفِیْنَ فِی الْاَرْضِ ؕ قَالُوْۤا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً
فَتُهَاجِرُوْا فِیْهَا ؕ فَاُولٰٓىٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِیْرًا ۙ﴿۹۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जिन की जान फ़िरिश्ते निकालते हैं इस ह़ाल में कि वोह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे उन से फ़िरिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते हैं हम ज़मीन में कमज़ोर थे कहते हैं क्या **अल्लाह** की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते तो ऐसों का ठिकाना जहन्नम है और बहुत बुरी जगह पलटने की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन की जान फ़िरिश्ते इस ह़ाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले होते हैं उन से (फ़िरिश्ते) कहते हैं : तुम किस ह़ाल में थे ? वोह कहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे। तो फ़िरिश्ते कहते हैं : क्या **अल्लाह** की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत कर जाते ? तो येह वोह लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है और वोह कितनी बुरी लौटने की जगह है।

﴾ظَالِمِیْۤ اَنْفُسِهِمْ : **अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले।**﴿ येह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने कलिमए इस्लाम तो ज़बान से अदा किया मगर जिस ज़माने में हिजरत फ़र्ज़ थी उस वक़्त हिजरत न की और जब मुश्रिकीन जंगे बद्र में मुसल्मानों के मुक़ाबले के लिये गए तो येह लोग उन के साथ हुए और कुफ़्फ़ार के साथ ही मारे भी गए।[1]

इस आयत का ख़ुलासा येह है कि बेशक वोह लोग जिन की रूह़ फ़िरिश्ते इस ह़ाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वोह फ़र्ज़ हिजरत तर्क कर के और काफ़िरों का साथ दे कर अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले होते हैं, उन की मौत के वक़्त फ़िरिश्ते उन्हें झिड़क्ते हुए कहते हैं : तुम अपने

1 ......بخاری ، کتاب التفسیر ، باب انّ الذین توفّاھم الملائکۃ... الخ ، ۳/۲۰۹ ، الحدیث: ۴۵۹۶، سنن الکبری للبیھقی، کتاب السیر، باب فرض الھجرۃ، ۹/۲۲، الحدیث: ۱۷۷۴۹.

www.dawateislami.net

दीन के मुआ़मले में किस ह़ाल में थे ? वोह उ़ज़्र पेश करते हुए कहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोर लोग थे और (काफ़िरों की सर ज़मीन में रहने की वज्ह से) दीन के अह़काम पर अ़मल करने से आ़जिज़ थे। तो फ़िरिश्ते उन का उ़ज़्र रद करते और उन्हें डांटते हुए कहते हैं : क्या **अल्लाह** तआ़ला की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम कुफ़्र की सर ज़मीन से ऐसी जगह हिजरत कर के चले जाते जहां तुम दीन के अह़काम पर अ़मल कर सकते ? तो जिन लोगों के बुरे अह़वाल यहां बयान हुए येह वोह लोग हैं जिन का आख़िरत में ठिकाना जहन्नम है और वोह कितनी बुरी लौटने की जगह है।(1)

हिजरत कब वाजिब है

इस आयत से साबित हुवा कि जो शख़्स किसी शह्र में अपने दीन पर क़ाइम न रह सकता हो और येह जाने कि दूसरी जगह जाने से अपने फ़राइज़े दीनी अदा कर सकेगा उस पर हिजरत वाजिब हो जाती है। इस हुक्म को सामने रख कर काफ़िरों के दरमियान रहने वाले बहुत से मुसल्मानों को ग़ौर करने की ह़ाजत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। ह़दीस में है जो शख़्स अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल हुवा अगर्चे एक बालिश्त ही क्यूं न हो उस के लिये जन्नत वाजिब हुई और उस को ह़ज़रते इब्राहीम और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त मुयस्सर होगी।(2)

हिजरत की अक़्साम और इन के अह़काम

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हिजरत की अक़्साम बयान फ़रमाई हैं उन में से एक क़िस्म कि दारुल इस्लाम से हिजरत हो, इस बारे में फ़रमाते हैं :

रहा दारुल इस्लाम, इस से हिजरते आ़म्मा ह़राम है कि इस में मसाजिद की वीरानी व बे हुरमती, क़ुबूरे मुस्लिमीन की बरबादी, औ़रतों बच्चों और ज़ईफ़ों की तबाही होगी और हिजरते ख़ास्सा में तीन सूरतें हैं,

(1)...... अगर कोई शख़्स किसी ख़ास वज्ह से किसी ख़ास मक़ाम में अपने दीनी फ़राइज़ बजा न ला सके और दूसरी जगह उन्हें बजा लाना मुम्किन हो तो अगर येह ख़ास इसी मकान में है

1 ......جلالين، النساء، تحت الآية: ٩٧، ص ٨٥، روح البيان، النساء، تحت الآية: ٩٧، ٢/٢٦٨-٢٦٩، ملتقطاً.
2 ......تفسير سمرقندى، العنكبوت، تحت الآية: ٥٦، ٢/٥٤٢.

www.dawateislami.net

तो उस पर फ़र्ज़ है कि येह मकान छोड़ कर दूसरे मकान में चला जाए, और अगर इस महल्ले में मा'ज़ूर हो तो दूसरे महल्ले में चला जाए और इस शहर में मजबूर हो तो दूसरे शहर में चला जाए।

(2)...... यहां अपने मज़्हबी फ़राइज़ बजा लाने से आ़जिज़ नहीं और और इस के ज़ईफ़ मां या बाप या बीवी या बच्चे जिन का नफ़क़ा इस पर फ़र्ज़ है वोह न जा सकेंगे या न जाएंगे और इस के चले जाने से वोह बे वसीला रह जाएंगे तो इस को दारुल इस्लाम से हिजरत करना ह़राम है,

ह़दीस में है : किसी आदमी के गुनहगार होने के लिये इतना काफ़ी है कि वोह उसे ज़ाएअ़ कर दे जिस का नफ़क़ा उस के ज़िम्मे था।

या वोह आ़लिम जिस से बढ़ कर उस शहर में आ़लिम न हो उसे भी वहां से हिजरत करना ह़राम है।

(3)...... न फ़राइज़ से आ़जिज़ है न इस की यहां ह़ाजत है, उसे इख़्तियार है कि यहां रहे या चला जाए, जो उस की मस्लह़त से हो वोह कर सकता है, येह तफ़्सील दारुल इस्लाम में है।[1]

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِیْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ حِیْلَةً وَّ لَا یَهْتَدُوْنَ سَبِیْلًا ﴿۹۸﴾ فَاُولٰٓىٕكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّعْفُوَ عَنْهُمْؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जो दबा लिये गए मर्द और औ़रतें और बच्चे जिन्हें न कोई तदबीर बन पड़े न रास्ता जानें तो क़रीब है कि **अल्लाह** ऐसों को मुआ़फ़ फ़रमाए और **अल्लाह** मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मगर वोह मजबूर मर्द और औ़रतें और बच्चे जो न तो कोई तदबीर करने की त़ाक़त रखते हों और न रास्ता जानते हों। तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन लोगों से दर गुज़र फ़रमाएगा और **अल्लाह** मुआ़फ़ फ़रमाने वाला, बख़्शने वाला है।

1...... फ़तावा रज़विय्या, 14/131, 132 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

﴿ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ ﴾ : **मगर वोह मजबूर मर्द और औ़रतें और बच्चे ।** इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि वोह मजबूर मर्द और औ़रतें और बच्चे जो न हिजरत करने की त़ाक़त रखते हों, न उन के पास अख़्राजात हों और न ही वोह हिजरत गाह का रास्ता जानते हों तो ऐसे आ़जिज़ और मजबूर लोग हिजरत न करने पर क़ाबिले गिरिफ़्त नहीं, अ़न्क़रीब **अल्लाह** तआ़ला उन लोगों से दर गुज़र फ़रमाएगा और **अल्लाह** तआ़ला की शान येह है कि वोह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला, बख़्शने वाला है ।(1)

وَمَنْ یُّهَاجِرْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ یَجِدْ فِی الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِیْرًا وَّ سَعَةً ؕ
وَ مَنْ یَّخْرُجْ مِنْۢ بَیْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ یُدْرِكْهُ الْمَوْتُ
فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۠ ﴿۱۰۰﴾

ع ١٤

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में घरबार छोड़ कर निकलेगा वोह ज़मीन में बहुत जगह और गुन्जाइश पाएगा और जो अपने घर से निकला **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** की राह में हिजरत करे तो वोह ज़मीन में बहुत जगह और गुन्जाइश पाएगा और जो अपने घर से **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ हिजरत करते हुए निकला फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया और **अल्लाह** बख़्शने वाला, मेह्रबान है ।

﴿ وَمَنْ یُّهَاجِرْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ﴾ : **और जो अल्लाह की राह में हिजरत करे ।** **शाने नुज़ूल :** इस से पहली आयत जब नाज़िल हुई तो ह़ज़रते जुन्दअ़ बिन ज़मरह अल्लैसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इसे सुना, येह बहुत बूढ़े शख़्स थे, कहने लगे कि मैं मुस्तस्ना लोगों में तो हूं नहीं क्यूं कि मेरे पास इतना माल है कि जिस से मैं मदीनए त़य्यिबा हिजरत कर के पहुंच सकता हूं । ख़ुदा की क़सम, अब मैं मक्कए मुकर्रमा में एक रात न ठहरूंगा, मुझे ले चलो चुनान्चे इन को चारपाई पर ले कर चले

1 ......جلالين، النساء، تحت الآية: ٩٨، ص ٨٥، روح البيان، النساء، تحت الآية: ٩٧، ٢/٢٦٩، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

लेकिन मक्कए मुकर्रमा के बिल्कुल क़रीब ही मक़ामे तन्ईम में आ कर इन का इन्तिक़ाल हो गया। आख़िरी वक़्त इन्हों ने अपना दायां हाथ बाएं हाथ पर रखा और कहा, या रब ! عَزَّوَجَلَّ, येह तेरा है और येह तेरे रसूल का है, मैं उस चीज़ पर बैअ़त करता हूं जिस पर तेरे रसूल ने बैअ़त ली। سُبْحٰنَ اللّٰه ! येह ख़बर पा कर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने फ़रमाया, काश वोह मदीने पहुंचते तो उन का अज्र कितना बड़ा होता और मुश्रिक हंसने लगे और कहने लगे कि जिस मत़लब के लिये निकले थे वोह न मिला। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।(1)

और इन की अ़ज़्मतो शान को बेहतरीन अन्दाज़ में बयान फ़रमाया कि जो राहे ख़ुदा में हिजरत करे फिर उसे मन्ज़िल तक पहुंचने से पहले मौत आ जाए तो उस का अज्र **अल्लाह** करीम के वा'दे और उस के फ़ज़्लो करम से उस के ज़िम्मए करम पर है, यूं नहीं कि उस पर बत़ौरे मुआ़वज़ा वाजिब है क्यूं कि इस त़ौर पर कोई चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान इस से बुलन्द है।

नेकी का इरादा कर के नेकी करने से आ़जिज़ हो जाने वाला उस नेकी का सवाब पाएगा

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि जो कोई नेकी का इरादा करे और उस को पूरा करने से आ़जिज़ हो जाए वोह उस नेकी का सवाब पाएगा। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स ने नेकी का इरादा किया और नेकी नहीं की तो उस की एक नेकी लिख दी जाती है और जिस ने नेकी का इरादा किया और नेकी कर ली तो उस के लिये दस से ले कर सात सो गुना तक नेकियां लिख दी जाती हैं और जिस ने गुनाह का इरादा किया और उस पर अ़मल नहीं किया तो उस का गुनाह नहीं लिखा जाता और अगर वोह गुनाह कर ले तो एक गुनाह लिख दिया जाता है।"(2)

किन कामों के लिये वत़न छोड़ना हिजरत में दाख़िल है

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़रमान का ख़ुलासा है कि त़लबे इ़ल्म, जिहाद, ह़ज व ज़ियारते मदीना, नेकी के काम, ज़ोह्दो क़नाअ़त और रिज़्क़े ह़लाल की त़लब के लिये तर्के वत़न करना ख़ुदा और रसूल की त़रफ़ हिजरत है, इस राह में मर जाने वाला अज्र पाएगा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी

1 ......بغوی، النساء، تحت الآیة: ۱۰۰، ۱/۳۷۵.

2 ......مسلم، کتاب الایمان، باب اذا همّ العبد بحسنة کتبت... الخ، ص۷۹، الحدیث: ۲۰۶(۱۳۰).

www.dawateislami.net

है, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे इ़ल्म ह़ासिल करते हुए मौत आ गई वोह **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल में मुलाक़ात करेगा कि उस के और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरमियान सिर्फ़ दरजए नुबुव्वत का फ़र्क़ होगा।(1)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो ह़ज के लिये निकला और मर गया, क़ियामत तक उस के लिये ह़ज करने वाले का सवाब लिखा जाएगा और जो उ़म्रह के लिये निकला और मर गया, उस के लिये क़ियामत तक उ़म्रह करने वाले का सवाब लिखा जाएगा।(2)

وَ اِذَا ضَرَبْتُمْ فِی الْاَرْضِ فَلَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۗ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ یَّفْتِنَكُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِیْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِیْنًا ﴿۱۰۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बा'ज़ नमाज़ें क़स्र से पढ़ो अगर तुम्हें अन्देशा हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा देंगे बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बा'ज़ नमाज़ें क़स्र से पढ़ो अगर तुम्हें येह अन्देशा हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा देंगे बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

﴾ وَ اِذَا ضَرَبْتُمْ فِی الْاَرْضِ﴿ : **और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो।** इस आयत में नमाज़ को क़स्र करने का मस्अला बयान किया गया है या'नी सफ़र की ह़ालत में ज़ोहर, अ़स्र और इशा में चार फ़र्ज़ों की बजाए दो पढ़ेंगे।

नमाज़े क़स्र के बारे में 4 मसाइल

यहां आयत की मुनासबत से नमाज़े क़स्र से मुतअ़ल्लिक़ 4 शरई मसाइल मुलाह़ज़ा हों :

1 ......معجم الاوسط، باب الياء، من اسمه يعقوب، ٤٧٥/٦، الحديث: ٩٤٥٤.

2 ......مسند ابو يعلى، مسند ابى هريرة، ٤٤١/٥، الحديث: ٦٣٢٧.

www.dawateislami.net

(1)...... इस से येह मस्अला मा'लूम होता है कि सफ़र में चार रक्अ़त वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जाइज़ नहीं है।

(2)...... काफ़िरों का ख़ौफ़ क़स्र के लिये शर्त़ नहीं, चुनान्चे ह़ज़रते या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि हम तो अम्न में हैं (फिर हम क्यूं क़स्र करते हैं ?) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया, इस का मुझे भी तअ़ज्जुब हुवा था तो मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया। इस पर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे लिये येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सदक़ा है तुम उस का सदक़ा क़बूल करो।[1]

आयत के नाज़िल होने के वक़्त चूंकि सफ़र अन्देशे से ख़ाली न होते थे इस लिये आयत में इस का ज़िक्र हुवा है वरना ख़ौफ़ और अन्देशे का होना कोई शर्त़ नहीं है, नीज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का भी येही अ़मल था कि अम्न के सफ़रों में भी क़स्र फ़रमाते जैसा कि ऊपर की ह़दीस से साबित होता है और इस के इ़लावा और अह़ादीस से भी येह साबित है।

(3)...... जिस सफ़र में क़स्र किया जाता है उस की कम से कम मुद्दत तीन रात दिन की मसाफ़त है जो ऊंट या पैदल की मुतवस्सित़ रफ़्तार से त़ै की जाती हो और इस की मिक़्दारें ख़ुश्की और दरिया और पहाड़ों में मुख़्तलिफ़ हो जाती हैं। हमारे ज़मीनी, मैदानी सफ़र के ए'तिबार से फ़ी ज़माना इस की मसाफ़त बानवे किलो मीटर बनती है।

(4)...... क़स्र सिर्फ़ फ़र्ज़ों में है, सुन्नतों में नहीं और सफ़र में सुन्नतें पढ़नी चाहिएं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़र की नमाज़ और सफ़र की नमाज़ को फ़र्ज़ फ़रमाया तो हम ह़ज़र में फ़र्ज़ नमाज़ से पहले भी नमाज़ पढ़ा करते थे और बा'द में भी और सफ़र में फ़र्ज़ नमाज़ से पहले भी नमाज़ पढ़ा करते थे और बा'द में भी।[2]

नमाज़े क़स्र के बारे में मज़ीद मसाइल जानने के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 4 से **"नमाज़े मुसाफ़िर का बयान"** मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

وَ اِذَا كُنْتَ فِیْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآىٕفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَ لْیَاْخُذُوْۤا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْیَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآىٕكُمْ ۪

1 ......مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب صلاة المسافرین وقصرها، ص٣٤٧، الحدیث: ٤(٦٨٦).

2 ......ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة والسنّة فیها، باب التطوع فی السفر، ١/٥٦١، الحدیث: ١٠٧٢.

www.dawateislami.net

وَلْتَاْتِ طَآىِٕفَةٌ اُخْرٰى لَمْ یُصَلُّوْا فَلْیُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْیَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ
وَاَسْلِحَتَهُمْۚ وَدَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ
فَیَمِیْلُوْنَ عَلَیْكُمْ مَّیْلَةً وَّاحِدَةًؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى
مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَنْ تَضَعُوْۤا اَسْلِحَتَكُمْۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْؕ
اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۱۰۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब जब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो फिर नमाज़ में उन की इमामत करो तो चाहिये कि उन में एक जमाअ़त तुम्हारे साथ हो और वोह अपने हथियार लिये रहें फिर जब वोह सज्दा कर लें तो हट कर तुम से पीछे हो जाएं और अब दूसरी जमाअ़त आए जो उस वक़्त तक नमाज़ में शरीक न थी अब वोह तुम्हारे मुक़्तदी हों और चाहिये कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिये रहें काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने अस्बाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक दफ़्आ़ तुम पर झुक पड़ें और तुम पर मुज़ायक़ा नहीं अगर तुम्हें मींह के सबब तक्लीफ़ हो या बीमार हो कि अपने हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिये रहो बेशक **अल्लाह** ने काफ़िरों के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ हबीब ! जब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो फिर नमाज़ में उन की इमामत करो तो चाहिये कि उन में एक जमाअ़त तुम्हारे साथ हो और वोह अपने हथियार लिये रहें फिर जब वोह सज्दा कर लें तो हट कर तुम से पीछे हो जाएं और अब दूसरी जमाअ़त आए जो उस वक़्त तक नमाज़ में शरीक न थी अब वोह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें और (उन्हें भी) चाहिये कि अपनी हिफ़ाज़त का सामान और अपने हथियार लिये रहें। काफ़िर चाहते हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक ही दफ़्आ़ तुम पर हम्ला कर दें और अगर तुम्हें बारिश के सबब तक्लीफ़ हो या बीमार हो तो तुम पर कोई मुज़ायक़ा नहीं कि अपने हथियार खोल रखो और अपनी हिफ़ाज़त का सामान लिये रहो। बेशक **अल्लाह** ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

www.dawateislami.net

﴿ وَ اِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ : **और जब तुम उन में हो ।**﴾ इस आयत में नमाज़े ख़ौफ़ की जमाअ़त का त़रीक़ा बयान किया गया है। इस का शाने नुज़ूल येह है कि ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ में जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुश्रिकीन ने देखा कि आप ने तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के साथ नमाज़े ज़ोहर बा जमाअ़त अदा फ़रमाई तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि उन्हों ने उस वक़्त में क्यूं न ह़म्ला किया और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ही अच्छा मौक़अ़ था। उन में बा'ज़ों ने कहा कि इस के बा'द एक और नमाज़ है जो मुसल्मानों को अपने मां बाप से ज़ियादा प्यारी है या'नी नमाज़े अ़स्र, लिहाज़ा जब मुसल्मान उस नमाज़ के लिये खड़े हों तो पूरी क़ुव्वत से ह़म्ला कर के इन्हें क़त्ल कर दो। उस वक़्त ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हुए और उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** येह नमाज़े ख़ौफ़ है या'नी अब यूं नमाज़ पढ़ें।[1]

आयत में बयान किया गया नमाज़े ख़ौफ़ का त़रीक़ा

इस आयत में नमाज़े ख़ौफ़ का त़रीक़ा येह बयान किया गया कि ह़ाज़िरीन को दो जमाअ़तों में तक़्सीम कर दिया जाए, उन में से एक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें नमाज़ पढ़ाएं और एक जमाअ़त दुश्मन के मुक़ाबले में खड़ी रहे। पहली जमाअ़त एक रक्अ़त पढ़ कर और मग़रिब में दो रक्अ़तें पढ़ कर दुश्मन के मुक़ाबिल चली जाए और दूसरी जमाअ़त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे आ जाए फिर बा'द में वोह अपनी एक एक बक़िय्या रक्अ़त पढ़ लें और जिन की दो बाक़ी हैं वोह दो पढ़ लें और दोनों जमाअ़तें हर वक़्त अस्लह़ा साथ रखें या'नी नमाज़ में भी मुसल्लह़ रहें। मा'लूम हुवा कि नमाज़ की जमाअ़त ऐसी अहम है कि ऐसी सख़्त जंग की ह़ालत में भी जमाअ़त का त़रीक़ा सिखाया गया। अफ़्सोस उन पर जो बिला वज्ह जमाअ़त छोड़ देते हैं ह़ालां कि इस में सत्ताईस गुना ज़ियादा सवाब है।

﴿ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا : **और काफ़िर चाहते हैं ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें ह़िफ़ाज़त का सामान और हथियार साथ रखने का हुक्म इस लिये दिया गया है कि काफ़िर येह चाहते हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ तो वोह एक ही दफ़्अ़ा तुम पर ह़म्ला कर दें और अगर हथियार तुम्हारे पास होंगे तो दुश्मन तुम पर अचानक ह़म्ला कने की जुरअत

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ۱۰۲، ۱/۴۲۳.

www.dawateislami.net

न करेगा । आयत के इस हिस्से के बारे में एक रिवायत येह भी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ से जब फ़ारिग़ हुए और दुश्मन के बहुत आदमियों को गिरिफ़्तार किया और अम्वाले ग़नीमत हाथ आए और कोई दुश्मन मुक़ाबले में बाक़ी न रहा तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ज़ाए हाजत के लिये जंगल में तन्हा तशरीफ़ ले गए, दुश्मन की जमाअत में से ग़ौरस बिन हारिस येह ख़बर पा कर तलवार लिये हुए छुप छुप कर पहाड़ से उतरा और अचानक ताजदारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा और तलवार खींच कर कहने लगा या मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला ।" और साथ ही हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई । जब उस ने सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तलवार चलाने का इरादा किया तो औंधे मुंह गिर पड़ा और तलवार उस के हाथ से छूट गई । ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह तलवार ले कर फ़रमाया कि तुझे मुझ से कोई बचाएगा ? कहने लगा, मेरा बचाने वाला कोई नहीं है । रहमते दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ**" पढ़ तो तेरी तलवार तुझे दे दूंगा, उस ने इस से इन्कार किया और कहा कि मैं इस की शहादत देता हूं कि मैं कभी आप से न लड़ूंगा और ज़िन्दगी भर आप के किसी दुश्मन की मदद न करूंगा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की तलवार उस को दे दी कहने लगा, या मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आप मुझ से बहुत बेहतर हैं ? नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, हां ! हमारे लाइक़ येही है । इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हथियार और बचाव का सामान साथ रखने का हुक्म दिया गया ।(1)

﴿اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى : **अगर तुम्हें कोई तक्लीफ़ हो** ।﴾ हुक्म था कि अपनी हिफ़ाज़त का सामान हर वक़्त साथ रखो लेकिन हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ज़ख़्मी थे और उस वक़्त हथियार रखना उन के लिये बहुत तक्लीफ़ देह था, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और हालते उ़ज़्र में हथियार खोल रखने की इजाज़त दी गई ।(2)

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ج

1 ......ابو سعود، النساء، تحت الآية: ١٠٢، ١/٥٧٩.
2 ......قرطبى، النساء، تحت الآية: ١٠٢، ٢٥٦/٣، الجزء الخامس.

www.dawateislami.net

فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो **अल्लाह** की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लैटे फिर जब मुत्मइन हो जाओ तो ह़स्बे दस्तूर नमाज़ क़ाइम करो बेशक नमाज़ मुसल्मानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर जब तुम नमाज़ पढ़ लो तो खड़े और बैठे और करवटों पर लैटे **अल्लाह** को याद करो फिर जब तुम मुत्मइन हो जाओ तो ह़स्बे मा'मूल नमाज़ क़ाइम करो बेशक नमाज़ मुसल्मानों पर मुक़र्ररा वक़्त में फ़र्ज़ है।

﴿فَاذْكُرُوا اللّٰهَ : **तो अल्लाह को याद करो।**﴾ या'नी ज़िक्रे इलाही की हर ह़ाल में हमेशगी करो और किसी ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने हर फ़र्ज़ की एक ह़द मुअ़य्यन फ़रमाई सिवाए ज़िक्र के कि इस की कोई ह़द न रखी बल्कि फ़रमाया कि ज़िक्र करो खड़े बैठे करवटों पर लैटे, रात में हो या दिन में, ख़ुश्की में हो या तरी में, सफ़र में और ह़ज़र में, ग़ना में और फ़क़्र में, तन्दुरुस्ती और बीमारी में पोशीदा और ज़ाहिर।[1]

अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल

यहां आयत की मुनासबत से **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ों के बा'द जो कलिमए तौह़ीद का ज़िक्र किया जाता है वोह जाइज़ है जैसा कि मशाइख़ की आ़दत है और बुख़ारी व मुस्लिम की अह़ादीसे सह़ीह़ा से भी येह ज़िक्र साबित है। चुनान्चे ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द यूं कहा करते थे **"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ"** या'नी **अल्लाह** के सिवा कोई

1 ......تفسير طبری، النساء، تحت الآية: ۱۰۳، ۴/ ۲۶۰.

www.dawateislami.net

मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी के लिये सब ता'रीफ़ें हैं और वोह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, ऐ **अल्लाह**! जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं और किसी दौलत मन्द को तेरे मुक़ाबले पर दौलत नफ़्अ़ नहीं देगी।(1)

सहीह़ मुस्लिम में है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا हर नमाज़ में सलाम फेरने के बा'द येह फ़रमाते थे : ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ'' और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने कहा कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर नमाज़ के बा'द येह कलिमात बुलन्द आवाज़ से फ़रमाते थे।(2)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना जब कि लोग फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते येह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में राइज था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब मैं इस (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने) को सुनता तो इसी से लोगों के (नमाज़ से) फ़ारिग़ होने को जान लेता था।(3)

अलबत्ता येह याद रहे कि ज़िक्र करते वक़्त इतनी आवाज़ से ज़िक्र किया जाए कि किसी नमाज़ी या सोने वाले को तक्लीफ़ नहीं होनी चाहिये।

(2)...... ज़िक्र में तस्बीह़, तह़मीद, तह़लील, तक्बीर, सना, दुआ़ सब दाख़िल हैं।

﴿كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا﴾ : **मुक़र्ररा वक़्त पर फ़र्ज़ है।** नमाज़ के अवक़ात मुक़र्रर हैं लिहाज़ा लाज़िम है कि इन अवक़ात की रिआ़यत की जाए।

सफ़र में दो नमाज़ों को जम्अ़ करने का शरई हुक्म

इस से येह भी मा'लूम हुवा कि सफ़र में दो नमाज़ें जम्अ़ नहीं हो सकतीं। अह़ादीस में भी सफ़र के दौरान दो नमाज़ों को जम्अ़ करने की नफ़ी की गई है, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह

1......بخاری، کتاب الاذان، باب الذکر بعد الصلاۃ، ۱/۲۹٤، الحدیث: ۸٤٤.

2......مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ و بیان صفته، ص۲۹۹، الحدیث: ۱۳۹ (۵۹٤).

3......بخاری، کتاب الاذان، باب الذکر بعد الصلاۃ، ۱/۲۹۳، الحدیث: ۸٤۱، مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب الذکر بعد الصلاۃ، ص۲۹۹، الحدیث: ۱۲۲(۵۸۳).

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ''मैं ने कभी नहीं देखा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी कोई नमाज़ उस के गैर वक़्त में पढ़ी हो मगर दो नमाज़ें कि एक उन में से नमाज़े मग़रिब है जिसे मुज़्दलिफ़ा में इशा के वक़्त पढ़ा था और वहां फ़ज्र भी रोज़ के मा'मूली वक़्त से पहले तारीकी में पढ़ी थी।''(1)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार के सिवा कभी किसी सफ़र में मग़रिब व इशा मिला कर न पढ़ी।''(2)

याद रहे कि जिस सफ़र में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मग़रिब और इशा को मिला कर पढ़ा वोह हज्जतुल वदाअ़ का सफ़र था और नवीं ज़िल हिज्जा को मुज़्दलिफ़ा में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन दोनों नमाज़ों को मिला कर पढ़ा था और दीगर जिन अहादीस में दो नमाज़ें जम्अ़ करने का ज़िक्र है वहां जम्ए़ सूरी मुराद है या'नी पहली नमाज़ आख़िरी वक़्त में और दूसरी नमाज़ अव्वल वक़्त में अदा की गई जैसा कि दर्जे ज़ैल दो रिवायात से वाज़ेह है, चुनान्चे

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचने की जल्दी होती तो (आख़िरी वक़्त से कुछ देर पहले) मग़रिब की इक़ामत कह कर नमाज़ पढ़ लेते, सलाम फेर कर कुछ देर ठहरते फिर इशा की इक़ामत होती और नमाज़े इशा की दो रक्अ़तें पढ़ते।''(3)

हज़रते नाफ़ेअ़ और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन वाक़िद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के मुअज़्ज़िन ने नमाज़ के लिये कहा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : चलते रहो, यहां तक कि जब शफ़क़ डूबने के क़रीब हुई तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उतर कर नमाज़े मग़रिब पढ़ी, फिर इन्तिज़ार फ़रमाया यहां तक कि शफ़क़ डूब गई, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने नमाज़े इशा पढ़ी, फिर फ़रमाया : ''हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब (किसी काम की वज्ह से) जल्दी होती तो ऐसा ही करते जैसा मैं ने किया।''(4)

---

1 ......مسلم، كتاب الحج، باب استحباب زيادة التغليس بصلاة الصبح... الخ، ص٦٧١، الحديث: ٢٩٢(١٢٨٩).

2 ......ابو داوٗد، كتاب صلاة المسافر، باب الجمع بين الصلاتين، ٢/٩، الحديث: ١٢٠٩.

3 ......بخارى، كتاب تقصير الصلاة، باب يصلى المغرب ثلاثاً فى السفر، ١/٣٧٤، الحديث: ١٠٩٢.

4 ......ابو داوٗد، كتاب صلاة المسافر، باب الجمع بين الصلاتين، ٢/١٠، الحديث: ١٢١٢.

www.dawateislami.net

नोट : इस मस्अले से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली और तह़क़ीक़ी मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये फ़तावा रज़विय्या की पांचवीं जिल्द में मौजूद आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की किताब ''حَاجِزُ الْبَحْرَيْنِ الْوَاقِي عَنْ جَمْعِ الصَّلَاتَيْنِ (दो नमाज़ें एक वक़्त में पढ़ने की मुमानअ़त पर रिसाला)'' का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۠﴿۱۰۴﴾

ع ۱۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो अगर तुम्हें दुख पहुंचता है तो उन्हें भी दुख पहुंचता है जैसा तुम्हें पहुंचता है और तुम **अल्लाह** से वोह उम्मीद रखते हो जो वोह नहीं रखते और **अल्लाह** जानने वाला ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो। अगर तुम्हें दुख पहुंचता है तो जैसे तुम्हें दुख पहुंचता है वैसे ही उन्हें भी दुख पहुंचता है ह़ालां कि तुम **अल्लाह** से वोह उम्मीद रखते हो जो वोह नहीं रखते। और **अल्लाह** जानने वाला ह़िक्मत वाला है।

﴿وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ : **और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो।**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि उहुद की जंग से जब अबू सुफ़्यान और उन के साथी वापस हुए तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم उहुद में ह़ाज़िर हुए थे उन्हें मुशरिकीन के तआ़क़ुब में जाने का हुक्म दिया, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ज़ख़्मी थे, उन्हों ने अपने ज़ख़्मों की शिकायत की इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

और फ़रमाया गया कि अगर तुम्हें तक्लीफ़ पहुंची है तो उन्हें भी पहुंची है नीज़ तुम्हें तो तक्लीफ़ें उठाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सवाब की उम्मीद है जब कि काफ़िरों को ऐसी कोई उम्मीद नहीं तो तुम पीछा करने में सुस्ती न करो।

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٠٤، ١/٤٢٦.

www.dawateislami.net

إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ ٱلنَّاسِ بِمَآ أَرَىٰكَ ٱللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَآئِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾ وَٱسْتَغْفِرِ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٦﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फ़ैसला करो जिस त़रह़ तुम्हें **अल्लाह** दिखाए और दग़ा वालों की त़रफ़ से न झगड़ो। और **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी ताकि तुम लोगों में उस (ह़क़) के साथ फ़ैसला करो जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिखाया है और तुम ख़ियानत करने वालों की त़रफ़ से झगड़ा न करना। और **अल्लाह** की बारगाह में इस्तिग़्फ़ार करें। बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴾إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ : ऐ ह़बीब ! बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी।﴿ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि अन्सार के क़बीलए बनी ज़फ़र के एक शख़्स त़ो'मा बिन उबैरिक़ ने अपने हमसाया क़तादा बिन नो'मान की ज़िरह चुरा कर आटे की बोरी में एक यहूदी के हां छुपा दी जब ज़िरह की तलाश हुई और त़ो'मा पर शुबा किया गया तो वोह इन्कार कर गया और क़सम खा गया। बोरी फटी हुई थी और आटा उस में से गिरता जाता था, उस के निशान से लोग यहूदी के मकान तक पहुंचे और बोरी वहां पाई गई, यहूदी ने कहा कि त़ो'मा इस के पास रख गया है और यहूदियों की एक जमाअ़त ने इस की गवाही दी और त़ो'मा की क़ौम बनी ज़फ़र ने येह अ़ज़्म कर लिया कि यहूदी को चोर क़रार देंगे और इस पर क़सम खा लेंगे ताकि हमारी क़ौम रुस्वा न हो और उन की ख़्वाहिश थी कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم त़ो'मा को बरी कर दें और यहूदी को सज़ा दें। इसी लिये उन्हों ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने त़ो'मा के ह़क़ में और यहूदी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दी। तब येह आयते करीमा उतरी।(1)

1 ......بيضاوى، النساء، تحت الآية: ١٠٥، ٢/٢٤٨.

www.dawateislami.net

हुक्काम फ़ैसला करने में कोताही न करें

इस आयत में ब ज़ाहिर ख़ित़ाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से है लेकिन दर ह़क़ीक़त क़ियामत तक के हुक्काम को सुनाना मक़्सूद है कि फ़ैसला करने में कोताही न किया करें और सह़ीह़ मुल्ज़िम को बिग़ैर रू रिआ़यत सज़ा पूरी दिया करें। तो'मा ब ज़ाहिर मोमिन था और यहूदी काफ़िर था मगर फ़ैसला इस मौक़अ़ पर यहूदी के ह़क़ में हुवा।

तअ़स्सुब का रद

इसी आयत से तअ़स्सुब का रद भी होता है कि इस्लाम में इस बात की कोई गुन्जाइश नहीं कि आदमी अपनी क़ौम या ख़ानदान की हर मुआ़मले में ताईद करे अगर्चे वोह बात़िल पर हों बल्कि ह़क़ की इत्तिबाअ़ करना ज़रूरी है। इस में रंग व नस्ल, क़ौम व इलाक़ा, मुल्क व सूबा, ज़बान व सक़ाफ़त के हर क़िस्म के तअ़स्सुब का रद है। कसीर अह़ादीस में भी तअ़स्सुब का शदीद रद किया गया है, चुनान्चे उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते फ़ुसीला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे वालिद ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क्या अपनी क़ौम से मह़ब्बत रखना भी तअ़स्सुब है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं, बल्कि अपनी क़ौम की ज़ुल्म में मदद करना तअ़स्सुब है।''(1)

(2)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो बिला वज्ह जंग करे या तअ़स्सुब की जानिब बुलाए या तअ़स्सुब की वज्ह से ग़ुस्सा करे तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरेगा।''(2)

(3)...... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक बद तरीन शख़्स वोह होगा जिस ने किसी की दुन्या की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद कर ली।''(3)

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِیْنَ یَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ

1......ابن ماجه، كتاب الفتن، باب العصبية، ٣٢٧/٤، الحديث: ٣٩٤٩.
2......ابن ماجه، كتاب الفتن، باب العصبية، ٣٢٦/٤، الحديث: ٣٩٤٨.
3......ابن ماجه، كتاب الفتن، باب اذا التقى المسلمان بسيفهما، ٣٣٩/٤، الحديث: ٣٩٦٦.

www.dawateislami.net

كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿۱۰۷﴾ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन की त़रफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को ख़ियानत में डालते हैं बेशक **अल्लाह** नहीं चाहता किसी बड़े दग़ाबाज़ गुनहगार को ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन लोगों की त़रफ़ से न झगड़ना जो अपनी जानों को ख़ियानत में डालते हैं । बेशक **अल्लाह** पसन्द नहीं करता उसे जो बहुत ख़ियानत करने वाला, बड़ा गुनाहगार हो ।

﴾وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ﴿ : **और ख़ियानत करने वालों की त़रफ़ से न झगड़ना** ﴾ गुज़श्ता आयत में और इस आयत में फ़रमाया कि ख़ियानत करने वालों की त़रफ़ से न झगड़ो ।

ख़ियानत करने वालों का साथ देने की मज़म्मत

इस से **वकालत का पेशा** करने वालों को ग़ौर करना चाहिये कि बारहा ऐसा होता है कि वकील को मा'लूम होता है कि उस का मुअक्किल मुजरिम व ख़ाइन है लेकिन वोह माल बटोरने के चक्कर में मज़्लूम को ज़ालिम और ज़ालिम को मज़्लूम बना देता है और ज़ालिम की त़रफ़ दारी करता है, उस की त़रफ़ से दलाइल पेश करता है, झूट बोलता है, दूसरे फ़रीक़ का ह़क़ मारता है और न जाने किन किन ह़राम कामों का मुरतकिब होता है । कोर्ट कचह्री से तअ़ल्लुक़ रखने वाले ह़ज़रात इन बातों को बख़ूबी जानते हैं । उन ह़ज़रात की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान को बग़ौर पढ़ें, नीज़ **अल्लाह** तआ़ला के इन फ़रामीन पर ग़ौर करें, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ह़क़ को बात़िल के साथ न मिलाओ और जान बूझ कर ह़क़ न छुपाओ ।

और इर्शाद फ़रमाया :

1 ......بقرہ: ٤٢.

www.dawateislami.net

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِیْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल ना जाइज़ तौर पर जान बूझ कर खा लो।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَ مَنْ یَّغْلُلْ یَاْتِ بِمَا غَلَّ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो ख़ियानत करे तो वोह क़ियामत के दिन उस चीज़ को ले कर आएगा जिस में उस ने ख़ियानत की होगी फिर हर शख़्स को उस के आ'माल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन इर्शादात पर ग़ौर करें और अपने बुरे अफ़्आल से तौबा करें, चुनान्चे हज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो ख़ियानत करने वाले की पर्दापोशी करे तो वोह भी उस ही की त़रह़ है।''(3)

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह शख़्स मल्ऊन है जो अपने मुसल्मान भाई को नुक़्सान पहुंचाए या उस के साथ धोका करे।''(4)

येह भी याद रहे कि झूटी वकालत की उजरत ह़राम है।

یَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَ لَا یَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَ هُوَ مَعَهُمْ اِذْ یُبَیِّتُوْنَ مَا لَا یَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطًا ﴿۱۰۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आदमियों से छुपते हैं और **अल्लाह** से नहीं छुपते और **अल्लाह** उन के पास है जब दिल में वोह बात तज्वीज़ते हैं जो **अल्लाह** को ना पसन्द है और **अल्लाह** उन के कामों को घेरे हुए है।

1......بقره:۱۸۸.   2......ال عمران:۱۶۱.

3......ابو داوٗد، کتاب الجهاد، باب النهى عن الستر على من غلّ، ۳/۹۳، الحديث: ۲۷۱۶.

4......تاريخ بغداد، ۲۶۲-محمد بن احمد بن محمد بن جابر... الخ، ۱/۳۶۰.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोगों से शरमाते हैं और **अल्लाह** से नहीं शरमाते हालां कि **अल्लाह** उस वक़्त भी उन के साथ होता है जब वोह रात को ऐसी बात का मश्वरा करते हैं जो **अल्लाह** को पसन्द नहीं और **अल्लाह** उन के कामों को घेरे हुए है।

﴿يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ : **वोह लोगों से शरमाते हैं।**﴾ या'नी तो'मा और उस की क़ौम के अफ़राद लोगों से हया करने की बिना पर और उन की तरफ़ से नुक़्सान पहुंचने के डर से उन से तो शरमाते और छुपते हैं लेकिन **अल्लाह** तआ़ला से नहीं शरमाते हालां कि वोह इस बात का ज़ियादा हक़दार है कि उस से ह़या की जाए और उस के अ़ज़ाब से डरा जाए क्यूं कि वोह उन के अह़वाल को जानता है और उस से उन का कोई अ़मल छुपा हुवा नहीं ह़त्ता कि वोह उन के उस अ़मल से भी वाक़िफ़ है जब वोह अपने दिल में ऐसी बात तज्वीज़ करते हैं और रात में ऐसी बात का मश्वरा करते हैं जो **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द नहीं जैसे बे गुनाह पर इल्ज़ाम लगाना, झूटी क़सम खाना और झूटी गवाही देना, और **अल्लाह** तआ़ला उन के ज़ाहिरी व बातिनी तमाम आ'माल का इह़ाता किये हुए है और उन का कोई अ़मल **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म से बाहर नहीं।(1)

तक़्वा व तहारत की बुन्याद

येह आयते मुबारका तक़्वा व तहारत की बुन्याद है। अगर इन्सान येह ख़याल रखे कि मेरा कोई हाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से छुपा हुवा नहीं तो गुनाह करने की हिम्मत न करे। क़ुरआने पाक में जगह जगह इसी चीज़ के ज़रीए लोगों को गुनाहों से रुकने का हुक्म दिया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है।** इस जुम्ले का अगर कोई शख़्स मुराक़बा कर ले और इसे अपने दिलो दिमाग़ में बिठा ले तो गुनाहों का इ़लाज निहायत आसान हो जाएगा। ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं तीन साल की उ़म्र का था कि रात के वक़्त उठ कर अपने मामूं ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सवार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को नमाज़ पढ़ते देखता। एक दिन उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : क्या तू उस **अल्लाह** तआ़ला को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा किया है ? मैं ने पूछा : मैं उसे किस त़रह़ याद करूं ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : जब लौटने लगो तो तीन बार ज़बान को ह़रकत दिये बिग़ैर मह़्ज़ दिल में येह कलिमात कहो :

''اَللّٰهُ مَعِی، اَللّٰهُ نَاظِرٌ اِلَیَّ، اَللّٰهُ شَاهِدٌ''

1 ......جلالين، النساء، تحت الآية: ٩٧، ص٨٦، روح البيان، النساء، تحت الآية: ١٠٨، ٢/٢٧٩-٢٨٠، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है, **अल्लाह** तआला मेरा गवाह है।

(ह़ज़रते सह्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े और फिर उन को बताया, उन्हों ने फ़रमाया : हर रात सात मरतबा येह कलिमात पढ़ो, मैं ने ऐसा ही किया और फिर उन्हें बताया तो उन्हों ने फ़रमाया : हर रात ग्यारह मरतबा येह कलिमात पढ़ो। मैं ने इसी त़रह़ पढ़ा तो मुझे अपने दिल में इस की लज़्ज़त मा'लूम हुई। जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूं ने कहा : मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है इसे याद रखो और क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ना, येह तुम्हें दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ देगा। मैं ने कई साल तक ऐसा किया तो मैं ने अपने अन्दर इस का मज़ा पाया, फिर एक दिन मेरे मामूं ने फ़रमाया : ऐ सह्ल ! **अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, क्या वोह उस की ना फ़रमानी करता है ? तुम अपने आप को गुनाहों से बचा कर रखो।**(1)

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۫ فَمَنْ یُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اَمْ مَّنْ یَّكُوْنُ عَلَیْهِمْ وَكِیْلًا ﴿۱۰۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुनते हो येह जो तुम हो दुन्या की ज़िन्दगी में तो उन की त़रफ़ से झगड़े तो उन की त़रफ़ से कौन झगड़ेगा **अल्लाह** से क़ियामत के दिन या कौन उन का वकील होगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ लोगो !) सुन लो, येह तुम ही हो जो दुन्या की ज़िन्दगी में उन की त़रफ़ से झगड़े तो क़ियामत के दिन उन की त़रफ़ से **अल्लाह** से कौन झगड़ेगा या कौन उन का कारसाज़ होगा ?

﴿هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا﴾ : **सुन लो, येह तुम ही हो जो दुन्या की ज़िन्दगी में उन की त़रफ़ से झगड़े।** यहां आ़म लोगों से और बत़ौरे ख़ास त़ो'मा की क़ौम से ख़िताब फ़रमाया गया है कि ऐ लोगो ! सुन लो, तुम जो आज दुन्या की ज़िन्दगी में इन ख़ियानत करने वालों की त़रफ़ से झगड़ते हो तो जब क़ियामत के दिन ख़ियानत करने वाला मुजरिम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب ریاضۃ النفس وتھذیب الاخلاق... الخ، بیان الطریق فی ریاضۃ الصبیان... الخ، ۹۱/۳.

www.dawateislami.net

की बारगाह में पेश होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अ़ज़ाब का फ़ैसला फ़रमा देगा तो उस वक़्त कौन उन की त़रफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से झगड़ेगा या कौन उन का वकील व कारसाज़ होगा ? या'नी जैसे दुन्या में तुम फ़ैसला करने वाले को धोका दे देते हो इस त़रह़ धोका देने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में झगड़ना ना मुम्किन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कुछ पोशीदा नहीं।

शफ़ाअ़त का सुबूत

याद रहे कि इस आयत में शफ़ाअ़त का इन्कार नहीं क्यूं कि मह़बूबों की शफ़ाअ़त और छोटे बच्चों का अपने मां बाप की बख़्शिश के लिये रब तआ़ला से नाज़ के त़ौर पर झगड़ना आयात व अह़ादीस से साबित है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : कौन है जो उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के हां शफ़ाअ़त कर सके।

और ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन जब कच्चे बच्चे के मां बाप को **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम में दाख़िल करेगा तो वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ से झगड़ेगा। फ़रमाया जाएगा "اَیُّهَا السَّقْطُ الْمُرَاغِمُ رَبَّهٗ" ऐ कच्चे बच्चे अपने रब عَزَّوَجَلَّ से झगड़ने वाले ! अपने मां बाप को जन्नत में ले जा, तब वोह उन्हें अपने नाफ़ से खींचेगा ह़त्ता कि उन्हें जन्नत में दाख़िल कर देगा।"(2)

मगर येह झगड़ा रब्बे करीम की बारगाह में नाज़ का होगा न कि मुक़ाबले का।

> وَمَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ یَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ یَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ یَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا
> رَّحِیْمًا ﴿۱۱۰﴾ وَمَنْ یَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا یَكْسِبُهٗ عَلٰی نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
> عَلِیْمًا حَكِیْمًا ﴿۱۱۱﴾ وَمَنْ یَّكْسِبْ خَطِیْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ یَرْمِ بِهٖ بَرِیْٓـًٔا فَقَدِ
> احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۱۱۲﴾ ع

ع ۱۳

1 ......بقره: ۲۵۵.

2 ......ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ما جاء فيمن اصيب بسقط، ۲۷۳/۲، الحديث: ۱۶۰۸.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर **अल्लाह** से बख़्शिश चाहे तो **अल्लाह** को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा और जो गुनाह कमाए तो उस की कमाई उसी की जान पर पड़े और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और जो कोई ख़त़ा या गुनाह कमाए फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उस ने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो कोई बुरा काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर **अल्लाह** से मग़्फ़िरत त़लब करे तो **अल्लाह** को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। और जो गुनाह कमाए तो वोह अपनी जान पर ही गुनाह कमा रहा है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है। और जो कोई ग़लत़ी या गुनाह का इरतिकाब करे फिर किसी बे गुनाह पर उस का इल्ज़ाम लगा दे तो यक़ीनन उस ने बोहतान और खुला गुनाह उठाया।

﴾وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا﴿ **: और जो बुरा अ़मल करे।** इस आयत और इस के बा'द वाली दो आयात में तीन चीज़ें बयान फ़रमाई गईं। पहली येह कि जो शख़्स कोई बुरा अ़मल करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी का त़लब गार हो और सच्ची तौबा करे और उस के तक़ाज़ों को पूरा करे तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ग़फ़ूरो रह़ीम पाएगा। سُبْحٰنَ اللّٰه । दूसरी बात येह इर्शाद फ़रमाई कि जो गुनाह करेगा वोही उस गुनाह का वबाल उठाएगा, येह न होगा कि गुनाह कोई करे और उस का वबाल किसी दूसरे की गरदन पर रख दिया जाए।

गुनाहे जारिया का सबब बनने वाले को गुनाह करने वाले के गुनाह से भी ह़िस्सा मिलेगा

यहां येह बात याद रहे कि जो किसी गुनाहे जारिया का सबब बना तो उसे गुनाह करने वालों के गुनाह से भी ह़िस्सा मिलेगा जैसे किसी ने सिनेमा खोला या शराब ख़ाना खोला या बे ह़याई का अड्डा खोला या अपनी दुकान वग़ैरा पर फ़िल्में चलाईं जहां लोग बैठ कर देखें या किसी को ग़लत़ राह पर लगा दिया या किसी को शराब, जूआ या नशे का आ़दी बना दिया तो इस सूरत में गुनाह का काम करने वाले और उसे इस राह पर लगाने वाले दोनों को गुनाह होगा। अह़ादीस में येह मज़्मून ब कसरत मिलता है, चुनान्चे उन में से 4 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर वोह जान जिसे ज़ुल्मन क़त्ल किया जाए तो उस के ख़ून

www.dawateislami.net

का गुनाह हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पहले बेटे पर होगा क्यूं कि उस ने क़त्ल का तरीक़ा निकाला।[1]

(2)...... हज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा निकाला फिर उस के बा'द उस पर अ़मल किया गया तो अ़मल करने वाले के सवाब की मिस्ल सवाब इस के नामए आ'माल में लिखा जाएगा और उन अ़मल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी और जिस ने इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा जारी किया फिर उस के बा'द उस पर अ़मल किया गया तो अ़मल करने वाले के गुनाह की मिस्ल गुनाह उस के नामए आ'माल में लिखा जाएगा और इन अ़मल करने वालों के गुनाह में भी कोई कमी न होगी।[2]

(3)...... हज़रते अबू मस्ऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने किसी भलाई के काम पर रहनुमाई की तो उस के लिये वोह काम करने वाले की त़रह़ सवाब है।[3]

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए तो उसे वैसा सवाब मिलेगा जैसा उस की पैरवी करने वाले को मिलेगा और उन पैरवी करने वालों के सवाब में कोई कमी न होगी और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए तो उसे वैसा गुनाह मिलेगा जैसा उस की पैरवी करने वाले को मिलेगा और उन पैरवी करने वालों के गुनाह में कोई कमी न होगी।[4]

﴿وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا : **और जो कोई ग़लती या गुनाह का इरतिकाब करे।**﴾ इस आयत में तीसरी बात इर्शाद फ़रमाई गई कि जिस ने किसी बे गुनाह पर इल्ज़ाम लगाया तो उस ने बोहतान और बहुत बड़े गुनाह का बोझ उठाया। आयत में गुनाह से मुराद गुनाहे कबीरा और ख़त़ा से मुराद गुनाहे सग़ीरा है।

बे गुनाह पर तोहमत लगाने की मज़म्मत

इस आयत से मा'लूम हुवा कि बे गुनाह को तोहमत लगाना सख़्त जुर्म है वोह बे गुनाह ख़्वाह मुसल्मान हो या काफ़िर क्यूं कि तो'मा ने यहूदी काफ़िर को बोहतान लगाया था इस पर

1......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب خلق آدم صلوات اللّٰہ علیہ وذرّیتہ، ۲/۴۱۳، الحدیث: ۳۳۳۵.
2......مسلم، کتاب العلم، باب من سنّ سنّۃ حسنۃ او سیئۃ... الخ، ص۱۴۳۷، الحدیث: ۱۵(۲۶۷۳).
3......مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل اعانۃ الغازی فی سبیل اللّٰہ... الخ، ص۱۰۵۰، الحدیث: ۱۳۳(۱۸۹۳).
4......مسلم، کتاب العلم، باب من سنّ سنّۃ حسنۃ او سیئۃ... الخ، ص۱۴۳۸، الحدیث: ۱۶(۲۶۷۴).

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला ने उस की मज़म्मत फ़रमाई। अह़ादीस में भी बे गुनाह पर तोहमत लगाने की वईदें बयान की गई हैं, चुनान्चे

ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने किसी की कोई ऐसी बात ज़िक्र की जो उस में नहीं ताकि उस के ज़रीए़ उस को ऐबज़दा करे तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जहन्नम में क़ैद कर देगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात साबित करे। (इस से मुराद येह है कि वोह त़वील अ़र्से तक अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा।) (1)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मर्द या औ़रत ने अपनी लौंडी को "ऐ ज़ानिया" कहा जब कि उस के ज़िना से आगाह न हो तो क़ियामत के दिन वोह लौंडी उन्हें कोड़े लगाएगी, क्यूं कि दुन्या में इन के लिये कोई ह़द नहीं।(2)

इस्लाम का आ'ला अख़्लाक़ी उसूल

इस आयत से एक तो किसी पर बोहतान लगाने का ह़राम होना वाज़ेह़ हुवा और दूसरा इस्लाम के आ'ला अख़्लाक़ी उसूलों का इ़ल्म हुवा कि इस्लाम में इन्सानी हु़क़ूक़ का किस क़दर पास और लिह़ाज़ है, ह़त्ता कि काफ़िर तक के हु़क़ूक़ इस्लाम में बयान किये गए हैं। येह वाक़िआ़ और आयाते मुबारका कुफ़्फ़ार के सामने पेश करने की हैं कि देखो इस्लाम की ता'लीमात कितनी ह़सीन और उ़म्दा हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ یُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا یُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا یَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَیْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكَ عَظِیْمًا ﴿۱۱۳﴾

الثلثة

1 ......معجم الاوسط، من اسمه مقدام، ٦/٣٢٧، الحديث: ٨٩٣٦.

2 ......مستدرك، كتاب الحدود، ذكر حد القذف، ٥/٥٢٨، الحديث: ٨١٧١.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब अगर **अल्लाह** का फ़ज़्लो रहमत तुम पर न होता तो उन में के कुछ लोग येह चाहते कि तुम्हें धोका दे दें और वोह अपने ही आप को बहका रहे हैं और तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे और **अल्लाह** ने तुम पर किताब और हिक्मत उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और **अल्लाह** का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ हबीब ! अगर तुम्हारे ऊपर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो उन में एक गुरौह ने आप को (सहीह फ़ैसला करने से) हटाने का इरादा किया था हालां कि वोह अपने आप ही को गुमराह कर रहे थे और आप का कुछ नहीं बिगाड़ सकते और **अल्लाह** ने आप पर किताब और हिक्मत नाज़िल फ़रमाई और आप को वोह सब कुछ सिखा दिया जो आप न जानते थे और आप पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है।

﴿لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ﴾ **: उन में से एक गुरौह ने इरादा किया था।** यहां साबिक़ा वाक़िए के ए'तिबार ही से कलाम चल रहा है, चुनान्चे फ़रमाया गया कि ऐ हबीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाया और रहमत की, कि तुम्हें नबिय्ये मा'सूम बनाया और राज़ों पर मुत्तलअ फ़रमाया। अगर परवर्दगारे आलम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'सूम न बनाया होता और आप पर तमाम उ़लूम ज़ाहिर न कर दिये होते तो येह आप को बहका देते। यहां बहकाने से मुराद धोका दे कर ग़लत़ फ़ैसला करवा लेना है। वोह लोग जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को धोका देना चाहते हैं येह तो अपने आप को गुमराह कर रहे हैं क्यूं कि इस का वबाल उन्हीं पर है, येह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को धोका नहीं दे सकते क्यूं कि उन की हिफ़ाज़त उन का रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है। नीज़ फ़रमाया कि येह लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हमेशा के लिये मा'सूम बनाया है।

﴿وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ﴾ **: और तुम्हें वोह सब कुछ सिखा दिया जो तुम न जानते थे।** येह आयते मुबारका हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़ीम मदह पर मुश्तमिल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि ऐ हबीब ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर किताब और हिक्मत नाज़िल फ़रमाई और आप को दीन के उमूर, शरीअ़त के अह़काम और ग़ैब के वोह उ़लूम अ़ता फ़रमा दिये, जो आप न जानते थे।

www.dawateislami.net

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें

यहां हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें ज़ेह्न नशीन रखें कि मुसल्मानों का अ़क़ीदा इस बारे में क्या है। येह बातें पेशे नज़र रहीं तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कोई गुमराह बहका न सकेगा, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

(1)...... बेशक ग़ैरे ख़ुदा के लिये एक ज़र्रे का इल्मे ज़ाती नहीं इस क़दर (या'नी इतनी बात) ख़ुद ज़रूरिय्याते दीन से है और इस का मुन्किर काफ़िर है।

(2)...... बेशक ग़ैरे ख़ुदा का इल्म **अल्लाह** तआ़ला की मा'लूमात को ह़ावी नहीं हो सकता, बराबर तो दर किनार। तमाम अव्वलीनो आख़िरीन, अम्बिया व मुरसलीन, मलाएका व मुक़र्रबीन सब के उ़लूम मिल कर उ़लूमे इलाहिय्यह से वोह निस्बत नहीं रख सकते जो करोड़हा करोड़ समुन्दरों से एक ज़रा सी बूंद के करोड़वें ह़िस्से को है कि वोह तमाम समुन्दर और येह बूंद का करोड़वां ह़िस्सा दोनों मुतनाही हैं (या'नी इन की एक इन्तिहा है), और मुतनाही को मुतनाही से निस्बत ज़रूर है, जब कि **अल्लाह** तआ़ला के उ़लूम वोह ग़ैर मुतनाही दर ग़ैर मुतनाही दर ग़ैर मुतनाही हैं (या'नी इन की कोई इन्तिहा ही नहीं)। और मख़्लूक़ के उ़लूम अगर्चे अ़र्शो फ़र्श, मशरिक़ो मग़रिब, रोज़े अव्वल ता रोज़े आख़िर जुम्ला काएनात को मुह़ीत़ हो जाएं फिर भी मुतनाही हैं कि अ़र्श व फ़र्श दो ह़दें हैं, रोज़े अव्वल व रोज़े आख़िर दो ह़दें हैं और जो कुछ दो ह़दों के अन्दर हो सब मुतनाही है।

(3)...... बिलफ़े'ल ग़ैर मुतनाही का इल्मे तफ़्सीली मख़्लूक़ को मिल ही नहीं सकता तो जुम्ला उ़लूमे ख़ल्क़ को इल्मे इलाही से अस्लन निस्बत होनी मुह़ाले क़त़्ई है न कि **مَعَاذَ اللّٰه** तवह्हुमे मुसावात।

(4)...... इस पर इज्माअ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कसीर व वाफ़िर ग़ैबों का इल्म है येह भी ज़रूरिय्याते दीन से है जो इस का मुन्किर हो काफ़िर है कि सिरे से नुबुव्वत ही का मुन्किर है।

(5)...... और इस पर भी इज्माअ़ है कि इस फ़ज़्ले जलील में मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िस्सा तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व तमाम जहान से अतम्मो

www.dawateislami.net

आ'ज़म है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इतने ग़ैबों का इ़ल्म है जिन का शुमार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है।[1]

याद रहे कि यहां "مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ" में वोह सब कुछ दाख़िल है जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नहीं जानते। मो'तबर तफ़ासीर में इस की सराह़त मौजूद है। चुनान्चे दर्जे ज़ैल पांच तफ़ासीर में इस का मुत़ालआ़ किया जा सकता है :

(1)……تفسير البحر المحيط، النساء، تحت الاية: ١١٣، ٣ / ٣٦٢، (2)……تفسير طبرى، النساء، تحت الاية: ١١٣، ٤/٢٧٥، (3)……نظم الدرر، النساء، تحت الاية: ١١٣، ٢/٣١٧، (4)……زاد المسير فى علم التفسير، النساء، تحت الاية: ١١٣، ص٣٢٤، (5)……روح المعانى، النساء، تحت الاية: ١١٣، ٣/١٨٧.

﴿وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا﴾ **: और आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल बहुत बड़ा है।** इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआ़ला ने पूरी मख़्लूक़ को जो इ़ल्म अ़ता फ़रमाया उस के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا[2]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (ऐ लोगो !) तुम्हें बहुत थोड़ा इ़ल्म दिया गया है।

इसी त़रह़ पूरी दुन्या के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ[3]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो कि दुन्या का साज़ो सामान थोड़ा सा है।

तो जिस के सामने पूरी दुन्या का इ़ल्म और ख़ुद सारी दुन्या क़लील है वोह जिस के इ़ल्म को अ़ज़ीम फ़रमा दे उस की अ़ज़मतों का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है।"[4]

لَا خَيْرَ فِىْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾

1…… फ़तावा रज़विय्या, 29/450, 451 मुलख़्ख़सन

2……بنى اسرائيل:٨٥.

3……النساء:٧٧.

4……تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ١١٣، ٤/٢١٧.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन के अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुल्ह़ करने का और जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन के अक्सर ख़ुफ़्या मश्वरों में कोई भलाई नहीं होती मगर उन लोगों (के मश्वरों) में जो सदक़े का या नेकी का या लोगों में बाहम सुल्ह़ कराने का मश्वरा करें और जो **अल्लाह** की रिज़ा मन्दी तलाश करने के लिये येह काम करता है तो उसे अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाएंगे।

﴿لَا خَیْرَ فِیْ كَثِیْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ : **उन के अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं।**﴾ यहां आ़म लोगों के ह़वाले से बयान फ़रमाया गया कि उन के ज़ियादा तर कलाम और मश्वरों में कोई भलाई नहीं होती क्यूं कि अ़वामी कलाम ज़ियादा तर फ़ुज़ूलियात पर मुश्तमिल होता है और उन के मश्वरे बे फ़ाएदा मग़्ज़ मारी पर मब्नी होते हैं जिन का नतीजा कुछ भी नहीं होता। इन की बजाए वोह लोग जो आपस में अच्छे कामों के लिये कलाम या मश्वरा करते हैं जैसे सदक़ा देने का हुक्म देते हैं या लोगों को नेकी की दा'वत देते हैं या नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये मश्वरे करते हैं या लोगों में सुल्ह़ करवाने के लिये मिल बैठते हैं तो ऐसे लोगों के मश्वरों में ख़ैर और भलाई है।

आयत "لَا خَیْرَ فِیْ كَثِیْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ" के चन्द पहलू

इस आयते मुबारका में उस गुरौह के लिये नसीह़त है जिन के मश्वरे फ़ुज़ूलियात पर मुश्तमिल होते हैं या जो مَعَاذَ اللّٰه गुनाह को परवान चढ़ाने के लिये मश्वरे करते हैं जैसे सिनेमा बनाने, बे ह़याई के सेन्टर बनाने, फ़िल्मी सन्अ़त की तरक़्क़ी के लिये मश्वरे करते हैं येह मश्वरे सिर्फ़ ख़ैर से ख़ाली नहीं बल्कि शर से भरपूर हैं। **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों को हिदायत अ़ता फ़रमाए। इन के मुक़ाबले में आयते मुबारका में उन के लिये बिशारत है जो नेकी के काम के लिये मश्वरे करते हैं, मुल्क के मसाइल ह़ल करने के लिये, क़ौम की परेशानियां दूर करने के लिये, अ़वाम के मुआ़मलात सुलझाने के लिये, लड़ने वालों के दरमियान सुल्ह़ करने वाले के लिये, मियां बीवी और दीगर रिश्तेदारों के झगड़े ख़त्म करवाने के लिये, दोस्तों में नाराज़गी ख़त्म कर के जाइज़ दोस्ती करवाने के लिये मश्वरे करने वाले मुबारक बाद के मुस्तह़िक़ हैं। यूंही बतौरे ख़ास इस आयत में जिन ह़ज़रात का तज़्किरा है वोह है नेकी की दा'वत के लिये

www.dawateislami.net

मश्वरे करने वाले। ऐसे तमाम लोगों के मश्वरे ख़ैर और भलाई से भरपूर हैं जिन का मक़्सद येह है कि नेकी की दा'वत आ़म हो, मुसल्मानों का बच्चा बच्चा नमाज़ी बने, लोग सुन्नतों के पाबन्द हों, उन में ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पैदा हो, बे ह़याई का ख़ातिमा हो, लड़ाई झगड़े ख़त्म हो जाएं, मुसल्मान बा अ़मल बन जाएं, लोगों के घर अम्न का गहवारा बन जाएं, घरों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारों का ज़िक्र हो। अल ग़रज़ जो लोग इन कामों के लिये मश्वरे करते हैं वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हैं। आयते मुबारका के चन्द पहलूओं की त़रफ़ हम ने इशारा किया है वरना ह़क़ीक़त में येह आयत निजी मुआ़मलात से ले कर सूबाई, क़ौमी, मुल्की और बैनल अक़्वामी मुआ़मलात सब को शामिल है।

﴿وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ﴾ **: और जो अल्लाह की रिज़ा मन्दी तलाश करने के लिये येह काम करता है।** अच्छे मश्वरों पर अज्रो सवाब मिलता है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने इन के बारे में फ़रमा दिया कि येह इस सूरत में है जब कि येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किये जाएं तब अज्रे अ़ज़ीम है वरना अगर रियाकारी के लिये, अपनी वाह वाह करवाने के लिये, ख़ुद को बड़ा लीडर, या मुस्लेह़ कहलवाने के लिये, लोगों में इ़ज़्ज़तो शोहरत व दौलत ह़ासिल करने के लिये, नेकनामी के लिये, बड़ा आ़लिम या मुबल्लिग़ या मुतह़र्रिक कहलवाने के लिये येह अ़मल किये तो सरासर तबाही और ख़सारा है।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बा'द इस के कि ह़क़ रास्ता उस पर खुल चुका और मुसल्मानों की राह से जुदा राह चले हम उसे उस के ह़ाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो इस के बा'द कि उस के लिये हिदायत बिल्कुल वाज़ेह़ हो चुकी रसूल की मुख़ालफ़त करे और मुसल्मानों की राह से जुदा राह चले तो हम उसे उधर ही फेर देंगे जिधर वोह फिरता है और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वोह कितनी बुरी लौटने की जगह है।

www.dawateislami.net

﴿وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ﴾ : **और जो रसूल की मुख़ालफ़त करे ।** इस आयत में दो चीज़ों से मन्अ़ किया गया है जो ह़क़ीक़त में एक हैं। पहली चीज़ कि रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं और दूसरी बात कि मुसल्मानों के रास्ते से हट कर चलना जाइज़ नहीं क्यूं कि मुसल्मानों का रास्ता इत़ाअ़ते रसूल का रास्ता है तो इस से हटना इत़ाअ़ते रसूल से हटना होगा।

मुसल्मानों का इज्माअ़ हुज्जत और दलील है

येह आयत इस बात की दलील है कि मुसल्मानों का इज्माअ़ व इत्तिफ़ाक़ हुज्जत व दलील है और इस की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं जैसा कि किताबो सुन्नत की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं।[(1)]

नीज़ इस से साबित हुवा कि मुसल्मानों का रास्ता ही सिरात़े मुस्तक़ीम है। ह़दीस शरीफ़ में है कि जमाअ़त पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हाथ है।[(2)]

एक और ह़दीस में है कि सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअ़त की पैरवी करो जो इस गुरौह से जुदा हुवा वोह जहन्नम में गिरा।[(3)]

इस से वाज़ेह़ है कि ह़क़ मज़्हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त है क्यूं कि येही मुसल्मानों की अक्सरिय्यत का है और येही बड़ी जमाअ़त है।

> اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस का कोई शरीक ठहराया जाए और इस से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए वोह दूर की गुमराही में पड़ा।

---

1 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ١١٥، ص٢٥٣.
2 ......نسائى، كتاب تحريم الدم، قتل من فارق الجماعة... الخ، ص٦٥٦، الحديث: ٤٠٢٧.
3 ......مستدرك، كتاب العلم، من شذّ شذّ فى النار، ٣١٧/١، الحديث: ٤٠٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** इस बात को नहीं बख़्शता कि उस के साथ किसी को शरीक ठहराया जाए और इस से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए वोह दूर की गुमराही में जा पड़ा।

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ﴾ **: अल्लाह शिर्क को नहीं बख़्शेगा।** इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का क़ौल है कि येह आयत एक बूढ़े आ'राबी के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, **या नबिय्यल्लाह !** मैं बूढ़ा हूं, गुनाहों में ग़र्क़ हूं, इस के सिवा कि जब से मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचाना और उस पर ईमान लाया हूं उस वक़्त से कभी मैं ने उस के साथ शिर्क नहीं किया और उस के सिवा किसी और को कारसाज़े ह़क़ीक़ी नहीं बनाया और जुर्अतो दिलेरी के साथ गुनाहों में मुब्तला न हुवा और एक पल भी मैं ने येह गुमान न किया कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से भाग सकता हूं, मैं शरमिन्दा हूं, ताइब हूं, मग़्फ़िरत चाहता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां मेरा क्या ह़ाल होगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

आयत "اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ" से मा'लूम होने वाले मसाइल

(1)...... येह आयत इस बात की क़त़्ई दलील है कि शिर्क नहीं बख़्शा जाएगा जब कि मुश्रिक अपने शिर्क पर मरे और येही हुक्म कुफ़्र का है बल्कि उ़लमा ने यहां शिर्क से मुराद कुफ़्र लिया है। हां काफ़िरो मुश्रिक ज़िन्दगी में तौबा करे तो उस की तौबा यक़ीनन मक़्बूल है।

(2)...... आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि गुनाहे कबीरा, हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद तमाम गुनाह क़ाबिले मग़्फ़िरत हैं अगर्चे हुक़ूक़ुल इबाद की मग़्फ़िरत का त़रीक़ा येह होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़्क़ुल अ़ब्द साहि़बे ह़क़ से मुआ़फ़ करा दे।

(3)...... येह भी मा'लूम हुवा कि कुफ़्रो शिर्क के इ़लावा गुनाहों की बख़्शिश यक़ीनी नहीं बल्कि उम्मीद है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि जिसे चाहे बख़्शे। अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसे चाहेगा येह मा'लूम नहीं लिहाज़ा येह आयत गुनाह पर दिलेर नहीं करती बल्कि गुनाह से रोकती है।

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًاۚ وَ اِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًاۙ ﴿۱۱۷﴾

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١١٦، ١/٤٣٠.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह शिर्क वाले **अल्लाह** के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औ़रतों को और नहीं पूजते मगर सरकश शैत़ान को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येह शिर्क करने वाले **अल्लाह** के सिवा इ़बादत नहीं करते मगर चन्द औ़रतों की और येह इ़बादत नहीं करते मगर सरकश शैत़ान की।

﴿اِنْ یَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا﴾ **: येह शिर्क वाले अल्लाह के सिवा इ़बादत नहीं करते मगर चन्द औ़रतों की।** मुश्रिकीन के बारे में फ़रमाया कि येह कुछ औ़रतों को पूजते हैं या'नी मुअन्नस बुतों को पूजते हैं जैसे लात, उ़ज़्ज़ा, मनात वग़ैरा येह सब मुअन्नस नाम हैं।(1)

यूंही अ़रब के हर क़बीले का एक बुत होता था जिस की वोह इ़बादत करते थे और उस को उस क़बीले की उन्सा या'नी औ़रत कहते थे। एक क़ौल येह भी है कि मुश्रिकीने अ़रब अपने बात़िल मा'बूदों को ख़ुदा की बेटियां कहते थे इस लिये आयत में फ़रमाया कि मुश्रिक औ़रतों को पूजते हैं और एक क़ौल येह है कि मुश्रिकीन बुतों को ज़ेवर वग़ैरा पहना कर औ़रतों की त़रह़ सजाते थे। इस लिये इन्हें औ़रतें फ़रमाया गया है।(2)

इन मुश्रिकीन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि येह ह़क़ीक़त में शैत़ान मरदूद को पूजते हैं क्यूं कि उसी के बहकाने से ही येह बुत परस्ती करते हैं।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِیْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۱۱۸﴾ۙ

وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस पर **अल्लाह** ने ला'नत की और बोला क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुवा ह़िस्सा लूंगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस पर **अल्लाह** ने ला'नत की और इस ने कहा : मैं ज़रूर तेरे बन्दों से मुक़र्ररा ह़िस्सा लूंगा।

﴿لَعَنَهُ اللّٰهُ﴾ **: जिस पर अल्लाह ने ला'नत की।** यहां शैत़ान मुराद है, इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत की और इस ने कहा था कि मैं तेरे बन्दों से मुक़र्ररा ह़िस्सा ज़रूर लूंगा या'नी उन्हें अपना इत़ाअ़त गुज़ार बनाऊंगा।

1 ......بغوی، النساء، تحت الآیة: ۱۱۷، ۱/۳۸٤.
2 ......ابو سعود، النساء، تحت الآیة: ۱۱۷، ۱/۵۸۵.

www.dawateislami.net

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّیَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَیُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَیُغَیِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ یَّتَّخِذِ الشَّیْطٰنَ وَلِیًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِیْنًا ؕ﴿۱۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क़सम है मैं ज़रूर उन्हें बहका दूंगा और ज़रूर उन्हें आरज़ूएं दिलाऊंगा और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह चौपायों के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह **अल्लाह** की पैदा की हुई चीज़ बदल देंगे और जो **अल्लाह** को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाए वोह सरीह़ टोटे में पड़ा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूंगा और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा और मैं उन्हें ज़रूर हुक्म दूंगा तो येह ज़रूर जानवरों के कान चीरेंगे और मैं उन्हें ज़रूर हुक्म दूंगा तो येह **अल्लाह** की पैदा की हुई चीजें बदल देंगे और जो **अल्लाह** को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाए तो वोह खुले नुक़्सान में जा पड़ा।

﴿وَلَاُضِلَّنَّهُمْ : **और मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूंगा।**﴾ येह शैतान का कहना था कि मैं ज़रूर लोगों को त़रह़ त़रह़ की चीज़ों की, कभी लम्बी उ़म्र की, कभी लज़्ज़ाते दुन्या की, कभी बात़िल ख़्वाहिशात और कभी और क़िस्म की उम्मीदें दिलाऊंगा और वोह इन उम्मीदों की दुन्या में फिरते रहेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल रहेंगे।

लम्बी उम्मीद रखने की मज़म्मत

शैत़ान मरदूद का बड़ा मक़्सद लोगों को बहकाना और अ़मली ए'तिबार से ऐसा कर देना है कि नजात व मग़्फ़िरत का कोई रास्ता बाक़ी न रहे, इस के लिये वोह मुख़्तलिफ़ त़रीक़े अपनाता है, उन में से एक येह है कि लम्बे अ़र्से तक ज़िन्दा रहने की सोच इन्सान के दिल, दिमाग़ में बिठा कर मौत से ग़ाफ़िल रखता है, ह़त्ता कि इसी आस उम्मीद पर जीते जीते अचानक वोह वक़्त आ जाता है कि मौत अपने दर्दनाक शिकन्जे में कस लेती है फिर अब पछताए क्या होत जब चिड़ियां चुग गईं खेत, नाचार अपने किये आ'माल के अन्जाम से दो चार होना पड़ता है। फ़ी ज़माना लोगों की अक्सरिय्यत मौत को भूल कर दुन्या की लम्बी उम्मीदों

www.dawateislami.net

में खोई हुई है । इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : लम्बी ज़िन्दगी की उम्मीद दिल में बांध लेना जहालत और नादानी की वज्ह से होता है या फिर दुन्या की मह़ब्बत की वज्ह से । जहालत और नादानी तो येह है कि आदमी अपनी जवानी पर भरोसा कर बैठे और बुढ़ापे से पहले मरने का ख़याल ही दिल से निकाल दे, इसी त़रह़ आदमी की एक नादानी येह है कि तन्दुरुस्ती की ह़ालत में ना गहानी मौत को ना मुम्किन समझे । लिहाज़ा ऐसे शख़्स को चाहिये कि वोह इन बातों में ग़ौर करे : क्या लाखों बच्चे जवानी की दहलीज़ पर पहुंचने से पहले ही राहिये अ़दम न हुए ? क्या हज़ारों इन्सान चढ़ती जवानी में मौत से हम आग़ोश न हुए ? क्या सेंकड़ों नौ जवान भरी जवानी में लुक़्मए अजल न बने ? क्या दस्यों नौ जवान बीमारियों का शिकार न हुए ? इन बातों में ग़ौरो फ़िक्र के साथ एक और बात दिल में बिठा ले कि मौत इस के इख़्तियार में नहीं कि जब येह चाहेगा तो उसी वक़्त आएगी, इस त़रह़ जवानी या किसी और चीज़ पर भरोसा करना ख़ुद ही एक नादानी नज़र आएगी । लम्बी ज़िन्दगी की उम्मीद की दूसरी वज्ह दुन्या की मह़ब्बत है, इन्सान अपने दिल को तसल्ली देता रहता है कि अभी तो ज़माना पड़ा है, अभी किस ने मरना है मैं पहले येह मकान बना लूं, फ़ुलां कारोबार शुरूअ़ कर लूं, अच्छी गाड़ी ख़रीद लूं, सहूलियात से अपनी ज़िन्दगी भर लूं जब बुढ़ापा आएगा तो **अल्लाह अल्लाह** करने लग जाएंगे इस त़रह़ हर काम से दस काम निकालता चला जाता है ह़त्ता कि एक दिन पैग़ामे अजल आ पहुंचता है अब पछताने के इ़लावा उस के पास कुछ नहीं बचता । इस में मुब्तला शख़्स को चाहिये कि दुन्या की बे सबाती और इस की ह़क़ीक़त के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करे क्यूं कि जिस पर दुन्या की ह़क़ीक़त आशकार हो जाए कि दुन्या की लज़्ज़त चन्द रोज़ा है और मौत के हाथों उसे एक दिन ख़त्म होना ही है वोह इसे अ़ज़ीज़ नहीं रख सकता ।(1)

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है

﴿وَلَاٰمُرَنَّهُمْ : **और मैं ज़रूर उन्हें हुक्म दूंगा** ।﴾ येह शैत़ान का क़ौल है कि इस ने कहा मैं लोगों को हुक्म दूंगा कि वोह बुतों के नाम पर जानवरों के कान चीरें या इस त़रह़ की दूसरी ह़रकतें करें । चुनान्चे लोगों ने ऐसा ही किया कि ऊंटनी जब पांच मरतबा बच्चा जन देती तो वोह उस को छोड़ देते और उस से नफ़्अ़ उठाना अपने ऊपर ह़राम कर लेते और उस का दूध बुतों के लिये वक़्फ़ कर देते और उस को बह़ीरा कहते थे । शैत़ान ने उन के दिल में येह बात डाल दी थी कि ऐसा करना इ़बादत है ।

1 ...... کیمیائے سعادت، رکن چہارم: منجیات، اصل دہم، اسباب طول امل، ۲/۹۹۵-۹۹۶، ملخصاً.

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई चीज़ों में ख़िलाफ़े शरअ़ तब्दीलियां करने का शरई हुक्म

शैत़ान ने एक बात येह कही कि वोह लोगों को हुक्म देगा तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की पैदा की हुई चीजें ज़रूर बदलेंगे। याद रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पैदा की हुई चीज़ों में ख़िलाफ़े शरअ़ तब्दीलियां ह़राम हैं। अह़ादीस में इस की काफ़ी तफ़्सील मौजूद है। उन में से 4 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस मर्द पर ला'नत फ़रमाई जो औ़रत का लिबास पहने और उस औ़रत पर ला'नत फ़रमाई जो मर्द का लिबास पहने।[(1)]

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़नाना मर्दों और मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : ‘‘इन्हें अपने घरों से बाहर निकाल दो।’’[(2)]

(3)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ‘‘औ़रतों से मुशाबहत इख़्तियार करने वाले मर्द और मर्दों से मुशाबहत करने वाली औ़रतें सुब्ह़ शाम **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी और उस के ग़ज़ब में होते हैं।’’[(3)]

(4)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ‘‘ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बालों में दूसरे के बाल लगाने वाली और लगवाने वाली और बदन गोदने वाली और गुदवाने वाली पर ला'नत फ़रमाई।’’[(4)]

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲۰﴾ اُولٰٓئِكَ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿۱۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

1 ......ابو داوٗد، کتاب اللباس، باب فی لباس النساء، ۸۳/٤، الحدیث: ٤٠٩٨.
2 ......بخاری، کتاب اللباس، باب اخراج المتشبّھین بالنساء من البیوت، ٧٤/٤، الحدیث: ٥٨٨٦.
3 ......شعب الایمان، السابع والثلاثون من شعب الایمان... الخ، ٣٥٦/٤، الحدیث: ٥٣٨٥.
4 ......مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم فعل الواصلة والمستوصلة... الخ، ص١١٧٥، الحدیث: ١١٩(٢١٢٤).

www.dawateislami.net

الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّاؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِیْلًا ﴿۱۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : शैतान उन्हें वा'दे देता है और आरज़ूएं दिलाता है और शैतान उन्हें वा'दे नहीं देता मगर फ़रेब के उन का ठिकाना दोज़ख़ है और उस से बचने की जगह न पाएंगे। और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें **अल्लाह** का सच्चा वा'दा और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात सच्ची।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : शैतान उन्हें वा'दे देता है और आरज़ूएं दिलाता है और शैतान उन्हें सिर्फ़ फ़रेब के वा'दे देता है। उन का ठिकाना दोज़ख़ है और येह उस से बचने की जगह न पाएंगे। और जो ईमान लाए और अच्छे काम करे तो अन्क़रीब हम उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं, उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, (येह) **अल्लाह** का सच्चा वा'दा है और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात सच्ची है ?

﴿يَعِدُهُمْ : **शैतान उन्हें वा'दे देता है।**﴾ इस आयत में **अल्लाह** तआला ने शैतान का तरीक़ए वारिदात बयान फ़रमाया कि येह लोगों को तरह तरह की उम्मीदें दिलाता और वस्वसे डालता है ताकि इन्सान गुमराही में पड़े जैसे मुश्रिकों को उन का शिर्क अच्छा कर के दिखाता है, मुनाफ़िक़ों को उन की मुनाफ़क़त पसन्द करवाता है, गुनाह के काम करने वालों मसलन फ़िल्में बनाने, गाने बजाने वालों को उन के काम कल्चर, तहज़ीब, आज़ादी और रोशन ख़याली जैसे नामों से मरग़ूब कर के दिखाता है, यूंही रियाकारी, शादी बियाह की ग़लत रुसूमात और फ़ुज़ूल ख़र्ची के काम लोगों से मक़ामो मर्तबा और स्टेटस वग़ैरा के नाम पर करवाता है लेकिन हक़ीक़ते हाल येह है कि शैतान उन्हें धोका देता है क्यूं कि वोह जिस चीज़ के नफ़्अ और फ़ाएदे की तवक़्क़ोअ दिलाता है दर हक़ीक़त उस में सख़्त ज़रर और नुक़्सान होता है।

﴿اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ : **उन का ठिकाना दोज़ख़ है।**﴾ या'नी जो लोग शैतान को अपना दोस्त बनाते और उस की बातों पर अमल करते हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और येह लोग जहन्नम

www.dawateislami.net

से बचने की कोई जगह न पाएंगे बल्कि येह जहन्नम में ज़रूर दाखि़ल होंगे और उस में हमेशा रहेंगे।(1)

﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا : **और जो ईमान लाए।**﴾ कुफ़्फ़ार के बारे में वईद बयान करने के बा'द यहां ईमान वालों के लिये जन्नत के वा'दे का बयान फ़रमाया गया, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे काम किये तो अ़न्क़रीब हम उन्हें ऐसे बाग़ों में दाखि़ल करेंगे जिन के नीचे पानी, दूध, शराब और शह्द की नहरें बहती हैं, वोह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, येह **अल्लाह** तआ़ला का सच्चा वा'दा है और **अल्लाह** तआ़ला से ज़ियादा किसी की बात सच्ची नहीं।(2)

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और न किताब वालों की हवस पर, जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और **अल्लाह** के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औ़रत और हो मुसल्मान तो वोह जन्नत में दाखि़ल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जाएगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : न तुम्हारी झूटी उम्मीदों की कोई हैसिय्यत है और न ही अहले किताब की झूटी उम्मीदों की। जो कोई बुराई करेगा उसे उस का बदला दिया जाएगा और **अल्लाह** के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा और न मददगार। और जो कोई मर्द हो या औ़रत अच्छे अ़मल करे और वोह मुसल्मान भी हो तो येही लोग जन्नत में दाखि़ल होंगे और उन पर तिल के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٢١، ١/٤٣٢.

2 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٢٢، ١/٤٣٢-٤٣٣، روح البيان، النساء، تحت الآية: ١٢٢، ٢/٢٩٠، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

﴿مَنۡ يَّعۡمَلۡ سُوۡٓءًا يُّجۡزَ بِهٖ﴾ : **जो कोई बुराई करेगा उसे उस का बदला दिया जाएगा।** यहां लोगों से फ़रमाया गया कि नजात का दारो मदार न तो तुम्हारी झूटी उम्मीदें हैं कि ऐ मुश्रिको ! तुम ने सोच रखा है कि बुत तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाएंगे और न ही नजात अहले किताब की झूटी उम्मीदों पर है जो कहते हैं कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बेटे और उस के प्यारे हैं, हमें आग चन्द रोज़ से ज़ियादा न जलाएगी यहूदो नसारा का येह ख़याल भी मुश्रिकीन की तरह बातिल है बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ानून येह है कि जो कोई बुराई करेगा उसे उस का बदला दिया जाएगा ख़्वाह मुश्रिकीन में से हो या यहूदो नसारा में से और काफ़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा और न मददगार, अलबत्ता जो मर्द या औ़रत नेक अ़मल करे और वोह मुसल्मान भी हो तो येही बा अ़मल मुसल्मान लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और येह अपने अ़मल की जिस जज़ा के मुस्तहिक़ हैं उस में से तिल के बराबर भी कम कर के उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَمَنۡ اَحۡسَنُ دِيۡنًا مِّمَّنۡ اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحۡسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبۡرٰهِيۡمَ حَنِيۡفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبۡرٰهِيۡمَ خَلِيۡلًا ﴿۱۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बेहतर किस का दीन जिस ने अपना मुंह **अल्लाह** के लिये झुका दिया और वोह नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर चला जो हर बातिल से जुदा था और **अल्लाह** ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस से बेहतर किस का दीन जिस ने अपना चेहरा **अल्लाह** के लिये झुका दिया और वोह नेकी करने वाला हो और वोह इब्राहीम के दीन का पैरौकार हो जो हर बातिल से जुदा थे और **अल्लाह** ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बना लिया।

﴿وَمَنۡ اَحۡسَنُ دِيۡنًا مِّمَّنۡ اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ﴾ : **और उस से बेहतर किस का दीन जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिये झुका दिया।** कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन के मज़ाहिब का बातिल होना बयान करने के लिये ईमान वालों का बयान किया गया और अब ईमान वालों के इमाम व पेश्वा और क़ाइदो

www.dawateislami.net

रहनुमा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बयान किया जा रहा है कि अच्छा दीन तो ताबेए फ़रमान मुसल्मान का है जो इत़ाअ़तो इख़्लास इख़्तियार करे और दीने इब्राहीमी की पैरवी करे जो कि दीने इस्लाम के मुवाफ़िक़ है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़तो मिल्लत सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्लत में दाख़िल है और दीने मुह़म्मदी की ख़ुसूसिय्यात इस के इलावा हैं। दीने मुह़म्मदी की इत्तिबाअ़ करने से शरीअ़ते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पैरवी भी हो जाती है। चूंकि अ़रब और यहूदो नसारा सब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत पर फ़ख़्र करते थे और आप की शरीअ़त इन सब को मक़्बूल थी और शरीअ़ते मुह़म्मदी इस पर ह़ावी है तो इन सब को दीने मुह़म्मदी में दाख़िल होना और इस को क़बूल करना लाज़िम है।

﴿خَلِيْلًا﴾ **: गहरा दोस्त।** ख़ुल्लत के मा'ना हैं ग़ैर से मुन्क़त़अ़ हो जाना, येह उस गहरी दोस्ती को कहा जाता है जिस में दोस्त के ग़ैर से इन्क़िताअ़ हो जाए। एक मा'ना येह है कि ख़लील उस मुह़िब को कहते हैं जिस की मह़ब्बते कामिला हो और उस में किसी क़िस्म का ख़लल और नुक़्सान न हो। येह मा'ना ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में पाए जाते हैं।

अल्लाह तआ़ला के ख़लील व ह़बीब

येह याद रहे कि तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जो कमालात हैं वोह सब के सब सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ासिल हैं। हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़लील भी हैं जैसा कि सह़ीह़ मुस्लिम की ह़दीस में है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने जिस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपना ख़लील बनाया इसी त़रह़ मुझे भी अपना ख़लील बनाया है।(1)

और इस से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब भी हैं जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस में है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़बीब हूं और येह फ़ख़्रन नहीं कहता।(2)

(1)......مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النهی عن بناء المساجد علی القبور...الخ، ص ۲۷۰، الحدیث: ۲۳(۵۳۲).

(2)......ترمذی، کتاب المناقب، باب ما جاء فی فضل النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۱-تابع باب، ۵/۳۵۴، الحدیث: ۳۶۳۶.

www.dawateislami.net

ख़लील और ह़बीब का फ़र्क़

बुज़ुर्गाने दीन ने ख़लील व ह़बीब के फ़र्क़ को यूं बयान फ़रमाया है :

(1)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़ियामत के दिन रुस्वाई से बचने की दुआ़ मांगी ।[1] जब कि **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इन के सदक़े इन के सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को क़ियामत की रुस्वाई से बचाने का मुज़्दा सुनाया ।[2]

(2)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रब तआ़ला से मुलाक़ात की तमन्ना की ।[3] जब कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुद बुला कर शरफ़े मुलाक़ात से सरफ़राज़ फ़रमाया ।[4]

(3)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हिदायत की आरज़ू फ़रमाई ।[5] और ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : और तुम्हें सीधी राह दिखा दे ।[6]

(4)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास फ़िरिश्ते मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान बन कर आए ।[7] और ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये रब तआ़ला ने फ़रमाया : फ़िरिश्ते इन के लश्करी व सिपाही बने ।[8]

(5)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगी ।[9] और ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया कि अपनी उम्मत की मग़्फ़िरत मांगो ।[10]

(6)...... ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बा'द वालों में अपना ज़िक्रे जमील बाक़ी रहने की दुआ़ की ।[11]

---

1 ......الشعراء:٨٧.
2 ......التحريم:٨.
3 ......الصافات :٩٩.
4 ......بنی اسرائيل:١.
5 ......الصافات:٩٩.
6 ......الفتح:٢.
7 ......الذاريات:٢٤.
8 ......التوبة:١٠، ال عمران:١٢٥، التحريم: ٤.
9 ......ابراهيم:٤١.
10 ......سورة محمد:١٩.
11 ......الشعراء:٨٤.

www.dawateislami.net

और हबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से खुद रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया ।(1)

(1)...... हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वाक़िए में **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया : उन्हों ने क़ौमे लूत से अज़ाब दूर किये जाने में बहुत कोशिश की ।(2)

और हबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** इन काफ़िरों पर भी अज़ाब न करेगा जब तक ऐ रहमते आलम तू इन में तशरीफ़ फ़रमा है ।(3)

(8)...... हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ।(4)

और हबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इन के मानने वालों से **अल्लाह** रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा रब फ़रमाता है मुझ से दुआ मांगो मैं क़बूल करूंगा(5) ।(6)

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾ ع

ع ١٨ ١٥

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और हर चीज़ पर **अल्लाह** का क़ाबू है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** हर शै को घेरे हुए है ।

﴿وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا : **और अल्लाह हर शै को घेरे हुए है ।**﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर शै को मुहीत़ है इस का मत़लब येह है कि उस का इल्म और क़ुदरत हर शै का इह़ात़ा किये हुए है और

1......الم نشرح:٤.
2......هود:٧٤،٧٦، عنكبوت:٣٢.
3......انفال:٣٣.
4......ابراهيم:٤٠.
5......المؤمن:٦٠.
6...... फ़तावा रज़विय्या, 30/178, 182 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

किसी शै के जितने पहलू हो सकते हैं वोह तमाम के तमाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म में हैं कोई उस से ख़ारिज नहीं। यहां इ़ल्मी इफ़ादे के तौ़र पर आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की एक इ़बारत पेशे ख़िदमत है, फ़रमाते हैं : इ़ल्मो क़ुदरते इलाही हर शै को मुह़ीत़ होने के भी येह मा'ना नहीं कि उस के इ़ल्मो क़ुदरत हर जगह मुतमक्किन हैं कि जगह या त़रफ़ में होना जिस्म व जिस्मानिय्यत की शान है और वोह और उस के सिफ़ात इन से मुतआ़ली, बल्कि इह़ात़ए इ़ल्म के मा'ना येह हैं कि हर शै वाजिब या मुम्किन या मुम्तनेअ़ मा'दूम या मौजूद ह़ादिस या क़दीम उसे मा'लूम है। इह़ात़ए क़ुदरत के मा'ना येह हैं कि हर मुम्किन पर उसे क़ुदरत है।[1]

وَ يَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَ مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَ تَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से औ़रतों के बारे में फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें उन का फ़तवा देता है और वोह जो तुम पर क़ुरआन में पढ़ा जाता है उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उन का मुक़र्रर है और उन्हें निकाह़ में भी लाने से मुंह फेरते हो और कमज़ोर बच्चों के बारे में और येह कि यतीमों के ह़क़ में इन्साफ़ पर क़ाइम रहो और तुम जो भलाई करो तो **अल्लाह** को उस की ख़बर है।

1...... फ़तावा रज़विय्या, 14/620

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और आप से औ़रतों के बारे में फ़तवा मांगते हैं : तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** और जो किताब तुम्हारे सामने तिलावत की जाती है वोह तुम्हें उन (औ़रतों) के बारे में फ़तवा देते हैं (कि उन के हुक़ूक़ अदा करो) और (वोह तुम्हें फ़तवा देता है) उन यतीम लड़कियों के बारे में जिन्हें तुम उन का मुक़र्रर किया हुवा (मीरास का) हिस्सा नहीं देते और उन से निकाह़ करने से बे रग़बती करते हो (हुक्म येह देता है कि तुम येह काम न करो।) और कमज़ोर बच्चों के बारे में (फ़तवा देता है कि इन के हुक़ूक़ अदा करो) और यतीमों के ह़क़ में इन्साफ़ पर क़ाइम रहो और तुम जो नेकी करते हो तो **अल्लाह** उसे जानता है।

﴿وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ﴾ **: और आप से औ़रतों के बारे में फ़तवा मांगते हैं।﴾ शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब के लोग औ़रत और छोटे बच्चों को मय्यित के माल का वारिस क़रार नहीं देते थे। जब आयते मीरास नाज़िल हुई तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया, **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क्या औ़रत और छोटे बच्चे वारिस होंगे ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को इस आयत से जवाब दिया। ह़ज़रते आ़इशा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि यतीमों के औलिया का दस्तूर येह था कि अगर यतीम लड़की साह़िबे मालो जमाल होती तो उस से थोड़े मह्र पर निकाह़ कर लेते और अगर हुस्न व माल न रखती तो उसे छोड़ देते और अगर हुस्ने सूरत न रखती और होती मालदार तो उस से निकाह़ न करते और इस अन्देशे से दूसरे के निकाह़ में भी न देते कि वोह माल में हि़स्सेदार हो जाएगा **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयतें नाज़िल फ़रमा कर उन्हें इन आ़दतों से मन्अ़ फ़रमाया।[1]

औ़रतों और कमज़ोर लोगों को उन के हुक़ूक़ दिलाना अल्लाह तआ़ला की सुन्नत है

क़ुरआने पाक में यतीमों, बेवाओं और मुआ़शरे के कमज़ोर व मह़रूम अफ़राद के लिये बहुत ज़ियादा हिदायात दी गई हैं। इस से मा'लूम हुवा कि यतीमों, बेवाओं, औ़रतों, कमज़ोरों और मह़रूम लोगों को उन के हुक़ूक़ दिलाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सुन्नत है और इस के लिये कोशिश करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत पसन्द है। इस ज़िम्न में चन्द अह़ादीस मुलाह़ज़ा हों :

(1)...... ह़ज़रते अबू दरदा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٢٧، ١/٤٣٥.

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें येह पसन्द है कि तेरा दिल नर्म हो जाए ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां । इर्शाद फ़रमाया : तेरे पास कोई यतीम आए तो उस के सर पे हाथ फेरो और अपने खाने में से उसे खिलाओ, तेरा दिल नर्म हो जाएगा और तेरी ह़ाजतें भी पूरी होंगी ।(1)

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तीन यतीमों की परवरिश की वोह रात को क़ियाम करने वाले, दिन को रोज़ा रखने वाले और सुब्ह़ शाम **अल्लाह** तआ़ला की राह में अपनी तलवार सोंतने वाले की त़रह़ है और मैं और वोह जन्नत में दो भाइयों की त़रह़ होंगे जैसा कि येह दो बहनें हैं ।" और अपनी अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगली को मिलाया ।(2)

(3)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेवाओं और मिस्कीनों पर ख़र्च करने वाला राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वाले और रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है ।"

(4)...... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मेरे किसी उम्मती की ह़ाजत पूरी करे और उस की निय्यत येह हो कि इस के ज़रीए़ उस उम्मती को ख़ुश करे तो उस ने मुझे ख़ुश किया और जिस ने मुझे ख़ुश किया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश किया और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल करेगा ।(4)

وَ اِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَ الصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَ اِنْ تُحْسِنُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۸﴾

1 ......مصنف عبد الرزاق، كتاب الجامع، باب اصحاب الاموال، ١٠/١٣٥، الحديث: ٢٠١٩٨.
2 ......ابن ماجه، كتاب الادب، باب حقّ اليتيم، ٤/١٩٤، الحديث: ٣٦٨٠.
3 ......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب الحث على المكاسب، ٣/٦، الحديث: ٢١٤٠.
4 ......شعب الايمان، الثالث والخمسون من شعب الايمان... الخ، ٦/١١٥، الحديث: ٧٦٥٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर कोई औ़रत अपने शौहर की ज़ियादती या बे रग़्बती का अन्देशा करे तो उन पर गुनाह नहीं कि आपस में सुल्ह़ कर लें और सुल्ह़ ख़ूब है और दिल लालच के फन्दे में हैं और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो तो **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर किसी औ़रत को अपने शौहर की ज़ियादती या बे रग़्बती का अन्देशा हो तो उन पर कोई ह़रज नहीं कि आपस में सुल्ह़ कर लें और सुल्ह़ बेहतर है और दिल को लालच के क़रीब कर दिया गया है। और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी इख़्तियार करो तो **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

﴿وَ اِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا﴾ **: और अगर किसी औ़रत को अपने शौहर की ज़ियादती का अन्देशा हो।** कुरआन ने घरेलू ज़िन्दगी और मुआ़शरती बुराइयों की इस्लाह़ पर बहुत ज़ोर दिया है इसी लिये जो गुनाह मुआ़शरे में बिगाड़ का सबब बनते हैं और जो चीज़ें ख़ानदानी निज़ाम में बिगाड़ का सबब बनती हैं और ख़राबियों को जनम देती हैं उन की कुरआन में बार बार इस्लाह़ फ़रमाई गई है जैसा कि यहां फ़रमाया गया है कि अगर किसी औ़रत को अपने शौहर की ज़ियादती या बे रग़्बती का अन्देशा हो, **ज़ियादती** तो इस त़रह़ कि शौहर उस से अ़लाह़दा रहे, खाने पहनने को न दे या इस में कमी करे या मारे या बद ज़बानी करे और **ए'राज़ या'नी मुंह फेरना** येह कि बीवी से मह़ब्बत न रखे, बोलचाल तर्क कर दे या कम कर दे। तो उन पर कोई ह़रज नहीं कि आपस में इफ़्हामो तफ़्हीम से सुल्ह़ कर लें जिस का आसान त़रीक़ा येह है कि औ़रत शौहर से अपने मुत़ालबात कुछ कम कर दे और अपने कुछ ह़ुक़ूक़ का बोझ कम कर दे और शौहर यूं करे कि बा वुजूद रग़्बत कम होने के उस बीवी से अच्छा बरताव ब तकल्लुफ़ करे। येह नहीं कि औ़रत ही को कुरबानी का बकरा बनाया जाए। मर्द व औ़रत का यूं आपस में सुल्ह़ कर लेना ज़ियादती करने और जुदाई हो जाने दोनों से बेहतर है क्यूं कि त़लाक़ अगर्चे बा'ज़ सूरतों में जाइज़ है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में निहायत ना पसन्दीदा चीज़ है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **: अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक ह़लाल चीज़ों में सब से ना पसन्द चीज़ त़लाक़ देना है।(1)

1......ابو داوٗد، كتاب الطلاق، باب كراهية الطلاق، ٢/٣٧٠، الحديث: ٢١٧٨.

www.dawateislami.net

दिल लालच के फन्दे में फंसे हुए हैं

मियां बीवी के ए'तिबार से भी और इस से हट कर भी मुआ़मला येह है कि दिल लालच के फन्दे में फंसे हुए हैं, हर एक अपनी राह़तो आसाइश चाहता है और अपने ऊपर कुछ मशक़्क़त गवारा कर के दूसरे की आसाइश को तरजीह़ नहीं देता। लिहाज़ा जो शख़्स दूसरे की राह़त को मुक़द्दम रखता है और ख़ुद तक्लीफ़ उठा कर दूसरों को सुकून पहुंचाता है वोह बहुत बा हिम्मत है, इसी त़रह़ की चीज़ों के बारे में क़ुरआने मजीद में फ़रमाया :

وَ يُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही काम्याब हैं।

और इर्शाद फ़रमाया :

لَتُبْلَوُنَّ فِیْۤ اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ۫ وَ لَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَذًى كَثِیْرًا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़्माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों और मुश्रिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो येह बड़ी हिम्मत का काम है।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَ لَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَ لَا السَّیِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ۝۳۴ وَ مَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا ۚ وَ مَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त। और येह दौलत नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े नसीब वाला।

(1)......حشر:۹۔ (2)......ال عمران:۱۸۶۔ (3)......حم السجدہ:۳۴،۳۵۔

www.dawateislami.net

हदीस शरीफ़ में है, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो तुम से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से रिश्ता जोड़ो और जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस से दर गुज़र करो।(1)

﴿وَاِنْ تُحْسِنُوْا﴾ : **और अगर तुम नेकी करो ।** यहां बतौरे ख़ास औ़रतों के ह़वाले से फ़रमाया गया कि ऐ मर्दो ! अगर तुम नेकी और ख़ौफ़े ख़ुदा इख़्तियार करो और ना मरग़ूब होने के बा वुजूद अपनी मौजूदा औ़रतों पर सब्र करो और उन के साथ अच्छा बरताव करो और उन्हें ईज़ा व रन्ज देने से और झगड़ा पैदा करने वाली बातों से बचते रहो और उन के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने में नेक सुलूक करो और येह जानते रहो कि वोह तुम्हारे पास अमानतें हैं और येह जान कर हुस्ने सुलूक करते रहो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देगा।

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْۤا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से हरगिज़ न हो सकेगा कि औ़रतों को बराबर रखो चाहे कितनी ही ह़िर्स करो तो येह तो न हो कि एक त़रफ़ पूरा झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटक्ती छोड़ दो और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम से हरगिज़ न हो सकेगा कि औ़रतों को बराबर रखो अगर्चे तुम कितनी ही (इस की) ह़िर्स करो तो येह न करो कि (एक ही बीवी की त़रफ़) पूरे पूरे झुक जाओ और दूसरी लटक्ती हुई छोड़ दो और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी इख़्तियार करो तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

﴿وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْۤا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ﴾ : **और तुम से हरगिज़ न हो सकेगा कि औ़रतों को बराबर रखो ।** या'नी अगर तुम्हारी एक से ज़ियादा बीवियां हों तो येह तुम्हारी क़ुदरत में नहीं

1 ......شعب الایمان،السادس والخمسون من شعب الایمان...الخ،٦/٢٢٢،الحدیث:٧٩٥٧.

www.dawateislami.net

कि हर चीज़ में तुम उन्हें बराबर रखो और किसी चीज़ में एक को दूसरी पर तरजीह़ न होने दो, न मैलानो मह़ब्बत में और न ख़्वाहिशो रग़बत में और न नज़रो तवज्जोह में, तुम कोशिश कर के येह तो कर नहीं सकते लेकिन अगर इतना तुम्हारी क़ुदरत में नहीं है और इस वज्ह से इन तमाम पाबन्दियों का बोझ तुम्हारे ऊपर नहीं रखा गया और क़ल्बी मह़ब्बत और त़ब्ई मैलान जो तुम्हारे इख़्तियार में नहीं है उस में बराबरी करने का तुम्हें हुक्म नहीं दिया गया तो येह तो न करो कि एक ही बीवी की त़रफ़ पूरे पूरे झुक जाओ और दूसरी बीवी के लाज़िमी हुक़ूक़ भी अदा न करो बल्कि तुम पर लाज़िम है कि जहां तक तुम्हें क़ुदरतो इख़्तियार है वहां तक यक्सां बरताव करो, मह़ब्बत इख़्तियारी शै नहीं तो बातचीत, हुस्ने अख़्लाक़, खाने, पहनने, पास रखने और ऐसे उमूर जिन में बराबरी करना इख़्तियार में है उन उमूर में दोनों के साथ ज़रूर यक्सां सुलूक करो।

وَ اِنْ یَّتَفَرَّقَا یُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖؕ وَ كَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِیْمًا(۱۳۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर वोह दोनों जुदा हो जाएं तो **अल्लाह** अपनी कशाइश से तुम में हर एक को दूसरे से बे नियाज़ कर देगा और **अल्लाह** कशाइश वाला हिक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर वोह (मियां बीवी) दोनों जुदा हो जाएं तो **अल्लाह** अपनी वुस्अ़त से हर एक को दूसरे से बे नियाज़ कर देगा और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, हिक्मत वाला है।

﴿وَ اِنْ یَّتَفَرَّقَا : **और अगर वोह दोनों जुदा हो जाएं।**﴾ या'नी अगर मियां बीवी में सुल्ह़ न हो सके और त़लाक़ वाक़ेअ़ हो जाए तो दोनों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करें, **अल्लाह** करीम, औ़रत को अच्छा ख़ावन्द और मर्द को अच्छी बीवी अ़त़ा फ़रमा देगा और वुस्अ़त भी बख़्शेगा।

औ़रत और मर्द बिल्कुल एक दूसरे के मोह़ताज नहीं

इस आयत से मा'लूम हुवा कि न औ़रत बिल्कुल मर्द की मोह़ताज है और न मर्द बिल्कुल औ़रत का ह़ाजत मन्द, सब रब عَزَّوَجَلَّ के ह़ाजत मन्द हैं, एक दूसरे के बिग़ैर काम चल सकता है। आ़म तौ़र पर त़लाक़ के बा'द औ़रत और उस के घर वाले बहुत ग़मज़दा होते हैं। ऐसे मौक़अ़ पर अगर येह आयते मुबारका बार बार पढ़ी जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल को तस्कीन

www.dawateislami.net

मिलेगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुनासिब ह़ल भी अ़त़ा फ़रमा देगा। इस में शौहरों को भी हिदायत है कि वोह अपने आप को बीवियों के मालिको मुख़्तार न समझें और येह न समझें कि अगर उन्हों ने छोड़ दिया तो अब काएनात में कोई इन औ़रतों का सहारा नहीं रहेगा। नहीं नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन को सहारा देगा। इसी सिल्सिले में यहां एक मुफ़ीद वज़ीफ़ा पेशे ख़िदमत है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस बन्दे को कोई मुसीबत पहुंचे और वोह येह दुआ़ पढ़ ले "**اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِیْ فِیْ مُصِيْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَيْرًا مِّنْهَا**" तो **अल्लाह** तआ़ला उसे मुसीबत पर सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और उस से बेहतर चीज़ उसे अ़त़ा करेगा। फ़रमाती हैं : जब मेरे शौहर ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने येही दुआ़ पढ़ी, इस की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे उन से बेहतरीन शौहर या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़त़ा फ़रमा दिये।"[(1)]

وَلِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِؕ وَلَقَدْ وَصَّیْنَا الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِیَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِیًّا حَمِیْدًا ﴿۱۳۱﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِؕ وَكَفٰی بِاللّٰهِ وَكِیْلًا ﴿۱۳۲﴾ اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْكُمْ اَیُّهَا النَّاسُ وَیَاْتِ بِاٰخَرِیْنَؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰی ذٰلِكَ قَدِیْرًا ﴿۱۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि **अल्लाह** से डरते रहो और अगर कुफ़्र करो तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** बे नियाज़ है सब ख़ूबियों वाला और **अल्लाह** ही का है जो

1 ......مسلم، كتاب الجنائز، باب ما يقال عند المصيبة، ص٤٥٧، الحديث: ٤(٩١٨).

www.dawateislami.net

कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** काफ़ी है कारसाज़ ऐ लोगो वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए और औरों को ले आए और **अल्लाह** को इस की क़ुदरत है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और बेशक हम ने उन लोगों को जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और तुम्हें भी ताकीद फ़रमा दी है कि **अल्लाह** से डरते रहो और अगर न मानो तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और **अल्लाह** बे नियाज़ है, ख़ूबियों का मालिक है। और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** काफ़ी कारसाज़ है। ऐ लोगो ! अगर वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए और दूसरों को ले आए और **अल्लाह** इस पर क़ादिर है।

﴿اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ **: ऐ लोगो ! अगर वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए।**﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काएनात से ग़नी है। सारी काएनात उस की इबादत करने लगे तो उस की शान में कोई इज़ाफ़ा नहीं हो जाता और सारी दुन्या उस की ना फ़रमान हो जाए तो उस की शान में कोई कमी नहीं आती। वोह ग़नी, बे परवाह है वोह चाहे तो तुम सब को फ़ना कर दे और दूसरे लोगों को ले आए, तुम्हें मौत दे कर दूसरी क़ौम को यहां आबाद कर दे जैसे फ़िरऔन के मुल्क का दूसरों को मालिक बना दिया। उस की शान बुलन्द है और वोह हर शै पर क़ादिर है। ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुमराह हो सिवाए उस के जिसे मैं हिदायत दूं लिहाज़ा मुझ से हिदायत मांगो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा और तुम सब फ़क़ीर हो सिवाए उस के जिसे मैं ग़नी कर दूं लिहाज़ा मुझ से मांगो, मैं तुम्हें रोज़ी दूंगा और तुम सब मुजरिम हो सिवाए उस के जिसे मैं सलामत रखूं तो तुम में से जो येह जान ले कि मैं बख़्श देने पर क़ादिर हूं फिर मुझ से मुआ़फ़ी मांगे तो मैं उसे बख़्श दूंगा और परवाह भी न करूंगा और अगर तुम्हारे अगले पिछले, ज़िन्दा मुर्दे, तर व ख़ुश्क सब मेरे बन्दों में से सब से नेक बन्दे के दिल पर हो जाएं (या'नी सारे इन्सान उस नेक आदमी की त़रह़ हो जाएं) तो येह उन की नेकी मेरे मुल्क में मच्छर के पर बराबर इज़ाफ़ा न करेगी और अगर तुम्हारे अगले पिछले ज़िन्दा मुर्दे तर व ख़ुश्क मेरे बन्दों में से बद बख़्त तरीन आदमी के दिल के मुत़ाबिक़ हो जाएं तो उन के येह जुर्म मेरे मुल्क

www.dawateislami.net

से मच्छर के पर बराबर कम न करेंगे और अगर तुम्हारे पिछले ज़िन्दा मुर्दे तर व ख़ुश्क एक मैदान में जम्अ़ हों और फिर तुम में से हर शख़्स अपनी इन्तिहाई तमन्ना व आरज़ू मुझ से मांगे फिर मैं हर मांगने वाले को दे दूं तो येह मेरे मुल्क के मुक़ाबिल ऐसे ही कम होगा जैसे तुम में से कोई दरिया पर गुज़रे और उस में सूई डुबोए फिर उसे उठाए (या'नी कुछ भी कम न होगा।) येह इस लिये है कि मैं अ़त़ा करने वाला हूं, बहुत देने वाला हूं, जो चाहता हूं करता हूं मेरी अ़त़ा के लिये सिर्फ़ मेरा फ़रमा देना काफ़ी है और मेरे अ़ज़ाब के लिये सिर्फ़ मेरा फ़रमा देना ही काफ़ी है। मेरा हुक्म किसी शै के मुतअ़ल्लिक़ येह है कि जब कुछ चाहता हूं तो सिर्फ़ इतना फ़रमाता हूं "हो जा" तो वोह हो जाती है।(1)

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो दुन्या का इन्आ़म चाहे तो **अल्लाह** ही के पास दुन्या व आख़िरत दोनों का इन्आ़म है और **अल्लाह** सुनता देखता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो दुन्या का इन्आ़म चाहता है तो दुन्या व आख़िरत का इन्आ़म **अल्लाह** ही के पास है और **अल्लाह** ही सुनता देखता है।

﴿مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا : **जो दुन्या का इन्आ़म चाहे।**﴾ इस का मा'ना येह है कि जिस को अपने अ़मल से दुन्या मक़्सूद हो तो वोह दुन्या ही पा सकता है लेकिन वोह सवाबे आख़िरत से महरूम रहता है और जिस ने अ़मल रिज़ाए इलाही और सवाबे आख़िरत के लिये किया हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत दोनों में सवाब देने वाला है तो जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से फ़क़त़ दुन्या का त़ालिब हो वोह नादान, ख़सीस और कम हिम्मत है। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास दुन्या व आख़िरत सब कुछ है तो उस से दुन्या व आख़िरत की भलाई मांगो, मांगने वाले में हिम्मत चाहिये। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि न तो दुन्या को अपना अस्ल मक़्सूद बनाया जाए कि आख़िरत को फ़रामोश कर दे और न बिल्कुल तर्के दुन्या ही कर देनी चाहिये।

1 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، ٤٨-باب، ٤/٢٢٢، الحدیث: ٢٥٠٣.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَ اِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो इन्साफ़ पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ **अल्लाह** के लिये गवाही देते चाहे इस में तुम्हारा अपना नुक़्सान हो या मां बाप का या रिश्तेदारों का जिस पर गवाही दो वोह ग़नी हो या फ़क़ीर हो बहर ह़ाल **अल्लाह** को इस का सब से ज़ियादा इख़्तियार है तो ख़्वाहिश के पीछे न हो जाओ कि ह़क़ से अलग पड़ो और अगर तुम हेर फेर करो या मुंह फेरो तो **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** के लिये गवाही देते हुए इन्साफ़ पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ चाहे तुम्हारे अपने या वालिदैन या रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही (गवाही) हो। जिस पर गवाही दो वोह ग़नी हो या फ़क़ीर बहर ह़ाल **अल्लाह** उन के ज़ियादा क़रीब है तो (नफ़्स की) ख़्वाहिश के पीछे न चलो कि अ़द्ल न करो। अगर तुम हेर फेर करो या मुंह फेरो तो **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

﴾كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ﴿ **: इन्साफ़ पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ।** इस आयते मुबारका में अ़दलो इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरा करने का अहम हुक्म बयान किया गया और जो चीज़ें आदमी को ना इन्साफ़ी की त़रफ़ माइल करने का सबब बन सकती हैं उन को वज़ाह़त के साथ बयान कर दिया कि येह चीज़ें इन्साफ़ करने में आड़े न आएं। अक़्रिबा परवरी, रिश्तेदारों की त़रफ़ दारी करना, तअ़ल्लुक़ वालों की रिआयत करना, किसी की अमीरी की वज्ह से उस की ह़िमायत करना या किसी की ग़रीबी पर तर्स खा कर दूसरे फ़रीक़ पर ज़ियादती कर देना, येह वोह तमाम चीज़ें हैं जो इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे करने में रुकावट हैं इन सब को शुमार करवा कर **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया कि फ़ैसला करते हुए और गवाही देते हुए जो सह़ीह़ हुक्म है उस के मुत़ाबिक़ चलो

www.dawateislami.net

और किसी क़िस्म की तअ़ल्लुक़ दारी का लिहाज़ न करो ह़त्ता कि अगर तुम्हारा फ़ैसला या तुम्हारी गवाही तुम्हारे सगे मां बाप के भी ख़िलाफ़ हो तो अ़द्ल से न हटो।

ह़क़ फ़ैसले की अ़ज़ीम तरीन मिसाल

इस की अ़ज़ीम तरीन मिसाल इस ह़दीसे मुबारक की रोशनी में मुलाह़ज़ा करें। ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : क़बीलए क़ुरैश की एक औ़रत ने चोरी की तो उस के ख़ानदान वालों ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सिफ़ारिश करने के लिये कहा : ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिफ़ारिश की तो ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** तआ़ला की ह़दों में से एक ह़द के बारे में शिफ़ारिश करते हो ? फिर खड़े हुए और ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया : तुम से पहले लोगों को इस बात ने हलाक किया कि जब उन में से कोई मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम कर देते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर फ़ात़िमा बिन्ते मुह़म्मद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) भी चोरी कर लेती तो मैं उस का भी हाथ काट देता।[(1)]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓىٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝۱۳۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ईमान रखो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल पर और इस किताब पर जो अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले उतारी और जो न माने **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और किताबों और रसूलों और क़ियामत को तो वोह ज़रूर दूर की गुमराही में पड़ा।

(1)......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ٥٦-باب، ٤٦٨/٢، الحدیث: ٣٤٧٥.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और उस के रसूल पर और इस किताब पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो इस से पहले नाज़िल की (इन सब पर हमेशा) ईमान रखो और जो **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों और क़ियामत को न माने तो वोह ज़रूर दूर की गुमराही में जा पड़ा।

﴿اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ﴾ **: अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखो।** यहां अहले ईमान को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया "اٰمِنُوْا" "ईमान लाओ" अगर येह ख़ित़ाब ह़क़ीक़ी मुसल्मानों को है तो इस का मा'ना होगा कि ईमान पर साबित क़दम रहो। और अगर येह ख़ित़ाब यहूदो नसारा से हो तो मा'ना येह होंगे कि ऐ बा'ज़ किताबों और बा'ज़ रसूलों पर ईमान लाने वालो ! तुम मुकम्मल ईमान लाओ या'नी तमाम किताबों और तमाम रसूलों पर जिन में क़ुरआन और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी दाख़िल हैं। और अगर येह ख़ित़ाब मुनाफ़िक़ीन से हो तो इस के मा'ना येह होंगे कि ऐ ईमान का ज़ाहिरी दा'वा करने वालो ! इख़्लास के साथ ईमान ले आओ। यहां जो फ़रमाया गया कि रसूल और किताब पर ईमान लाओ तो रसूल से सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और किताब से क़ुरआने पाक मुराद है। यहां येह बात याद रहे कि अहले ईमान का लफ़्ज़ ह़क़ीक़ी मा'ना के ए'तिबार से मौजूदा ज़माने में सिर्फ़ मुसल्मानों पर बोला जा सकता है, किसी और मज़्हब वाले पर ख़्वाह वोह यहूदी हो या ईसाई इस लफ़्ज़ को नहीं बोल सकते। आयत में फ़रमाया गया है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर और उस के रसूल, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और क़ुरआन पर और इस से पहली हर किताब और रसूल पर ईमान लाओ। इस से मा'लूम हुवा कि तमाम किताबों पर ईमान लाना ज़रूरी है मगर अ़मल सिर्फ़ क़ुरआन शरीफ़ पर ही होगा। इन किताबों के मुतअ़ल्लिक़ येह अ़क़ीदा रखना चाहिये कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की भेजी हुई किताबें हैं।

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ یَكُنِ اللّٰهُ لِیَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِیَهْدِیَهُمْ سَبِیْلًا ﴿۱۳۷﴾ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह लोग जो ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े **अल्लाह** हरगिज़ न उन्हें बख़्शे न उन्हें राह दिखाए।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जो ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए फिर ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए फिर कुफ़्र में और बढ़ गए तो **अल्लाह** हरगिज़ न उन्हें बख़्शेगा और न उन्हें राह दिखाएगा।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: बेशक जो ईमान लाए।** **शाने नुज़ूल :** हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जो हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए फिर बछड़े की पूजा कर के काफ़िर हुए फिर इस के बा'द ईमान लाए फिर हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इन्जील का इन्कार कर के काफ़िर हो गए फिर मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और कुरआन का इन्कार कर के और कुफ़्र में बढ़ गए। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई कि वोह ईमान लाए फिर ईमान के बा'द काफ़िर हो गए फिर ईमान लाए या'नी उन्हों ने अपने ईमान का इज़्हार किया ताकि उन पर मोमिनीन के अह़काम जारी हों फिर कुफ़्र में बढ़े या'नी कुफ़्र पर उन की मौत हुई।(1)

उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें नहीं बख़्शेगा या'नी जब कि येह कुफ़्र पर रहें और कुफ़्र पर मरें क्यूं कि कुफ़्र बख़्शा नहीं जाता मगर जब कि काफ़िर तौबा करे और ईमान लाए तो बख़्शिश का मुस्तह़िक़ हो गया जैसा कि एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

قُلْ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ یَّنْتَهُوْا یُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा।

ह़दीस शरीफ़ में है "इस्लाम सारे साबिक़ा गुनाहों को ख़त्म कर देता है।"(3)

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِیْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمَاۙ ﴿۱۳۸﴾ الَّذِیْنَ یَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ؕ اَیَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا ؕ﴿۱۳۹﴾

1......خازن، النساء، تحت الآية: ١٣٧، ١/ ٤٤٠.
2......انفال: ٣٨.
3......مسلم، كتاب الايمان، باب كون الاسلام يهدم ما قبله... الخ، ص٧٤، الحديث: ١٩٢(١٢١).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ख़ुश ख़बरी दो मुनाफ़िक़ों को कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है वोह जो मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्या उन के पास इ़ज़्ज़त ढूंडते हैं तो इ़ज़्ज़त तो सारी **अल्लाह** के लिये है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मुनाफ़िक़ों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। वोह जो मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं। क्या येह उन के पास इ़ज़्ज़त ढूंडते हैं ? तो तमाम इ़ज़्ज़तों का मालिक **अल्लाह** है।

﴿اَلَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ **: वोह जो मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं।** इस से पहली आयते मुबारका में मुनाफ़िक़ों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब की वई़द बयान की गई है और फिर मुनाफ़िक़ों की एक करतूत भी बयान की गई है कि येह मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्यूं कि उन का ख़याल था कि इस्लाम ग़ालिब न होगा और इस लिये वोह कुफ़्फ़ार को साहि़बे क़ुव्वतो शौकत समझ कर उन से दोस्ती करते थे और उन से मिलने में इ़ज़्ज़त जानते थे ह़ालां कि कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती मम्नूअ़ है और उन से मिलने में इ़ज़्ज़त समझना बाति़ल है। इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िरों से मह़ब्बत और दोस्ती रखना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत है ख़ुसूसन मुसल्मानों के मुक़ाबले में। ऐसे सब लोगों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया जा रहा है कि क्या लोगों के पास जा कर इ़ज़्ज़त तलाश करते हैं ह़ालां कि तमाम इ़ज़्ज़तों का मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है तो वोही ख़ुदावन्दे करीम ही इ़ज़्ज़त वाला है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से वोह इ़ज़्ज़त वाले जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त दे जैसे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मोमिनीन। मुनाफ़िक़ों के मज़्कूरा बाला त़र्ज़े अ़मल को सामने रख कर आज दुन्या के ह़ालात को देखें तो मा'लूम होगा कि येह मरज़ आज कल ब कसरत पाया जा रहा है, अपनों को छोड़ कर बेगानों से दोस्तियां, मुसल्मानों को छोड़ का काफ़िरों से प्यार, बाहमी इत्तिह़ाद से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की बजाए कुफ़्फ़ार के क़दमों में बैठ कर इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की कोशिश करना मुसल्मान क़ौम में किस त़रह़ सरायत किये हुए है। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को अ़क़्ले सलीम अ़ता फ़रमाए।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا
وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖۤ

www.dawateislami.net

اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَاۨ ۙ﴿۱۴۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** तुम पर किताब में उतार चुका कि जब तुम **अल्लाह** की आयतों को सुनो कि उन का इन्कार किया जाता और उन की हंसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ न बैठो जब तक वोह और बात में मश्ग़ूल न हों वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो बेशक **अल्लाह** काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों सब को जहन्नम में इकठ्ठा करेगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक **अल्लाह** तुम पर किताब में येह हुक्म नाज़िल फ़रमा चुका है कि जब तुम सुनो कि **अल्लाह** की आयतों का इन्कार किया जा रहा है और उन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो उन लोगों के साथ न बैठो जब तक वोह किसी दूसरी बात में मश्ग़ूल न हो जाएं वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। बेशक **अल्लाह** मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को जहन्नम में इकठ्ठा करने वाला है।

﴿وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ : **और बेशक अल्लाह तुम पर किताब में येह हुक्म नाज़िल फ़रमा चुका है।**﴾ इस आयते मुबारका में वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमा दिया कि जो लोग **अल्लाह** तआ़ला की आयतों का इन्कार करते हैं और उन का मज़ाक़ उड़ाते हैं जब वोह इस ख़बीस फ़े'ल में मसरूफ़ हों तो उन के पास न बैठो बल्कि हुक्म येह है कि ऐसी जगह पर जाओ ही नहीं और अगर जाना पड़ जाए तो जब हाथ से रोकना मुम्किन हो तो हाथ से रोको और अगर ज़बान से रोक सकते हो तो ज़बान से रोको और अगर येह भी न कर सको तो दिल में इस ह़रकत से नफ़रत करते हुए वहां से उठ जाओ और उन की हम नशीनी हरगिज़ इख़्तियार न करो क्यूं कि जब क़ुरआन, शरीअ़त या दीन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो और इस के बा वुजूद कोई आदमी वहां बैठा रहे तो या तो येह ख़ुद इस फ़े'ल में मुब्तला हो जाएगा या उन की सोह़बत की नुह़ूसत से मुतअस्सिर होगा या कम अज़ कम इतना तो साबित हो ही जाएगा कि इस शख़्स के दिल में भी दीन की क़द्रो क़ीमत नहीं है क्यूं कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क़ुरआने मजीद और दीने मुबीन से मह़ब्बत होती तो जहां इन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है वहां हरगिज़ न बैठता क्यूं कि इन्सानी फ़ित़रत है कि जहां आदमी के प्यारे को बुरा कहा जाए वहां

www.dawateislami.net

वोह नहीं बैठता जैसे किसी के मां बाप को जिस जगह गाली दी जाए वहां बैठना आदमी बरदाश्त नहीं कर सकता। तो जब मां बाप की तौहीन और गाली वाली जगह पर बैठना आदमी को गवारा नहीं तो जहां **अल्लाह** तआला, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कुरआन व दीन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो वहां कोई मुसलमान कैसे बैठ सकता है ? क्या مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़द्र मां बाप के भी बराबर नहीं है।

बुरी सोहबत की मज़म्मत

इस आयत से वोह लोग सबक़ हासिल करें जो फ़िल्मों, ड्रामों, गानों, थियेटरों, दोस्तों की गपों और बद मज़्हबों की सोहबतों में दीन का मज़ाक़ उड़ता हुवा देखते हैं और फिर भी वहां बैठते रहते हैं बल्कि مَعَاذَ اللّٰه उन की हां में हां मिला रहे होते हैं। बुरी सोहबत के बारे में अहादीस ब कसरत हैं। उन में से 5 अहादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बुरे साथी से बच कि तू उसी के साथ पहचाना जाएगा (या'नी जैसे लोगों के पास आदमी की निशस्तो बरख़ास्त होती है लोग उसे वैसा ही जानते हैं)।[1]

(2)...... हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : नेक और बुरे हम नशीन की मिसाल ऐसी है जैसे एक के पास मुश्क है और दूसरा धोंकनी धोंक रहा है मुश्क वाला या तो तुझे मुश्क वैसे ही देगा या तू उस से ख़रीद लेगा और कुछ न सही तो ख़ुश्बू तो आएगी और वोह दूसरा तेरे कपड़े जला देगा या तू उस से बदबू पाएगा।[2]

(3)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी बद मज़्हब को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस में उस का दिल ख़ुश हो तो उस ने उस चीज़ की तह़क़ीर की जो **अल्लाह** तआला ने मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतारी।[3]

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ितने में न डाल दें।[4]

1 ......ابن عساكر، الحسين بن جعفر بن محمد بن حمدان... الخ، ٤٦/١٤.
2 ......بخاری، کتاب البيوع، باب فی العطار وبيع المسك، ٢٠/٢، الحديث: ٢١٠١.
3 ......تاريخ بغداد، ٥٣٧٨-عبد الرحمن بن نافع، ابوزياد المخرّمی... الخ، ٢٦٢/١٠.
4 ......مسلم، باب النهی عن الرواية عن الضعفاء والاحتياط فی تحمّلها، ص٩، الحديث: ٧(٧).

www.dawateislami.net

(5)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को चाहिये कि वोह देखे किस से दोस्ती कर रहा है।(1)

मौलाना मा'नवी قُدِّسَ سِرُّہٗ फ़रमाते हैं :

صحبتِ صالح تُرا صالح کُنَد　　　　صحبتِ طالح تُرا طالح کند

या'नी अच्छे आदमी की सोह़बत तुझे अच्छा कर देगी और बुरे आदमी की सोह़बत तुझे बुरा बना देगी।(2)

الَّذِیْنَ یَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْۤا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَ اِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِیْنَ نَصِیْبٌۙ قَالُوْۤا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَیْكُمْ وَ نَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَؕ فَاللّٰهُ یَحْكُمُ بَیْنَكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِؕ وَ لَنْ یَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِیْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ سَبِیْلًا۠ (۱۴۱) ع

ركوع ٢٠

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो तुम्हारी ह़ालत तका करते हैं तो अगर **अल्लाह** की त़रफ़ से तुम को फ़त्ह़ मिले कहें क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों का ह़िस्सा हो तो उन से कहें क्या हमें तुम पर क़ाबू न था और हम ने तुम्हें मुसल्मानों से बचाया तो **अल्लाह** तुम सब में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा और **अल्लाह** काफ़िरों को मुसल्मानों पर कोई राह न देगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह जो तुम्हारे ऊपर (गर्दिशे ज़माना) का इन्तिज़ार करते रहते हैं फिर अगर **अल्लाह** की त़रफ़ से तुम्हें फ़त्ह़ मिले तो कहते हैं : क्या हम तुम्हारे साथ न थे ? और अगर काफ़िरों के लिये (फ़त्ह़ का) ह़िस्सा हो तो (उन से) कहते हैं : क्या हम तुम पर ग़ालिब न थे ? और (क्या) हम ने मुसल्मानों को तुम से रोके (न) रखा ? तो **अल्लाह** तुम्हारे दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा और **अल्लाह** काफ़िरों को मुसल्मानों पर कोई राह न देगा।

1......ترمذی، کتاب الزھد، ٤٥-باب، ٤/١٦٧، الحدیث: ٢٣٨٥.

2...... अच्छी सोह़बत और नेक माह़ोल पाने के लिये दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्ता हो जाइये।

www.dawateislami.net

﴿اَلَّذِیْنَ یَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ﴾ : **वोह जो तुम पर इन्तिज़ार करते हैं ।** यहां मुनाफ़िक़ों की ह़ालत का बयान है कि ऐ मुसल्मानो ! येह मुनाफ़िक़ तुम्हारे ऊपर गर्दिशे ज़माना का इन्तज़ार करते हैं फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तुम्हें फ़त्ह़ मिले तो मुसल्मानों से कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे ? लिहाज़ा हमें भी माले ग़नीमत दो । और अगर काफ़िरों को फ़त्ह़ नसीब हो जाए तो उन से कहते हैं कि क्या हम तुम पर ग़ालिब न थे कि तुम्हें पकड़ सकते थे मगर फिर भी हम ने तुम्हें न पकड़ कर तुम्हारी मदद की और हम ने मुसल्मानों को तुम से रोके रखा लिहाज़ा हमारा ह़िस्सा दो । अल ग़रज़ मुनाफ़िक़ों की ज़िन्दगी सिर्फ़ अपने मफ़ाद के गिर्द घूमती है वोह किसी के साथ भी ह़क़ीक़ी त़ौर पर मुख़्लिस नहीं ।

اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ یُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ یُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۱۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में **अल्लाह** को फ़रेब दिया चाहते हैं और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से लोगों का दिखावा करते हैं और **अल्लाह** को याद नहीं करते मगर थोड़ा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में **अल्लाह** को फ़रेब देना चाहते हैं और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो बड़े सुस्त हो कर लोगों के सामने रियाकारी करते हुए खड़े होते हैं और **अल्लाह** को बहुत थोड़ा याद करते हैं ।

﴿اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ یُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ﴾ : **बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब देना चाहते हैं ।** यहां मुनाफ़िक़ों की एक और बुरी ख़स्लत का बयान है वोह येह कि येह अपने गुमान में **अल्लाह** तआ़ला को धोका देना चाहते हैं, ह़क़ीक़तन तो मुसल्मानों को धोका देना चाहते हैं क्यूं कि ह़क़ीक़त में तो **अल्लाह** तआ़ला को फ़रेब देना मुम्किन नहीं । उन के इस फ़रेब का जवाब उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देगा कि उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा, दुन्या में उन्हें रुस्वा करेगा और क़ियामत में उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा । उन मुनाफ़िक़ों की अ़लामत येह है कि जब मोमिनीन

www.dawateislami.net

के साथ नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो मरे दिल से और सुस्ती के साथ खड़े होते हैं क्यूं कि उन के दिलों में ईमान तो है नहीं जिस से इबादत का ज़ौक़ और बन्दगी का लुत्फ़ उन्हें ह़ासिल हो सके, मह़ज़ लोगों को दिखाने के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।

नमाज़ में सुस्ती करना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत है

इस से मा'लूम हुवा कि नमाज़ में सुस्ती करना मुनाफ़िक़ों की अ़ालामत है। नमाज़ न पढ़ना या सिर्फ़ लोगों के सामने पढ़ना जब कि तन्हाई में न पढ़ना या लोगों के सामने ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ से और तन्हाई में जल्दी जल्दी पढ़ना या नमाज़ में इधर उधर ख़याल ले जाना, दिल जम्ई के लिये कोशिश न करना वग़ैरा सब सुस्ती की अ़लामतें हैं।

नमाज़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा करने का आसान नुस्ख़ा

किसी ने ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से उन की नमाज़ के बारे में पूछा तो फ़रमाया : जब नमाज़ का वक़्त क़रीब आता है तो मैं कामिल वुज़ू करता हूं फिर जिस जगह नमाज़ अदा करने का इरादा होता है वहां आ कर इतनी देर बैठ जाता हूं कि मेरे आ'ज़ा इकठ्ठे हो जाएं, इस के बा'द येह तसव्वुर बांध कर नमाज़ के लिये खड़ा होता हूं कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा मेरे सामने है, पुल सिरात़ मेरे क़दमों के नीचे है, जन्नत मेरे दाईं त़रफ़ और जहन्नम बाईं त़रफ़ है, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पीछे खड़े हैं और मेरा येह गुमान होता है कि येह मेरी आख़िरी नमाज़ है, फिर मैं उम्मीद और ख़ौफ़ के दरमियान क़ियाम करता हूं और जैसे तक्बीर कहनी चाहिये वैसे तक्बीर कहता हूं और ठहर ठहर कर क़िराअत करता हूं, आ़जिज़ी के साथ रुकूअ़ करता हूं, डरते हुए सज्दा करता हूं, बाईं पिंडली पर बैठ कर अपने क़दम का पिछला हिस्सा बिछा देता हूं और दायां क़दम अंगूठे पर खड़ा कर देता हूं, फिर इख़्लास के साथ बाक़ी अफ़्आ़ल अदा करता हूं अब मैं नहीं जानता कि मेरी नमाज़ क़बूल भी हुई न या नहीं।[1]

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ

1 ......احياء علوم الدين، كتاب اسرار الصلاة ومهماتها، الباب الاول، فضيلة الخشوع، ٢٠٦/١.

www.dawateislami.net

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۱۴۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बीच में डगमगा रहे हैं न इधर के न उधर के और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे तो उस के लिये कोई राह न पाएगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : दरमियान में डगमगा रहे हैं, न इन की त़रफ़ हैं न उन की त़रफ़ और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे तो तुम उस के लिये कोई रास्ता न पाओगे।

﴾مُذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ﴿ **: दरमियान में डगमगा रहे हैं।** या'नी मुनाफ़िक़ीन कुफ़्र और ईमान के दरमियान डगमगा रहे हैं क्यूं कि न तो येह ह़क़ीक़ी त़ौर पर मोमिन और मुख़्लिस ईमान वालों के साथ हैं और न वाज़ेह़ त़ौर पर काफ़िर और सरीह़ शिर्क करने वालों के साथ हैं और ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप इन मुनाफ़िक़ीन के राहे रास्त पर आने की उम्मीद न रखें क्यूं कि जिसे हिदायत व तौफ़ीक़ की लियाक़त न होने की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला गुमराह कर दे तो आप उस के लिये कोई ऐसा रास्ता न पाएंगे जिस पर चल कर वोह ह़क़ तक पहुंच सके।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसल्मानों के सिवा क्या येह चाहते हो कि अपने ऊपर **अल्लाह** के लिये सरीह़ हुज्जत कर लो।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ। क्या तुम येह चाहते हो कि अपने ऊपर **अल्लाह** के लिये सरीह़ हुज्जत क़ाइम कर लो।

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٤٣، ١/٤٤٢، روح البيان، النساء، تحت الآية: ١٤٣، ٢/٣٠٨، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

﴿اَوْلِيَآءَ : दोस्त ।﴾ इस आयत में मुसल्मानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार को दोस्त बनाना मुनाफ़िक़ीन की ख़स्लत है, लिहाज़ा तुम इस से बचो । क्या तुम येह चाहते हो कि काफ़िरों को दोस्त बना कर मुनाफ़क़त की राह इख़्तियार करो और यूं अपने ख़िलाफ़ **अल्लाह** तआ़ला की हुज्जत क़ाइम कर लो ।

اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ فِی الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِیْرًا ۙ﴿۱۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे तृबके़ में हैं और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले तृबके़ में हैं और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा ।

﴿اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ فِی الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ : **बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले तृबके़ में हैं ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि बेशक मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख़ के सब से निचले तृबके़ में होंगे और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा जो उन्हें अ़ज़ाब से बचा सके और जहन्नम के सब से निचले तृबके़ से उन्हें बाहर निकाल सके ।(1)

याद रहे कि मुनाफ़िक़ का अ़ज़ाब काफ़िर से भी ज़ियादा है क्यूं कि वोह दुन्या में ख़ुद को मुसल्मान कह कर के मुजाहिदीन के हाथों से बचा रहा है और काफ़िर होने के बा वुजूद मुसल्मानों को धोका देना और इस्लाम के साथ इस्तिहज़ा करना इस का शेवा रहा है ।

اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِیْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓىٕكَ مَعَ الْمُؤْمِنِیْنَ ؕ وَسَوْفَ یُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِیْنَ اَجْرًا

1 ......روح البيان، النساء، تحت الآية: ١٤٥، ٢/٣٠٩.

www.dawateislami.net

عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जिन्हों ने तौबा की और संवरे और **अल्लाह** की रस्सी मज़्बूत़ थामी और अपना दीन ख़ालिस **अल्लाह** के लिये कर लिया तो येह मुसल्मानों के साथ हैं और अ़न्क़रीब **अल्लाह** मुसल्मानों को बड़ा सवाब देगा। और **अल्लाह** तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम ह़क़ मानो और ईमान लाओ और **अल्लाह** है सिला देने वाला जानने वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मगर वोह लोग जिन्हों ने तौबा की और अपनी इस्लाह़ कर ली और **अल्लाह** की रस्सी को मज़्बूती से थाम लिया और अपना दीन ख़ालिस **अल्लाह** के लिये कर लिया तो येह मुसल्मानों के साथ हैं और अ़न्क़रीब **अल्लाह** मुसल्मानों को बड़ा सवाब देगा। और अगर तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ और ईमान लाओ तो **अल्लाह** तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा और **अल्लाह** क़द्र करने वाला, जानने वाला है।

﴿اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا : **मगर वोह लोग जिन्हों ने तौबा की।**﴾ इस आयत और इस के बा'द वाली आयत का ख़ुलासा येह है कि वोह लोग जिन्हों ने अपने निफ़ाक़ से तौबा कर ली और अपने फ़ासिद अह़वाल की इस्लाह़ कर ली और **अल्लाह** तआ़ला के दीन की रस्सी को मज़्बूती से थाम लिया और अपना दीन ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के लिये कर लिया और उस की इत़ाअ़त में सिर्फ़ उसी की रिज़ा चाही तो ऐसे लोग जन्नत के बुलन्द दरजात में मुसल्मानों के साथ हैं और उन्हें उन का साबिक़ा निफ़ाक़ कोई नुक़्सान न देगा और अ़न्क़रीब **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों को बड़ा सवाब देगा जिस में येह निफ़ाक़ से सच्ची तौबा करने वाले भी शरीक होंगे और ऐ लोगो ! अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला के शुक्र गुज़ार बन्दे बन जाओ और उस पर ईमान लाओ तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा और **अल्लाह** तआ़ला की शान येह है कि वोह शुक्र गुज़ार मुसल्मानों की क़द्र करने वाला और उन्हें जानने वाला है।(1)

1 ……روح البيان، النساء، تحت الآية: ١٤٦-١٤٧، ٢/٣٠٩-٣١١.

www.dawateislami.net

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ

6

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** पसन्द नहीं करता बुरी बात का ए'लान करना मगर मज़्लूम से और **अल्लाह** सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बुरी बात का ए'लान करना **अल्लाह** पसन्द नहीं करता मगर मज़्लूम से और **अल्लाह** सुनने वाला जानने वाला है।

﴾لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ﴿ **: बुरी बात का ए'लान करना अल्लाह पसन्द नहीं करता।** **एक क़ौल** येह है कि बुरी बात के ए'लान से मुराद किसी के पोशीदा मुआ़मलात को ज़ाहिर करना है जैसे किसी की ग़ीबत करना या किसी की चुग़ली खाना वग़ैरा।(1)

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात को पसन्द नहीं फ़रमाता कि कोई शख़्स किसी के पोशीदा मुआ़मलात को ज़ाहिर करे। **दूसरा क़ौल** येह है कि बुरी बात के ए'लान से मुराद गाली देना है।(2)

या'नी **अल्लाह** तआ़ला इस बात को पसन्द नहीं करता कि कोई किसी को गाली दे।

एक दूसरे को गाली देने की मज़म्मत

गाली देना गुनाह और मुसल्मान की शान से बईद है। इस के बारे में 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, वोह इस पर ज़ुल्म नहीं करता और न इसे गाली देता है।(3)

1 ......جمل، النساء، تحت الآية: ١٤٨، ٢/١٤٤.

2 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ١٤٨، ص ٢٦١.

3 ......شرح السنه، كتاب البر والصلة، باب الستر، ٦/٤٨٩، الحديث: ٣٤١٢.

www.dawateislami.net

(2)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान को गाली देना फ़िस्क़ और इसे क़त्ल करना कुफ़्र है।[(1)]

(3)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आपस में गाली देने वाले दो आदमी जो कुछ कहें तो वोह (या'नी इस का वबाल) इब्तिदा करने वाले पर है जब तक कि मज़्लूम ह़द से न बढ़े।[(2)]

बुरी बात का ए'लान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं अलबत्ता मज़्लूम को इस बात की इजाज़त है कि वोह ज़ालिम के ज़ुल्म को बयान करे, लिहाज़ा वोह चोर या ग़ासिब की निस्बत कह सकता है कि उस ने मेरा माल चुराया या ग़स्ब किया है।[(3)]

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि एक शख़्स एक क़ौम का मेहमान हुवा था और उन्हों ने अच्छी त़रह़ उस की मेज़बानी न की, जब वोह वहां से निकला तो उन की शिकायत करता हुवा निकला।[(4)]

इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई। एक शख़्स सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में ज़बान दराज़ी करता रहा, ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे मगर वोह बाज़ न आया तो एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को जवाब दे दिया, इस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ खड़े हुए। ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया, **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, येह शख़्स मुझे बुरा भला कहता रहा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ न फ़रमाया और मैं ने एक मरतबा जवाब दिया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ गए। इर्शाद फ़रमाया : ''एक फ़िरिश्ता तुम्हारी त़रफ़ से जवाब दे रहा था और जब तुम ने जवाब दिया तो फ़िरिश्ता चला गया और शैत़ान आ गया।'' इस के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई।[(5)]

1......بخاری، کتاب الفتن، باب قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم: لا ترجعوا بعدی کفّاراً... الخ، ٤/٤٣٤، الحدیث: ٧٠٧٦.

2......مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب النهی عن السباب، ص١٣٩٦، الحدیث: ٦٨(٢٥٨٧).

3......جمل، النساء، تحت الآیة: ١٤٨، ٢/١٤٥.

4......بیضاوی، النساء، تحت الآیة: ١٤٨، ٢/٢٧٢.

5......خازن، النساء، تحت الآیة: ١٤٨، ١/٤٤٤.

www.dawateislami.net

मेहमान नवाज़ी से ख़ुश न होने वालों को नसीहत

पहले या'नी मेहमान नवाज़ी वाले शाने नुज़ूल को लें तो उस से उन लोगों को इब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो मेज़बान की मेहमान नवाज़ी से ख़ुश नहीं होते अगर्चे घर वाले ने कितनी ही तंगी से खाने का एहतिमाम किया हो। ख़ुसूसन रिश्तेदारों में और बिल ख़ुसूस सुसराली रिश्तेदारों में मेहमान नवाज़ी पर शिक्वा शिकायत आ़म है। एक खाना बनाया तो ए'तिराज़ कि दो क्यूं नहीं बनाए ? दो बनाए तो ए'तिराज़ कि तीन क्यूं नहीं बनाए ? नमकीन बनाया तो ए'तिराज़ कि मीठा क्यूं नहीं बनाया ? मीठा बनाया तो ए'तिराज़ कि फ़ुलां मीठा क्यूं नहीं बनाया ? अल ग़रज़ बहुत से मेहमान ज़ुल्मो ज़ियादती और ईज़ा रसानी से बाज़ नहीं आते और ऐसे रिश्तेदारों को देख कर घर वालों की त़बीअ़त ख़राब होना शुरूअ़ हो जाती है। ह़दीसे मुबारक में मेहमान को हुक्म दिया गया है कि किसी मुसल्मान शख़्स के लिये ह़लाल नहीं कि वोह अपने (मुसल्मान) भाई के पास इतना अ़र्सा ठहरे कि उसे गुनाह में मुब्तला कर दे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, वोह उसे गुनाह में कैसे मुब्तला करेगा ? इर्शाद फ़रमाया : वोह अपने भाई के पास ठहरा होगा और ह़ाल येह होगा कि उस के पास कोई ऐसी चीज़ न होगी जिस से वोह उस की मेहमान नवाज़ी कर सके।[1]

ज़ालिम के ज़ुल्म को बयान करना जाइज़ है

आयत में मज़्लूम को ज़ुल्म बयान करने की इजाज़त दी गई। इस से मा'लूम हुवा कि मज़्लूम, ह़ाकिम के सामने ज़ालिम की बुराई बयान कर सकता है, येह ग़ीबत में दाख़िल नहीं। इस से हज़ारहा मसाइल मा'लूम हो सकते हैं। ह़दीस के रावियों का फ़िस्क़ या ऐ़ब वग़ैरा बयान करना, चोर या ग़ासिब की शिकायत करना, मुल्क के ग़द्दारों की हुकूमत को इत्तिलाअ़ देना सब जाइज़ है। ग़ीबत के जवाज़ की जितनी भी सूरतें हैं वोह सब किसी न किसी बड़े फ़ाएदे की वज्ह से हैं।

اِنْ تُبْدُوْا خَیْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِیْرًا ﴿۱۴۹﴾

1 ......مسلم، كتاب اللقطة، باب الضيافة ونحوها، ص ٩٥١، الحديث: ١٥(١٧٢٦).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम कोई भलाई अ़लानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दर गुज़रो तो बेशक **अल्लाह** मुआ़फ़ करने वाला क़ुदरत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम कोई भलाई ए'लानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दर गुज़र करो तो बेशक **अल्लाह** मुआ़फ़ करने वाला क़ुदरत वाला है।

﴿اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا : **अगर तुम कोई भलाई ए'लानिया करो।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम कोई नेक काम ए'लानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दर गुज़र करो तो येह अफ़्ज़ल है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला सज़ा देने पर हर त़रह़ से क़ादिर होने के बा वुजूद अपने बन्दों के गुनाहों से दर गुज़र करता और उन्हें मुआ़फ़ फ़रमाता है लिहाज़ा तुम भी अपने ऊपर ज़ुल्मो सितम करने वालों को मुआ़फ़ कर दो और लोगों की ग़लत़ियों से दर गुज़र करो।[1]

मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल

इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़ालिम से बदला लेना अगर्चे जाइज़ है लेकिन ज़ालिम से बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद उस के ज़ुल्म पर सब्र करना और उसे मुआ़फ़ कर देना बेहतर और अज्रो सवाब का बाइस है, इसी चीज़ के बारे में एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَ لَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर तुम (किसी को) सज़ा देने लगो तो ऐसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाई गई हो और अगर तुम सब्र करो तो बेशक सब्र वालों के लिये सब्र सब से बेहतर है।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَ لَمَنْ صَبَرَ وَ غَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक जिस ने सब्र किया और मुआ़फ़ कर दिया तो येह ज़रूर हिम्मत वाले कामों में से है।

1 ......تفسير سمرقندى، النساء، تحت الآية: ١٤٩، ١/٤٠١، روح البيان، النساء، تحت الآية: ١٤٩، ٢/٣١٢، ملتقطاً.
2 ......نحل: ١٢٦.
3 ......شورى: ٤٣.

www.dawateislami.net

और इर्शाद फ़रमाया :

وَجَزٰٓؤُا سَیِّئَةٍ سَیِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बुराई का बदला उस के बराबर बुराई है तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र **अल्लाह** (के ज़िम्मए करम) पर है, बेशक वोह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

और इर्शाद फ़रमाया :

وَلْیَعْفُوْا وَلْیَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन्हें चाहिये कि मुआफ़ कर दें और दर गुज़र करें, क्या तुम इस बात को पसन्द नहीं करते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश फ़रमा दे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** तआ़ला दर गुज़र फ़रमाने वाला है और दर गुज़र करने को पसन्द फ़रमाता है।''(3)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! عَزَّوَجَلَّ, तेरे बन्दों में से कौन तेरी बारगाह में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ? **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : वोह बन्दा जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद मुआफ़ कर दे।''(4)

मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त के फ़ज़ाइल

इस आयत से येह भी मा'लूम हुवा कि मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त व रह़म करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत मह़बूब है। अह़ादीस में लोगों पर शफ़्क़तो मेहरबानी और रह़म करने के बहुत फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, तरग़ीब के लिये 4 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस

1 ......شوریٰ:٤٠. 2 ......نور:٢٢.

3 ......مستدرك،كتاب الحدود،اول سارق قطعه رسول اللّٰهصلى الله عليه وسلم،٥/٥٤٦،الحديث:٨٢١٦.

4 ......شعب الايمان،السابع والخمسون من شعب الايمان...الخ،فصل فى ترك الغضب...الخ،٦/٣١٩،الحديث:٨٣٢٧.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रहम करने वालों पर रहमान रहम फ़रमाता है, तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आस्मानों की बादशाहत का मालिक तुम पर रहम करेगा।''(1)

(2)...... हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान मुसलमान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करे, न उस की मदद छोड़े और जो शख़्स अपने भाई की हाजत (पूरी करने की कोशिश) में हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हाजत पूरी फ़रमा देता है और जो शख़्स मुसलमान से किसी एक तक्लीफ़ को दूर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की तकालीफ़ में से उस की एक तक्लीफ़ दूर करेगा और जो शख़्स मुसल्मान की पर्दापोशी करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दापोशी करेगा।(2)

(3)...... हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह हम में से नहीं जो हमारे छोटे पर रहम न करे और हमारे बड़े की तौक़ीर न करे और अच्छी बात का हुक्म न दे और बुरी बात से मन्अ़ न करे।(3)

(4)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में अच्छा वोह शख़्स है जिस से भलाई की उम्मीद हो और जिस के शर से अम्न हो और तुम में बुरा वोह शख़्स है जिस से भलाई की उम्मीद न हो और जिस के शर से अम्न न हो।''(4)

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّفَرِّقُوْا بَیْنَ اللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ یَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّتَّخِذُوْا بَیْنَ ذٰلِكَ سَبِیْلًا ﴿۱۵۰﴾ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۱۵۱﴾

1 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی رحمة المسلمین، ۳/۳۷۱، الحدیث: ۱۹۳۱.
2 ......بخاری، کتاب المظالم والغصب، باب لا یظلم المسلمُ المسلمَ ولا یسلمه، ۲/۱۲۶، الحدیث: ۲۴۴۲.
3 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی رحمة الصبیان، ۳/۳۶۹، الحدیث: ۱۹۲۸.
4 ......ترمذی، کتاب الفتن، ۷۶-باب، ۴/۱۱۶، الحدیث: ۲۲۷۰.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** और उस के रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि **अल्लाह** से उस के रसूलों को जुदा कर दें और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाए और किसी के मुन्किर हुए और चाहते हैं कि ईमान व कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें। येही हैं ठीक ठीक काफ़िर और हम ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह लोग जो **अल्लाह** और उस के रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि **अल्लाह** और उस के रसूलों में फ़र्क़ करें और कहते हैं हम किसी पर तो ईमान लाते हैं और किसी का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि ईमान व कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें। तो येही लोग पक्के काफ़िर हैं और हम ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

﴿وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ﴾ **: और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों में फ़र्क़ करें।** येह आयते मुबारका यहूदो नसारा के बारे में नाज़िल हुई कि यहूदी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए लेकिन ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ इन्हों ने कुफ़्र किया और ईसाई ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए लेकिन इन्हों ने सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र किया।(1)

इन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूलों पर ईमान लाने में फ़र्क़ करते हैं इस त़रह़ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाएं और उस के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर न लाएं और इन्ही के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि येह पक्के काफ़िर हैं क्यूं कि सिर्फ़ बा'ज़ रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाना कुफ़्र से नहीं बचाता बल्कि सब पर ईमान लाना ज़रूरी और एक नबी का इन्कार भी तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इन्कार के बराबर है।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ لَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓىٕكَ
سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ ع

(1) خازن، النساء، تحت الآية: ١٥٠، ١/٤٤٤.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो **अल्लाह** और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी पर ईमान में फ़र्क़ न किया उन्हें अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन के सवाब देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो **अल्लाह** और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी (पर ईमान लाने) में फ़र्क़ न करे तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन्हें उन के अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

﴾وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ﴿ **: और वोह जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए।** यहां आयत में ईमान वालों से अज्रो सवाब का वा'दा फ़रमाया गया है और इस में कबीरा गुनाहों का मुरतकिब भी दाख़िल है क्यूं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के सब रसूलों पर ईमान रखता है।

कबीरा गुनाह करने वाला काफ़िर नहीं

मो'तज़िला फ़िर्क़े वाले कबीरा गुनाह करने वालों के लिये हमेशा के अ़ज़ाबे जहन्नम का अ़क़ीदा रखते हैं, इस आयत से उन के इस अ़क़ीदे का बुत़लान (या'नी ग़लत़ होना) साबित हो गया। एक और मक़ाम पर **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِنْ طَآىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर मुसल्मानों के दो गुरौह आपस में लड़ पड़ें।

इस से भी मा'लूम हुवा कि कबीरा गुनाह का इरतिकाब कुफ़्र नहीं क्यूं कि जंगो जिदाल गुनाह है लेकिन दोनों गुरौहों को मोमिन फ़रमाया गया। नीज़ सह़ीह़ बुख़ारी में है, ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ेद कपड़े पहन कर आराम फ़रमा रहे थे, फिर मैं दोबारा ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हो चुके थे, चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो बन्दा यूं कहे कि **अल्लाह** तआला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और इसी वा'दे पर उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल हुवा।" मैं ने अ़र्ज़ की : ख़्वाह उस ने ज़िना या चोरी की ? इर्शाद फ़रमाया : "ख़्वाह उस ने ज़िना या चोरी की।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : अगर्चे वोह ज़िना या चोरी करे ! इर्शाद फ़रमाया : "अगर्चे वोह ज़िना या चोरी करे।" मैं

1 ......حجرات: ٩.

www.dawateislami.net

ने फिर अ़र्ज़ की : ख़्वाह उस ने ज़िना या चोरी की ! इर्शाद फ़रमाया : ''ख़्वाह उस ने ज़िना या चोरी की, ख़्वाह अबू ज़र की नाक ख़ाक आलूद हो जाए।''(1)

और ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के उन लोगों के लिये है जो कबीरा गुनाहों के मुरतकिब हों।''(2)

इन अह़ादीस से भी मा'लूम हुवा कबीरा गुनाह करने वाला काफ़िर नहीं क्यूं कि काफ़िर न तो कभी जन्नत में जाएगा और न ही सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे बल्कि जन्नत में सिर्फ़ मुसल्मान जाएंगे और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त भी सिर्फ़ मुसल्मानों को नसीब होगी अगर्चे वोह कबीरा गुनाहों के मुरतकिब हों।

याद रहे कि अहले सुन्नत का इज्माअ़ है कि मोमिन किसी गुनाह की वज्ह से काफ़िर नहीं होता, चुनान्चे शर्हे अ़क़ाइदे नस्फ़िया में है : ''नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने से ले कर आज तक उम्मत का इस बात पर इज्माअ़ है कि अहले क़िब्ला में से जो शख़्स बिग़ैर तौबा के मर गया तो उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी और उस के लिये दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार भी की जाएगी अगर्चे उस का गुनाहे कबीरा का मुरतकिब होना मा'लूम हो ह़ालां कि इस बात पर पहले ही उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि मोमिन के इ़लावा किसी और के लिये नमाज़े जनाज़ा और दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार जाइज़ नहीं।''(3)

शर्हे फ़िक़्हे अक्बर में है : ''हम ख़ारिजिय्यों की त़रह़ किसी गुनाह के इरतिकाब की वज्ह से किसी मुसल्मान की तक्फ़ीर नहीं करेंगे अगर्चे वोह गुनाहे कबीरा हो अलबत्ता अगर वोह किसी ऐसे गुनाह को ह़लाल जाने जिस की ह़ुर्मत क़त़ई दलील से साबित हो तो वोह काफ़िर है, और हम मो'तज़िला की त़रह़ किसी कबीरा गुनाह करने वाले से ईमान का वस्फ़ साक़ित नहीं करेंगे और कबीरा गुनाह करने वाले को ह़क़ीक़ी मोमिन कहेंगे क्यूं कि अहले सुन्नत व जमाअ़त के नज़्दीक ईमान दिल से तस्दीक़ करने और ज़बान से इक़्रार करने का नाम है जब कि अ़मल का तअ़ल्लुक़ कमाले ईमान से है।''(4)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''आदमी ह़क़ीक़तन किसी बात से मुश्रिक नहीं होता जब तक ग़ैरे ख़ुदा को मा'बूद या मुस्तक़िल बिज़्ज़ात व वाजिबुल

1 ......بخاری، کتاب اللباس، باب الثیاب البیض، ٤/٥٧، الحدیث: ٥٨٢٧.
2 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ١١-باب منہ، ٤/١٩٨، الحدیث: ٢٤٤٤.
3 ......شرح عقائد نسفیہ، مبحث الکبیرۃ، ص ١١٠.
4 ......شرح فقہ اکبر، الکبیرۃ لا تخرج المؤمن عن الایمان، ص ٧١، ٧٤.

www.dawateislami.net

वुजूद न जाने। बा'ज़ नुसूस में बा'ज़ अफ़आ़ल पर इत़्लाक़े शिर्क तश्बीहन या तग़्लीज़न या ब इरादा व मुक़ारनत ब ए'तिक़ाद मुनाफ़िये तौह़ीद وامثال ذلک من التاویلات المعروفۃ بین العلماء वारिद हुवा है, जैसे कुफ़्र नहीं मगर इन्कारे ज़रूरिय्याते दीन अगर्चे ऐसी ही तावीलात से बा'ज़ आ'माल पर इत़्लाक़े कुफ़्र आया है यहां हरगिज़ अ़लल इत़्लाक़ शिर्को कुफ़्र मुस्त़लहे़ इल्मे अ़क़ाइद कि आदमी को इस्लाम से ख़ारिज कर दें और बे तौबा मग़्फ़ूर न हों ज़िन्हार मुराद नहीं कि येह अ़क़ीदए इज्माइयए अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ है, हर शिर्क कुफ़्र है और कुफ़्र मुज़ीले इस्लाम, और अहले सुन्नत का इज्माअ़ है कि मोमिन किसी कबीरा के सबब इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता ऐसी जगह नुसूस को अ़ला इत़्लाक़िहा कुफ़्रो शिर्क मुस्त़लह़ पर ह़म्ल करना अश्क़ियाए ख़्वारिज का मज़्हबे मत़रूद है।''(1)

ख़ुलासए इबारत येह है कि आदमी सिर्फ़ दो चीज़ों से मुश्रिक होता है (1) ग़ैरे ख़ुदा को मा'बूद मानने से, (2) **अल्लाह** के इलावा किसी को मुस्तक़िल बिज़्ज़ात मानने से। इन दो चीज़ों के इलावा किसी तीसरी चीज़ से आदमी ह़क़ीक़तन मुश्रिक नहीं होता। और बा'ज़ अह़ादीस वग़ैरा में जो कुछ कामों को बिग़ैर किसी क़ैद के शिर्क या कुफ़्र कहा गया है उन की तावीलात व तौजीहात उ़लमा में मश्हूर हैं या'नी या तो वहां कुफ़्रो शिर्क से तश्बीह मुराद होती है या उस काम पर शरीअ़त ने शिद्दत ज़ाहिर करने के लिये लफ़्ज़े शिर्क इस्ति'माल किया होता है या वहां शिर्क से मुराद वोह सूरत होती है कि जब उस फ़े'ल के साथ कोई ऐसा इरादा या ए'तिक़ाद मिला हो जो तौह़ीद के मुनाफ़ी हो। (जैसे ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा करना मुत़्लक़न शिर्क नहीं लेकिन अगर उस के साथ इरादए शिर्क मौजूद हो तो यक़ीनन शिर्क है।) तो ग़ैरे शिर्क को जहां शिर्क कहा गया हो वहां वोह ह़क़ीक़ी कुफ़्रो शिर्क मुराद नहीं होता जिस की वज्ह से आदमी इस्लाम से ख़ारिज और बिग़ैर तौबा के मरने पर दाइमी जहन्नमी क़रार पाए क्यूं कि अहले सुन्नत का इज्माअ़ है कि मुसल्मान कबीरा गुनाह की वज्ह से इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता। क़ुरआनो ह़दीस की मज़्कूरा बाला क़िस्म की तस्रीह़ात को हमारी बयान कर्दा तफ़्सील के मल्ह़ूज़ रखे बिग़ैर ह़क़ीक़ी कुफ़्रो शिर्क क़रार देना ख़ारिजिय्यों का मरदूद मज़्हब है।

يَسْــٴَـلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰۤى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْۤا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ

(1)...... फ़तावा रज़विय्या, 21/131

www.dawateislami.net

الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَیِّنٰتُ
فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَ اٰتَیْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِیْنًا ﴿۱۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब अहले किताब तुम से सुवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से एक किताब उतार दो तो वोह तो मूसा से इस से भी बड़ा सुवाल कर चुके कि बोले हमें **अल्लाह** को अ़लानिया दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उन के गुनाहों पर फिर बछड़ा ले बैठे बा'द इस के कि रोशन आयतें उन के पास आ चुकीं तो हम ने येह मुआ़फ़ फ़रमा दिया और हम ने मूसा को रोशन ग़लबा दिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (ऐ ह़बीब !) अहले किताब आप से सुवाल करते हैं कि आप उन पर आस्मान से एक किताब उतार दें तो येह लोग तो मूसा से इस से भी बड़ा सुवाल कर चुके हैं जो उन्हों ने कहा था : (ऐ मूसा !) **अल्लाह** हमें ए'लानिया दिखा दो तो उन के ज़ुल्म की वज्ह से उन्हें कड़क ने पकड़ लिया फिर उन के पास रोशन निशानियां आ जाने के बा वुजूद वोह बछड़े को (मा'बूद) बना बैठे फिर हम ने येह मुआ़फ़ कर दिया और हम ने मूसा को रोशन ग़लबा अ़ता फ़रमाया।

﴿يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ : **अहले किताब आप से सुवाल करते हैं।**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि यहूदियों में से का'ब बिन अशरफ़ और फ़िन्ह़ास बिन आ़ज़ूरा ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि अगर आप नबी हैं तो हमारे पास आस्मान से यक्बारगी किताब लाइये जैसे ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तौरैत लाए थे। उन का येह सुवाल हिदायत ह़ासिल करने के लिये न था बल्कि सरकशी व बग़ावत की वज्ह से था इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली के त़ौर पर फ़रमाया गया कि आप इन के सुवालों पर तअ़ज्जुब न करें कि येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से यक्बारगी कुरआन नाज़िल होने का सुवाल करते हैं क्यूं कि येह सुवाल इन की कमाल दरजे की जहालत की वज्ह से है और इस क़िस्म की जहालतों में इन के बाप दादा भी गिरिफ़्तार थे। अगर उन का सुवाल त़लबे हिदायत के लिये होता तो फिर देखा जाता मगर वोह तो किसी ह़ाल में ईमान

1 ......خازن، النساء، تحت الآیۃ: ۱۵۳، ۱/۴۴۵.

www.dawateislami.net

लाने वाले न थे। इन के बाप दादाओं के ऐसे किरदार की वज़ाहत के लिये उन की दो ह़रकतों को बयान किया जाता है। **एक** येह कि उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कोहे तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बा'द बछड़े को मा'बूद बना लिया और **दूसरी** बात येह कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुत़ालबा किया कि हम आप का उस वक़्त तक यक़ीन नहीं करेंगे जब तक आप हमें ख़ुदा ए'लानिया दिखा न दें। और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तो येह मुत़ालबा है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यक्बारगी किताब नाज़िल करवाएं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करेंगे लेकिन जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर यक्बारगी तौरात नाज़िल हुई तो बजाए इत़ाअ़त करने के उन्हों ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के देखने का सुवाल कर दिया और अस्ल मस्अला ही येह है कि न करने के सो बहाने होते हैं।

﴿وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا﴾ : **और हम ने मूसा को रोशन ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया।** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को रोशन ग़लबा व तसल्लुत़ अ़त़ा फ़रमाया गया कि जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को तौबा के लिये ख़ुद उन के अपने क़त्ल का हुक्म दिया तो वोह इन्कार न कर सके और उन्हों ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की इत़ाअ़त की।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम ने उन पर तूर को ऊंचा किया उन से अ़ह्द लेने को और उन से फ़रमाया कि दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और उन से फ़रमाया कि हफ़्ते में ह़द से न बढ़ो और हम ने उन से गाढ़ा अ़ह्द लिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर हम ने उन से अ़ह्द लेने के लिये उन पर कोहे तूर को बुलन्द कर दिया और उन से फ़रमाया कि दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और उन से फ़रमाया कि हफ़्ते के दिन में ह़द से न बढ़ो और हम ने उन से मज़बूत़ अ़ह्द लिया।

﴿وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ﴾ : **फिर हम ने उन पर कोहे तूर को बुलन्द कर दिया।** यहूदियों के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तीन बातों का बयान किया जा रहा है। **पहली** येह कि उन से तौरात पर अ़मल करने का अ़ह्द लेने के लिये कोहे तूर को उन के सरों पर मुअ़ल्लक़ कर दिया। **दूसरी**

www.dawateislami.net

बात येह कि बैतुल मुक़द्दस या अरीहा नामी बस्ती के दरवाज़े से सज्दा करते हुए गुज़रने का हुक्म दिया जिस की उन्हों ने ना फ़रमानी की। **तीसरी** बात येह कि उन्हें हफ़्ते के दिन शिकार करने से मन्अ़ फ़रमाया। लेकिन उन्हों ने तीनों बातों में ख़िलाफ़ वर्ज़ी की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मज़बूत अ़हद कर के तोड़ दिया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَ كُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ قَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّ قَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन की कैसी बद अ़हदियों के सबब हम ने उन पर ला'नत की और इस लिये कि वोह आयाते इलाही के मुन्किर हुए और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते और उन के इस कहने पर कि हमारे दिलों पर गि़लाफ़ हैं बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो (हम ने उन पर ला'नत की) उन के अ़हद को तोड़ने और **अल्लाह** की आयात के साथ कुफ़्र करने और अम्बिया को नाहक़ शहीद करने और उन के येह कहने की वज्ह से (कि) हमारे दिलों पर गि़लाफ़ हैं बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो (उन में से) बहुत थोड़े ईमान लाते हैं।

﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ **: तो उन के अ़हद तोड़ने की वज्ह से।**﴿ यहां से अहले किताब के जराइम की एक फ़ेहरिस्त और उस पर ग़ज़बे इलाही عَزَّوَجَلَّ का बयान शुरूअ़ है। यहूदियों के जराइम की फ़ेहरिस्त त़वील है। इस आयत और इस से अगली आयात में इन के निस्फ़ दरजन से ज़ाइद जराइम बयान किये गए हैं :

(1)...... यहूदियों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किये हुए अ़हद को तोड़ा। इस की तफ़्सील इस से गुज़श्ता आयत में गुज़र चुकी।

www.dawateislami.net

(2)...... यहूदियों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों का इन्कार किया जो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सदाक़त पर दलालत करती थीं जैसा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात।

(3)...... यहूदियों ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद किया और यहूदी खुद समझते थे कि उन का अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद करना नाह़क़ ही था।

(4)...... यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा था कि हमारे दिलों पर गि़लाफ़ चढ़े हुए हैं, चूंकि येह भी उन का झूट और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत को ठुकराना था लिहाज़ा येह भी सबबे अज़ाब हुवा। पांचवां और छटा जुर्म अगली आयत में बयान किया गया है।

﴿بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا : **बल्कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मोहर लगा दी।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि यहूदी कहते हैं हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के कुफ़्र की वज्ह से उन के दिलों पर मोहर लगा दी है लिहाज़ा कोई वा'ज़ो नसीह़त उन के दिलों पर कारगर नहीं हो सकती। इस से मा'लूम हुवा कि कुफ़्र और बदकारियां दिल पर मोहर लग जाने का बाइ़स हो जाती हैं।

وَّ بِكُفْرِهِمْ وَ قَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ لا

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस लिये कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मरयम पर बड़ा बोहतान उठाया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (उन पर ला'नत की) उन के कुफ़्र और मरयम पर बड़ा बोहतान लगाने की वज्ह से।

﴿وَبِكُفْرِهِمْ : **और उन के कुफ़्र की वज्ह से।**﴾ यहूदियों का **पांचवां** जुर्म येह था कि उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ कुफ़्र किया और उन का **छटा** जुर्म येह था कि उन्हों ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا पर तोहमत लगाई। इस से मा'लूम हुवा कि पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना सख़्त गुनाह है और ख़ुसूसन किसी मुक़द्दस औ़रत पर और मुक़द्दस निस्बत रखने वाली पर तोहमत लगाना और भी ज़ियादा संगीन है। इसी लिये ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا पर तोहमत लगाने वालों की मज़म्मत ज़ियादा बयान की गई।

www.dawateislami.net

وَّ قَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِیْحَ عِیْسَى ابْنَ مَرْیَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِۚ-وَ مَا قَتَلُوْهُ
وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْؕ-وَ اِنَّ الَّذِیْنَ اخْتَلَفُوْا فِیْهِ لَفِیْ شَكٍّ
مِّنْهُؕ-مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّۚ-وَ مَا قَتَلُوْهُ یَقِیْنًاۢ(۱۵۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के इस कहने पर कि हम ने मसीह् ईसा बिन मरयम **अल्लाह** के रसूल को शहीद किया और है येह कि उन्हों ने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उन के लिये उस की शबीह का एक बना दिया गया और वोह जो उस के बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उस की त़रफ़ से शुब्हे में पड़े हुए हैं उन्हें उस की कुछ भी ख़बर नहीं मगर येही गुमान की पैरवी और बेशक उन्हों ने उस को क़त्ल न किया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन के इस कहने की वज्ह से कि हम ने मसीह् ईसा बिन मरयम **अल्लाह** के रसूल को शहीद किया ह़ालां कि उन्हों ने न तो उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उन (यहूदियों) के लिये (ईसा से) मिलता जुलता (एक आदमी) बना दिया गया और बेशक येह (यहूदी) जो उस ईसा के बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उस की त़रफ़ से शुबे में पड़े हुए हैं (ह़क़ीक़त येह है कि) सिवाए गुमान की पैरवी के उन को उस की कुछ भी ख़बर नहीं और बेशक उन्हों ने उस को क़त्ल नहीं किया।

﴾وَّ قَوْلِهِمْ : **और उन के इस कहने की वज्ह से**﴿ इस आयत में यहूदियों के **सातवें** संगीन जुर्म का बयान किया गया कि यहूदियों ने दा'वा किया कि उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़त्ल कर दिया है और ईसाइयों ने इस की तस्दीक़ की थी **अल्लाह** तआला ने इन दोनों की तक्ज़ीब फ़रमा दी। क्यूं कि वाक़िआ यूं हुवा कि जो मुनाफ़िक़ शख़्स यहूदियों को ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का पता देने के लिये आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के घर में दाख़िल हुवा वोह ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का हम शक्ल हो गया और आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आस्मान पर तशरीफ़ ले गए। यहूदियों ने उसी मुनाफ़िक़ को ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के धोके में सूली दे दी लेकिन फिर ख़ुद

www.dawateislami.net

भी हैरान थे कि हमारा आदमी कहां गया नीज़ उस का चेहरा ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जैसा था और हाथ पाउं मुख़्तलिफ़ ।(1)

इस का ज़िक्र इस आयते करीमा में हो रहा है और इसी वज्ह से वोह शक में पड़ गए और यक़ीनी त़ौर पर कुछ नहीं कह सकते थे कि वोह मक़्तूल कौन है ? बा'ज़ कहते हैं कि येह मक़्तूल ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं । बा'ज़ कहते हैं कि येह चेहरा तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का है लेकिन जिस्म ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नहीं, लिहाज़ा येह वोह नहीं । यहूदियों की पैरवी में आज कल क़ादियानी भी इसी जहालत में गिरिफ़्तार हैं ।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیْهِؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِیْزًا حَكِیْمًا ﴿۱۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि **अल्लाह** ने उसे अपनी त़रफ़ उठा लिया और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बल्कि **अल्लाह** ने उसे अपनी त़रफ़ उठा लिया था और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है ।

﴿بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیْهِ﴾ **: बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी त़रफ़ उठा लिया था ।** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ीह़ सलामत आस्मान पर उठाए जाने के मुतअ़ल्लिक़ ब कसरत अह़ादीस वारिद हैं । इस का कुछ बयान सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 55 के तह़त तफ़्सीर में गुज़र चुका है ।

وَ اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَیُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ یَكُوْنُ عَلَیْهِمْ شَهِیْدًاۚ ﴿۱۵۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई किताबी ऐसा नहीं जो उस की मौत से पहले उस पर ईमान न लाए और क़ियामत के दिन वोह उन पर गवाह होगा ।

1 ......مدارك، النساء، تحت الآية: ١٥٧، ص٢٦٣-٢٦٤.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : कोई किताबी ऐसा नहीं जो उस की मौत से पहले उन पर ईमान न ले आएगा और क़ियामत के दिन वोह (ईसा) उन पर गवाह होंगे।

﴾اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ﴿ **: मगर वोह उस पर ईमान लाएगा।** इस आयत की तफ़्सीर में चन्द अक़्वाल हैं। **एक क़ौल** येह है कि यहूदो नसारा को अपनी मौत के वक़्त जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते नज़र आते हैं वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आते हैं और उस वक़्त का ईमान मक़्बूल व मो'तबर नहीं।(1)

लेकिन येह क़ौल ज़ईफ़ है। **दूसरा क़ौल** येह है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हर किताबी अपनी मौत से पहले **अल्लाह** तआ़ला या नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आएगा लेकिन मौत के वक़्त का ईमान मक़्बूल नहीं, और उस से कुछ नफ़्अ़ न होगा।(2)

तीसरा क़ौल येह है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से पहले हर यहूदी और ईसाई और वोह अफ़्राद जो ग़ैरे ख़ुदा की इबादत करते होंगे ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आएंगे ह़त्ता कि उस वक़्त एक ही दीन, दीने इस्लाम होगा। और येह उस वक़्त होगा कि जब आख़िरी ज़माने में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आस्मान से ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाएंगे। उस वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुत़ाबिक़ हुक्म करेंगे और दीने मुह़म्मदी के इमामों में एक इमाम की ह़ैसिय्यत में होंगे और ईसाइयों ने इन के मुतअ़ल्लिक़ जो गुमान बांध रखे हैं उन्हें बात़िल फ़रमाएंगे, दीने मुह़म्मदी की इशाअ़त करेंगे और उस वक़्त यहूदो नसारा को या तो इस्लाम क़बूल करना होगा या क़त्ल कर डाले जाएंगे, जिज़्या क़बूल करने का हुक्म ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नुज़ूल करने के वक़्त तक है।(3)

इस क़ौल से मा'लूम हुवा कि अभी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात वाक़ेअ़ नहीं हुई क्यूं कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से पहले सारे अहले किताब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर

1 ......قرطبی،النساء،تحت الآية:١٥٩، ٣/٢٩٨،الجزء الخامس، جلالين،النساء،تحت الآية:١٥٩،ص ٩١،ملتقطاً.

2 ......بغوی، النساء، تحت الآية: ١٥٩، ١/٣٩٧.

3 ......بغوی، النساء، تحت الآية: ١٥٩، ١/٣٩٧، خازن، النساء، تحت الآية: ١٥٩، ١/٤٤٨-٤٤٩، صاوی، النساء، تحت الآية: ١٥٩، ١/٤٥٦، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

ईमान लाएंगे। हालां कि अभी यहूदी आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान नहीं लाए। येह भी मा'लूम हुवा कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام क़रीबे क़ियामत ज़मीन पर तशरीफ़ लाएंगे। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इस आमद पर सारे यहूदी आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आएंगे इस त़रह़ कि सब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक कलिमा होने का इक़रार कर के मुसल्मान हो जाएंगे।

﴿يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا : **वोह उन पर गवाह होंगे।**﴾ या'नी हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام क़ियामत के दिन यहूदियों पर तो येह गवाही देंगे कि उन्हों ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़क़ में ज़बाने ता'न दराज़ की और नसारा पर येह गवाही देंगे कि उन्हों ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को रब ठहराया और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शरीक जाना जब कि अहले किताब में से जो लोग ईमान ले आएंगे उन के ईमान की भी आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शहादत देंगे।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۙ﴿۱۶۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म के सबब हम ने वोह बा'ज़ सुथरी चीज़ें कि उन के लिये ह़लाल थीं उन पर ह़राम फ़रमा दीं और इस लिये कि उन्हों ने बहुतों को **अल्लाह** की राह से रोका।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म की वज्ह से और उन के बहुत से लोगों को **अल्लाह** के रास्ते से रोकने की वज्ह से हम ने उन पर वोह बा'ज़ पाकीज़ा चीज़ें ह़राम कर दीं जो उन के लिये ह़लाल थीं।

﴿فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا : **तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म की वज्ह से।**﴾ यहूदियों की करतूतें ऊपर बयान की गईं और इस आयत में उन के जराइम की सज़ा की एक सूरत येह बयान फ़रमाई गई कि उन की ज़ियादतियों की वज्ह से उन पर कई ह़लाल चीज़ें भी ह़राम कर दी गईं।

وَّ اَخۡذِهِمُ الرِّبٰوا وَ قَدۡ نُهُوۡا عَنۡهُ وَ اَكۡلِهِمۡ اَمۡوَالَ النَّاسِ بِالۡبَاطِلِ ؕ وَ اَعۡتَدۡنَا لِلۡكٰفِرِيۡنَ مِنۡهُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمًا ﴿۱۶۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस लिये कि वोह सूद लेते ह़ालां कि वोह इस से मन्अ़ किये गए थे और लोगों का माल नाह़क़ खा जाते और उन में जो काफ़िर हुए हम ने उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इस लिये (ह़राम कीं) कि वोह सूद लेते ह़ालां कि उन्हें इस से मन्अ़ किया गया था और वोह बात़िल त़रीक़े से लोगों का माल खा जाते थे और उन में से काफ़िरों के लिये हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

﴾وَّ اَخۡذِهِمُ الرِّبٰوا﴿ **: और उन के सूद लेने की वज्ह से।** यहूदियों में ए'तिक़ादी ख़राबियों के साथ अ़मली बुराइयां भी मौजूद थीं चुनान्चे सूद खाना और रिश्वत लेना उन में आ़म था। फ़ैसला करने में रिश्वत लेते ह़त्ता कि रिश्वत की ख़ात़िर शर्ई अह़काम भी बदल देते।

सूद और रिश्वत की मज़म्मत

इस आयत से सूद की ह़ुर्मत और रिश्वत की क़बाह़तो ख़बासत भी मा'लूम हुई। सूद लेना शदीद ह़राम है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक सूद सत्तर गुनाहों का मज्मूआ़ है, उन में सब से छोटा गुनाह येह है कि आदमी अपनी मां से ज़िना करे।''(1)

सूद से मुतअ़ल्लिक़ मजीद कलाम सूरए बक़रह आयत नम्बर 275 ता 278 और सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 130 के तह़त गुज़र चुका है, और रिश्वत के बारे में ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रिश्वत लेने वाले, देने वाले और उन के माबैन लेनदेन में मदद करने वाले पर ला'नत फ़रमाई।''(2)

1 ......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ فى الربا، ٧٢/٣، الحديث: ٢٢٧٤.

2 ......مسند امام احمد، مسند الانصار، ومن حديث ثوبان رضى الله تعالى عنه، ٣٢٧/٨، الحديث: ٢٢٤٦٢.

www.dawateislami.net

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَ الْمُقِیْمِیْنَ الصَّلٰوةَ وَ الْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ اُولٰٓىٕكَ سَنُؤْتِیْهِمْ اَجْرًا عَظِیْمًا۠ (۱۶۲)

ع ۲۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हां जो उन में इ़ल्म में पक्के और ईमान वाले हैं वोह ईमान लाते हैं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लेकिन उन में इ़ल्म में पुख़्तगी वाले और ईमान वाले ईमान लाते हैं उस पर जो, ऐ ह़बीब ! तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम से पहले नाज़िल किया गया और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

﴿لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ مِنْهُمْ﴾ **: लेकिन उन में इ़ल्म में पुख़्तगी वाले।** यहूदियों की अक्सरिय्यत गुमराह और बद किरदार थी लेकिन उन में कुछ लोग अच्छे भी थे जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उन के साथी जो गुज़श्ता अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान, रासिख़ व मज़बूत़ इ़ल्म, साफ़ अ़क़्ल और कामिल बसीरत रखते थे, उन्हों ने अपने इ़ल्म से दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत को जाना और सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए।

रासिख़ फ़िल इ़ल्म की ता'रीफ़

रासिख़ फ़िल इ़ल्म वोह आ़लिम है जिस का इ़ल्म उस के दिल में उतर गया हो जैसे मज़बूत़ दरख़्त वोह है जिस की जड़ें ज़मीन में जगह पकड़ चुकी हों, इस से मुराद ख़ुश अ़क़ीदा और बा अ़मल उ़लमा हैं। इस से मा'लूम हुवा कि आ़लिमे बा अ़मल का सवाब दूसरों से

www.dawateislami.net

ज़ियादा है क्यूं कि बा अ़मल आ़लिम ख़ुद भी नेक है और वोह दूसरों को भी नेक बना देता है चाहिये कि आ़लिम का अ़मल सुन्नते नबवी का नमूना हो और उस की हर अदा तब्लीग़ करे । इस से इशारतन येह भी मा'लूम हुवा कि बे दीन या बे अ़मल आ़लिम का अ़ज़ाब भी दूसरों से ज़ियादा है क्यूं कि वोह गुमराह भी है और गुमराह कुन भी और उस की बद अ़मली दूसरों को भी बद अ़मल बना देगी ।

اِنَّاۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ كَمَاۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّ النَّبِیّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ وَ عِیْسٰى وَ اَیُّوْبَ وَ یُوْنُسَ وَ هٰرُوْنَ وَ سُلَیْمٰنَ ۚ وَ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۚ﴿۱۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक ऐ महबूब हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़ी भेजी जैसे वह़ी नूह़ और उस के बा'द पैग़म्बरों को भेजी और हम ने इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और इन के बेटों और ई़सा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान को वह़ी की और हम ने दावूद को ज़बूर अ़त़ा फ़रमाई ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़ी भेजी जैसे हम ने नूह़ और उस के बा'द पैग़म्बरों की त़रफ़ भेजी और हम ने इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और इन के बेटों और ई़सा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई और हम ने दावूद को ज़बूर अ़त़ा फ़रमाई ।

﴾ اِنَّاۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ **: बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़ी भेजी ।**﴿ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि यहूदो नसारा ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया था कि उन के लिये आस्मान से यक्बारगी किताब नाज़िल की जाए तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत पर ईमान ले आएंगे । इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन पर हुज्जत क़ाइम की गई कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिवा ब कसरत अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं जिन में से ग्यारह के अस्माए शरीफ़ा यहां आयत में बयान फ़रमाए गए हैं, अहले किताब उन सब की नुबुव्वत

www.dawateislami.net

को मानते हैं, तो जब इस वज्ह से उन में से मुतअ़द्दद की नुबुव्वत तस्लीम करने में अहले किताब को कुछ पसो पेश न हुवा तो इमामुल अम्बिया, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत तस्लीम करने में क्या उ़ज़्र है ? नीज़ रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के भेजने का मक़्सद मख़्लूक़ की हिदायत और उन को **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद व मा'रिफ़त का दर्स देना और ईमान की तक्मील और इ़बादत के त़रीक़ों की ता'लीम है और किताब के मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर नाज़िल होने से येह मक़्सद बड़े कामिल त़रीक़े से ह़ासिल हो जाता है क्यूं कि थोड़ा थोड़ा ब आसानी दिल नशीन होता चला जाता है, इस ह़िक्मत को न समझना और ए'तिराज़ करना कमाल दरजे की ह़माक़त है। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! कैसा दिल नशीन और प्यारा जवाब है।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَیْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَیْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِیْمًا ﴿۱۶۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और रसूलों को जिन का ज़िक्र आगे हम तुम से फ़रमा चुके और उन को जिन का ज़िक्र तुम से न फ़रमाया और **अल्लाह** ने मूसा से ह़क़ीक़तन कलाम फ़रमाया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (हम ने भेजे) बहुत से ऐसे रसूल जिन का ज़िक्र हम तुम से पहले फ़रमा चुके और बहुत से वोह रसूल जिन का ज़िक्र तुम से न फ़रमाया और **अल्लाह** ने मूसा से ह़क़ीक़तन कलाम फ़रमाया।

﴿ وَرُسُلًا : **और बहुत से रसूल** ﴾ इर्शाद फ़रमाया गया कि बहुत से रसूल वोह हैं जिन का क़ुरआन शरीफ़ में नाम ले कर ज़िक्र हो चुका और बहुत से वोह हैं जिन का अब तक उन के नामों की तफ़्सील के साथ क़ुरआने पाक में ज़िक्र नहीं फ़रमाया गया। इन सब रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में वोह कितने हैं जिन पर यक्बारगी किताब उतरी। तो जब सब नबियों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर यक्बारगी किताब नहीं उतरी तो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर यक्बारगी किताब न उतरना यहूदियों के लिये क्यूं बाइ़से ए'तिराज़ बना हुवा है ?

﴿ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِیْمًا : **और अल्लाह ने मूसा से कलाम फ़रमाया** ﴾ येह भी यहूदियों के ए'तिराज़ के जवाब का ह़िस्सा है कि जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बे वासित़ा कलाम फ़रमाना दूसरे अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत के लिये इन्कार का ज़रीआ़ नहीं हो सकता

www.dawateislami.net

जिन से इस त़रह़ कलाम नहीं फ़रमाया गया तो ऐसे ही ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर किताब का यक्बारगी नाज़िल होना भी दूसरे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत के इन्कार का ज़रीआ़ नहीं हो सकता।[1]

आयत के इस हि़स्से से दो मस्अले मा'लूम हुए : **एक** येह कि ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अम्बियाए बनी इसराईल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में बहुत शान वाले हैं कि इन का ज़िक्र खु़सूसिय्यत से अ़लाह़दा हुवा। **दूसरा** येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने बा'ज़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को खा़स अ़ज़मतें बख़्शी हैं, एक नबी की खु़सूसिय्यत तमाम नबियों में ढूंडना ग़लत़ी है जैसे हर नबी कलीमुल्लाह नहीं।

رُسُلًا مُّبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَ لِئَلَّا یَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِؕ-وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِیْزًا حَكِیْمًا ﴿۱۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल खु़श ख़बरी देते और डर सुनाते कि रसूलों के बा'द **अल्लाह** के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे और **अल्लाह** ग़ालिब हि़क्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (हम ने) रसूल खु़श ख़बरी देते और डर सुनाते (भेजे) ताकि रसूलों (को भेजने) के बा'द **अल्लाह** के यहां लोगों के लिये कोई उ़ज़्र (बाक़ी) न रहे और **अल्लाह** ज़बर दस्त है, हि़क्मत वाला है।

﴿رُسُلًا مُّبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَ : **रसूल भेजे खु़श ख़बरी देते और डर सुनाते।**﴾ रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आवरी का मक़्सद नेक आ'माल पर सवाब की बिशारत और बुरे आ'माल पर अ़ज़ाब से डराना है और एक हि़क्मत येह है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आवरी के बा'द लोगों को येह कहने का मौक़अ़ न मिल सके कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम ज़रूर उन का हुक्म मानते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार होते। इस आयत से येह मस्अला मा'लूम होता है कि **अल्लाह** तआ़ला रसूलों की बि'सत से पहले मख़्लूक़ पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता जैसा कि दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٦٤، ١/٤٥٢.

www.dawateislami.net

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (1) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और हम किसी को अ़ज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कोई रसूल न भेज दें।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ﴿۱۶۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लेकिन ऐ महबूब **अल्लाह** इस का गवाह है जो उस ने तुम्हारी त़रफ़ उतारा वोह उस ने अपने इ़ल्म से उतारा है और फ़िरिश्ते गवाह हैं और **अल्लाह** की गवाही काफ़ी।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : लेकिन ऐ ह़बीब ! **अल्लाह** गवाही देता है इस की जो उस ने तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया, उस ने इसे अपने इ़ल्म के साथ नाज़िल फ़रमाया है और फ़िरिश्ते गवाही देते हैं और **अल्लाह** काफ़ी गवाह है।

﴿لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ : **लेकिन अल्लाह गवाही देता है।**﴾ इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में दो त़रह़ के अक़्वाल हैं, उन का ख़ुलासा येह है :

(1)...... **مَشْهُوْدٌ لَهٗ** या'नी जिस के ह़क़ में गवाही दी जा रही है वोह **क़ुरआने पाक** है क्यूं कि यहूदियों ने आस्मान से यक्बारगी किताब उतारने का मुत़ालबा किया था।(2)

इस आयत में उन के मुत़ालबे का जवाब है। इस सूरत में मफ़्हूम येह बनता है कि यहूदी अगर्चे क़ुरआन के **आस्मानी किताब** होने को न मानें लेकिन ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की त़रफ़ उतरने वाले क़ुरआन की **ह़क़्क़ानिय्यत** की गवाही देता है और इस के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल होने के फ़िरिश्ते भी गवाह हैं, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की गवाही काफ़ी है।

(2)...... दूसरा मफ़्हूम येह है कि **مَشْهُوْدٌ لَهٗ** या'नी जिस के ह़क़ में गवाही है वोह ख़ातमुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत है और जिस के ज़रीए गवाही दी जा रही है वोह क़ुरआने पाक है और मा'ना येह बना कि यहूदियों ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

1 ......بنی اسرائیل:۱۵. 2 ......النساء: ۱۵۳.

www.dawateislami.net

नुबुव्वत का इन्कार किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की गवाही क़ुरआन के ज़रीए़ दी और फ़िरिश्ते भी नुबुव्वत पर गवाह हुए।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की गवाही येह है कि उस ने गुज़श्ता किताबों में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़बर दी और सरकारे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए जैसे वज़ीर या ह़ाकिम का शाही तमग़ा बादशाह की गवाही है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और **अल्लाह** की राह से रोका बेशक वोह दूर की गुमराही में पड़े।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और **अल्लाह** की राह से रोका बेशक वोह दूर की गुमराही में जा पड़े।

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا : **बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया।**﴾ यहां यहूदियों की ह़ालत का बयान है कि उन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इन्कार किया और ह़ुज़ूर ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त छुपा कर और लोगों के दिलों में शुबा डाल कर लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह से रोका, बेशक वोह इन ह़रकतों की वज्ह से दूर की गुमराही में जा पड़े क्यूं कि उन में गुमराह होना और गुमराह करना दोनों चीज़ें जम्अ़ हो गईं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया और ह़द से बढ़े **अल्लाह** हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा न उन्हें कोई राह दिखाए। मगर जहन्नम का रास्ता कि उस में हमेशा हमेशा रहेंगे और येह **अल्लाह** को आसान है।

---

1 ......تفسير كبير، النساء، تحت الآية: ١٦٦، ٤/٢٦٨-٢٦٩، صاوى، النساء، تحت الآية: ١٦٦، ٢/٤٦٠، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, **अल्लाह** हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा और न उन्हें किसी रास्ते की हिदायत फ़रमाएगा। मगर जहन्नम के रास्ते (की) जिस में हमेशा हमेशा रहेंगे और येह **अल्लाह** पर बहुत आसान है।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا : **बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया।**﴾ यहां भी यहूदियों का बयान है कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र और किताबे इलाही या'नी तौरात में मौजूद सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ बदल कर और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इन्कार कर के ज़ुल्म किया तो ऐसे लोग जब तक अपने कुफ़्र पर क़ाइम रहें और कुफ़्र पर मरें उन की बख़्शिश की कोई गुन्जाइश नहीं और न उन्हें किसी सह़ीह़ राह की हिदायत मिलेगी अलबत्ता जहन्नम का रास्ता उन के लिये ज़रूर खुला हुवा है और वोह बिल्कुल वाज़ेह़ होगा।

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَیْرًا لَّكُمْؕ وَ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَكِیْمًا(۱۷۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास येह रसूल ह़क़ के साथ तुम्हारे रब की त़रफ़ से तशरीफ़ लाए तो ईमान लाओ अपने भले को और अगर तुम कुफ़्र करो तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ लोगो ! तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हारे पास येह रसूल ह़क़ के साथ तशरीफ़ लाए तो ईमान लाओ, तुम्हारे लिये बेहतर होगा और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और **अल्लाह** इल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।

﴿قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ : **बेशक तुम्हारे पास येह रसूल ह़क़ के साथ तशरीफ़ ले आए।**﴾ तमाम बनी नौए इन्सान को अ़ज़ीम ख़ुश ख़बरी सुनाई जा रही है कि ऐ लोगो ! ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़क़ के साथ तशरीफ़ ला चुके, वोह ख़ुद भी ह़क़ हैं और उन का हर क़ौल,

www.dawateislami.net

हर अदा ह़क़ है, उन की शरीअ़त ह़क़ है, उन की त़बीअ़त ह़क़ है, उन की ता'लीम ह़क़ है, वहां बात़िल का गुज़र नहीं। लिहाज़ा उन पर ईमान ले आओ, इस में तुम्हारे लिये ख़ैर ही ख़ैर है और अगर तुम ख़ातमुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत का इन्कार करोगे तो इस में उन का कुछ ज़रर नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ईमान से बे नियाज़ है।

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ
اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى
مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ٘ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۫ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ
اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ ع

रुकूअ़ २३ — वक़्फ़ लाज़िम

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़ियादती न करो और **अल्लाह** पर न कहो मगर सच, मसीह़ ईसा मरयम का बेटा **अल्लाह** का रसूल ही है और उस का एक कलिमा कि मरयम की त़रफ़ भेजा और उस के यहां की एक रूह़ तो **अल्लाह** और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और तीन न कहो बाज़ रहो अपने भले को **अल्लाह** तो एक ही ख़ुदा है पाकी उसे इस से कि उस के कोई बच्चा हो उसी का माल है जो आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** काफ़ी कारसाज़ है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ किताब वालो ! अपने दीन में ह़द से न बढ़ो और **अल्लाह** पर सच के सिवा कोई बात न कहो। बेशक मसीह़, मरयम का बेटा ईसा सिर्फ़ **अल्लाह** का रसूल और उस का एक कलिमा है जो उस ने मरयम की त़रफ़ भेजा और उस की त़रफ़ से एक ख़ास रूह़ है तो **अल्लाह** और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (कि मा'बूद) तीन हैं। (इस से) बाज़ रहो, (येह) तुम्हारे लिये बेहतर है। सिर्फ़ **अल्लाह** ही एक मा'बूद है, वोह पाक है इस से कि उस की कोई औलाद हो। उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और **अल्लाह** काफ़ी कारसाज़ है।

www.dawateislami.net

﴿يَاَهْلَ الْكِتٰبِ : **ऐ अहले किताब !**﴾ इस से पहले वाली आयात में यहूदियों की दीन में ज़ियादतियों और उन के जराइम को बयान फ़रमाया, अब ईसाइयों के दीन में ग़ुलू और ह़द से बढ़ने के बारे में बयान फ़रमाया जा रहा है।

ईसाइयों के फ़िर्क़े और उन के अ़क़ाइद

ईसाई चार बड़े फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो गए थे **(1)** या'क़ूबिया **(2)** मलकानिया **(3)** नस्तूरिया **(4)** मरक़ूसिया। इन में से हर एक ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में जुदागाना कुफ़्रिय्या अ़क़ीदा रखता था। **या'क़ूबिया और मलकानिया** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ुदा कहते थे। **नस्तूरिया** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ुदा का बेटा कहते थे जब कि **मरक़ूसिया** फ़िर्क़े का अ़क़ीदा येह था कि वोह तीन में से तीसरे हैं, और इस जुम्ले का क्या मत़लब है इस में भी उन में इख़्तिलाफ़ था, बा'ज़ तीन उक़्नूम (या'नी वुजूद) मानते थे और कहते थे कि बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस तीन हैं और बाप से ज़ात, बेटे से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और रूहुल क़ुदुस से इन में ह़ुलूल करने वाली ह़यात मुराद लेते थे गोया कि उन के नज़्दीक इलाह तीन थे और इस तीन को एक बताते थे। बा'ज़ कहते थे कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नासूतिय्यत (या'नी इन्सानिय्यत) और उलूहिय्यत के जामेअ़ हैं, मां की त़रफ़ से उन में नासूतिय्यत आई और बाप की त़रफ़ से उलूहिय्यत आई "تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا" (**अल्लाह** तआ़ला ज़ालिमों की बात से पाक है और बहुत ही बुलन्दो बाला है) येह फ़िर्क़ाबन्दी ईसाइयों में एक यहूदी ने पैदा की जिस का नाम बौलस था, उस ने उन्हें गुमराह करने के लिये इस त़रह़ के अ़क़ीदों की ता'लीम दी।[1]

इस आयत में अहले किताब को हिदायत की गई है कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बारे में इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ से बाज़ रहें, उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा भी न कहें और ह़ुलूल व इत्तिह़ाद के ऐ़ब लगा कर उन की तन्क़ीस भी न करें, बल्कि उन के बारे में येह अ़क़ीदा रखें कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेटे हैं, उन के लिये इस के सिवा और कोई नसब नहीं, सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के रसूल और उस का एक कलिमा हैं जो रब तआ़ला ने ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ भेजा और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से एक

1 ......خازن، النساء، تحت الآية: ١٧١، ١/٤٥٤.

www.dawateislami.net

ख़ास रूह़ हैं। लिहाज़ा उन्हें चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूलों पर ईमान लाएं और तस्दीक़ करें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक है, बेटे और औलाद से पाक है और उस के रसूलों की तस्दीक़ करें और इस की, कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूलों में से हैं।

﴿وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ﴾ **: और न कहो (कि मा'बूद) तीन हैं।** बा'ज़ ईसाई ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ुदा का बेटा कहते थे, बा'ज़ उन्हें तीसरा ख़ुदा मानते थे और बा'ज़ उन्हीं को ख़ुदा मानते थे, इन तीनों फ़िर्क़ों की तरदीद के लिये येह आयते करीमा उतरी। लफ़्ज़ "اَللّٰهُ" में एक फ़िर्क़े की तरदीद है। "وَّاحِدٌ" में दूसरे की और "سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ" में तीसरे की। अ़क़्ल मन्द इन्सान ख़ुद ही ग़ौर कर ले आस्मान व ज़मीन में जो कुछ है सब **अल्लाह** तआ़ला की मख़्लूक़ है, जितने इन्सान हैं सब उसी के बन्दे और मम्लूक हैं उन्ही में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी दाख़िल हैं और जब येह भी बन्दे और मम्लूक हैं तो इन का बेटा और बीवी होना कैसे मुतसव्वर हो सकता है ? बिला शुबा **अल्लाह** तआ़ला इन सब बेहूदा बातों से पाक और मुनज़्ज़ह है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿۱۷۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ मसीह़ **अल्लाह** का बन्दा बनने से कुछ नफ़्रत नहीं करता और न मुक़र्रब फ़िरिश्ते और जो **अल्लाह** की बन्दगी से नफ़्रत और तकब्बुर करे तो कोई दम जाता है कि वोह इन सब को अपनी त़रफ़ हांकेगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : न तो मसीह़ **अल्लाह** का बन्दा बनने से कुछ आ़र करता है और न मुक़र्रब फ़िरिश्ते और जो **अल्लाह** की बन्दगी से नफ़्रत और तकब्बुर करे तो अ़न्क़रीब वोह उन सब को अपने पास जम्अ़ करेगा।

www.dawateislami.net

﴾لَنْ یَّسْتَنْكِفَ الْمَسِیْحُ اَنْ یَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ﴿ **: मसीह़ अल्लाह का बन्दा बनने से हरगिज़ आ़र नहीं करता ।** नजरान के ईसाइयों का एक वफ़्द सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ऐब लगाते हैं कि उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा कहते हैं। इस पर येह आयत उतरी।(1)

जिस में फ़रमाया गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा होना बाइ़से फ़ख़्र है न कि बाइ़से शर्म। नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से नफ़रत करना और इस में शर्म मह़सूस करना काफ़िर का काम है मुसल्मान का नहीं।

فَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَیُوَفِّیْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَ یَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَ اَمَّا الَّذِیْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَ اسْتَكْبَرُوْا فَیُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۙ۬ وَّ لَا یَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِیًّا وَّ لَا نَصِیْرًا ﴿۱۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन की मज़दूरी उन्हें भरपूर दे कर अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़ियादा देगा और वोह जिन्हों ने नफ़रत और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और **अल्लाह** के सिवा न अपना कोई ह़िमायती पाएंगे न मददगार।

तरजमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो वोह जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किये तो (**अल्लाह**) उन्हें उन के पूरे अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और उन्हें अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा देगा और वोह जिन्हों ने नफ़रत और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और वोह **अल्लाह** के सिवा न अपना कोई ह़िमायती पाएंगे न मददगार।

﴾فَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا﴿ **: तो जो ईमान वाले हैं ।** यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी को अपना ए'ज़ाज़ और अपने सर का ताज समझने वालों या'नी मोमिनीने सालिह़ीन को बिशारत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी से नफ़रत व तकब्बुर करने वालों को वई़द बयान की गई है। पहले गुरौह को भरपूर अज्र मिलेगा और इस के साथ उन पर फ़ज़्ले इलाही की मज़ीद बारिश बरसेगी जिस

(1)......بیضاوی، النساء، تحت الآیة: ۱۷۲، ۲/۲۸۴.

www.dawateislami.net

में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार भी शामिल है। इस के बर अ़क्स इबादते इलाही के मुन्किरों और उस से तकब्बुर करने वालों को दर्दनाक अ़ज़ाब से दो चार होना पड़ेगा।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿۱۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से वाज़ेह़ दलील आई और हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन नूर उतारा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से वाज़ेह़ दलील आ गई और हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन नूर नाज़िल किया।

﴿**يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ : ऐ लोगो !**﴾ यहां तमाम इन्सानों से ख़ित़ाब है, वोह कहीं के हों और कभी भी हों।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान का बयान

इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत किसी ज़माने, किसी जगह और किसी क़ौम के साथ ख़ास नहीं। आ़म ए'लान फ़रमा दिया गया, ऐ लोगो ! तुम्हारे पास वोह तशरीफ़ लाए जो सर ता पा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त की दलील हैं जिन की सदाक़त पर उन के मो'जिज़े गवाह हैं और वोह मुन्किरीन की अ़क़्लों को ह़ैरान कर देते हैं। जिस क़दर मो'जिज़े पहले पैग़म्बरों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मिले उन से ज़ाइद हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा हुए। बल्कि ह़क़ तो येह है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अज़ सर ता क़दमे पाक ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और ज़ात व सिफ़ात की दलील हैं चुनान्चे सरकारे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **बाल शरीफ़** मो'जिज़ा कि ह़ज़रते ख़ालिद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की टोपी में रहा तो उन को हमेशा दुश्मनों पर फ़त्ह़ होती रही। हरकुल की पगड़ी में रहा तो उस के सर के दर्द को आराम रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे कफ़न में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल शरीफ़ रख दिये जाएं ताकि क़ब्र की मुश्किल आसान हो। ह़ज़रते

www.dawateislami.net

अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे ग़ुस्ल दे कर मेरी आंखों और लबों पर सुल्ताने दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाखुन और बाल शरीफ़ रख दिये जाएं ताकि हिसाबे क़ब्र में आसानी हो। मा'लूम हुवा कि बाल मुबारक क़ब्र की मुश्किल आसान करते हैं। सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم बीमारों को बाल मुबारक का ग़ुस्ल शुदा पानी पिलाया करते थे। ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर एक बार बाल मुबारक पहुंच गए तो उन्हों ने सारी रात मलाएका की तस्बीह़ व तह्लील सुनी।

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए छाए रह़मत की घटा बन के तुम्हारे गेसू

हम सियह कारों पे या रब तपिशे मह़शर में साया अफ़्गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गेसू

आंख शरीफ़ का मो'जिज़ा कि क़ियामत तक के वाक़िआ़त को देखा, जन्नतो दोज़ख़, अ़र्शो कुर्सी को मुलाह़ज़ा फ़रमाया, बल्कि ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ को देखा। नमाज़े कुसूफ़ में जन्नतो दोज़ख़ को मस्जिद की दीवार में देखा। पीछे मुक़्तदी जो कुछ करें उस को मुलाह़ज़ा फ़रमा लें। **नाक मुबारक** का मो'जिज़ा कि जिस ने मह़ब्बत की ख़ुश्बू यमन से आती हुई सूंघी। **ज़बान** का मो'जिज़ा कि जिन की हर बात वह़्ये ख़ुदा और वोह ज़बान जो कि कुन की कुन्जी है। **मुंह का लुआ़ब** मो'जिज़ा कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर हांडी में डाल दिया तो हांडी की तरकारी में बरकत हुई। आटे में डाल दिया तो चार सेर आटा हज़ारों आदमियों ने खाया फिर भी उतना ही रहा। ख़ैबर में ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की दुखती आंख में लगा दिया तो आंख को आराम हो गया। ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाउं में ग़ार में सांप ने काटा उस पर लगा दिया तो उस को आराम। खारी कूंएं में डाल दिया तो उस का पानी मीठा हो गया। **हाथ मुबारक** भी दलील कि बद्र के दिन एक मुठ्ठी कंकर कुफ़्फ़ार को मारे तो रब तआ़ला ने फ़रमाया कि "आप ने न फेंके बल्कि हम ने फेंके।" इसी हाथ में कंकरों ने कलिमा शरीफ़ पढ़ा। इस हाथ से बैअ़त ली गई तो रब عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि "उन के हाथों पर हमारा हाथ है।" **उंग्लियां मो'जिज़ा** कि एक पियाले पानी में उंग्लियां रख दीं, उस से पानी के चश्मे जारी हो गए। उंगली ही के इशारे से चांद चीर दिया। **पाउं मुबारक** भी मो'जिज़ा कि पथ्थर पर चलें तो पथ्थर उन का असर ले ले और फ़र्श पर भी चलें और अ़र्श पर भी। ग़रज़ कि इन का हर हर उ़ज़्वे पाक और हर हर बाल मुबारक रब عَزَّوَجَلَّ के पहचानने की दलील है। **पसीनए मुबारक** मो'जिज़ा कि जिस में गुलाब की बे मिस्ल ख़ुश्बू। **जागना और सोना** मो'जिज़ा कि हर एक की नींद वुज़ू तोड़ दे मगर सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नींद वुज़ू नहीं

www.dawateislami.net

तोड़ती। तमाम जिस्मे पाक साए से महफ़ूज़ कि साया भी किसी के क़दम के नीचे न आए ग़रज़ कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हर वस्फ़ मो'जिज़ा और हर हालत रब तआला की क़ुदरत की दलील है।

﴾وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا﴿ : **और हम ने तुम्हारी तरफ़ रोशन नूर नाज़िल किया।** रोशन नूर से मुराद क़ुरआने पाक है जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए हमें मिला।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ؕ﴿۱۷۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और उस की रस्सी मज़बूत थामी तो अन्क़रीब **अल्लाह** उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ़ सीधी राह दिखाएगा।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो वोह जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और उन्हों ने उस की रस्सी मज़बूती से थाम ली तो अन्क़रीब **अल्लाह** उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ़ सीधी राह दिखाएगा।

﴾فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ﴿ : **तो अन्क़रीब अल्लाह उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा।** ईमान वालों को रहमत, फ़ज़्ल और सीधे रास्ते की बिशारत अ़ता फ़रमाई गई है। रहमत जन्नत है और फ़ज़्ल जन्नत में करम बालाए करम वाले उमूर हैं और सीधा रास्ता दीने इस्लाम है जो सीधा क़ुर्बे इलाही तक ले जाता है।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا

www.dawateislami.net

اِخْوَةً رِّجَالًا وَّ نِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَیَیْنِ ؕ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۷۶﴾ ع ۲۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम से फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें कलालह में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द का इन्तिक़ाल हो जो बे औलाद है और उस की एक बहन हो तो तर्के में से उस की बहन का आधा है और मर्द अपनी बहन का वारिस होगा अगर बहन की औलाद न हो फिर अगर दो बहनें हों तर्के में उन का दो तिहाई और अगर भाई बहन हों मर्द भी और औ़रतें भी तो मर्द का ह़िस्सा दो औ़रतों के बराबर **अल्लाह** तुम्हारे लिये साफ़ बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और **अल्लाह** हर चीज़ जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! तुम से फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें कलालह के बारे में फ़तवा देता है। अगर किसी मर्द का इन्तिक़ाल हो जिस की औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो तर्के में उस की बहन का आधा है और मर्द अपनी बहन का वारिस होगा अगर बहन की औलाद न हो फिर अगर दो बहनें हों तर्के में उन का दो तिहाई (ह़िस्सा होगा) और अगर भाई बहन हों (जिन में) मर्द भी (हों) और औ़रतें भी तो मर्द का ह़िस्सा दो औ़रतों के बराबर होगा। **अल्लाह** तुम्हारे लिये साफ़ बयान फ़रमाता है ताकि तुम भटक न जाओ और **अल्लाह** हर चीज़ जानता है।

﴿**یَسْتَفْتُوْنَكَ : तुम से फ़तवा पूछते हैं।**﴾ आयते मुबारका में कलालह की विरासत का बयान किया गया है। कलालह उस को कहते हैं जो अपने बा'द न बाप छोड़े, न औलाद। इस आयत के शाने नुज़ूल के मुतअ़ल्लिक़ बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बीमार थे तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बेहोश थे, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमा कर उस का पानी उन पर डाला तो उन्हें इफ़ाक़ा हुवा (आंख खोल कर देखा तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे)। अ़र्ज़

www.dawateislami.net

किया : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मैं अपने माल का क्या इन्तिज़ाम करूं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई ।(1)

अबू दावूद की रिवायत में येह भी है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : ऐ जाबिर ! رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه, मेरे इल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है ।(2)

इस ह़दीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए :

(1)...... बुज़ुर्गों का वुज़ू का पानी तबर्रुक है और इस को हुसूले शिफ़ा के लिये इस्ति'माल करना सुन्नत है ।

(2)...... मरीज़ों की इयादत सुन्नत है ।

(3)...... नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने उ़लूमे ग़ैब अ़ता फ़रमाए हैं इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि हज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मौत इस मरज़ में नहीं है ।

कलालह की विरासत के अह़काम

आयत में जो मसाइल बयान हुए उन का ख़ुलासा व वज़ाह़त येह है :

(1)...... अगर कोई शख़्स फ़ौत हो और उस के वुरसा में बाप और औलाद न हो तो सगी और बाप शरीक बहन को विरासत से माल का आधा हिस्सा मिलेगा जब कि सिर्फ़ एक हो और अगर दो या दो से ज़ियादा हों तो दो तिहाई हिस्सा मिलेगा ।

(2)...... और अगर बहन फ़ौत हुई और वुरसा में न बाप हो न औलाद तो भाई उस के कुल माल का वारिस होगा ।

(3)...... अगर फ़ौत होने वाले ने बहन भाई दोनों छोड़े तो भाई को बहन से दुगना हिस्सा मिलेगा ।

अहम तम्बीह : विरासत के मसाइल में बहुत वुस्अ़त और क़ुयूद होती हैं । आयत में जो सूरतें मौजूद थीं उन को बयान कर दिया लेकिन अगर विरासत का कोई मस्अला दरपेश हो तो बिग़ैर किसी माहिरे मीरास आ़लिम के ख़ुद हल न निकालें ।

1......بخاری، کتاب الفرائض، باب قول اللّٰہ تعالی: یوصیکم اللّٰہ...الخ، ٤/٣١٢، الحدیث: ٦٧٢٣، مسلم، کتاب الفرائض، باب میراث الکلالۃ، ص٨٧٢، الحدیث: ٥(١٦١٦).

2......ابو داوٗد، کتاب الفرائض، باب من کان لیس لہ ولد ولہ اخوات، ٣/١٦٥، الحدیث: ٢٨٨٧.

www.dawateislami.net

سُوْرَةُ الْمَآئِدَة

सूरए माइदह का तआ़रुफ़

मक़ामे नुज़ूल

सूरए माइदह मदीनए मुनव्वरह में नाज़िल हुई है, अलबत्ता येह आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ" हज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर अ़रफ़े के दिन मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बे में इस आयत की तिलावत फ़रमाई।[(1)]

रुकूअ़ और आयात की ता'दाद

इस सूरत में **16** रुकूअ़ और **120** आयतें हैं।

"माइदह" नाम रखे जाने की वज्ह

अ़रबी में दस्तर ख़्वान को "माइदह" कहते हैं और इस सूरत की आयत नम्बर 112 ता 115 में येह वाक़िआ़ मज़्कूर है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़वारियों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से आस्मान से माइदह या'नी खाने के एक दस्तर ख़्वान के नुज़ूल का मुत़ालबा किया और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से माइदह के नाज़िल होने की दुआ़ की, इस वाक़िए़ की मुनासबत से इस सूरत का नाम "सूरए माइदह" रखा गया।

सूरए माइदह के फ़ज़ाइल

(1)...... इस सूरत की एक आयते मुबारका के बारे में ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक यहूदी ने इन से कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, आप अपनी किताब में एक आयत की तिलावत करते हैं, अगर वोह आयत हम यहूदियों के गुरोह पर नाज़िल हुई होती तो (जिस दिन येह नाज़िल होती) हम उस दिन को ईद बनाते। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : वोह कौन सी आयत है ? उस यहूदी ने अ़र्ज़ की : (वोह येह आयत है :)

(1)......خازن، تفسير سورة المائدة، ١/٤٥٨.

www.dawateislami.net

اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ؕ(1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और मैं ने तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।

हज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : हम उस दिन और उस जगह को भी जानते हैं जिस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयत नाज़िल हुई, (जब येह आयत नाज़िल हुई उस वक़्त) हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के दिन अ़रफ़ात के मैदान में मुक़ीम थे (और जुमुआ़ व अ़रफ़ा दोनों मुसल्मानों की ईद के दिन हैं)।(2)

(2)...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सूरए माइदह नाज़िल हुई और उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी सुवारी पर सुवार थे तो सुवारी में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बोझ उठाने की त़ाक़त न रही इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवारी से नीचे तशरीफ़ ले आए।(3)

(3)...... हज़रते मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने मर्दों को सूरए माइदह और औ़रतों को सूरए नूर सिखाओ।(4)

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : "सूरए माइदह में चूंकि मर्दों के लिये बहुत (ज़ज्रो तौबीख़) डांट डपट है इस लिये इन्हें सूरए माइदह सिखाने का हुक्म दिया गया और सूरए नूर में औ़रतों के लिये बहुत (ज़ज्रो तौबीख़) डांट डपट है कि इस में वाक़िअ़ए इफ़्क और ज़ीनत के मक़ाम ज़ाहिर करने की हुर्मत वग़ैरा उन चीज़ों का बयान है जो औ़रतों से मुतअ़ल्लिक़ हैं, इस लिये इन्हें सूरए नूर सिखाने का हुक्म दिया गया।"(5)

सूरए माइदह के मज़ामीन

इस सूरत का मर्कज़ी मज़्मून येह है कि इस में यहूदियों और ईसाइयों के बात़िल अ़क़ाइदो नज़रिय्यात ज़िक्र कर के उन का रद किया गया है। इस के इ़लावा इस सूरत मे येह मज़ामीन बयान किये गए हैं।

1......مائدہ:۳۔ 2......بخاری، کتاب الایمان، باب زیادۃ الایمان ونقصانہ، ۱/۲۸، الحدیث: ۴۵۔

3......مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص رضی اللّٰہ تعالی عنہما، ۲/۵۸۹، الحدیث: ۶۶۵۴۔

4......شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان... الخ، فصل فی فضائل السور والآیات، ۲/۴۶۹، الحدیث: ۲۴۲۸۔

5......فیض القدیر، حرف العین، ۴/۴۳۳، تحت الحدیث: ۵۴۸۲۔

www.dawateislami.net

(1)...... मुसल्मानों को तमाम जाइज़ मुआ़हदे पूरा करने का हुक्म दिया गया और उन जानवरों के बारे में बताया गया जो मुसल्मानों पर ह़राम हैं और जो मुसल्मानों के लिये ह़लाल हैं।

(2)...... वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम के अह़काम बयान किये गए और इन्साफ़ के साथ गवाही देने और ना इन्साफ़ी करने से बचने का हुक्म दिया गया।

(3)...... बनी इसराईल से अ़ह्द लेने, उन के अ़ह्द की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने और उस के अन्जाम को बयान किया गया।

(4)...... बनी इसराईल का जब्बारीन से जिहाद न करने का वाक़िआ़ बयान किया गया है।

(5)...... चोरी करने और डाका डालने की सज़ा का बयान, शराब और जूए की हुर्मत का बयान, क़सम के कफ़्फ़ारे का बयान, एह़राम की ह़ालत में शिकार के अह़काम। क़ुरआन के अह़कामात पर अ़मल को तर्क करने की वई़द, यहूदियों, ईसाइयों, मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों से होने वाली बह़्स का बयान है।

(6)...... मुसल्मानों को अपनी इस्लाह़ करने का हुक्म दिया गया है और इस्लाह़ का त़रीक़ा भी बयान किया गया है। येह भी फ़रमाया गया कि नेकी और परहेज़ गारी के कामों पर एक दूसरे की मदद की जाए और गुनाह व सरकशी के कामों पर एक दूसरे के साथ तआ़वुन ह़राम है, कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती करना ह़राम है नीज़ गवाही के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि गवाही देने वाला आ़दिल हो और इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जाए और मुसल्मानों के दरमियान मुसावात क़ाइम की जाए।

(7)...... **अल्लाह** तआ़ला का दीन एक ही है अगर्चे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त और उन के त़रीक़े मुख़्तलिफ़ थे।

(8)...... नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत पूरी मख़्लूक़ को आ़म है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आ़म तब्लीग़ करने का हुक्म दिया गया है।

(9)...... इ़ब्रत और नसीह़त के लिये इस सूरत में येह तीन वाक़िआ़त भी बयान किये गए हैं : **(1)** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और बनी इसराईल का वाक़िआ़। **(2)** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दो बेटों क़ाबील और हाबील का वाक़िआ़। **(3)** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े "खाने के दस्तर ख़्वान" के नाज़िल होने का वाक़िआ़।

www.dawateislami.net

सूरए निसाअ के साथ मुनासबत

सूरए माइदह की अपने से मा क़ब्ल सूरत "निसाअ" के साथ मुनासबत येह है कि सूरए निसाअ में मुख़्तलिफ़ सरीह़ और ज़िम्नी मुआ़हदे बयान किये गए थे जैसे निकाह़ और महर के मुआ़हदे, वसिय्यत, अमानत, वकालत, आ़रियत, इजारा वग़ैरा के मुआ़हदे और सूरए माइदह में इन मुआ़हदों को पूरा करने का हुक्म दिया गया है।[1]

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान, रह़मत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَوۡفُوۡا بِالۡعُقُوۡدِ ؕ اُحِلَّتۡ لَـكُمۡ بَهِيۡمَةُ الۡاَنۡعَامِ اِلَّا مَا يُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ غَيۡرَ مُحِلِّى الصَّيۡدِ وَاَنۡتُمۡ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحۡكُمُ مَا يُرِيۡدُ ①

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने क़ौल पूरे करो तुम्हारे लिये ह़लाल हुए बे ज़बान मवेशी मगर वोह जो आगे सुनाया जाएगा तुम को लेकिन शिकार ह़लाल न समझो जब तुम एह़राम में हो बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है जो चाहे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तमाम अ़ह्द पूरे किया करो। तुम्हारे लिये चौपाए जानवर ह़लाल कर दिये गए सिवाए उन के जो (आगे) तुम्हारे सामने बयान किये जाएंगे लेकिन एह़राम की ह़ालत में शिकार ह़लाल न समझो। बेशक **अल्लाह** जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है।

1 ......تناسق الدرر، سورة المائدة، ص ٨١.

www.dawateislami.net

﴿اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ : तमाम अ़ह्द पूरे करो ।﴾ उ़क़ूद का मा'ना अ़ह्द हैं, इन्हें पूरा करने का हुक्म दिया गया है। इस से मुराद कौन से अ़ह्द हैं इस बारे में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं :

(1)...... इमाम इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि यहां अहले किताब को ख़ित़ाब फ़रमाया गया है और मा'ना येह हैं कि ऐ अहले किताब के मोमिनो ! मैं ने गुज़श्ता किताबों में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करने के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम से अ़ह्द लिये हैं वोह पूरे करो।

(2)...... बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में ख़ित़ाब मोमिनीन को है, इन्हें अपने अ़ह्द पूरा करने का हुक्म दिया गया है।

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इन उ़क़ूद या'नी अ़ह्दों से मुराद ईमान और वोह अ़ह्द हैं जो ह़राम व ह़लाल के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक में लिये गए।

(4)...... बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस में मोमिनीन के बाहमी मुआ़हदे मुराद हैं।[1]

﴿اُحِلَّتْ لَكُمْ : **तुम्हारे लिये ह़लाल कर दिये गए ।**﴾ यहां से ह़लाल जानवरों का बयान किया गया है, चुनान्चे फ़रमाया कि जिन की ह़ुर्मत शरीअ़त में बयान हुई है उन के सिवा तमाम चौपाए तुम्हारे लिये ह़लाल किये गए। इस में उन कुफ़्फ़ार का रद है जो बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवर बह़ीरा, साइबा वग़ैरा को ह़राम समझते थे। इस से मा'लूम हुवा कि ह़राम सिर्फ़ वोह है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़राम फ़रमा दें। ह़लाल के लिये ख़ास दलील की ज़रूरत नहीं, किसी चीज़ का ह़राम न होना ही ह़लाल की दलील है जिस त़रह़ इस आयत में वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमा दिया गया। इस से उन लोगों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो मुसल्मानों के पाकीज़ा खानों को ह़ीले बहानों से ह़राम बल्कि शिर्क क़रार देते रहते हैं।

﴿وَاَنْتُمْ حُرُمٌ : **और तुम ह़ालते एह़राम में हो ।**﴾ एह़राम की ह़ालत में ख़ुश्की का शिकार करना ह़राम है जब कि दरियाई शिकार जाइज़ है।[2]

ख़याल रहे कि मोह़रिम (या'नी एह़राम वाले) का शिकार किया हुवा न मोह़रिम को ह़लाल है न ग़ैर को, एह़राम ख़्वाह ह़ज का हो या उ़म्रे का। इस सूरह के आख़िर में भी मोह़रिम के शिकार के मसाइल का बयान आएगा।

---

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ١، ١/٤٥٨.

2 ......بدائع الصنائع، كتاب الحج، فصل واما بيان انواعه، ٢/٤٢٧.

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآىِٕرَ اللّٰهِ وَ لَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ لَا الْهَدْيَ وَ لَا
الْقَلَآىِٕدَ وَ لَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رِضْوَانًا ؕ
وَ اِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَ تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ التَّقْوٰى ۪ (وقف لازم)
وَ لَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ (الربع)
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ह़लाल न ठहरा लो **अल्लाह** के निशान और न अदब वाले महीने और न ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां और न जिन के गले में अ़लामतें आवेज़ां और न उन का माल आबरू जो इ़ज़्ज़त वाले घर का क़स्द कर के आएं अपने रब का फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी चाहते और जब एह़राम से निकलो तो शिकार कर सकते हो और तुम्हें किसी क़ौम की अ़दावत कि उन्हों ने तुम को मस्जिदे ह़राम से रोका था ज़ियादती करने पर न उभारे और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की निशानियां ह़लाल न ठहरा लो और न अदब वाले महीने और न ह़रम को भेजी गई क़ुरबानियां और न (ह़रम में लाए जाने वाले वोह जानवर) जिन के गले में अ़लामती पट्टे हों और न अदब वाले घर का क़स्द कर के आने वालों (के माल व इ़ज़्ज़त) को जो अपने रब का फ़ज़्ल और उस की रिज़ा तलाश करते हैं और जब एह़राम से बाहर जाओ तो शिकार कर सकते हो और तुम्हें किसी क़ौम की दुश्मनी इस वज्ह से ज़ियादती करने पर न उभारे कि उन्हों ने तुम्हें मस्जिदे ह़राम से रोका था और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न करो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** शदीद अ़ज़ाब देने वाला है ।

www.dawateislami.net

﴿لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ : **अल्लाह की निशानियां ह़लाल न ठहरा लो ।**﴾ इस आयत में दीन की निशानियों की क़द्र करने का हुक्म फ़रमाया है और मा'ना येह हैं कि जो चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ कीं और जो मन्अ़ फ़रमाईं सब की हु़र्मत का लिह़ाज़ रखो । नीज़ जो चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां क़रार पा जाएं उन का एह़तिराम करना बहुत ज़रूरी है लिहाज़ा दीनी अ़ज़मत वाली चीज़ों का एह़तिराम किया जाएगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो **अल्लाह** की निशानियों की ता'ज़ीम करे तो येह दिलों का तक़्वा है ।

इस شَعَآئِرُ اللّٰه या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में ख़ानए का'बा, क़ुरआने पाक, मसाजिद, अज़ान, बुज़ुर्गों के मज़ारात वग़ैरा सब ही दाख़िल हैं बल्कि जिस चीज़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों से निस्बत हो जाए वोह भी شَعَآئِرُ اللّٰه बन जाती है जैसे ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के क़दम सफ़ा व मर्वह पहाड़ों पर पड़े तो वोह पहाड़ شَعَآئِرُ اللّٰه बन गए और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमा दिया :

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक सफ़ा और मर्वह **अल्लाह** की निशानियों से हैं ।

﴿وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ : **और न हु़र्मत वाले महीनों को ।**﴾ फ़रमाया गया कि हु़र्मत वाले महीनों को ह़लाल न ठहरा लो । मोह़तरम महीने चार हैं, रजब, ज़ीक़ा'द, ज़ुल ह़िज्जा और मुह़र्रम । ज़मानए जाहिलिय्यत में भी कुफ़्फ़ार इन का अदब करते थे और इस्लाम ने भी इन का एह़तिराम बाक़ी रखा । याद रहे कि अव्वलन इस्लाम में इन महीनों में जंग ह़राम थी, अब हर वक़्त जिहाद हो सकता है, लेकिन इन का एह़तिराम ब दस्तूर बाक़ी है । इस की तफ़्सील सूरए तौबह, आयत नम्बर 36 में आएगी ।

﴿وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ : **और न ह़रम की क़ुरबानियां और न अ़लामती पट्टे वाली क़ुरबानियां ।**﴾ अ़रब के लोग क़ुरबानियों के गले में ह़रम शरीफ़ के दरख़्तों की छाल वग़ैरा से हार बुन कर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि येह ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां हैं और इन से छेड़ख़ानी न करें । ह़रम शरीफ़ की उन क़ुरबानियों के एह़तिराम का हुक्म दिया गया है ।

1 ......الحج:٣٢.
2 ......البقرہ:١٥٨.

www.dawateislami.net

﴿وَلَآ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ﴾ : **और न अदब वाले घर का क़स्द कर के आने वालों (के माल व इज़्ज़त) को ।** अदब वाले घर का क़स्द कर के आने वालों से मुराद ह़ज व उ़म्रह करने के लिये आने वाले हैं । आयत का शाने नुज़ूल येह है कि शुरैह़ बिन हिन्द एक मश्हूर बद बख़्त था वोह मदीनए त़य्यिबा में आया और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मख़्लूक़े ख़ुदा को क्या दा'वत देते हैं ? ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक़ करने और नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात देने की दा'वत देता हूं । वोह कहने लगा, बहुत अच्छी दा'वत है, मैं अपने सरदारों से राय ले लूं तो मैं भी इस्लाम लाऊंगा और उन्हें भी लाऊंगा । येह कह कर वोह चला गया । हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के आने से पहले ही अपने अस्ह़ाब को ख़बर दे दी थी कि क़बीलए रबीआ़ का एक शख़्स आने वाला है जो शैत़ानी ज़बान बोलेगा । उस के चले जाने के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "काफ़िर का चेहरा ले कर आया और ग़द्दार व बद अ़ह्द की त़रह़ पीठ फेर कर गया, येह इस्लाम लाने वाला नहीं ।" चुनान्चे उस ने फ़रेब किया और मदीना शरीफ़ से निकलते हुए वहां के मवेशी और अम्वाल ले गया । अगले साल वोह यमामा के ह़ाजियों के साथ तिजारत का कसीर सामान और ह़ज की क़लादा पोश या'नी मख़्सूस हार वाली क़ुरबानियां ले कर ह़ज के इरादे से निकला । नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इसी शुरैह़ को देखा और चाहा कि मवेशी उस से वापस ले लें लेकिन नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया । इस पर येह आयत नाज़िल हुई ।(1)

और हुक्म दिया गया कि जो ह़ज के इरादे से निकला हो उसे कुछ न कहा जाए ।

﴿وَاِذَا حَلَلْتُمْ﴾ : **और जब तुम एह़राम से फ़ारिग़ हो जाओ ।** एह़राम से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़रम शरीफ़ से बाहर शिकार करने की इजाज़त है । येह हुक्म दर ह़क़ीक़त एक इजाज़त है मगर येह इबाह़त (जाइज़ होना) ऐसी क़त़ई है कि इस का मुन्किर काफ़िर है ।

﴿وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ﴾ : **और तुम्हें बर अंगेख़्ता न करे ।** मुराद येह है कि अहले मक्का ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को हुदैबिया के दिन उ़म्रह करने से रोका लेकिन तुम उन के इस मुआ़निदाना फ़े'ल का इन्तिक़ाम न लो ।

(1) ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٢، ١/٤٥٩.

www.dawateislami.net

अलबत्ता येह याद रहे कि अब काफ़िर को मस्जिदे ह़राम से रोका जाएगा क्यूं कि बा'द में मुमानअ़त का हुक्म नाज़िल हो गया था, चुनान्चे फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا [1]

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मुशिरक निरे नापाक हैं तो इस बरस के बा'द वोह मस्जिदे ह़राम के पास न आने पाएं।

﴾وَتَعَاوَنُوْا : **और एक दूसरे की मदद करो।**﴿ इस आयते मुबारका में **अल्लाह** तआ़ला ने दो बातों का हुक्म दिया है : **(1)** नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करने का। **(2)** गुनाह और ज़ियादती पर बाहमी तआ़वुन न करने का। **बिर** से मुराद हर वोह नेक काम है जिस के करने का शरीअ़त ने हुक्म दिया है और **तक़्वा** से मुराद येह है कि हर उस काम से बचा जाए जिस से शरीअ़त ने रोका है। **इस्म** से मुराद गुनाह है और **उ़दवान** से मुराद **अल्लाह** तआ़ला की हुदूद में ह़द से बढ़ना।[2]

एक क़ौल येह है कि **इस्म** से मुराद कुफ़्र है और **उ़दवान** से मुराद ज़ुल्म या बिद्अ़त है।[3]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : नेकी से मुराद सुन्नत की पैरवी करना है।[4]

ह़ज़रते नवास बिन समआ़न رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी हुस्ने अख़्लाक़ है और गुनाह वोह है जो तेरे दिल में खटके और लोगों का उस से वाक़िफ़ होना तुझे ना पसन्द हो।[5]

नेकी के कामों में एक दूसरे की मदद करने और गुनाह के कामों में मदद न करने का हुक्म

येह इन्तिहाई जामेअ़ आयते मुबारका है, नेकी और तक़्वा में इन की तमाम अन्वाअ़ व अक़्साम दाख़िल हैं और **इस्म** और **उ़दवान** में हर वोह चीज़ शामिल है जो गुनाह और ज़ियादती

1 ......التوبہ:٢٨.
2 ......جلالين، المائدة، تحت الآية: ٢، ص٩٤.
3 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٢، ١/٤٦١.
4 ......صاوى، المائدة، تحت الآية: ٢، ٢/٤٦٩.
5 ......ترمذى، كتاب الزهد، باب ما جاء فى البرّ والاثم، ٤/١٧٣، الحديث: ٢٣٩٦.

www.dawateislami.net

के जुम्रे में आती हो। इल्मे दीन की इशाअ़त में वक़्त, माल, दर्सो तदरीस और तह़रीर वग़ैरा से एक दूसरे की मदद करना, दीने इस्लाम की दा'वत और इस की ता'लीमात दुन्या के हर गोशे में पहुंचाने के लिये बाहमी तआ़वुन करना, अपनी और दूसरों की अ़मली ह़ालत सुधारने में कोशिश करना, नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना, मुल्को मिल्लत के इज्तिमाई मफ़ादात में एक दूसरे से तआ़वुन करना, सोशल वर्क और समाजी ख़िदमात सब इस में दाख़िल है। गुनाह और ज़ुल्म में किसी की भी मदद न करने का हुक्म है। किसी का ह़क़ मारने में दूसरों से तआ़वुन करना, रिश्वतें ले कर फ़ैसले बदल देना, झूटी गवाहियां देना, बिला वज्ह किसी मुसल्मान को फंसा देना, ज़ालिम का उस के ज़ुल्म में साथ देना, ह़राम व ना जाइज़ कारोबार करने वाली कम्पनियों में किसी भी त़रह़ शरीक होना, बदी के अड्डों में नोकरी करना येह सब एक त़रह़ से बुराई के साथ तआ़वुन है और ना जाइज़ है। سُبْحٰنَ اللّٰه ! क़ुरआने पाक की ता'लीमात कितनी उ़म्दा और आ'ला हैं, इस का हर हुक्म दिल की गहराइयों में उतरने वाला, इस की हर आयत गुमराहों और गुमराह गरों के लिये रोशनी का एक मीनार है। इस की ता'लीमात से सह़ीह़ फ़ाएदा उसी वक़्त ह़ासिल किया जा सकता है जब उन पर अ़मल भी किया जाए। अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना मुसल्मानों की एक ता'दाद अ़मली त़ौर पर क़ुरआनी ता'लीमात से बहुत दूर जा चुकी है। **अल्लाह** तआ़ला सभी मुसल्मानों को क़ुरआन के अह़कामात पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

حُرِّمَتْ عَلَیْكُمُ الْمَیْتَةُ وَ الدَّمُ وَ لَحْمُ الْخِنْزِیْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ
بِهٖ وَ الْمُنْخَنِقَةُ وَ الْمَوْقُوْذَةُ وَ الْمُتَرَدِّیَةُ وَ النَّطِیْحَةُ وَ مَاۤ اَكَلَ
السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّیْتُمْ قف وَ مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَ اَنْ تَسْتَقْسِمُوْا
بِالْاَزْلَامِ ط ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط اَلْیَوْمَ یَىٕسَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ
دِیْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ اخْشَوْنِ ط اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ
اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ط فَمَنِ اضْطُرَّ

www.dawateislami.net

فِىۡ مَخۡمَصَةٍ غَيۡرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثۡمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝۳

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर ह़राम है मुर्दार और खून और सुअर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान पर ज़ब्ह़ किया गया और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह का काम है, आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई तो उन से न डरो और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया तो जो भूक प्यास की शिद्दत में नाचार हो यूं कि गुनाह की त़रफ़ न झुके तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम पर ह़राम कर दिया गया है मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जानवर जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो और वोह जो गला घोंटने से मरे और वोह जो बिग़ैर धारीदार चीज़ (की चोट) से मारा जाए और जो बुलन्दी से गिर कर मरा हो और जो किसी जानवर के सींग मारने से मरा हो और वोह जिसे किसी दरिन्दे ने खा लिया हो मगर (दरिन्दों का शिकार किया हुवा) वोह जानवर जिन्हें तुम ने (ज़िन्दा पा कर) ज़ब्ह़ कर लिया हो और जो किसी बुत के आस्ताने पर ज़ब्ह़ किया गया हो और (ह़राम है) कि पांसे डाल कर क़िस्मत मा'लूम करो येह गुनाह का काम है। आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िर ना उम्मीद हो गए तो उन से न डरो और मुझ से डरो। आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और मैं ने तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया तो जो भूक प्यास की शिद्दत में मजबूर हो इस ह़ाल में कि गुनाह की त़रफ़ माइल न हो (तो वोह खा सकता है।) तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ : **तुम पर ह़राम कर दिया गया है।**﴾ सूरत की पहली आयत में फ़रमाया था कि तुम पर चौपाए ह़लाल हैं सिवाए उन चौपायों के जो आगे बयान किये जाएंगे। यहां उन्हीं का बयान है और ग्यारह चीज़ों के ह़राम होने का ज़िक्र किया गया है :

(1)...... मुर्दार या'नी जिस जानवर के लिये शरीअ़त में ज़ब्ह़ का हुक्म हो और वोह बे ज़ब्ह़ मर जाए।

(2)...... बहने वाला ख़ून।

www.dawateislami.net

(3)...... सुअर का गोश्त और इस के तमाम अज्ज़ा ।

(4)...... वोह जानवर जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते थे और जिस जानवर को ज़ब्ह़ तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे अवक़ात में वोह ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ मन्सूब रहा हो वोह ह़राम नहीं जैसा कि अ़ब्दुल्लाह की गाय, अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर या वोह जानवर जिन से औलिया की अरवाह़ को सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो उन को ज़ब्ह़ के वक़्त के इलावा औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़ब्ह़ उन का फ़क़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए वोह ह़लाल व त़य्यिब हैं । इस आयत में सिर्फ़ उसी को ह़राम फ़रमाया गया है जिस को ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो, जो लोग ज़ब्ह़ की क़ैद नहीं लगाते वोह आयत के मा'ना में ग़लत़ी करते हैं और उन का क़ौल तमाम मो'तबर तफ़ासीर और ख़ुद मफ़्हूमे क़ुरआन के ख़िलाफ़ है ।

(5)...... गला घोंट कर मारा हुवा जानवर ।

(6)...... वोह जानवर जो लाठी, पथ्थर, ढेले, गोली, छर्रे या'नी बिग़ैर धारदार चीज़ से मारा गया हो ।

(7)...... जो गिर कर मरा हो ख़्वाह पहाड़ से या कूंएं वग़ैरा में ।

(8)...... वोह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वोह उस के सदमे से मर गया हो ।

(9)...... वोह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा खाया हो और वोह उस के ज़ख़्म की तक्लीफ़ से मर गया हो लेकिन अगर येह जानवर मर न गए हों और ऐसे वाक़िआत के बा'द ज़िन्दा बच गए हों फिर तुम उन्हें बा क़ाइदा ज़ब्ह़ कर लो तो वोह ह़लाल हैं ।

(10)...... वोह जो किसी बुत के थान पर बत़ौर इ़बादत के ज़ब्ह़ किया गया हो जैसा कि अहले जाहिलिय्यत ने का'बे शरीफ़ के गिर्द तीन सो साठ पथ्थर नस्ब किये थे जिन की वोह इ़बादत करते और उन के लिये ज़ब्ह़ करते थे और इस ज़ब्ह़ से उन की ता'ज़ीमो तक़र्रुब की निय्यत करते थे । इस सूरत का बत़ौरे ख़ास इस लिये ज़िक्र किया गया है कि येह त़रीक़ा बत़ौरे ख़ास उन में राइज था ।

(11)...... किसी काम वग़ैरा का हुक्म मा'लूम करने के लिये पांसा डालना, ज़मानए जाहिलिय्यत के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह़ वग़ैरा काम दरपेश होते तो वोह तीन तीरों से पांसे डालते और जो ''हां'' या ''न'' निकलता उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते और उस को हुक्मे इलाही जानते । इन सब की मुमानअ़त फ़रमाई गई ।

www.dawateislami.net

﴾اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ : **आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया।**﴿ तक्मीले दीन से मुतअ़ल्लिक़ येह आयते मुबारका ह़ज्जतुल वदाअ़ में अ़रफ़े के रोज़, जुमुआ़ के दिन, अ़स्र के बा'द नाज़िल हुई और बता दिया गया कि ह़राम व ह़लाल के जो अह़काम हैं वोह और क़ियास के क़ानून सब मुकम्मल कर दिये, इसी लिये इस आयत के नुज़ूल के बा'द बयाने ह़लाल व ह़राम की कोई आयत नाज़िल न हुई अगर्चे ''وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ'' नाज़िल हुई जो वा'ज़ो नसीह़त पर मुश्तमिल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि दीन कामिल करने के मा'ना इस्लाम को ग़ालिब करना है जिस का येह असर है कि ह़ज्जतुल वदाअ़ में जब येह आयत नाज़िल हुई तो कोई मुश्रिक मुसल्मानों के साथ ह़ज में शरीक न हो सका। एक क़ौल येह है कि आयत का मा'ना येह है कि मैं ने तुम्हें दुश्मन से अम्न दी, एक क़ौल येह है कि दीन का इक्माल या'नी मुकम्मल करना येह है कि वोह पिछली शरीअ़तों की त़रह़ मन्सूख़ न होगा और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा।(1)

दीनी काम्याबी के दिन ख़ुशी मनाना जाइज़ है

इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास एक यहूदी आया और उस ने कहा, ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, आप की किताब में एक आयत है, अगर वोह हम यहूदियों पर नाज़िल हुई होती तो हम उस के नाज़िल होने के दिन ईद मनाते। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस से फ़रमाया : कौन सी आयत ? उस यहूदी ने येही आयत ''اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ'' पढ़ी। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : मैं उस दिन को जानता हूं जिस में येह नाज़िल हुई थी और इस के नाज़िल होने के मक़ाम को भी पहचानता हूं, वोह मक़ाम अ़रफ़ात का था और दिन जुमुआ़ का।(2)

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुराद इस से येह थी कि हमारे लिये वोह दिन ईद है। नीज़ तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से भी एक यहूदी ने ऐसा ही कहा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि जिस रोज़ येह नाज़िल हुई उस दिन दो ईदें थीं, जुमुआ़ और अ़रफ़ा।(3)

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٣، ٤٦٤/١.

2 ......بخاری، کتاب الايمان ، باب زيادة الايمان و نقصانه ، ٢٨/١ ، الحديث : ٤٥ ، مسلم ، کتاب التفسير ، ص ١٦٠٩، الحديث: ٥(٣٠١٧).

3 ......ترمذی، کتاب التفسير، باب ومن سورة المائدة، ٣٣/٥، الحديث: ٣٠٥٥.

www.dawateislami.net

इस से मा'लूम हुवा कि किसी दीनी काम्याबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जाइज़ और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से साबित है वरना ह़ज़रते उ़मर और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िआ़ हो उस की यादगार क़ाइम करना और उस रोज़ को ईद मनाना हम बिद्अ़त जानते हैं इस से साबित हुवा कि ईदे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सब से अ़ज़ीम ने'मत की यादगार व शुक्र गुज़ारी है।

﴾وَاَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ : **और मैं ने तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी।**﴿ मुराद येह है कि मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर मैं ने तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी। मक्कए मुकर्रमा की फ़त्ह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत थी।

﴾وَرَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا : **और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।**﴿ या'नी मैं ने तुम्हारे लिये दीन के त़ौर पर इस्लाम को पसन्द कर लिया कि इस के सिवा कोई और दीन क़बूल नहीं।

आयत "وَرَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا" से मा'लूम होने वाले अह़काम

इस आयत से कई अह़काम मा'लूम हुए :

पहला येह कि सिर्फ़ इस्लाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है या'नी जो अब दीने मुह़म्मदी की सूरत में है, बाक़ी सब दीन अब ना क़ाबिले क़बूल हैं।

दूसरा येह कि इस आयत के नुज़ूल के बा'द क़ियामत तक इस्लाम का कोई हुक्म मन्सूख़ नहीं हो सकता।

तीसरा येह कि उसूले दीन में ज़ियादती कमी नहीं हो सकती। इज्तिहादी फ़ुरूई मस्अले हमेशा निकलते रहेंगे।

चौथा येह कि सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं बन सकता क्यूं कि दीन कामिल हो चुका, सूरज निकल आने पर चराग़ की ज़रूरत नहीं, लिहाज़ा क़ादियानी झूटे, बेदीन और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के कलाम और दीन को नाक़िस समझने वाले हैं।

पांचवां येह कि इस्लाम को छोड़ कर कोई लाखों नेकियां करे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को प्यारा नहीं क्यूं कि इस्लाम जड़ है और आ'माल शाख़ें और पत्ते, और जड़ कट जाने के बा'द शाख़ों और पत्तों को पानी देना बेकार है।

﴾فَمَنِ اضْطُرَّ فِیْ مَخْمَصَةٍ : **तो जो भूक प्यास की शिद्दत में मजबूर हो।**﴿ इस आयत का मत़लब येह है कि ऊपर ह़राम चीज़ों का बयान कर दिया गया है लेकिन जब खाने पीने को कोई

www.dawateislami.net

हलाल चीज़ मुयस्सर ही न आए और भूक प्यास की शिद्दत से जान पर बन जाए उस वक़्त जान बचाने के लिये ब क़दरे ज़रूरत खाने पीने की इजाज़त है इस तरह कि गुनाह की तरफ़ माइल न हो या'नी ज़रूरत से ज़ियादा न खाए और ज़रूरत उसी क़दर खाने से रफ़्अ़ हो जाती है जिस से ख़तरए जान जाता रहे।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَاۤ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّیِّبٰتُ ۙ وَ مَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِیْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ٘ فَكُلُوْا مِمَّاۤ اَمْسَكْنَ عَلَیْكُمْ وَ اذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَیْهِ ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ۝۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम से पूछते हैं कि उन के लिये क्या हलाल हुवा तुम फ़रमा दो कि हलाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीज़ें और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा लिये उन्हें शिकार पर दौड़ाते जो इल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उस में से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वोह मार कर तुम्हारे लिये रहने दें और उस पर **अल्लाह** का नाम लो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते देर नहीं लगती।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हबीब ! तुम से पूछते हैं कि उन के लिये क्या हलाल हुवा ? तुम फ़रमा दो कि हलाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीज़ें और उन शिकारी जानवरों (का शिकार) जिन्हें तुम ने शिकार पर दौड़ाते हुए शिकार करना सिखा दिया है। तुम उन्हें वोह सिखाते हो जिस की **अल्लाह** ने तुम्हें ता'लीम दी है तो उस में से खाओ जो वोह शिकार कर के तुम्हारे लिये रोक दें और (शिकारी जानवर को छोड़ते वक़्त) उस पर **अल्लाह** का नाम लो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

﴿مَاذَاۤ اُحِلَّ لَهُمْ : **उन के लिये क्या हलाल हुवा ?**﴾ येह आयत हज़रते अ़दी बिन हातिम और हज़रते ज़ैद बिन मुहल्हिल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के हक़ में नाज़िल हुई जिन का नाम सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "ज़ैदुल ख़ैर" रखा था। इन दोनों साहिबों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !**

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रीए से शिकार करते हैं तो क्या हमारे लिये ह़लाल है ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई ।[1]

आयत में "त़य्यिबात" को ह़लाल फ़रमाया गया है और "त़य्यिबात" वोह चीजें हैं जिन की हुर्मत कुरआनो ह़दीस और इज्माअ़ व क़ियास में से किसी से साबित नहीं है । एक क़ौल येह भी है कि त़य्यिबात वोह चीजें हैं जिन को सलीमुत्तब्अ़ लोग पसन्द करते हैं और ख़बीस वोह चीजें हैं जिन से सलीम त़बीअ़तें नफ़रत करती हैं ।[2]

इस से मा'लूम हुवा कि किसी चीज़ की हुर्मत पर दलील न होना भी उस की ह़िल्लत के लिये काफ़ी है ।

﴿اَلْجَوَارِحِ : **शिकारी जानवर** ।﴾ शिकारी जानवरों से किया हुवा शिकार भी ह़लाल है ख़्वाह वोह शिकारी जानवर दरिन्दों में से हों जैसे कुत्ते और चीते के शिकार या शिकारी जानवर का तअ़ल्लुक़ परिन्दों से हो जैसे शिक्रे, बाज़, शाहीन वग़ैरा के शिकार । जब इस त़रह़ सधा कर उन की तरबियत कर दी जाए कि वोह जो शिकार करें उस में से न खाएं और जब शिकारी उन को छोड़े तब शिकार पर जाएं और जब बुलाए वापस आ जाएं ऐसे शिकारी जानवरों को मुअ़ल्लम (या'नी सिखाया हुवा) कहते हैं ।

﴿مِمَّاۤ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ : **जो वोह शिकार कर के तुम्हारे लिये रोक दें** ।﴾ या'नी तुम्हारे सधाए हुए शिकारी कुत्ते या जानवर जब शिकार कर के लाएं और उस में से ख़ुद कुछ न खाएं तो अगर्चे जानवर मर गया हो, तब भी ह़लाल है और अगर कुत्ते ने कुछ खा लिया हो तो ह़राम है कि येह उस ने अपने लिये शिकार किया, तुम्हारे लिये नहीं ।

आयत का ख़ुलासा : आयत से जो मा'लूम होता है उस का ख़ुलासा येह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिक्रा वग़ैरा कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उस का शिकार चन्द शर्तों से ह़लाल है :

(1)...... शिकारी जानवर मुसल्मान या किताबी का हो और सिखाया हुवा हो ।

(2)...... उस ने शिकार को ज़ख़्म लगा कर मारा हो ।

(3)...... शिकारी जानवर بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर छोड़ा गया हो ।

(4)...... अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उस को بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर ज़ब्ह़ करे अगर इन शर्तों में से कोई शर्त़ न पाई गई तो ह़लाल न होगा । मसलन अगर शिकारी जानवर

1 ......بغوی، المائدة، تحت الآية: ٤، ٨/٢. 2 ......بيضاوی، المائدة، تحت الآية: ٤، ٢٩٥/٢.

www.dawateislami.net

मुअ़ल्लम (या'नी सिखाया हुवा) न हो या उस ने ज़ख़्म न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक़्त जान बूझ कर بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ न पढ़ा हो या शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो और उस को ज़ब्ह़ न किया हो या मुअ़ल्लम (या'नी सिखाए हुए जानवर) के साथ ग़ैर मुअ़ल्लम (या'नी न सिखाया हुवा जानवर) शिकार में शरीक हो गया हो या ऐसा शिकारी जानवर शरीक हो गया हो जिस को छोड़ते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ न पढ़ा गया हो या वोह शिकारी जानवर मजूसी काफ़िर का हो, इन सब सूरतों में वोह शिकार ह़राम है।

शिकार के दूसरे त़रीक़े का शरई हुक्म

तीर से शिकार करने का भी येही हुक्म है अगर بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ कह कर तीर मारा और उस से शिकार मजरूह़ (या'नी ज़ख़्मी) हो कर मर गया तो ह़लाल है और अगर न मरा तो दोबारा उस को بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ पढ़ कर ज़ब्ह़ करे अगर उस पर بِسۡمِ اللّٰہِ न पढ़ी या तीर का ज़ख़्म उस को न लगा या ज़िन्दा पाने के बा'द उस को ज़ब्ह़ न किया इन सब सूरतों में ह़राम है।

नोट : शिकार के मसाइल की मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 17 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

اَلۡیَوۡمَ اُحِلَّ لَکُمُ الطَّیِّبٰتُ ؕ وَ طَعَامُ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡکِتٰبَ حِلٌّ لَّکُمۡ ۪ وَ طَعَامُکُمۡ حِلٌّ لَّہُمۡ ۫ وَ الۡمُحۡصَنٰتُ مِنَ الۡمُؤۡمِنٰتِ وَ الۡمُحۡصَنٰتُ مِنَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡکِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ اِذَاۤ اٰتَیۡتُمُوۡہُنَّ اُجُوۡرَہُنَّ مُحۡصِنِیۡنَ غَیۡرَ مُسٰفِحِیۡنَ وَ لَا مُتَّخِذِیۡۤ اَخۡدَانٍ ؕ وَ مَنۡ یَّکۡفُرۡ بِالۡاِیۡمَانِ فَقَدۡ حَبِطَ عَمَلُہٗ ۫ وَ ہُوَ فِی الۡاٰخِرَۃِ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَ ٪﴿۵﴾ ع ٥

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें ह़लाल हुईं और किताबियों का खाना तुम्हारे लिये ह़लाल है और तुम्हारा खाना उन के लिये ह़लाल है और पारसा औ़रतें मुसल्मान और पारसा औ़रतें उन में से जिन को तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उन के महर दो क़ैद में

www.dawateislami.net

लाते हुए न मस्ती निकालते और न आशना बनाते और जो मुसल्मान से काफ़िर हो उस का किया धरा सब अकारत गया और वोह आख़िरत में ज़ियांकार है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें ह़लाल कर दी गईं और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिये ह़लाल है और तुम्हारा खाना उन के लिये ह़लाल है और पाक दामन मुसल्मान औ़रतें और जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई उन की पाक दामन औ़रतें (तुम्हारे लिये ह़लाल कर दी गईं) जब कि तुम उन से निकाह़ करते हुए उन्हें उन के महर दो, न ज़िना करते हुए और न उन्हें पोशीदा आशना बनाते हुए और जो ईमान से फिर कर काफ़िर हो जाए तो उस का हर अ़मल बरबाद हो गया और वोह आख़िरत में ख़सारा पाने वालों में होगा।

﴿اَلْیَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّیِّبٰتُ : **आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें ह़लाल कर दी गईं।**﴾ अहले किताब का ज़ब्ह़ किया हुवा जानवर भी मुसल्मानों के लिये ह़लाल है ख़्वाह यहूदी ज़ब्ह़ करे या ईसाई, यूंही मर्द ज़ब्ह़ करे या औ़रत या समझदार बच्चा। लेकिन येह याद रखना निहायत ज़रूरी है कि उन अहले किताब का ज़बीह़ा ह़लाल है जो वाक़ेई़ अहले किताब हों, मौजूदा ज़माने में ईसाइयों की बहुत बड़ी ता'दाद दह्‌रिया और ख़ुदा के मुन्किर हो चुके हैं लिहाज़ा न उन का ज़बीह़ा ह़लाल है और न औ़रतें।

अहले किताब से निकाह़ के चन्द अहम मसाइल

(1)...... अहले किताब की औ़रतों से निकाह़ ह़लाल है लेकिन इस में भी येह शर्त़ है कि वोह वाक़ेई़ अहले किताब हों, दह्‌रिया न हों जैसे आज कल बहुत से ऐसे भी हैं।

(2)...... येह इजाज़त भी दारुल इस्लाम में रहने वाली ज़िम्मिया अहले किताब औ़रत के साथ है। मौजूदा ज़माने में जो अहले किताब हैं येह ह़र्बी हैं और ह़र्बिया अहले किताब के साथ निकाह़ करना मक्रूहे तह़रीमी है।

(3)...... एक और अहम मस्अला येह है कि येह इजाज़त सिर्फ़ मुसल्मान मर्दों को है मुसल्मान औ़रत का निकाह़ किताबी मर्द से क़त़्ई़ ह़राम है।

(4)...... अहले किताब औ़रतों में से अच्छे किरदार वाली से निकाह़ किया जाए येह हुक्म मुस्तह़ब है।

www.dawateislami.net

(5)...... अहले किताब औ़रत से इज़्दिवाजी तअ़ल्लुक़ात निकाह़ के ज़रीए़ ही क़ाइम किये जाएं, पोशीदा दोस्तियां लगाना या पोशीदा या ए'लानिया बदकारी करना इन के साथ भी ह़राम है।
(6)...... अहले किताब औ़रत को भी महर दिया जाएगा।

﴿غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ : **न कि मस्ती निकालते हुए।**﴾ ना जाइज़ त़रीक़े पर मस्ती निकालने से बे धड़क ज़िना करना और आशना बनाने से पोशीदा ज़िना मुराद है।

﴿وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ : **और जो ईमान से फिर कर काफ़िर हो जाए।**﴾ आयते मुबारका के आख़िर में मुरतद के बारे में फ़रमाया गया है कि इस के तमाम नेक आ'माल बरबाद हो जाते हैं। आख़िरत में इस के लिये कोई अज्रो सवाब बाक़ी नहीं रहता।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ
وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى
الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى
سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا
مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا
يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपने मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मस्ह़ करो और गट्टों तक पाउं धोओ और अगर तुम्हें नहाने की ह़ाजत हो तो ख़ूब सुथरे हो लो और अगर तुम बीमार या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया या तुम ने औ़रतों से सोह़बत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह़ करो, **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ

www.dawateislami.net

तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे और अपनी ने'मत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम एह्सान मानो ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जब तुम नमाज़ की त़रफ़ खड़े होने लगो तो अपने चेहरों को और अपने हाथ कोहनियों तक धो लो और सरों का मस्ह़ करो और टख़्नों तक पाउं धो लो और अगर तुम बे ग़ुस्ल हो तो ख़ूब पाक हो जाओ और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई बैतुल ख़ला से आया हो या तुम ने औ़रतों से सोह़बत की हो और इन सूरतों में पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो तो अपने चेहरों और हाथों का इस से मस्ह़ कर लो । **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ तंगी रखे लेकिन वोह येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब पाक कर दे और अपनी ने'मत तुम पर पूरी कर दे ताकि तुम शुक्र अदा करो ।

﴿اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ : **जब नमाज़ की त़रफ़ खड़े होने लगो ।**﴾ आयते मुबारका में वुज़ू और तयम्मुम का त़रीक़ा और इन की ह़ाजत कब होती है इस का बयान किया गया है ।

वुज़ू के फ़राइज़

वुज़ू के चार फ़र्ज़ हैं : **(1)** चेहरा धोना **(2)** कोहनियों समेत दोनों हाथों का धोना **(3)** चौथाई सर का मस्ह़ करना **(4)** टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना ।

वुज़ू के चन्द अह़काम

(1)...... जितना धोने का हुक्म है उस से कुछ ज़ियादा धो लेना मुस्तह़ब है कि जहां तक आ'ज़ाए वुज़ू को धोया जाएगा क़ियामत के दिन वहां तक आ'ज़ा रोशन होंगे ।[1]

(2)...... रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू फ़रमाया करते जब कि अक्सर सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم जब तक वुज़ू टूट न जाता उसी वुज़ू से एक से ज़ियादा नमाज़ें अदा फ़रमाते, एक वुज़ू से ज़ियादा नमाज़ें अदा करने का अ़मल ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी साबित है ।[2]

1 ......بخاری، کتاب الوضوء، باب فضل الوضوء والغرّ المحجّلون... الخ، ۱/۷۱، الحدیث: ۱۳۶.

2 ......بخاری ، کتاب الوضوء، باب الوضوء من غیر حدث، ۱/۹۵، الحدیث: ۲۱۴-۲۱۵، عمدة القاری ، کتاب الوضوء، باب الوضوء من غیر حدث، ۲/۵۹۰، تحت الحدیث: ۲۱۴.

www.dawateislami.net

(3)...... अगर्चे एक वुज़ू से भी बहुत सी नमाज़ें फ़राइज़ व नवाफ़िल दुरुस्त हैं मगर हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू करना ज़ियादा बरकत व सवाब का ज़रीआ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इब्तिदाए इस्लाम में हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू फ़र्ज़ था बा'द में मन्सूख़ किया गया (और जब तक बे वुज़ू करने वाली कोई चीज़ वाक़ेअ़ न हो एक ही वुज़ू से फ़राइज़ व नवाफ़िल सब का अदा करना जाइज़ हो गया)।[1]

(4)...... याद रहे कि जहां धोने का हुक्म है वहां धोना ही ज़रूरी है वहां मस्ह़ नहीं कर सकते जैसे पाउं को धोना ही ज़रूरी है मस्ह़ करने की इजाज़त नहीं, हां अगर मोज़े पहने हों तो इस की शराइत़ पाए जाने की सूरत में मोज़ों पर मस्ह़ कर सकते हैं कि येह अह़ादीसे मश्हूरा से साबित है।

﴾وَ اِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا﴿ : **और अगर तुम ह़ालते जनाबत में हो।** जनाबत का आ़म फ़ह्म मत़लब येह है कि शह्वत के साथ मनी का ख़ारिज होना।

जनाबत के अस्बाब और उन का शरई हुक्म

जनाबत के कई अस्बाब हैं : **(1)** जागते में शह्वत के साथ उछल कर मनी का ख़ारिज होना। **(2)** सोते में एह़तिलाम हो जाना। **(3)** हम बिस्तरी करना अगर्चे मनी ख़ारिज न हो। इस का हुक्म येह है कि ग़ुस्ल किये बिग़ैर नमाज़ पढ़ना, तिलावते क़ुरआन करना, क़ुरआने पाक को छूना और मस्जिद में दाख़िल होना ना जाइज़ है। जो काम जनाबत की ह़ालत में मन्अ़ हैं हैज़ो निफ़ास की ह़ालत में भी मन्अ़ होंगे लेकिन जब तक औ़रत हाएज़ा या निफ़ास की ह़ालत में है ग़ुस्ल करने से पाक न होगी जब कि जुनुबी ग़ुस्ल करने से पाक हो जाता है, इसी त़रह़ हैज़ो निफ़ास की ह़ालत में बीवी से सोह़बत करना भी मन्अ़ है जब कि जनाबत की ह़ालत में सोह़बत करना मन्अ़ नहीं।[2]

हैज़ो निफ़ास से भी ग़ुस्ल लाज़िम हो जाता है। हैज़ का मस्अला सूरए बक़रह आयत नम्बर 222 में गुज़र गया और निफ़ास से ग़ुस्ल लाज़िम होना इज्माअ़ से साबित है और तयम्मुम का बयान सूरए निसाअ आयत नम्बर 43 में तफ़्सील से गुज़र चुका। मज़ीद तफ़्सील जानने

---

1 ......مدارك، المائدة، تحت الآية: ٦، ص ٢٧٤.

2 ......احكام القرآن، سورة المائدة، باب الغسل من الجنابة، ٤٥٧/٢.

www.dawateislami.net

के लिये फ़िक्ही किताबों का मुतालआ फ़रमाएं ।(1)

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۷

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर और वोह अ़ह्द जो उस ने तुम से लिया जब कि तुम ने कहा हम ने सुना और माना और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** दिलों की बात जानता है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने ऊपर **अल्लाह** का एह़सान और उस का वोह अ़ह्द याद करो जो उस ने तुम से लिया था जब तुम ने कहा : हम ने सुना और माना और **अल्लाह** से डरो । बेशक **अल्लाह** दिलों की बात जानता है ।

﴿وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ : **और अपने ऊपर अल्लाह का एह़सान याद करो ।**﴾ इस आयत में बैअ़ते उ़क़्बा या बैअ़ते रिज़्वान की त़रफ़ इशारा है ।(2)

मज्मूई तौ़र पर आयते मुबारका का ख़ुलासा येह है कि ऐ सह़ाबा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अपने ऊपर एह़सान याद करो कि उस ने तुम्हें मुसल्मान बनाया और तुम्हारे लिये आसान अह़काम भेजे, सारी ज़मीन को मस्जिद और पाक करने वाला बनाया । नीज़ उस मीसाक़ व मुआ़हदे को याद करो जो तुम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त करते वक़्त बैअ़ते उ़क़्बा की रात और बैअ़ते रिज़्वान में किया । इस मुआ़हदे में सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया था कि हम ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हर हुक्म हर ह़ाल में सुनेंगे और मानेंगे ।

आयत "وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से चन्द मसाइल मा'लूम हुए :

1...... वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम के बारे में शरई मसाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ "नमाज़ के अह़काम" का मुतालआ करना भी बहुत मुफ़ीद है ।

2......مدارك، المائدة، تحت الآية: ٧، ص٢٧٦.

www.dawateislami.net

(1)...... इन्सान हर नेकी रब عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से करता है लिहाज़ा इस पर फ़ख़्र न करे बल्कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे।

(2)...... बैअ़ते उ़क़्बा और बैअ़ते रिज़्वान वाले सारे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे और मक़्बूल बन्दे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस बैअ़त का शरफ़ बख़्शा। उसी बैअ़त को यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत क़रार दिया गया है।

(3)...... इन सारे सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने इन बैअ़तों के सारे वा'दे पूरे किये और सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم वा'दे के सच्चे थे क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने यहां उन के वा'दे बिग़ैर तरदीद ज़िक्र फ़रमाए।

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِیْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ٘ وَ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْاؕ اِعْدِلُوْا٘ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى٘ وَ اتَّقُوا اللّٰهَؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ इन्साफ़ के साथ गवाही देते और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करो, वोह परहेज़ गारी से ज़ियादा क़रीब है और **अल्लाह** से डरो, बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ के साथ गवाही देते हुए **अल्लाह** के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ और तुम्हें किसी क़ौम की अ़दावत इस पर न उभारे कि तुम इन्साफ़ न करो (बल्कि) इन्साफ़ करो, येह परहेज़ गारी के ज़ियादा क़रीब है और **अल्लाह** से डरो, बेशक **अल्लाह** तुम्हारे तमाम आ'माल से ख़बरदार है।

﴾كُوْنُوْا قَوّٰمِیْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ﴿ **: इन्साफ़ के साथ गवाही देते हुए अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ।** आयते मुबारका में अ़द्लो इन्साफ़ का हुक्म फ़रमाया गया है और वाज़ेह फ़रमा दिया कि किसी क़िस्म की क़राबत या अ़दावत का कोई असर तुम्हें अ़द्ल से न हटा सके।

www.dawateislami.net

अ़द्लो इन्साफ़ के दो आ'ला नमूने

यहां अ़द्लो इन्साफ़ के दो आ'ला नमूने पेशे ख़िदमत हैं जिस से इस्लाम की ता'लीमात का नक़्शा सामने आता है।

(1)...... मुल्के ग़स्सान का बादशाह जबला बिन ऐहम अपने चन्द साथियों के हमराह ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मुसल्मान हो गया, कुछ दिनों बा'द अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज के इरादे से निकले तो जबला बिन ऐहम भी उस क़ाफ़िले में शरीक हो गया। मक्कए मुकर्रमा पहुंचने के बा'द एक दिन दौराने त़वाफ़ किसी दीहाती मुसल्मान का पाउं उस की चादर पर पड़ गया तो चादर कन्धे से उतर गई। जबला बिन ऐहम ने उस से पूछा : तू ने मेरी चादर पर क़दम क्यूं रखा ? उस ने कहा : मैं ने जान बूझ कर क़दम नहीं रखा ग़लत़ी से पड़ गया था। येह सुन कर जबला ने एक ज़ोरदार थप्पड़ उन के चेहरे पर रसीद कर दिया, थप्पड़ की वज्ह से उन के दो दांत टूट गए और नाक भी ज़ख़्मी हो गई। येह दीहाती मुसल्मान ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और जबला बिन ऐहम के सुलूक की शिकायत की। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जबला बिन ऐहम को त़लब फ़रमाया और पूछा : क्या तू ने इस दीहाती को थप्पड़ मारा है ? जबला ने कहा : हां मैं ने थप्पड़ मारा है, अगर इस ह़रम के तक़द्दुस का ख़याल न होता तो मैं इसे क़त्ल कर देता। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **ऐ जबला ! तू ने अपने जुर्म का इक़रार कर लिया है, अब या तो तू इस दीहाती से मुआ़फ़ी मांग या मैं तुम से इस का क़िसास लूंगा।** जबला ने ह़ैरान हो कर कहा : क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ग़रीब दीहाती की वज्ह से मुझ से क़िसास लेंगे ह़ालां कि मैं तो बादशाह हूं ? ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : इस्लाम क़बूल करने के बा'द ह़ुक़ूक़ में तुम दोनों बराबर हो। जबला ने अ़र्ज़ की : मुझे एक दिन की मोहलत दीजिये फिर मुझ से क़िसास ले लीजियेगा। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस दीहाती से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम इसे मोहलत देते हो ? दीहाती ने अ़र्ज़ की : जी हां। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मोहलत दे दी, मोहलत मिलने के बा'द रातों रात जबला बिन ऐहम ग़स्सानी मुल्के शाम की त़रफ़ भाग गया और उस ने ईसाई मज़हब इख़्तियार कर लिया।(1)

1......فتوح الشام، ذکر فتح حمص، ص ۱۰۰، الجزء الاول.

www.dawateislami.net

(2)...... एक मरतबा ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आपस में किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हुवा, दोनों ने येह तै किया कि हमारे मुआ़मले का फ़ैसला ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ करें। चुनान्चे येह फ़ैसले के लिये ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर पहुंचे। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : हम तुम्हारे पास इस लिये आए हैं ताकि तुम हमारे मुआ़मले का फ़ैसला कर दो। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिस्तर के दरमियान से जगह ख़ाली करते हुए अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! यहां तशरीफ़ रखिये। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह तुम्हारा पहला ज़ुल्म है जो तुम ने फ़ैसले के लिये मुक़र्रर होने के बा'द किया, **मैं तो अपने फ़रीक़ के साथ ही बैठूंगा**। येह फ़रमा कर ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने बैठ गए। मुक़द्दमे की कारवाई शुरूअ़ हुई, ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दा'वा किया और ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का इन्कार किया (ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दा'वे के सुबूत के लिये गवाह पेश न कर सके तो अब शर्ई उसूल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़सम खाना लाज़िम आता था) ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत और रुत्बे का लिह़ाज़ करते हुए) ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : आप अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़सम लेने से दर गुज़र कीजिये। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन ह़ल्फ़ उठा लिया और क़सम खाते हुए फ़रमाया : ज़ैद उस वक़्त तक मन्सबे क़ज़ा (या'नी जज बनने) का अह्ल नहीं हो सकता जब तक कि उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) और एक आ़म शख़्स इस के नज़्दीक (मुक़द्दमे के मुआ़मले में) बराबर नहीं हो जाते।[1]

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۹﴾ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۱۰﴾

1......ابن عساكر، ذكر من اسمه زيد، زيد بن ثابت بن الضحاك... الخ، ۳۱۹/۱۹.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले नेकोकारों से **अल्लाह** का वा'दा है कि उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है। और वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोही दोज़ख़ वाले हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** ने ईमान वालों और अच्छे अ़मल करने वालों से वा'दा फ़रमाया है कि उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है। और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही दोज़ख़ वाले हैं।

﴿وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ **: और उन्हों ने अच्छे अ़मल किये।**﴾ अच्छे आ'माल से मुराद हर वोह अ़मल है जो रिज़ाए इलाही का सबब बने। इस में फ़राइज़ो वाजिबात, सुन्नतें, मुस्तह़ब्बात, जानी व माली इ़बादतें, हुक़ूक़ुल्लाह, हुक़ूक़ुल इ़बाद वग़ैरा सब दाख़िल हैं।

नेक आ'माल की तरग़ीब

तरग़ीब के लिये एक ह़दीसे मुबारक पेश की जाती है। ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं एक सफ़र में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह था, एक रोज़ चलते चलते मैं आप के क़रीब हो गया और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मुझे ऐसा अ़मल बताइये कि जो मुझे जन्नत में दाख़िल करे और जहन्नम से दूर रखे। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तू ने मुझ से एक बहुत बड़ी बात का सुवाल किया अलबत्ता जिस के लिये **अल्लाह** तआ़ला आसान फ़रमा दे उस के लिये आसान है, तुम **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ाइम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज करो। फिर इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें नेकी के दरवाज़े न बताऊं ? रोज़ा ढाल है और सदक़ा गुनाहों को ऐसे बुझा (या'नी मिटा) देता है जैसे पानी आग को बुझाता है और रात के दरमियानी ह़िस्से में इन्सान का नमाज़ पढ़ना (भी गुनाहों को मिटा देता है)। फिर येह आयत ''تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ'' (**तरजमा :** उन की करवटें बिस्तरों से अलग रहती हैं) से ले कर ''یَعْمَلُوْنَ'' तक तिलावत फ़रमाई। फिर इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें सारी चीज़ों का सर, सुतून और कोहान की बुलन्दी न बता दूं ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, इर्शाद फ़रमाया : तमाम चीज़ों का सर इस्लाम है और इस का सुतून नमाज़ और कोहान की बुलन्दी जिहाद है। फिर इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें इन सब

www.dawateislami.net

के अस्ल की ख़बर न दे दूं। मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक को पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : इसे रोको। मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, क्या ज़बानी गुफ़्तगू पर भी हमारा मुआख़ज़ा होगा ? इर्शाद फ़रमाया : तेरी मां तुझे रोए ! लोगों को औंधे मुंह जहन्नम में उन की ज़बानों की काटी हुई खेती (या'नी गुफ़्तगू) गिराती है[1] ।[2]

﴿وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا : **और जिन्हों ने कुफ़्र किया ।**﴾ इस आयत से मा'लूम हुवा कि दाइमी जहन्नमी सिर्फ़ काफ़िर हैं जब कि मुसल्मान हमेशा के लिये जहन्नम में न रहेंगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ ع

ع ٢

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर दस्त दराज़ी करें तो उस ने उन के हाथ तुम पर से रोक दिये और **अल्लाह** से डरो और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अपने ऊपर **अल्लाह** का एह़सान याद करो जब एक क़ौम ने इरादा किया कि तुम्हारी त़रफ़ अपने हाथ दराज़ करें तो **अल्लाह** ने उन के हाथ तुम पर से रोक दिये और **अल्लाह** से डरो और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा करना चाहिये।

﴿اِذْ هَمَّ قَوْمٌ : **जब एक क़ौम ने इरादा किया ।**﴾ इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि एक मरतबा सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मन्ज़िल में क़ियाम फ़रमाया, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم जुदा जुदा दरख़्तों के साए में आराम करने लगे। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी तलवार एक दरख़्त पर लटका दी। एक आ'राबी मौक़अ़ पा कर

1......ترمذی، کتاب الایمان، باب ما جاء فی حرمة الصلاة، ٤/٢٨٠، الحدیث: ٢٦٢٥.

2...... नेक आ'माल में रग़बत और ज़बान की ह़िफ़ाज़त का जज़्बा पाने के लिये "दा'वते इस्लामी" के साथ वाबस्ता हो जाना चाहिये।

www.dawateislami.net

आया और छुप कर उस ने तलवार ली और तलवार खींच कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहने लगा, आप को मुझ से कौन बचाएगा ? रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह**।" उस आ'राबी ने दो या तीन मरतबा येह कहा कि आप को मुझ से कौन बचाएगा ? हर बार उसे येही जवाब मिला कि "**अल्लाह**।" फिर ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने उस के हाथ से तलवार गिरा दी और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पकड़ कर फ़रमाया : "अब तुझे मुझ से कौन बचाएगा ?" उस ने अ़र्ज़ की : मुझे कोई नहीं बचा सकता। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को बुलवाया और उन्हें (अपने पहलू में बैठे हुए) उस आ'राबी की ह़रकत के बारे में ख़बर दी, फिर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया।[1]

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَ بَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ
نَقِيْبًا ؕ وَ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَىٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ
وَ اٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَ عَزَّرْتُمُوْهُمْ وَ اَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ
عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ لَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ
فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया और हम ने उन में बारह सरदार क़ाइम किये और **अल्लाह** ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हारे साथ हूं ज़रूर अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दो तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां, फिर इस के बा'द जो तुम में से कुफ़्र करे वोह ज़रूर सीधी राह से बहका।

1 ......تفسير كبير، المائدة، تحت الآية: ۱۱، ۴/۳۲۲.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक **अल्लाह** ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया और हम ने उन में बारह सरदार क़ाइम किये और **अल्लाह** ने फ़रमाया : बेशक मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात देते रहो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दो तो बेशक मैं तुम से तुम्हारे गुनाह मिटा दूंगा और ज़रूर तुम्हें उन बाग़ों में दाखि़ल करूंगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं तो इस (अ़ह्द) के बा'द तुम में से जिस ने कुफ़्र किया तो वोह ज़रूर सीधी राह से भटक गया।

﴿وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ : और बेशक अल्लाह ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया।﴾ आयत का मफ़्हूम समझने के लिये येह वाक़िआ़ समझ लेना मुफ़ीद है। वाक़िआ़ येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वा'दा फ़रमाया था कि उन्हें और उन की क़ौम को मुक़द्दस सर ज़मीन या'नी शाम का वारिस बनाएगा जिस में कन्आ़नी जब्बार रहते थे। फ़िरऔ़न के हलाक होने के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्मे इलाही हुवा कि बनी इसराईल को अर्ज़े मुक़द्दसा (बैतुल मुक़द्दस) की त़रफ़ ले जाएं, मैं ने इस को तुम्हारे लिये रिहाइश बनाया है, तो वहां जाओ और जो दुश्मन वहां हैं उन से जिहाद करो, मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा और ऐ मूसा ! तुम अपनी क़ौम के हर हर गुरोह में से एक एक सरदार बनाओ, इस त़रह़ बारह सरदार मुक़र्रर करो जिन में से हर एक अपनी क़ौम के हुक्म मानने और अ़ह्द पूरा करने का ज़िम्मेदार हो। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बारह सरदार मुन्तख़ब कर के बनी इसराईल को ले कर रवाना हुए। जब अरीह़ा के क़रीब पहुंचे तो उन नक़ीबों (सरदारों) को दुश्मन के ह़ालात मा'लूम करने के लिये भेजा, वहां उन्हों ने देखा कि वोह लोग बहुत अ़ज़ीमुल जुस्सा (अ़ज़ीम जसामत वाले), निहायत क़वी व तुवाना और साहि़बे हैबतो शौकत हैं, येह उन से हैबत ज़दा हो कर वापस आए और आ कर उन्हों ने अपनी क़ौम से सब ह़ाल बयान कर दिया ह़ालां कि उन्हें इस से मन्अ़ किया गया था लेकिन सब ने अ़ह्द शिकनी की सिवाए दो आदमियों के एक : कालिब बिन यूक़न्ना और दूसरे यूशअ़ बिन नून। येह दोनों अ़ह्द पर क़ाइम रहे।[1]

इस सियाक़ो सबाक़ को सामने रख कर आयत का मफ़्हूम येह बनता है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करें, उस के साथ किसी को शरीक न करें और तौरैत के अह़काम की पैरवी करें। फिर क़ौमे जब्बारीन से जिहाद के लिये उन में बारह सरदार बनाए गए और **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फ़रमाया कि

1 ......مدارك، المائدة، تحت الآية: ١٢، ص ٢٧٧.

www.dawateislami.net

मैं तुम्हारे साथ हूं और मैं तुम्हारी मदद करूंगा और अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात देते रहो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को क़र्ज़े ह़सन दो या'नी उस की राह में ख़र्च करो तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दूंगा और तुम्हें जन्नत में दाख़िल करूंगा। आयत में रसूलों पर ईमान लाने के साथ उन की ता'ज़ीम का हुक्म दिया गया है। इस से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'ज़ीम अहम तरीन फ़राइज़ में से है।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन की कैसी बद अ़हदियों पर हम ने उन्हें ला'नत की और उन के दिल सख़्त कर दिये **अल्लाह** की बातों को उन के ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं और तुम हमेशा उन की एक न एक दग़ा पर मुत्तलअ़ होते रहोगे सिवा थोड़ों के तो उन्हें मुआ़फ़ कर दो और उन से दर गुज़रो बेशक एहसान वाले **अल्लाह** को महबूब हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उन के अ़हद तोड़ने की वज्ह से हम ने उन पर ला'नत की और उन के दिल सख़्त कर दिये। वोह **अल्लाह** की बातों को उन के मक़ामात से बदल देते हैं और उन्हों ने उन नसीहतों का बड़ा हिस्सा भुला दिया जो उन्हें की गई थीं और तुम उन में से चन्द एक के इ़लावा सब की किसी न किसी ख़ियानत पर मुत्तलअ़ होते रहोगे तो उन्हें मुआ़फ़ कर दो और उन से दर गुज़र करो बेशक **अल्लाह** एहसान करने वालों से महब्बत फ़रमाता है।

﴿فَبِمَا نَقْضِهِمْ : **तो उन के अ़हद तोड़ने की वज्ह से**।﴾ बनी इसराईल ने अ़हदे इलाही को तोड़ा और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की

www.dawateislami.net

और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़त्ल किया और तौरात के अह़काम की मुख़ालफ़त की नीज़ उन आयात को बदल दिया जिन में सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त का बयान था जो तौरैत में बयान की गई हैं नीज़ उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत सी हिदायात को फ़रामोश कर दिया जो तौरैत में दी गई थीं कि वोह ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करें और उन पर ईमान लाएं तो इन ह़रकतों के नतीजे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ला'नत फ़रमाई और उन के दिल सख़्त कर दिये।

गुनाहों की वज्ह से दिल सख़्त हो जाते हैं

इस से मा'लूम हुवा कि बद आ'मालियों की वज्ह से भी दिल सख़्त हो जाते हैं। ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : आंसू दिलों की सख़्ती की वज्ह से ख़ुश्क होते हैं और दिलों की सख़्ती गुनाहों की कसरत की वज्ह से होती है और ऐ़ब ज़ियादा होने की वज्ह से गुनाह कसीर होते हैं।[(1)]

और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सख़्त दिल आदमी **अल्लाह** तआ़ला से बहुत दूर रहता है।"[(2)]

अल्लाह तआ़ला हमें दिल की सख़्ती से मह़फ़ूज़ फ़रमाए, आमीन।

﴿وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ : **और आप हमेशा मुत्तलअ़ होते रहेंगे।**﴾ सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा उन लोगों की ख़ियानतों पर मुत्तलअ़ होते रहेंगे क्यूं कि दग़ाबाज़ी, ख़ियानत, अ़ह्द तोड़ना और रसूलों के साथ बद अ़ह्दी उन की और उन के आबाओ अज्दाद की क़दीम आ़दत है। हां उन में से जो ईमान लाने वालों की थोड़ी सी ता'दाद है येह ख़ाइन नहीं हैं और इन लोगों से जो कुछ पहले सरज़द हुवा उस पर गिरिफ़्त न करो।[(3)]

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत उस क़ौम के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहले हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़ह्द किया फिर तोड़ दिया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस पर मुत्तलअ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल की।[(4)]

---

1 ......شعب الايمان، السابع والاربعون من شعب الايمان ...الخ، فصل فى الطبع على القلب او الرين، ٥/٤٤٦، الحديث:٧٢٢١.

2 ......ترمذى، كتاب الزهد، ٦٢-باب منه، ٤/١٨٤، الحديث: ٢٤١٩.

3 ......بيضاوى، المائدة، تحت الآية: ١٣، ٢/٣٠٦.

4 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ١٣، ١/٤٧٦.

www.dawateislami.net

इस सूरत में मा'ना येह हैं कि उन की इस अ़हद शिकनी से दर गुज़र कीजिये जब तक कि वोह जंग से बाज़ रहें और जिज़्या अदा करने से मन्अ़ न करें।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰۤى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝۱۴

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिन्हों ने दा'वा किया कि हम नसारा हैं हम ने उन से अ़हद लिया तो वोह भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं तो हम ने उन के आपस में क़ियामत के दिन तक बैर और बुग़्ज़ डाल दिया और अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन्हें बता देगा जो कुछ करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिन्हों ने दा'वा किया कि हम नसारा हैं उन से हम ने अ़हद लिया तो वोह उन नसीहतों का बड़ा हिस्सा भुला बैठे जो उन्हें की गई थी तो हम ने उन के दरमियान क़ियामत के दिन तक के लिये दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया और अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन्हें बता देगा जो कुछ वोह करते थे।

﴿وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰۤى : **और जिन्हों ने दा'वा किया कि हम नसारा हैं।**﴾ यहूदियों के बा'द अब ईसाइयों का तज़्किरा किया जा रहा है। इन के बारे में फ़रमाया कि जिन्हों ने दा'वा किया कि हम नसारा या'नी दीने ख़ुदा के मददगार हैं उन से भी हम ने **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने का अ़हद लिया लेकिन वोह भी इन्जील में दी गई नसीहतों का बड़ा हिस्सा भुला बैठे और उन्हों ने भी अ़हद शिकनी की तो हम ने उन के दरमियान क़ियामत के दिन तक के लिये दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया चुनान्चे ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि जब नसारा ने किताबे इलाही (इन्जील) पर अ़मल करना तर्क किया और रसूलों की ना फ़रमानी की, फ़राइज़ अदा न किये और हुदूदे इलाही की परवाह न की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दरमियान अ़दावत डाल दी।(1)

(1)......خازن، المائدة، تحت الآية: ١٤، ١/٤٧٧.

www.dawateislami.net

जिस का नतीजा येह हुवा कि येह फ़िर्क़ों में बट गए और एक दूसरे को तबाह करने लगे चुनान्चे दो आ़लमी अ़ज़ीम जंगें और इन की तबाहियां इन्ही साहि़बान की बरकत से हुईं।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल तशरीफ़ लाए कि तुम पर ज़ाहिर फ़रमाते हैं बहुत सी वोह चीज़ें जो तुम ने किताब में छुपा डाली थीं और बहुत सी मुआ़फ़ फ़रमाते हैं बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ अहले किताब ! बेशक तुम्हारे पास हमारे रसूल तशरीफ़ लाए, वोह तुम पर बहुत सी वोह चीज़ें ज़ाहिर फ़रमाते हैं जो तुम ने (**अल्लाह** की) किताब से छुपा डाली थीं और बहुत सी मुआ़फ़ फ़रमा देते हैं, बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आ गया और एक रोशन किताब।

﴿يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ : **ऐ अहले किताब।**﴾ यहां यहूदियों और ईसाइयों सब से ख़ित़ाब है। फ़रमाया गया कि ऐ अहले किताब ! बेशक तुम्हारे पास हमारे रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, वोह तुम पर बहुत सी वोह चीज़ें ज़ाहिर फ़रमाते हैं जो तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब से छुपा डाली थीं जैसे रज्म की आयात और सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ जो तुम ने छुपा दिये थे लेकिन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमा दिये और येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है। तुम्हारी छुपाई हुई चीज़ें बयान करने के साथ बहुत सी बातें येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुआ़फ़ फ़रमा देते हैं और उन का ज़िक्र भी नहीं करते और न उन पर मुआख़ज़ा फ़रमाते हैं क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिस में मस्लह़त हो। येह सब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान का बयान है।

www.dawateislami.net

﴿قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ : **बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से नूर आ गया ।**﴾ इस आयते मुबारका में नूर से क्या मुराद है इस बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, एक क़ौल येह है कि इस से मुराद सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला सिफ़ात है।

फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''**وَهُوَ مُحَمَّدٌ** صلّى الله عليه وآله وسلّم **وَالْقُرْآنُ**'' या'नी नूर से मुराद मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और कुरआन हैं।(1)

इमाम अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मस्ऊ़द बग़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : ''**يَعْنِى مُحَمَّدًا** صلّى الله تعالى عليه وآله وسلّم **وَ قِيلَ ا لْإِسْلَام**'' या'नी नूर से मुराद मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। और एक क़ौल येह है कि इस से मुराद इस्लाम है।(2)

अ़ल्लामा ख़ाज़िन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''**يَعْنِى مُحَمَّدًا** صلّى الله تعالى عليه وسلّم **اِنَّمَا سَمَّاهُ اللّٰهُ نُوْرًا لِاَنَّهُ يُهْتَدٰى بِهٖ كَمَا يُهْتَدٰى بِالنُّوْرِ فِى الظَّلَامِ**'' या'नी नूर से मुराद मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं **अल्लाह** तआ़ला ने आप को नूर इस लिये फ़रमाया कि जिस त़रह़ अंधेरे में नूर के ज़रीए हिदायत ह़ासिल होती है इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए भी हिदायत ह़ासिल होती है।(3)

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लफ़्ज़े ''**नूर**'' की तफ़्सीर लिखते हुए फ़रमाते हैं : ''**وَهُوَ النَّبِىُّ** صلّى الله عليه وآله وسلّم'' नूर से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।(4)

अ़ल्लामा सावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''**وَ سُمِّىَ نُوْرًا لِاَنَّهُ يُنَوِّرُ الْبَصَائِرَ وَ يَهْدِيْهَا لِلرَّشَادِ وَلِاَنَّهُ اَصْلُ كُلِّ نُوْرٍ حِسِّيٍّ وَ مَعْنَوِيٍّ**'' या'नी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम इस आयत में नूर रखा गया इस लिये कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बसीरतों को रोशन करते हैं और उन्हें रुश्दो हिदायत फ़रमाते हैं और इस लिये कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर नूरे ह़िस्सी (वोह नूर जिसे देखा जा सके) और मा'नवी (जैसे इ़ल्म व हिदायत) की अस्ल हैं।(5)

---

1 ......سمرقندى، المائدة، تحت الآية: ١٥، ٤٢٤/١.
2 ......تفسير بغوى، المائدة، تحت الآية: ١٥، ١٧/٢.
3 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ١٥، ٤٧٧/١.
4 ......جلالين، المائدة، تحت الآية: ١٥، ص٩٧.
5 ......تفسير صاوى، المائدة، تحت الآية: ١٥، ٤٨٦/٢.

www.dawateislami.net

”اَلنُّوْرُ وَالْكِتَابُ هُوَ الْقُرْآنُ، وَهٰذَا ضَعِيفٌ“ इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ”لِاَنَّ الْعَطْفَ يُوْجِبُ الْمُغَايَرَةَ بَيْنَ الْمَعْطُوْفِ وَالْمَعْطُوْفِ عَلَيْهِ“ या'नी येह क़ौल कि नूर और किताब दोनों से मुराद क़ुरआन है येह ज़ईफ़ है क्यूं कि हर्फ़े अत़्फ़ मा'तूफ़ व मा'तूफ़ अ़लैह में मुग़ायरत (या'नी एक दूसरे का ग़ैर होने) को मुस्तल्ज़िम है।(1)

अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलूसी बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ”وَهُوَ نُوْرُ الْاَنْوَارِ وَالنَّبِيُّ الْمُخْتَارُ صلّى الله عليه وآله وسلّم“ या'नी इस नूर से मुराद तमाम नूरों के नूर, नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात है।(2)

अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

”وَ اَيُّ مَانِعٍ مِنْ اَنْ يُجْعَلَ النَّعْتَانِ لِلرَّسُوْلِ صلّى الله تعالى عليه وسلّم فَاِنَّهُ نُوْرٌ عَظِيْمٌ لِكَمَالِ ظُهُوْرِهٖ بَيْنَ الْاَنْوَارِ وَ كِتَابٌ مُّبِيْنٌ حَيْثُ اَنَّهُ جَامِعٌ لِجَمِيْعِ الْاَسْرَارِ وَمُظْهِرٌ لِلْاَحْكَامِ وَالْاَحْوَالِ وَالْاَخْبَارِ“

या'नी और कौन सी रुकावट है इस बात से कि दोनों ने'मतें या'नी नूर और किताबे मुबीन रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हों बेशक हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नूरे अ़ज़ीम हैं अन्वार में इन के कमाले ज़ुहूर की वज्ह से और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किताबे मुबीन हैं इस हैसिय्यत से कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जमीअ़ असरार के जामेअ़ हैं और अह़काम व अह़वाल व अख़्बार के मुज़्हिर हैं।(3)

बल्कि ख़ुद रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना नूर होना बयान फ़रमाया, चुनान्चे इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम के उस्ताज़ के उस्ताज़ इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم हज़रते जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं : ”قَالَ سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ صلّى الله عليه وسلّم عَنْ اَوَّلِ شَيْءٍ خَلَقَهُ اللهُ تَعَالٰى؟ فَقَالَ هُوَ نُوْرُ نَبِيِّكَ يَا جَابِرُ خَلَقَهُ اللهُ“ या'नी हज़रते जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि **अल्लाह** तआ़ला ने सब से पहले

1 ......تفسير كبير، المائدة، تحت الآية: ١٥، ٣٢٧/٤.
2 ......روح المعانى، المائدة، تحت الآية: ١٥، ٣٦٧/٥.
3 ......شرح شفاء، القسم الاول، الباب الاول فى ثناء الله تعالى عليه... الخ، الفصل الاول، ٥١/١.

www.dawateislami.net

किस शै को पैदा फ़रमाया ? इर्शाद फ़रमाया : ऐ जाबिर ! वोह तेरे नबी का नूर है जिसे **अल्लाह** तआला ने पैदा फ़रमाया।[1]

يَّهۡدِىۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ بِاِذۡنِهٖ وَيَهۡدِيۡهِمۡ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह इस से हिदायत देता है उसे जो **अल्लाह** की मरज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रोशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से और उन्हें सीधी राह दिखाता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह इस के ज़रीए उसे सलामती के रास्तों की हिदायत देता है जो **अल्लाह** की मरज़ी का ताबेअ़ हो जाए और उन्हें अपने हुक्म से तारीकियों से रोशनी की तरफ़ ले जाता है और उन्हें सीधी राह की तरफ़ हिदायत देता है।

﴿يَهۡدِىۡ بِهِ اللّٰهُ : **अल्लाह इस के ज़रीए हिदायत देता है।**﴾ यहां कुरआन की शान का बयान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआन के ज़रीए उसे हिदायत अ़ता फ़रमाता है जो **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी के ताबेअ़ हो जाता है और जो अपने तमाम आ'माल **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी में लगा देता है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे कुफ़्रो शिर्क और मआ़सी की तारीकियों से निकाल कर ईमान और आ'माले सालिहा के नूर में दाख़िल फ़रमा देता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि "**بِهٖ**" की ज़मीर से सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही मुराद हैं। इस ए'तिबार से मा'ना बनेगा कि **अल्लाह** तआ़ला हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए हिदायत अ़ता फ़रमाता है। मा'नवी ए'तिबार से येह बात क़त्अ़न दुरुस्त है।

لَقَدۡ كَفَرَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡمَسِيۡحُ ابۡنُ مَرۡيَمَ ؕ قُلۡ فَمَنۡ

1 ......الجزء المفقود من المصنف عبد الرزاق، كتاب الايمان، باب فى تخليق نور محمد صلى الله عليه وسلم، ص٦٣، الحديث: ١٨.

www.dawateislami.net

يَمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًاؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَاؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर हुए वोह जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह** मसीह़ बिन मरयम ही है तुम फ़रमा दो फिर **अल्लाह** का कोई क्या कर सकता है अगर वोह चाहे कि हलाक कर दे मसीह़ बिन मरयम और उस की मां और तमाम ज़मीन वालों को और **अल्लाह** ही के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की जो चाहे पैदा करता है, और **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग काफ़िर हो गए जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह** ही मसीह़ बिन मरयम है। तुम फ़रमा दो : अगर **अल्लाह** मसीह़ बिन मरयम को और उस की मां और तमाम ज़मीन वालों को हलाक करने का इरादा फ़रमा ले तो कौन है जो **अल्लाह** से बचाने की त़ाक़त रखता है ? और आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन के दरमियान है सब की बादशाहत **अल्लाह** ही के लिये है। वोह जो चाहता है पैदा करता है और **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है।

﴿لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا : **बेशक वोह लोग काफ़िर हो गए जिन्हों ने कहा।**﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि नजरान के ईसाइयों ने येह बात कही है और नसरानियों के फ़िर्क़ए या'क़ूबिया व मलकानिया का येही मज़हब है कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** बताते हैं क्यूं कि वोह हुलूल के क़ाइल हैं और उन का ए'तिक़ादे बात़िल येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हुलूल किया हुवा है जैसे फूल में ख़ुश्बू और आग में गरमी ने, مَعَاذَ اللّٰه ثُمَّ مَعَاذَ اللّٰه। **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है। **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में हुक्मे कुफ़्र दिया और इस के बा'द उन के मज़हब का फ़साद बयान फ़रमाया।

www.dawateislami.net

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उलूहिय्यत की तरदीद

इस आयत में हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उलूहिय्यत की कई तरह तरदीद है।

(1)...... हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मौत आ सकती है, और जिसे मौत आ सकती है वोह खुदा नहीं हो सकता।

(2)...... आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मां के शिकम से पैदा हुए, और जिस में येह सिफ़ात हों वोह **अल्लाह** नहीं हो सकता।

(3)...... **अल्लाह** तआ़ला तमाम आस्मानी और ज़मीनी चीज़ों का मालिक है और हर चीज़ रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दा है, अगर किसी में **अल्लाह** तआ़ला ने हुलूल किया होता तो वोह **अल्लाह** का बन्दा न होता हालां कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام खुद इस बात का इक़रार करते हैं कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे हैं।

(4)...... **अल्लाह** तआ़ला अज़ खुद ख़ालिक़ है, अगर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में उलूहिय्यत होती तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी अज़ खुद ख़ालिक़ होते।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ
بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٘ وَاِلَيْهِ
الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यहूदी और नसरानी बोले कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं तुम फ़रमा दो फिर तुम्हें क्यूं तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब फ़रमाता है बल्कि तुम आदमी हो उस की मख़्लूक़ात से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और **अल्लाह** ही के लिये है सल्तनत आस्मानों और ज़मीन और इस के दरमियान की और उसी की त़रफ़ फिरना है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यहूदियों और ईसाइयों ने कहा : हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं। ऐ ह़बीब ! तुम फ़रमा दो : (अगर ऐसा है तो) फिर वोह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब क्यूं देता है ? बल्कि तुम (भी) उस की मख़्लूक़ में से (आ़म) आदमी हो। वोह जिसे चाहता है बख़्श देता है और जिसे चाहता है सज़ा देता है और आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इस के दरमियान है सब की सल्त़नत **अल्लाह** ही के लिये है और उसी की त़रफ़ फिरना है।

﴿وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى : **यहूदियों और ईसाइयों ने कहा।**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास अहले किताब आए और उन्हों ने दीन के मुआ़मले में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्त्गू शुरूअ़ की। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी और **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी करने से उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आप हमें क्या डराते हैं हम तो **अल्लाह** तआ़ला के बेटे और उस के प्यारे हैं। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

यहूदियों के क़ौल का मत़लब येह था कि हम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को ऐसे प्यारे हैं जैसे बेटा बाप को क्यूं कि बेटा कितना ही बुरा हो मगर बाप को प्यारा होता है, ऐसे ही हम हैं। यहां बेटे से मुराद औलाद नहीं क्यूं कि वोह लोग अपने को इस मा'ना में ख़ुदा का बेटा न कहते थे।

ख़ुद को आ'माल से मुस्तग़्नी जानना ईसाइयों का अ़क़ीदा है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि अपने आप को आ'माल से मुस्तग़्नी जानना ईसाइयों का अ़क़ीदा है। आज कल बा'ज़ अहले बैत से मह़बबत के दा'वेदार ह़ज़रात और बा'ज़ जाहिल फ़क़ीरों का येही अ़क़ीदा है। ऐसा अ़क़ीदा कुफ़्र है क्यूं कि क़ुरआने करीम ने हर जगह ईमान के साथ आ'माले सालिह़ा का ज़िक्र फ़रमाया।

﴿فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ : **फिर वोह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब क्यूं देता है ?**﴾ यहूदियों का अ़क़ीदा था कि हम चालीस दिन दोज़ख़ में रहेंगे या'नी बछड़े की पूजा की मुद्दत के बराबर। इस आयत में फ़रमाया जा रहा है कि अगर तुम बेटों की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को प्यारे हो तो तुम्हें येह सज़ा भी क्यूं मिलेगी या'नी इस बात का तुम्हें भी इक़रार है कि गिनती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे तो सोचो कोई बाप अपने बेटे को या कोई शख़्स अपने प्यारे को आग में जलाता है ! जब ऐसा नहीं तो तुम्हारे दा'वे का झूटा और बात़िल होना तुम्हारे इक़रार से साबित है।

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ١٨، ١/٤٧٨.

www.dawateislami.net

ربع

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّ لَا نَذِيْرٍ٘ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّ نَذِيْرٌؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۠ ﴿۱۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल तशरीफ़ लाए कि तुम पर हमारे अह्काम ज़ाहिर फ़रमाते हैं बा'द इस के कि रसूलों का आना मुद्दतों बन्द रहा था कि तुम कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशी और डर सुनाने वाला न आया तो येह ख़ुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए हैं और **अल्लाह** को सब क़ुदरत है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ किताब वालो ! बेशक तुम्हारे पास हमारे रसूल तशरीफ़ लाए, वोह रसूलों की तशरीफ़ आवरी बन्द हो जाने के अ़र्से बा'द तुम पर हमारे अह्काम ज़ाहिर फ़रमा रहे हैं ताकि तुम येह न कहो कि हमारे पास तो कोई ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला आया ही नहीं तो बेशक तुम्हारे पास ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला तशरीफ़ ला चुका और **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है।

﴿يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ : **ऐ अहले किताब !**﴾ इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला अहले किताब को अपने अ़ज़ीम तरीन एह्सान की त़रफ़ तवज्जोह दिला रहा है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने तक पांच सो उन्हत्तर (569) बरस की मुद्दत किसी भी नबी की तशरीफ़ आवरी से ख़ाली रही, इस के बा'द सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी तो ऐसी ने'मत है जैसे शदीद प्यास में ख़ुश गवार, जां बख़्श ठन्डा पानी या शदीद गरमी, तपिश और ह़ब्स में ख़ुश गवार बारिश, तो ऐसी इन्तिहाई ह़ाजत के वक़्त तुम पर **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत भेजी गई तो तुम्हें इस की क़द्र करनी चाहिये क्यूं कि अब तो तुम्हारे पास येह कहने का मौक़अ़ भी नहीं रहा कि हमारे पास कोई तम्बीह करने वाले तशरीफ़ नहीं लाए थे।

www.dawateislami.net

ज़मानए फ़ितरत से क्या मुराद है ?

हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियानी ज़माने का नाम ''**ज़मानए फ़ितरत**'' है, इस ज़माने के लोगों को सिर्फ़ अक़ीदए तौह़ीद काफ़ी था जैसे हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ یٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِیْكُمْ اَنْۢبِیَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ یُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۲۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो कि तुम में से पैग़म्बर किये और तुम्हें बादशाह किया और तुम्हें वोह दिया जो आज सारे जहान में किसी को न दिया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब उस ने तुम में से अम्बिया पैदा फ़रमाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वोह कुछ अ़ता फ़रमाया जो सारे जहान में किसी को न दिया।

﴿وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ : **और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया।**﴾ हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करने की तल्क़ीन फ़रमाई और इस ज़िम्न में **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मतों का ज़िक्र फ़रमाया और बतौरे ख़ास तीन ने'मतें यहां बयान फ़रमाईं :

(1)...... बनी इसराईल में अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए।

(2)...... बनी इसराईल को हुकूमतो सल्तनत से नवाज़ा गया। बनी इसराईल आज़ाद हुए और फ़िरऔ़नियों के हाथों में क़ैद होने के बा'द उन की ग़ुलामी से नजात पाई। दूसरा क़ौल येह है कि मुलूक या'नी बादशाह से मुराद है ख़ादिमों और सुवारियों का मालिक होना। हज़रते अबू

www.dawateislami.net

सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में जो कोई ख़ादिम और औ़रत और सुवारी रखता वोह मलिक कहलाया जाता है।(1)

(3)...... बनी इसराईल को वोह ने'मतें मिलीं जो किसी दूसरी क़ौम को न मिलीं जैसे मन्न व सल्वा उतरना, दरिया का फट जाना, पानी से चश्मों का जारी हो जाना वग़ैरहा।

मीलाद मनाने का सुबूत

इस आयत में बयान की गई पहली ने'मत से मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों की तशरीफ़ आवरी ने'मत है और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को उस के ज़िक्र करने का हुक्म दिया कि वोह बरकातो समरात का सबब है। इस से ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मीलादे मुबारक मनाने और इस का ज़िक्र करने की वाज़ेह़ त़ौर पर दलील मिलती है कि जब अम्बियाए बनी इसराईल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आवरी ने'मत है और इसे याद करने का हुक्म है तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी तो इस से बढ़ कर ने'मत है कि इसे तो **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक **अल्लाह** ने मोमिनों पर एह़सान फ़रमाया जब उन में अ़ज़ीम रसूल मब्ऊ़स फ़रमाया।

लिहाज़ा इसे याद करने का हुक्म ब दरजए औला होगा।

इक़्तिदार मिलने पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने का बेहतरीन त़रीक़ा

इस आयत में बयान की गई दूसरी ने'मत से मा'लूम हुवा कि हुकूमतो सल्त़नत और इक़्तिदार भी **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है और इस का भी शुक्र अदा करना चाहिये और इस के शुक्र का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि हुकूमतो सल्त़नत **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के मुत़ाबिक़ चलाई जाए, ग़रीबों की मदद की जाए, लोगों के हुक़ूक़ अदा किये जाएं, ज़ुल्म का ख़ातिमा किया जाए और मुल्क के बाशिन्दों को अम्नो सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारने के मवाक़ेअ़ फ़राहम किये जाएं।

1......در منثور، المائدة، تحت الآية: ٢٠، ٤٦/٣.
2......ال عمران: ١٦٤.

www.dawateislami.net

हुक्मरानों के लिये नसीहत आमोज़ 4 अहादीस

यहां हुक्मरानी करने वालों के लिये नसीहत आमोज़ 4 अहादीस मुलाहज़ा हों :

(1)...... हज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला ने किसी रिआ़या का हुक्मरान बनाया हो और वोह ख़ैर ख़्वाही के साथ उन की निगहबानी का फ़रीज़ा अदा न करे तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा।"(1)

(2)...... हज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही मरवी है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मानों को जिस वाली की रिआ़या बनाया जाए, फिर वोह वाली ऐसी ह़ालत में मरे कि उस ने मुसल्मानों के हुक़ूक़ ग़स्ब किये हों तो **अल्लाह** तआ़ला उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है।"(2)

(3)...... हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, मैं ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह दुआ़ फ़रमाते हुए सुना : "ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ, मेरी उम्मत का जो शख़्स भी किसी पर वाली और ह़ाकिम हो और वोह उन पर सख़्ती करे तो तू भी उस पर सख़्ती कर और अगर वोह उन पर नरमी करे तो तू भी उस पर नरमी कर।"(3)

(4)...... हज़रते अबू मरयम अज़्दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों के किसी काम का वाली बनाए और वोह उन की ह़ाजत मन्दी, बे कसी और ग़रीबी में उन से कनारा कशी करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस की ह़ाजत मन्दी, बे कसी और ग़रीबी में उसे छोड़ देगा।"(4)

इक़्तिदार के बोझ से अश्कबार

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा फ़रमाती हैं : जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मर्तबए ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुए तो घर आ कर मुसल्ले पर बैठ कर रोने लगे और इतना रोए कि आप की दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो गई। येह देख कर मैं ने अ़र्ज़

1 ......بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیة فلم ینصح، ٤/٤٥٦، الحدیث: ٧١٥٠.
2 ......بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیة فلم ینصح، ٤/٤٥٦، الحدیث: ٧١٥١.
3 ......مسلم، کتاب الامارة، باب فضیلة الامام العادل وعقوبة الجائر... الخ، ص١٠١٦، الحدیث: ١٩(١٨٢٨).
4 ......ابو داوٗد، کتاب الخراج والفیء والامارة، باب فیما یلزم الامام من امر الرعیّة... الخ، ٣/١٨٨، الحدیث: ٢٩٤٨.

www.dawateislami.net

की : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप क्यूं रो रहे हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मेरी गरदन पर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत का बोझ डाल दिया गया है और जब मैं ने भूके फ़क़ीरों, मरीज़ों, मज़्लूम क़ैदियों, मुसाफ़िरों, बूढ़ों, बच्चों और इयाल दारों, अल ग़रज़ पूरी सल्तनत के मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के बारे में ग़ौर किया और मुझे मा'लूम है कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इन के बारे में मुझ से बाज़पुर्स फ़रमाएगा तो मुझे इस बात से डर लग रहा है कि कहीं ऐसा न हो कि मुझ से इन के बारे में जवाब न बन पड़े ! (बस इस भारी ज़िम्मेदारी और इस के बारे में बाज़पुर्स की फ़िक्र की वज्ह से) मैं रो रहा हूं।(1)

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِیْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِیْنَ ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये लिखी है और पीछे न पलटो कि नुक़्सान पर पलटोगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (मूसा ने फ़रमाया :) ऐ मेरी क़ौम ! उस पाक सर ज़मीन में दाख़िल हो जाओ जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये लिख दी है और अपने पीठ पीछे न फिरो कि तुम नुक़्सान उठाते हुए पलटोगे।

﴾يٰقَوْمِ : ऐ मेरी क़ौम !﴿ हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें याद दिलाने के बा'द उन को अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिये निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम ! मुक़द्दस सर ज़मीन में दाख़िल हो जाओ। इस ज़मीन को मुक़द्दस इस लिये कहा गया कि वोह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मस्कन (रिहाइश गाह) थी। इस से मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुकूनत से ज़मीनों को भी शरफ़ ह़ासिल होता है और दूसरों के लिये बाइसे बरकत होती है। कल्बी से मन्क़ूल है कि हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कोहे लुबनान पर चढ़े तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा गया : देखिये जहां तक आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नज़र पहुंचे वोह जगह मुक़द्दस है और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की

1 ......تاریخ الخلفاء، عمر بن عبد العزیز رضی اللہ عنہ، ص ۱۸۹.

www.dawateislami.net

औलाद की मीरास है, येह सर ज़मीन तूर और इस के गिर्दो पेश की थी और एक क़ौल येह है कि तमाम मुल्के शाम इस में दाख़िल है।[1]

قَالُوْا یٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِیْهَا قَوْمًا جَبَّارِیْنَ ۖۗ وَ اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى یَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ یَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोले ऐ मूसा उस में तो बड़े ज़बर दस्त लोग हैं और हम उस में हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक वोह वहां से निकल न जाएं हां वोह वहां से निकल जाएं तो हम वहां जाएंगे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (क़ौम ने) कहा : ऐ मूसा ! उस (सर ज़मीन) में तो बड़े ज़बर दस्त लोग हैं और हम उस में हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक वोह वहां से निकल न जाएं, तो अगर वोह वहां से निकल जाएं तो हम (शहर में) दाख़िल होंगे।

﴿اِنَّ فِیْهَا قَوْمًا جَبَّارِیْنَ : **बेशक उस में तो बड़े ज़बर दस्त लोग हैं।**﴾ हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को शहर में दाख़िले का हुक्म दिया तो क़ौम ने बुज़दिली का मुज़ाहरा शुरूअ़ कर दिया। इस आयत में और इस के बा'द की आयात में इसी का बयान है।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَیْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۬ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : दो मर्द कि **अल्लाह** से डरने वालों में थे **अल्लाह** ने उन्हें नवाज़ा बोले कि ज़बर दस्ती दरवाज़े में उन पर दाख़िल हो अगर तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो तुम्हारा ही ग़लबा है और **अल्लाह** ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।

1 ......بغوی، المائدة، تحت الآیة: ۲۱، ۲/۱۹.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : **अल्लाह** से डरने वालों में से वोह दो मर्द जिन पर **अल्लाह** ने एह्सान किया था उन्हों ने कहा : (शहर के) दरवाज़े से उन पर दाख़िल हो जाओ तो जब तुम दरवाज़े में दाख़िल हो जाओगे तो तुम ही ग़ालिब होगे और अगर तुम ईमान वाले हो तो **अल्लाह** ही पर भरोसा करो।

﴿قَالَ رَجُلٰنِ : **दो आदमियों ने कहा** ।﴾ बनी इसराईल ने बुज़दिली दिखा दी थी मगर दो ह़ज़रात कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने जुरअत मन्दी का मुज़ाहरा किया। येह दोनों ह़ज़रात उन सरदारों में से थे जिन्हें ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब्बारीन क़ौम का ह़ाल दरयाफ़्त करने के लिये भेजा था और इन्हों ने ह़ालात मा'लूम करने के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रमान के मुत़ाबिक़ जब्बारीन का ह़ाल सिर्फ़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया था और दूसरों को न बताया था। इन दोनों ह़ज़रात ने क़ौम को जोश दिलाने के लिये फ़रमाया कि ऐ लोगो ! शहर के दरवाज़े से उन जब्बारीन पर दाख़िल हो जाओ, अगर तुम हिम्मत कर के दरवाज़े में दाख़िल हो जाओ तो तुम ही ग़ालिब होगे और अगर तुम ईमान वाले हो तो **अल्लाह** तआ़ला ही पर भरोसा करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने मदद का वा'दा किया है और उस का वा'दा ज़रूर पूरा होना है। तुम जब्बारीन के बड़े बड़े जिस्मों से ख़ौफ़ न खाओ, हम ने उन्हें देखा है उन के जिस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं। इन दोनों ने जब येह कहा तो बनी इसराईल बहुत बरहम हुए और बजाए जोश में आने के उलटा इन्ही के ख़िलाफ़ हो गए और उन्हों ने चाहा कि इन पर पथ्थर बरसा दें।

قَالُوْا یٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِیْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बोले ऐ मूसा हम तो वहां कभी न जाएंगे जब तक वोह वहां हैं तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (फिर क़ौम ने) कहा : ऐ मूसा ! बेशक हम तो वहां हरगिज़ कभी नहीं जाएंगे जब तक वोह वहां हैं तो आप और आप का रब दोनों जाओ और लड़ो, हम तो यहीं बैठे हुए हैं।

﴾اِنَّا لَنۡ نَّدۡخُلَهَاۤ اَبَدًا﴿ **: बेशक हम तो वहां हरगिज़ कभी नहीं जाएंगे।** बनी इसराईल ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ जिहाद में जाने से साफ़ इन्कार कर दिया।

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की अफ़्ज़लिय्यत

इस से मा'लूम हुवा कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ वालों से कहीं अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि इन ह़ज़रात ने किसी सख़्त मौक़ए पर भी ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ नहीं छोड़ा और ऐसा रूखा जवाब न दिया बल्कि अपना सब कुछ ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान कर दिया जैसे ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम नबियों के सरदार हैं ऐसे ही ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم तमाम नबियों के सह़ाबा के सरदार हैं। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की जां निसारी के बारे में जानने के लिये येह वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। जंगे बद्र के मौक़अ़ पर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم से मश्वरा फ़रमाया तो ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी राय मा'लूम करना चाहते हैं, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें समुन्दर में कूद जाने का ह़ुक्म इर्शाद फ़रमाएं तो हम उस में कूद जाएंगे।[1]

अन्सार के एक मुअ़ज़्ज़ज़ सरदार ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम की त़रह़ येह न कहेंगे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप का ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जा कर लड़ें बल्कि हम लोग आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दाएं से, बाएं से, आगे से, पीछे से लड़ेंगे। येह सुन कर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर ख़ुशी से चमक उठा।[2]

1 ......مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب غزوة البدر، ص ٩٨١، الحديث: ٨٣(١٧٧٩).

2 ......بخارى، كتاب المغازى، باب قول الله تعالى: اذ تستغيثون ربكم... الخ، ٥/٣، الحديث: ٣٩٥٢.

www.dawateislami.net

قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِیْ وَ اَخِیْ فَافْرُقْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मूसा ने अ़र्ज़ की, कि ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हम को इन बे हुक्मों से जुदा रख।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मूसा ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मुझे सिर्फ़ अपनी जान और अपने भाई का इख़्तियार है तो तू हमारे और ना फ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई डाल दे।

﴿قَالَ رَبِّ : **मूसा ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब !**﴾ हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम के जवाब से ग़मज़दा हो कर **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ की, कि मौला ! मुझे सिर्फ़ अपनी जान और अपने भाई हारून का इख़्तियार है, तो तू हमारे और ना फ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई डाल दे और हमें उन की सोहबत और क़ुर्ब से बचा और येह कि हमारे और उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे।

आयत "قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ" से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से 3 मस्अले मा'लूम हुए :

(1)...... बुरों से अ़लाहृदगी अच्छी चीज़ है जिस की हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ मांगी।

(2)...... बुरों की बुराई से नेक भी बा'ज़ अवक़ात मशक़्क़त में पड़ जाते हैं जैसा कि उन ना फ़रमानों की वज्ह से हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी मक़ामे तीह में क़ियाम फ़रमाना पड़ा अगर्चे **अल्लाह** तआ़ला ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये सहूलत मुयस्सर फ़रमा दी थी।

(3)...... अच्छों की सोहबत से बुरे भी फ़ैज़ हासिल कर लेते हैं चुनान्चे हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बरकत से बनी इसराईल को मक़ामे तीह में मन्न व सल्वा मिला, पथ्थर से पानी के बारह चश्मे मिले और वोह लिबास अ़ता हुवा जो इतने अ़र्से तक न गला न मैला हुवा।

www.dawateislami.net

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया तो वोह ज़मीन इन पर ह़राम है चालीस बरस तक भटक्ते फिरें ज़मीन में तो तुम इन बे हुक्मों का अफ़्सोस न खाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : (**अल्लाह** ने) फ़रमाया : पस चालीस साल तक वोह ज़मीन इन पर ह़राम है येह ज़मीन में भटक्ते फिरेंगे तो (ऐ मूसा !) तुम (इस) ना फ़रमान क़ौम पर अफ़्सुर्दा न हो।

﴿فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً : **पस चालीस साल तक वोह ज़मीन इन पर ह़राम है।**﴾ बनी इसराईल की बुज़दिली और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हुक्म पर अ़मल न करने की सज़ा बनी इसराईल को येह मिली कि इन पर मुक़द्दस सर ज़मीन चालीस साल तक के लिये ह़राम कर दी गई, या'नी बनी इसराईल अब मुक़द्दस सर ज़मीन में न दाख़िल हो सकेंगे। वोह ज़मीन जिस में येह लोग भटक्ते फिरे तक़रीबन सत्ताईस मील थी और क़ौम कई लाख अफ़्राद पर मुश्तमिल थी। वोह सब अपने सामान लिये तमाम दिन चलते थे, जब शाम होती तो अपने को वहीं पाते जहां से चले थे। येह उन पर सज़ा थी सिवाए ह़ज़रते मूसा, ह़ज़रते हारून, ह़ज़रते यूशअ़ और ह़ज़रते कालिब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कि उन पर **अल्लाह** तआ़ला ने आसानी फ़रमाई और उन की मदद फ़रमाई जैसा की ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आग को सर्द और सलामती वाला बनाया और इतनी बड़ी जमाअ़ते अ़ज़ीमा का इतने छोटे ह़िस्सए ज़मीन में चालीस बरस आवारा व हैरान फिरना और किसी का वहां से निकल न सकना ख़िलाफ़े आ़दात में से है। जब बनी इसराईल ने इस जंगल में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से खाने पीने वग़ैरा ज़रूरिय्यात और तकालीफ़ की शिकायत की तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन को आस्मानी ग़िज़ा "मन्न व सल्वा" अ़ता फ़रमाया और लिबास ख़ुद उन के बदन पर पैदा किया जो जिस्म के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पथ्थर कोहे तूर का इनायत किया कि जब रख़्ते सफ़र उतारते और किसी वक़्त ठहरते तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस पथ्थर पर अ़सा मारते, उस से बनी इसराईल के बारह गुरौहों के लिये बारह चश्मे जारी हो जाते

www.dawateislami.net

और साया करने के लिये एक बादल भेजा और मैदाने तीह में जितने लोग दाख़िल हुए थे उन में से जो बीस साल से ज़ियादा उ़म्र के थे सब वहीं मर गए सिवाए यूशअ़ बिन नून और कालिब बिन यूक़न्ना के और जिन लोगों ने अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल होने से इन्कार किया उन में से कोई भी दाख़िल न हो सका और कहा गया है कि तीह में ही ह़ज़रते हारून और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात हुई। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात से चालीस बरस बा'द ह़ज़रते यूशअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नुबुव्वत अ़ता की गई और जब्बारीन पर जिहाद का हुक्म दिया गया, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बाक़ी मांदा बनी इसराईल को साथ ले कर गए और जब्बारीन पर जिहाद किया।[1]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾ لَىٕنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَ اِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ؕ

وقف لازم

النصف

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर जब दोनों ने एक एक नियाज़ पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा कहा **अल्लाह** उसी से क़बूल करता है, जिसे डर है। बेशक अगर तू अपना हाथ मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं मैं **अल्लाह** से डरता हूं जो मालिक सारे जहान का। मैं तो येह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तू दोज़ख़ी हो जाए और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है।

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٢٦، ١/٤٨٢، بغوى، المائدة، تحت الآية: ٢٦، ٢/٢٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (ऐ ह़बीब !) इन्हें आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर पढ़ कर सुनाओ जब दोनों ने एक एक कुरबानी पेश की तो उन में से एक की त़रफ़ से क़बूल कर ली गई और दूसरे की त़रफ़ से क़बूल न की गई, तो (वोह दूसरा) बोला : मैं ज़रूर तुझे क़त्ल कर दूंगा। (पहले ने) कहा : **अल्लाह** सिर्फ़ डरने वालों से क़बूल फ़रमाता है। बेशक अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिये मेरी त़रफ़ अपना हाथ बढ़ाएगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिये अपना हाथ तेरी त़रफ़ नहीं बढ़ाऊंगा। मैं **अल्लाह** से डरता हूं जो सारे जहानों का मालिक है। मैं तो येह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ऊपर ही पड़ जाएं तो तू दोज़ख़ी हो जाए और ज़ुल्म करने वालों की येही सज़ा है।

﴿وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَیْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ﴾ **: और इन्हें आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर पढ़ कर सुनाओ।** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इन दो बेटों का नाम हाबील और क़ाबील था। इस वाक़िए को सुनाने से मक़्सद येह है कि ह़सद की बुराई मा'लूम हो और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़सद करने वालों को इस से सबक़ ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिले।

हाबील और क़ाबील का वाक़िआ़

तारीख़ के उ़लमा का बयान है कि ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हर ह़म्ल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे और एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की के साथ निकाह़ किया जाता था और चूंकि इन्सान सिर्फ़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में मुन्ह़सिर थे तो आपस में निकाह़ करने के इ़लावा और कोई सूरत ही न थी। इसी दस्तूर के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने "क़ाबील" का निकाह़ "लियूज़ा" से जो "हाबील" के साथ पैदा हुई थी और हाबील का इक़्लीमा से जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा। क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा और चूंकि इक़्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये उस का त़लब गार हुवा। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "क्यूं कि वोह तेरे साथ पैदा हुई है लिहाज़ा वोह तेरी बहन है, उस के साथ तेरा निकाह़ ह़लाल नहीं।" क़ाबील कहने लगा : "येह तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की राय है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह हुक्म नहीं दिया।" आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "अगर तुम येह समझते हो तो तुम दोनों कुरबानियां लाओ, जिस

www.dawateislami.net

की क़ुरबानी मक़्बूल हो जाए वोही इक़्लीमा का ह़क़दार है।" उस ज़माने में जो क़ुरबानी मक़्बूल होती थी आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी। क़ाबील ने एक अम्बार गन्दुम और हाबील ने एक बकरी क़ुरबानी के लिये पेश की। आस्मानी आग ने हाबील की क़ुरबानी को ले लिया और क़ाबील की गन्दुम को छोड़ दिया। इस पर क़ाबील के दिल में बहुत बुग़्ज़ो ह़सद पैदा हुवा और जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा कि "मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा।" हाबील ने कहा : क्यूं ? क़ाबील ने कहा : इस लिये कि तेरी क़ुरबानी मक़्बूल हुई और मेरी क़बूल न हुई और तू इक़्लीमा का मुस्तह़िक़ ठहरा, इस में मेरी ज़िल्लत है। हाबील ने जवाब दिया कि "**अल्लाह** तआ़ला सिर्फ़ डरने वालों की क़ुरबानी क़बूल फ़रमाता है।" हाबील के इस मक़ूले का येह मत़लब है कि क़ुरबानी को क़बूल करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम है वोह मुत्तक़ी लोगों की क़ुरबानी क़बूल फ़रमाता है, तू मुत्तक़ी होता तो तेरी क़ुरबानी क़बूल होती, येह ख़ुद तेरे अफ़्आ़ल का नतीजा है इस में मेरा क्या क़ुसूर है। अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिये मेरी त़रफ़ अपना हाथ बढ़ाएगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिये अपना हाथ तेरी त़रफ़ नहीं बढ़ाऊंगा, क्यूं कि मैं नहीं चाहता कि मेरी त़रफ़ से इब्तिदा हो ह़ालां कि मैं तुझ से क़वी व तुवाना हूं येह सिर्फ़ इस लिये कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं और मैं येह चाहता हूं कि मेरा या'नी मेरे क़त्ल करने का गुनाह और तेरा गुनाह या'नी जो इस से पहले तू ने किया कि वालिद की ना फ़रमानी की, ह़सद किया और ख़ुदाई फ़ैसले को ना माना येह दोनों क़िस्म के गुनाह तेरे ऊपर ही पड़ जाएं तो तू दोज़ख़ी हो जाए।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۳۰﴾
فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ
اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ
سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ۚۛ

معانقة

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस के नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाव दिलाया तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़्सान में। तो **अल्लाह** ने एक कव्वा भेजा ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाए क्यूंकर अपने भाई की लाश छुपाए बोला हाए ख़राबी मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता तो पचताता रह गया।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उस के नफ़्स ने उसे अपने भाई के क़त्ल पर राज़ी कर लिया तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया फिर वोह नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। फिर **अल्लाह** ने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन कुरेद रहा था ताकि वोह उसे दिखा दे कि वोह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। (कव्वे का वाक़िआ़ देख कर क़ातिल ने) कहा : हाए अफ़्सोस ! मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छुपा लेता तो वोह पछताने वालों में से हो गया।

﴿فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِیْهِ﴾ **: तो उस के नफ़्स ने उसे अपने भाई के क़त्ल पर राज़ी कर लिया।** क़ाबील तमाम गुफ़्त्गू के बा'द भी हाबील को क़त्ल करने के इरादे पर डटा रहा और उस के नफ़्स ने उसे इस इरादे पर राज़ी कर लिया, चुनान्चे क़ाबील ने हाबील को किसी त़रीक़े से क़त्ल कर दिया लेकिन फिर ह़ैरान हुवा कि इस लाश को क्या करे ! क्यूं कि उस वक़्त तक कोई इन्सान मरा ही न था। मुद्दत तक लाश को पुश्त पर लादे फिरता रहा। फिर जब उसे लाश छुपाने का कोई त़रीक़ा समझ न आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन को कुरेद रहा था, चुनान्चे यूं हुवा कि दो कव्वे आपस में लड़े, उन में से एक ने दूसरे को मार डाला, फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी मिन्क़ार या'नी चोंच और पन्जों से ज़मीन कुरेद कर गढ़ा खोदा, उस में मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया। येह देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को दफ़्न करना चाहिये चुनान्चे उस ने ज़मीन खोद कर दफ़्न कर दिया।[1]

हाबील और क़ाबील के वाक़िए़ से ह़ासिल होने वाले अस्बाक़

येह वाक़िआ़ बहुत सी इब्रतों और नसीह़तों पर मुश्तमिल है, उन में से **एक** येह कि इन्सान ने जो सब से पहले जराइम किये उन में एक क़त्ल था, और **दूसरी** येह है कि ह़सद बड़ी बुरी चीज़ है, ह़सद ही ने शैत़ान को बरबाद किया और ह़सद ही ने दुन्या में क़ाबील को तबाह किया।

1 ......جلالين، المائدة، تحت الآية: ٣٠، ص٩٨، مدارك، المائدة، تحت الآية: ٣٠، ص٢٨٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

हसद, क़त्ल और हुस्न परस्ती की मज़म्मत

इस वाक़िए से तीन चीज़ों की मज़म्मत भी ज़ाहिर होती है :

(1)...... हसद । हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में पिछली उम्मतों की बीमारी सरायत कर गई, हसद और बुग़्ज़ । येह मूंड देने वाली है, मैं नहीं कहता कि बाल मूंडती है लेकिन येह दीन को मूंड देती है ।''(1)

(2)...... क़त्ल । हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''नाहक़ हराम ख़ून बहाना हलाक करने वाले उन उमूर में से है जिन से निकलने की कोई राह नहीं ।''(2)

(3)...... हुस्न परस्ती । हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''औ़रत के महासिन की त़रफ़ नज़र करना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है ।''(3)

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ لَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَیِّنٰتِ٘ ثُمَّ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِی الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : इस सबब से हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया और जिस ने एक जान को जिला लिया उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया और बेशक उन के पास हमारे रसूल रोशन दलीलों के साथ आए फिर बेशक उन में बहुत इस के बा'द ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं ।

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

1 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ٥٦-باب، ٤/٢٢٨، الحدیث: ٢٥١٨.

2 ......بخاری، کتاب الدیات، باب قول اللّٰہ تعالٰی: ومن یقتل مؤمناً... الخ، ٤/٣٥٦، الحدیث: ٦٨٦٣.

3 ......نوادر الاصول، الاصل الرابع والثلاثون، ١/١٤٧، الحدیث: ٢١٣.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस के सबब हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी जान के बदले या ज़मीन में फ़साद फैलाने के बदले के बिग़ैर किसी शख़्स को क़त्ल किया तो गोया उस ने तमाम इन्सानों को क़त्ल कर दिया और जिस ने किसी एक जान को (क़त्ल से बचा कर) ज़िन्दा रखा उस ने गोया तमाम इन्सानों को ज़िन्दा रखा और बेशक उन के पास हमारे रसूल रोशन दलीलों के साथ आए फिर बेशक उन में से बहुत से लोग इस के बा'द (भी) ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं।

﴿مِنۡ اَجۡلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبۡنَا عَلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ : इस के सबब हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया।﴾ बनी इसराईल को येह फ़रमाया गया और येही फ़रमान हमारे लिये भी है क्यूं कि गुज़श्ता उम्मतों के जो अह़काम बिग़ैर तरदीद के हम तक पहुंचे हैं वोह हमारे लिये भी हैं। बहर ह़ाल बनी इसराईल पर लिख दिया गया कि जिस ने बिला इजाज़ते शरई किसी को क़त्ल किया तो गोया उस ने तमाम इन्सानों को क़त्ल कर दिया क्यूं कि उस ने **अल्लाह** तआला के ह़क़, बन्दों के ह़क़ और हुदूदे शरीअ़त सब को पामाल कर दिया और जिस ने किसी की ज़िन्दगी बचा ली जैसे किसी को क़त्ल होने या डूबने या जलने या भूक से मरने वग़ैरा अस्बाबे हलाकत से बचा लिया तो उस ने गोया तमाम इन्सानों को बचा लिया।

क़त्ले नाह़क़ की 2 वईदें

(1)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी मोमिन को क़त्ल करने में अगर ज़मीनो आस्मान वाले शरीक हो जाएं तो **अल्लाह** तआला उन सब को जहन्नम में धकेल दे।"(1)

(2)...... ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला के नज़्दीक दुन्या का ख़त्म हो जाना एक मुसल्मान के ज़ुल्मन क़त्ल से ज़ियादा सह्ल है।"(2)

अम्नो सलामती का मज़्हब

येह आयते मुबारका इस्लाम की अस्ल ता'लीमात को वाज़ेह़ करती है कि इस्लाम किस क़दर अम्नो सलामती का मज़्हब है और इस्लाम की नज़र में इन्सानी जान की किस क़दर

1......ترمذی، کتاب الدیات، باب الحکم فی الدماء، ۳/۱۰۰، الحدیث: ۱۴۰۳۔
2......ابن ماجہ، کتاب الدیات، باب التغلیظ فی قتل مسلم ظلماً، ۳/۲۶۱، الحدیث: ۲۶۱۹۔

www.dawateislami.net

अहम्मिय्यत है। इस से उन लोगों को इब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो इस्लाम की अस्ल ता'लीमात को पसे पुश्त डाल कर दामने इस्लाम पर क़त्लो ग़ारत गरी के ह़ामी होने का बदनुमा धब्बा लगाते हैं और उन लोगों को भी नसीह़त ह़ासिल करनी चाहिये जो मुसल्मान कहला कर बे क़ुसूर लोगों को बम धमाकों और ख़ुदकुश ह़म्लों के ज़रीए़ मौत की नींद सुला कर येह गुमान करते हैं कि उन्हों ने इस्लाम की बहुत बड़ी ख़िदमत सर अन्जाम दे दी।

क़त्ल की जाइज़ सूरतें

क़त्ल की शदीद मुमानअ़त के साथ चन्द सूरतों को इस से जुदा रखा है और आयते मुबारका में बयान कर्दा वोह सूरतें येह हैं :

(1)...... क़ातिल को क़िसास में क़त्ल करना जाइज़ है।

(2)...... ज़मीन में फ़साद फैलाने वाले को क़त्ल करना जाइज़ है इस की तफ़्सील अगली आयत में मौजूद है।

इस के इलावा मज़ीद चन्द सूरतों में शरीअ़त ने क़त्ल की इजाज़त दी है :

(1) शादी शुदा मर्द या औ़रत को ज़िना करने पर बत़ौरे ह़द रज्म करना **(2)** मुरतद को क़त्ल करना **(3)** बाग़ी को क़त्ल करना।

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ
فَسَادًا اَنْ یُّقَتَّلُوْۤا اَوْ یُصَلَّبُوْۤا اَوْ تُقَطَّعَ اَیْدِیْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ
خِلَافٍ اَوْ یُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْیٌ فِی الدُّنْیَا وَ لَهُمْ فِی
الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ۙ﴿۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ते और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं येह दुन्या में उन की रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जो लोग **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद बरपा करने की कोशिश करते हैं उन की सज़ा येही है कि उन्हें ख़ूब क़त्ल किया जाए या उन्हें सूली दे दी जाए या उन के एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काट दिये जाएं या (मुल्क की सर) ज़मीन से (जला वत़न कर के) दूर कर दिये जाएं। येह उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

﴾اَلَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ﴿ : **जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते हैं।** इस से पिछली आयात में क़त्ल की एक नौइय्यत या'नी ना जाइज़ क़त्लों का ज़िक्र किया गया अब दूसरी नौइय्यत या'नी जाइज़ क़त्लों का ज़िक्र किया जा रहा है। **शाने नुज़ूल :** उ़रैना क़बीले के कुछ लोग मदीनए मुनव्वरह में हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए, उन्हें वहां की आबो हवा मुवाफ़िक़ न आई, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : सदक़े की ऊंटनियों की चरागाह में जाओ और उन का दूध और पेशाब पियो, उन्हों ने इसी त़रह़ किया तो तन्दुरुस्त हो गए। फिर वोह मुरतद हो गए, चरवाहों पर ह़म्ला कर के उन्हें क़त्ल कर दिया और ऊंट ले कर भाग गए। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस वाक़िए की ख़बर पहुंची तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के पीछे लोगों को भेजा जो उन्हें गिरिफ़्तार कर के ले आए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के हाथ पाउं कटवा दिये, उन की आंखों में गर्म सलाइयां फिरवाईं फिर उन्हें तपते हुए मैदान में छोड़ दिया यहां तक कि वोह मर गए।[1]

डाकू की सज़ा की शराइत़

इस आयते करीमा में राहज़न या'नी डाकू की सज़ा का बयान है। राहज़न जिस के लिये शरीअ़त की जानिब से सज़ा मुक़र्रर है इस में चन्द शर्तें हैं :

(1)...... उन में इतनी त़ाक़त हो कि राहगीर उन का मुक़ाबला न कर सकें अब चाहे हथियार के साथ डाका डाला या लाठी ले कर या पथ्थर वग़ैरा से।

(2)...... बैरूने शह्र राहज़नी की हो या शह्र में रात के वक़्त हथियार से डाका डाला।

(3)...... दारुल इस्लाम में हो।

1 ......بخاری، کتاب المغازی، باب قصة عكل وعرينة، ۳/ ۷۸، الحديث: ۴۱۹۲، تفسيرات احمديه، المائدة، تحت الآية: ۳۳، ص۳۵۰.

www.dawateislami.net

(4)...... चोरी की सब शराइत् पाई जाएं।

(5)...... तौबा करने और माल वापस करने से पहले बादशाहे इस्लाम ने उन को गिरिफ़्तार कर लिया हो।[1]

डाकू की 4 सज़ाएं

जिन में येह सब शर्तें पाई जाएं उन के लिये क़ुरआने पाक में चार सज़ाएं बयान की गई हैं :

(1)...... उन्हें क़त्ल कर दिया जाए।

(2)...... सूली चढ़ा दिया जाए।

(3)...... दायां हाथ और बायां पाउं काट दिया जाए।

(4)...... जला वत़न कर दिया जाए, हमारे हां इस से मुराद क़ैद कर लेना है।

इस सज़ा की तफ़्सील कुछ यूं है कि डाकूओं ने किसी मुसल्मान या ज़िम्मी को क़त्ल किया और माल न लिया तो उन्हें क़त्ल किया जाए। अगर क़त्ल भी किया और माल भी लूटा तो बादशाहे इस्लाम को इख़्तियार है कि हाथ पाउं काट कर क़त्ल कर डाले या सूली दे दे या हाथ पाउं काट कर क़त्ल करे फिर उस की लाश को सूली पर चढ़ा दे या सिर्फ़ क़त्ल कर दे या क़त्ल कर के सूली पर चढ़ा दे या फ़क़त् सूली दे दे। अगर क़त्ल नहीं किया सिर्फ़ माल लूटा तो उन का दायां हाथ और बायां पाउं काट दिया जाए। अगर न माल लूटा न क़त्ल किया सिर्फ़ डराया धमकाया तो इस सूरत में उन्हें क़ैद कर लिया जाए यहां तक कि सह़ीह़ तौबा कर ले।[2]

इस्लामी सज़ाओं की ह़िक्मत

इस्लाम ने हर जुर्म की सज़ा उस की नौइय्यत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ रखी है, छोटे जुर्म की सज़ा हलकी और बड़े की उस की ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ सख़्त सज़ा नाफ़िज़ की है ताकि ज़मीन में अम्न क़ाइम हो और लोग बे ख़ौफ़ हो कर सुकून और चैन की ज़िन्दगी बसर कर सकें। इस के इलावा और भी बे शुमार ह़िक्मतें हैं। एक इस डाका ज़नी की सज़ा ही को ले लीजिये कि जब तक इस पर अ़मल रहा तो तिजारती क़ाफ़िले अपने क़ीमती साज़ो सामान

1 ......عالمگیری، کتاب السرقة، الباب الرابع فی قطاع الطریق، ۱۸٦/۲.

2 ......عالمگیری ، کتاب السرقة ، الباب الرابع فی قطاع الطریق ، ۲ / ۱۸٦ ، در مختار ، کتاب السرقة ، باب قطع الطریق ، ۱۸۱/٦-۱۸۳، ملخصاً.

www.dawateislami.net

के साथ बे ख़ौफ़ो ख़त्र सफ़र करते थे जिस की वज्ह से तिजारत को बेहद फ़रोग़ मिला और लोग मआशी ए'तिबार से बहुत मज़बूत हो गए और जब से इस सज़ा पर अमल नहीं हो रहा तब से तिजारती सरगर्मियां सब के सामने हैं, जिस मुल्क में तिजारती साज़ो सामान की नक़्लो हम्ल की हिफ़ाज़त का ख़ातिर ख़्वाह इन्तिज़ाम नहीं वहां की बरआमदात और दरआमदात इन्तिहाई कम हैं जिस की वज्ह से उन की मईशत पर बहुत बुरा असर पड़ता है। अब तो हालात इतने नाज़ुक हो चुके हैं कि बेंक से कोई पैसे ले कर निकला तो रास्ते में लुट जाता है, कोई पैदल जा रहा है तो उस की नक़्दी और मोबाइल छिन जाता है, कोई बस का मुसाफ़िर है तो वहां भी महफ़ूज़ नहीं, कोई अपनी सुवारी पर है तो वोह ख़ुद को ज़ियादा ख़त्रे में महसूस करता है, सरकारी और ग़ैर सरकारी अम्लाक डाकूओं की दस्त बुर्द से महफ़ूज़ नहीं। अगर डाका ज़नी की बयान कर्दा सज़ा पर सहीह तरीक़े से अमल हो तो इन सब का दिमाग़ चन्द दिनों में ठिकाने पर आ जाएगा और हर इन्सान पुर अम्न माहोल में ज़िन्दगी बसर करना शुरूअ़ कर देगा।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

ركوع ٥

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जिन्हों ने तौबा कर ली इस से पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ तो जान लो कि **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मगर वोह कि जिन्हों ने तौबा कर ली इस से पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ तो जान लो कि **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴿إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا : **मगर वोह जिन्हों ने तौबा कर ली।**﴾ गिरिफ़्तारी से पहले अगर डाकू तौबा और इस के तक़ाज़े पूरे कर ले तो डाका ज़नी की सज़ा और आख़िरत की रुस्वाई से बच जाएगा लेकिन लूटे हुए माल की वापसी और क़िसास का तअ़ल्लुक़ चूंकि बन्दों के हुक़ूक़ से है इस लिये उन का तक़ाज़ा बाक़ी रहेगा। अब उस के औलिया चाहें तो मुआफ़ कर दें, चाहें तो उस का तक़ाज़ा कर लें।(1)

(1)......تفسیرات احمدیہ، المائدۃ، تحت الآیۃ: ٣٤، ص ٣٥٢.

www.dawateislami.net

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो और उस की राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो और उस की राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

﴿وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ : **और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो।**﴾ आयत में वसीले का मा'ना येह है कि जिस के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल हो। या'नी **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादात चाहे फ़र्ज़ हों या नफ़्ल, उन की अदाएगी के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल करो। और अगर तक़्वा से मुराद फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी और ह़राम चीज़ों को छोड़ देना मुराद लिया जाए और वसीला तलाश करने से मुत़्लक़न हर वोह चीज़ जो **अल्लाह** तआ़ला के क़ुर्ब के ह़ुसूल का सबब बने मुराद ली जाए तो भी दुरुस्त है। **अल्लाह** तआ़ला के अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم से मह़ब्बत, सदक़ात की अदाएगी, **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब बन्दों की ज़ियारत, दुआ़ की कसरत, रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी करना और ब कसरत ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहना वग़ैरा भी इसी उ़मूम में शामिल है। अब मा'ना येह हुवा कि हर वोह चीज़ जो **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह के क़रीब कर दे उसे लाज़िम पकड़ लो और जो बारगाहे इलाही से दूर करे उसे छोड़ दो।[1]

नेक बन्दों को वसीला बनाना जाइज़ है

याद रखिये ! रब तआ़ला की बारगाह में उस के नेक बन्दों को वसीला बनाना, उन के वसीले से दुआ़एं करना, उन के तवस्सुल से बारगाहे रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ में अपनी जाइज़ ह़ाजात की तक्मील के लिये इल्तिजाएं करना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का त़रीक़ा रहा है। चुनान्चे इस से मुतअ़ल्लिक़ यहां 3 रिवायात मुलाह़ज़ा हों :

1 ......صاوی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۳۵، ۲/۴۹۷.

www.dawateislami.net

(1)...... सहीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब लोग क़ह़त़ में मुब्तला हो जाते तो ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से बारिश की दुआ़ करते और अ़र्ज़ करते : "**اَللّٰھُمَّ اِنَّا کُنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّنَا فَتَسْقِیْنَا وَاِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِعَمِّ نَبِیِّنَا فَاسْقِنَا**" ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, हम तेरी बारगाह में अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला पकड़ा करते थे तो तू हम पर बारिश बरसा देता था और अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसीला बनाते हैं कि हम पर बारिश बरसा। तो लोग सैराब किये जाते थे।[1]

(2)...... ह़ज़रते औस बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरह के लोग सख़्त क़ह़त़ में मुब्तला हो गए तो उन्हों ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस की शिकायत की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की त़रफ़ ग़ौर करो, उस के ऊपर (छत में) एक त़ाक़ आस्मान की त़रफ़ बना दो ह़त्ता कि क़ब्रे अन्वर और आस्मान के दरमियान छत न रहे। लोगों ने ऐसा किया तो हम पर इतनी बारिश बरसी कि चारा उग गया और ऊंट मोटे हो गए ह़त्ता कि चरबी से गोया फट पड़े, तो उस साल का नाम आ़मुल फ़त्क़ या'नी फटन का साल रखा गया।[2]

(3) बल्कि ख़ुद **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने वसीले से **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दुआ़ करने की ता'लीम एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दी, चुनान्चे ह़ज़रते उ़स्मान बिन ह़ुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक नाबीना शख़्स बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर दुआ़ के त़ालिब हुए तो उन को येह दुआ़ इर्शाद फ़रमाई : "**اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ وَاَتَوَجَّہُ اِلَیْکَ بِمُحَمَّدٍ نَبِیِّ الرَّحْمَۃِ یَا مُحَمَّدُ اِنِّی قَدْ تَوَجَّھْتُ بِکَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ ھٰذِہٖ لِتُقْضٰی اَللّٰھُمَّ فَشَفِّعْہُ فِیَّ**" ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ नबिय्ये रह़मत ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुतवज्जेह होता हूं, ऐ मुह़म्मद ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ अपनी इस ह़ाजत में तवज्जोह की ताकि मेरी ह़ाजत पूरी कर दी जाए, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, मेरे लिये ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।[3]

---

1 ......بخاری، کتاب الاستسقاء، باب سؤال الناس الامام الاستسقاء اذا قحطوا، ۱/۳۴۶، الحدیث: ۱۰۱۰.

2 ......سنن دارمی، باب ما اکرم اللّٰہ تعالٰی نبیه... الخ، ۱/۵۶، الحدیث: ۹۲.

3 ......ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة و السنّة فیها، باب ما جاء فی صلاة الحاجة، ۲/۱۵۶، الحدیث: ۱۳۸۵.

www.dawateislami.net

नोट : जो शख़्स इस ह़दीसे पाक में मज़्कूर दुआ पढ़ना चाहे तो उसे चाहिये कि इस दुआ में इन अल्फ़ाज़ ''يَامُحَمَّدُ'' की जगह ''يَا نَبِيَّ اللّٰه'' या ''يَارَسُوْلَ اللّٰه'' पढ़े । इस बारे में मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये सूरए फ़ातिह़ा की आयत नम्बर 4 की तफ़्सीर में मज़्कूर कलाम मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो काफ़िर हुए जो कुछ ज़मीन में है सब और इस की बराबर और अगर उन की मिल्क हो कि इसे दे कर क़ियामत के अ़ज़ाब से अपनी जान छुड़ाएं तो उन से न लिया जाएगा और उन के लिये दुख का अ़ज़ाब है । दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे और वोह उस से न निकलेंगे और उन को दवामी सज़ा है ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक अगर काफ़िर लोग जो कुछ ज़मीन में है वोह सब और इस के बराबर इतना ही और इस के साथ (मिला कर) क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से छुटकारे के लिये दें तो उन से क़बूल नहीं किया जाएगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है । वोह दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे और वोह उस से निकल न सकेंगे और उन के लिये हमेशा का अ़ज़ाब है ।

﴿لِيَفْتَدُوْا بِهٖ : **ताकि फ़िदया दे कर जान छुड़ाएं ।**﴾ या'नी अगर काफ़िर दुन्या का मालिक हो और इस के साथ उस के बराबर दूसरी दुन्या का मालिक हो और येह सब कुछ अपनी जान को क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से छुड़ाने के लिये फ़िदया कर दे तो उस का येह फ़िदया क़बूल नहीं किया जाएगा और क़ियामत के दिन काफ़िरों को अ़ज़ाब ज़रूर होगा, उस दिन उन के पास अ़ज़ाब से छुटकारे की कोई सूरत न होगी ।(1)

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٣٦، ١/٤٩١.

www.dawateislami.net

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन जब काफ़िर को पेश किया जाएगा तो उस से कहा जाएगा कि अगर तेरे पास इतना सोना हो कि उस से ज़मीन भर जाए तो क्या तू उसे अपने बदले में देने को तय्यार हो जाता ? वोह इस्बात में जवाब देगा तो उस से कहा जाएगा : तुम से इस की निस्बत बहुत ही आसान चीज़ का मुतालबा किया गया था (या'नी ईमान का) ।(1)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उस शख़्स से फ़रमाएगा जिसे जहन्नम में सब से कम अ़ज़ाब होगा कि अगर तेरे पास ज़मीन की सारी चीज़ें हों तो क्या तू उन्हें अपने बदले में दे देता । वोह जवाब देगा : जी हां । **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : मैं ने इस से भी आसान चीज़ तुझ से चाही थी जब कि तू आदम की पुश्त में था कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराना तो तू ने इन्कार किया और मेरे साथ शिर्क करता रहा ।(2)

ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करना बहुत ज़रूरी है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि ईमान होगा तो ही क़ियामत के दिन आ'माल का अज्र मिलेगा, तभी शफ़ाअ़त का फ़ाएदा होगा, तभी रह़मते इलाही मुतवज्जेह होगी और तभी जहन्नम से छुटकारा मिलेगा, इस लिये ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करना निहायत ज़रूरी है । हमारे बुज़ुर्गाने दीन नेक आ'माल की कसरत के बा वुजूद हमेशा बुरे ख़ातिमे से डरते रहते थे, चुनान्चे

जब हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप बेहद बे क़रार और मुज़्तरिब हुए और ज़ारो क़ितार रोने लगे । लोगों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! ऐसी गिर्या व ज़ारी न करें, **अल्लाह** तआ़ला की बख़्शिश और मग़्फ़िरत आप के गुनाहों से कहीं ज़ियादा है । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : मुझे इस बात का यक़ीन नहीं कि मेरा ख़ातिमा बिलख़ैर होगा, अगर येह पता चल जाए कि मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा तो मुझे पहाड़ों के बराबर गुनाहों की भी परवाह न होगी ।

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب من نوقش الحساب عذّب، ٤/٢٥٧، الحدیث: ٦٥٣٨.
2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنّۃ والنار، ٤/٢٦١، الحدیث: ٦٥٥٧.

www.dawateislami.net

हज़रते इमाम हसन बसरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : आप का क्या हाल है ? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : जिस शख़्स की किश्ती दरिया के दरमियान जा कर टूट जाए, उस के तख़्ते बिखर जाएं और हर शख़्स हिचकोले खाते तख़्तों पर नज़र आए तो उस का क्या हाल होगा ? अ़र्ज़ की गई : बेहद परेशान कुन। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मेरा भी येही हाल है।

एक बार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे दिल गिरिफ़्ता हुए कि कई साल तक हंसी न आई। लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ऐसे देखते जैसे कोई क़ैदे तन्हाई में है और उसे सज़ाए मौत सुनाई जाने वाली है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस ग़मो हुज़्न का सबब दरयाफ़्त किया गया कि आप इतनी इ़बादतो रियाज़त और मुजाहदात के बा वुजूद फ़िक्र मन्द क्यूं रहते हैं ? आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे हर वक़्त येह ख़दशा लाहिक़ रहता है कि कहीं मुझ से कोई ऐसा काम सरज़द न हो जाए जिस की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला नाराज़ हो जाए और वोह फ़रमा दे कि "तुम जो चाहे करो मगर मेरी रह़मत तुम्हारे शामिले ह़ाल न होगी।" बस इसी वज्ह से मैं अपनी जान पिघला रहा हूं[1] ।[2]

ईमान पे मौत बेहतर ओ नफ़्स तेरी नापाक ज़िन्दगी से

وَ السَّارِقُ وَ السَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَیْدِیَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۳۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो मर्द या औ़रत चोर हो तो उन का हाथ काटो उन के किये का बदला **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो मर्द या औ़रत चोर हो तो **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा के त़ौर पर उन के अ़मल के बदले में उन के हाथ काट दो और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

1 ...... کیمیاء سعادت، رکن چہارم: منجیات، اصل سیم در خوف ورجا، ۲/۸۲۵-۸۳۲

2 ...... ईमान की ह़िफ़ाज़त का जज़्बा पाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तस्नीफ़ "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालआ़ करना बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

﴿فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا﴾ : **तो उन दोनों के हाथ काट दो।** इस आयत में चोर की सज़ा बयान की गई है कि शरई ए'तिबार से जब चोरी साबित हो जाए तो चोर का हाथ काट दिया जाएगा।

चोरी करने का शरई हुक्म और इस की वईदें

चोरी गुनाहे कबीरा है और चोर के लिये शरीअ़त में सख़्त वईदें हैं, चुनान्चे

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''चोर चोरी करते वक़्त मोमिन नहीं रहता।''[1]

इन्ही से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर उस ने ऐसा किया (या'नी चोरी की) तो बेशक उस ने इस्लाम का पट्टा अपनी गरदन से उतार दिया फिर अगर उस ने तौबा की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।''[2]

चोरी की ता'रीफ़

سَرِقَة या'नी चोरी का लुग़वी मा'ना है ख़ुफ़्या तरीक़े से किसी और की चीज़ उठा लेना।[3]

जब कि शरई ता'रीफ़ येह है कि आ़क़िल बालिग़ शख़्स का किसी ऐसी महफ़ूज़ जगह से कि जिस की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम किया गया हो दस दिरहम या इतनी मालियत (या इस से ज़ियादा) की कोई ऐसी चीज़ जो जल्दी ख़राब होने वाली न हो छुप कर किसी शुबे व तावील के बिग़ैर उठा लेना।[4]

चोरी से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल

(1)...... चोरी के सुबूत के दो तरीक़े हैं (1) चोर ख़ुद इक़रार कर ले अगर्चे एक बार ही हो। (2) दो मर्द गवाही दें, अगर एक मर्द और दो औ़रतों ने गवाही दी तो हाथ नहीं काटा जाएगा।

(2)...... क़ाज़ी गवाहों से चन्द बातों का सुवाल करे, किस तरह चोरी की, और कहां की, और कितने की की, और किस की चीज़ चुराई ? जब गवाह इन उमूर का जवाब दें और हाथ काटने की तमाम शराइत़ पाई जाएं तो हाथ काटने का हुक्म है।

तम्बीह : हुदूद व ता'ज़ीर के मसाइल में अ़वामुन्नास को क़ानून हाथ में लेने की शरअ़न

1 ......مسلم، كتاب الايمان، باب بيان نقصان الايمان بالمعاصى... الخ، ص٤٨، الحديث: ١٠٠(٥٧).

2 ......نسائى، كتاب قطع السارق، تعظيم السرقة، ص٧٨٣، الحديث: ٤٨٨٢.

3 ......هدايه، كتاب السرقة، ٣٦٢/١. 4 ......فتح القدير، كتاب السرقة، ١٢٠/٥.

www.dawateislami.net

इजाज़त नहीं। चोरी के मसाइल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 9 का मुताल‌अ़ा कीजिये।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ یَتُوْبُ عَلَیْهِؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेहर से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा कर ले और अपनी इस्लाह़ कर ले तो **अल्लाह** अपनी मेहरबानी से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा। बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

﴾فَمَنْ تَابَ : **तो जो तौबा कर ले।**﴿ तौबा निहायत नफ़ीस शै है। कितना ही बड़ा गुनाह हो अगर उस से तौबा कर ली जाए तो **अल्लाह** तआ़ला अपना ह़क़ मुआ़फ़ फ़रमा देता है और तौबा करने वाले को अ़ज़ाबे आख़िरत से नजात दे देता है लेकिन येह याद रहे कि जिस गुनाह में किसी बन्दे का ह़क़ भी शामिल हो वहां तौबा के लिये ज़रूरी है कि उस बन्दे के ह़क़ की अदाएगी भी हो जाए।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ یُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ وَ یَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे चाहे और **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुझे मा'लूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाही **अल्लाह** ही के लिये है। वोह जिसे चाहता है सज़ा देता है और जिसे चाहता है बख़्श देता है और **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है।

www.dawateislami.net

﴿**يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ** : **जिसे चाहे सज़ा देता है ।**﴾ इस आयत से मा'लूम हुवा कि अ़ज़ाब करना और रह़मत फ़रमाना **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत पर है, वोह मालिक है जो चाहे करे किसी को ए'तिराज़ करने की मजाल नहीं । इस से क़दरिया (या'नी तक़्दीर के मुन्किर) और मो'तज़िला फ़िर्क़े का रद हो गया जो नेक पर रह़मत और गुनाहगार पर अ़ज़ाब करना **अल्लाह** तआ़ला पर वाजिब कहते हैं क्यूं कि वाजिब होना मशिय्यत के मुनाफ़ी है ।[1]

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ
قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَ لَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ
لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ
مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَ اِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ
وَ مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓىٕكَ الَّذِيْنَ
لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖۚ وَّ لَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۴۱﴾

مع — الوقف على الاول اجوز ۱۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन न करें वोह जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं कुछ वोह जो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और उन के दिल मुसल्मान नहीं और कुछ यहूदी झूट ख़ूब सुनते हैं और लोगों की ख़ूब सुनते हैं जो तुम्हारे पास ह़ाज़िर न हुए **अल्लाह** की बातों को उन के ठिकानों के बा'द बदल देते हैं कहते हैं येह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और येह न मिले तो बचो और जिसे **अल्लाह** गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू **अल्लाह** से उस का कुछ बना न सकेगा वोह हैं कि **अल्लाह** ने उन का दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुन्या में रुस्वाई है, और उन्हें आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब ।

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٤٠، ١/٤٩٤.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ रसूल ! जो कुफ़्र में दौड़े जाते हैं तुम्हें ग़मगीन न करें (येह वोह हैं) जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए ह़ालां कि उन के दिल मुसल्मान नहीं और कुछ यहूदी बहुत झूट सुनते हैं, उन दूसरे लोगों की (भी) ख़ूब सुनते हैं जो आप की बारगाह में नहीं आए। येह **अल्लाह** के कलाम को उस के मक़ामात के बा'द बदल देते हैं। येह (आपस में) कहते हैं : अगर तुम्हें येह (तह़रीफ़ वाला) हुक्म मिले तो इसे ले लेना और अगर तुम्हें येह न मिले तो बचना और जिसे **अल्लाह** गुमराह करना चाहे तो (ऐ मुख़ात़ब !) तू हरगिज़ उसे **अल्लाह** से बचाने का कुछ इख़्तियार नहीं रखता। येही वोह लोग हैं जिन के दिलों को पाक करने का **अल्लाह** ने इरादा नहीं फ़रमाया। उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और उन के लिये आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है।

﴿لَا یَحْزُنْكَ الَّذِیْنَ یُسَارِعُوْنَ فِی الْكُفْرِ﴾ **: जो कुफ़्र में दौड़े जाते हैं तुम्हें ग़मगीन न करें।** यहां से मुनाफ़िक़ीन की ह़रकतों का बयान है। सब से पहले **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को "یٰۤاَیُّهَا الرَّسُوْلُ" के मुबारक ख़ित़ाब से इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्कीने क़ल्ब का सामान मुहय्या फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, मैं आप का नासिर व मुईन (या'नी मददगार) हूं। मुनाफ़िक़ीन के कुफ़्र में जल्दी करने या'नी उन के कुफ़्र ज़ाहिर करने और कुफ़्फ़ार के साथ दोस्तियां कर लेने से आप रन्जीदा न हों। फिर मुनाफ़िक़ीन की मुनाफ़क़त का बयान फ़रमाया कि सिर्फ़ ज़बान से कलिमा पढ़ते हैं और दिल से ईमान नहीं लाते।

﴿وَ مِنَ الَّذِیْنَ هَادُوْا ۚۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ﴾ **: और कुछ यहूदी बहुत झूट सुनते हैं।** यहां से यहूदियों का किरदार बयान किया गया कि वोह अपने सरदारों का झूट ख़ूब सुनते हैं और उन के इफ़्तिराओं को क़बूल करते हैं और इस के साथ दूसरे लोगों या'नी ख़ैबर के यहूदियों की बातों को भी ख़ूब मानते हैं जिन के ह़ालात आयत में आगे बयान हो रहे हैं।

﴿یُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ﴾ **: येह अल्लाह के कलाम को उस के मक़ामात के बा'द बदल देते हैं।** इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि ख़ैबर के मुअ़ज़्ज़ज़ शुमार किये जाने वाले यहूदियों में से एक शादी शुदा मर्द और शादी शुदा औ़रत ने ज़िना किया। उस की सज़ा तौरैत में संगसार करना थी, येह उन्हें गवारा न था इस लिये उन्हों ने चाहा कि इस मुक़द्दमे का फ़ैसला सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कराएं, चुनान्चे उन दोनों मुजरिमों को एक जमाअ़त के साथ मदीनए त़य्यिबा भेजा और साथ ही कह दिया कि अगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

हृद या'नी कोड़े मारने का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो न मानना। वोह लोग बनी कुरैज़ा और बनी नज़ीर के यहूदियों के पास आए और समझे कि येह हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हम वतन हैं और उन के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुल्ह़ भी है लिहाज़ा उन की सिफ़ारिश से काम बन जाएगा, चुनान्चे यहूदी सरदारों में से का'ब बिन अशरफ़, का'ब बिन असद, सईद बिन अ़म्र, मालिक बिन सैफ़ और किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ वग़ैरहा उन्हें ले कर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और मस्अला दरयाफ़्त किया। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या मेरा फ़ैसला मानोगे ?" उन्हों ने इक़रार किया। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रज्म या'नी संगसार करने का हुक्म दे दिया। यहूदियों ने इस हुक्म को मानने से इन्कार किया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम में एक नौ जवान **इब्ने सूरिया** है, क्या तुम उस को जानते हो ? कहने लगे, हां। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह कैसा आदमी है ?" यहूदी कहने लगे कि आज रूए ज़मीन पर यहूदियों में उस के पाए का कोई आ़लिम नहीं, तौरैत का यक्ता माहिर है। इर्शाद फ़रमाया : "उस को बुलाओ।" चुनान्चे उसे बुलाया गया। जब वोह ह़ाज़िर हुवा तो हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या तू इब्ने सूरिया है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। इर्शाद फ़रमाया : क्या यहूदियों में सब से बड़ा आ़लिम तू ही है ? उस ने अ़र्ज़ की : लोग तो ऐसा ही कहते हैं। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहूदियों से फ़रमाया : "क्या इस मुआ़मले में तुम इस की बात मानोगे ?" सब ने इक़रार किया। तब सरकारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इब्ने सूरिया से फ़रमाया : "मैं तुझे उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जिस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई और तुम लोगों को मिस्र से निकाला और तुम्हारे लिये दरिया में राहें बनाईं और तुम्हें नजात दी, फ़िरऔ़नियों को ग़र्क़ किया और तुम्हारे लिये बादल को साएबान बनाया, "मन्न व सल्वा" नाज़िल फ़रमाया और अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिस में ह़लाल व ह़राम का बयान है, क्या तुम्हारी किताब में शादी शुदा मर्द व औ़रत के लिये संगसार करने का हुक्म है ?" इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ की : बेशक येह हुक्म तौरैत में है, उसी की क़सम जिस

www.dawateislami.net

का आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से ज़िक्र किया। अगर मुझे अ़ज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं इक़रार न करता और झूट बोल देता, मगर येह फ़रमाइये कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की किताब में इस का क्या हुक्म है ? सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब चार आ़दिल और मो'तबर गवाहों की गवाही से ज़िना सराह़त के साथ साबित हो जाए तो संगसार करना वाजिब हो जाता है।" इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ की : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बिल्कुल ऐसा ही तौरैत में है। फिर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इब्ने सूरिया से दरयाफ़्त फ़रमाया कि हुक्मे इलाही में तब्दीली किस त़रह़ वाक़ेअ़ हुई ? उस ने अ़र्ज़ किया कि हमारा दस्तूर येह था कि हम किसी अमीर को पकड़ते तो छोड़ देते और ग़रीब आदमी पर ह़द क़ाइम करते, इस त़र्ज़े अ़मल से उमरा में ज़िना की बहुत कसरत हो गई यहां तक कि एक मरतबा बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हम ने उस को संगसार न किया, फिर एक दूसरे शख़्स ने अपनी क़ौम की औ़रत से ज़िना किया तो बादशाह ने उस को संगसार करना चाहा, उस की क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्हों ने कहा जब तक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाए उस वक़्त तक इस को हरगिज़ संगसार न किया जाएगा। तब हम ने जम्अ़ हो कर ग़रीब और अमीर सब के लिये बजाए संगसार करने के येह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जाएं और मुंह काला कर के गधे पर उलटा बिठा कर शह्‌र में गश्त कराया जाए। येह सुन कर यहूदी बहुत बिगड़े और इब्ने सूरिया से कहने लगे : तू ने इन्हें या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हम ने जितनी तेरी ता'रीफ़ की थी तू उस का मुस्तह़िक़ नहीं। इब्ने सूरिया ने कहा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे तौरैत की क़सम दिलाई, अगर मुझे अ़ज़ाब के नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर न देता। इस के बा'द रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से उन दोनों ज़िनाकारों को संगसार किया गया और येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ
اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٤١، ١/٤٩٤-٤٩٥.

www.dawateislami.net

حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۴۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बड़े झूट सुनने वाले बड़े ह़राम ख़ोर तो अगर तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों तो उन में फ़ैसला फ़रमाओ या उन से मुंह फेर लो और अगर तुम उन से मुंह फेर लोगे तो वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे और अगर उन में फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़ वाले **अल्लाह** को पसन्द हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बहुत झूट सुनने वाले, बड़े ह़राम ख़ोर हैं तो अगर येह तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों तो उन में फ़ैसला फ़रमाओ या उन से मुंह फेर लो (दोनों का आप को इख़्तियार है) और अगर आप उन से मुंह फेर लोगे तो वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे और अगर आप उन में फ़ैसला फ़रमाएं तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दें। बेशक **अल्लाह** इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है।

﴿سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ : **बहुत झूट सुनने वाले।**﴾ साबिक़ा आयत में झूट सुनने वालों से मुराद यहूदी अ़वाम थी जो पादरियों और सरदारों के झूट सुन कर उस पर अ़मल करते थे और इस आयत में झूट सुनने वालों से मुराद यहूदी हुक्मरान और पादरी हैं जो रिश्वतें ले कर ह़राम को ह़लाल करते और शरीअ़त के अह़काम को बदल देते थे।

रिश्वत का शरई हुक्म और इस की वईदें

रिश्वत का लेना देना दोनों ह़राम हैं और लेने देने वाले दोनों जहन्नमी हैं, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : रिश्वत लेना मुत़्लक़न ह़राम है, जो पराया ह़क़ दबाने के लिये दिया जाए (वोह) रिश्वत है यूंही जो अपना काम बनाने के लिये ह़ाकिम को दिया जाए रिश्वत है लेकिन अपने ऊपर से दफ़्ए़ ज़ुल्म (या'नी ज़ुल्म दूर करने) के लिये जो कुछ दिया जाए (वोह) देने वाले के ह़क़ में रिश्वत नहीं, येह दे सकता है, लेने वाले के ह़क़ में वोह भी रिश्वत है और उसे लेना ह़राम।(1)

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : रिश्वत लेना मुत़्लक़न गुनाहे कबीरा है, लेने वाला ह़राम ख़ोर है, मुस्तह़िक़्क़े सख़्त अ़ज़ाबे नार है, देना अगर ब मजबूरी अपने ऊपर से दफ़्ए़ ज़ुल्म

(1)..... फ़तावा रज़विय्या, 23/597

www.dawateislami.net

को हो तो ह़रज नहीं और अपना आता वुसूल करने को हो तो ह़राम है और लेने देने वाला दोनों जहन्नमी हैं और दूसरे का ह़क़ दबाने या और किसी त़रह़ ज़ुल्म करने के लिये दे तो सख़्त तर ह़राम और मुस्तह़िक़्क़े अशद ग़ज़बो इन्तिक़ाम है।[1]

अह़ादीस में रिश्वत लेने, देने वाले के लिये शदीद वईदें बयान की गई हैं, उन में से 3 अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... ह़ज़रते अबू हुमैद साइदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को बनी सुलैम से ज़कात वुसूल करने पर आ़मिल मुक़र्रर किया जिसे इब्ने लुत्बिया कहा जाता था। जब उस ने आ कर ह़िसाब दिया तो कहा : येह आप का माल है और येह मेरा तोह़फ़ा है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अच्छा ! तुम अपने मां बाप के घर में बैठे रहते और देखते कि तुम्हारे लिये (वहां से) कितने तोह़फ़े आते हैं और तुम अपने बयान में कितने सच्चे हो।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से ख़ित़ाब किया और **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना बयान करने के बा'द फ़रमाया : "जब मैं तुम में से किसी को किसी जगह का आ़मिल बनाता हूं जिस का **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इख़्तियार दिया है तो वोह मेरे पास आ कर कहता है : येह आप का माल है और येह हदिय्या है जो मुझे तोह़फ़तन दिया गया है। येह क्यूं न किया कि वोह अपने मां बाप के घर बैठा रहता यहां तक कि उस के पास तोह़फ़े आते। ख़ुदा की क़सम ! तुम में से जो कोई बिग़ैर ह़क़ के किसी चीज़ को लेगा वोह उसे उठाए हुए **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होगा। मैं अच्छी त़रह़ पहचानता हूं कि जब तुम में से कोई **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होगा तो उस ने ऊंट उठाया हुवा होगा जो बिलबिलाता होगा या गाय जो डकराती होगी या बकरी जो मम्याती होगी।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक बुलन्द फ़रमाया यहां तक कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने लगी और कहने लगे : "ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ, क्या मैं ने (तेरा हुक्म) पहुंचा दिया ?"[2]

(2)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "रिश्वत लेने और देने वाले दोनों जहन्नमी हैं।"[3]

(3)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो गोश्त सुह़्त से पला बढ़ा तो आग उस की ज़ियादा ह़क़दार है।" अ़र्ज़ की गई : सुह़्त से क्या मुराद है ? इर्शाद फ़रमाया : "फ़ैसला करने में रिश्वत लेना।"[4]

1..... फ़तावा रज़विय्या, 18/469

2......بخاری، کتاب الحیل، باب احتیال العامل لیھدی لہ، ٤/٣٩٨، الحدیث: ٦٩٧٩.

3......معجم الاوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ١/٥٥٠، الحدیث: ٢٠٢٦.

4......جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الکاف، ٥/٣٩١، الحدیث: ١٥٩٠٤.

www.dawateislami.net

रिश्वत से हासिल किये हुए माल का शरई हुक्म

जिस ने कोई माल रिश्वत से हासिल किया हो तो उस पर फ़र्ज़ है कि जिस जिस से वोह माल लिया उन्हें वापस कर दे, अगर वोह लोग ज़िन्दा न रहे हों तो उन के वारिसों को वोह माल दे दे, अगर देने वालों का या उन के वारिसों का पता न चले तो वोह माल फ़क़ीरों पर सदक़ा कर दे। ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा में उस माल को लगाना हरामे क़त्ई है। इस के इलावा और कोई तरीक़ा माले रिश्वत के वबाल से सबुक दोश होने का नहीं है।[1]

यहां चूंकि रिश्वत पर कुछ तफ़्सीली कलाम किया है लिहाज़ा मुनासिब मा'लूम होता है कि इस हवाले से कुछ मज़ीद फ़िक़्ही वज़ाहत कर दी जाए चूंकि बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता है कि लोग येह समझ लेते हैं कि रिश्वत शायद वोही है जो सरकारी महकमों में दी जाती है या जो ग़लत काम करवाने के लिये दी जाती है या जो रिश्वत का नाम ले कर दी जाए हालां कि मज़्कूरा बाला सूरतें और इन के इलावा भी बहुत सी सूरतें रिश्वत में ही दाख़िल हैं ख़्वाह रिश्वत का नाम लिया जाए या नहीं। एकआध सूरत मुस्तस्ना है जो हम ऊपर बयान कर चुके हैं। रिश्वत के बारे में इसी तरह की ग़लत फ़हमियों के इज़ाले के लिये यहां फ़तावा रज़विय्या से एक अहम फ़तवा नक़्ल किया जाता है चुनान्चे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स बज़ाते ख़ुद ख़्वाह अज़ जानिब हाकिम किसी तरह का क़हरो तसल्लुत (दूसरों पर इख़्तियार) रखता हो जिस के सबब लोगों पर उस का कुछ भी दबाव हो अगर्चे वोह फ़ी नफ़्सिही उन पर जब्रो तअ़द्दी न करे दबाव न डाले अगर्चे वोह किसी फ़ैसलए क़त्ई बल्कि ग़ैर क़त्ई का भी मजाज़ न हो जैसे कोतवाल, थानेदार, जमा'दार या दहक़ानियों के लिये ज़मीन दार मुक़द्दम पटवारी यहां तक कि पंचायती क़ौमों या पेशों के लिये उन का चौधरी, इन सब को किसी क़िस्म के तोहफ़ा लेने या दा'वते ख़ास्सा (या'नी वोह दा'वत कि ख़ास इसी की ग़रज़ से की गई हो कि अगर येह शरीक न हो तो दा'वत ही न हो) क़बूल करने की अस्लन इजाज़त नहीं मगर तीन सूरतों में, अव्वल अपने अफ़्सर से जिस पर इस का दबाव नहीं, न वहां येह ख़याल किया जाता है कि इस की तरफ़ से येह हदिय्या व दा'वत अपने मुआ़मलात में रिआ़यत कराने के लिये है। दुवुम ऐसे शख़्स से जो उस के इस मन्सब से पहले भी उसे हदिय्या देता या दा'वत करता था बशर्ते कि अब से उसी मिक़्दार पर है वरना ज़ियादत रवा (जाइज़)

1...... फ़तावा रज़विय्या, 23/551 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

न होगी मसलन पहले हदिय्या व दा'वत में जिस क़ीमत की चीज़ होती थी अब उस से गिरां क़ीमत (ज़ियादा क़ीमती), पुर तकल्लुफ़ होती है या ता'दाद में बढ़ गई या जल्द जल्द होने लगी कि इन सब सूरतों में ज़ियादत मौजूद और जवाज़ मफ़्क़ूद, मगर जब कि उस शख़्स का माल पहले से उस ज़ियादत के मुनासिब ज़ाइद हो गया हो जिस से समझा जाए कि येह ज़ियादत उस शख़्स के मन्सब के सबब नहीं बल्कि अपनी सरवत बढ़ने के बाइस है। सिवुम अपने क़रीब महा़रिम से, जैसे मां बाप औलाद बहन भाई न चचा मामूं ख़ाला फूफी के बेटे कि येह महा़रिम नहीं अगर्चे उ़र्फ़न इन्हें भी भाई कहें। महा़रिम से मुत़्लक़न इजाज़त ज़ाहिरे इ़बारते क़ुदूरी पर है वरना इमाम सग़्नाक़ी ने निहायह फिर इमाम मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ने फ़त्हुल क़दीर में इसे भी सूरते दुवुम ही में दाख़िल फ़रमाया कि महा़रिम से भी हदिय्या व दा'वत का क़बूल इसी शर्त़ से मशरूत़ कि पेश अज़ हु़सूले मन्सब भी वोह इस के साथ येह बरताव बरत्ते हों मगर येह कि इसे येह मन्सब मिलने से पहले वोह फ़ुक़रा थे अब साह़िबे माल हो गए कि इस तक़्दीर पर पेश अज़ मन्सब अ़दमे हदिय्यत व दा'वत बर बिनाए फ़क़्र समझा जाएगा और फ़िल वाक़ेअ़ अज़्हर मिन हैसुद्दलील येही नज़र आता है कि जब बा वस्फ़े क़ुदरत पेश अज़ मन्सब अ़दम या क़िल्लत व बा'दे मन्सब शुरूअ़ बा कसरत बर बिनाए मन्सब ही समझी जाएगी इस तक़्दीर पर सिर्फ़ दो ही सूरतें मुस्तस्ना रहीं फिर बहर ह़ाल जो सूरत मुस्तस्ना होगी वोह इसी ह़ाल में हुक्मे जवाज़ पा सकती है जब उस वक़्त उस शख़्स का कोई काम उस से मुतअ़ल्लिक़ नहीं वरना ख़ास काम पड़ने ग़रज़ मुतअ़ल्लिक़ होने के वक़्त अस्लन इजाज़त नहीं ख़्वाह वोह अफ़्सर हो या भाई या पहले से हदिय्या वग़ैरहा देने वाला बल्कि ऐसे वक़्त आ़म दा'वत में शरीक होना भी न चाहिये न कि ख़ास, फिर जहां जहां मुमानअ़त है उस की बिना सिर्फ़ तोहमत व अन्देशा रिआ़यत पर है ह़क़ीक़तन वुजूदे रिआ़यत ज़रूर नहीं कि इस का अपने अ़मल में कुछ तग़यीर न करना या इस का इस की आ़दते बे लौसी से आगाह होना मुफ़ीदे जवाज़ हो सके। दुन्या के काम उम्मीद ही पर चलते हैं, जब येह दा'वत व हदाया क़बूल किया करेगा तो ज़रूर ख़याल जाएगा कि शायद अब की बार कुछ असर पड़े कि मुफ़्त माल देने की तासीर मुजर्रब व मुशाहद है उस बार न हुई इस बार होगी, इस बार न हुई फिर कभी होगी, और येह ह़ीला कि इस का हदिय्या व दा'वत बर बिनाए अख़्लाक़े इन्सानिय्यत है न ब लिहाज़े मन्सब, इस का रद ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा चुके हैं, जब एक साह़िब को तह़सीले ज़कात पर मुक़र्रर फ़रमा कर भेजा था उन्हों ने अम्वाले ज़कात ह़ाज़िर किये और कुछ

www.dawateislami.net

माल जुदा रखे कि येह मुझे मिले हैं फ़रमाया अपनी मां के घर बैठ कर देखा होता कि अब कितने तोह़फ़े मिलते हैं या'नी येह हदाया सिर्फ़ इसी मन्सब की बिना पर हैं अगर घर बैठा होता तो कौन आ कर दे जाता, इस मस्अले की तफ़सील में अगर्चे कलाम बहुत त़वील है मगर यहां जो कुछ मज़्कूर हुवा बिऔनिही तआ़ला ख़ुलासए तन्क़ीह़ व सालेह़ तह़वील है।[1]

﴿فَإِنْ جَاءُوكَ : **तो अगर वोह तुम्हारे पास आएं।**﴾ यहां सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इख़्तियार दिया गया कि अहले किताब आप के पास कोई मुक़द्दमा लाएं तो आप को इख़्तियार है फ़ैसला फ़रमाएं या न फ़रमाएं।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह तुम से क्यूंकर फ़ैसला चाहेंगे, ह़ालां कि उन के पास तौरैत है जिस में **अल्लाह** का हुक्म मौजूद है ब ईं हमा उसी से मुंह फेरते हैं और वोह ईमान लाने वाले नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह आप को कैसे ह़ाकिम बनाएंगे ह़ालां कि उन के पास तौरात मौजूद है जिस में **अल्लाह** का हुक्म मौजूद है। इस के बा वुजूद येह मुंह फेरते हैं और येह ईमान लाने वाले नहीं हैं।

﴿وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ : **और येह आप को कैसे ह़ाकिम बनाएंगे।**﴾ इर्शाद फ़रमाया गया कि शादी शुदा मर्द और शादी शुदा औ़रत के ज़िना की सज़ा रज्म या'नी संगसार करना है और येह हुक्म तौरात में मौजूद है और येह लोग तौरैत पर ईमान लाने के दा'वेदार भी हैं और उन्हें येह भी मा'लूम है कि तौरैत में रज्म का हुक्म है उस हुक्म को न मानना और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के मुन्किर होते हुए भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ैसला चाहना निहायत तअ़ज्जुब की बात है।

إِنَّآ أَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيهَا هُدًى وَّنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ

1...... फ़तावा रज़विय्या, 18/170, 171

www.dawateislami.net

اَسْلَمُوْا لِلَّذِیْنَ هَادُوْا وَ الرَّبّٰنِیُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ بِمَا
اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا عَلَیْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ
اخْشَوْنِ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ وَ مَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तौरैत उतारी उस में हिदायत और नूर है, उस के मुत़ाबिक़ यहूद को हुक्म देते थे हमारे फ़रमां बरदार नबी और आ़लिम और फ़क़ीह कि इन से किताबुल्लाह की हि़फ़ाज़त चाही गई थी और वोह इस पर गवाह थे तो लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो और मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करे वोही लोग काफ़िर हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने तौरात नाज़िल फ़रमाई जिस में हिदायत और नूर है, फ़रमां बरदार नबी और बानी उ़लमा और फ़ुक़हा यहूदियों को उसी के मुत़ाबिक़ हुक्म देते थे क्यूं कि इन्हें (**अल्लाह** की इस) किताब का मुहाफ़िज़ बनाया गया था और वोह इस के ख़ुद गवाह थे। तो लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो और मेरी आयतों के बदले थोड़ी ज़लील क़ीमत न लो और जो उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला न करें जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया तो वोही लोग काफ़िर हैं।

﴿اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ : **बेशक हम ने तौरात नाज़िल फ़रमाई**।﴾ इस आयते मुबारका में तौरैत शरीफ़ की अ़ज़मत और उस के मुत़ाबिक़ अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का फ़ैसला फ़रमाना और इसी के मुत़ाबिक़ सच्चे उ़लमा व फ़ुक़हा का फ़ैसला करना बयान किया गया है और इस के बा'द दौरे रिसालत और इस के बा'द के यहूदियों को अस्ली तौरैत पर अ़मल करते हुए सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की दा'वत दी गई है, चुनान्चे फ़रमाया गया कि बेशक हम ने तौरैत को नाज़िल फ़रमाया और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन के बा'द के कसीर अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उ़लमा व फ़ुक़हा तौरैत के मुत़ाबिक़ ही फ़ैसले

www.dawateislami.net

करते और इस की ता'लीमात पर अ़मल करते थे और इस की वज्ह येह थी कि उन से तौरात के मुतअ़ल्लिक़ येह अ़ह्द लिया गया था कि वोह इसे अपने सीनों में मह़फ़ूज़ रखें और इस के दर्स में मश्ग़ूल रहें ताकि वोह किताब फ़रामोश न हो और उस के अह़काम ज़ाएअ़ न हों।(1)

तो ऐ यहूदियो ! तुम तौरात में मज़्कूर हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और रज्म का हुक्म ज़ाहिर करने में लोगों से न डरो और सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला से डरो। मुराद येह है कि अह़कामे इलाहिय्यह की तब्दीली बहर सूरत मम्नूअ़ है ख़्वाह लोगों के ख़ौफ़ और उन की नाराज़ी के अन्देशे से हो या माल व जाह और रिश्वत की लालच में हो। इस आयत में उ़लमा के लिये भी एक हुक्म मौजूद है कि वोह **अल्लाह** की किताब की ह़िफ़ाज़त करें और इस की आयात के बदले दुन्या की ज़लील दौलत ह़ासिल न करें और लोगों से डरने की बजाए **अल्लाह** तआ़ला से डरें।

पहली शरीअ़तों के बयान किये गए अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला

तौरैत के मुत़ाबिक़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का हुक्म देना जो इस आयत में मज़्कूर है इस से साबित होता है कि हम से पहली शरीअ़तों के जो अह़काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाए हों और उन के तर्क का हुक्म हमें न दिया हो और न वोह मन्सूख़ किये गए हों वोह हम पर लाज़िम होते हैं।(2)

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ
بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُونَ ﴿٤٥﴾

1 ......ابو سعود، المائدة، تحت الآية: ٤٤، ٢/٤٥، خازن، المائدة، تحت الآية: ٤٤، ١/٤٩٨، ملتقطاً.

2 ......ابو سعود، المائدة، تحت الآية: ٤٤، ٢/٤٥، ملخصاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तौरैत में उन पर वाजिब किया कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों में बदला है फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करावे तो वोह उस का गुनाह उतार देगा और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करे तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने तौरात में उन पर लाज़िम कर दिया था कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत (का क़िसास लिया जाएगा) और तमाम ज़ख़्मों का क़िसास होगा फिर जो दिल की ख़ुशी से (ख़ुद को) क़िसास के लिये पेश कर दे तो येह उस का कफ़्फ़ारा बन जाएगा और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

﴿وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ : **और हम ने उन पर लाज़िम कर दिया था ।**﴾ इस आयत में अगर्चे येह बयान है कि तौरैत में यहूदियों पर क़िसास के येह अह़काम थे लेकिन चूंकि हमें उन के तर्क करने का हुक्म नहीं दिया गया इस लिये हम पर भी येह अह़काम लाज़िम रहेंगे क्यूं कि साबिक़ा शरीअ़तों के जो अह़काम **अल्लाह** तआ़ला और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बयान से हम तक पहुंचे और मन्सूख़ न हुए हों वोह हम पर लाज़िम हुवा करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुवा। आयत में ज़ख़्मों के, आ'ज़ा के और जान के क़िसास का हुक्म बयान फ़रमाया गया, आ'ज़ा और ज़ख़्मों के क़िसास में काफ़ी तफ़्सील है जिस के लिये फ़िक़्ही किताबों का मुत़ालआ़ ज़रूरी है और जान के क़िसास का हुक्म येह है कि अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उस की जान मक़्तूल के बदले में ली जाएगी ख़्वाह वोह मक़्तूल मर्द हो या औ़रत, आज़ाद हो या ग़ुलाम, मुस्लिम हो या ज़िम्मी। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि लोग मर्द को औ़रत के बदले क़त्ल न करते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

﴿فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ : **तो जो ख़ुद को क़िसास के लिये पेश कर दे ।**﴾ या'नी जो क़ातिल या जुर्म करने वाला अपने जुर्म पर नादिम हो कर गुनाह के वबाल से बचने के लिये बख़ुशी अपने ऊपर हुक्मे शरई जारी कराए तो क़िसास उस के जुर्म का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उस पर अ़ज़ाब न होगा।(2)

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि जो साहिबे ह़क़ क़िसास को मुआ़फ़ कर दे तो येह मुआ़फ़ी उस के लिये कफ़्फ़ारा है।(3)

1 ......مدارك، المائدة، تحت الآية: ٤٥، ص٢٨٧.
2 ......جمل مع جلالين، المائدة، تحت الآية: ٤٥، ٢/٢٢٨.
3 ......مدارك، المائدة، तحت الآية: ٤٥، ص٢٨٧.

www.dawateislami.net

दोनों तफ़्सीरों के ए'तिबार से तरजमा मुख़्तलिफ़ हो जाएगा। तफ़्सीरे अह़मदी में है येह तमाम क़िसास जब ही वाजिब होंगे जब कि साह़िबे ह़क़ मुआ़फ़ न करे अगर वोह मुआ़फ़ कर दे तो क़िसास साक़ित़ हो जाएगा।(2)

وَقَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِعِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ۪ وَاٰتَیْنٰهُ الْاِنْجِیْلَ فِیْهِ هُدًى وَّنُوْرٌۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِیْنَؕ۝۴۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम उन नबियों के पीछे उन के निशाने क़दम पर ईसा बिन मरयम को लाए तस्दीक़ करता हुवा तौरैत की जो इस से पहले थी और हम ने उसे इन्जील अ़त़ा की जिस में हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती है तौरैत की, कि इस से पहली थी और हिदायत और नसीह़त परहेज़ गारों को।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम ने उन नबियों के पीछे उन के नक़्शे क़दम पर ईसा बिन मरयम को भेजा उस तौरात की तस्दीक़ करते हुए जो इस से पहले मौजूद थी और हम ने उसे इन्जील अ़त़ा की जिस में हिदायत और नूर था और वोह (इन्जील) इस से पहले मौजूद तौरात की तस्दीक़ फ़रमाने वाली थी और परहेज़ गारों के लिये हिदायत और नसीह़त थी।

﴿وَقَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ﴾ **: और हम ने उन नबियों के पीछे उन के नक़्शे क़दम पर भेजा।** तौरैत के अह़काम बयान करने के बा'द इन्जील के अह़काम का ज़िक्र शुरूअ़ हुवा और बताया गया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरैत की तस्दीक़ फ़रमाने वाले थे कि तौरात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाज़िल कर्दा किताब है और तौरैत के मन्सूख़ होने से पहले इस पर अ़मल वाजिब था, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त में तौरैत के बा'ज़ अह़काम मन्सूख़ कर दिये गए। इस के बा'द इन्जील की शान बयान फ़रमाई गई कि इस में हिदायत और नूर था और हिदायत और नसीह़त थी। पहली जगह हिदायत से मुराद ज़लालत व जहालत से बचाने के लिये रहनुमाई करना है

1 ......تفسیر احمدی، المائدۃ، تحت الآیۃ: ٤٥، ص٣٥٩.

www.dawateislami.net

और दूसरी जगह हिदायत से सय्यिदुल अम्बिया, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की बिशारत मुराद है जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की त़रफ़ लोगों की रहनुमाई का सबब है।(1)

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और चाहिये कि इन्जील वाले हुक्म करें उस पर जो **अल्लाह** ने उस में उतारा और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करें तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और इन्जील वालों को भी उसी के मुत़ाबिक़ हुक्म करना चाहिये जो **अल्लाह** ने उस में नाज़िल फ़रमाया है और जो उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला न करे जो **अल्लाह** ने नाज़िल किया तो वोही लोग ना फ़रमान हैं।

﴾وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ : **और इन्जील वालों को हुक्म करना चाहिये।**﴿ इस आयत का एक मा'ना येह है कि इन्जील वालों को भी उसी के मुत़ाबिक़ हुक्म करना चाहिये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्जील में नाज़िल फ़रमाया है या'नी सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना चाहिये और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत की तस्दीक़ करनी चाहिये क्यूं कि इन्जील में इसी का हुक्म दिया गया है। दूसरा मा'ना येह है कि जब हम ने ईसाइयों को इन्जील अ़त़ा की तो उस वक़्त उन को येह हुक्म दिया था कि वोह उन अह़काम पर अ़मल करें जो इन्जील में मज़्कूर हैं।(2)

इन्जील पर अ़मल करने से मुतअ़ल्लिक़ एक ए'तिराज़ का जवाब

अगर येह ए'तिराज़ किया जाए कि क़ुरआने मजीद के नुज़ूल के बा'द इन्जील पर अ़मल करने के हुक्म की क्या तौजीह होगी ? तो इस के चन्द जवाबात हैं :

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٤٦، ١/ ٥٠٠. 2 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٤٧، ١/ ٥٠٠، ملخصاً.

www.dawateislami.net

(1)...... इन्जील में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के जो दलाइल मौजूद हैं अहले इन्जील को चाहिये कि वोह उन दलाइल के मुत़ाबिक़ ईमान ले आएं।

(2)...... अहले इन्जील उन अह़काम पर अ़मल करें जिन को कुरआन ने मन्सूख़ नहीं किया।

(3)...... इन्जील के अह़काम पर अ़मल करने से मुराद येह है कि इन्जील में तह़रीफ़ न करें जिस त़रह़ यहूदियों ने तौरात में तह़रीफ़ कर दी थी।[1]

लेकिन तह़क़ीक़ येही है कि येह हुक्म उस वक़्त दिया गया था जब **अल्लाह** तआ़ला ने इन्जील को नाज़िल किया था और नुज़ूले कुरआन के बा'द कुरआने मजीद के इ़लावा किसी आस्मानी किताब पर अ़मल जाइज़ नहीं है, और इस्लाम के इ़लावा कोई और दीन मक़्बूल नहीं है।

وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مُهَیْمِنًا عَلَیْهِ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَیْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِیْعًا فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ﴿۴۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उन पर मुह़ाफ़िज़ व गवाह तो उन में फ़ैसला करो **अल्लाह** के उतारे से और ऐ सुनने वाले उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना अपने पास आया हुवा ह़क़ छोड़ कर हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा और **अल्लाह** चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत कर देता मगर मन्ज़ूर येह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उस में तुम्हें आज़्माए तो

1 ......تفسير كبير، المائدة، تحت الآية: ٤٧، ٤/٣٧١.

www.dawateislami.net

भलाइयों की त़रफ़ सब्क़त चाहो, तुम सब का फिरना **अल्लाह** ही की त़रफ़ है तो वोह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम झगड़ते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी जो पहली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाली और उन पर निगह्बान है तो उन (अहले किताब) में **अल्लाह** के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करो और ऐ सुनने वाले ! अपने पास आया हुवा ह़क़ छोड़ कर उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना। हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता बनाया है और अगर **अल्लाह** चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता मगर (उस ने ऐसा नहीं किया) ताकि जो (शरीअ़तें) उस ने तुम्हें दी हैं उन में तुम्हें आज़्माए तो नेकियों की त़रफ़ दूसरों से आगे बढ़ जाओ, तुम सब को **अल्लाह** ही की त़रफ़ लौटना है तो वोह तुम्हें बता देगा वोह बात जिस में तुम झगड़ते थे।

﴿وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ : **और हम ने आप की त़रफ़ किताब नाज़िल फ़रमाई।**﴾ तौरात व इन्जील का तज़्किरा करने के बा'द अब क़ुरआने अ़ज़ीम का तज़्किरा हो रहा है। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी जो साबिक़ा अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल होने वाली किताबों की तस्दीक़ करती है और उन पर निगह्बान है तो जब अहले किताब अपने मुक़द्दमात में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुजूअ़ करें तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरआने पाक के मुत़ाबिक़ उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दें।

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا : **हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता बनाया है।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता बनाया है या'नी फ़ुरूई आ'माल हर एक के ख़ास और जुदा जुदा हैं जैसे नमाज़ों, रोज़ों की ता'दाद और इस त़रह के अह़काम जुदा जुदा हैं लेकिन अस्ल दीन सब का एक है या'नी तौह़ीदो रिसालत, अ़क़ीदए आख़िरत, यूंही बुन्यादी अख़्लाक़िय्यात सब की मुश्तरक हैं। ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया कि ईमान ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने से येही है कि ''لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه'' की शहादत और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आया उस का इक़रार करना जब कि शरीअ़त हर उम्मत की ख़ास है।(1)

(1)......خازن، المائدة، تحت الآية: ٤٨، ١/٥٠١.

www.dawateislami.net

﴿وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً﴾ **: और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता।** इर्शाद फ़रमाया कि अगर **अल्लाह** तआला चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता मगर उस ने ऐसा नहीं किया ताकि जो शरीअ़तें उस ने तुम्हें दी हैं उन में तुम्हें आज़्माए और इम्तिहान में डाले ताकि ज़ाहिर हो जाए कि हर ज़माने के मुनासिब जो अह्काम दिये क्या तुम उन पर इस यक़ीनो ए'तिक़ाद के साथ अ़मल करते हो कि इन का इख़्तिलाफ़ **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत (मरज़ी) से है और इस में बहुत सी हिक्मतें और दुन्यावी और उख़्रवी फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ हैं और या तुम हक़ को छोड़ कर नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हो।(1)

﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ﴾ **: तो नेकियों की त़रफ़ दूसरों से आगे बढ़ जाओ।** कुरआने पाक का ह़कीमाना त़रीक़ा येह है कि जिन मुआ़मलात से इन्सान की दुन्या व आख़िरत का कोई क़ाबिले क़बूल फ़ाएदा मुतअ़ल्लिक़ नहीं है उन में बह़सो मुक़ाबला करने की बजाए उन्हें रिज़ाए इलाही और भलाई के कामों में मुक़ाबला करने की दा'वत देता है। चुनान्चे यहां भी उसी अन्दाज़ की एक झलक है कि शरीअ़तों के इख़्तिलाफ़ की वुजूहात में फ़ल्सफ़ियाना बह़सें करने और बाल की खाल उतारने की बजाए नेकियों की त़रफ़ आने की दा'वत दी। इस में हमारी बहुत सी चीज़ों की इस्लाह़ है। आज कल ह़ालत येह है कि हर मह़ाज़ और मैदान में फ़ुज़ूलिय्यात पर बह़सो मुबाह़सा और पानी से मख्खन निकालने की कोशिशें जारी रहती हैं और करने के कामों की त़रफ़ तवज्जोह कम ही होती है। ख़्वाह म ख़्वाह की बारीकियां निकालने को महारत और क़ाबिलिय्यत शुमार किया जाता है अगर्चे अ़मली त़ौर पर ऐसे आदमी की ह़ालत निहायत गिरी हुई हो। बह़स वहां की जाए जहां उस से कोई फ़ाएदा नज़र आए, सिर्फ़ वक़्त गुज़ारी, लोगों को मुतवज्जेह रखने, त़लबे शोहरत और क़ाबिलिय्यत दिखाने के लिये अपना और लोगों का वक़्त ज़ाएअ़ करना और अ़मली दुन्या में तिन्का तक न तोड़ना अ़क़्ल, दीन और इस्लाम सब के मुनाफ़ी है। इस नसीह़त की रोशनी में बहुत से लोगों को अपने त़र्ज़े अ़मल पर नज़र करने की ह़ाजत है। समझने के लिये सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक फ़रमान ही काफ़ी है ''مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهٗ مَالَا يَعْنِيْهِ'' आदमी के इस्लाम के ह़ुस्न से है कि वोह फ़ुज़ूल चीज़ों को छोड़ दे।(2)

1 ......ابو سعود، المائدة، تحت الآية: ٤٨، ٢/ ٥١.

2 ......ترمذی، کتاب الزهد، ١١-باب، ٤/ ١٤٢، الحديث: ٢٣٢٤.

www.dawateislami.net

وَاَنِ احْكُمْ بَیْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ
یَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَیْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا یُرِیْدُ
اللّٰهُ اَنْ یُّصِیْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ
لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि ऐ मुसल्मान **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म कर और उन की ख़्वाहिशों पर न चल और उन से बचता रह कि कहीं तुझे लग़्ज़िश न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी त़रफ़ उतरा फिर अगर वोह मुंह फेरें तो जान लो कि **अल्लाह** उन के बा'ज़ गुनाहों की सज़ा उन को पहुंचाया चाहता है और बेशक बहुत आदमी बे हुक्म हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (ऐ मुसल्मान !) येह कि उन (लोगों) के दरमियान उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करो जो **अल्लाह** ने नाज़िल फ़रमाया है और उन की ख़्वाहिशात के पीछे न चलो और उन से बचते रहो कि कहीं वोह तुम्हें उस के बा'ज़ अह़काम से हटा न दें जो **अल्लाह** ने तुम्हारी त़रफ़ नाज़िल किया है। फिर अगर वोह मुंह फेरें तो जान लो कि **अल्लाह** उन्हें उन के बा'ज़ गुनाहों की सज़ा पहुंचाना चाहता है और बेशक बहुत से लोग ना फ़रमान हैं।

﴿وَاَنِ احْكُمْ بَیْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ﴾ **: और येह कि ऐ मुसल्मान उन (लोगों) के दरमियान उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है।** यहां मुसल्मान फ़ैसला करने वालों को फ़रमाया कि अहले किताब के दरमियान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्म के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करो और इस बात से बचते रहो कि येह लोग तुम्हें किसी ग़लत़ी के मुरतकिब न करवा दें और अगर येह अहले किताब लोग क़ुरआन से ए'राज़ करें तो समझ जाओ कि **अल्लाह** तआला इन्हें इन के गुनाहों की सज़ा देना चाहता है जो दुन्या में क़त्ल व गिरिफ़्तारी और जला वत़नी के साथ होगी। जब कि वैसे तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा।

www.dawateislami.net

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَ مَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं और **अल्लाह** से बेहतर किस का हुक्म यक़ीन वालों के लिये।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या येह लोग जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं और यक़ीन वालों के लिये **अल्लाह** से बेहतर किस का हुक्म हो सकता है ?

﴾اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ : **तो क्या येह लोग जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं।**﴿ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि बनी नज़ीर और बनी क़ुरैज़ा यहूदियों के दो क़बीले थे, उन में आपस में क़त्लो ग़ारत गरी जारी रहती थी। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए तय्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो येह लोग अपना मुक़द्दमा हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए और बनी क़ुरैज़ा ने कहा कि "बनी नज़ीर हमारे भाई हैं हम वोह एक नस्ल से हैं, एक दीन रखते हैं और एक किताब (तौरैत को) को मानते हैं लेकिन अगर बनी नज़ीर हम में से किसी को क़त्ल करें तो वोह उस के ख़ूनबहा में हमें सत्तर वस्क़ (एक बड़ा वज़्न) खजूरें देते हैं और अगर हम में से कोई उन के किसी आदमी को क़त्ल करे तो हम से उस के ख़ूनबहा में एक सो चालीस वस्क़ लेते हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस का फ़ैसला फ़रमा दें।" ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं हुक्म देता हूं कि दोनो क़बीलों के अफ़राद का ख़ून बराबर है, किसी को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं।" इस पर बनी नज़ीर बहुत बरहम हुए और कहने लगे कि हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से राज़ी नहीं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दुश्मन हैं, हमें ज़लील करना चाहते हैं। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।[1]

और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलिय्यत की गुमराही और ज़ुल्म का हुक्म चाहते हैं। जो हुक्म हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिया है वोह **अल्लाह** तआला का हुक्म है और **अल्लाह** तआला के हुक्म से बढ़ कर किस का हुक्म अच्छा हो सकता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَ النَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘؕ بَعْضُهُمْ

وقف لازم / وقف منزل عند البعض / وقف غفران

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٥٠، ١/٥٠٢.

www.dawateislami.net

اَوْلِيَآءُ بَعْضٍؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ वोह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है बेशक **अल्लाह** बे इन्साफ़ों को राह नहीं देता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ, वोह (सिर्फ़) आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है बेशक **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

﴿ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ﴾ **: ऐ ईमान वालो ! यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ।** यह आयत मश्हूर सहाबी हज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और मश्हूर मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के बारे में नाज़िल हुई जो मुनाफ़िक़ीन का सरदार था। हज़रते उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि यहूदियों में मेरे बहुत बड़ी ता'दाद में दोस्त हैं जो बड़ी शौकतो कुव्वत वाले हैं, अब मैं उन की दोस्ती से बेज़ार हूं और **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा मेरे दिल में और किसी की महब्बत की कोई गुन्जाइश नहीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा कि मैं तो यहूदियों की दोस्ती से बेज़ार नहीं हो सकता, मुझे आयिन्दा पेश आने वाले वाक़िआत का अन्देशा है और मुझे उन के साथ तअ़ल्लुक़ात रखना ज़रूरी है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि "येह यहूदियों की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है, उ़बादा का येह काम नहीं।" इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।[1]

कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात का शरई हुक्म

इस आयत में यहूदो नसारा के साथ दोस्ती व मुवालात या'नी उन की मदद करना, उन से मदद चाहना और उन के साथ महब्बत के रवाबित़ रखना मम्नूअ़ फ़रमाया गया। येह

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ۵۱، ۱/۵۰۳.

www.dawateislami.net

हुक्म आ़म है अगर्चे आयत का नुज़ूल किसी ख़ास वाक़िए में हुवा हो। चुनान्चे यहां येह हुक्म बिग़ैर किसी क़ैद के फ़रमाया गया कि ऐ ईमान वालो ! यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ, येह मुसल्मानों के मुक़ाबले में आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, तुम्हारे दोस्त नहीं क्यूं कि काफ़िर कोई भी हों और उन में बाहम कितने ही इख़्तिलाफ़ हों, मुसल्मानों के मुक़ाबले में वोह सब एक हैं "اَلْكُفْرُ مِلَّةٌ وَّاحِدَة" कुफ़्र एक मिल्लत है।[1]

लिहाज़ा मुसल्मानों को काफ़िरों की दोस्ती से बचने का हुक्म देने के साथ निहायत सख़्त वई़द बयान फ़रमाई कि जो उन से दोस्ती करे वोह उन्ही में से है, इस बयान में बहुत शिद्दत और ताकीद है कि मुसल्मानों पर यहूदो नसारा और दीने इस्लाम के हर मुख़ालिफ़ से अ़लाहि़दगी और जुदा रहना वाजिब है।[2]

और जो काफ़िरों से दोस्ती करते हैं वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इस्लामी हुकूमत में कुफ़्फ़ार को कलीदी आसामियां न दी जाएं। येह आयते मुबारका मुसल्मानों की हज़ारों मुआ़मलात में रहनुमाई करती है और इस की ह़क़्क़ानिय्यत रोज़े रोशन की त़रह़ इयां है। पूरी दुन्या के ह़ालात पर नज़र दौड़ाएं तो समझ आएगा कि मुसल्मानों की ज़िल्लतो बरबादी का आग़ाज़ तभी से हुवा जब आपस में नफ़रत व दुश्मनी और टूटफूट का शिकार हो कर ग़ैर मुस्लिमों को अपना ख़ैर ख़्वाह और हमदर्द समझ कर उन से दोस्तियां लगाईं और उन्हें अपनों पर तरजीह़ दी। **अल्लाह** तआ़ला हमें अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए।

فَتَرَى الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ یُّسَارِعُوْنَ فِیْهِمْ یَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى
اَنْ تُصِیْبَنَا دَآىٕرَةٌؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّاْتِیَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ
فَیُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِیْنَؕ۝۵۲

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अब तुम उन्हें देखोगे जिन के दिलों में आज़ार है कि यहूदो नसारा की त़रफ़ दौड़ते हैं कहते हैं हम डरते हैं कि हम पर कोई गर्दिश आ जाए तो नज़्दीक है कि **अल्लाह** फ़त्ह़ लाए या अपनी त़रफ़ से कोई हुक्म फिर उस पर जो अपने दिलों में छुपाया था पचताते रह जाएं।

1 ......مدارك، المائدة، تحت الآية: ٥١، ص٢٨٩.
2 ......مدارك، المائدة، تحت الآية: ٥١، ص٢٨٩، خازن، المائدة، تحت الآية: ٥١، ١/٥٠٣، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जिन के दिलों में मरज़ है तुम उन्हें देखोगे कि यहूदो नसारा की तरफ़ दौड़े जाते हैं। कहते हैं कि हमें अपने ऊपर गर्दिश आने का डर है तो क़रीब है कि **अल्लाह** फ़त्ह या अपनी तरफ़ से कोई ख़ास हुक्म ले आए फिर येह लोग उस पर पछताएंगे जो अपने दिलों में छुपाते थे।

﴿فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ﴾ **: तो जिन के दिलों में मरज़ है तुम उन्हें देखोगे।** मुसल्मानों को तो फ़रमा दिया गया कि यहूदो नसारा से दोस्ती न करो लेकिन मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमा दिया कि इन की यहूदो नसारा से दोस्तियां बड़ी मुस्तहूकम हैं क्यूं कि येह दिल के मरीज़ हैं और तुम इन्हें देखोगे कि यहूदो नसारा से दोस्ती करने में दौड़े जाते हैं और इन लोगों की नज़र में उन से दोस्ती करने का फ़ाएदा येह है और अपनी ज़बान से भी येह कहते हैं कि अगर कभी हालात बदल जाएं, मुसल्मान मग़्लूब और काफ़िर ग़ालिब हो जाएं तो कुफ़्फ़ार से दोस्ती लगाना इन्हें उस वक़्त फ़ाएदा देगा। लेकिन येह सब मुनाफ़क़त की वज्ह से था क्यूं कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्लाम के ग़लबे की जो बातें फ़रमाते थे उन्हें इस पर यक़ीन नहीं था वरना अगर इन बातों पर यक़ीन होता तो डट कर इस्लाम की हिमायत करते। **अल्लाह** तआ़ला बिशारत देता है कि क़रीब है कि वोह मुसल्मानों को फ़त्ह अ़ता फ़रमाए और अपने रसूल, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को काम्याबो कामरान फ़रमाए और उन के दीन को तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और मुसल्मानों को उन के दुश्मन यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ग़लबा दे दे चुनान्चे येह ख़बर सच साबित हुई और **अल्लाह** तआ़ला के करम से मक्कए मुकर्रमा और यहूदियों के अ़लाक़े फ़त्ह हुए।[1]

इस आयत में पहली बात तो येह इर्शाद फ़रमाई थी कि **अल्लाह** तआ़ला फ़त्ह ले आए और दूसरी बात येह इर्शाद फ़रमाई गई **अल्लाह** तआ़ला अपनी तरफ़ से कोई ख़ास हुक्म ले आए जैसे सर ज़मीने हिजाज़ को यहूदियों से पाक करना और वहां उन का नामो निशान बाक़ी न रखना या मुनाफ़िक़ीन के राज़ खोल कर उन्हें रुस्वा करना।[2]

तो जब **अल्लाह** तआ़ला अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा उस वक़्त मुनाफ़िक़ीन अपनी मुनाफ़क़त पर या इस ख़याल पर नादिम हो जाएंगे कि सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में काम्याब न होंगे।

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٥٢، ١/٥٠٣.
2 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٥٢، ١/٥٠٣-٥٠٤، جلالين، المائدة، تحت الآية: ٥٢، ص١٠٢، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ
اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ईमान वाले कहते हैं क्या येही हैं जिन्हों ने **अल्लाह** की क़सम खाई थी अपने ह़ल्फ़ में पूरी कोशिश से कि वोह तुम्हारे साथ हैं उन का किया धरा सब अकारत गया तो रह गए नुक़्सान में।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ईमान वाले कहेंगे : क्या येही हैं वोह लोग जिन्हों ने **अल्लाह** की बड़ी पक्की क़समें खाई थीं कि वोह तुम्हारे साथ हैं। तो उन के तमाम आ'माल बरबाद हो गए पस येह नुक़्सान उठाने वालों में से हो गए।

﴾وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا : **और ईमान वाले कहेंगे।**﴿ इर्शाद फ़रमाया कि जब मुनाफ़िक़ीन का पर्दा खुल जाएगा और उन की मुनाफ़क़त आशकार हो जाएगी तो उस वक़्त मुसल्मान तअ़ज्जुब करते हुए कहेंगे कि क्या येही हैं वोह लोग जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ी पक्की क़समें खाई थीं कि वोह दिल से मुसल्मानों के साथ हैं ह़ालां कि ऐसा नहीं था।

﴾حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ : **तो उन के तमाम आ'माल बरबाद हो गए।**﴿ या'नी उन के निफ़ाक़ और यहूदियों से दोस्ती की वज्ह से उन के तमाम नेक आ'माल बरबाद हो गए और उन्हों ने दुन्या में अपनी ज़िल्लतो रुस्वाई की वज्ह से नुक़्सान उठाया और आख़िरत में अपने आ'माल के सवाब से मह़रूम होने और जहन्नम का दाइमी अ़ज़ाब पाने के सबब नुक़्सान उठाएंगे।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ
يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ٘
يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآىٕمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٥٣، ١/٥٠٤.

www.dawateislami.net

اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे, और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** ऐसी क़ौम ले आएगा जिन से **अल्लाह** मह़ब्बत फ़रमाता है और वोह **अल्लाह** से मह़ब्बत करते हैं मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त हैं, **अल्लाह** की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते। येह (अच्छी सीरत) **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमा देता है और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है।

﴿مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ : **तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा।**﴾ कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती यारी और मह़ब्बत व क़ल्बी तअ़ल्लुक़ चूंकि बा'ज़ अवक़ात बे दीनी और इरतिदाद का सबब बन जाता है, इस लिये कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमानअ़त के बा'द मुरतद्दीन का ज़िक्र फ़रमाया और मुरतद होने से पहले लोगों के मुरतद होने की ख़बर दी चुनान्चे येह ख़बर सच साबित हुई और बहुत से लोग मुरतद हुए।

﴿فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ : **तो अ़न्क़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम ले आएगा जिन से अल्लाह मह़ब्बत फ़रमाता है।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो ! तुम में से अगर कुछ लोग मुरतद भी हो जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला के पाकीज़ा सिफ़त बन्दे फिर भी मौजूद होंगे और वोह अ़ज़ीम सिफ़ात के ह़ामिल होंगे। इस आयत में उन की चन्द सिफ़ात बयान फ़रमाई गईं :

(1)...... वोह **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब हैं।
(2)...... वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हैं।
(3)...... मुसल्मानों के साथ नरमी व शफ़्क़त का सुलूक करने वाले हैं।
(4)...... काफ़िरों से सख़्ती से पेश आने वाले हैं।
(5)...... राहे ख़ुदा के मुजाहिद हैं।

www.dawateislami.net

(6)...... हक़ बयान करने में किसी की मलामत की परवाह नहीं करते बल्कि हक़ गो और हक़ गोई में बेबाक हैं ।

येह सिफ़ात जिन हज़रात की हैं वोह कौन हैं, इस में कई अक़्वाल हैं :

(1)...... हज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم, इमाम हसन बसरी और हज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने कहा कि येह हज़रात सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और उन के वोह साथी हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द मुरतद होने वालों और ज़कात के मुन्किरों से जिहाद किया ।

(2)...... हज़रते इयाज़ बिन ग़नम अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की निस्बत फ़रमाया कि येह उन की क़ौम है ।

(3)...... एक क़ौल येह है कि येह लोग अहले यमन हैं जिन की ता'रीफ़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में आई है ।

(4)...... मुफ़स्सिर सुद्दी का क़ौल है कि येह लोग अन्सार हैं जिन्हों ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की । इन तमाम अक़्वाल में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं क्यूं कि बयान कर्दा सब हज़रात का इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ होना सह़ीह़ है ।[1]

कामिल मुसल्मान का नमूना

इस आयत में मुसल्मानों के सामने एक कामिल मुसल्मान का नुमूना भी पेश कर दिया गया कि कामिल मुसल्मान कैसा होता है ? हमें भी ऊपर बयान कर्दा सिफ़ात की रोशनी में अपने ऊपर ग़ौर कर लेना चाहिये । मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही के ह़वाले से येह वाक़िआ़ एक अ़ज़ीम मिसाल है :

हज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह ख़य्यात़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास एक आतश परस्त कपड़े सिलवाता और हर बार उजरत में एक खोटा सिक्का दे जाता, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस को ले लेते । एक बार आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ग़ैर मौजूदगी में शागिर्द ने आतश परस्त से खोटा सिक्का न लिया । जब हज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह ख़य्यात़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस तशरीफ़ लाए और उन को येह मा'लूम हुवा तो शागिर्द से फ़रमाया : तू ने खोटा दिरहम क्यूं नहीं लिया ? कई साल से वोह मुझे खोटा सिक्का ही देता रहा है और मैं भी चुपचाप ले लेता हूं ताकि येह किसी दूसरे

[1]......خازن، المائدة، تحت الآية: ٥٤، ١/٥٠٤-٥٠٥.

www.dawateislami.net

मुसल्मान को न दे आए।[1]

येह मुसलमानों पर नरमी है। और ह़दीसे मुबारक है, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक बेहतरीन साथी वोह हैं जो अपने हमराहियों के लिये बेहतर हों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बेहतरीन पड़ोसी वोह हैं जो अपने पड़ोसी के लिये अच्छे हों।"[2]

और ह़क़ गोई में किसी की मलामत की परवाह न करने के मुतअ़ल्लिक़ येह ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन्साफ़ के मुआ़मले में बहुत सख़्त थे। आप हमेशा ह़क़ बात कहते और दुरुस्त फ़ैसले फ़रमाते। एक मरतबा ख़लीफ़ए वक़्त "मो'तज़िद बिल्लाह" ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ पैग़ाम भेजा : फ़ुलां ताजिर ने हम से माल ख़रीदा है और नक़्द रक़म अदा नहीं की। वोह मेरे इलावा दूसरों का भी मक़रूज़ है, मुझे ख़बर पहुंची है कि दूसरे क़र्ज़ ख़्वाहों ने आप के पास गवाह पेश किये तो आप ने उस ताजिर का माल उन में तक़्सीम कर दिया है। मुझे उस माल से कुछ भी नहीं मिला ह़ालां कि जिस त़रह़ वोह दूसरों का मक़रूज़ था इसी त़रह़ मेरा भी था, लिहाज़ा मेरा ह़िस्सा भी दिया जाए। पैग़ाम पा कर क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़ासिद से कहा : ख़लीफ़ा से कहना कि **अल्लाह** तआ़ला आप की उ़म्र दराज़ फ़रमाए, वोह वक़्त याद करो जब आप ने मुझ से कहा था कि मैं ने फ़ैसलों की ज़िम्मेदारी का बोझ अपनी गरदन से उतार कर तुम्हारे गले में डाल दिया है। ऐ ख़लीफ़ा ! अब मैं फ़ैसला करने का मुख़्तार हूं और मेरे लिये जाइज़ नहीं कि गवाहों के बिग़ैर किसी मुद्दई के ह़क़ में फ़ैसला करूं। क़ासिद ने क़ाज़ी साह़िब का पैग़ाम सुनाया तो ख़लीफ़ा ने कहा : जाओ ! क़ाज़ी साह़िब से कहो कि मेरे पास बहुत मो'तबर और मुअ़ज़्ज़ज़ गवाह मौजूद हैं। जब क़ाज़ी साह़िब को येह पैग़ाम मिला तो फ़रमाया : गवाह मेरे सामने आ कर गवाही दें, मैं उन से पूछगछ करूंगा, शहादत के तक़ाज़ों पर पूरे उतरे तो उन की गवाही क़बूल कर लूंगा वरना वोही फ़ैसला क़ाबिले अ़मल रहेगा जो मैं कर चुका हूं। जब गवाहों को क़ाज़ी साह़िब का येह पैग़ाम पहुंचा तो उन्हों ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ख़ौफ़ खाते हुए अ़दालत आने से इन्कार कर दिया। लिहाज़ा क़ाज़ी साह़िब ने ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह का दा'वा रद करते हुए उसे कुछ भी न भिजवाया।[3]

1 ......احياء علوم الدين، كتاب رياضة النفس وتهذيب الاخلاق... الخ، بيان علامات حسن الخلق، ٣/٨٧-٨٨.

2 ......ترمذی، كتاب البر والصلة، باب ما جاء فی حق الجوار، ٣/٣٧٩، الحديث: ١٩٥١.

3 ......عيون الحكايات، الحكاية السادسة والثمانون بعد المائتين، ص ٢٦١-٢٦٢.

www.dawateislami.net

اِنَّمَا وَلِیُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوا الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ مَنْ یَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ ع

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे दोस्त नहीं मगर **अल्लाह** और उस का रसूल और ईमान वाले कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए हैं। और जो **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों को अपना दोस्त बनाए तो बेशक **अल्लाह** ही का गुरौह ग़ालिब है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम्हारे दोस्त सिर्फ़ **अल्लाह** और उस का रसूल और ईमान वाले हैं जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए हैं। और जो **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों को अपना दोस्त बनाए तो बेशक **अल्लाह** ही का गुरौह ग़ालिब है।

﴾اِنَّمَا وَلِیُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا﴿ **: तुम्हारे दोस्त सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं।**﴾ गुज़श्ता आयात में उन लोगों का बयान हुवा जिन के साथ दिली दोस्तियां लगाना ह़राम है, उन का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द अब उन का बयान फ़रमाया जिन के साथ मुवालात वाजिब है। इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हमारी क़ौम ने हमें छोड़ दिया और क़समें खा लीं कि वोह हमारे पास नहीं बैठा करेंगे और दूरी की वज्ह से हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की सोह़बत में भी नहीं बैठ सकते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि **अल्लाह** तआ़ला और उस का रसूल और ईमान वाले तुम्हारे दोस्त हैं तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा "**अल्लाह** तआ़ला के रब होने पर, उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर और

www.dawateislami.net

मुअमिनीन के दोस्त होने पर हम राज़ी हैं।"[1]

आयते मुबारका में बयान कर्दा हुक्म तमाम मुसल्मानों के लिये आ़म है सब एक दूसरे के दोस्त और मुहि़ब हैं।

﴾وَهُمۡ رٰكِعُوۡنَ﴿ : **और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं।** अ़रबी ग्रामर के ए'तिबार से आयते मुबारका के इस जुम्ले के चार मा'ना बयान किये गए हैं :

(1)...... पहला मा'ना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में झुका हुवा होना मोमिनों की एक मज़ीद सिफ़त है।[2]

(2)...... दूसरा मा'ना येह है कि मोमिनीन नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात देने के दोनों काम ख़ुशूअ़ और तवाज़ोअ़ के साथ करते हैं।[3]

(3)...... तीसरा मा'ना येह है कि वोह तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी के साथ ज़कात देते हैं।[4]

(4)...... चौथा मा'ना येह है कि वोह ह़ालते रुकूअ़ में राहे ख़ुदा में देते हैं।

पहला मा'ना सब से क़वी और चौथा मा'ना सब से कमज़ोर है बल्कि इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तफ़्सीरे कबीर में इस का बहुत शद्दो मद से रद किया है और इस के बुत़्लान पर बहुत से दलाइल क़ाइम किये हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا دِيۡنَكُمۡ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَالۡكُفَّارَ اَوۡلِيَآءَ‌ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना लिया है वोह जो तुम से पहले किताब दिये गए और काफ़िर उन में किसी को अपना दोस्त न बनाओ और **अल्लाह** से डरते रहो अगर ईमान रखते हो।

1 ......قرطبی، المائدة، تحت الآیة: ٥٥، ٣/١٣١، الجزء السادس.
2 ......جمل، المائدة، تحت الآیة: ٥٥، ٢/٢٤٢.
3 ......ابو سعود، المائدة، تحت الآیة: ٥٥، ٢/٥٩.
4 ......جمل، المائدة، تحت الآیة: ٥٥، ٢/٢٤٢.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई उन में से वोह लोग जिन्हों ने तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और खेल बना लिया है उन्हें और काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाओ और अगर ईमान रखते हो तो **अल्लाह** से डरते रहो ।

﴿اَلَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَكُمْ هُزُوًا وَّ لَعِبًا﴾ : वोह लोग जिन्हों ने तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और खेल बना लिया है । इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि रिफ़ाआ़ बिन ज़ैद और सुवैद बिन ह़ारिस नामी दो आदमी इज़्हारे इस्लाम के बा'द मुनाफ़िक़ हो गए । बा'ज़ मुसल्मान उन से मह़ब्बत रखते थे । **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया कि ज़बान से इस्लाम का इज़्हार करना और दिल में कुफ़्र छुपाए रखना दीन को हंसी और खेल बनाना है और ऐसे लोगों और इन के इलावा मुश्रिकों काफ़िरों को दोस्त बनाने से भी मन्अ़ कर दिया गया क्यूं कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों से दोस्ती करना ईमानदार का काम नहीं । इस पर मज़ीद तफ़्सील अगली आयत के तह़्त मौजूद है ।

وَ اِذَا نَادَیْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّ لَعِبًاؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا یَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं येह इस लिये कि वोह निरे बे अ़क़्ल लोग हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान देते हो तो येह उस को हंसी मज़ाक़ और खेल बना लेते हैं । येह इस लिये है कि वोह बिल्कुल बे अ़क़्ल लोग हैं ।

﴿وَ اِذَا نَادَیْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ﴾ : और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान देते हो । इस आयत के बारे में कल्बी का क़ौल है कि जब सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिये अज़ान कहता और मुसल्मान उठते तो यहूदी हंसते और तमस्ख़ुर करते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । मुफ़स्सिर सुद्दी ने बयान किया कि मदीनए त़य्यिबा में जब मुअज़्ज़िन अज़ान में "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" और "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه" कहता तो एक नसरानी येह कहा करता

www.dawateislami.net

कि ‘‘जल जाए झूटा’’ एक रात उस का ख़ादिम आग लाया वोह और उस के घर के लोग सो रहे थे आग से एक शरारा उड़ा और वोह नसरानी और उस के घर के लोग और तमाम घर जल गया।[1]

आयत ‘‘وَ اِذَا نَادَیْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ’’ से मा ’लूम होने वाले मसाइल

इस आयत से 3 मस्अले मा’लूम हुए :

(1)...... नमाज़े पन्जगाना के लिये अज़ान होनी चाहिये, अज़ान का सुबूत इस आयत से भी है।

(2)...... दीन की किसी चीज़ का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने अज़ान का मज़ाक़ उड़ाने वालों को काफ़िर क़रार दिया है। ऐसे ही आ़लिम, मस्जिद, ख़ानए का’बा, नमाज़, रोज़ा वग़ैरहा में से किसी का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है।

(3)...... दीनी चीज़ों का मज़ाक़ उड़ाने वाले अह़मक़ व बे अ़क़्ल हैं जो ऐसे सफ़ीहाना और जाहिलाना ह़रकात करते हैं।

दीनी चीज़ों का मज़ाक़ उड़ाने वालों का रद

इस आयत में दीनी चीज़ों का मज़ाक़ उड़ाने वालों का कितना शदीद रद है। अफ़्सोस कि जो काम यहूदी और मुनाफ़िक़ किया करते थे वोही काम मुसल्मान कहलाने वालों में आते जा रहे हैं। नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, फ़िरिश्ते, जन्नत, ह़ूरें, दोज़ख़, इस के अ़ज़ाब, क़ुरआनी आयात, अह़ादीसे नबवी, दीनी किताबों, दीनी शआइर, इमामा, दाढ़ी, मस्जिद, मद्रसे, दीनदार आदमी, दीनी लिबास, दीनी जुम्ले, मुक़द्दस कलिमात अल ग़रज़ वोह कौन सी मज़्हबी चीज़ है कि जिस का इस ज़माने में खुले आ़म फ़िल्मों, ड्रामों, ख़ुसूसन मिज़ाह़िया ड्रामों, आ़म बोलचाल, दोस्तों की मजलिसों, दुन्यावी तक़्रीरों, हंसी मज़ाक़ की निशस्तों और बाहमी गपशप में मज़ाक़ नहीं उड़ाया जाता। अफ़्सोस कि मुसल्मान कहलाने वाले इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते हैं। मुसल्मान कहलाने वालों को दाढ़ी, इमामा, मज़्हबी ह़ुल्ये से नफ़्रत है। मुसल्मान कहलाने वाले को अज़ान सुन कर तक्लीफ़ होती है। क़ुरआनो ह़दीस की बातें उसे पुरानी बातें लगती हैं। याद रखें कि दीनी शआइर का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है और दीन का मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

---

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٥٨، ١/٥٠٧.

www.dawateislami.net

وَ اِذَا عَلِمَ مِنْ اٰیٰتِنَا شَیْــٴًـا اتَّخَذَهَا هُزُوًاؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ (1)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिलाअ् पाए तो उसे मज़ाक़ बनाता है उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

और फ़रमाता है :

وَ لَىٕنْ سَاَلْتَهُمْ لَیَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَ نَلْعَبُؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَ اٰیٰتِهٖ وَ رَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِیْمَانِكُمْ (2)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ मह़बूब अगर तुम उन से पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसते हो। बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसल्मान हो कर।

और फ़रमाता है :

وَ ذَرِ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا (3)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और छोड़ दे उन को जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया।

अल्लाह तआ़ला मुसल्मानों को अ़क़्ले सलीम अ़ता फ़रमाए और इन आयात को सामने रखते हुए अपनी ह़ालत पर ग़ौर करने और अपनी इस रविश को तब्दील करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُۙ وَ اَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ۝۵۹

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा येही ना, कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो पहले उतरा और येह कि तुम में अक्सर बे हुक्म हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : ऐ अहले किताब ! तुम्हें हमारी त़रफ़ से येही बुरा लगा है कि हम **अल्लाह** पर और जो हमारी त़रफ़ नाज़िल किया गया उस पर और जो पहले नाज़िल किया गया उस पर ईमान लाए हैं और बेशक तुम्हारे अक्सर लोग फ़ासिक़ हैं।

1 ......الجاثیه: ٩. 2 ......التوبه: ٦٥، ٦٦. 3 ......انعام: ٧٠.

www.dawateislami.net

﴿قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ : **तुम फ़रमाओ : ऐ अहले किताब !**﴾ इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि यहूदियों की एक जमाअ़त ने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त फ़रमाया कि आप अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से किस किस को मानते हैं ? इस सुवाल से उन का मत़लब येह था कि अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न मानें तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आएं लेकिन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान रखता हूं और जो उस ने हम पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रते इब्राहीम, हज़रते इस्माईल, हज़रते इस्ह़ाक़ और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन की औलाद पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रते ईसा और हज़रते मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दिया गया या'नी तौरैत व इन्जील और जो और नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन के रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से दिया गया सब को मानता हूं। हम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को मानें और किसी को न मानें। जब यहूदियों को मा'लूम हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को भी मानते हैं तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए और कहने लगे जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को माने हम उस पर ईमान न लाएंगे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।(1)

और फ़रमाया गया कि ऐ किताबियो ! हम तुम्हारे तमाम पैग़म्बरों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और तुम्हारी तमाम किताबों को ह़क़ मानते हैं तो क्या तुम्हें येही बुरा लग रहा है। इस चीज़ की वज्ह से तो तुम्हें हमारे साथ होना चाहिये न कि हमारे ख़िलाफ़।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ غَضِبَ عَلَيْهِ وَ جَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَ الْخَنَازِيْرَ وَ عَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓىِٕكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۶۰﴾

1 ......بغوی، المائدة، تحت الآية: ٥٩، ٢/٣٩.

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या मैं बता दूं जो **अल्लाह** के यहां इस से बदतर दरजे में हैं वोह जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन में से कर दिये बन्दर और सुवर और शैतान के पुजारी उन का ठिकाना ज़ियादा बुरा है और येह सीधी राह से ज़ियादा बहके।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ महबूब ! तुम फ़रमाओ : क्या मैं तुम्हें वोह लोग बताऊं जो **अल्लाह** के हां इस से बदतर दरजे के हैं, येह वोह हैं जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन में से बहुत से लोगों को बन्दर और सुवर बना दिया और जिन्हों ने शैतान की इबादत की, येह लोग बद तरीन मक़ाम वाले और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा भटके हुए हैं।

﴿قُلْ : **ऐ महबूब ! तुम फ़रमाओ।**﴾ यहूदियों ने मुसल्मानों से कहा कि तुम्हारे दीन से बदतर कोई दीन हम नहीं जानते। इस पर फ़रमाया गया कि मुसल्मानों को तो तुम सिर्फ़ अपने बुग़्ज़ो कीना और दुश्मनी की वज्ह से ही बुरा कहते हो जब कि ह़क़ीक़त में अस्ल बदतर तो तुम लोग हो और ज़रा अपने ह़ालात देख कर ख़ुद फ़ैसला कर लो कि तुम **अल्लाह** तआ़ला के महबूब हो या मरदूद ? पिछले ज़माने में सूरतें तुम्हारी मस्ख़ हुईं, सुवर, बन्दर तुम बनाए गए, बछड़े को तुम ने पूजा, **अल्लाह** तआ़ला की ला'नत तुम पर हुई, ग़ज़बे इलाही के मुस्तह़िक़ तुम हुए तो ह़क़ीक़ी बद नसीब और बदतर तो तुम हो और तुम ही बद तरीन मक़ाम या'नी जहन्नम में जाओगे।

وَ اِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَ قَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَ هُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا یَكْتُمُوْنَ ﴿۶۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हारे पास आएं तो कहते हैं हम मुसल्मान हैं और वोह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो छुपा रहे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम मुसल्मान हैं ह़ालां कि वोह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर ही थे और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो वोह छुपा रहे हैं।

www.dawateislami.net

﴿وَ اِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا﴾ **: और जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम मुसल्मान हैं ।** येह आयत यहूदियों की एक जमाअ़त के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपने ईमान व इख़्लास का इज़्हार किया और कुफ़्र व गुमराही को छुपाए रखा । **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन के ह़ाल की ख़बर दी ।[1]

मुनाफ़िक़ बद ए'तिक़ादी के साथ आते थे तो जैसे आते वैसे ही जाते और सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم अ़क़ीदतो मह़ब्बत के साथ आते तो फ़ैज़ के दरिया समेट कर जाते थे । इस से मा'लूम हुवा कि बद ए'तिक़ादी के साथ किसी के पास जाने वाला कभी उस से फ़ैज़ नहीं उठा सकता ।

وَ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और ह़राम ख़ोरी पर दौड़ते हैं बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और तुम उन में से बहुत से लोगों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और ह़राम ख़ोरी के कामों में दौड़े जाते हैं । बेशक येह बहुत ही बुरे काम करते हैं ।

﴿وَ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ﴾ **: और तुम उन में से बहुत से लोगों को देखोगे ।** यहां यहूदियों के बारे में फ़रमाया गया कि तुम इन यहूदियों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और ह़राम ख़ोरी के कामों में दौड़े जाते हैं । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां गुनाह से मुराद तौरैत की वोह आयात छुपाना है जिन में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतो शान का बयान था और ज़ियादती से मुराद तौरैत में अपनी त़रफ़ से बढ़ा देना है और ह़राम ख़ोरी से मुराद वोह रिश्वतें हैं जो येह ले कर तौरैत के अह़काम बदल देते थे ।[2]

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٦١، ١/٥٠٨. 2 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٦٢، ١/٥٠٨.

www.dawateislami.net

यहूदियों की सिफ़ात और मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार

वैसे ''اِثْم'' हर गुनाह और ना फ़रमानी को शामिल है और यहां यहूदियों की जो सिफ़ात बयान की गई हैं उन पर ग़ौर करने की ह़ाजत है कि ज़ाहिरी लफ़्ज़ी मा'ना के ए'तिबार से गुनाह, ज़ियादती और ह़राम ख़ोरी के कामों में भाग कर जाना उन की सिफ़त बयान की गई है लेकिन अब हमारे हां कितने ऐसे लोग हैं कि नेकी के काम में तो ताख़ीर बल्कि तर्क करेंगे लेकिन गुनाह के काम में जल्दी करेंगे। किसी की मदद करने और उसे ज़ुल्म से बचाने में कन्नी कतरा कर गुज़र जाएंगे लेकिन ज़ुल्मो ज़ियादती में अपनी क़ौम या अ़लाक़े या तह़रीक के झन्डे नीचे तअ़स्सुब के साथ मौजूद होंगे। ह़लाल तो उन के गले में अटकेगा लेकिन जहां ह़राम की तवक़्क़ोअ़ होगी, रिश्वत मिलेगी, सूद मिलेगा, ख़ूब ना जाइज़ तिजारत का फ़ाएदा नज़र आएगा वहां भाग कर जाएंगे।

वज़्अ़ में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हुनूद　　येह मुसल्मां हैं ! जिन्हें देख कर शरमाएं यहूद

और अपनी ह़ालत को सामने रखते हुए ग़ौर करो कि

कौन है तारिके आईने रसूले मुख़्तार ?　　मस्लह़त वक़्त की है किस के अ़मल का मे'यार ?

किस की आंखों में समाया है शिआ़रे अग़्यार ?　　हो गई किस की निगह तर्ज़े सलफ़ से बेज़ार ?

और अब तुम्हारा ह़ाल येह है कि

क़ल्ब में सोज़ नहीं रूह़ में एह़सास नहीं　　कुछ भी पैग़ामे मुह़म्मद का तुम्हें पास नहीं

لَوْ لَا یَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِیُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا یَصْنَعُوْنَ ﴿۶۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें क्यूं नहीं मन्अ़ करते उन के पादरी और दरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से, बेशक बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन के दरवेश और उ़लमा उन्हें गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से क्यूं नहीं मन्अ़ करते बेशक येह बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।

www.dawateislami.net

﴿لَوۡلَا يَنۡهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوۡنَ : **उन्हें क्यूं न रोका उन के पादरियों ने ?**﴾ ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत में "اَلرَّبّٰنِيُّوۡنَ" से ईसाइयों के उ़लमा मुराद हैं और "اَلۡاَحۡبَارُ" से यहूदियों के उ़लमा मुराद हैं, और एक क़ौल येह है कि येह दोनों अल्फ़ाज़ यहूदियों के बारे में हैं क्यूं कि येह आयात यहूदियों के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई हैं।(1)

और एक लफ़्ज़ से यहूदियों के दरवेश मुराद हैं और दूसरे लफ़्ज़ से यहूदियों के उ़लमा मुराद हैं।

उ़लमा पर बुराई से मन्अ़ करना ज़रूरी है

यहां यहूदी दरवेशों और उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि उन्हों ने अपनी क़ौम को गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से क्यूं न रोका। इस से मा'लूम हुवा कि आ़लिमे दीन की इस बात पर भी पकड़ होगी कि वोह गुनाह होते हुए देखें और क़ुदरत के बा वुजूद मन्अ़ न करें क्यूं कि ऐसा आ़लिम गुनाह करने वाले की त़रह़ है। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "गुनाह रूह़ानी मरज़ है और इस का इ़लाज **अल्लाह** तआ़ला की, उस की सिफ़ात की और उस के अह़काम की मा'रिफ़त है और येह इ़ल्म ह़ासिल होने के बा वुजूद गुनाह ख़त्म न हों तो येह उस मरज़ की त़रह़ है जो किसी शख़्स को हो और दवाई खाने के बा वुजूद वोह मरज़ ख़त्म न हो और आ़लिम का गनुाह करना इस बात की दलील है कि उस का येह क़ल्बी मरज़ इन्तिहाई शदीद है।"(2)

आ़लिम पर वाजिब है कि ख़ुद भी संभले और दूसरों को भी संभाले। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : क़ुरआने पाक में (उ़लमा के लिये) इस आयत से ज़ियादा डांट डपट वाली कोई आयत नहीं।(3)

और फ़रमाते हैं : क़ुरआने पाक में येह आयत (उ़लमा के बारे में) बहुत सख़्त है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने बुराई से मन्अ़ करना छोड़ देने वाले को बुराई करने वाले की वई़द में दाख़िल फ़रमाया है।(4)

1 ......تفسير كبير، المائدة، تحت الآية: ٦٣، ٤/٣٩٣.
2 ......تفسير كبير، المائدة، تحت الآية: ٦٣، ٤/٣٩٣.
3 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٦٣، ١/٥٠٩.
4 ......مدارك، المائدة، تحت الآية: ٦٣، ص٢٩٢-٢٩٣.

www.dawateislami.net

इमाम ज़ह्हाक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक इस आयत से ज़ियादा ख़ौफ़ दिलाने वाली क़ुरआने पाक में कोई आयत नहीं, अफ़्सोस कि हम बुराइयों से नहीं रोकते।[1]

وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَ لُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ
يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَ لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّ كُفْرًا ؕ وَ اَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ
وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَاۤ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ
وَ يَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾

وقف لازم

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यहूदी बोले **अल्लाह** का हाथ बंधा हुवा है उन्हीं के हाथ बांधे जाएं और उन पर इस कहने से ला'नत है बल्कि उस के हाथ कुशादा हैं अ़ता फ़रमाता है जैसे चाहे और ऐ महबूब येह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा इस से उन में बहुतों को शरारत और कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी और उन में हम ने क़ियामत तक आपस में दुश्मनी और बैर डाल दिया जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं **अल्लाह** उसे बुझा देता है और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं, और **अल्लाह** फ़सादियों को नहीं चाहता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और यहूदियों ने कहा : **अल्लाह** का हाथ बंधा हुवा है। उन के हाथ बांधे जाएं और उन पर इस कहने की वज्ह से ला'नत है बल्कि **अल्लाह** के हाथ कुशादा हैं जैसे चाहता है ख़र्च फ़रमाता है और ऐ ह़बीब ! येह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से नाज़िल किया गया है येह उन में से बहुत से लोगों की सरकशी और कुफ़्र में इज़ाफ़ा करेगा और हम ने क़ियामत तक उन में दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया। जब कभी येह लड़ाई की आग भड़काते हैं तो **अल्लाह** उसे बुझा देता है और येह ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिये कोशिश करते हैं और **अल्लाह** फ़साद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।

1 ......تفسير طبرى، المائدة، تحت الآية: ٦٣، ٤/٦٣٨.

www.dawateislami.net

﴿وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ **: और यहूदियों ने कहा ।**﴾ इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहूदी बहुत ख़ुशह़ाल और निहायत दौलत मन्द थे । जब उन्हों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त की तो उन की रोज़ी कम हो गई । उस वक़्त फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला का हाथ बंधा है या'नी مَعَاذَ اللّٰہ वोह रिज़्क़ देने और ख़र्च करने में बुख़्ल करता है । उस के इस क़ौल पर किसी यहूदी ने मन्अ़ न किया बल्कि राज़ी रहे, इसी लिये येह सब का मक़ूला क़रार दिया गया और येह आयत उन के बारे में नाज़िल हुई ।(1)

और फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला तो जवादो करीम है, हां इन यहूदियों के हाथ बांधे जाएं । इस इर्शाद का येह असर हुवा कि यहूदी दुन्या में सब से ज़ियादा बख़ील हो गए या इस जुम्ले का येह मा'ना है कि उन की इस बेहूदा गोई और गुस्ताख़ी की सज़ा में उन के हाथ जहन्नम में बांधे जाएं और इस त़रह़ उन्हें आतशे दोज़ख़ में डाला जाएगा । आयत में **अल्लाह** तआ़ला के हाथ कुशादा होने से मुराद बेह़द करम और मेह़रबानी है कि दोस्तों को भी नवाज़े और दुश्मनों को भी मह़रूम न करे वरना **अल्लाह** तआ़ला जिस्मानी हाथ और हाथ के खुलने से पाक है । और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी ह़िक्मत के मुवाफ़िक़ जैसे और जिस को चाहता है अ़त़ा फ़रमाता है, इस में किसी को ए'तिराज़ करने की मजाल नहीं । वोह किसी को अमीर और किसी को ग़रीब करता है लेकिन इस वज्ह से नहीं कि उस के ख़ज़ाने में कुछ कमी या करम में कुछ नुक़्सान है बल्कि बन्दों के ह़ालात का तक़ाज़ा ही येह है और इस में हज़ारहा मस्लह़तें हैं ।

﴿وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ **: और ज़रूर उन में से बहुत से लोगों (की सरकशी और कुफ़्र) में इज़ाफ़ा करेगा ।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि जितना क़ुरआने पाक उतरता जाएगा उतना ही यहूदियों का ह़सद व इ़नाद बढ़ता जाएगा और वोह इस के साथ कुफ़्रो सरकशी में बढ़ते रहेंगे जैसे मुक़व्वी ग़िज़ा कमज़ोर मे'दे वाले को बीमार कर देती है, इस में ग़िज़ा का क़ुसूर नहीं बल्कि मरीज़ के मे'दे का क़ुसूर है या जैसे सूरज की रोशनी चमगादड़ को अन्धा कर देती है तो इस में सूरज का नहीं बल्कि चमगादड़ की आंख का क़ुसूर है ।

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٦٤، ١/٥٠٩، مدارك، المائدة، تحت الآية: ٦٤، ص ٢٩٣.

www.dawateislami.net

आयत ''وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ'' से मा'लूम होने वाले मसाइल

इस से दो चीजें मा'लूम हुई :

(1)...... जिस के दिल में सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्मत न हो उस के लिये कुरआनो ह़दीस कुफ़्र की ज़ियादती का सबब हैं जैसे आज कल बहुत से बे दीनों को देखा जा रहा है। याद रहे कि दीन की अज़्मत, दीन लाने वाले मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्मत से है।

(2)...... कुफ़्र में ज़ियादती कमी होती है या'नी कोई कम शदीद काफ़िर होता है और कोई ज़ियादा शदीद। कमी ज़ियादती किसी मिक्दार के ए'तिबार से नहीं होती, येह ऐसे ही है जैसे ईमान में कमी ज़ियादती होती है या'नी कोई ज़ियादा मज़्बूत ईमान वाला और कोई कमज़ोर ईमान वाला होता है।

﴿وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ﴾ **: और हम ने क़ियामत तक उन में दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया।**﴾ या'नी वोह हमेशा बाहम मुख़्तलिफ़ रहेंगे और उन के दिल कभी न मिलेंगे अगर्चे ऊपर से कभी कभार मुसल्मानों के ख़िलाफ़ मुत्तहि़द हो जाएं।

﴿كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ﴾ **: जब कभी येह लड़ाई की आग भड़काते हैं।**﴾ जब भी यहूदियों ने फ़साद, शर अंगेज़ी और **अल्लाह** तआला के हुक्म की मुख़ालफ़त की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी ऐसे शख़्स को उन पर मुसल्लत् कर दिया जिस ने उन्हें हलाकत और बरबादी से दोचार कर दिया, पहले जब उन्हों ने फ़ितना व फ़साद शुरूअ़ किया और तौरात के अह़काम की मुख़ालफ़त की तो **अल्लाह** तआला ने बख़्त नसर को उन की त़रफ़ भेज दिया जिस ने उन को तबाह कर के रख दिया, कुछ अ़र्से बा'द फिर जब उन्हों ने सर उठाया तो त़ैत़ूस रूमी ने उन की ईंट से ईंट बजा दी, फिर कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द जब उन्होंने शर अंगेज़ी शुरूअ़ की तो फ़ारसी मजूसियों ने उन का ह़श्र नश्र कर दिया, फिर कुछ अ़र्से बा'द जब फ़साद का बाज़ार गर्म किया तो **अल्लाह** तआला ने मुसल्मानों को उन पर तसल्लुत़ और ग़लबा अ़त़ा फ़रमा दिया।[1]

एक क़ौल येह है कि जब भी यहूदी नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ जंग का इरादा करते हुए उस के अस्बाब तय्यार करेंगे तो **अल्लाह** तआला उन के मन्सूबे नाकाम बना देगा।[2]

---

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٦٤، ١/ ٥١٠-٥١١.
2 ......ابو سعود، المائدة، تحت الآية: ٦٤، ٢/ ٦٦.

www.dawateislami.net

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ
وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़ गारी करते तो ज़रूर हम उन के गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़ गारी इख़्तियार करते तो ज़रूर हम उन के गुनाह मिटा देते और ज़रूर उन्हें ने'मतों के बाग़ों में दाख़िल करते।

﴿وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا﴾ **: और अगर अहले किताब ईमान लाते।** अहले किताब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि अगर येह ईमान ले आते तो इन के गुनाह बख़्श दिये जाते और येह जन्नत के मुस्तह़िक़ क़रार पाते। इस आयत में ईमान लाने की उख़्रवी जज़ा का बयान है और अगली आयत में ईमान लाने की दुन्यवी जज़ा का बयान किया गया है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۶﴾ؑ

ربع ١٣

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर क़ाइम रखते तौरैत और इन्जील और जो कुछ उन की त़रफ़ उन के रब की त़रफ़ से उतरा तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से और उन के पाउं के नीचे से उन में कोई गुरौह ए'तिदाल पर है और उन में अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर वोह तौरात और इन्जील और जो कुछ उन की त़रफ़ उन के रब की जानिब से नाज़िल किया गया उसे क़ाइम कर लेते तो उन्हें उन के ऊपर से और उन के

www.dawateislami.net

क़दमों के नीचे से रिज़्क़ मिलता। उन में एक गुरौह ए'तिदाल की राह वाला है और उन में अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।

﴾وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ : **और अगर वोह तौरात और इन्जील को क़ाइम कर लेते**﴿ इर्शाद फ़रमाया कि और अगर वोह तौरात और इन्जील और दीगर किताबों पर अ़मल करते इस त़रह़ कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करते क्यूं कि तौरैत व इन्जील में इसी का हुक्म दिया गया है और दीगर तमाम किताबें जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूलों पर नाज़िल फ़रमाईं सब में इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने का हुक्म है तो अगर वोह इस हुक्म पर अ़मल कर लेते तो उन्हें उन के ऊपर से और उन के क़दमों के नीचे से रिज़्क़ मिलता या'नी रिज़्क़ की कसरत होती और हर त़रफ़ से उन्हें रिज़्क़ पहुंचता।

दीन की पाबन्दी और अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त वुस्अ़ते रिज़्क़ का ज़रीआ़ है

इस आयत से मा'लूम हुवा कि दीन की पाबन्दी और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी से रिज़्क़ में वुस्अ़त पैदा होती है। ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ हमदानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे उ़म्र में इज़ाफ़ा होना और रिज़्क़ में ज़ियादती होना पसन्द हो तो उसे चाहिये कि वोह **अल्लाह** तआ़ला से डरे और रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी करे।"(1)

और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! जो चीज़ तुम्हें जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर सकती है उस का मैं ने तुम्हें हुक्म दे दिया और जो चीज़ तुम्हें जहन्नम के क़रीब और जन्नत से दूर कर सकती है उस से मैं ने तुम्हें मन्अ़ कर दिया। बेशक रूहुल अमीन عَلَیْهِ السَّلَام ने मेरे दिल में येह बात डाली है कि कोई जान उस वक़्त तक मरेगी नहीं जब तक वोह अपना रिज़्क़ पूरा न कर ले लिहाज़ा तुम **अल्लाह** तआ़ला से डरो और अच्छे त़रीक़े से रिज़्क़ त़लब करो। रिज़्क़ का आहिस्ता पाना तुम्हें इस बात पर न उभारे कि तुम **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी के ज़रीए रिज़्क़ त़लब करने

(1) ......شعب الايمان، السادس والخمسون من شعب الايمان... الخ، ٦/٢١٩، الحديث: ٧٩٤٧.

www.dawateislami.net

लगो क्यूं कि जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला के पास है वोह उस की इत़ाअ़त के ज़रीए ही ह़ासिल की जा सकती है।"(1)

﴾مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ﴿ : **उन में एक गुरौह ए'तिदाल की राह वाला है।**﴾ इर्शाद फ़रमाया कि सारे अहले किताब यक्सां नहीं हैं बल्कि बा'ज़ ए'तिदाल पसन्द हैं और वोह ह़द से तजावुज़ नहीं करते, येह यहूदियों में से वोह लोग हैं जो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ वग़ैरा जब कि बक़िय्या अक्सरिय्यत ना फ़रमान है जो कुफ़्र पर जमे हुए हैं।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَ اِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से और ऐसा न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया और **अल्लाह** तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से बेशक **अल्लाह** काफ़िरों को राह नहीं देता।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ रसूल ! जो कुछ आप की त़रफ़ आप के रब की जानिब से नाज़िल किया गया उस की तब्लीग़ फ़रमा दें और अगर आप ने ऐसा न किया तो आप ने उस का कोई पैग़ाम भी न पहुंचाया और **अल्लाह** लोगों से आप की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा। बेशक **अल्लाह** काफ़िरों को हिदायत नहीं देता।

﴾يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ﴿ : **ऐ रसूल।**﴾ **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रसूल के लक़ब से ख़ित़ाब फ़रमाया, येह सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यत है वरना दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन के अस्माए मुबारका से ख़ित़ाब फ़रमाया

(1)......شرح السنه، كتاب الرقاق، باب التوكل على الله عزوجل، ٣٢٩/٧، الحديث: ٤٠٠٦.

www.dawateislami.net

गया है। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया कि आप **अल्लाह** तआ़ला के पैग़ामात लोगों तक पहुंचाएं और किसी क़िस्म का कोई अन्देशा न फ़रमाएं, **अल्लाह** तआ़ला इन कुफ़्फ़ार से आप की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा जो आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं। इस ख़त़रे की वज्ह से दौराने सफ़र रात के वक़्त सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त के लिये पहरा दिया जाता था, जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो पहरा हटा दिया गया और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहरे दारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ, **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी हिफ़ाज़त का फ़रमा दिया है।(1)

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त के लिये पहरा देने का शरफ़ जिन्हें सब से पहले ह़ासिल हुवा वोह ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ थे, चुनान्चे ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीना आते वक़्त एक रात बे ख़्वाब रहे, फिर फ़रमाया काश कोई नेक शख़्स हमारी हिफ़ाज़त करता। अचानक हम ने हथियारों की आवाज़ सुनी तो इर्शाद फ़रमाया : ''येह कौन है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं सा'द हूं। इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हें क्या चीज़ यहां लाई है ?'' अ़र्ज़ की : मेरे दिल में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़त़रा गुज़रा तो मैं उन की हिफ़ाज़त करने आया। उन के लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सो गए।(2)

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَیْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْؕ وَ لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّ كُفْرًاۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المائدة، ٥/٣٥، الحديث: ٣٠٥٧.

2 ......مسلم ، کتاب فضائل الصحابة رضی اللّٰه تعالی عنهم، باب فی فضل سعد بن ابی وقاص رضی اللّٰه عنه، ص ١٣١٤، الحديث: ٤٠ (٢٤١٠).

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो तुम कुछ भी नहीं हो जब तक न क़ाइम करो तौरैत और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा और बेशक ऐ मह़बूब वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उन में बहुतों को शरारत और कुफ़्र की तरक़्क़ी होगी तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो ! जब तक तुम तौरात और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब की जानिब से नाज़िल किया गया है उसे क़ाइम नहीं कर लेते तुम किसी शै पर नहीं हो और ऐ ह़बीब ! येह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब की जानिब से नाज़िल किया गया है येह उन में से बहुत से लोगों की सरकशी और कुफ़्र में इज़ाफ़ा करेगा तो तुम काफ़िर क़ौम पर कुछ ग़म न खाओ ।

﴾قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ : **तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो !**﴿ अहले किताब से फ़रमाया गया कि जब तक तुम नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान नहीं ले आते तब तक तुम किसी दीन व मिल्लत पर नहीं हो क्यूं कि अगर ह़क़ीक़ी त़ौर पर तुम तौरात व इन्जील पर अ़मल करो तो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी ईमान ले आओ क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने का हुक्म तौरात व इन्जील में मौजूद है ।

﴾مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ : **ऐ ह़बीब ! येह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब की जानिब से नाज़िल किया गया है ।**﴿ या'नी ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जो क़ुरआन आप की त़रफ़ आप के रब عَزَّوَجَلَّ की जानिब से नाज़िल किया गया है, येह अहले किताब के उ़लमा और सरदारों की पुरानी सरकशी और कुफ़्र में इज़ाफ़ा करेगा क्यूं कि आप पर जब क़ुरआने मजीद की कोई आयत नाज़िल होती है तो येह उस का इन्कार कर देते हैं और इस त़रह़ येह अपने कुफ़्रो सरकशी में और ज़ियादा सख़्त हो जाते हैं इस लिये ऐ ह़बीब ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जो यहूदी आप की नुबुव्वत का इन्कार कर रहे और आप पर ईमान नहीं ला रहे उन की वज्ह से आप ग़मज़दा न हों क्यूं कि उन के इस कुफ़्र का वबाल उन्ही पर पड़ेगा ।(1)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

(1)......روح البيان، المائدة، تحت الآية: ٦٨، ٢/٤١٩، خازن، المائدة، تحت الآية: ٦٨، ١/٥١١-٥١٣، ملتقطاً.

www.dawateislami.net

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपने आप को मुसल्मान कहते हैं और इसी त़रह़ यहूदी और सितारा परस्त और नसरानी उन में जो कोई सच्चे दिल से **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान लाए और अच्छा काम करे तो उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक (वोह जो अपने आप को) मुसल्मान (कहते हैं) और यहूदी और सितारों की पूजा करने वाले और ईसाई (उन में से) जो (सच्चे दिल से) **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाए और अच्छे अ़मल करे तो उन पर न कुछ ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे।

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا : **बेशक वोह जो अपने आप को मुसल्मान कहते हैं।**﴾ इस से पहली आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने बयान फ़रमाया कि अहले किताब उस वक़्त तक किसी दीनो मिल्लत पर नहीं जब तक वोह ईमान नहीं लाते और इस आयत में बयान फ़रमाया कि येह हुक्म सिर्फ़ अहले किताब के साथ ख़ास नहीं बल्कि हर मिल्लत वाला इस हुक्म में दाख़िल है और किसी को भी तब तक कोई फ़ज़ीलत और मन्क़बत ह़ासिल नहीं जब तक वोह सच्चे दिल से **अल्लाह** तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं लाता और ऐसे नेक आ'माल नहीं करता जिन से **अल्लाह** तआ़ला राज़ी होता है और नेक अ़मल में से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना भी है क्यूं कि जब तक कोई ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान नहीं लाता तो उस का ईमान मुकम्मल नहीं होगा।[1]

इस आयत की तफ़्सीर के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये सूरए बक़रह की आयत नम्बर 62 की तफ़्सीर मुलाहज़ा फ़रमाएं।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَیْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِیْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِیْقًا

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٦٩، ١/٥١٣.

www.dawateislami.net

يَقْتُلُوْنَ ﴿۷۰﴾ ق

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया और उन की त़रफ़ रसूल भेजे, जब कभी उन के पास कोई रसूल वोह बात ले कर आया जो उन के नफ़्स की ख़्वाहिश न थी एक गुरौह को झुटलाया और एक गुरौह को शहीद करते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया और उन की त़रफ़ रसूल भेजे (तो) जब कभी उन के पास कोई रसूल वोह बात ले कर आया जो उन के नफ़्स को पसन्द न थी तो उन्हों ने (अम्बिया के) एक गुरौह को झुटलाया और एक गुरौह को शहीद करते रहे।

﴾لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ﴿ : **बेशक हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया ।** **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल से तौरैत में येह अ़ह्द लिया था कि वोह **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाएं और हुक्मे इलाही के मुत़ाबिक़ अ़मल करें लेकिन उन्हों ने येह किया कि जब कभी उन के पास कोई रसूल उन की ख़्वाहिशात के बर ख़िलाफ़ हुक्म ले कर आते तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के किसी गुरौह को तो येह झुटलाते और किसी को शहीद कर देते। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब में तो यहूदो नसारा सब शरीक हैं मगर क़त्ल करना येह ख़ास यहूदियों का काम है, उन्हों ने बहुत से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद किया जिन में से ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं। येह ख़याल रहे कि कोई नबी عَلَيْهِ السَّلَام जिहाद में काफ़िरों के हाथों शहीद नहीं हुए।

وَحَسِبُوْۤا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۷۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और इस गुमान में रहे कि कोई सज़ा न होगी तो अन्धे और बहरे हो गए फिर **अल्लाह** ने उन की तौबा क़बूल की फिर उन में बहुतेरे अन्धे और बहरे हो गए और **अल्लाह** उन के काम देख रहा है।

www.dawateislami.net

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन्हों ने येह गुमान किया कि उन्हें कोई सज़ा न होगी तो येह अन्धे और बहरे हो गए फिर **अल्लाह** ने उन की तौबा क़बूल की फिर उन में से बहुत से अन्धे और बहरे हो गए और **अल्लाह** उन के काम देख रहा है।

﴾وَحَسِبُوْۤا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ﴿ : और उन्हों ने येह गुमान किया कि (उन्हें इस पर) कोई सज़ा न होगी। यहूदो नसारा इतने संगीन जराइम के मुरतकिब हुए कि दोनों ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाया और बतौरे ख़ास यहूदियों ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद भी किया लेकिन इस के बा वुजूद उन्हों ने येह गुमान किया कि ऐसे शदीद जुर्मों पर भी उन्हें अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा तो येह अन्धे और बहरे हो गए या'नी ह़क़ देखने से अन्धे और ह़क़ सुनने से बहरे हो गए और वैसे भी वोह अ़क़्लो शुऊ़र से अन्धे बहरे थे कि ऐसे जराइम के बा वुजूद भी ख़ुद को सज़ा से मह़फ़ूज़ समझते रहे। फिर जब उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तौबा की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल की लेकिन फिर उन में से बहुत से अन्धे और बहरे हो गए और उसी साबिक़ा रविश पर चल पड़े। दो मरतबा अन्धा और बहरा होने से क्या मुराद है इस बारे में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं :

(1)...... यहूदी ह़ज़रते ज़करिय्या, ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में अ़क़्ल के ए'तिबार से अन्धे और बहरे हो गए फिर उन में से बा'ज़ की तौबा **अल्लाह** तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई कि उन्हें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ दी। फिर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका में उन की नुबुव्वत व रिसालत का इन्कार कर के बहुत से यहूदी दिल के अन्धे और बहरे हो गए।

(2)...... पहली मरतबा तब दिल के अन्धे और बहरे हुए जब उन्हों ने बछड़े की पूजा की फिर इस से उन्हों ने तौबा की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल फ़रमा ली फिर दूसरी मरतबा उन में से बहुत से अन्धे और बहरे तब हुए जब उन्हों ने फ़िरिश्तों के नुज़ूल और रूयते बारी तआ़ला का मुत़ालबा किया।

(3)...... दो मरतबा बसीरत के अन्धे और बहरे होने की तफ़्सीर सूरए बनी इसराईल की **4** से ले कर **7** तक वोह आयात हैं जिन में येह ख़बर दी गई कि यहूदी दो मरतबा ज़मीन में फ़साद करेंगे।[1]

1 ......تفسیر کبیر، المائدة، تحت الآیة: ۷۱، ۴/۴۰۷۔

www.dawateislami.net

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَ قَالَ الْمَسِيْحُ
يٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ
حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَ مَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं कि **अल्लाह** वोही मसीह़ मरयम का बेटा है और मसीह़ ने तो येह कहा था ऐ बनी इसराईल **अल्लाह** की बन्दगी करो जो मेरा रब और तुम्हारा रब बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग काफ़िर हो गए जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह** वोही मसीह़ मरयम का बेटा है ह़ालां कि मसीह़ ने तो येह कहा था : ऐ बनी इसराईल ! **अल्लाह** की बन्दगी करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

﴾لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْا﴿ : **बेशक वोह लोग काफ़िर हो गए जिन्हों ने कहा।** ईसाइयों के बहुत से फ़िर्क़े हैं : उन में से या'क़ूबिया और मलकानिया कहते थे कि मरयम ने इलाह या'नी मा'बूद को जना और वोह येह भी कहते थे कि इलाह या'नी मा'बूद ने ईसा की ज़ात में ह़ुलूल कर लिया और वोह उन के साथ मुत्तह़िद हो गया तो ईसा इलाह (मा'बूद) हो गए।[1]

مَعَاذَ اللّٰه ثُمَّ مَعَاذَ اللّٰه। ईसाइयों ने **अल्लाह** तआ़ला के साथ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की भी तौहीन की कि वोह तो अपने को रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दा कहते थे और येह उन्हें झुटला कर उन्ही को रब कहने लगे।

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٧٢، ١/٥١٤.

www.dawateislami.net

وقف لازم

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِیْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍۘ وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌؕ وَ اِنْ لَّمْ یَنْتَهُوْا عَمَّا یَقُوْلُوْنَ لَیَمَسَّنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۷۳﴾ اَفَلَا یَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَ یَسْتَغْفِرُوْنَهٗؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۷۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं **अल्लाह** तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा और अगर अपनी बात से बाज़ न आए तो जो उन में काफ़िर मरेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा। तो क्यूं नहीं रुजूअ़ करते **अल्लाह** की त़रफ़ और उस से बख़्शिश मांगते और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह लोग काफ़िर हो गए जिन्हों ने कहा : बेशक **अल्लाह** तीन (मा'बूदों) में से तीसरा है ह़ालां कि इबादत के लाइक़ तो सिर्फ़ एक ही मा'बूद है और अगर येह लोग इस से बाज़ न आए जो येह कह रहे हैं तो जो इन में काफ़िर रहेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा। तो येह क्यूं **अल्लाह** की बारगाह में तौबा नहीं करते और क्यूं उस से मग़्फ़िरत त़लब नहीं करते ? ह़ालां कि **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

﴿لَقَدْ كَفَرَ الَّذِیْنَ قَالُوْا : **बेशक वोह लोग काफ़िर हो गए जिन्हों ने कहा।**﴾ ईसाइयों में फ़िर्क़ए मरक़ूसिया और नस्तूरिया का अ़क़ीदा येह है कि इलाह तीन हैं, बाप बेटा रूहुल क़ुदुस, **अल्लाह** तआ़ला को बाप और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उस का बेटा और ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को रूहुल क़ुदुस कहते हैं। इल्मे कलाम के माहिर उ़लमा फ़रमाते हैं कि नसारा कहते हैं कि बाप बेटा रूहुल क़ुदुस येह तीनों एक इलाह हैं। مَعَاذَ اللّٰه। इन का रद करते हुए फ़रमाया गया कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, न उस का कोई सानी है न सालिस। वोह वह्दानिय्यत के साथ मौसूफ़ है, उस का कोई शरीक नहीं, बाप बेटे बीवी सब से पाक है। अगर

www.dawateislami.net

येह कुफ़्फ़ार इस अक़ीदे से बाज़ न आए और तस्लीस (तीन खुदा मानने) के मो'तक़िद रहे और तौहीद इख़्तियार न की तो आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब से दोचार होंगे।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَ اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۷۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मसीह़ इब्ने मरयम नहीं मगर एक रसूल इस से पहले बहुत रसूल हो गुज़रे और इस की मां सिद्दीक़ा है दोनों खाना खाते थे देखो तो हम कैसी साफ़ निशानियां उन के लिये बयान करते हैं फिर देखो वोह कैसे औंधे जाते हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : मसीह़ बिन मरयम तो सिर्फ़ एक रसूल है। इस से पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं और इस की मां सिद्दीक़ा (बहुत सच्ची) है। वोह दोनों खाना खाते थे देखो तो हम उन के लिये कैसी साफ़ निशानियां बयान करते हैं फिर देखो वोह कैसे फिरे जाते हैं ?

﴿مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ﴾ **: मसीह़ बिन मरयम तो सिर्फ़ एक रसूल हैं।** यहां ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के खुदा न होने की दलील बयान की है चुनान्चे फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक रसूल है। खुदा नहीं है लिहाज़ा उन को खुदा मानना ग़लत़, बात़िल और कुफ़्र है। उन से पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं और वोह रसूल भी मो'जिज़ात रखते थे, येह मो'जिज़ात उन की नुबुव्वत की सदाक़त की दलील थे न कि खुदा होने की, इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी रसूल हैं उन के मो'जिज़ात भी उन की नुबुव्वत की दलील हैं न कि खुदा होने की, लिहाज़ा उन्हें रसूल ही मानना चाहिये और जब दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मो'जिज़ात की बिना पर खुदा नहीं मानते तो इन को भी खुदा न मानो।

﴿وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ﴾ **: और इस की मां सिद्दीक़ा है।** या'नी ह़ज़रते मरयम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا बहुत सच्ची हैं जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के कलिमात और उस की किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं तो तुम

www.dawateislami.net

भी उन की पैरवी करो। नीज़ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की वालिदा दोनों खाना खाते थे जब कि मा'बूद खाने से पाक होता है और खाना खाना भी मा'बूद न होने की दलील है क्यूं कि मा'बूद गिज़ा का मोह़ताज नहीं हो सकता तो जो गिज़ा खाए, जिस्म रखे और उस जिस्म में तह़लील वाक़ेअ़ हो, गिज़ा उस का बदल बने वोह कैसे मा'बूद हो सकता है ?

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًاؕ وَ اللّٰهُ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۷۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा ऐसे को पूजते हो जो तुम्हारे नुक़्सान का मालिक न नफ़्अ़ का और **अल्लाह** ही सुनता जानता है।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, क्या तुम **अल्लाह** के सिवा उस की इ़बादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़्सान का मालिक है और न नफ़्अ़ का और **अल्लाह** ही सुनने वाला, जानने वाला है।

﴾**قُلْ : तुम फ़रमाओ।**﴿ इस आयत में शिर्क को बात़िल करने की एक और दलील बयान की गई है, उस का ख़ुलासा येह है कि मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत वोही हो सकता है जो नफ़्अ़ नुक़्सान वग़ैरा हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत व इख़्तियार रखता हो और जो ऐसा न हो वोह मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं हो सकता और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नफ़्अ़ व ज़रर के बिज़्ज़ात मालिक न थे बल्कि **अल्लाह** तआ़ला के मालिक करने से मालिक हुए तो उन की निस्बत उलूहिय्यत का ए'तिक़ाद बात़िल है।(1)

इसी लिये ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जहां मुर्दे ज़िन्दा करने, बीमारों को शिफ़ायाब करने, अन्धों को बीना करने और कोढ़ियों को तन्दुरुस्त करने का तज़्किरा फ़रमाया है वहां हर जगह येह फ़रमाया कि मैं येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इज़्न या'नी इजाज़त से करता हूं।

1 ......ابو سعود، المائدة، تحت الآیة: ٧٦، ٧٦/٢.

www.dawateislami.net

قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ غَیْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِیْلِ ﴿۷۷﴾ ع

रुकूअ़

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़ियादती न करो और ऐसे लोगों की ख़्वाहिश पर न चलो जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह बहक गए।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ, ऐ किताब वालो ! अपने दीन में नाहक़ ग़ुलू (ज़ियादती) न करो और उन लोगों की ख़्वाहिशात पर न चलो जो पहले ख़ुद भी गुमराह हो चुके हैं और बहुत से दूसरे लोगों को भी गुमराह कर चुके हैं और सीधी राह से भटक चुके हैं।

﴿قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ : **तुम फ़रमाओ, ऐ किताब वालो !**﴾ यहां तमाम अहले किताब को नाहक़ ज़ियादती करने से मन्अ़ फ़रमाया। यहूदियों की ज़ियादती तो येह थी कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत ही नहीं मानते थे और नसारा की ज़ियादती येह थी कि वोह उन्हें मा'बूद ठहराते हैं। इन सब से फ़रमाया गया कि दीन में ज़ियादती न करो और गुमराह लोगों की पैरवी न करो या'नी अपने बद दीन बाप दादा वग़ैरा के पीछे न चलो बल्कि ह़क़ की पैरवी करो।

औलियाए किराम और उन के मज़ारात के ह़वाले से ग़ुलू

औलियाए किराम की ता'ज़ीम करना और फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करने के लिये उन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी देना जाइज़ और पसन्दीदा अ़मल है क्यूं कि औलियाए किराम **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दे हैं और उन के मज़ारात रह़मते इलाही उतरने के मक़ामात हैं लेकिन फ़ी ज़माना औलियाए किराम और उन के मज़ारात के ह़वाले से इन्तिहाई ग़ुलू से काम लिया जाता है कि बा'ज़ ह़ज़रात उन की जाइज़ ता'ज़ीम को ना जाइज़ व ह़राम कहते और उन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी को शिर्क व बुत परस्ती से ता'बीर करते हैं और बा'ज़ नादान उन की ता'ज़ीम करने

www.dawateislami.net

में शरई हद पार कर जाते और उन के मज़ारात पर ऐसे उमूर सर अन्जाम देते हैं जो शरअ़न ना जाइज़ व ह़राम हैं जैसे ता'ज़ीम के तौर पर मज़ार का त़वाफ़ करना और साहि़बे मज़ार को सज्दए ता'ज़ीमी करना, मज़ारात पर मज़ामीर के साथ क़व्वालियां पढ़ना, औ़रतों का मज़ारात पर मख़्लूत़ ह़ाज़िर होना और उ़र्स वग़ैरा के मौक़अ़ पर लह्वो लअ़ब का एहतिमाम करना वग़ैरा। ता'ज़ीमे औलिया को ना जाइज़ व ह़राम कहने वालों और मज़ारात पर ह़ाज़िरी को शिर्क व बुत परस्ती समझने वालों को चाहिये कि वोह इस आयत को सामने रखते हुए अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें और शरअ़न जाइज़ अ़मल को अपनी त़रफ़ से ना जाइज़ व ह़राम कह कर दीन में ज़ियादती न करें बल्कि ह़क़ की पैरवी करें और मज़ारात पर ना जाइज़ व ह़राम काम करने वालों को चाहिये वोह भी अपने इन अफ़्आ़ल से बाज़ आ जाएं ताकि दुश्मनाने औलिया इन की नादानियों की वज्ह से लोगों को **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दों से दूर करने की सई न कर सकें।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बनी इसराईल में से कुफ़्र करने वालों पर दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर से ला'नत की गई। येह ला'नत इस वज्ह से थी कि उन्हों ने ना फ़रमानी की और वोह सरकशी करते रहते थे।

﴿لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا : **कुफ़्र करने वालों पर ला'नत की गई।**﴾ ऐला के रहने वालों को हफ़्ते के दिन शिकार करना मन्अ़ था, उन्हों ने जब इस हुक्म की मुख़ालफ़त की और शिकार करने से बाज़ न आए तो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की और उन के ख़िलाफ़ दुआ़ फ़रमाई चुनान्चे उन सब को बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया गया। सूरए आ'राफ़ में इस क़िस्से की तफ़्सील मज़्कूर है और अस्ह़ाबे माइदह ने जब नाज़िल शुदा दस्तर ख़्वान की ने'मतें खाने के बा'द मुमानअ़त के बा वुजूद उन्हें ज़ख़ीरा किया और ईमान न लाए तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन के ख़िलाफ़ दुआ़ फ़रमाई तो वोह ख़िन्ज़ीर और बन्दर बन

www.dawateislami.net

गए, उस वक़्त उन की ता'दाद पांच हज़ार थी।(1)

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहूदी अपने आबाओ अज्दाद पर फ़ख़्र किया करते थे और कहते थे हम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद हैं। इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि उन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तो उन पर ला'नत की है। एक क़ौल येह है कि हज़रते दावूद और हज़रते ईसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जल्वा अफ़्रोज़ी की बिशारत दी और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाने और कुफ़्र करने वालों पर ला'नत की थी।(2)

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दों के मुंह से निकली हुई नुक़्सान की दुआ़ दुन्या व आख़िरत में रुस्वाई और बरबादी का सबब बन सकती है, लिहाज़ा ऐसे कामों से बचते रहना चाहिये जो उन की नाराज़ी का सबब बनें।

﴿ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ﴾ **: येह (ला'नत) उन की ना फ़रमानी और सरकशी का बदला है।** इस में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन यहूदियों की सरकशी से ग़मज़दा न हों, येह लोग तो आ़दी मुजरिम और पुराने सरकश हैं, ह़त्ता कि इस सरकशी की सज़ा में बन्दर और सुवर भी बन चुके हैं, इस वक़्त इन का अम्न में रहना सिर्फ़ इस वज्ह से है कि तुम तमाम आ़लमीन के लिये रह़मत हो, तुम्हारी मौजूदगी में अ़ज़ाब न आएगा।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह एक दूसरे को किसी बुरे काम से मन्अ़ न करते थे जो वोह किया करते थे। बेशक येह बहुत ही बुरे काम करते थे।

﴿كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ﴾ **: वोह एक दूसरे को किसी बुरे काम से मन्अ़ न करते थे।** यहूदियों की एक सरकशी येह थी कि उन्हों ने बुराई होती देख कर एक दूसरे को उस से मन्अ़ करना छोड़ दिया था। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम

(1) ......جمل، المائدة، تحت الآية: ٧٨، ٢/٢٦٠-٢٦١.
(2) ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٧٨، ١/٥١٦.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब बनी इसराईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उन के उ़लमा ने पहले तो उन्हें मन्अ़ किया, जब वोह बाज़ न आए तो फिर वोह उ़लमा भी उन से मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उन के साथ शामिल हो गए उन की इसी ना फ़रमानी और सरकशी का येह नतीजा हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़बान से उन पर ला'नत उतारी।"(1)

गुनाह से रोकना वाजिब और मन्अ़ करने से बाज़ रहना गुनाह है

इस से मा'लूम हुवा कि बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है और गुनाह से मन्अ़ करने से बाज़ रहना सख़्त गुनाह है। इस से उन उ़लमा को और बत़ौरे ख़ास उन पीरों को अपने त़र्ज़े अ़मल पर ग़ौर करने की ह़ाजत है कि जो अपने मानने वालों में या मुरीदीन व मो'तक़िदीन में ए'लानिया गुनाह होते देख कर और येह जानते हुए भी कि मेरे मन्अ़ करने से लोग गुनाह से बाज़ आ जाएंगे फिर भी **"या शैख़ अपनी अपनी देख"** का ना'रा लगाते नज़र आते हैं।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान अ़ज़री رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस इल्म को हर पिछली जमाअ़त में से परहेज़ गार लोग उठाते रहेंगे और वोह ग़ुलू करने वालों की तह़रीफ़ें, अहले बात़िल के झूटे दा'वों और जाहिलों की ग़लत़ तावील व तश्रीह़ को दीन से दूर करते रहेंगे।"(2)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस में ग़ैबी बिशारत है कि ता क़ियामत मेरे दीन में उ़लमाए ख़ैर पैदा होते रहेंगे। जो इल्मे दीन को पढ़ते पढ़ाते और तब्लीग़ करते रहेंगे। ख़याल रहे कि गुज़श्ता सालिह़ीन को सलफ़ और पिछलों को ख़लफ़ कहा जाता है लिहाज़ा हर जमाअ़ते सालिह़ीन अगलों के लिह़ाज़ से ख़लफ़ और पिछलों के लिह़ाज़ से सलफ़ है।" ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : "या'नी मुसल्मानों में बा'ज़ जाहिल उ़लमा की शक्ल में नुमूदार हो कर क़ुरआन व ह़दीस की ग़लत़ तावीलें और मा'नवी तह़रीफ़ें कर देंगे, वोह मक़्बूल जमाअ़त उन तमाम चीज़ों को दफ़्अ़ करेगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आज तक ऐसा हो रहा है और आयिन्दा भी ऐसा होगा, देख लो उ़लमाए दीन की सर परस्ती न ह़ुकूमत करती है न क़ौम लेकिन फिर भी येह जमाअ़त पैदा हो रही है और ख़िदमते दीन बराबर कर रही है।"(3)

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المائدة، ۳۵/۵، الحدیث: ۳۰۵۸.

2 ......سنن الکبری للبیهقی، کتاب الشهادات، باب الرجل من اهل الفقه... الخ، ۱۰/۲۵۳، الحدیث: ۲۰۹۱۱.

3 ......مرآۃ المناجیح، کتاب العلم، الفصل الثانی، ۲۰۱/۱، تحت الحدیث: ۲۳۰۔

www.dawateislami.net

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۸۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन में तुम बहुत को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं, क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये खुद आगे भेजी येह कि **अल्लाह** का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे ।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम उन में से बहुत से लोगों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं तो उन की जानों ने उन के लिये कितनी बुरी चीज़ आगे भेजी कि उन पर **अल्लाह** ने ग़ज़ब किया और येह लोग हमेशा अ़ज़ाब में ही रहेंगे ।

﴿يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا : **काफ़िरों से दोस्ती करते हैं ।**﴾ पिछली आयात में गुज़श्ता ज़माने के यहूदियों की मज़्मूम सिफ़ात और उन के उ़यूबो नक़ाइस का बयान था अब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका के यहूदियों की बुराइयों और साज़िशों का ज़िक्र फ़रमाया जा रहा है । **शाने नुज़ूल :** का'ब बिन अशरफ़ यहूदी और उस के साथी सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ो इनाद की वज्ह से मुश्रिकीने मक्का के पास पहुंचे और उन्हें ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने पर उभारा, लेकिन येह लोग अपनी इस कोशिश में नाकामो ना मुराद हुए, इस वाक़िए़ से मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुनाफ़िक़ीन में से बहुत सों को देखेंगे कि वोह यहूदियों से दोस्ती करते हैं ।(1)

कुफ़्फ़ार से दोस्ती का नतीजा येह हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुवा और आख़िरत में दाइमी अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ ठहरे ।

कुफ़्फ़ार से दोस्ती का दम भरने वाले मुसल्मानों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत

मा'लूम हुवा कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती और मुवालात ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٨٠، ١/٥١٧.

www.dawateislami.net

काम है। येह आयते मुबारका उन मुसल्मानों के लिये ताज़ियानए इब्रत है जो कुफ़्फ़ार की मुसल्मानों से खुली दुश्मनी अपनी रोशन आंखों से देखने के बा वुजूद, सिर्फ़ अपने मन्सब की बक़ा की ख़ातिर उन की त़रफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाते, उन की हां में हां मिलाते और उन की नाराज़ी से ख़ौफ़ खाते हैं। **अल्लाह** तआ़ला समझ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर वोह ईमान लाते **अल्लाह** और इन नबी पर और उस पर जो इन की त़रफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते मगर उन में तो बहुतेरे फ़ासिक़ हैं।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर येह **अल्लाह** और नबी पर और उस पर जो नबी की त़रफ़ नाज़िल किया गया है ईमान लाते तो काफ़िरों को दोस्त न बनाते लेकिन उन में बहुत ज़ियादा फ़ासिक़ हैं।

﴿وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ : **और अगर येह अल्लाह और नबी पर ईमान लाते।**﴾ कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से दोस्ती और महब्बत का रिश्ता उस्तुवार करने वाले यहूदी अगर **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उस की नाज़िल कर्दा किताब क़ुरआने पाक पर सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाए होते तो किसी सूरत भी उन के साथ दोस्ती का सिल्सिला क़ाइम न करते, इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने उन के बारे में फ़रमाया कि उन में बहुत ज़ियादा फ़ासिक़ हैं। इन आयात के पस मन्ज़र पर ग़ौर किया जाए तो मा'लूम होता है कि यहूदियों का अस्ल मक़्सूद रियासत की हुक्मरानी और मन्सब का हुसूल था और इस के लिये उन्हें कोई भी त़रीक़ा अपनाना पड़ा, किसी भी ज़रीए़ को इख़्तियार करना पड़ा वोह कर गुज़रे। कुछ ऐसी ही सूरते ह़ाल फ़ी ज़माना हम मुसल्मानों में आ़म हो चुकी है। अपनी कुरसी को बचाने के चक्कर में कुफ़्फ़ार के सामने घुटने टेकते और एड़ियां घसीटते फिरते हैं। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए।

www.dawateislami.net

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۸۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ज़रूर तुम मुसल्मानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों और मुश्रिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसल्मानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे जो कहते थे हम नसारा हैं येह इस लिये कि उन में आ़लिम और दरवेश हैं और येह गु़रूर नहीं करते।

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ज़रूर तुम मुसल्मानों का सब से ज़ियादा शदीद दुश्मन यहूदियों और मुश्रिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसल्मानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे जो कहते थे : हम नसारा हैं। येह इस लिये है कि उन में उ़लमा और इ़बादत गुज़ार मौजूद हैं और येह तकब्बुर नहीं करते।

﴿وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ **: और ज़रूर तुम मुसल्मानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे।** इस आयते करीमा में उन ईसाइयों की ता'रीफ़ बयान की गई है जो हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक्दस तक ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन पर क़ाइम रहे और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बि'सत मा'लूम होने के बा'द सरकारे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए। **शाने नुज़ूल :** इब्तिदाए इस्लाम में जब कुफ़्फ़ारे कु़रैश ने मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं दीं तो सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में से ग्यारह मर्द और चार औ़रतों ने सरकारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, येह तमाम ह़ज़रात ए'लाने नुबुव्वत के पांचवें साल रजब के महीने में बह़री सफ़र कर के ह़बशा पहुंचे। इस हिजरत को हिजरते ऊला कहते हैं। उन के बा'द ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ गए फिर और मुसल्मान रवाना होते रहे यहां तक कि बच्चों और औ़रतों के इ़लावा मुहाजिरीन की ता'दाद बयासी (82) मर्दों तक पहुंच गई, जब कु़रैश को

www.dawateislami.net

इस हिजरत का इल्म हुवा तो उन्हों ने चन्द अफ़राद को तोह़फ़ा तह़ाइफ़ दे कर नजाशी बादशाह के पास भेजा, उन लोगों ने दरबारे शाही में बारयाबी ह़ासिल कर के बादशाह से कहा : हमारे मुल्क में एक शख़्स ने नुबुव्वत का दा'वा किया है और लोगों को नादान बना डाला है उन की जमाअ़त जो आप के मुल्क में आई है वोह यहां फ़साद अंगेज़ी करेगी और आप की रिआ़या को बाग़ी बनाएगी, हम आप को ख़बर देने के लिये आए हैं और हमारी क़ौम दरख़्वास्त करती है कि आप उन्हें हमारे ह़वाले कीजिये, नजाशी बादशाह ने कहा : पहले हम उन लोगों से गुफ़्तगू कर लें बाक़ी बात बा'द में देखेंगे। येह कह कर उस ने मुसल्मानों को त़लब किया और उन से दरयाफ़्त किया कि "तुम ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की वालिदा के बारे में क्या अ़क़ीदा रखते हो ?" ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे और उस के रसूल, कलिमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं और ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कुंवारी पाक हैं। येह सुन कर नजाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठा कर कहा: ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम तुम्हारे आक़ा ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी येह लकड़ी (या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद कलामे ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है)। येह देख कर मुश्रिकीने मक्का के चेहरे उतर गए। फिर नजाशी ने क़ुरआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की तो ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सूरए मरयम तिलावत की, उस वक़्त दरबार में नसरानी आ़लिम और दरवेश मौजूद थे, क़ुरआने पाक सुन कर बे इख़्तियार रोने लगे। फिर नजाशी ने मुसल्मानों से कहा : तुम्हारे लिये मेरी सल्त़नत में कोई ख़त़रा नहीं। मुश्रिकीने मक्का अपने मक़्सद में नाकाम हो कर वापस पलटे और मुसल्मान नजाशी के पास बहुत इ़ज़्ज़तो आसाइश के साथ रहे और **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से नजाशी को दौलते ईमान का शरफ़ ह़ासिल हुवा। इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई।[1]

1 ......خازن، المائدة، تحت الآية: ٨٢، ١/٥١٨.

www.dawateislami.net

मआख़िज़ो मराजेअ

	قرآن مجید	کلامِ الٰہی	
نمبر شمار	**نام کتاب**	**مصنف/مؤلف**	**مطبوعات**
1	کنز الإيمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا اکیڈمی، ہند
2	کنز العرفان	شیخ الحدیث والتفسیر ابو الصالح مفتی محمد قاسم قادری	مکتبۃ المدینہ

کتب التفسیر وعلوم القرآن

1	تفسیرِ طبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
2	احکامُ القرآن	امام ابو بکر احمد بن علی رازی جصاص، متوفی ۳۷۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
3	تفسیرِ سمرقندی	ابو اللیث نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی، متوفی ۳۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۳ھ
4	تفسیرِ بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	زاد المسير	ابو الفرج جمال الدین عبد الرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۲۳ھ
6	تفسیرِ کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	تفسیرِ قرطبی	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	تفسیرِ بیضاوی	امام ناصر الدین عبد اللہ بن ابو عمر بن محمد شیرازی بیضاوی، متوفی ۶۸۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
9	تفسیرِ مدارك	امام عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
10	تفسیرِ خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	مطبعہ میمنیہ، مصر ۱۳۱۷ھ
11	البحرُ المحيط	ابو حیان محمد بن یوسف اندلسی، متوفی ۷۴۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
12	نظم الدرر	برہان الدین ابو الحسن ابراہیم بن عمر البقاعی، متوفی ۸۸۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۵ھ
13	تفسیرِ جلالین	امام جلال الدین محلی، متوفی ۸۶۳ھ و امام جلال الدین سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ
14	تفسیرِ دُر منثور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ

www.dawateislami.net

15	تناسق الدرر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۰۶ھ
16	تفسیرِ ابو سعود	علامہ ابوسعود محمد بن مصطفٰی عمادی، متوفی ۹۸۲ھ	دارالفکر، بیروت
17	تفسیراتِ احمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید ملّا جیون جونپوری، متوفی ۱۱۳۰ھ	
18	روحُ البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۰۵ھ
19	تفسیرِ جمل	علامہ شیخ سلیمان جمل، متوفی ۱۲۰۴ھ	باب المدینہ
20	تفسیرِ عزیزی (مترجم)	شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی، متوفی ۱۲۳۹ھ	
21	تفسیرِ صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
22	روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
23	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ

کتب الحدیث و متعلقاته

1	مصنف عبد الرزاق	ابوبکر محمد عبدالرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
2	مصنف ابن ابی شیبہ	حافظ عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
3	مسندِ امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
4	دارمی	امام حافظ عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دارالکتاب العربی، بیروت ۱۴۰۷ھ
5	بخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
6	مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دارابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
7	ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	ابو داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
9	ترمذی	امام ابوعیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
10	سنن نسائی	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
11	مسند ابو یعلی	ابویعلی احمد بن علی بن مثنّٰی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ

www.dawateislami.net

12	تهذيب الآثار	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری،متوفی ۳۱۰ھ	مطبعة المدنی،قاہرہ
13	نوادر الاصول	ابو عبد اللہ محمد بن علی الحکیم ترمذی،متوفی ۳۲۰ھ	مکتبۃ الامام بخاری،قاہرہ
14	معجم الكبير	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی،متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی،بیروت ۱۴۲۲ھ
15	معجم الأوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی،متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۲۰ھ
16	معجم الصغير	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی،متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۰۳ھ
17	دار قطني	علی بن عمر دار قطنی ،متوفی ۳۸۵ھ	مدینۃ الاولیاء
18	مستدرك	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری،متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ،بیروت ۱۴۱۸ھ
19	حلية الأولياء	حافظ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی،متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۱۸ھ
20	شعب الإيمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی،متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۲۱ھ
21	سنن الكبرى	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی،متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۲۴ھ
22	فردوس الأخبار	ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی،متوفی ۵۰۹ھ	دارالفکر،بیروت ۱۴۱۸ھ
23	مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ہیثمی ،متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر،بیروت ۱۴۲۰ھ
24	الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی،متوفی ۷۳۹ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۱۷ھ
25	مشكاة المصابيح	علامہ ولی الدین تبریزی،متوفی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
26	جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی،متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
27	كنز العمال	علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری،متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۱۹ھ

كتب شروح الحديث

1	شرح السنة	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی،متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ ،بیروت ۱۴۲۴ھ

www.dawateislami.net

2	عمدۃ القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
3	فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرؤوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
4	مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ

کتب العقائد

1	شرح عقائد نسفیہ	علامہ مسعود بن عمر سعد الدین تفتازانی، متوفی ۷۹۳ھ	باب المدینہ
2	شرح فقہ اکبر	علی بن سلطان محمد ہروی قاری حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ	باب المدینہ

کتب الفقہ

1	بدائع الصنائع	ملک العلماء علاء الدین ابو بکر بن مسعود کاسانی، متوفی ۵۸۷ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
2	ھدایہ	برہان الدین علی بن ابی بکر مَرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
3	فتح القدیر	کمال الدین محمد بن عبد الواحد ابن ہمام، متوفی ۶۸۱ھ	
4	در مختار	علاء الدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	عالمگیری	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام، متوفی ۱۱۶۱ھ و جماعۃ من علماء الہند	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
6	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن
7	بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
8	فتاویٰ نوریہ	ابو الخیر محمد نور اللّٰہ نعیمی، متوفی ۱۴۰۳ھ	دار العلوم حنفیہ فریدیہ

کتب التصوف

1	قوت القلوب	ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	مرکز اہلسنّت برکات رضا، ہند ۱۴۲۳ھ
2	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
3	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
4	کیمیاء سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ، تہران
5	منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	مؤسسۃ السیروان، بیروت ۱۴۱۶ھ
6	التذکرۃ	ابو عبد اللّٰہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار السلام، قاہرہ ۱۴۲۹ھ

www.dawateislami.net

7	تنبیہ المغترین	عبدالوہاب بن احمد بن علی شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
8	الزواجر عن اقتراف الکبائر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ

كتب السيرة

1	دلائل النبوة للبيهقي	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
2	الشفا	قاضی ابوالفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنّت برکات رضا، ہند
3	وفاء الوفاء	نورالدین علی بن احمد سمہودی، متوفی ۹۱۱ھ	داراحیاء التراث، بیروت
4	شرح الشفا	علی بن سلطان محمد ہروی قاری حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
5	سیرت حلبیہ	ابوالفرج نورالدین علی بن ابراہیم حلبی شافعی، متوفی ۱۰۴۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
6	مدارج النبوة	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہلسنّت برکات رضا، ہند

كتب التاريخ

1	فتوح الشام	ابوعبداللہ محمد بن عمر اسلمی واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
2	تاريخ بغداد	حافظ ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
3	ابن عساكر	ابوقاسم علی بن حسن شافعی، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
4	الكامل فی التاريخ	ابوالحسن علی بن ابوالکرم محمد بن محمد شیبانی جزری، متوفی ۶۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
5	البداية و النهاية	ابوفداء اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شافعی، متوفی ۷۷۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
6	تاريخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ

الكتب المتفرقة

1	الطبقات الكبرى	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی بصری معروف بہ ابن سعد، متوفی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
2	عيون الحكايات	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
3	اسد الغابة	ابوالحسن علی بن محمد جزری، متوفی ۶۳۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۷ھ
4	روض الرياحين	عبداللہ بن اسعد بن علی یافعی مالکی، متوفی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
5	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	شہزادۂ اعلیٰ حضرت علامہ محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

ज़िम्नी फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान	
अल्लाह तआला की शान	134
इस्लाम	
इस्लाम का आ'ला अख़्लाक़ी उसूल	340
अम्नो सलामती का मज़हब	470
कामिल मुसल्मान का नमूना	506
इस्लामी ता'लीमात	
कुफ़्फ़ार से तअ़ल्लुक़ात के बारे में इस्लाम की ता'लीमात	45
इस्लामी ता'लीमात के शाहकार	254
ईमान की हिफ़ाज़त	
ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करना बहुत ज़रूरी है	478
इल्मे ग़ैब	
इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ 10 अहादीस	112
नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें	342
त़हारत	
जनाबत के अस्बाब और उन का शरई हुक्म	436
वुज़ू	
वुज़ू के फ़राइज़	435
वुज़ू के चन्द अह़काम	435
तयम्मुम	
तयम्मुम का त़रीक़ा	239
तयम्मुम के 2 अह़काम	239
नमाज़	
नमाज़े क़स्र के बारे में 4 मसाइल	322
आयत में बयान किया गया नमाज़े ख़ौफ़ का त़रीक़ा	325
सफ़र में दो नमाज़ों को जम्अ़ करने का शरई हुक्म	328
नमाज़ में सुस्ती करना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत है	377
नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ पैदा करने का आसान नुस्ख़ा	377
ज़कात	
ज़कात अदा न करने की वई़द	115
हज	
हज फ़र्ज़ होने के लिये ज़ादे राह की मिक़्दार	18
निकाह़	
निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल	163
महर से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल	164
महर के चन्द ज़रूरी मसाइल	196
औ़रत से नफ़्अ़ उठाने की जाइज़ सूरतें	196
बांदी से निकाह़ करने के मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई मसाइल	198
निकाह़ का शरई हुक्म	199
नेक बीवी के औसाफ़ और फ़ज़ाइल	220
निकाह़ कैसी औ़रत से करना चाहिये ?	220
ना फ़रमान बीवी की इस्लाह़ का त़रीक़ा	221

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा
बीवी जब अपनी ग़लत़ी की मुआ़फ़ी मांगे तो उसे मुआ़फ़ कर दिया जाए	222
अहले किताब से निकाह़ के चन्द अहम मसाइल	433
क़त्ल	
मुसल्मान को नाह़क़ क़त्ल करने की मज़म्मत	309
मुसल्मान को क़त्ल करना कैसा है ?	311
ह़सद, क़त्ल और हुस्न परस्ती की मज़म्मत	469
क़त्ले नाह़क़ की 2 वई़दें	470
क़त्ल की जाइज़ सूरतें	471
चोरी व डकैती	
डाकू की सज़ा की शराइत़	472
डाकू की 4 सज़ाएं	473
चोरी करने का शर्ई़ हुक्म और इस की वई़दें	480
चोरी की ता'रीफ़	480
चोरी से मुतअ़ल्लिक़ 2 शर्ई़ मसाइल	480
ग़ज़्वात	
जंगे उहुद का बयान	48
वाक़िअ़ए बद्र से मा'लूम होने वाले मसाइल	52
जिहाद	
हिजरत और जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस	145
इस्लामी सरह़द की निगहबानी करने के फ़ज़ाइल	152
जंगी क़ैदियों से मुतअ़ल्लिक़ इस्लाम की ता'लीमात	195
जंगी तय्यारियों से मुतअ़ल्लिक़ हिदायात	277
निय्यत की अ़ज़मत और जिहाद का सवाब	314
जन्नत में मुजाहिदीन के दरजात और मुजाहिदीन की बख़्शिश	316
शुहदा	
शुहदा की शान	100
शुहदा के 6 फ़ज़ाइल	102
ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जज़्बए शहादत	280
हिजरत	
हिजरत और जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस	145
हिजरत कब वाजिब है	318
हिजरत की अक़्साम और उन के अह़काम	318
किन कामों के लिये वत़न छोड़ना हिजरत में दाख़िल है	321
तिजारत	
ह़राम माल कमाने की मज़म्मत	204
तिजारत के फ़ज़ाइल	205
तिजारत के आदाब	206
सूद व रिश्वत	
सूद से मुतअ़ल्लिक़ वई़दें	56
सूद और रिश्वत की मज़म्मत	399
रिश्वत का शर्ई़ हुक्म और इस की वई़दें	486
रिश्वत से ह़ासिल किये हुए माल का शर्ई़ हुक्म	488
क़ज़ा	
क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का आ़दिलाना फ़ैसला	255
हुक्काम फ़ैसला करने में कोताही न करें	332
ह़क़ फ़ैसले की अ़ज़ीम तरीन मिसाल	369
अ़दलो इन्साफ़ के दो आ'ला नुमूने	439

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
इक्तिदार मिलने पर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करने का बेहतरीन त़रीक़ा	457
हुक्मरानों के लिये नसीह़त आमोज़ 4 अह़ादीस	458
इक्तिदार के बोझ से अश्कबार	458
इस्लामी सज़ाओं की ह़िक्मत	473
मौत	
मौत की याद और इस के बा'द की तय्यारी की तरग़ीब	122
विरासत	
विरासत तक़्सीम करने से पहले ग़ैर वारिसों को देना	168
वुरसा में विरासत का माल तक़्सीम करने की सूरतें	176
इस के इलावा 2 अहम उसूल	177
कलालह की विरासत के अह़काम	415
मुतफ़र्रिक़ मसाइल व अह़काम	
इत्तिफ़ाक़ का हुक्म और इख़्तिलाफ़ के अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त	30
इस उम्मत का इत्तिह़ाद शर्ई दलील है	35
नशे की ह़ालत में कलिमए कुफ़्र बोलने का हुक्म	238
एक अहम मस्अला	292
सलाम से मुतअ़ल्लिक़ शर्ई मसाइल	296
अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ 2 शर्ई मसाइल	327
अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई चीज़ों में ख़िलाफ़े शरअ़ तब्दीलियां करने का शर्ई हुक्म	351
ज़ालिम के ज़ुल्म को बयान करना जाइज़ है	383
कबीरा गुनाह करने वाला काफ़िर नहीं	388
शिकार के दूसरे त़रीक़े का शर्ई हुक्म	432
पहली शरीअ़तों के बयान किये गए अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ अहम मस्अला	492
कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात का शर्ई हुक्म	501
वसीला	
जहन्नम से बचने का सब से बड़ा वसीला	25
अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों का मदद करना दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** तआ़ला का मदद करना है	51
बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहने के 3 वाक़िआ़त	263
मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर ह़ाजतें और मग़्फ़िरत त़लब करने के 5 वाक़िआ़त	265
नेक बन्दों को वसीला बनाना जाइज़ है	475
वाक़िआ़त	
राहे ख़ुदा में अपना प्यारा माल ख़र्च करने के 5 वाक़िआ़त	10
क़ियामत के दिन रोशन चेहरे वाले लोग	32
ह़िल्म व अ़फ़्व के दो अ़ज़ीम वाक़िआ़त	62
मुश्क की ख़ुश्बू में बसे हुए बुज़ुर्ग	202
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़बूले इस्लाम	244
ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़बूले इस्लाम	244
ह़ज़रते वह़्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़बूले इस्लाम	246
क़ाज़ी शुरैह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का आ़दिलाना फ़ैसला	255
बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहने के 3 वाक़िआ़त	263

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर ह़ाजतें और मग़्फ़िरत त़लब करने के 5 वाक़िआ़त	265
ह़क़ फ़ैसले की अ़ज़ीम तरीन मिसाल	369
अ़दलो इन्साफ़ के दो आ'ला नुमूने	439
इक़्तिदार के बोझ से अश्कबार	458
हाबील और क़ाबील का वाक़िआ़	466
फ़ज़ाइलो मनाक़िब	
अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	
अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी **अल्लाह** तआ़ला की गुस्ताख़ी है	119
हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	
सब से आ'ला ने'मत	26
ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा की एक झलक	89
नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है	257
सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शुजाअ़त	293
अल्लाह तआ़ला के ख़लील व ह़बीब	355
ख़लील और ह़बीब का फ़र्क़	356
नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान का बयान	411
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم	
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم की अ़ज़मत	54
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم का शौक़े रफ़ाक़त	272
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُم की अफ़्ज़लिय्यत	462
निस्बत की बरकत	
बुज़ुर्गों से निस्बत की बरकत	17
सूरतों का तआ़रुफ़	
सूरए निसाअ का तआ़रुफ़	153
सूरए माइदह का तआ़रुफ़	416
सूरतों के फ़ज़ाइल	
सूरए निसाअ के फ़ज़ाइल	153
सूरए माइदह के फ़ज़ाइल	416
आयात से मा'लूम होने वाले मसाइल व अह़काम	
आयत "يَتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ" से मा'लूम होने वाले अह़काम	40
आयत "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا" से मा'लूम होने वाले अह़काम	267
आयत "فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	269
आयत "وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	282
आयत "وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ" से मा'लूम होने वाले अह़काम	302
आयत "اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	347
आयत "وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا" से मा'लूम होने वाले अह़काम	429

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
आयत "وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	437
आयत "قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	463
आयत "وَ اِذَا نَادَیْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	511
आयत "وَ لَیَزِیْدَنَّ كَثِیْرًا مِّنْهُمْ" से मा'लूम होने वाले मसाइल	520
आयात से हासिल होने वाला दर्स	
आयत "وَ كَاَیِّنْ مِّنْ نَّبِیٍّ" से हासिल होने वाला दर्स	74
आयत "ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَیْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً" से हासिल होने वाला दर्स	83
मुक़द्दस अय्याम	
दीनी काम्याबी के दिन ख़ुशी मनाना जाइज़ है	428
मीलाद मनाने का सुबूत	457
मज़ारात पर हाज़िरी और इस की बरकात	
बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हाज़िर हो कर गुनाहों की मुआफ़ी चाहने के 3 वाक़िआत	263
मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हो कर हाजतें और मग़्फ़िरत तलब करने के 5 वाक़िआत	265
औलियाए किराम और उन के मज़ारात के हवाले से ग़ुलू	533
ख़ौफ़े ख़ुदा	
अल्लाह तआला के अ़ज़ाब से हर एक को डरना चाहिये	236
इक़्तिदार के बोझ से अश्कबार	458

उन्वान	सफ़्हा
राहे ख़ुदा में ख़र्च करना	
राहे ख़ुदा में अपना प्यारा माल ख़र्च करने के 5 वाक़िआत	10
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब	60
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر	
तब्लीग़े दीन का हुक्म	27
तब्लीग़े दीन से मुतअ़ल्लिक़ 5 अहादीस	27
नेकी की दा'वत देने की तरग़ीब	36
उ़लमा पर बुराई से मन्अ़ करना ज़रूरी है	517
नेकी के कामों में एक दूसरे की मदद करने और गुनाह के कामों में मदद न करने का हुक्म	424
नेक आ'माल की तरग़ीब	441
गुनाह से रोकना वाजिब और मन्अ़ करने से बाज़ रहना गुनाह है	536
निय्यत	
आ'माल के सवाब का दारो मदार निय्यत पर है	72
निय्यत की अ़ज़मत और जिहाद का सवाब	314
नेकी का इरादा कर के नेकी करने से आ़जिज़ हो जाने वाला उस नेकी का सवाब पाएगा	321
तवक्कुल	
मश्वरा और तवक्कुल के मा'ना और तवक्कुल की तरग़ीब	91
अ़फ़्वो दर गुज़र	
ग़ुस्से पर क़ाबू पाने के 4 फ़ज़ाइल	61
अ़फ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल	62
मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल	384

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा
हुक़ूक़	
यतीमों से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम मसाइल	160
यतीमों का माल नाह़क़ खाने की वईदें	171
यतीम का माल खाने से क्या मुराद है ?	172
यतीम की अच्छी परवरिश के फ़ज़ाइल	172
रिश्तेदारी तोड़ने की मज़म्मत	159
शौहर और बीवी दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखें	221
बन्दों के बाहमी हुक़ूक़	224
मुसल्मानों का बाहमी तअ़ल्लुक़ कैसा होना चाहिये ?	310
औ़रतों और कमज़ोर लोगों को उन के हुक़ूक़ दिलाना **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है	359
अच्छी और बुरी सोह़बत	
नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार करने की तरग़ीब	142
बुरी सोह़बत की मज़म्मत	374
गुनाह	
कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ और ता'दाद	211
गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ 3 अह़ादीस	212
कबीरा गुनाहों के बारे में मश्हूर ह़दीस	213
चालीस गुनाहों की फ़ेहरिस्त	213
मग़्फ़िरत की उम्मीद पर गुनाह करना बहुत ख़त़रनाक है	245
गुनाहे जारिया का सबब बनने वाले को गुनाह करने वाले के गुनाह से भी हिस्सा मिलेगा	388
गुनाहों की वज्ह से दिल सख़्त हो जाते हैं	446
इ़ल्म	
इ़ल्मे दीन छुपाना गुनाह है	130
साइन्सी उ़लूम ह़ासिल करना कब बाइ़से सवाब है	136
रासिख़ फ़िल इ़ल्म की ता'रीफ़	400
बुख़्ल	
बुख़्ल की ता'रीफ़	116
बुख़्ल की मज़म्मत	116
बुख़्ल का इ़ल्मी और अ़मली इ़लाज	117
ख़ियानत	
ख़ियानत की मज़म्मत	94
ख़ियानत करने वालों का साथ देने की मज़म्मत	333
ख़ुद पसन्दी व हुब्बे जाह	
ख़ुद पसन्दी और हुब्बे जाह की मज़म्मत	131
ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत	248
ग़ौरो फ़िक्र	
काएनात में तफ़क्कुर की ज़रूरत	139
क़ुरआने मजीद में ग़ौरो फ़िक्र करना इ़बादत है लेकिन !	289
मुतफ़र्रिक़ात	
का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ख़ुसूसिय्यात	15
ह़रम से क्या मुराद है ?	18
सुल्ह़े कुल्लिय्यत का रद	23
''حَبْلُ اللّٰہ'' की तफ़्सीर	23
जमाअ़त से क्या मुराद है ?	24

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
बनी इसराईल और उम्मते मुह़म्मदिय्यह की		लम्बी उम्मीद रखने की मज़म्मत	349
अफ़्ज़लिय्यत में फ़र्क़	35	दिल लालच के फन्दे में फंसे हुए हैं	362
लम्बी उ़म्र पाना कैसा है ?	109	औ़रत और मर्द बिल्कुल एक दूसरे के	
एक अहम नुक्ता	120	मोह़ताज नहीं	364
अ़क्ल मन्द लोगों के अहम काम	138	एक दूसरे को गाली देने की मज़म्मत	381
दुआ़ क़बूल होने के लिये एक अ़मल	144	मेहमान नवाज़ी से	
दुन्या की राह़तें और जन्नत की अबदी ने'मतें		खु़श न होने वालों को नसीह़त	383
किस के लिये हैं ?	148	मख़्लूक़े खु़दा पर शफ़्क़त के फ़ज़ाइल	385
इन्सानों की इब्तिदा किस से हुई ?	157	ईसाइयों के फ़िर्क़े और उन के अ़क़ाइद	408
खु़द को हलाक करने की सूरतें	208	ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की	
दिल के सब्रो क़रार का नुस्ख़ा	215	उलूहिय्यत की तरदीद	453
मर्द के औ़रत से अफ़्ज़ल होने की वुजूहात	219	खु़द को आ'माल से मुस्तग़नी जानना	
रियाकारी की मज़म्मत	229	ईसाइयों का अ़क़ीदा है	454
शैत़ान के बहकाने का अन्दाज़	231	ज़मानए फ़ित्रत से क्या मुराद है ?	456
त़ाग़ूत का मा'ना	250	हाबील और क़ाबील के वाक़िए से	
सिद्क़ के मा'ना और इस के मरातिब	274	ह़ासिल होने वाले अस्बाक़	468
खु़द ग़रज़ी और मफ़ाद परस्ती की मज़म्मत	279	इन्जील पर अ़मल करने से मुतअ़ल्लिक़	
ज़िन्दगी की इस्लाह़ का एक अहम उसूल	291	एक ए'तिराज़ का जवाब	495
इम्काने किज़्ब का रद	297	दीनी चीज़ों का मज़ाक़ उड़ाने वालों का रद	511
तअ़स्सुब का रद	332	यहूदियों की सिफ़ात और मुसल्मानों की	
शफ़ाअ़त का सुबूत	337	ह़ालते ज़ार	516
बे गुनाह पर तोहमत लगाने की मज़म्मत	339	दीन की पाबन्दी और **अल्लाह** तआ़ला की	
आयत "لَا خَیْرَ فِیْ كَثِیْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ" के		इत़ाअ़त वुस्अ़ते रिज़्क़ का ज़रीआ़ है	522
चन्द पहलू	344	कुफ़्फ़ार से दोस्ती का दम भरने वाले	
मुसल्मानों का इज्माअ़ हुज्जत और दलील है	346	मुसल्मानों के लिये ताज़ियानए इब्रत	537

www.dawateislami.net